श्रीः ।

वैद्यक रसराजमहोदधि भाषा।

प्रथमभाग।



जिसमें

यूनानी हिकमत यूनानी दवा फकीरोंकी जड़ी-
बूटी और सन्तोंकी पुस्तकोंका संग्रह है।

जिसको

मुन्शीभगवानप्रसादके शिष्य भगतभगवानदास
वल्द मुखराज गाँव चकबढवल निवासी
जिला जौनपुरने विरचित किया।

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

मुंबई

निज "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखानामें

छापकर प्रगट किया।

संवत् १९७९ शके. १८४४

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन, निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया ।


भगत

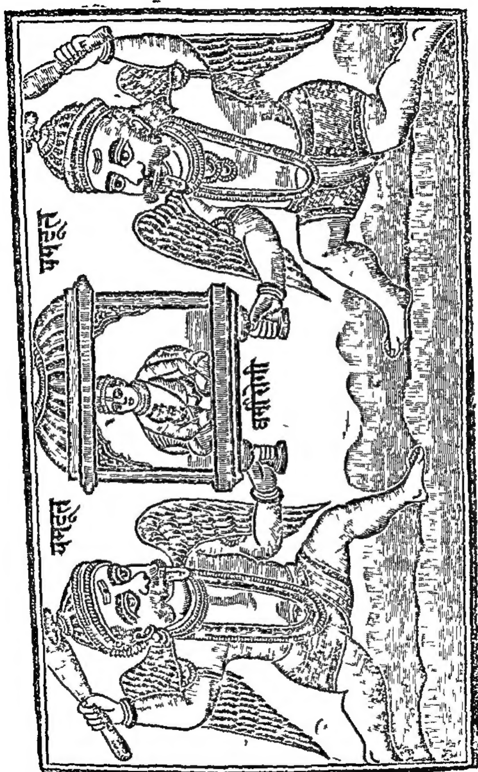

यहरोगीहै
धुनिज्वरका
भयंकर
स्वरूप


रोगी
दूसराज्वर
रूप

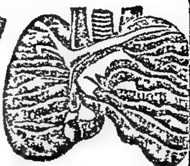

तीसरा ज्वर
रूप.
रोगी.


चौथ्याज्वररूप.
रोगी

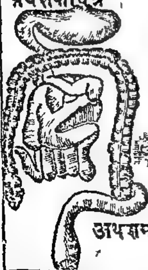

यमदूत
यमदूत
पापीरोगी


यमदूत
धर्मीरोगी
यमदूत

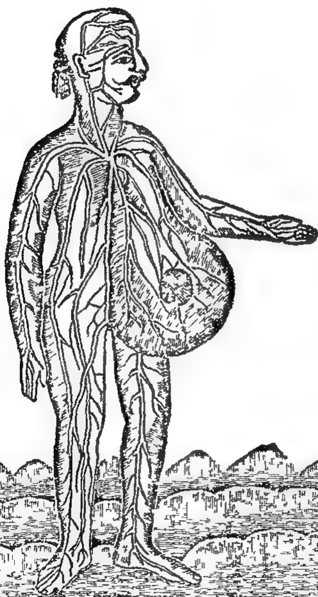

गर्भाशयका चित्र.


फुप्फुस (फेफड)


नारकंकाल
अथवा मनुष्य अस्थिपंजर.


अंत्र (अंतडे)
प्रदर्शक चित्र


यमलगर्भका चित्र



जलंधररोगी.



अंडकोस वढजानेका रोगी और दवासंग.



कालज्वरका भयंकर स्वरूप.


भगत
भगवानदास
आदिब्रह्मधन्वंतरी महाराज.

श्रीः।

अथानुक्रमणिका प्रारंभः।



इति अनुक्रमणिका समाप्ता ।

भूमिका ।

कोटि कोटि दंडवतहै उस निर्गुण निराकार पूरण ब्रह्म सच्चिदानंदघन अवधविहारी गोवर्द्धनधारी श्याम सुंदर श्रीमुरारी मोरमुकुटधारीको जिसकी अपार महिमाको शारदा, ब्रह्मा, शिव, वेद, पुराण कोई बखान नहीं कर सकता । जिसके चरित्र को गायके कैसाही अधम और पातकी होवे सोभी इस अपार संसारके भवसागरसे पार उतराहै यह औषधि रूपी "रसराजमहोदधि" वैद्यक ग्रंथ पांचखंड प्रगट करताहूं. और सब सज्जन पुरुष और पंडित साधू स्वामी लोगोंकी बहुत तरहसों विनती करताहूं कि जिस जगह कोई भूल होय तो सँभार लेवें और इस ग्रंथमे यूनानी और फकीरोंकी दी हुई बूटियोंकी संग्रह है इसके पढनेसे हजारों आदमीकाहित कारज होगा. और जो इसकी विधिप्रमाण दवा करैगा तो उस पुरुषको इस संसारमे मान और यश मिलेगा और एक पैसेकी दवाईमें हजारों रुपयेका गुण दिखावेगा. और इस ग्रंथका वर्णन लिखने योग्य नहीं है जो देखेगा उसको इसका गुण मालूम होगा. श्रीपंडित कामताप्रसाद संतन प्रतिपालक और सुकुल भगवान-

दत्त पंडित और बाबाहंसदास और शिरोमणि पंडित और ठाकुर उदवंतसिंह ये सब सज्जनपुरुषकी आज्ञानुसार मुंशी भगवानप्रसाद कायथ जिले जौनपुर गांव रसूलपुर शिष्य भगत भगवानदास मुराई जिला जौनपुर गांव ठाठर गोदामकेपास गाम चकबदल इन्होने बनाया.

भगत भगवानदास.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना–खेतवाडी–बंबई.

श्री

श्रीगणेशाय नमः ।

वैद्यक रसराजमहोदधि ।

वन्दना ।



दोहा ।

उमा महेश गणेश गुरु, ब्रह्मा विष्णु फणीश ।
भगवानदासकरजोरिकहै, कृपाकरहुजगदीश ॥
विष्णुरूप हियमें धरौं, करौं गुरूको ध्यान॥
सरस्वती उर धारिकै, रचौं ग्रंथ परमान ॥
जग कारज कल्याणहित, वैद्यक अमृतरूप॥
धन्वंतर वैद्यक किये, औषध अमृतरूप ॥
कहा फ़ारसी वैद्यक, जिसमें वैद्यकसार ॥
रसराजमहोदधि कहौं, वैद्यक भाषिविचार ॥
विविधभांति सुमिरण करौं,शिवचरणनकी आस॥
सर्वद्विजन आशीशकै, सुजन पुरुषकी आस ॥
मुन्शी भगवान प्रसादके, चरणन करौं प्रणाम॥
वैद्यकग्रंथविरचितकियो, भगवानदासहैनाम ॥
जगतमही परकाशहै, विधिहरिहरहै नाम ॥
ऐसे उस जगदीशको, बहुविधिकरौं प्रणाम॥

जो वैद्यकहै निगमके, भाषा वैद्यकभूप ॥
गणपतिको करिदंडवत, वैद्यक रचों अनूप॥

अथ प्रथमरोगविचार.

अनेक प्रकारकी पीड़ाओको रोग कहतेहैं. रोग दो प्रकारकेहैं. एक कायिक दूसरा मानसिक कायामें रहै सो कायिक, उसका नाम व्याधिहै. मनमें रहै उसका नाम आधिहै सो ये दोनों शरीरमे किसी प्रकारके कुपथ्यसे वात पित्त कफरूप दोष और मिथ्या आहार वा मिथ्या विहारके होनेसे सब रोगोंको उत्पन्न करतेहैं और यह वात, पित्त, कफ कई प्रकारके कुपथ्यसे बिगड़कर देहको बिगाड़तेहैं. और यही अच्छेप्रकार पथ्यके सेवनेसे शरीरको पुष्ट करतेहैं.

अथ सर्वरोगोंकी परीक्षा.

नाडीपरीक्षा, मूत्रपरीक्षा, और मल शरीर या सकल व नेत्र शिरसे पैरतक येरोगीके परीक्षा करै.

अथ नाडीपरीक्षा.

पुरुष रोगी होय तो उसके दहिने हाथकी और स्त्रीरोगिनी होय तो उसके बायें हाथकी नाड़ीदेखै परंतु वैद्यको उचित है कि एकाग्र चित्त औरप्रसन्नमन होकर विचारपूर्वक रोगीके हाथको हिलने न

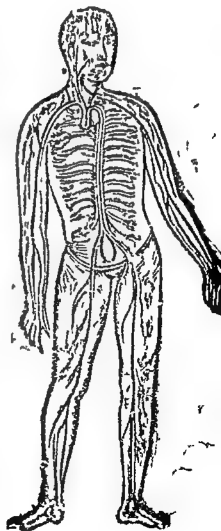
देवे और चतुर वैद्यजन नाडी ऐसे देखे कि रोगीका हाथ लंबा करावे और कछुक टेढ़ा हाथकी अँगुली सब पसारके हाथको न हिलावे और कडा करै ऐसी विधि करायके अंगुष्ठमूलसे नाडी देखै प्रभात समयमे तीनवार नाडीपरीक्षा धारण करै फिर छोडदे. ऐसे तीनवार परीक्षा करै और फिर बुद्धिसे विचारकर रोगको नाडीद्वारा प्रगटकरै वैद्य गुरुका ध्यान करिके नाडी देखै कौवाकी चाल नाडी चलै तौ उसके ज्वर जानै और बहुत सुस्त बारीक नाडी चलै तो कफज्वर जानो और मोर या मुर्गा या बतक इसके मिसाल चलै तो कफ पित्तका ज्वर जानो और अँगुलीमें दबि दबि जाय तो बातके फिसाद ज्वर जानो. और सांपकीचाल नाडी चलै तो वात कफका ज्वर समुझना और काठफोरा जो काठको ठाक ठंक काटतेहै जो नाडी ऐसी चाल चलै तो सन्निपातज्वर जानो यही सब नाडीपरीक्षा है और इसीसे सब रोग जाना जाता है.

अथ मूत्रपरीक्षा.

लाल रंग मूत्र होय तो उसके खूनका जोर समझना चाहिये. और पीला हो तो ज्वर समुझना और सफेद रंग होय तो बलगमके व्याधि जानो और

अंजीरके रंग मूत्रहोय तो खूनसे बिगडा मूत्र समझो. और केसरीके रंगका मूत्र होय तो वादी वा पित्तसूं बिगडा मूत्र जानो. और खूनके रंग मूत्र होय तो और जडा स्याही रंगलिये होय तो गरमीका रोग जानो. और जो निहायत कालारंग हो तो असाध्य जानो और जोकि ज्वर मिला होतो ६ महिनाके अंदर मरै और ज्वर न रहै काला रंग मूत्रहोय तो रोगी जीवैगा मरै नहीं.

जो तस्वीरमें नसे बनाई हैं इसी तरहसे मनुष्यके शरीरमें नसें होतीहैं. तमाम शरीरमें जो नसें हैं सो इनकी जड छातीसे है. सो वह नसें छातीसे पैर व हाथ तकहैं.



अथ कफ खाँसी डाँसी ऊर्द्धश्वासका लक्षण.

दोहा–उद्र विषे एक नाटिका, होवै मलसों बन्द।
कफ खाँसी ऊर्द्ध श्वास बहु, करै व्यथा सब अंग॥

अथ मन्दअग्निलक्षण.

जिस पुरुषके पेटमेमल खराब हुआ हो उसकी नाडी बहुत सुस्त चले टमें गर्मी मालूम हो शरीर सुस्त रहै. खाना बराबर हजम न होय. मूत्र लालउतरै और सब अंगमें पीडा हो, या अंग गर्म रहै. मल बराबर उतरै नहीं ये लक्षण मन्द अग्निके हैं.

अथ संग्रहणीका लक्षण.

जिस पुरुषके अंगमे संग्रहणी होय शिर भारी रहै. आंख बैठ जाय. मल, मूत्र साथही उतरै दस्त पानीके सरीखा होय अन्न पचेन हीं दस्तके साथ वह अन्न गिरा करै.शरीरका चेहरा बदल जाय.ये लक्षण संग्रहणीके हैं.

खूनी बवासीरका लक्षण.

तृषा अरुचि रुधिर निकलै. दुर्बलहोय अतीसार होय. खाज होय. गुदाके बीचमें फोडा निकलै ये लक्षण खूनीकाहै.

अथ दाहका लक्षण.

बाहर अन्दर दाह बहुत होय. उदर गरम रहै मुरछा होय. तृषा होय. ये लक्षण दाहके हैं.

अथ बदनसें बादी कब्जियत बिगडेका लक्षण.

जिस आदमीके अंगमें बादीका बहुत जोर होता है उससे खाना नहीं खाया जाता. और न बराबर हजम होय. तमाम अंगमें सुस्ती होवे हाथ पांवमें चिकनाहट होवे और पानीके मुवाफिक मालूम होय पानी पीनेकी इच्छा न लगै गर्मी मिजाजमे मालूम होय.

अथ खून बिगड़ेका लक्षण.

जिस पुरुषके अंगमें रक्त बिगडा होवे उसके मुँहका स्वाद मीठा कडुआ होय. शिर भारी होय. और हड्डीके अन्दर दर्द होय. जबान सूखी रहै और अंगमे खुजली, आंख सुर्ख रहै पेशाब लाल उतरै नाडी बहुत जलदी जलदी चलै ये लक्षण रक्त बिगडेके हैं.

वात पित्त मिश्रित होय उसका लक्षण.

दोहा—वात पित्त कफ धीरते, करत बदनके रोग ।
जीळ दोष डुवासना, फोडा फुडिया योग ॥

अथ वायुका लक्षण.

दोहा–तनु कांपे सूखे अधर, तृषा जलकी होय ।
छुचकी शूलरु उदर दुख, मुख फीका कहुसोय ॥

अथ वातका लक्षण.

दोहा–सब शरीर नख नेत्रको, विष्ठा मूत्र जु होय ।
ये लक्षण ज्वरवायुके, मूत्र रुधिररँग होय ॥

अथ कफज्वर लक्षण.

मूत्र बहुत जल्दी जल्दी उतरै चित्त भ्रमित रहै बुद्धि नष्ट हो जाय नींद बहुत आवे कफ छाती छेके रहै देहमें ददोरा ऐसा मालूम होय तो कफ-ज्वरका लक्षण है.

निरोगरहनेका बयान.

मनुष्यको चाहियेकि दिनको सोना नहीं. और रातको जागना नहीं बहुत आदमी ऐसे निद्रा करनेसे रोग उत्पन्न करतेहैं. और खराव खाना खाय नहीं. और दिनको स्त्री भोग करै नहीं, जोडा पहननेसे आंखों को गुण करताहै. छतरी धारण कियेसे शरीरको सुख होताहै. और मनुष्यको उचितहैकि सज्जन पुरुषसे प्रीति करै, औरसत संगति करै. ब्राह्मण वृद्ध पुरुष वैद्य और राजासे प्रीति करै और गुरुका कहना मानैं

दुष्ट पुरुषको त्याग करै. वैरीसे दूर रहे. और किसीको दुःख देवै नहीं, और विश्वास विचारके करै मिथ्या बोलै नहीं, अपनेसे बलवान् पुरुषसे युद्ध करै नहीं, स्त्रीका विश्वास करै नहीं. सामके वक्त घड़ी दिन रहे सोवै नहीं. सोनेसे आयुहीन और दरिद्र होता है स्त्रीका सोलह वर्षतक बाला नामहै और बत्तीस वर्षकी स्त्री तरुणी संज्ञा है पचास वर्षतक अधिरूढा पचास वर्षके उपरांत वृद्ध अवस्थाहै रजस्वला. वृद्ध गर्भिणी वैरवाली और गोत्रकी गुरुकी स्त्रीसे मनुष्यको उचितहै कि ऐसी स्त्रीसे भोग करैनहीं जो मूर्ख लोग करते हैं तो पूर्वजन्म में गूंगे होतेहैं और परीक्षित रोग होताहै. वह आदमी सदा कलेशमें रहताहै. मनुष्यको चाहिये कि अपनी स्त्री सिवाय दूसरी स्त्रीसे भोग नहीं करे और स्त्रीको चाहिये कि अपने पतिको छोड़कर दूसरेसे भोग करै नहीं यह धर्म और वेदकी रीतिहै.

अथ स्वप्न विचार.

जो स्वप्न मनुष्यको शामसे आधीराततक दीख आवै तो छःमहीनेके अंदर फल करै और आधी रातसे सवेरेतक जो स्वप्न देखै तो दश महीनाके अन्दर फल करै और वैद्य धर्मवाला और भक्तिवाला

शीलवाला ये अच्छा है पढे लिखे शास्त्र-विषे निश्चयवाला और गैर लालची ये वैद्य अच्छाहै ये स्वप्नेमें आवें तो श्रेष्ठ है. जो खराव स्वप्न देखे तो किसीसे कहे नहीं और ब्राह्मणको दानदे और सींगवाला वैल वंदर और शूरवीर और नाव पर चढा ये देखे तो राजाका भय होय और काला कपडा लाल कपडा पहरे स्त्री देखे तो मृत्यु होय और शिर मुँडाये और अपना व्याह देखे और घरमें नाच तमासा देखे तो मृत्यु होय. और भैंसा ऊंट गधा दक्षिण दिशाको जाता देखे अच्छा मनुष्य देखे तो वीमार होय. और वीमार देखे तो अवश्य मरै और जो सफेद कपडा पहरे सफेद माला पहरे स्त्री को पुरुष देखै तो लक्ष्मी प्राप्त होय. ब्राह्मण गुरु और वर्तिआगि साधुनका झुंड बुढापा ये स्वप्न सदा आनंदकारीहैं.

अथ दूतपरीक्षा.

पवित्र होकर शीलमान आदमी वैद्यको बुलाने जाय तो श्रेष्ठ है. और काना और अंधा लँगडा मैला कपड़ा ये अशुभहै वैद्यको अच्छा दृष्टांत मिलै तो जाय और मान होय रोगी जीवै परीक्षा बहुत है जियादा लिखनेसे काम नहीं.

अथ साध्यलक्षण.

रोगी आदमीका सवशरीर शोभायमान होय चेहरा ज्योंका त्यों रहै मुख रूखा रहै दाँत सफेद रहैं वो रोगी जीवे ओंठ लाल रहैं शरीरमें मैल वास न रहै कानसे सुनै ये लक्षणका रोगी जीवे. और जिसके पैरगर्म रहैं और कपडामें खराब वास नहीं आवै मधुर वचन बोलै वह रोगी अवश्य जीवै सवेरे रोगीका मूत्र पानी सरीखा हो तो वह रोगी मरै नहीं.

असाध्यलक्षण.

देहकी शोभा जाती रहै. और चेहरा भयंकर होय रात दिन अचेत रहै तो वह रोगी अवश्य मरै और रोगी का मुँह रोरी सरीखा होय. जीभ काली होय और वचन दब दब बोले वह रोगी असाध्यहै. और जिस रोगीके शरीरमें खराब वास आवै तो वह रोगी असाध्य. आँखि बैठ जाय और किसीको पहिचाने नहीं और बोलै औरका और तो वह रोगी असाध्यहै.

अथ मलज्वरलक्षण.

कंठ सूखे, दाह बहुत होय, मस्तक पीडा होय, भ्रम उपजे, मूर्छा होय, हड फूटनी होय, हिचकी, पेटमें शूल, वमन होय तो मल ज्वर लक्षण जानो.

कालज्वरके लक्षण.

पेशाब बहुत होय, देह गलिजाय, माथ नाक शीतल होय ये लक्षण कालज्वरके हैं.

कफज्वर, शीतज्वरका लक्षण.

अरुचि होय, अग्नि मंद होजाय, मुखमे खराब गंध आवै, ज्वर बहुत होय, देह शीतल होय, निद्रा बहुत होय, येलक्षण कफज्वर और शीतज्वरके हैं.

कामज्वरका लक्षण.

शीत लगै, शरीर काँपै, चित्तभ्रम होय, माथामें पीड़ा होय, कंठ सूखा रहै, मुँह कसैला होय, यह लक्षण कामज्वरका है.

रक्तज्वरका लक्षण.

शरीरमे पीड़ा होय, मुख नाकसे खून निकलै, ये लक्षण रक्तज्वरके हैं.

सर्वज्वरके दूर होनेका चूर्ण.

सोंठि धनियां छोटी बड़ी कटाई देवदारु सब बराबरि ले कपडछान करिके छःमासा शामको छःमासा सबेरे गर्म पानीके साथ खाय तो सब प्रकारका ज्वर दूरहोय.

अथ सर्वज्वरकी उत्पत्ति.

श्रीमहादेवजीने अपने तीसरे नेत्रसे वीरभद्रको जाया सो यही वीरभद्रसे आठ प्रकारका ज्वर

निम्बादिका काढ़ा.

निम्ब सोंठि गिलोय शतावरी धमासा चिरायता पुष्करमूल पीपलामूल कटेली इन्होंका काढ़ा करि पिये तो कफज्वर दूर होय.

अथ वात पित्तज्वरका लक्षण.

मूर्च्छा होय, भवँरी छूटै, दाह नींद आवै नहीं, माथेमे पीडा हो कंठ मुँह सूखै, वमन रोमांच होय अरुचि होय सर्व अंगमें पीडा होय जँभाई आवै और बकवाद करै ये लक्षण वातपित्तके हैं.

अथ वात पित्तज्वरपर पंचमूलादि काढ़ा.

पंचमूल गिलोय नागरमोथा सोंठि चिरायता इन्हों का काढ़ा करि पिये तो वातपित्तज्वर दूर होय.

मुस्तादि काढ़ा.

नागरमोथा धनियाँ चिरायता गिलोय नींब कटुकी कडू परवर इन्होंका काढ़ा करि पिये तो वातपित्त ज्वर दूर होय.

अथ वात कफज्वरके लक्षण.

खांसी अरुचि संधि २ में पीडा माथ वाय पीनस संताप अंग कंपै शरीर में भारीपना होय नींद आवै नहीं पसीना श्वास पेटमे शूल होय और यही लक्षण

जिस मनुष्यके होयँ और नाड़ी सर्प हंसकी चाल चले तो वात कफज्वर जानो.

अथ वात कफज्वरकी दवा.

कली चूना १० टंक हरताल तबकी १० टंक ले घीकुवारके रसमें ४ पहर घोटै तब गोला बांधि झुरावै फिर गजपुट कर आंच देय शीतल भयेपर रोगीकाबल देखिके १ टंक गरम पानीके साथ देय तो नित्य ज्वर अँतराज्वर तिजारीज्वर चौथियाज्वर वात कफ ज्वर ये सब ज्वर जायँ.

और काढ़ा.

कायफल सूंठि वच नागरमोथा पित्तपापड़ा धनियाँ हर्र काकड़ासिंगी देवदारु भारंगी इन्होंका काढ़ा बनाय पिये तो वात कफज्वर जाय.

अथ कफपित्तज्वर लक्षण.

चटचटाहट और मुख कडू होना, आलस्य होना और खांसी आना, अरुचि प्यास बार२ लगै, दाह होय शरीर ठंढा रहै, ये कफ पित्तज्वरके लक्षण हैं.

कफ पित्तज्वरकी दवा.

सोंठि पित्तपापड़ा धमासा इन्होका काढ़ा कफ पित्तज्वरको दूर करता है.

और काढा.

कटैली गिलोय सोंठि पुष्करमूल चिरायता इन्होंका काढ़ा सर्वज्वरको हरैहै.

ज्वरांकुश रस. कफ पित्त सब ज्वरोंपर.

पारा २५ गंधक २५ विष २५ सोहागाचौकिया २५ त्रिफला ३७॥ लेकर कूटि कपड छानकर अदरखके रसमें घोटि गोली उरद प्रमाण बांधै एक शाम एक सवेरे खाय तो कफ पित्तज्वर सर्वज्वर दूर होय.

अथ सन्निपातका लक्षण.

अकस्मात् क्षण २ मे रोवै हँसै गावै क्षणमें दाह होय क्षणमें सीतलगै क्षणमें स्वभाव फिर जाय इन्द्रियां अपने अपने धर्म्मको छोड़दें शरीरकी संधियोमे हाडोंमें माथेमें पीडा होय आँसू आवें नेत्र काले वा लाल होयँ कानमें शब्दहोय अंगमें पीड़ा होय कंठ परि जाय तंद्रा श्वास कास अरुचि भ्रम होय जीभ काली खरदरी लाठरसी होय लोहूसे मिला कफ होय दिनमें सोवै रातिको जागै पसीना बहुत आवै वा न आवै तृषा बहुत होय छातीमें पीडा होय मल मूत्र उतरै नहीं उतरै तो थोडा उतरै दूबर होय कफ घुरघुराय मौन रहै ओंठ आदि इन्द्रिय पाकि जायँ पेट भारी रहै नाडीकी गति महामन्द होय, सूक्ष्म टूटीसी होय मूत्र

पीला वा लाल वा काला वा सेंदुर समान होय मल काला या सफेद वा सुवरके मांसके समान होय ये लक्षण होयँ तो जानो कि सन्निपात रोग है.

अथ सन्निपातकी दवा, वीरभद्र रस.

(त्रिकुटा) तिरकूठ ३। नोन ९। सौंफ १। दोनों जीरा ३। पारा १। गंधक १। अभ्रक रस १। सबकी कजरी करै फिर अदरख रसमे सब दवा छोंड़िके घोटै फिर अनोपान आदिके रसमे औरसेधौ और चितावरिमें देइ तो तेरहों प्रकारका सन्निपात दूर होय जैसे सिंह हाथीको मारै तैसे ज्वरको वीरभद्र रस मारै.

पुनःदूसरा रस.

पारा शुद्ध, गंधक शुद्ध, विप शुद्ध, २९ टंक जायफल ६२ टंक पीपरी १० टंक पारा गंधककी कजली करै तब दवा डारिके अदरखके रसमे एकदिन खरल करै फिर १ रत्ती प्रमाण रोगीको दीजे तो सन्निपातज्वर शीतज्वर जीर्णज्वर विषूचिका विपमज्वर मन्दाग्नि माथेके रोग सब दूर होयँ.

अथ रोगीकी परीक्षा.

रोगीकी उमर बाकी हो तबभी औषध विना रोगीकी पीडा दूर नहीं होती दृष्टांत जैसे हस्ती कीचडमे खड़ा हुआ उपाय विना निकल नहीं सक्ता उमर बाकी हो

अरु चिकित्सा नहीं करे तो रोगी मरसक्ता है जैसे दीपकमें तेल बाती होतेभी पवनसे दीपक नष्ट होता है तैसे साध्य रोगी चिकित्सा नहीं करे तो स्वल्पासाध्य हो स्वल्पासाध्य चिकित्सा नहीं करे तो असाध्य हो असाध्य चिकित्सा नहीं करे तो मृत्यु होय जबतक श्वास आवें तबतक चिकित्सा करनी चाहिये कोई समयमें चिकित्सासे मरणप्रायभी जीवताहै आदिमें रोगीकी परीक्षा करे पीछे औषधकी परीक्षा करे पीछे समझकर औषध रोगीको देवै.

१ अथ शर्बत गाजुबाँ.

गाजुबाँ पावसेर, खांड एक सेर, पहिले गाजबांको साफ करके दो या तीन पानीसे धोकर कपडेमें बांधि के रातिको भिगावे सवेरे अग्निपर दोसेर पानी डारिके चुरावे जब आधासेर पानी रहिजाय तो खांडडारिके शर्बत तयार करे, एक तोला खुराक शर्बतकी है सब रोगोंपर देवै.

२ अथ गाजबांके शर्बतकी दूसरी विधि.

हरी गाज़बाँका रस एक सेरले और एक सेर सफेद कंदले दोनोको एकमें मिलायके चुरावे तब छानिले सात तोले छःमासे गुलाबका अर्क मिलायके चासनीकरले खुराक एक तोले दे यह हौलदिलकोशांत

करताहै और कलेजेको फायदा देताहै. सुस्ती और फेफराको दूर करताहै.

३ शर्बत नीलोफरकी विधि.

नीलोफरका फूल आधा सेर दोसेर पानीमें सामको भिगावे सबेरे एक सेर चीनी मिलाय कर शर्बत तैयार करै खुराक ९ मासे दिमागको खुश करताहै और पित्तज्वरको दूर करताहै.

४ शर्बत दीनार (कासनी) की विधि.

कासनीका बीज ८ मासे गुलाबका फूल ८ मासे कासनीकी जडका छिलका ४ मासे गाजवां ४ मासे कुसुम ४ मासे सब दवा डेढसेर पानीमें चुरावे और आधा रहजाय तब डेढपाव शक्कर मिलायके चासनी करके खुराक एक तोला अनोपान मुवाफिक सब रोगोंपरदे.

५ शर्बत जूफाकी विधि.

सम्पुकी जड अजमोदाकी जड सोसनकी जड हंसराज अंजीर ये सब बारह बारह मासे ले सवा दोसेर पानीमें चुरावे और आधा रहजाय तब डेढ पाव शक्कर मिलाके शर्बत तय्यार करै खुराक चारि मासे खांसीको दूर करताहै. कलेजेको तर करत

६ शर्बत अनार विलायतकी विधि.

दो सेर अनारके दानेका रस निकालले और ढाई सेर शक्कर मिलाके शर्बत तय्यार करले खुराक दो तोले नजलाको दूर करताहै दिल और दिमागको ताकत देताहै.

७ शर्बत शहतूतकी विधि.

लाल शहतूत दो सेर मलिके छानिले और दोसेर कन्द मिलाकर चासनी करले खुराक दो तोले दिलको प्रसन्न करताहे और कफज्वरको दूर करताहै.

८ शर्बत गुलावकी विधि.

पावसेर गुलावके फूल लेकर दोसेर पानीमें चुरावे आधा रहजाय तव आधसेर शक्कर मिलाकर चासनी करले खुराक एक तोले. पित्तकी गर्मीको शान्त करताहै, और पियासको बुझाताहै. कलेजेको ताक़त देताहै.

९ शर्बत बनफ़शाकी विधि.

वनफ़शाके पत्ता आधपाव लेकर डेढ पाव पानीमें चुरावे जव आधा रहजाय तव आधसेर चीनी डारिके चासनी करले खुराक एक तोले फायदा पलईको गुणकारकहै. फेफडेकी पीडा और शिरकी पीडाके दुःखको दूर करताहै. और ज्वरको फायदा करताहै.

१० शर्बत बेलकी विधि.

पावभर बेलका मगज लेकर भिगावे, एक सेर पानीसे थोड़ा चुरावे फिर डेढ पाव शक्कर मिलाकर चासनी करले खुराक एक तोले कब्जियत दूर करता है खूनी बवासीरको फायदा करता है और दस्त बंद करताहै.

११ शर्बत पुदीनाकी विधि.

एक पाव अनारको कूटकर रस निकाल ले और पुदीनाका रस पावभरि आधासेर कन्द मिलाकर चासनी करले खुराक एक तोला. दिलको प्रसन्न करता व प्यास बुझाताहै.

१२ शर्बत नींबूकी विधि.

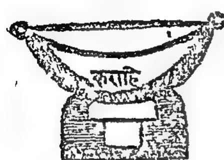
बीसनींबू लेकर उसका रस निकाल कर डेढ सेर सफेद चीनी मिलाकर चासनी करले खुराक एक तोलसे डेढ तोले तक कलेजेकी गरमीको शांत करताहै भूंख लगाताहै और मन प्रसन्न करताहै.

१३ शर्बत केवड़ाकी विधि.

पावभर केवड़ेके फूल लेकर एकसेर पानीमें भिगोकर फिर थोड़ा चुरावे जब आधा रह जाय तब तीनपाव चीनी मिलाकर चासनी करले खुराक एक तोलाहै.

यह यंत्र शर्बत बनानेकी विधिहै.

दवाईका अर्क कढ़ाईमे डालकर मिश्री डालके घुरावै जब गाढा होजावे तब कलछुलीसे चलाकर



उठावै जोकि टोप बांधि लेवै तब कढाईमेंसे निकालकर सीसीमें रखदे इसी तरहसे शर्बत बनाले.

ये यंत्र अर्क उतारनेकी विधिहै.

एक घडाले उसमे पानी डालकर तब उसमें दवाई डालके ढपनासे घड़ाको बन्द करदे मधुरी आंचसे



चुरावै जब आधा रहजाय तब कोई दवाईका अर्कहो इसी तरहसे बनाले अर्क की यही विधिहै शर्बत बनानेके वास्ते.

१४ शर्बत पानकी विधि.

पक्का पान दोसे मलके रस निकाल ले और एक सेर कन्द मिलाकर चासनी करले खुराक एक तोलेसे दोतोले तक दिलको प्रसन्नकरता है शरीरको ताकत देताहै.

१५ शर्बत इमली विधि.

आधासेर इमलीको दोसेर पानीमें भिगोकर उस

को मलिके छानिके एक सेर कन्द मिलाकर चासनी करले. खुराक सवातोला, उलटीको शान्त करताहै.

१६ शर्बत चन्दनकी विधि.

चन्दनका चूरन एकसेर पांचसेर पानीमें अंगार पर छुरावै जब आधा रहजाय तब चारसेर कन्दमें मिलाकर चासनी करले खुराक एक तोला पित्तज्व-रको दूर करताहै उलटी शान्त करताहै, भूख लगा-ताहै, और तमाम शरीरको खुश करताहै.

मृगीकी दवाई.

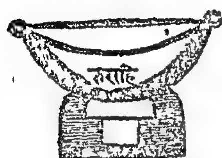
दोहा—बच खुरशानी शहद सँग, दोयटंक जो देय ॥
मृगी-रोग तुरते हरै, दूध भात पथ लेय ॥
ब्रह्मणी वच कुट संगसो, शंखाहोली लेय ॥
गऊ मूत्रमे पीजिये, मृगी व्याधि क्षय होय ॥
मिरच डिठोहरिमें धरै. दिनइक्किस परिमान ॥
जलसों नाश सुलीजिये, होय मृगीकी हान ॥

परमाकी दवाई.

शंखाहोलि, इलाइची, शिलाजीत पुनिलेय ॥
सब परमोंका दुख हरै, प्रात समय जो सेय ॥
रस गिलोय निकालके, पीजे शहद मिलाय ॥
सब परमाका दुख हरै प्रात समय जो खाय ॥

यह यंत्र शर्बत बनानेकी विधिहै.

दवाईका अर्क कढ़ाईमे डालकर मिश्री डालके चुरावे जब गाढा होजावे तब कलछुलीसे चलाकर



उठावे जोकि टोप बांधि लेवे तब कढाईमेसे निकालकर सीसीमें रखदे इसी तरहसे शर्बत बनाले.

ये यंत्र अर्क उतारनेकी विधिहै.

एक घडाले उसमें पानी डालकर तब उसमें दवाई डालके ढपनासे घड़ाको बन्द करदे मधुरी आंचसे



चुरावे जब आधा रहजाय तब कोई दवाईका अर्कहो इसी तरहसे बनाले अर्क की यही विधिहै शर्बत बनानेके वास्ते.

१४ शर्बत पानकी विधि.

पक्का पान दोसै मलके रस निकाल ले और एक सेर कन्द मिलाकर चासनी करले खुराक एक तोलेसे दोतोले तक दिलको प्रसन्नकरता है शरीरको ताकत देताहै.

१५ शर्बत इमली विधि.

आधासेर इमलीको दोसेर पानीमें भिगोकर सुब

को मलिके छानिके एक सेर कन्द मिलाकर चासनी करले. खुराक सवातोला, उलटीको शान्त करताहै.

७६ शर्बत चन्दनकी विधि.

चन्दनका चूरन एकसेर पांचसेर पानीमें अंगार पर चुरावै जब आधा रहजाय तब चारसेर कन्दमें मिलाकर चासनी करले खुराक एक तोला पित्तज्व-रको दूर करताहै उलटी शान्त करताहै, भूख लगा-वाहै, और तमाम शरीरको खुश करताहै.

मृगीकी दवाई.

दोहा—बच खुरशानी शहद सँग, दोयटंक जो देय ॥
मृगीरोग तुरतै हरै, दूध भात पथ लेय ॥
ब्रह्मणी बच कुट संगसो, शंखाहोली लेय ॥
गऊ चीवमे पीजिये, मृगी व्याधि क्षय होय ॥
मिरच डिठोहरिमें धरै. दिनइक्किस परिमान ॥
जलसों नाश ज़ुलीजिये, होय मृगीकी हान ॥

परमाकी दवाई.

शंखाहोलि, इलाइची, शिलाजीत पुनिलेय ॥
सब परमोका दुख हरै, प्रात समय जो सेय ॥
रस गिलोय निकालके, पीजे शहद मिलाय ॥
सब परमाका दुख हरै प्रात समय जो खाय ॥

बवासीरकी दवाई.

दोहा–दुद्धीबाडि जो आनिकै, लौंग संगमें खाय ॥
वा घृतसँग जो पीजिये, खून ववेशी जाय ॥

बूटीका गुण.

दोहा–पातकसौंजी विष हरै, जडसे सांप डराय ॥
फलसे वावडरातहै, फूल रतौंधी जाय ॥

वांझिनी स्त्रीका लक्षण.

दोहा–सुखडब्बाकुचपुट्टुप सम, कटिविसाल जो होय ॥
कवि कोविद दोऊ कहैं, होय वांझिनी सोय ॥

दरिद्रिनी स्त्रीका लक्षण.

दोहा–जाकोनाभिगंभीरअति, श्रवणहोइं जसशूप ॥
सोतिय होय दरिद्रिणी, जो पावैपतिभूप ॥

अथगुंजाप्रकाशविधि.

दोहा–गुंजाकी गति कहतहौं, कौतुक चरित अपार ॥
गिरिजासों शिव यों कह्यो, सब कल्पनको सार ॥
भूत रु डाकिनि प्रेत गण, यक्ष वीर वैताल ॥
इक गुंजाके कल्पमें, कोटिन माया जाल ॥
बहुत चरित हैं कहौं कुछ, सकल कल्पकी खानि ॥
जो चाहे सोई करै, साधनके बरदानि ॥
अब याके साधन करै, यथायोग उपदेश ॥
जो साधै सो सिद्धिहै, कसर नहीं लवलेश ॥

पुष्य होय आदित्यको, जो लीजे यह मूल ॥
शुक्रवार की रोहिणी, गहन होय अनुकूल ॥
कृष्णपक्षकी अष्टमी, हस्त नक्षत्र जु होय ॥
अर्धरात्रिको जायके, मनकी शंका खोय ॥
धूप दीपदे लायकर, धरे दूधमें धोय ॥
जो काहू नर नारिके, विषधर काटे होय ॥
विष उतरे सब तुरतही, जानि पिलावे सोय ॥
जो घिसिकर मुखमें तवे, सभामध्य नर जाय ॥
हाँजी हाँजी सबकहे, जोइ कहे सो थाय ॥
चतुरलोग याविधि करे, कबहुं न आवे आंच ॥
एक जड़ीके युक्त सों, सबै नचावे नाच ॥
तांबा माँहि मढ़ायके, कटिमें बांधे कोय ॥
नवें मास वहि नारिके, निश्चय बालक होय ॥
काजलसो घिसि आंजिये, मोहै सब संसार ॥
जो मँगे वह वस्तु कछु, सो लावे तत्कार ॥
जोघिसि पयके योगसों, लेपनकीजे अंग ॥
भूत प्रेत अरु यक्ष गण, लगे फिरैं सब संग ॥
घिसिके रुई भिगायकर, बाती करे बनाय ॥
फेर भिगावे तेलसों, दीपक धरे जलाय ॥
होय अचंभो शयन तब, मृत्युक सभा देखाय ॥
मनमें ले स्तुति करे, सबही पूजे पाय ॥
जो घिसिये वह घीवसों, लेप शरीर बनाय ॥
केसाही होवे हठी, लावे प्रीत लगाय ॥

भेष मूत्रसों रगरिके, जो लेपै द्वौ हाथ ॥
कहे दूरकी वात वह, सब मानो है साथ ॥
गोरोचनको लौंगसे, लिखिये जाको नाम ॥
मित्र होय वह तुर्तही, नहिं वैरीके काम ॥
वेल अर्कसों युक्तकर, अंजन लेय बनाय ॥
भूत प्रेत अरु डाकिनी, देखतही भगिजाय ॥
खांड संग जो रगरिके, तलवातले लगाय ॥
आंखि मिजतके पलकमें, सहस कोस उड़िजाय ॥
जो घिस आंजे पीकसों, जादिश नज़र कराय ॥
व्याधि परेसो छुट नहीं, कोटिन करे उपाय ॥
जो गुलाबसों रगरिके, नाभी लेपकराय ॥
त्यहि शरीर वड़िचारमे, जागे सहज उपाय ॥
फिरि याको ले तेलसों, जो घिसि आंजे कोय ॥
धन देखे पातालका, दैवी दृष्टी होय ॥
जो वाघिनिके घीवसों, घिसि चुपरे सब देह ॥
तीर तुपक लागे नहीं, ज्यों बरसे घन मेह ॥
घिसिकै तिलके तेलमें, मर्दन करै शरीर ॥
देखे सब संसारको, महावीर रणधीर ॥
जो अलसीके तेलमें, घिसिथे शहद मिलाय ॥
कूटकाट लेपन करै, कंचन तनु ह्वैजाय ॥
जो मुर्गीके वीटसों, अंधा आंजे कोय ॥
सात दिना जो आंजही, दृष्टि चौगुनी होय ॥

कस्तूरीसों आँजिये, प्रातसमय लवलाय ॥
नृत्य लखै संसारकी, काल रूप दरशाय ॥
गंधक संग मिलायके बीसों नखन लगाय ॥
जो नर होय कुमारगी, देखत वश ह्वै जाय ॥
धो आंजे निज मूत्रसों, खुलै रागिनी राग ॥
जो पीवै घिसि गाभमें, मिटे देहका दाग ॥
गंगाजलसों आंजिये, दोनो नयनों माह ॥
वर्षा वर्षै पुष्पकी, होय अचंभो नाह ॥

यंत्र. १

यह यंत्र गोरोचनसों भोजपत्रपर लिखै फिर गूगुल की धूप देकर कंठमें बांधे जिस औरतका लड़का जीता नहो तो जीवै और होता नहीं होय तो होवै, यंत्र लिखनेकी विधि. अच्छे दिन और अच्छे नक्षत्र में लिखै और जिस जगह किसी चीजपर लिखनेका प्रमाण नहीं है वहां भोजपत्रपर लिखे और जहां कलम नहीं लिखीहै वहां अनारकी कलमसों लिखना चाहिये. और जो

संकरमातु संकरापितु

१०	१२	४	९
१	३	१८	१३
१६	१५	९	४
२	७	१७	१४

किसी चीजसे लिखनेको न लिखा हो तो देवी चंदनसे लिखना चाहिये. प्रथम स्नान करिके कोई होवे. यंत्र फूल और नैवेद्य देय करके उत्तर मुँह होकर लिखना.

यंत्र २

यह यंत्र शीघ्र काम पूर्ण करनेके वास्ते है जो कोई अपने संकेत पड़े पर लिखे और दहिने हाथपर बांधेतो अवश्य काम सिद्धि होय.

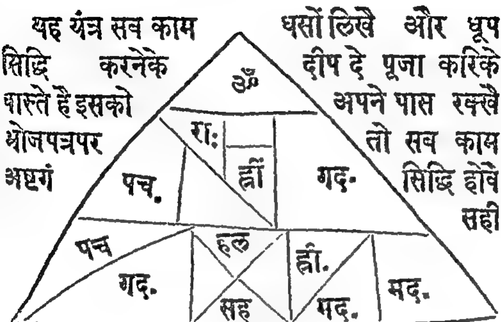
मं. ४	ह्रॉं १	ॐ ८
महः ५	ह्रीं २	श्रीं. ९
सः ६	श्रीं ३	ह्री. ८

यंत्र ३

यह यंत्र एतवारके रोज लिख दहिने हाथमें बांधे तो चौथिया ज्वर छूटिजाय, पीछे जो कुछ बनि परे सो दान देय जरूर.

सः ७ ४	सः १	साः ३ ८
सः ९	२ सः	सः ५
सः ८	सः ६	सः ४

यंत्र ४



यह यंत्र सब काम सिद्धि करनेके वास्ते है इसको भोजपत्रपर अष्टगं धसों लिखै और धूप दीप दे पूजा करिके अपने पास रक्खै तो सब काम सिद्धि होवे सही

यंत्र ५

इस यंत्रको भोजपत्रपर लिखकर व धूप देकर गलेमें बांधे तो किसी तरहका भय न होवै. भूत नहीं लगै जो लगा होय तो छूट जाय. इस यंत्रको जगाइ करके लिखै.

१४	७	४	३
६	३	६	९
७	३	४	१४
४	१४	३	७

यंत्र ६

यह यंत्र जूडीके वास्ते है इसको भोजपत्रपर लिखकर जगायके गलेमें बांधे तो जूडी जाय सही.

७	२	८
८	६	४
३	८	९

यंत्र ७

यह यंत्र पंद्रहाँ है बहुत दिन जगायके भोजपत्र पर लिखे जिस औरतके लड़का न होता हो उसके कटिमें बांधे तो बहुत जलदी लड़का हो जावे

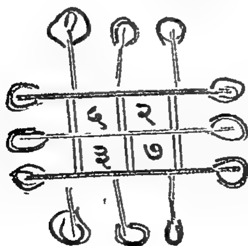
२	९	४
७	५	३
६	१	८

यंत्र ८

यह यंत्र (अधकपारी) आधाशीशीके वास्ते है एतवारको वा मंगलको लिखकर बांधे तो अध कपारी जाय.

	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

यंत्र ९



यह यंत्र पीपरके पत्तापर रविवारक लिखकर हाथमें बाँ तो अंतराज्वर जाय

यंत्र १७

यह यंत्र कागजपर बुधकेदिन हरदीसे लिखकर जो लड़का बहुत रोता होय उसके गलेमें बॉधै तो रोवै नहीं और चुप होय.

१४८	१३	१३८	६
२	१४६	१२	१३९
९३	७	१४०	१
२०	१३४	९	१४७

यंत्र १८

यह यंत्र स्याहीसे कागजपर लिखे जिसकी आँख आवती होय उसको देखावै तो आंखें न उठें.

५७८२०६०२

यंत्र १९

यह यंत्र पीपरकेप त्तापर लिखे जिसके चुरैल लगी होय उसके गलेमें गूगलकी धूप देके बाँधे तो छूटिजाय.

ह्७१००३ ७१३७१००
३७७००७७००३७००
ह्७०० देवदत्त. ३० ६० ०

यंत्र १३



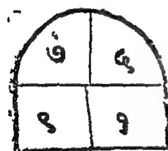
यह यंत्र नीबीके रससों कौवाके परसों लिखै शत्रु दूर होय.

यंत्र १४

६३	४२
३११	७०

यह यंत्र स्याहीसों लिखकर माथेमें बाँधै तो आधाशीशी दूर होय सही.

यंत्र १५



यह यंत्र कागजपर स्याहीसों रवि दिन लिखै और सूर्यके सामने पानीमें धोय कर पीवै तो वायगोला जाय.

यंत्र १६

भः	ज	व.
क.	ग	जः
छः	छः	दः

यह यंत्र कानकी पीडाके वास्ते है लिखकर कानमे बाँधै तो पीडा दूर होय.

यंत्र १७

यह यंत्र कागजपर बुधकेदिन हरदीसे लिखकर जो लड़का बहुत रोता होय उसके गलेमें बाँधै तो रोवै नही और चुप होय.

१४८	१३	१२८	६
२	१४६	१२	१३१
९३	७	१४०	१
२०	१३४	९	१४७

यंत्र १८

यह यंत्र स्याहीसे कागजपर लिखे जिसकी आँख आवती होय उसको देखावे तो आंखें न उठें.

(६७८२०६०२)

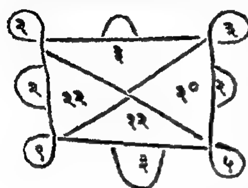
यंत्र १९

३७१००३ ७१३७१००
३७००७७००३७००
३७०० देवदत्त. ३० ८०
०

यह यंत्र पीपरकेपत्तापर लिखे जिसके चुरैल लगी होय उसके गलेमें गूगलकी धूप देके बाँधे तो छूटिजाय.

यंत्र २०

यह यंत्र कोरे खपड़ापर लिखे और जिसके प्रेत लगा होय उस आदमीका नाम लिखे पीछे रोगीको देखायके अग्निमें जराय दे तो प्रेत भागे.



यंत्र २१

५५१	२१७	३६९
५५५	१३८३	४९३
७४२	१२७७	१९२१
८८१	५५६	१००१

यह यंत्र रवि दिन लिखिके गलेमें बाँधे तो ताप जाय.

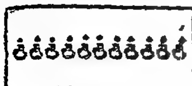
यंत्र २२

६९	१९	८९
७९	५९	३९
२९	९९	४९

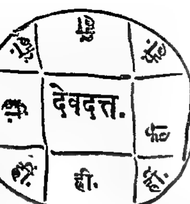
यह यंत्र गुडगुडीके वास्तेहै पीपरके पत्तापर लिखिके दहने हाथमे बाँधे तो गुडगुडी दूरि होय.

यंत्र २३

यह यंत्र केसो संकट होय तो अष्टगंधसो भोजपत्र पर लिखिके गलेमे धूप देके बाँधै संकटसे छूटे सही.



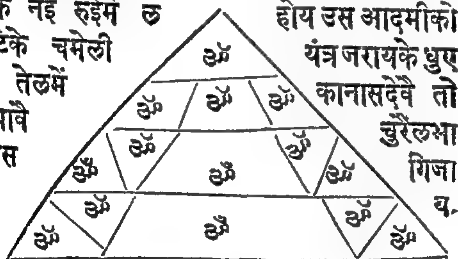
यंत्र २४



यह यंत्र नजरके वास्ते है कागजपर अष्टगंधसे लिखकर गलेमें बाँधे तो नजर दूर होय.

यंत्र २५

ह यंत्र कागजपर लि आदमी के चुरैलल्गी
के नई रुईमे ल होय उस आदमीको
टिके चमेली यंत्र जरायके धुए
तेलमें कानासदेवे तो
वावे चुरैलभा
स गिजा
य.



यंत्र २६

चक्रव्यूह.

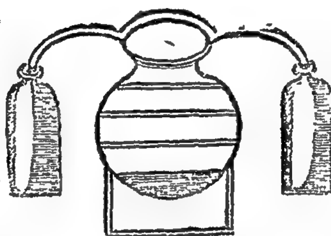
यह चक्रव्यूह कागजपर लिखके
ती स्त्रीके लडका होनेका दिन पूरा
रण होवै और वह स्त्री कष्टमें होय



लडका होता न होय तो इस चक्रव्यूहको बनाकर दिखावे तो उस स्त्रीके तुर्त लडका होवे और कष्ट सब दूरहोय और एक छटांक गायके दूधमें पावभर पानी मिलाके पियावे तो तुर्त लडका होय.

यंत्र २७

यह यंत्र डबल नलीकाहै इसमे बनानेको दवाईलिखते हैं गुलाब के फूल आधा सेर और केवडाके फूल पाव

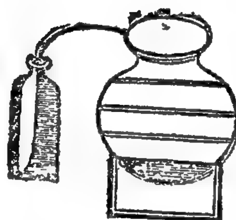


भीर चमेलीके फूल पाव भरि सौंफ एक सेर चिरेता एक सेर कुलंजन आधा सेर बच पावभर सनायकी पत्ती आधा सेर अमिलतास पाव भर इन सब चीजोंको मिलाकर घडामे डाले और डेढ मन पानी डाले सबेरे भट्ठीपर चढावे मधुरी आंचसो अर्क खींचे बारह बजेतक समाप्त हो तब अर्क निकाल कर शीशीमें रक्खे जिसको जुलाब देना होय उसको पाव २ दो दिन पिलावे तब जुलाब देतो शरीर निरोग होय और जुलाब बहुत अत्यु-

तम होय जिसका कोठा शर्द होय उसको गर्म करे और जिसका गर्म होय उसका नर्म करे.

यंत्र २८

यह यंत्र एक सी तरहका होतो इसीतर नियाँ पाव भर बीज पाव भर भर गुलाबके



नलीकाहै कि अर्क खींचना हसे खींचे ध-कासनीका पुदीना पाव फूल पावभर सौंफ पावभर शक्कर एक सेर ये सब एक घड़ामें डालके शामको एक मन पानी डालके रखदे सवेरे अग्नि जरावे मधुरी आंचदे अर्क निकले सो शीशी रखदे ॥ गुण ॥ करेजेकी गर्मीको तर करताहै उल-टीको रोकताहै इन्द्रीको साफ कर देताहै गर्म मिजाज वालेको बहुत फायदा करता है भूख लगाताहै सब रोगोंको हरताहै जो किसी दवाईका अर्क खींचना होतो रबल नली या एक नलीसे खींच लेवे.

यंत्र २९

इस यंत्रको विद्याधर कहते हैं जो किसी धातुका या कोई दवाईका पारा निकालना होय तो इसी यंत्रसे निकाले सिंगरफ रसकपूर और सेंदुर जिस धातुसे पारा निकलताहै उससे निकाले सिंगरफ २ तोला लेकर नीबीके पत्तामे खल करे तब टिकिया बनाकर नीचेके घड़ाकी पेदीमें रखके कपड़मिट्टी कर सुखायके उस घड़ेको चूल्हापर रखकर नीचे अग्नि जधावे और सिंगरफसे जो पारा निकलकर ऊपरके घडामें लगै तो वह पारा लोकप्रसिद्ध होय और आधाचावल पानके साथ खाय तो नामर्द मर्द होय.

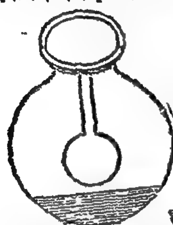
यंत्र ३०



यह डमरू यंत्र है जो किसी धातुका जौहर उड़ानाहो तो वह दवाई खल करके नीचेकीहंडीमें रक्खे और अग्नि ६ घंटा लगावे जब जौहर उड़के ऊपरकी हंडीमे लगै तो सब काममें बैपरे अब इसके बनानेकी और एक विधि लिखते हैं आंवरासार गंधकको चूर्ण करके जौहर उड़ावे तो सब काममे बैपरे.

यंत्र ३१

इसको स्वेदनयंत्र कहते हैं एक बड़ा घड़ा लेकर



उसमे आधा घड़ा पानी डालके तब आधा सेर गंधापिरोजा लेकर गोदन दुद्धीके लुगदीमे रखकर तब कपडामें पोटरी बांधिके रस्सी में बांधकर घड़ामे लटकावे और घड़ाके ऊपर एकछोटीहंडी रखकर कपड़मिट्टी करके तब अग्नि जरावे ६ घंटा आंचदे तो सब गंधापिरोजा घड़ाकी पेदीमे चूचूकर गिरे सो गंधा पिरोजा फिर इसी विधिसे चार दफे कपडमिट्टी करके चुआवै तो सब काममें बेपरे सुजाक जो कि पीब बहता हो सो सात दिनमे अच्छा होय मिश्री ६ मासे इलायची ६ मासे गंधापिरोजा६ मासे ये सब दवा खाय १८ दिन और गायका दूध आधासेर पीवै तो परमा पथरी सब रोग दूरि होयें और यह गंधापिरोजा सब रोगपर देय और इसीविधिसे गंधापिरोजाका सत निकाला जाता है.

यंत्र २९

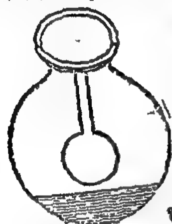
इस यंत्रको विद्याधर कहते हैं जो किसी धातुका या कोई दवाईका पारा निकालना होय तो इसी यंत्रसे निकाले सिंगरफ रसकपूर और सेंदुर जिस धातुसे पारा निकलताहै उससे निकाले सिंगरफ २ तोला लेकर नीबीके पत्तामें खल करे तब टिकिया बनाकर नीचेके घड़ाकी पेंदीमें रखके कपड़मिट्टी कर सुखायके उस घड़ेको चूल्हापर रखकर नीचे अग्नि जरावे और सिंगरफसे जो पारा निकलकर ऊपरके घडामें लगै तो वह पारा लोकप्रसिद्ध होय और आधाचावल पानके साथ खाय तो नामर्द मर्द होय.

यंत्र ३०

यह डमरू यंत्र है जो किसी धातुका जौहर उड़ानाहो तो वह दवाई खल करके नीचेकीहंडीमें रक्खे और अग्नि ६ घंटा लगावे जब जौहर उड़के ऊपरकी हंडीमें लगै तो सब काममें वेपरै अब इसके बनानेकी और एक विधि लिखते हैं ऑवरासार गंधकको चूर्ण करके जौहर उड़ावै तो सब काममें वेपरे.



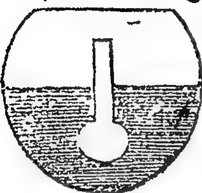
यंत्र ३१



इसको स्वेदनयंत्र कहते हैं एक बड़ा घड़ा लेकर उसमें आधा घड़ा पानी डालके तब आधा सेर गंधापिरोजा लेकर गोदन दुद्धीके लुगदीमें रखकर तब कपडासे पोटरी बांधिके रस्सी में बांधकर घड़ामें लटकावे और घड़ाके ऊपर एकछोटीहंडी रखकर कपड़मिट्टी करके तब अग्नि जरावे ६ घंटा आंचदे तो सब गंधापिरोजा घड़ाकी पेंदीमें चूचूकर गिरे सो गंधा-पिरोजा फिर इसी विधिसे चार दफे कपडमिट्टी करके चुआवै तो सब काममें वैपरै सुजाक जो कि पीब बहता हो सो सात दिनमें अच्छा होय मिश्री ६ मासे इलायची ६ मासे गंधापिरोजा६ मासे ये सब दवा खाय १५ दिन और गायका दूध आधासेर पीवै तो परमा पथरी सब रोग दूरि होयँ और यह गंधापिरोजा सब रोगपर देय और इसीविधिसे गंधापिरोजाका भात निकाला जाता है.

यंत्र ३२

इस यंत्रको वालुकायंत्र कहतेहैं इस यंत्रमें ऐसा



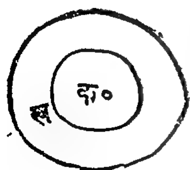
करे कि लोहेकी कराही लेकर उसमें वालू भरके वालूके बीचमें सीसीरखके मधुरी आंचदे जितना रसका परिमाण होय तितना ऑचदे कोईभी रस होय.

यंत्र ३३



यह गोरीयंत्रहै कोई रस होय तो इसी यंत्रमें सिद्ध कर लेय.

यंत्र ३४



इसको चक्रयंत्र कहते हैं इस यंत्रमे पारा सिद्ध होताहै बीचके घरमें पारा बाहरके घरमें उपरी इस विधिसे भट्ठी लगावे.

यंत्र ३५

इस यंत्रको जल यंत्र कहतेहैं अब तेजाब उतरनेकी विधि लिखते हैं फिटकरी पावभर नौसादर पावभर चौकिया सोहागा पावभर कलमीसोरा पावभर नीलाथोथा पावभर आंवरासार गंधक पावभर सबको एकमें मिलायके खल करे तब नीचेकी हंडीकी पेंदीमें मिट्टी धरे और मिट्टीके ऊपर गिलास रक्खे और घड़ाके अंदर दवाई रक्खे और दूसरे घड़ामे पानी भरके दवा वाले घड़ाके ऊपर रक्खै मधुरी आंच दे जब ऊपरके घड़ाका पानी गर्म होजाय तो सँभारके तेजाब निकालले अब इसका गुण लिखतेहैं बरबट वायगोला तापतिल्ली कछुई जाकूट पिलही उदररोग सब दूर होय खुराक

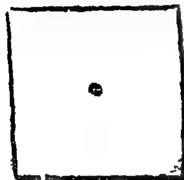


९ मासे ६ तोले पानी डालके पीवै.

यंत्र ३६

इस यंत्रकोगजपुट बोलतेहै एक गज ऊंचा एक गज चौड़ा एक गज गहिरा इसके बीचमे दवाईका कपड़मिट रक्खै उसके चारो तरफ बीना हुआ

रखकर अग्नि जरावे और इसी मंत्रसे कोई यंत्र होवे



अग्नि जरावे (मंत्र) खाक फूंके तो मंत्र स्यों ह्रीं क्रीं श्रीं गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ॐ ॐ कर वीज मंत्र इति.

यंत्र ३७

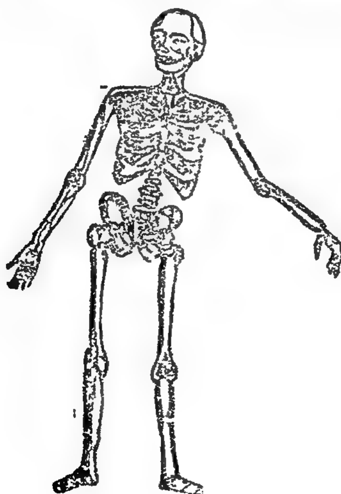


यह शीशी मृगांक बनानेकी है इसके चारों तरफ अग्निहै बीचमें कांच की सीसीहै, जो मृगांकके सदृश दवाई बनावे तो इसी तरहसे बनावे.

इति श्री मुन्शी भगवानप्रसाद शिष्य भगत भगवानदास विरचित वैद्यकरसराजमहोदधि वंदना भूमिका रोगविचार नाडीपरीक्षा शरीरकी चेष्टा निरोग होनेका वर्णन स्वप्न विचार दूतपरीक्षा असाध्यलक्षण मलज्वर आठोज्वरका लक्षण दवा कफज्वर शीतज्वर कामज्वर रक्तज्वर लक्षण उपाय सर्वज्वर दूर होनेका लक्षण वादी बिगडेका लक्षण खून बिगडेका लक्षण वात पित्त मिश्रित होनेका लक्षण वातका लक्षण, और कफ खांसीका लक्षण मन्दाग्नि और संग्रहनीका लक्षण, खूनी बवासीर और दादका

लक्षण अठारह तरहके शर्बत बनानेकी विधि और गुण मृगीकी दवाई परमाकी दवाई बवासीरकी दवाई बूटीका गुण और बांझनी दरिद्रिनी स्त्रीका लक्षण गुंजा प्रकाशकी बत्तिस विधि और गुण, छव्वीस प्रकारके यंत्र और अर्क खींचने और रससिद्धि करनेकी विधि नाम प्रथमखंड समाप्तम् ॥ १ ॥

यह यंत्र शिरसे पॉव तक शरीरकी हड्डीका है.



१ सिंघियाविष शोधन.

दो तोले सिंघिया विष लेकर भैंसाके गोबरमें डारिके दो घंटे चुरावै तब सिंघियाको निकाल कर सींक गोदे जोकि सींक उसमें धंसजाय तो उसको सफाकरके दूधमें चुरावै तो सब काममें बेपरै.

२ अथ विषका गुण.

रसायनहै, बलकरै है, त्रिदोषको दूरि करैहै, वात व शीत पित्त कफ कोढ़ खांसी दमा श्वास पीलही जाकृति कंठोदर उदररोग इत्यादिको अनोपान मुवाफिक सब रोगोको हरै .

३ कुचिला शोधन.

कुचिलाको गऊके मूत्रमे दशदिन डारिके रक्खै तब उसको निकालके छीलके टुकड़े २ काटै फिर दूधमे चुरावै शुद्ध होयगा (गुण) गर्म है वातको हरताहै लकवाको हरताहै और दमाको दूर करताहै अनोपान मुवाफिक सब रोगको हरताहै जो जडा पीमें चुरावै तो निहायत फायदादेवेगा.

४ अथ धतूरा शोधन.

गउ के मूत्रमें धतूर का चार घडी रक्खै फिर निकाल कर धो डाले तब सब काममें वेपरै (गुण) गर्म है

अग्निको बढाता और नसा करताहै वमनकारीहै ज्वर आदि सब रोगों को दूर करताहै.

५ जमालगोटा शोधन.

जमालगोटेको भैंसाके गोबरमें डारिके छःघंटे धुरावै तब फिर उसकी छालको निकाल कर जीभी निकालके नीबूके रसमें दो दिन खल करै तब सब काममे वैपरै (गुण) पित्त कफको हरताहै और दस्त लाताहै उदर रोगको पील्हा बीछूको सर्वविषको व सब रोगको दूर करताहै.

६ भेलावाँ शोधन.

भेलावाँको पानीमें डालकर एक दिन चुरावै फिर उसका टुकड़ा २ करके दूधमें चुरावै फिर उसको निकालके एक तोला सोंठि और अजवाइन चार तोला डाल खूब खल करै तो सब काम मे वैपरै (गुण) फोडा खाज खाँसी दमा इत्यादिक सब असाध्यरोग कोढ़ रोगको हरै.

७ गुंजा शोधन.

गुंजाको कांजीमें चुरावै तीन घंटे (गुण) हल्कीहै शीतलहै खांसी श्वास कोढ खुजली कफ पित्त सब विकारको दूर करती है.

८ आक शोधन.

आकको खल करके शुद्ध हुआ (गुण) वादी कोढ़ खुजली तापतिल्ली गोला ववासीर जाकुती कंठोदर कृमिरोग सब रोगको हरै.

९ कलियारी शोधन.

कलियारी के टुकड़े २ करके एकदिन गोमूत्रमें भिगोनेसे शुद्ध हो (गुण) दस्त लाताहै कुष्ठ ववासीर पक्कृति कफोदर और कृमिरोगको दूर करताहै.

१० कनेर शोधन.

कनेरके टुकडे २करके गायके दूधमें डोलायंत्रसे चुरावे शुद्ध हुआ (गुण) गर्म है नेत्रको गुण करताहै कोढ़ जरन खुजली सब रोगको दूर करताहै.

बिष सेवनेकी विधि.

मिश्री दूध शहद घृत चावल गेहूंकी रोटी इतना सेवन करै आचारपनसे रहै.

प्रमाण खानेका.

एक बजरीसे दो बजरी तक जैसा बल देखै तैसा रोगी को दे तो सब रोगोंको अनुपान मुवाफिक हरै.

अथ बछनागकी शांति.

हीरवण वृक्षके रसमें मिश्री मिलाकर पिये तो विष शांति होय.

२ अथ धतूरके विषकी शांति.

बैंगनके बीजोंका रस पीनेसे धतूरका विष शांति होय तथा मिश्री दूध पीनेसे शांतिहोय.

३ अथ भिलावेके विषकी शांति.

चौलाईका रस मक्खनमें मिलाकर जहां भिलावेकी सूजन होवे उस जगह लगानेसे भिलावेका विष शांति होय.

४ अथ भांगकेविषकी शांति.

सोंठिके चूर्णको गायके दहीके साथ सेवन करनेसे भांगका विष शांति होय.

५ अथ गुंजाके विषकी शांति.

चौलाईके रसमें मिश्री मिलाय पीनेसे और ऊपर दूध पीनेसे गुंजाका विष शांति होय.

६ अथ कनेरके विषकी शांति.

मिश्रीमे भैंसका दही मिलायके पीनेसे कनेरका विष शांति होय.

७ अथ थूहरके विषकी शांति.

शीतल जलमे मिश्री मिलाय पीनेसे थूहरका विष शांति होय.

८ अथ जयपालके विषकी शांति.

धनियाँ मिश्री दही तीनों मिलाय पीनेसे जयपालका विष शांति होय.

९ अथ अफीमके विषकी शांति.

बड़ी कटेरीके रसमें दूध मिलाय पीनेसे अफीमका विष शांति होय.

१० अथ शंखियाके विषकी शांति.

घी गर्म करि पीनेसे तथा दूध मिश्री मिलाइके पीनेसे शंखियाका विष शांति होय.

जो बहुत विष खालिया होय तो जुलाब देवै उलटी करावै. इति विषकी शांति समाप्त.

अथ हरताल मारनविधि.

१एक तोला हरताल इन्द्रायणके एक फलमें रखके चार कपडमिट करके सुखाय डालै फिर सवासेर बिनुवा कंडोमें फूंकदे इसी तरहसे इक्कीस इन्द्रायनमें फूंकै तो हरताल पानी सोखन (गुण) कुष्ठ रोग व अनोपान मुवाफिक सब रोग दूर करता है.

दूसरी बिधि.

हरताल दो तोला लेके घीकुवारि के रसमें दो दिन खल करै तब गोला बांधिके सुखावे फिर तगईके वियों की लुगदीमें रख कपडमिट करिके तीन सेर कंडोमें फूंकदे (गुण) कोढको दूर करताहै इसका गुण वर्णने योग्य नहीं है.अनोपान मुवाफिक सब रोग दूर करताहै.

अबरख मारनेकी दूसरी विधि.

अबरख लेकरके कूटै तब मूलीके रसमें १५ दिन रक्खै फिर गुरमें खल करके फूंकदे फिर मूलीके रसमें १५ दिन रक्खे फिर हुरहुरके रसमें १५ दिन रक्खै फिर कलमीसोरामें खल करै फिर गुरमें १५ दिन खल करै तब कपड़मिट करिके फूंकदे इसी तरह चार दफे फूंके तो सब रोग हरै अनोपान मुवाफिक.

शंखिया मारन विधि.

शंखिया एक तोला लेकर मुरईकी राख आधा सेर एक हंडी लेकर हंडीके अन्दर आधी राख रक्खै तब शंखिया रक्खै और जो आधी राखहै उससे ढांक दे फिर हाथसे दबादे हंडीके ऊपर ढकना रखकर कपडमिट करके चूल्हे पर रखके एक दिन चिराग की टेम सम आँचदे तब शुद्ध होय खुराक आधा चावल श्वास कास दमा शीतज्वर पित्तज्वर अनोपान मुवाफिक सब रोग हरै.

दूसरी विधि.

पापडखार चारतोला शंखिया एक तोला लेकर मिट्टीकी एक ढकनी लेकर उसमें आधा पापडखार रखना तब शंखियारखना फिर दूसरे ढकनेसे ढांक देना. कपडमिट करके सुखायके आधामन गोबरीमें फूंकदे फिर रोगीको देख कर बल विचारके दे आधा

चावलसे एक चावल तक ये दवा सर्व प्रकारके रोग को दूर करती है, अनोपान मिश्री, दूध, घी.

अथ शिलाजीत शोधन.

त्रिफलाके रसमें एक दिन घोटै फिर एकदिन दूध में घोटै तो शिलाजीत शुद्ध होय खुराक ६ मासे आधासेर दूधके साथ जो मनुष्य एक महीनासेवै तो शरीर पुष्ट होय वल होय वीर्य बढे अनोपान मुवाफिक सब रोग हरे शिलाजीतका गुण कुछ वर्णने योग्य नहीं.

अथ मैनशिल शोधन.

मैनशिल अगस्त्यके रसमें घोटै अथवा अदरखके रसमें घोटै शुद्धहोय तो सब काममे वैपरै (गुण) कडु-आहै विषको हरै श्वास कास आदि सब रोगोको हरै.

अथ रसकपूर मारनविधि.

एक तोला रसकपूर लेके बिजौरा नींबूके बीचमें रखके मुलतानी मिट्टीसे कपडमिट करके सुखायके एक सेर बीना हुआ कंडा लेकर उसमें रखके फूंकिदे पीछे रस निकालके ताँबामे डाले तो पानी सोखन होय.

अथ खपरिया शोधन.

खपरिया लाल करिके सात बेर नींबूके रसमें बुझावे तो शुद्ध होय और सब काममें आवे.

अथ नीलाथोथा शोधन.

सिर्का अथवा अचारमें दोतोला नीलाथोथाको

एक पहर घोटे फिर टिकरी करिके आगमें फूंक दे तो सब रोगोंको गुणकारीहै. खाज, कोढ, और सम्पूर्ण आंखिके रोगोको बहुत फायदा करताहै.

अथ मोती मूंगा मारन विधि.

मोती, मूंगा कपड़ामें बाँधिके एक घड़ामें आधा घडा इंद्रायणका रस डालके उस घड़ेमे लटकाइ देइ पीछे एक पहर चुरावै तो शुद्धहोय तब गजपुटमें फूंकिदे तो भस्म होय सब कामोंमें आवै (गुण) आँखोंके रोग खांसी परमा सुजाक ज्वर मूत्रकृच्छ्र इन सबको दूर करताहै ठंढा है सब रोगोको नाशकरताहै मोती मूंगाकी भस्मका गुण अगाध है.

अथ शंख, कौड़ीमारन.

शंख, कौडी आठ दफे आगमे लाल करिके नींबूके रसमें बुझावे तो शुद्ध होय. सब रोग पर देय (गुण) श्वास खाँसी, आँखोंको गुणकारी है.

अथ गुंजा शोधन.

गुंजा लेकर एक पहर दूधमे चुरावे तब शुद्ध होय सब काममे बेपरे (गुण) आंखो के रोगको दूर करे और शिरके बालोको बढ़ावे अनोपान मुवाफिक सब रोग दूर करे.

अथ फिटकरी, सोहागा मारन.

फिटकरी, सोहागा नींबूके रसमें खल करके गोला

बनायके गजपुटसे आंच देय तो सब रोग हरे इसका गुण वर्णने योग्य नहीं है.

अथ समुद्रफेन शोधन.

समुद्रका फेन कागजी नीबूके रसमें डेढ पहर घोटै तो शुद्ध होय तब सब काममें बैपरै (गुण) शीतल है नेत्र रोग तथा कानोंकी पीडाको दूर करता है. और कानका बहना निश्चय दूर करताहै.

अथ तांबा मारन.

शुद्ध तांबा दो तोले लेकर बनगोभीकी एकसेर लुगदीमें रखदे फिर दश तोले मुलतानी मिट्टीसे कपड़मिट करके सुखावै तब दोमन बिनुआंकंडोंमे रखके फूंकि दे तो भस्म होय सब रोगोको हरे पानी शोषण है खुराक आधा चावलसे एक चावल तक.

अथ तांबा मारन की दूसरी विधि.

सागवीब एक जातकी बूटीहै तांबा उसके पत्ताकी लुगदीमें रखके फूंक दे तो सुवर्ण होय इसमें कुछ संशय नहीं जो फिर फूंके तो भस्म होय जो कोई खावे उसकी सूर्यकी ज्योतिकेसमान ज्योति होय लोकप्रसिद्ध होय सब रोग नाशहों सोनारस सेवै, तो बहुत दिन जीवै. इसका गुण कुछ वर्णने योग्य नहीं है.

तांबा मारनेकी तीसरीविधि.

काकजंघा एक बूटी है फागुनके महीनेमें पैदा

होतीहै उस बूटीकी लुगदीमें एक तोला तांबा रखके कपड़मिट कर सुखायके गजपुटमें फूंकदे तो भस्म बहुतही अच्छा होय खानेसे लोक प्रसिद्ध होय.

तांबाकी भस्म खानेके गुण.

छंद–तॉबेकी खाक बनायके एक रती भर पानमें कोइभि खावे॥ पुष्ट शरीर बने अति सुंदर सॉझ सवेरे जो दूध सों पावे॥ तज खान व पान अहार तजे सब दूधरु भात जो भोजनकीजे॥ बल होय शरीर बनें निश्चय पर सात दिना यह साधन कीजे.

अथ रूपा मारन विधि.

तितली जो गेहूं चनाके खेतमे होती है उसके रस में रूपा भिगोय रक्खे फिर उसी तितलीकी आध सेर लुगदीमें एक तोला रूपा रखके कपड़मिट करके गजपुट आंच देय तो भस्म होय खुराक एक चावल अनुपान मुवाफिक सब रोग हरे.

रूपा मारनेकी दूसरी विधि.

सिक्का रुपइया अग्निमें लाल करिके मेहँदीके रसमें आठ दफे बुझावें तब मेहँदीकी पत्ती आधा सेर ले लुगदी करिके बीचमें सिक्का रुपइया रखके कपड़ मिट करके सुखायके दोगजपुट आंचदे तो भस्म होय खुराक एक चावलसे डेढ़ चावलतक.

रूपरस खानेका गुण.

छंद–रस रूप विधान कहूं नर एक रतीभर पानमें ताहि जो खावे ॥ कफ अरु कास औ खांस हरे सब लागती भूख अरु काम जगावे ॥ अति गर्म जो शरदकी हानि करे सब अन्नके रोगको तुरत नशावे ॥ ताहिते जानिकरे यह साधन निष्ठ शरीरको पुष्ट करावे.

अथ सोना मारन विधि.

कामदेव झमकोइया एक बूटी है उसकी लुगदीमें एक तोला शुद्ध सोना रख कपडमिट कर सुखायके तीन गजपुट आंचदे तो भस्म होय लोकप्रसिद्ध होय. खुराक आधा चावल, अनोपान मुवाफिक सब रोग हरे.

अथ सोना मारन दूसरी विधि.

एक सेर कचनारके पत्तोंके बीचमे आधा तोला सोना रखके गोला बनाय कपडमिट करिके सुखाके दोगजपुट आंचदे तो बहुत उत्तम रस बने.

गुण ॥ छंद ॥

सोनेकी खाक बनायके सुंदर चावल एक चिरोंजीमें खावे॥पुष्ट शरीर बढे अति वीरज लागति भूखरु काम जगावे ॥ श्वास औ कास-सफोदर ओदर आदि जलंधर रोग नशावे ॥ रोग हरे सबही तनुके अनोपान मुवाफिक जो कोइपावे.

अथ लोहा मारन विधि.

अच्छा स्वच्छ लोह लेकर रेते तब अनारका रस एक सेर और चार तोला लोहाका रेत पहले एक बरतनमे रस डालदे फिर उसमें रेत डालदे पंद्रह दिन धूपमें रक्खे तब आधामन गोबरीमें फूंक दे तो बहुत उत्तम लोहासार रस बने अनोपान मुवाफिक सब रोग हरे.

अथ पोलाद मारनेकी दूसरी विधि.

अच्छा स्वच्छ पोलाद रेतायके धरे फिर ब्रह्मी एक बूटीहे उस बूटीके पत्ताकी लुगदीमे रक्खे पोलाद बीचमें रखिके गोला बनाय कपड़मिट कर सुखाय गज-पुट आंचदे तो बैगनी रंग रसबने सब कामको मात-दिल हे आमवात आंख और खांसी इन सब रोगों को दूर करता है अनोपान मुवाफिक सब रोगोंको हरण करताहे.

अथ त्रिवंग मारन.

शुद्ध एक तोला, शुद्ध रांगा एक तोला, शुद्धसीसा एक तोला, लेकर तांबापर रखिके चूल्हेपर रक्खे उसके नीचे अग्नि जरावे करछुलीसे चलाता जावे और हरप्रियाका रस छोडता जावे तो आध घंटामें नोरंगीके बरन रस बनेगा अनोपान मुवाफिक सब रोग हरे केसो ज्वर नया पुराना होय तो एक चावल रस और दो मासे चिरता दोमासे पीपरी दोनों एकमें

मिलाके कूटिके कपड़छान करिके शहदके साथ सांझ सवेरे खाय तो सर्व प्रकारके रोग हरै इसमे कुछ सन्देह नहीं.

अथ वंगरसबनानेकी क्रिया.

शुद्ध रांगा चार तोले लेकर गलावै नीचे अग्नि जलावै ऊपरसे अमलीके छाल व पीपरीके छाल दोनों का चूर्ण करिके छोड़ता जाय और रांगाको चलाता जाय तो चालीस मिनटमें भस्म होय बहुत उत्तम वंगरस बनै.

वंगरस खानेका गुण.

छंद—वंग सदाशिवको गुणदायक खाय नपुंसक मर्द भयेहैं ॥ खातहि रोग हरै तनुके बल पुष्ट शरीर अतुल्य भयेहैं । अनोपान मुवाफिक पान करै षट भाँति कि व्याधिन दूरि कियेहैं । दिन सातमें काम सुधारनीके अत्यंत नपुंसक मर्द भये हैं.

अथ सीसा मारनविधि.

शुद्धसीसा लेकर तांबापर रख गलावै फिर केवड़ाके डंडासे चलाता जावै और घोटता जावै इसी हिकमतसे एक घंटामें भस्म होवै फिर उस रसको घीकुवारके रसमे आठ पुटदे फिर भंगराजकी आठ पुटदे फिर गोदनदुद्धीकी आठ पुटदे फिर गोला

नाय कपड़मिटकरके गजपुट आंचदे तो बहुत अच्छा
गरस बनै लोकप्रसिद्ध होय अनोपान मुवाफिक सब
ग हरे, खुराक एक रत्तीसे डेढ़ रत्तीतक गर्म मिजाज
लेको ठंढे अनोपानमे देवै इसी विधिसे सब रोग हरे.

अथ सिंगरिफ मारनविधि.

सिंगरिफ चार तोला लेकर नीबूके पत्तामें खल
करके टीकरी बनायके गौरी यंत्रसे आंचदे जो पारा
ऊपरकी हंडीमें उड़के लगे तो सब काममें वेपरे और
सब रोग हरे.

अथ गंधक शोधन.

गंधकको घीमे लगावे दूधमे बुझावे इस तरह चार
दफे लगावे बुझावे और दो दफे भंगराजके रसमे बुझावे
तो शुद्ध होय सब काममें वेपरे (गुण) बीस प्रकारके
परमाको दूर करे और खांसी दमा वगेरह सब रोगों
को हरे और छःमहीना गंधक सेवनेसे उसकी दृष्टि
गिद्धके समान होय फिर उसके मेलसे तांबेका सोना
बने इसमें कुछ संशय नहीं है क्यों कर कि गंधक सब
धातुको जलाताहै.

अथ पारा मारन विधि.

पारा लेकर सीसीमें डालके उसीमें मकोईका रस
डालके एक दिन झकझोरे तब निकालके गूलरके
दूधमें खल करे तब फिर हींगका मूसा बनाइके उसी

पाराको मूसामें रखकर मुलतानी मिट्टीके साथ कपड़ मिट करके सुखावे तब गजपुटमें फूंकदे और शीतल होय तब खानेको देय एक रत्ती भर पानमेंखावे तो नामर्दको मर्द करे और कोढ़को शिरसे पैरतक निरोग करै और आचारपनसों रहे तो अजर अमर होय.

पुनि दूसरी विधि.

शुद्धपारा लेवे और एक माटीकी परई अग्निमें लाल कर निकालके बाँहर रक्खे फिर काले धतूरका रस निकालके परईमें डाल अग्निपर चढावे पीछे पारा डाले तव रस जरै और पारा भस्म होय सब रोगोंको हित है अनोपान बदलता जाय तो सब रोग हरे और खट्टा मीठा तीता ये सब चीज त्याग करे.

जस्ता मारन विधि.

शुद्ध जस्ता लेकर तांबापर गलावे और बथुईका रस छोड़ता जाय कलछुलीसे चलाता जाय सवा घंटामें भस्म होय सब काममें वेपरै (गुण) कड़ है हलका है शीतलहै कफ और खाज दूर करताहै अनोपान मुवाफिक सब रोग हरता है.

कीट मारन विधि.

पुरानी कीट आधा सेर लेके त्रिफलाके रसमें सात दफे लाल करिके बुझावे और नीबूके रसमें सात दफे

ाकर आंवरासार गंधकमें खल करके गोला बनायके
ापुटमें फूंक देवै तो बहुत उत्तम रस बनै
ुण) पांडुरोग प्लीहा आमवात उदररोग इत्यादिक
रोगोंको हरै है.

मृगांक रस बनानेकी विधि.

पारा एक तोला, रांगा एक तोला, आँवरासार
क एक तोला, नौसादर एकतोला, ये सब शुद्धले
हले पारा और आंवलासार गंधक. दोनोको
ल करे पीछे आठ टोप रेडीका तेल खलमें डारि
तब रांगा और नौसादर गलायके डारे. फिर
दिन खल करे पीछे एक अग्नि सीसी कांचकी ले
लतानी मिट्टीकी सात कपडमिट कर अच्छी तरहसे
खावे फिर सीसीमें दवाई रखके कोइयाकी भट्टीमें
सी रक्खे मुख सीसीका खुलारक्खे अग्नि जरावे
क लोहेकी सींकसे पन्द्रह २ मिनटमें सीसीमें हिलावे
हिले काला धुआँ निकलै पीछे हरा निकलै. फिर
ला निकलै फिर लाल निकलै. तब अग्नि आहिस्तेसे
झादे शीतल भयेपर सँभारिके रस निकालिले सोने
वर्ण रस होय. सोनेके भाव रसका मोल होय
सका गुण कुछ वर्णन योग्य नहीं है. जिस रोगपर देय
ो रोग हरै. और जो नर सेवै अजर अमर होय.

अथ सब रसका उतार.

मिश्री घृत दूध खिलावै तौ शांति होय.

अथ शीत पित्तके लक्षण.

शीतल पवनके अधिक लग जानेसे कफ और वायु अतिदुष्ट होकर पित्तके संग मिलकर रुधिरमें प्रविष्ट होजातेहैं व बाहर त्वचामें फैल जाते हैं उसे शीत पित्त अर्थात् पित्ती उछलना कहते हैं शरीरमें सूजन और चकोटा पर जातेहैं और खाज होती है कोप करिके खजुली सहित बहुतसे लाल २ चकत्ते शरीर भरमें पड़ जातेहैं.

शीत पित्तकी दवा.

गुड़ अजवाइन मिलाय १४ दिन खानेसे शीतपित्त नाश होय अथवा सोधा पारा ८ भाग कुचला १० भाग गन्धक सोधा १२ भाग सुंठि १ भाग मिर्च १ भाग पीपल १भाग त्रिफला ३ भाग भिलावाँ१ भाग चीता १ भाग नागरमोथा १ भाग वच १ भाग रेणुके बीज १ भाग असगन्ध १ भाग मीठा तेलिया १ भाग कूट १ भाग पीपला मूल १ भाग नागकेशर १ भाग गुड़ २४ भाग इन्होंकी बेर समान गोली बनाय खानेसे शीत पित्त नाश होय.

अमृतादि काढ़ा.

गिलोय हल्दी नींब धनियां धमासा इन्होंका अलग अलग काढ़ा बनाय पीनेसे शीतपित्त नाश होय और पहिले शीत पित्त रोगीको सात रोज मुन्जिस पिलावै तब दवा करै.

अथ अम्लपित्तका लक्षण.

अन्न पचै नहीं कडुई खट्टी डकारे आवैं शरीर भारी रहै हिया और कंठमे दाह होय भोजनमे अरुचि हो ये लक्षण अम्ल पित्तके जानो.

अम्ल पित्तकी दवा.

गिलोय चीता नींब कडू परवर इन्होंका काढ़ा बनाय शहद मिलाय पीनेसे अम्लपित्त नाश होय.

मधु पीपली योग.

पीपलका चूर्ण करि शहदमें मिलाय चाटनेसे अम्ल-पित्त दूर होय.

पुनः अम्ल पित्तकी दवा.

चिरायता नींब त्रिफला कडूपरवर वांसा गिलोय पित्तपापड़ा भांगरा इन्होका काढ़ा बनाय शहद मिलाय पीनेसे अम्लपित्त नाश होय.

काढ़ा.

कटैली गिलोय बांसा इन्होंका काढ़ा बनाय पीनेसे श्वास, कास, ज्वर छर्दि अम्लपित्त ये नाश होयँ.

अथ लक्ष्मीविलास तेल.

इलायची चंदन रासना लाख कपूर कंकोल नागर मोथा वालिया दालचीनी दारुहल्दी पिपली अगर तगर जटामासी कूट ये सब दवा सम भागले और सब दवासे तिगुनी राललै पीछे इन सवोंका डमरू यंत्रसे तेल निकालिले इस तेलका शरीरमें मालिश करनेसे शिरसे पाँवतकके रोग हरै और इस तेलके मालिश करनेसे राजाओसे मुलाकात होतीहै.

हरताल रस बनानेको फकीरकी बूटी.

स्नान करिके मंत्र जपके अच्छे दिन असगन्धको उखाड़ि लावै उसकी लुगदीमें हरताल तबकी रखके मुलतानी मिट्टीसे कपड़मिट करके सुखावै फिर पाँचसेर विनुवा कण्डोमें फूंकि देय एक आँचमें भस्म सफेद होय इस रसके खानेसे सर्व कुष्ट जायँ लोक प्रसिद्ध होय और त्यागी भक्त मनुष्य फूँके.

शंखिया मारन विधि फकीरकी बताई हुई.

कालाशंखिया ५ तोले लेके दोसेर आकके दूधमें,

सल कर सुखावे फिर कपरमिट करके ९ सेर बिनुवा कण्डोंमें फूंकिदे तो सफेद भस्म होय और शरीरभरके-रोगोंको हरै खुराक आधारत्ती पथ्य घी दूध मिश्री.

अथ मूत्रकृच्छ्रका लक्षण.

जांघ पेट लिंगमे पीड़ा होय और थोरा २ बार बार मूत्र उतरे तो बात से जानना और, यदि पीला लाल औ गरम मूत्र कष्टसे उतरै और बहुत पीड़ा से उतरै तो पित्तका जानना और यदि पेडू और लिंग दोनों भारी हों और दोनों में सूजन होय मूत्रमें झाग आवे मूत्र कष्टसे उतरै तो कफ का जानो कफ में वमन हित है पित्त का होय तो जुलाब दे और बात का होय तो बस्ति कर्म हितहै.

काढ़ा.

गिलोय सुंठि आमला असगन्ध गोखुरू इन्होंका काढ़ा बनाय पीने से मूत्रकृच्छ्रको नाशै.

कुश कासादि काढ़ा.

कुश कास डाभ शर इष इन्होंका काढ़ा बनाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्र को नाशै.

मूत्र कृच्छ्रकी दूसरी दवा.

ककड़ीके बीज मुलहटी दारुहरदी इन्होंके चूर्णको

चावलके धोवनके साथ पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाशै (अथवा) आँवलेका रस दारुहर्दी शहद मिलाय पीनेसे नाश होय.

दुग्ध योग.

दूधमें गुड़ मिलाय थोरा गर्म करि पीनेसे सब प्रकारका मूत्रकृच्छ्र दूर होय.

यवाखार योग.

५ मासा मिश्री मिलाय यवाखार पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाश होय संशय नहीं.

गोखुरू का काढा बनाय यवाखार मिलाय खाने से पुराना मूत्रकृच्छ्र दूर होय.

कुडाकी छालको गौके दूधमें पीसि पीने से भयंकर मूत्रकृच्छ्र नाशहोय अथवा ताकमें यवाखार मिलाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाश होय अथवा सनायकी पत्ती ककडीके बीज मिलाय खानेसे मूत्रकृच्छ्र नाशै.

अथ चार प्रकारका मुञ्जिस.

उनाब विलायती ५ नग संवरा ५ मासे चिरायता ६ मासे गाजुबाँ का पत्ता ५ मासे सौंफकी जड ९ मासे मकोय सूखी ४ मासे कासनी की जड़ ९ मासे यह सब दवा मिलायके पाव भर पानी में शाम

को भिगोय दे सवेरे चुरावै जब आधा रहजाय तो छानिके पिये इसी विधि से सात रोज पिये पीछे जुलाब लेतो निरोग होय.

दूसरा मुनजिस.

गावजुबाँ की पत्ती ६ मासे काली दाख ९नग गुलाब के फूल सूखे९मासे मुलहटी पत्ती६मासे सौंफकी जड़ ९मासे सनायकी पत्ती ३मासे अंजीर का छिलका९मासे गुलकन्द २ तोले सब दवा तीन पाव पानी मे शामको भिगोयके सवेरे चुरावै जब आधा शेष रहै तो छानिके पिये तो शरीर भरेके रोगोंको नाशै ९ दिन पीने केपीछे जुलाब दे.

तीसरा मुनजिस.

कची अथवा गीली सौफ १ तोला मकोय सूखी १ तोला मुनक्का काला १९ नग. खतमी का बीज १ तोला तुख्म खब्बाजी १तोला गुलकन्द२तोला मिलाय पानीमे शामको भिगोवै सवेरे चुरावै जब आधा सेर रहै तो छानके पिये शरीरकी नस नसको फायदा करै.

चौथा मुनजिस.

सनाय ६ मासे गुलाबके फूल ६ मासे लसोढ़ा सूखा ६ मासे मुलहटी ६ मासे कालादाना ६ मासे

गाजबाँ ६ मासे बनफ्शा ६ मासे मुनक्का ७ नग उना
बिलायती ५ नग मिश्री २ तोला सब दवा एक
मिलाय शामको भिगोय सबेरे एक सेर पानीमें चुरा
जब आधासेर रहै तो छानिके पीनेसे शरीरभरे
रोगोंको नाशै.

इति श्री मुन्शी भगवान् प्रसाद शिष्य भक्त भग
वान् दास विरचित वैद्यक रसराज महोदधि नव वि
नव उपविष शोधन, खाने के गुण, सातो धातु औ
सातो उपधातु मारन,खाने के गुण,मूत्रकृच्छ्र के लक्ष
खाने की दवा, अच्छी २ मुन्जिस शीत पित्त
लक्षण और खानेकी दवा अम्ल पित्तका लक्षण औ
खानेकी दवा लक्ष्मी बिलासतेल हरतारमारन शंखि
यामारन नाम दूसरा खंड समाप्त ।

अथ तीसरा खंड.

(उपदंश) फिरंगवाय–गरमीका वर्णन.

वेश्या स्त्री तथा रजस्वला तथा चंडालिनी स्त्रीके
पास जानेसे गर्मी पैदा होतीहै तथा गर्मीवाला मनुष्य
जिसजगह पेशाब करे उसकी जगहपर पेशाब करने
सेभी गर्मी पैदा होतीहै और वात पित्त और कफके
कोपसे फिरंग वायरोग तीन रोजमे पैदा होताहै.

अथ गर्मीका भेद.

गर्मीवाले मनुष्यको चाहिये कि छिपावे नहीं इलाज बहुत जल्दी करे बहुत मनुष्य शर्मकेसबबसे किसीसे कहते नहीं मूर्ख लोगोकी दवा करते है दवा लगे तो अच्छाहै नहींतो कोपकरके तमाम शरीरपर फैल जाती है पीली पीली फुन्सी पैदा होतीहैं और ज्यों ज्यो दिन बीतताहै त्योत्यो अधिक दुःख होताहै इन्द्रीपर घाव शरीरपर कोढके समान चट्टा फैल जातेहैं और पेडूमें बद निकलतीहै कुछदिनमे शाना पकड लेताहै चलने फिरनेकी शक्ति नहीं रहती असाध्य होजाताहै जीव नाश होजाताहै इससे गर्मीवाले मनुष्यको चाहिये कि शर्म नहीं करे अच्छे उस्ताद या हकीमके पास जाके इलाज करे जो हकीम बोलै वही खावे पथ्यसे रहै और कोई बुरी चीज न खाय न जीभ की चालाकी करे तो दश दिनमें अच्छा होय और गर्मीकी निशानी तो तीन पुश्त तक रहती है.

अथ उपदंशका लक्षण.

ज्वर होय भूख नहीं लगे मुख काला पड़जाय शरीरकी द्युति बदल जाय झाडा पेशाबमें कडक होय ये लक्षण उपदंशकेहैं.

अथ दवादेनेकी विधि.

उपदंश वाले मनुष्यको जुलाब देना पीछे इन्द्रिय जुलाव देना और फिर घाव वद शाना इत्यादिका इलाज करै.

अथ गर्मीका पहिला इलाज.

मकोईकी पत्ती, सनायकी पत्ती सौंफ मुनक्का गुलाबके फूल, अमिलताश ये सब दवाई ले आधासेर पानीमें चुरावे जब पानी आधा रहजाय तब छानके गर्मीवाले मनुष्यको देय इसीतरहसे तीनदिन देवे पीछे दूसरी दवा करै.

दूसरा इलाज.

शुद्ध जमालगोटा एक तोला. आंवरा चार तोला इन दोनों को कूटकर कपड़छान करके एक दिन नींबूके रसमें खल करै पीछे मिर्च बराबर गोली बांधे तब ठंढे पानीके साथ एक गोली सांझ और एक सवेरे खानेको दे तो पंद्रह दिनमें गर्मी दूर होय.

तीसरा इलाज.

शुद्ध शंखिया अकरकरा सफेद खैर भंगराज और सफेद सुपारी ये सब चीज छः २ मासे ले कपड़छान करके पानीमें खल करै फिर बाजराके समान गोली बांधे एक गोली शाम और एक सवेरे पानीके

साथ खानेको दे तो गर्मी दूर होय आठ दिनमें असाध्य रोग भी दूर करे.

अथ तेलबनानेकी विधि.

मिरचा हरा पाव भरि तिल्लीके आधे सेर तेलमें चुरावै जब मिरचा जरि जाय तब तेल मालिश करै तो गर्मी दूर होय.

अथ कडक पेशाबकी दवा.

शुद्ध राल पावभर, मिश्री पावभर एकमें मिलायके कपड़छान करके एक तोला खानेको दे तो जितना पानी पीवै तितना पेशाव होय. और दवा दिन भरमें तीन दफे करे तो कडक पेशाव छूटे.

अथ इन्द्री जुलाबकी दवा.

गुलारमनी एक जातकी मिट्टी है उसको ९ मासे लेवे और ९ मासे कलमी सोरा दोनोंको एकमे मिलायके तीन सेर पानीमे मिलावैं पीछे रोगीको पीनेको दे तो जितना पानी पीवैं तितना ही पेशाव बहुत खुलाशा होय.

शंखियाकी गोली गर्मीपर.

शुद्ध शंखिया एक तोला और पापरीखैर दो तोले एकसौ बॅगलापानमे दो दिन खल करै तब बजरीके समान गोली बांधकर एक गोली शामको और एक

अथ दवादेनेकी विधि.

उपदंश वाले मनुष्यको जुलाब देना पीछे इन्द्रिय जुलाब देना और फिर घाव बद शाना इत्यादिका इलाज करै.

अथ गर्मीका पहिला इलाज.

मकोईकी पत्ती, सनायकी पत्ती सौंफ मुनक्का गुलाबके फूल, अमिलताश ये सब दवाई ले आधासेर पानीमें चुरावे जब पानी आधा रहजाय तब छानके गर्मीवाले मनुष्यको देय इसीतरहसे तीनदिन देवे पीछे दूसरी दवा करै.

दूसरा इलाज.

शुद्ध जमालगोटा एक तोला. आंवरा चार तोला इन दोनों को कूटकर कपड़छान करके एक दिन नींबूके रसमें खल करै पीछे मिर्च बराबर गोली बांधै तब ठंढे पानीके साथ एक गोली सांझ और एक सबेरे खानेको दे तो पंद्रह दिनमें गर्मी दूर होय.

तीसरा इलाज.

शुद्ध शंखिया अकरकरा सफेद खैर भंगराज और सफेद सुपारी ये सब चीज छः २ मासे ले कपड़छान करके पानीमे खल करै फिर बाजराके समान गोली बाँधै एक गोली शाम और एक सबेरे पानीके

थ खानेको दे तो गर्मी दूर होय आठ दिनमें साध्य रोग भी दूर करै.

अथ तेलबनानेकी विधि.

मिरचा हरा पाव भरि तिल्लीके आधे सेर तेलमें रावै जब मिरचा जारि जाय तब तेल मालिश करै ो गर्मी दूर होय.

अथ कडक पेशाबकी दवा.

शुद्ध राल पावभर, मिश्री पावभर एकमें मिला-के कपड़छान करके एक तोला खानेको दे तो जेतना पानी पीवै तितना पेशाब होय. और दवा दिन भरमें तीन दफे करै तो कडक पेशाब छूटै.

अथ इन्द्री जुलाबकी दवा.

गुलारमनी एक जातकी मिट्टी है उसको ९ मासे लेवे और ९ मासे कलमी सोरा दोनोंको एकमें मिला-यके तीन सेर पानीमें मिलावे पीछे रोगीको पीनेको दे तो जितना पानी पीवैं तितना ही पेशाव बहुत खुलाशा होय.

शंखियाकी गोली गर्मीपर.

शुद्ध शंखिया एक तोला और पापरीखैर दो तोले एकसौ बँगलापानमें दो दिन खल करै तब बजरीके समान गोली बांधकर एक गोली शामको और एक

सवेरे पानीके साथ खानेको देवे तो उपदंश दूर होय. पथ दूध भात और खट्टामीठातीता वगैरह त्याग करे.

पुनःदवा

मंदारकी लकडी जलाई हुई दो तोले मिश्री दो तोले दोनोको मिलाकर छःमासे शाम व सवेरे खाय तो गर्मी आठ रोजमें दूर होय.

इन्द्रीका मलहम.

काली मेल दो तोले दश मासे,मेंहदीका बीज सात मासे, रूमीमस्तगी सात मासे, सुरंजन सात मासे निसोत साढे सत्रह मासे. रोगन गुल तीन तोले. रोगन जितून पांच तोले नीबूकी पत्ती एक तोले, बकरीकी चर्बी ग्यारह तोले मिलाकर मलहम तयार करे तब सब शरीरपर मालिश करे जिधर जिधर चट्टा हो उधर उधर करे तो बहुत जल्दी चट्टा फुन्सी घाव इत्यादिक दूर होयँ.

अथ इन्द्रीकी दवा ।

काली मेल एक तोले. कवेला दोतोले. सफेदा दो तोले, प्युली दवा ६ मासे मसका घी धोयाहुआ छः तोले मिलाइके घावपर लगावे तो बहुत जल्दी घाव अच्छा होय असाध्य हुआ आदमी अच्छा होयँ.

अथ टाँकालेप.

मुर्दा संग १ पैसा भरि, राल एक पैसा भरि और घी चार तोले मिलायके मलहम तय्यार कर घावपर लगावे तो तुर्त टॉकी चट्टा अच्छा होय.

फिर लेप.

त्रिफला जलाया हुआ मधुमें मिलायके घावपर लेप करै तो बहुत दिनकी गर्मी अच्छी होय घाव भरपूर होजाय घावकी जगह पहिचानमे नहीं आवे.

अथ उपदंशकी हुक्का पीनेकी दवाई.

शिगरफ माजूफल मदारकी जड और भंगराज ये सब चीजे एक एक तोला लेकर एकमे खल करे तब नवमासे चिलममे रखके खैरकी लकड़ीके अंगार धर पीवै तो सब तरहकी गर्मी दूर होय इसके बराबर दूसरी दवा नहीं है.

अथ गर्मीका हुक्का पीना.

इन्द्रायणकी पत्ती और इन्द्रायण की जड़ सोरा भंगराज ये सब मिलाके चिलममें रखके पीवे तो गर्मी जाय.

अथ आककी गोली.

आककी जड एक तोला पांच मासे मिर्च ४ तोले दोनों एकमें खल करके छोटी मटरके बराबर गुडमें

गोली बाँधे और शाम सबेरे एक एक गोली खा तो अच्छा होय.

अथ अरुशकी गोली.

अरुशकी जड दो तोले मिर्च दोतोले मिला खल करके चना बराबर गोली बांधकर शाम सबे एक २ गोली खाय तो बहुत जल्दी अच्छा होय.

अथ हुक्का पीना.

खुरासानी अजवायन ढाई मासे शिंगरफ पांच मासे नीलाथोथा दोरत्ती अकरकरा पांच मासे आककी जड दश मासे ये सब दवाई कूट कर बेरकी लकड़ी की आगसे चिलमपर रखकेपीवे तो बहुत जल्दी अच्छा होय फिरंगवाय जाय.

तथा.

कसौंजीकी जड़ व पत्ती एक तोला पांच मासे मिर्च ग्यारह मासे दोनोंको भांगके समान घोटि पीवे तो बहुत जल्दी अच्छा होय उपदंश जाय.

तथा.

शिंगरफ अकरकरा नीबका गोंद माजूफल सोहागा ये सब चीज एक एक तोला मिलाके चिलम पर रखके ऊपरसे अंगार रखके पीवे तो सब तरहकी गर्मी जाय इसमे सशय नहीं.

अथ घावको लेपन.

जराया हुआ नीलाथोथा छःमासे और मोम एक तोला घी दो तोला एकमें मिलाय गरम कर घावपर लेप करै तो उपदंश चट्टा फुन्सी सब दूर हों.

पुनः दूसरा लेप.

करू तेल पाव भर मोम पांच टंक कवेला बारह टंक सिंदूर दो टंक शोरा दो टंक मुरदाशंख दो टंक सब बारीक पीस घीमे मिलाके मलहम तय्यार करै फिर जहां जख्म भया होय वहां लगावे तो बहुत जल्दी अच्छा होय.

अथ मलहम बनाने की विधि.

सफेद राल छःमासे रसकपूर छःमासे गुलाबका तेल दो मासे सब एकमे मिलाके एकसौ दश दफे पानीसे धोवे तब घावपर लगावे तो सब प्रकारका जख्म दूर होय.

मलहम बनानेकी दूसरी विधि.

नेनू एक तोला लेकर एक सौ दफे पानीमें धोवे फिर जख्म पर लगावे तो घाव फौरन् अच्छाहोय.

अथ बद का लेप.

नागफनीका एक पट्टा लेकर उसको फाड़के आंबाहरदीका चूर्ण भरै फिर कपडमिट्ट करके अग्निमें भूंजिले तब बदपर बांधे तो बद तीनदिनमें

अच्छी होय (पुनः वदकालेप) तीसी कूटिके गर्म
के वद पर वांधे तो बहुत जल्दी बैठ जाय.(पुनःले
आंवाहरदी तीसी ईसवगोल घीकुवारिका गोंद
दवा एकमें मिलाकर पीसके गर्म करके वदके
वांधे तो बहुत जल्द वद अच्छी होय. (पुनः ले
आंवाहरदी घरकारंडस चूना गुड सब बराबर पीस
करै तो वद पके फिर फूटिके बहुत जल्दी अच्छी हो
(पुनः लेप) रेंडीके बीज हर रेंडीका तेल सिर
सब एकमें मिलाके गरम करके बदके ऊपर बांधै
जो थोड़े दिनकी वद हुई होय तो बैठ जाय. जो ज्य
दह दिनकी होय तो पक फूटके बहुत जल्दी अच्
होय. इसमें संशय नहीं (पुनः बदपकानेका लेप.) नील
थोथा ६ मासे. आंवाहरदी एक तोला, राल एक तोल
गूगल ६ मासे. गुड एक तोला. सब एकमें पीस गर
कर बदपर वांधे तो बहुत जल्दी फूट जाय. (पुनःलेप
मेथी, हरदी, रेंडीका तेल, मिलाकरके वदपर वांधे त
वद बहुतजल्दी अच्छी होय (पुनः) मदारके पत्तामें रें
का तेल लगाके बदपर गरम करके वांधे तो अच्छी
होय. फिर धतूरेके पत्तासे सेकदे तो बहुतही गुण करै

अथ साना गाठियेका इलाज.

उसवाका माजूम गर्मीके चट्टा फोडा गठिया म

लीज खूनको दूर करताहै. और नया खून पैदा करताहै. (दवा) उसवा मगरबी साततोले सनायकी पत्ती अढ़ाई तोले सौंफ अढ़ाई तोले बिसपंज दो तोले लाल चंदनकाचूर्ण एक तोला मिश्री सात तोले शहद सात तोले पहिले उसवाको एक सेर पानीमें चुरावे जब आधा पानी रहजाय तब मिश्री शहद डारिके चासनी करै पीछे कपडछान करके चासनीमें मिलाके बरतनमे रक्खै खुराक ६ मासेसे एक तोला तक यह माजूम बहुत गुणकारीहै.

दूसरी खानेकी दवा.

रेंडीकी एक दानाकी छाल निकालके एक दिन एक दाना दूसरे दिन दो दाना. इसी तरहसे दररोज एक दाना बढ़ाताजाय जब सातदिन होय तो एक दाना कमती करताजाय. खाते खाते एक दाना अंतमे रहजाय तब सब तरहका जोडा साना और गठिया दूर होय.

मालिशका तेल.

अलसीका तेल, तिल्लीका तेल, करू तेल ये सब तेल आधा आधापाव लेकर और धतूरेके पत्ता जड़ व फल फूल इनको कूटकर तेलमें चुरावे जब

दवाई जल जाय और तेल मात्र रहिजाय तब मालिश करे तो शरीर भरे का जोडा साना सब दूर होय.

१ तंबाकूका तेल.

तंबाकू आध सेर लेकर शामको डेढ सेर पानीमें भिगोय दे सवेरे पानी छानि एक सेर तिल्लीका तेल डालके मधुरी आँचसे चुरावै, जब पानी जलजाय तेल मात्र रह जाय तब मालिश करै तो गठिया जोडा साना वगैरह दूर होयँ.

२ तंबाकूका तेल.

मालकाँगनी २ तोले कायफल एक तोला बकाइन १ तोला सोंठि एक तोला कतीरा १ तोला जायफल १ तोला अकरकरा एक तोला इलायची १ तोला लौंग १ एक तोला हल्दी १ तोला समुद्रखार १ तोला कुचिला १ तोला बदाम एक तोला गरी १ तोला करंज १ तोला सभाँर १ तोला कुलंजन एक तोला काला धतूर १ तोला मंदार १ तोला सहिंजन १ तोला गोम एक १ तोला मकोय १ तोला भंगराज १ तोला कडूतेल १ सेर तिल्लीका तेल १ सेर रेंडीका तेल आधा सेर पहिले यह सब दवा आठ सेर पानीमें चुरावै जब आधा पानी रहजाय तो छान कर तेल डालके मधुरी आँचसे चुरावै जब सब पानी जलजाय तेल मात्र रह

जाय तब मालिश करे तो जोडा गॅठिया साना सब दूर होयँ गरमीके वात रोगको बहुत फायदा करता है.

अथ काढ़ा.

सौंफ, कासनीके बीज, मकोय, हंसराज, सौंफकी जड़, कासनीकी जड, मुलहठी, बबूलके फूल सब मिलाकर पानी डालके काढ़ा करिके पीवे तो जोड़ा साना गॅठिया दूर होयँ तथा पोस्ताके ढोढका काढ़ा गुण करताहै.

गँठियाकोचूर्ण.

सुरंजन दो तोले, सनाय २ तोले, हर्रे एक तोला, निसोत सफेद दशमासे, बादाम दश मासे, मेहँदी की पत्ती सात मासे, केसरि चार मासे और सबके बराबर मिश्री मिलाकर कपडछान करके दो तोले नित सबेरे फांके तो जोडा सानाको बहुत फायदा करताहै.

अथ गोली गँठियापर.

एलवा दोतोला ग्यारह मासा. काबिली हर्रे एक तोला दश मासा. शुद्ध निसोत सात मासे सुरंजन सात मासे शुद्ध गूगल सात मासे. सोंठ, चीता, राई, सधानोंन इन्द्रायणका-गुज्झा मजीठ एक २ तोले आठ २ मासे अजवाइन पीपल कालीमिरच पौने दो

दो मासे मिश्री चार मासे सब कूट कपडछान करिके पानीमें गोली बनाकर तादाद गोलीकी दश मासे सबेरे एक गोली खाय तो दो दस्त आवैं गॅठिया जोडा साना गरमीके सब रोग दूर होयँ.

उपदंशका लेप.

कनेरकी जड पीसकर लेप करै तो असाध्य गर्मी दूर होय.

इति श्री मुन्शी भगवान् प्रसाद शिष्य भगवान्दास विरचित रस० उपदंश फिरंगवाय पांच प्रकारकी गर्मी काथ हुक्का तेलादिविधियत्नवर्णनं नाम तीसरा खंड समाप्त ॥ ३ ॥

चौथा खंड.

जवारीस हिन्दी.

कलेजेकी गर्मीको तर करताहै कब्जियतको दूर करताहै भूखको लगाताहै (दवा) लौंग सात मासे बाल-छड साढे तीन मासे, अगर खाम साढे तेरह मासे मिश्री तीन पाव सवा छटांक गुलाबका अर्क आधा सेर पहिले गुलाबका अर्क और मिश्री दोनोकी चासनी करे तब दवा कूटके कपडछान करके चासनीमें मिलावे खुराक नौ मासे सबेरे.

जवारीस सहरान.

कलेजेके दर्दको दूर करताहै पेट फूलाहोय तो उसको फायदा करताहै. जिसको बहुत कडक पेशाब होय उसको बहुत फायदा करताहै (दवा) लौंग दारचीनी बालछड जायफल दोनो इलायची रूमी मस्तंगी, हुब बेलसा, सक मुनियां केसर ये सब दवा सोलह २ मासे ले निसोत दोतोले चार मासे सब दवाके बराबर मिश्री लेना शहद और मिश्री इन दोनोंकी चासनी करिलेय फिर दवा कपडछान करके चासनीमे मिलाय देय खुराक एक तोले सबेरे खावै.

अथ जवारीस तीसरी.

जवारीस जुलाबहै पेटके गलीजको साफ करताहै. (दवा) निसोत दो तोले ग्यारहमासे सोंठि सत्रह मासे मिश्री चार तोले चार मासे मिश्रीके चासनी करिकै दवा कूटके चासनीमें मिलाके तय्यार करले खुराक एक तोला सबेरे खावै.

अथ जवारीस दूसरी
हिंदुस्तानी.

शरीरकी गाँठि गांठिको, पेट, शिरके दर्दको दूर करता है (दवा) सक मुनिया दो तोले ग्यारह मासे छोटी और बडी इलायची दारचीनी सोंठि

तज नागकेसर लौंग कालीमिरच सब दवा स
सात २ मासे लेना मिश्री २७ तोले ग्यारह मा
आधा सेर मधु, मधु और मिश्रीकी चासनी करि
दवा कूटके चासनीमें मिलाके जवारीस तय्यार क
लेय खुराक एक तोला सवेरेके वक्त खावे.

अथ जवारीसजालीनोस.

बालछड इलायची सली खाँदारचीनी कुलिंज
लौंग नागरमोथा सोंठि कालीमिरच पीपरि कूट दा
याई अगर कच्चा अस्साहून मूलीके बीज चिरेत
रूमीमस्तंगी सब दवा एक एक तोलेले नागकेस
छःमासे मिश्री दश तोले शहद आधा सेर मिश्री औ
शहदकी चासनी करिके सब दवा कूट कपडछा
करिके चासनीमे मिलाके तय्यार करलेवै खुराक न
मासे सवेरे शाम खावे तो तमाम शरीरको ताकत देता
शरदीको कब्जियतको शिर कमरके दर्दको दू
करताहै. सुस्तीको नाश करता और मस्ती लाताहै
बलगम बवासीर सेहुआं दाद चक्का खुजली इन सबको
दूर करता है कालेबालोको सफेद नहीं होने देताहै.

बरश बनाने की विधि.

सफेदमिर्चे अजवायनखुरासानी पांचतोले ले
केसर एक तोले साढे पांच मासे बालछड तीन मासे

करफिऊन तीन मासे, सब दवा कूट करिके कपड छानकर मधुमें मिलायके बरतनमें रख दे यवमें छःमहीनेतक गाड़ रक्खे पीछे निकाल कर तीन मासे सबेरे खाय तो सब रोग हरै.

बरश बनाने की दूसरी विधि.

कालीमिर्च चार तोले, सफेद मिर्च चार तोले खुरासानीअजवाइन चार तोले, उस्तु खुद्दूश एक तोला पीली हर्रे दो तोले, अफीम दो तोले, केसर एक तोला फरफीऊन छःमासे, जटामासी छःमासे, अकर-करा छःमासे, सब एकमें मिलाके कूट कपडछान करिके मधुके चासनी करिके दवाई मिलाके बरश तय्यार करै खुराक तीन मासे सबेरे खाय तो एक महीनेमें सब रोग हरै.

अथ आनन्द दाता गोली.

जिसको पाँवसे शिरतक साना पकडे होय चलने फिरनेकी शक्ति न होय उसकी (दवा) एलवा साढे चार मासे निसोत सवा पांच मासे. कालादाना पौने दो मासे. गोरोचन पौने दो मासे. इन्द्रायनके फलका मगज छः रत्ती सवा दो चावल,अजमोदाके रसमें चना बराबर गोली बनावे इस गोलीका गुण कुछ वर्णन योग्य नहीं. खुराक एक गोली शामको एक सबेरे.

अथ आनन्द भैरो रस.

शुद्ध शिंगरफ. शुद्ध शंखिया विष. कालीमिरच, पीपरि. शुद्धचौकियासोहागा, सब बराबरिले कपड़ छान करिके दो दिन निम्बूके रसमें खल करै तब आनंदभैरो रस तय्यार होवै, खुराक आधा चावलसे एक चावल तक रोगीका बल देखके देवै. सब रोगों को दूर करताहै.इसका गुण बहुत है लिखने योग्यनहीं.

अजीर्ण कंटक रस.

शुद्ध शंखिया, शुद्ध चौकिया सोहागा. सेंधा निमक सब बराबर लेकर कूट कपडछान करिके अदरखका रस पाव भरि दही पाव भरि निम्बूका रस एकसेर इन सब रसोंमे मिलाके खल करै तब दो रत्तीके बराबर गोली बांधे खुराक एक गोली शामको और एक सबेरे खाय तो बात रोग,अजीर्ण,पेटका फूलना दूर होय और सब प्रकारके उदर रोग दूर होयँ. भूख बहुत लगै. यह दवा अमृतके तुल्य है.

त्रिफलादि क्रिया.

त्रिफला एक सेर, मुलहटीएकसेर दारचीनी एक सेर, महुआके फूल एक सेर, सब दवा कूट कपडछान करिके दवाके बराबर मधु और मधुके बराबर घीमें मिलाके तीन दिन पीछे सोते समय खाय तो शरीर

होय. और आँख कान नाक मुँह छाती उदर रोग
यादि सब रोग दूर होयँ. बुद्धि बहुत होय. कित-
ही मेहनत करै तोभी बल घटै नहीं बहुत दिन
वै और अजर, अमर होय कुछ दिन सेवे तो
लोंके रोगको बहुत फायदा करताहै.

राज मृगांक क्रिया.

मिरच छः मासे घी छः मासे तुलसीके पत्ते छः
रे एकमे मिलाके जो कोई कुछ दिन सेवै तो इस
क्रयाके बराबर कोई दवा नहीं यह दवा गरीब अमीर
बके वास्ते है बात रोगको बहुत गुण करतीहै.

हरैं खानेकी विधि,

ज्येष्ठ आषाढ़मे हरैं गुडसे खाय सावन भादों में
धा नमकसे खाय कुवाँर कार्तिकमे मिश्रीसे खाय अग-
न पूसमें सोंठिसे खाय, माघ फाल्गुनमे पीपरिसे खाय
चैत वैशाख मे मधुसे खाय (हरैं खानेका गुण) जेठमें
खाय खांसी जाय आषाढ़में खाय पेट साफ होय
सावनमें खाय तो आंखोंकी ज्योति बढ़ै भादोंमें खाय
तो कुवत होय कुवाँरमे खाय तो बाल काले होयँ काति-
कमें खाय तो सब रोग हरै अगहनमे खाय तो मर्द होय
पूसमेंखाय तो पुष्ट होय माघमेंखायतो बुद्धिबढै फाल्गु-
नमेंखाय तो बहुतदेखै चैतमें खाय तो अक्ल बढे वैशाख

में खाय तो भूली बात्त याद होय इसी विधिसे बारहों महीना खाय तो शरीरमें रोग नहीं व्यापै निरोग रहै.

काबुली हर्रोंकामुरब्बा.

एक सौ हरैं लेकर पानीमें डालदे और थोड़ी सी अच्छी माटी लेकर इसी पानीमें डालदे तीन दिन पीछे चुरावै तब साफ करके मधुमें बारह दिन रक्खै फिर दूसरी मधु लेकर दोनो मधुकी चासनी करके उसीमें हरैं डालदे और फिर ये दवा डालै तज, लौंग, सोंठि, बड़ी इलायची, जायफल, रूमी मस्तगी ये सब दवाई एक २ तोले दश २ मासे कस्तूरी दोमासे केसरि चारिमासे ले सब दवा मिलाके चालीस दिन पीछे खानेको देय खुराक एक तोले तमाम शरीरको ताकत देताहै दिवानगी दूर करताहै मस्त लाताहै संग्रहणी वात शिर वादी ये सब रोगोंको दूर करताहै आंखोकी ज्योति बढ़ाताहै कब जियतको दूर करताहै.

अथ आँवराका मुरब्बा.

अच्छे अँवरा एक सेर लेके एक दिन एक रात पानीमें भिगोदे फिर फिटकरीके पानीमें एक दिन भिगावै तब चूनाके पानीमें एक दिन भिगो पीछे चूना के पानीसे आँवरा धो डालै तब आधा सेर मधु और

एक सेर मिश्री इन दोनोंकी चासनी करले और चासनीमें ऑवरा डालदे फिर दवा केवडाका अर्क एक तोला, गुलाबका अर्क एक तोला, कस्तूरी एक तोला, अगर एक तोला, सब कूट कपड छान करके चासनीमें मिला पन्द्रह दिन रक्खै पीछे खानेको देवै खुराक एक तोला हडके मुरब्बासे ऑवराके मुरब्बेका गुण ज्यादा है सब रोगोंपर दे.

अथ गाजरका मुरब्बा.

अच्छा गाजर चार सेर लेकर उसका छाल छोल कर दूर करै फिर छोटे२ कतरा कर एक दिन पानीमें भिगोदे तब पानीसे निकाल दो सेर मधुमे चुरावे फिर दो सेर मधु लेवे दोनो मधुकी चासनी करै उस चासनीमे गाजर छोड देवै फिर सोंठि वालछड मिरच बड़ी इलायची रूमीमस्तंगी पीपरि कंफरकेवीज यह सब दवा एक २ तोला ले कपडछान करके मुरब्बामें मिलाय देवै आठ दिन पीछे खुराक डेढ तोलादे मनीको बढाताहै छाती व कमरके दर्दको दूर करताहै मन प्रसन्न करता है कलेजेकी गर्मीको शान्त करताहै सब रोगोको फायदा करता है.

अथ बचका मुरब्बा.

अच्छी वच दो सेर लेके पानीमें एक रात एक दिन

भिगावे फिर दूसरे दिन डेढ सेर मधुकी चासनी करके वच डाल चुरावे आठ दिन पीछे खाने को देवे खुराक नौ मासे लकवाको गुण करता है पेट और छातीको ताकत देताहे सुस्ती दूर करता है जो एक महीना खावे तो सब रोग दूर होवें शरीर निरोग रहै मुरव्वा खाय तो खट्टा मीठा नहीं खावे इसीसे बचा रहे.

अथ बेलका मुरव्वा.

अच्छा बेलका चार सेर मगज ले थोडा घी डाल पानीमे चुरावे तब मिश्री एक सेर मधु दो सेर मधु और मिश्रीकी चासनी करे फिर छडीला तीन मासे वालछड पांच मासे नागरमोथा चारमासे जहर-मोहरा खताई दो मासे जौहर कपूर दो मासे इलायची तीन मासे सब दवा कूट कपडछान करके चासनी में मिला देवे चालीस दिन पीछे खानेको देवे खुराक एक तोला संग्रहणीको दूर करताहे. पेट के सुरोंको फायदा करताहै, आंव और खूनी बवासीरको दूर करता है. ऑखों व कलेजे की गर्मीको दूर करताहे. प्यास बुझाताहे. यह मुरव्वा सब रोगोको फायदा करताहे.

अथ जुलाब लेनेकी विधि,

जिस रोगीको जुलाब देना होय उसको पहले नरम २ भोजन करावै. जैसे दूध मिश्री और अच्छा भोजन करावे. जिसमे सब रोग दोष प्रगट होवैं. तब जुलाब देवै जुलाब लेनेसे बुद्धि निर्मल होतीहै. इन्द्रियां प्रबल होतीहैं. शरीरकी सुस्ती दूर होतीहै और आंखकी ज्योति बहुत बढतीहै. वात पित्त कफके लोहूके बिगडे को दूर करताहै. खराब खूनको दूर करताहै. नया खून पैदा करताहै. सब रोगोंको दूर करताहै.

जुलाब पहिला.

कालादाना थोडा भूनकर एक तोला सनायकी पत्ती एक तोला काली हर्र एक तोला लेकर खलमें खल करै तब चना बराबर गोली बनावै एक गोली गर्म पानीके साथ खाय तो बहुत उत्तम जुलाब होय पत्थ्य खिचडी घी स्नान नहीं करै और न सोवै.

जुलाब दूसरा.

शुद्ध जमालगोटा, कालादाना. गरी ये दवा एक २ तोला ले कूट कपडछान करके अदरखके रसमें गोली बांधै, चना बराबर एक गोली गर्म पानीके साथ खाय तो बहुत उत्तम जुलाब होय पत्थ्य खिचडी घी.

भिगावे फिर दूसरे दिन डेढ सेर मधुकी चासनी करके वच डाल चुरावे आठ दिन पीछे खाने को देवै खुराक नौ मासे लकवाको गुण करता है पेट और छातीको ताकत देताहै सुस्ती दूर करता है जो एक महीना खावै तो सब रोग दूर होवें शरीर निरोग रहै मुरब्बा खाय तो खट्टा मीठा नहीं खावे स्त्रीसे बचा रहै.

अथ बेलका मुरब्बा.

अच्छा बेलका चार सेर मगज ले थोडा घी डाल पानीमें चुरावे तब मिश्री एक सेर मधु दो सेर मधु और मिश्रीकी चासनी करै फिर छडीला तीन मासे बालछड पांच मासे नागरमोथा चारमासे जहरमोहरा खताई दो मासे जौहर कपूर दो मासे इलायची तीन मासे सब दवा कूट कपडछान करके चासनी में मिला देवै चालीस दिन पीछे खानेको देवै खुराक एक तोला संग्रहणीको दूर करताहै. पेट के मुरोंको फायदा करताहै, आंव और खूनी बवासीरको दूर करता है आँखों व कलेजे की गर्मीको दूर करताहै. प्यास बुझाताहै. यह मुरब्बा सब रोगोको फायदा करताहै.

जुलाब छठवाँ.

सनायकी पत्ती, गुलावके फूल, मुनक्का, कालादाना, अमलताशका मगज, सौंफ, काला नमक सब दवा एकमें खल कर जंगली बेरके बराबर गोली बांधे एक गोली गरम पानीके साथ खाय तो तीन जुलाब बहुत उत्तम होयँ पत्थ्य मूंगकी खिचडी.

अथ शिररोगकी दवा.

कसरि, मिश्री, घी तीनों बराबर दूधमें घिसके नास लेय तो शिररोग, अधकपारी (आधाशीशी) सूर्यवती मुँहकी पीडा ये सब रोग दूर होयँ.

अथ शिरकी दूसरी दवा.

अदरखका रस. पीपरि. सेंधानमक, गुड ये सब दवा एकमें घिसके पानीके साथ नास लेय तो शिरके सब रोग दूर होयँ.

अथ शिरका लेप.

चौराई दो तोला, सोंठि एक तोला, मिरच छःमासे सब दवा एकमें पीस लेप करै तो शिरके सब रोग दूर होयँ.

शिररोगका दूसरा लेप.

रेंडीकी जड़, सोंठ, कूट सब दवा एकमें पीसके शिरपर लेप करै तो शिरके सब रोग दूर होयँ.

जुलाब तीसरा.

शुद्ध जमालगोटा तीन मासा, सोंठि चार मासा कतीरा गोंद तीन मासा एकमें मिलायके कूट कपड़ छान करके खल करै पीछे चना बराबर गोली बांधे एक गोली गरम पानीके साथदे ऊपरसे सौंफका पानी पीनेकोदेवै तो बहुतही अच्छा जुलाब होय.

जुलाब चौथा इच्छाभेदी.

सोंठि,मिरच, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध सोहागा सब दवा छः मासे ले और शुद्ध जमालगोटा डेढ तोला लेकर पीछे एकमे सब दवा खल करै पीछे दो रत्तीकी गोली बांधे एक गोली एक तोला मिश्रीके साथ खाय ऊपर जितनी अँजुरी गरम पानी पीवै उतनाही जुलाब होय इसका पत्थ्य चावल और ताक है.

जुलाब पाँचवाँ.

सनाय की पत्ती पच्चीस भरि काला दाना पच्चीस भरि गुड पच्चीस भरि सोठि पच्चीस भरि, शुद्ध जमाल गोटा पच्चीस भरि. सब दवा एकमें मिलायके खल करै पश्चात् बड़ी मटरके बराबर गोली बाँधे, एक गोली चार मासे मिश्रीके साथ खाय ऊपरसे गरम पानी पीवै तो जुलाब होय पत्थ्य खिचडी घी.

५ तथा.

जो कानमें पीव बहता होय और थोड़ा २ शब्द सुन पड़े तो सफेद दूबका रस ८ तोले और मूलीका रस ६ तोले और सेंधानमक १ तोला और तिल्लीका तेल पावभर इसमे सब दवाई डालके चुरावै जब दवा जल जाय तेलमात्र रहजाय तब कानमें डाले तो कानके सब रोग दूर होयँ.

१ अथ आँखोंका इलाज.

अगर आँखोमें लाली छाई होय और पीडा करती होयँ तो आँवला, हरैं, बहेडा यह तीनो दवा एकमें मिलायके पानीमें भिगोयदे पश्चात् चार घडी पीछे पानीमेंसे निकालकर आंखोमें डाले तो आंखोंके सब रोग दूर होयँ.

२ तथा.

हड छोटी दो मासे, बहेडा दोमासे, आँवला दो मासे, मिरच एक मासे, दालचीनी दो मासे, पीपर एक मासे, सेंधा व सांभरनमक एक एक मासे सब दवा एकमे मिलाकर खरल करै पीछे कपड छान करके नींबीके पत्ताके रसमे एक दिन खरल करै फिर एक दिन काली मकोय के रसमे खलकरके सुखायके गोली बांधिके सुखावै पीछे जुदे २ अनोपानसे आंखोंके सब

शिररोगपर खानेकी दवा.

त्रिफला, मिश्री, घी एकमें मिलाके एक तोला खा तो शिररोग दूर होय. इति शिर रोगकी दवा समाप्त

१ अथ कर्णरोगका इलाज.

जो कानकी पीडा बहुत होती होवै तो मूलीक रस पाव भर और मंदारके पत्ताका रस पाव भर औ पाव भर कडू तेल इन सब दवाइयोंको एकमे चुरा और जब दवा जलजाय केवल तेल मात्र रह जाय तब थोड़ा थोड़ा कानमें डालै तो कानकी पीड़ा और खाज दूर होय.

२ तथा.

कानके पीडा होने पर थोड़ासा समुद्रफेन कानमे डालै और फिर नीबूका रस डालै तो कानकी पीडा व शूल तुर्त हरै.

३ तथा.

सेहुंडके पत्ता और मन्दारके पत्ता दोनोंका रस निकालके गर्म कर कानमे छोडै तो कानकी सब पीडा दूर होय.

४ तथा.

सेंधा नमक, अदरखका रस, शहद, कडू तेल मिला-कर गर्म कर कानमें छोडै तो कान अच्छे होयँ.

मिलाके नींबूके रसमें चार पहर घोटै तब गोली बनाय छायामे सुखायके शहदमें आंजे तौ सब तरहके नेत्ररोग दूर होयँ और फुनसी फोडा मांसका गलना धूंधी मोतियाविंध आदि सब रोग दूर होयँ.

५ तथा.

जराया हुआ भेलावाँ एक, फिटकरी दो चना भर, अफीम एक चना भर, छः नींबूके रससे खल करके छायामे सुखाय गोली बनाकर नीबूके रसमें घिसि आँजे तो फूली,फफरा, आंखोसे पानी बहना ये सब दुःख दूरि होयँ.

६ तथा.

जेठी मधु, गेरू, सेंधानमक, दारुहल्दी, रसोत सब दवा बराबर लेके पानीमे एक दिन घोटै पीछे मटर बराबर गोली बाँधे पश्चात् पानीके साथ घिसके पलक पर लेप करै तो सब तरहके नेत्ररोग दूर होयँ.

१ अथ नाकरोगकी दवा.

जो बहुत छीकें आती होयँ तो धनियांकी पत्ती सुंघे अथवा चंदन सूंघना गुण करताहै.

२ नाकरोगकी खानेकी दवा।

सोंठि, पीपर, इलायची तीन २ मासा ले गुड सात

रोग हरे ब्राह्मनी होय तो गायके मूत्रमें घिस सात रोज आंजै तो सब रोग दूर होयँ. और फूली होय तो शहदमें घिस आंजै तो पन्द्रह दिनमें फूली अच्छी होय. और नाखूनके वास्ते अदरखके रसमें घिसि आंजे तो अठारह दिनमें दुःख दूर होय. और जो कमती देखाता होय तो बासी पानीमें घिसिके आँजै तो बाईस दिनमें अच्छी होयँ.

३ तथा.

मैनशिल, जीरा, पीपरि, धमासा, मिश्री, सफेद नौबोल, सांपकी केंचुल ये सब दवा बराबर लेकर कूट कपड़छान करके करेलीके रसकी तीन पुट दे पीछे भृंगराजके रसमें तीन पुट दे फिर खूब खलकरके घुँघुची प्रमाण गोली बांध छायामें सुखावै जो कोई नींबूके रसमें गोली घिसि एक आंखिमें आंजै तो एक अंगका ज्वर जाय और दोनों आँखोंमें आँजै तो शरीर भरेका ज्वर जाय और जो गूगलकी एक गोली का धूप देय तो भूत प्रेत डाकिनी शाकिनी लगी होयँ तो सब छूटि जायँ.

४ तथा.

शुद्ध खपरिया, सेंधानोन, शुद्धनीलाथोथा, शुद्ध सोहागा, सोंठि, मिरच, पीपरि, यह सब चीजे एकमें

मिलाके नींबूके रसमें चार पहर घोटै तब गोली बनाय छायामें सुखायके शहदमें आंजे तौ सब तरहके नेत्ररोग दूर होयँ और फुनसी फोडा मांसका गलना धूंधी मोतियाबिंध आदि सब रोग दूर होयँ.

५ तथा.

जराया हुआ भेलावाँ एक, फिटकरी दो चना भर, अफीम एक चना भर, छः नीबूके रससे खल करके छायामे सुखाय गोली बनाकर नीबूके रसमें घिसि आँजे तो फूली,फफरा, आंखोसे पानी बहना ये सब दुःख दूरि होयें.

६ तथा.

जेठी मधु, गेरू, सेंधानमक, दारुहल्दी, रसोत सब दवा बराबर लेके पानीमें एक दिन घोटै पीछे मटर बराबर गोली बाँधे पश्चात् पानीके साथ घिसके पलक पर लेप करै तो सब तरहके नेत्ररोग दूर होयँ.

१ अथ नाकरोगकी दवा.

जो बहुत छीकें आती होयँ तो धनियांकी पत्ती सूंघे अथवा चंदन सूंघना गुण करताहै.

२ नाकरोगकी खानेकी दवा ।

सोंठि, पीपर, इलायची तीन २ मासा ले गुड सात

तोला एकमें मिलाके चार मासे खाय तो नाकके सब रोग दूर होयँ

नाक रोगकी तीसरी दवा।

भृंगराजका रस पाव भर तिल्लीका तेल पाव भर, सेंधानमक दो तोला सब एकमें मिलाके चुरावे जब पानी जर जाय तेल मात्र रहि जाय तब नास लेवै तो जो नाकमें चइली (पपरी) पडती होयँ वह न पडें और पीनस इत्यादि सम्पूर्ण नाकके रोग हरै.

अथ जीभरोगका इलाज.

जो जीभपर छोटे २ फोडे निकल आवें और जीभ लाल लाल होजाय तो जानो यह रोग कलेजेकी गर्मीसे होताहै (दवा) शीतलचीनी वंशलोचन रूमीमस्तगी गुजराती इलायची गुरुचकोसत पीपरि मिश्री थे सब दवा छः छःमासे ले कूट कपडछान करके एक तोला माखनके साथ छः मासा दवा खाय तो जीभके सब रोग दूर होयँ.

अथ दाँतरोगकी प्रथम दवा.

फिटकरी, हर्रै खट्टे अनारका छिलका सेंधानमक सब दवा एकमें मिलाके कूट कपडछान करके मंजन करै तो सब प्रकारकी दांतकी पीडा दूर होय.यदि दांत हिलते होयँ तो वज्र समान होयँ.

दाँतकी दूसरी दवा.

मालछड एक मासे. अकरकरा छः मासे. सेंधा नमक छःमासे तूतियाकी भस्म एक मासे सुपारी जराई हुई छःमासे तुलसीकी पाती एक तोला, रूमीमस्तंगी एक तोला. कस्तूरी एक मासा. नागरमोथा एक मासा. जराई हुई तमाखू एक तोला. जराया हुआ बादाम एक तोला. कालीमिर्च छःमासा ये सब दवा कूट कपडछान करके मंजन करै तो दांतके सब रोग पीड़ा इत्यादिक दूर होय.

तथा.

जराई हुई सुपारी एक तोला, पीली हर्रेकी छाल एक तोला. इन्द्रायनका मग़ज एक तोला, गुलाबके फूल एक तोला, गुलनार तीन मासा ये सब दवा कूट कपडछान करके मंजन करै तो दांतके सब रोग दूर होयँ. दांतकी पीडा तथा दाँतोंका हिलना दांतमें कीडा पडजाना इत्यादिक ये सब रोग दूर होय.

तथा.

खट्टे अनारके छिलके ग्यारह मासा दो तोला, शुद्ध फिटकरी दो तोला चार मासा, अकरकरा सात मासा गुलाबके फूलसातमासा, माजूफल सात मासा

तोला एकमें मिलाके चार मासे खाय तो नाकके सब
रोग दूर होयँ

नाक रोगकी तीसरी दवा।

भृंगराजका रस पाव भर तिल्लीका तेल पाव भर सेंधानमक दो तोला सब एकमें मिलाके चुरावै जब पानी जर जाय तेल मात्र रहि जाय तब नास लेवै तो जो नाकमें चइली (पपरी) पडती होयँ वह न पडै और पीनस इत्यादि सम्पूर्ण नाकके रोग हरै.

अथ जीभरोगका इलाज.

जो जीभपर छोटे २ फोडे निकल आवें और जीभ लाल लाल होजाय तो जानो यह रोग कलेजेकी गर्मीसे होताहै (दवा) शीतलचीनी वंशलोचन रूमीमस्तगी गुजराती इलायची गुरुचकोसत पीपरि मिश्री थे सब दवा छः छःमासे ले कूट कपडछान करके एक तोला माखनके साथ छः मासा दवा खाय तो जीभके सब रोग दूर होयँ.

अथ दाँतरोगकी प्रथम दवा.

फिटकरी, हर्र खट्टे अनारका छिलका सेंधानमक सब दवा एकमें मिलाके कूट कपडछान करके मंजन करै तो सब प्रकारकी दांतकी पीडा दूर होय.यदि दांत हिलते होयँ तो वज्र समान होयँ.

दाँतकी दूसरी दवा.

बालछड एक मासे. अकरकरा छः मासे. सेंधा मक छःमासे तूतियाकी भस्म एक मासे सुपारी राई हुई छःमासे तुलसीकी पाती एक तोला, रूमी- मस्तंगी एक तोला. कस्तूरी एक मासा. नागरमोथा एक मासा. जराई हुई तमाखू एक तोला. जराया हुआ बादाम एक तोला. कालीमिर्चे छःमासा ये सब दवा कूट कपडछान करके मंजन करे तो दांतके सब रोग पीड़ा इत्यादिक दूर होय.

तथा.

जराई हुई सुपारी एक तोला, पीली हरेंकी छाल एक तोला. इन्द्रायनका मगज एक तोला, गुलाबके फूल एक तोला, गुलनार तीन मासा ये सब दवा कूट कपडछान करके मंजन करे तो दांतके सब रोग दूर होयँ. दांतकी पीडा तथा दाँतोंका हिलना दांतमें कीडा पडजाना इत्यादिक ये सब रोग दूर होय.

तथा.

खट्टे अनारके छिलके ग्यारह मासा दो तोला, शुद्ध फिटकरी दो तोला चार मासा, अकरकरा सात मासा गुलाबके फूलसातमासा, माजूफल सात मासा

थे सब दवा कूट कपडछान करके मंजन करै तौ द
की पीडा,कीडों का पड़ना तथा हिलना मिटै और द
मजबूत होयँ. कभी न हिलें दांतके सब रोग दूर हो

तथा.

कालेदांतोंको सफेद करताहै, पीली हरडोंक
छिलका दोतोला ग्यारह मासा कालीमिर्च चौदह म
सा अनारका चूरण दश मासा तेजपात सात मास
माजूफल जलाया हुआ दो तोला चार मासा सब द
कूट कपड़छान कर मंजन करै तौ मुँह दांत पीड़
इत्यादिक सब दूर होयँ.

अथ श्वास रोगका वर्णन.

जिन वस्तुओंके खानेसे हुचकी होतीहैं उनहीं पदा
र्थोंके खानेसे श्वास पैदा होताहै वह श्वास ५ प्रका
काहै महाश्वास १ ऊर्द्ध श्वास २ छिन्न श्वास ३ तमक
श्वास ४ क्षुद्र श्वास ५

अथ श्वास रोगकी पहिचान.

हिया कनपटी दूखे, शूल होय, अफरा होय, मल
मूत्र नहीं उतरै और न मुखमे रसको स्वाद आवै
तब जानिये श्वासरोग होगा इस रोगकी शांतिके वा-
स्ते ३ चांद्रायणव्रत करि ब्राह्मणोंको भोजन जिमावै
और विष्णुसहस्र नामका पाठ कराय ब्राह्मणों की भ;

तिसे पूजा करै और सोना दानदे तो श्वास शांति होय पीछे दवा करै.

अथ श्वासका लक्षण.

जब मनुष्य श्वाससे दुःखी होय तवमस्तवैलकी नाई लेवे २ श्वास निरंतर लेय संज्ञा और ज्ञान नष्ट होजाय, नेत्र तरतराट करैं और श्वास लेते मुँह कट व फट जाय, बोला नहीं जावै, गरीबसा होजाय और जिसका स्वर बहुतही दूर सुनाई देय तो वैद्यको चाहिये कि इस श्वास वाले रोगीको असाध्य जान दवा न करै (पुनः) सर्व शरीरमे पीड़ा होय और पाँचो पवनोसे पीडित मनुष्य ठंढी २ श्वास लेवे अथवा दुःखित हो श्वास नहींले अफाराहो शरीरका व्रण और होजाय तो असाध्य जानों.

अथ खांसी श्वास की दवा.

बंग १ टंक पीपरि २ टंक हड़का बोकला ३ टंक बहेड़का बोकला ४ टंक रूस की पाती ५ टंक भारंगी ६ टंक इन सबको कूट कपरछान करि बबुलके काथ में २ पुट दे पीछे शहद में २ पुट दे खल करि झरबेरके बराबर गोली बाँधे १ गोली खाय तो श्वास खांसी क्षयी सब दूर होय.

शीतोपलादि चूर्ण.

मिश्री १६ तोले वंशलोचन ८ तोले पीपर ४ तोले इलायची २ तोले दालचीनी १ तोले इन्होंका चूर्ण करके घृत शहद युत खावे तो कास श्वास क्षयी व हस्त पाद अंग की दाह मन्दाग्नि जीभका जकडना पशुली शूलकी पीड़ा अरुचि ज्वर ऊर्द्धगत रक्त विकार पित्त इन सब रोगों को नाशै, शरीरकी रक्षाकरै.

अथ खाँसी दमा श्वासकी दवा.

अकरकरा १ तोला रुटजीरा १ तोला हींग १ तोला पीपर १ तोला चनाकी दाल भुँजी १ तोला अफीम ६ मासे लौंग ६ मासे सब दवा थोरी कूटि ले फिर एक दिन मदारके दूधमे भिगोय रक्खै पीछे सेंहुड़के गोजेका मगज़ निकालके उसमें दवा भरके मुँह बंद कर सात सेर कण्डों में फूंकि देय जरै न पावै फिर निकालि खल कारि चना बराबर गोली बाँधि खाय तो सब तरह का दमा खांसी श्वास क्षयी दूर होय.

अथ हुचकी की दवा.

आँवलाके रसमें पिपली शहद मिलाय खानेसे हुचकी श्वास जावै.

अथ श्वास रोग नाशक शुंठ्यादि चूर्ण.

कचूर कमलकंद गिलोय दालचीनी नागरमोथा पुष्करमूल तुलसी भूमिऑवला इलायची पीपल कालाअगर सुंठि भीमसेनी कपूर ये सब दवा समान ले चूर्ण बनाय दुगुनी खांड़ मिलाय खानेसे हिचकी श्वासको हरै.

अथ भारंगी गुड़ श्वास पर.

भारंगी १०० तोले दशमूल १०० तोले हड़ बड़ी १०० तोले ले १२०० तोले पानी में दवा डारि चुरावे जब ३०० तोला शेष रहै तो कपडासे छानि-के ४०० तोले गुड़ मिलाय फिर चुरावे जब अवलेह होय जाय तब उतारिके ये दवा डारै शहद २४ तोले सोंठि ४ तोले मिर्च ४ तोले पीपल ४ तोले दालचीनी ४ तोले इलायची ४ तोले तमालपत्र ४ तोले यवा-खार २ तोले इन्हींका चूर्ण करि मिलायके २ तोले खानेसे ५ प्रकारके श्वास ५ प्रकारकी खांसी बवासीर अरुचि गुल्म अतीसार क्षयीको हरै और स्वर अग्निको बढ़ावे यह भारंगी गुड संसारमें विख्यात है.

अथ श्वास खांसी नाशक वसन्तराज रस ।

त्रिकुटा त्रिफला लोहारस कुटकी हरे अफीम धतूरे के बीज शद्ध गजराती इलायची चिरायता कपूर

तोला. अजवाइन दो तोला. काली जीरी सवा दो तोला ये सब दवा एक हंडीमें भरके गजपुट आँच दे जब भस्म होय तो चाररत्ती पानके साथ खाय तो श्वास खाँसी दमा इत्यादिक सब रोग दूर होयँ.

अथ उदररोगका वर्णन.

उदररोग ८ प्रकारका है सो लिखतेहैं मंदाग्निवालेके निश्चय होय और अजीर्णसे खराब वस्तुके खानेसे वात पित्त कफके कोपसे उदररोग उत्पन्न होताहै सो अलग अलग लिखते हैं वातका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ प्लीहाका ५ मलबंधका ६ चोट लगनेका ७ जलोदर ८ ऐसे आठ प्रकारकेहैं अब अलग २ लक्षण सुनो.

अथ वातोदर लक्षण १.

जिस पुरुषके हाथ पैर नाभिमें सूजनहोय कुक्षि पशुली कटि पीठी संधिमें पीड़ा होय और रूखा खांसी शरीर भारी रहै मलउतरै नहीं शरीर की खाल नख नेत्र काले पड़ जावैं पेटमें पीड़ा और अफरा हो पेट बोलाकरे ये लक्षण वातोदरकेहैं.

अथ पित्तोदर लक्षण २.

ज्वर मूर्च्छा दाह तृषा होवै. मुख कडुवाहो, शिर घूमरे, अतीसार हो, शरीरकी खाल पीली हरी होय

और पसीना आवे डकार खराब आवें ये सब रोग होयँ तो पित्तोदरका लक्षण जानो.

अथ कफोदरका लक्षण ३.

जिसके शरीरमें पीड़ा होय और बहुत सोवे शरीर में सूजनहो सब शरीर भारी रहे हिया दूखे भोजन में अरुचि हो देर मे पचे शरीर ठंढा रहे पेट बोला करे ये सब लक्षण कफोदरके हैं.

अथ सन्निपातोदरलक्षण ४.

खराब जिसोंके खानेसे उदरमे नानाप्रकार के रोग पैदा होते हैं, मूर्छा, मोह, पांडु, शोष, तृषा, हो तो सन्निपातोदरका लक्षण जानो.

अथ प्लीहोदरका लक्षण ५.

गरम वस्तुके खाने पीने से दुष्ट रुधिरसे कफके जोरसे प्लीहाको बढ़ावैहै पीछे बढ़ा प्लीहा बाईं पसुली मे रोग और तिल्लीको उत्पन्न करै है इस रोग मे मनुष्य पीडित होयके बहुत दुःख पाता है ॥ मन्दाग्नि, जीर्णज्वर, कफ, पित्त उपजै बल जाता रहै शरीर पांडु वर्णहोजाय ये लक्षण प्लीहोदरके जानो.

अथ मलबंधसे यकृतोदर लक्षण,

दहिनी पासुके नीचे ओर नाभिके ऊपर मास का पिंड सरीखा विकार उपजै तिसे यकृत रोग

कहते हैं इस रोगको यकृत गोलः का लक्षण जानो.

अथ छतोदरका लक्षण.

जो मनुष्य कच्चा अन्न खाय और बाल कंकड रेत धूलसे मिले हों मलका संचय हो कष्टसे थोरा मल उतरै हृदय नाभि बढ़ जावे तिसको बद्ध गुदोदर तथा छतोदर भी कहते हैं.

अथ जलोदरका लक्षण.

घृतको खाय, बस्ति कर्म कराय जुलाब ले, वमन करके शीतल जलको पीवै, इससे जलकी बहने वाली नसे दूषित हो स्नेह करिके लिपी जलोदरको उत्पन्न करे हैं और उस शीतल जलसे उत्पन्न हुआ जलोदर नाभिके पास गोल और चीकना होय पानी भरी मसक समान बहुत बढ़े तब मनुष्य उससे बहुत दुःखी हो और उसका शरीर कंपे और पेट वारंवार बोलै ये लक्षण जलोदरके हैं असाध्य जलोदररोगीको त्याग करै और इस रोगवाले रोगीकी सँभारिके दवा करै काहेसें कि इस रोगीका जीना कठिनहै और रोगीको खराब चीजके खानेसे बचाये रहै तीन महीनाके बाद थोरा अन्न दूधके साथ देय तो ६ महीना तथा एक वर्ष में जलोदर दूर होय

अथ वातोदरकी दवा.

पीपल, सेंधानमक पीस एक में मिलाय तक्रके साथ खाय तो वातोदर जाय.

पुनः दूसरी दवा, कुष्ठादि चूर्ण.

कूट जयपाल जवाखार सोंठ मिर्च पीपल सेंधानोन मणियारी नमक कालानमक बच जीरा अजवायन हींग साजीखार चीता चाव इन्होका चूर्ण करके गरम पानीके संग खानेसे वातोदर नाश होय

अथ पित्तोदरकी दवा.

इसरोगमें बलवान पहिले दूधमें निसोतका कल्क और अरंडीका तेल मिलायके पियेतो पित्तोदरदूर होय.

दूसरी दवा.

निसोत व त्रिफलाका काढ़ाकर घृत डारि पीनेसे पित्तोदर नाश होय.

अथ कफोदरकी दवा.

सोंठि मिर्च पीपल नागरमोथा इन्होंका काढ़ा बनाय गोमूत्र और अरंडीका तेल मिलायके पीनेसे कफोदर दूर होय.

पुनः दूसरी दवा.

लोहचूर्ण, अरंडीका तेल दूधमें कुछ दिन पीनेसे कफोदर नाश होय.

अथ सन्निपातकी दवा.

हर्र निर्गुडीका गोमूत्रमें कल्क बनाय खानेसे संपूर्ण उदर रोग तिल्ली बवासीर कृमि गुल्मको नाश करै.

पुनः दूसरी दवा.

नागरादि तैल ६४ तोले सोंठि ६४ तोले त्रिफला ६४ तोले घृत २५६ तोले सबको एकमें मिलाय २ तोला दहीके संग खानेसे संपूर्ण उदररोग कफोदर कफ गोला वायु गोला नाश होयँ.

अथ प्लीहोदरकी दवा.

स्नेह स्नेह जुलाब तिल्ली में हितहै और बायें हाथकी कोहनीके अभ्यंतरवर्ती जो नाड़ी है तिसमें फस्त खोलानेसे यकृत रोग नाश होय और उस नसको अग्निसे दाग दे तो प्लीहा दूर होय पीपली में शहद तक्र मिलाय पीनेसे भी प्लीहा नाश होय हुरहुर का पंचाग ८ तोला ले मिर्च ८ तोले मिलाय खल करके ६ मासेकी गोली बनाय शाम सवेरे खानेसे प्लीहा नाश होय और शुद्ध बच्छनाग चौकिया

सोहागामें खलकरके पहिले दिन दो सरसोंसे बीस सरसो तक देइ रोगीका बल देखिके और आधासेर दूध के साथ सेवै तो सब उदर रोग नाश होयँ जैसे सिंह हाथीको मारै तैसे यह दवा उदर रोगको मारतीहै.

अथ जलोदरकी दवा.

जलोदरमें बारंबार जुलाबदे जिससे मल विकार दूर होय अथवा काबुली हरीं का चूर सेधानमक गोमूत्रमे पीनेसे जलोदर नाशहोय अथवा पीपलका चूर्ण थूहरके दूधमे भिगोय खानेसे जलोदर नाश होय अथवा आनन्दभैरोंरस दूधके साथ कुछ दिन सेवनेसे जलोदर नाश होय. अथवा नीलाथोथा, गन्धक, पिपली, हर्र सब बराबर ले कूट कपड़छान करि थूहरके दूधमे ७ दिन खल करि फिर अमिलतासके काढ़ामे७ दिन खल करि १ मासे नित्य गरम पानीके संगखाय तो जलोदर तथा सम्पूर्ण उदरके रोग जायँ पथ्य अधिक चावलही खाय इमिलीका शर्बत पिये ऊपरसे पान का बीरा खाय तो बहुत फायदा होय.

जलंधर वाले रोगीकी तस्वीर देखना इसी तरहसे पेट सूजताहै इस रोगीको बहुत सँभारना चाहिये खट्टा मिट्ठा और तीतासे बचना चाहिये और जल्दी ही दवा करै नही तो असाध्य होजाताहै सो पीछे बहुत दुःख देताहै सो दवा अच्छी २ लिखी है दो दवा और लिखते

हैं शुद्ध शंखिया १ तोला रेवलचीनी ९ मासे जदावर खटाई ९ मासे अकरकरा ९ मासे सफेद कत्था २ तोले सब दवा कूट कपड़छान करके अदरखके १ सेर भर रसमे खल कर मूंग बराबर गोली बांधे एक गोली खानेको दे तो रोग दूर होय (पुनः दवा) पीपल मिरच सोंठि पांचोनोन सोहागा सज्जी सब दवा बराबर ले और दवाके बराबर जमालगोटा ले प्रथम दवाको कूटि कपड़छान करिके दात्वर्णीके रसमे ३ पुटदे फिर बिजौराके रसमें २पुटदे खरलकर छायामें सुखायके फिर आधा रत्ती रस खानेको दे तो उदररोग, प्लीहा, गोला, जलंधर इत्यादि सब रोग हरे परन्तु ब्राह्मणको बुलाय प्रायश्चित्त पूजा पाठ जप करावै पीछे भोजन दान दे तो रोग शांति हो और सोनेका कलश व कुबेरकी मूर्ति बनाय पूजा करै तौ पूर्व जन्मका पाप नाश होय रोगी जीवे.

अथ उदररोगका इलाज.

वाईका फिसाद और कच्चा भोजन करनेसे उदरमें पीडा होतीहै (दवा) पानी गर्म कर नोन मिलाय पिलावै तथा उलटी करावै और जबतक भूख न लगे तबतक भोजन न देवै जबशरीर और पेट हलका होजाय तब खानेको देवै तो सब दुःख दूर होय. पीडा शांति होय.

अथ उदरका दूसरा इलाज.

सनायकी पत्ती, हड, बहेडा, आंवला, कालानमक

सब बराबर लेकर कूट कपड़छान करके नींबूके रसमें गोली बांध एक गोली शाम और एक सबेरे खाय तो पेटकी पीडा, वात, पित्त, कफ, संग्रहणी, ऑवका परना, इत्यादि रोगोको दूर करै. और आठ दिन सेवन करनेसे मनुष्य निरोग होजाता है भूख बहुत लगतीहै और मन प्रसन्न होजाता है.

तथा.

सोठिकीकतरी उदर व कलेजेकी पीडा तथाश्सर्दीको दूर करतीहै अन्नको पचाती है यदि अदरखके रसमें खिलावै तो दस्त बन्द होय कब्ज़ियत दूर होय.

दस्त बन्दकरनेकी दवा.

हींग, जहरमोहरा खताई, मिरची, अफीम ये सब दवा बराबर ले खलमे खल करै फिर चना बराबर गोली बॉधै एक गोली नींबूके रसके साथ खाय तो संग्रहनी वातको शांति करै सब प्रकारके उदररोग दूर होयँ.

तथा.

अफीम साढ़े तीन मासा, अकरकरा सात मासा झाऊके फूल चौदह मासा सामक चौदह मासा, हुब्बुलास चौदह मासा, लेके बबूरके गोंदके रसमे दो मासाके बराबर गोली बांधे एक गोली खाय तो दस्त एक घंटामे बन्द होय.

तथा.

पीपर एक तोला, हड एक तोला, पांचोनमक एक एक तोला यह सब दवा जम्हीरी नींबूके रसमें खल कर दो मासाके बराबर गोली बांधे एक गोली खाय तो दस्त बन्द होय, अजीरन दूर होय, वाय, शूर जलंधरादि रोगोको बहुत गुणदायक है वाईको पचाता है भूखको लगाता है.

अथ पाचककी गोली.

मन्दारके मुँह मुंदे फूल चार तोला, काली मिर्च चार तोला, कालानमक चार तोला, ये सब दवा एकमे मिलाके खल कर बेरके बराबर गोली बांधे एक गोली शामको और एक सबेरे खाय तो शूल वायगोला इत्यादिक रोग दूर होयँ.

अथ संग्रहणीकी गोली.

शुद्ध सोहागा शुद्ध सिंगरफ ये दोनों दो दो मासे अफीम चार मासे ले खल करके मिर्च बराबर गोली बाँधे जो रातको दस्त बहुत होता होय तो शहदके साथ एक गोली खिलावै और जो दिनको दस्त होता होय तो एक एक गोली नींबूके रसके साथ खिलावै तो सब तरहकी संग्रहणी वायु दूर होय. दस्तको रोंके

संग्रहणीकी दूसरी गोली.

कफके दस्तको बन्द करै. पाचक है, कालीमिर्च

सोंठि, पीपर, लौंग, अकरकरा सब दवा साढे तीन २ मासे अफीम सात मासे ले अदरखके रसमे चना बराबर गोली बांधे फिर एक गोली सांझ और एक सवेरे खानेको दे तो कफ दस्तसे उत्पन्न सब रोगोंको दूर करे.

अजीर्णका चूर्ण.

हड, पीपरि, सोंचरनमक, वच, हींग बराबर २ ले कपड छानकरिके दो टंक पानीके साथ खाय तो अजीर्ण जाय.

अजीर्णका दूसरा चूर्ण.

हींग एक टंक, वच २ टंक, विडनमक ३ टंक सोंठि ४ टंक, जीरा ५ टंक, हड ६ टंक, पोहकर मूल ७ टंक कूट ८ टंक ये सब दवा कपड़छान करिके सात मासे गर्म पानीके साथ खाय तो अजीर्ण और मूर्छा वाय-गोला इत्यादिक दूर होयँ.

अजीर्णका चूर्ण (अग्निमुख)

हींग, वच, पीपरि, सोंठि अजवाइन, चित्रक, कूट सब दवा बराबरि ले कपडछान करिके छः मासे गर्म पानीके साथ खाय तो चारप्रकारका अजीर्ण, प्लीहा कोढ, खाज, खांसी गोला शूल मन्दाग्नि जांयँ.

कृमि रोगका चूर्ण.

वायविडंग. सेंधानमक, जवाखार, कसीला, हर्र सब बराबर ले कपडछान करिके गायकी छाँछमे दो टंक खाय तो कृमिरोग दूर होय.

पांडु रोगका इलाज.

त्रिकुटा, तज, बेरकी गुठुली, मिर्चें, सोनामाखी ये सब दवा बराबरि ले कूट कपड़छान करिके शहदमें ४ टंककी गोली बांधे एक गोली सबेरे छाँछके साथ खाय तो पांडुरोग तथा उदररोग दूर होय.

वातका तीसरा चूर्ण.

त्रिफला, नागरमोथा. अतीस, कोरैयाकी छाल, सेंधानमक, हींग ये सब दवा बराबर लेकर कूट कपडछान करके छः मासे गरम पानीके साथ खाय तो वातातीसार और पेटकी पीडा दूर होय.

अथ अतीसारकी दवा.

पीपलामूल, गजपीपर, पीपर, बेलगिरी, सोंठि, राल, शिलाजीत, चित्रक, ये सब दवा बराबर ले कूट कपड छानकर दो टंक खाय तो आमातीसर व वातातीसार इत्यादिक दूर होयँ.

पित्तातीसारकी दवा.

इन्द्रयव, बेलगिरी, अतीस और धौके फूल, रसौत, सोंठि, मुलहठी यह सब दवा पीसकर छानके चूर्ण बनावै जो यह चूर्ण ४ मासे साठीके चावलके साथ खाय तो उदरके सब रोग दूर होयँ.

अथ कफातीसारकी दवा.

कालानोन, सेंधानोन, हींग, हरैं, वच, अतीस ये सब

खा बराबर लेकर कूट कपड़छान करके २टंक गर्म.
पानीके साथ खाय तो सब तरहका उदररोग दूर हो.

अथ चौहारम चूर्ण.

सिहोरके पत्ता एक पैसा भर, बबूरके पत्ता एक पैसा भर, आंवलाके पत्ता एक पैसा भर, तुलसीके दल दो पैसा भर, सबके पत्ता सुखा लेवे फिर जवाखार एक पैसा भर सज्जीखार एक पैसाभर और पांचोनोन एक २ पैसा भर पीपर डेढ पैसा भर मिर्चे डेढ पैसा भर नागरमोथा डेढ पैसा भर ये सब दवा कूट कपड़छान करके छःमासे चूर्ण पानीके साथ खाय तो डड़ज्वरी, वाय पेटका फूलना, शूल दूर होय भूख लगै. सब प्रकारका उदररोग दूर होय.

अथ सुनबहरीकी दवा.

गुडपुराना एक सेर नींबीके पत्ता एक सेर नींबीके ड एक सेर नींबीकी छाल एक सेर ये सब दवा एक ड़ामे भरके आधामन पानी डालके पन्द्रह दिनके छे खानेको दे खुराक एकतोला. खुरासानी अजवाइन साथ और तिरसठ दिन खाय तो सुनबहरी दूर होय.

अथ सुनबहरीका लेप.

काष्टक एक रत्ती ले पानीमे घोरि लेप करै तो सुन बहरी जाय.

अथ नामर्द अर्थात् वाजीकर्णका वर्णन.

वाजीकर्ण उसको कहतेहैं जो पुरुष देखनेमे मोटा और पुष्ट होय पर नामर्द होय नामर्द सात प्रकारके होतेहै उनकी उत्पत्ति लक्षण लिखते हैं.

(१) लौंडेबाजी तथा हथरस करना, कडुई वस्तु और अधिक खटाई खाना, गर्म नोन खाना इन सब चीजोंको अधिक खानेसे आदमी नामर्द होजातेहैं शोक और क्रोधके करनेसेभी वीर्यका नाश होताहै स्त्री धन पुत्र आदिके नाश होनेसेभी नपुंसक होतेहै इन्द्री में नख लगनेसे तथा वात पित्त कफके कोपसे इन्द्रीकी नसें सूख जातीहैं वह पुरुष नपुंसक होजाताहै यदि इसका दिल चला और स्त्रीके पास गया तो काम नहीं होता और बुद्धि नष्ट होजाती है बल जातारहता है तब दशो इन्द्रियोंमें राग पैदा होताहै इसलिये इसके वास्ते बहुत अच्छी अजमाई हुई दवाई लिखते हैं.

अथ नामर्दकी दवा, सेंक.

हाथी और मच्छलीके दांत का चूर्ण, चार२तोले,लवंग ८ मासे, जायफल दो नग, जंगली प्याज एक नग ये सब दवा कूट कपड़ छान करके दो पोटरी बनावै तब भेड़का दूध १० तोले लेकर एक हंडीमें भरै और उसको परईसे ढांक मट्टी से ताय आग पर रक्खै, परईके बीचमे एक छोटा छेद करै

तब जो वाफ परईके छेदसे निकले उस पर वह पोटरी रक्खै जब पोटरी गर्म होय तो १ घंटा जंघा और पेडूतक चार दिन सेंकै ऊपर से बॅगला पान गर्म करके इन्द्री पर बांधै और पानी से नहाना त्याग करै.

सेंकके पीछे लेप.

सफेद कनेरकी जड, जायफल, अफीम, इलायची गुजराती, सेमरके छिकला ये सब दवा छः २मासेलेकर कूटकर कपड़छान करके तिल्लीके १ तोले तेलमें मिलाय गर्म कर तीन दिन इन्द्रीपर लेप करै तो उसकी इन्द्रीमे जरूर जोर होगा पर परहेज ऐसा करना कि जिस तरह मुर्गी अपने अंडेको ४० दिन प्रमाण सेवतीहै.

लेपके ऊपर खानेकी दवा.

नामर्द होनेसे आदमीकी धातु फट जाती है सुजाक होजाता है पीव बहने लगताहै (दवा)मुसरी स्याह,असगंधनगौरी,गुलधवा, चना भूंजा हुआ, वेदरा सोंठि, उटंगन के बीज, गाजर के बीज, पोस्ताके फल, ताल मखाना ये सब दवा एक एक तोला ले और सब दवाके बराबर मिश्री मिलायके एक तोला .. खाय ऊपरसे आधा सेर दूध पीवै

इसके खानेके पीछे दूसरी दवा खानेकी.

चिलगोजाके बीज, खसखस, सफेद स्याह मु कुलंजन, लवंग फुलवाली, सालममिश्री, ज।वि

मोगली तालमखाना, छोटा बीजबन्ध, ब्रह्मदंडी, दालचीनी ये सब दवा चार चार तोले ले और काकंज ९ मासे ये सब दवा कूट कपडछानकरके आधा सेर मधुमें मिलाय दो मासे शाम और दो मासे सवेरे खाय और परहेजसे रहे तो नामर्दी, नपुंसकी जाती रहे और अतुल बल होवे.

सेक दूसरा.

बीरबहूटी, केंचुआ सूखा, असगंध नगौरी, जरब चोप, आंबाहलदी, भूँजा चना ये सब दवा छः २ मासे ले कूट कपडछान करके गुलरोगन डारके खल कर दो पोटरी बनावे फिर चूल्हेपर तवा रख मधुरी आंच से १ घंटा सेके चार दिन तक सेके ऊपरसे बँगला पान गर्म करके बांधे नहाय नहीं.

सेंकके ऊपर लेप.

अकरकरा दक्षिणी, बीरबहूटी दो २ मासे और लवंग २० नग बकराका गोश्त १० तोले ये सब दवा खल कर के इन्द्री की मोटाई प्रमाने एक लकडी लेवे उसमें दवा लगावे जितनी बडी इन्द्री हो उतनी लकडी तक दवा लगावे और उस लकडीको आग पर सेकै जब थोड़ा कड़ी होजाय तो लकड़ी परसे ज्योका त्यो निकाल कर या आधे आध फारके निकाल कर वैसेही दवा इन्द्री पर चिपकादेवे और पानीका परहेज रक्खे

घीकुवारि योग लेपके ऊपर.

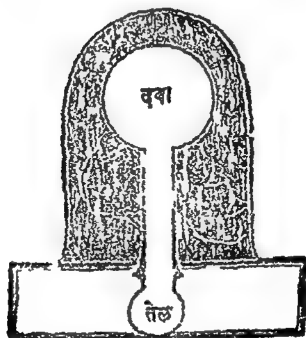
घीकुवारि का गोझा, गेहूका आटा, कपासके बीज, शक्कर, घी ये सब दवा एक २ सेर लेकर दवा कूटै फिर शक्करकी चासनी कर उपरोक्त दवा घी में जुदी २ भूंज उसी चासनी में छोडदे पीछे ये दवा और मिलावै गोखुरू ८ तोले, पिस्ता ७ तोले,सफेद खोपड़ा ७ तोले, चिलगोजा ७ तोले,येसब कूटके मिलायके योग तय्यार करै तब पांच तोले सबेरे खाय और पीछे आधा सेर दूध पीवै परहेज खट्टा मीठा बचावै.

अथ नामर्दीके ५१ जिनका तेल.

शेरकी चरबी, मालकांगनी, अकरकरा, बीरबहूटी, सोंठि, जाविञी, जहर कुचिला, दालचीनी, लोहवान कौडिया, लवंग, वच्छनाग, हरताल तबकी, जायफल, जमालगोटा, पारा, हाथी का दांत; गंधक, अँबरासरु, भटकटैया, घूंघची सफेद, केचुआ, सफेद कनैरकी जड़, खुरासानी अजवायन, पियाजका बीज, इसबन्द, शंखिया सफेद, रेंडी का बीज, कालीजीरी ये सबदवा चार २ तोले और पांच मुर्गीके अंडा की सफेदी मिलाय के अग्नि कांच सीसी मे भरके पाताल

थंत्र से तेल निकाल लेय और ६ मासे प्रमाण ४०
दिन इन्द्री पर लेप करै पानीसे न नहाय तो नामर्द
और नपुंसकी दूर होय और स्त्रीभोग की शक्ति होवै

यह पाताल यंत्र है.



इस यंत्रसे तेल निकाला जाता है

१ अथ इन्द्रियका लेप.

लोहवान अच्छा १० टंक लेकर करौंदाके रसमें
खल करै फिर चार तोले घीमें खलकर गोला बनाकर
पातालयंत्रसे तेल निकालकर पहले इन्द्रियको दरद

मलै फिर तेलसे मलै तब गरम गरम पानका पत्ता बांधै तो पन्द्रह दिनमे नामर्द मर्द होय.

२ लेप.

समुद्रफेन देवदारु हरदी मुलहठी शहद सब बराबरले गदहाके पेशावमें घिसि लेप करै तो इन्द्रिय बड़ी होय सही.

इन्द्रियका सेक.

नगौरीअसगंध केचुवा वीरबहूटी आंबाहरदी भूंजाचना सब बराबर लेकर गुलाबका तेल मिलायके पोटरी बनाकर सेंके तो सब दुःख दूर होय.

१ दवा नामर्दकी.

गोखरू तीन टंक स्याहतिल तीन टंक दूनोंको कूट कपड़छान करके एकसेर दूधमे मिलाकर चुरावै जब खोवा होजावै तब खाय इसी विधिसे इक्कीस तथा बयालीस दिन खाय तो नामर्द मर्द होय.

२ दवा दूसरी.

अकरकरा एक टंक केसरि दो टंक जायफल ३ टंक लौंग तीन टंक सिंगरिफ छः टंक अफीम दो टंक ये सब चीजें एकमे मिलाय बराबर खल करके मधुमें गोली बांधै चना बराबर शामको एक गोली खाय और ऊपरसे एकसेर औटाया दूध पीवै तो बंधेज होय.

बंधेजकी गोली.

केसरि लौंग जायपत्री जायफल खपरिया अजमोदा माजूफल समुद्र शोष मोटकी जड मस्तंगी कुलंजन अफीम सिंगरिफ बत्सनाग कस्तूरी कपूर सब बराबर लेकर कूटि छान मधुमें गोली बांधकर मटर सम छोटी गोली बनावै और एक गोली शामको खाय ऊपरसे एकसेर औटा दूध पीवै तो बंधेज होय.

१ नामर्दकी दवाई.

सफेद घुंघुची खिरनीके बीज लौंग सब पाव २ भर लेकर कूटकर सीसीमे भरके पातालीयंत्रसे इसका तेल निकालके एक सींक निकालके पानमे खाय ऊपर एक छटांक घी खाय और दो सींक खाय तो दो छटांक घी खाय तो नामर्द मर्द होय.

२ तथा.

तालमखाना ४ तोले और नगद बावची ४ तोले इसबगोल ४ तोले और इमलीका चीया ४ तोले बीजबंध ४ तोले कौंचबीज ४ तोले नागरमोथा ४ तोले बबूलका गोद४तोले येसब चीजें एकमे मिलायके कूट कपडछान करिके घी ३६ तोले लेकर गुड पुराना अच्छा ३६ तोले लेकर एकमें मिलायके तीन दिनपीछे खाय औ परहेजसे रहै तो२१दिनमें पुष्टहोय मर्द होय

छोहारा पाककी विधि.

छोहारा १० टंक पिस्ता ४ टंक जटामासी २५ टंक केवाँचके बीज २५ टंक तेजपत्र २५ टंक नाग· केसरि २५ टंक बदाम ४ टंक जायफल २५ टंक दालचीनी २५ टंक केसरि २५ टंक चव २५ टंक सोंठि २५ टंक कमलगट्टा २५ टंक चिरौंजी २५ टंक. जावित्री२५ टंक ये सब दवाले कपडछान करके तब ५ सेर दूधका खोवा करके खोवामें अढाई सेर मिश्री और १६ तोले घी डालके तब सब दवा उसमे डारके अच्छी तरहसे मिलाकर अवरख रस लोहारस बंगरस ये रस एक २ तोले लेकर येभी उसी दवामे मिलावे और लड्डू बाँधिके खाय तो पुष्ट होय सौ स्त्रीसे भोग करै बल न घटै.

सोंठि पाक विधि.

सोंठि पाँच सेर लेकर चूर्ण करके गायका घी ५ सेर डालके भूंजिले फिर २५ सेर दूध औटावे जब आधा रहजाय तो चूर्ण डालके मिलावै जायफल ८ टंक जावित्री ८ टंक लौंग ८ टंक त्रिफला २० टंक जीरा दोनो १६ टंक मिर्चे ८ टंक इलायची ८ टंक नागरमोथा ८ टंक भीमसेनी कपूर ४ मासे छोहारा ३० टंक विदारीकंद ८ टंक सतावरी ८ टंक लसोढ़ा

८ टंक केसरि ८ टंक दालचीनी ८ टंक सालम मिश्र
८ टंक मस्तंगी ८ टंक वंशलोचन ८ टंक नारियलकी
गरी ८ टंक बदामकी गरी ८ टंक चिलगोजे ८ टंक
पाषाणभेद ८ टंक ये सब दवा पीसकर मावा
मिलायके रस डाल अवरख रस बंगरस सोनारस
चांदीरस एक २ तोले डालके मिलाकर तीन तोले
रोज सवेरे साम खाय तो सुन्दररूप होय शरीर
शोभायमान होय और शरीरभरेका रोग दूर होय बल
अतुल्य होय वीर्य बढै.

असगंध पाक विधि.

असगंध ४०तोले सोंठि २० तोले पीपरि १० तोले
मिर्च ४ तोले दालचीनी ४ तोले इलायची ४ तोले
तमालपत्र ४ तोले लौंग ४ तोले. ये सब दवा कूट
कपड़छान करके दूध २०० तोले चुरावै जबआधा
दूध रहिजाय तो मधु १०० तोले मिश्री १२० तोले
गायका घी ५० तोले ले चूर्ण में मिलायके अच्छी
तरहसे रक्खै और पीपरी जीरा गिलोय लौंग तगर
जायफल वाला काला चन्दन खिर्नी कमलगट्टा धनियां
धौकाफूल वंश लोचन अमला कैथ सोंठि कपूर असगंध
चीता सतावरी ये सब दवा छः छःमासे लेकर कपड़छान
करके मावामें मिलावै और पाक तय्यार करे सोनारस
चांदीरस अवरख रस. तांबारस हरताल रस सब

मिलायके खुराक दो तोले या तीन तोले खाय और एक महीना सेवन करे तो खाँसी श्वास दमा बीस परमा अस्सी शूल चौरासी वायु सब रोग हरे. शरीर फूलके समान होय और बल अतुल्य होय. पुष्ट होय. इसका गुण बयान करने योग्य नहीं है.

पुष्टाईका पाक.

बडा गोखरू छोटा गोखरू चिरैया कन्द कामराज मुसरी सफेद मुसरी स्याह सेमरका मुसरा तालमखाना पुलमखाना नागोरीअसगंध बीजबंध गुरुच कासत सफेद तुदरी बडी इलायची मिर्चे दालचीनी कवचबीज दो २ तोले ले फिर दवा सफेद बहिमन लाल बहिमन्द मस्तगी शकाकुल मिश्री सालममिश्री उटंगन सुरियाली तावा खीर तेजबल इमलीका बीज वंसलोचन गुजराती इलायची बेनउरका बीज बिही-दाना सब एक २ तोले ले बबूल गोद पाव भर गरी १ टंक बदाम एक टंक पिस्ता एक टंक छोहारा एक टंक किसमिस एक टंक घी अढाई पाव मिश्री अढाई सेर के चासनी कर और सब दवा कपडछान करके दवा घीमे भूंजिले तो चासनीमे मिलायके लड्डू बांधे एक एक लड्डू खानेको दे और खट्टा मीठा तीता वर्जित रक्खे परहेजसे रहै तो शरीर पुष्ट होय. शरीरका रोग सब दूर होय. गुण इसका बहुत है,

आंवरा पाककी विधि.

अच्छा आंवरा दो सेर सुखायके चूर्ण करे और फिर दो सेर आंवराका रस निकालके चूर्णमें सुखायके तब एक सेर मधु एक सेर घी और एक सेर मिश्री मिलायके खाय दो तोले रोज तो सब रोग हरै. पुष्टाई होय बल अतुल्य होय सुवर्णके सरीखा शरीरहोय.

नामर्दकी दवाई.

पाराशुद्ध १० मासे चांदीवरक ११ मासे लेकर भंगराजके रसमे दो पहर खल करै तब एक तीतल लियावै एकदिन भूखा रक्खै दूसरे दिन दवामें एकतोले गोहूंकी मैदा डालके तीतलको खिलावै तब दिन दोपीछे तीतलको मारिडाले कलिया बनाइके सिकारका मसाला डालके और घीमे तलै मधुरी आँचसे झुरावै जब लाल होय जाय तो एक बरतनमेरखदे और गेहूँकी रोटीके साथ खाय तो तीनदिनमे नामर्द मर्द होय. और सब रोग हरै.

१ बीसपरसेकी दवाई.

अच्छी उरदी दस सेर लेकै बीस सेर दूधमें सुखाय के झुरवै तब पीसके मैदा वनायके पावभर मैदा आधा पाव घीमें भूंजे तब एकसेर दूधमें हलुवा बनाकर मिश्री चारितोले इलायची छःमासे लौंगछःमासे

वंगरस एक रत्ती ये सब दवा डालके एक महीना खाय तो वीसपरमा और सब रोग हरै.

२ तथा

आंबाहरदी ४ तोले आंवरा ४ तोले मिश्री ४ तोले ये सब दवाकूट कपडछान करके छःमासे खाय तो सब परमारोग दूर होय.

३ अथसफेदपरमाकी दवाई

फिटकरी रस ६ मासे एक पका केलामे खाय वीस दिन तो असाध्यपरमा दूरहोय.

४ अथलालपरमाकी दवाई.

जसवंती और ककही दोनोंकी पाती आधासेर पानीमे मलिके तीनतोले मिश्री डालके पीवै तो लाल परमारोग दूर होय.

५ अथपीलापरमाकी दवाई.

इसबगोल पाव भर सामको भिगाकर सबेरे एक निंबू निचोवै एक तोले छःमासे मिश्री डालके पीवै तो ग्यारह दिनमें परमा दूरहोय

६ अथ मूत्रियापरमाकी दवाई.

सांठीकी जड सतावरी गोखरू खरेटी ताल्मखाना असगध सब दस दस टंकहे मिश्री और सांठीके

धावलका चूर्ण दस दस टंक और गायके घीके साथ ६ मासे दवाई खाय तो मूत्रपरमा दूर होय.

७ परमाकी दवाई नोनिया क्षारकी.

हर्रे १० टंक बहेडा १० टंक आंवरा १० टंक ऑवा हरदी १४ टंक माजूफल १० टंक मंजिष्ठ १० टंक ये सब दवा पीस छानकर४ टंक शहदमें रोज खाय तो नोनियां क्षार परमा दूर होय.

८ घृत परमाकी दवाई.

ग्वार पीस छानकर सात पुट गोभीके रसका देकर चूर्ण करै जितना ग्वारका चूर्ण होय तितनीमिश्री डालके ५ टंक रोज खाय पानीके साथ २१ दिन खाय तो घृतपरमा दूर होय.

९ वीस परमाकी दवाई.

लौंग चित्रकूट सफेद चन्दन नागरमोथा खस छोटी इलायची अगर काला वंशलोचन असगंध सतावरी गोखरू जायफल गिलोय निसोत तगर नागकेसर कमलगट्टा यह सब दवाके बराबर मिश्री मिलाकर तीन टंक सवेरे खाय तो वीसपरमा दूर होय.

१० वीस परमाकी चंद्रप्रभाकी गोली.

लोहासार तीन टंक जायफल लौंग जावित्री छोटी इलायची अकरकरा दालचीनी त्रिकूट केसारे चि

असगंध नागौरी सतावरि गोखरू यह सब दवा दो २ तोले ले और मिश्री ५० तोले लेकर सब दवा एकमें मिल करके दो टंककी गोली बांधकर एक गोली सामको और एक गोली सवेरे खाय तो वीसपरमा दूरहोयँ.

अथ गंधक योग.

शुद्धगंधक १ तोले गुरके साथ खाय ऊपरसे दूध पीवै तो बीस परमा अठारा दिनमें दूर होय.

अथ शिलाजित योग.

शिलाजित मिश्री दूधके साथ खाय तो सब परमा २१ दिनमें दूर होयँ.

अथ अबरख योग.

अबरख रस त्रिफला हरदी एकमें मिलाय शहदके साथ खाय तो १५ दिनमें सब परमा जायँ.

सल्यपाक.

दूधमें संभलकी छाल सोरह तोले चुरावै मधुरी-आंचसे इसके पीछे ६४ तोले गुड मिलाकर तब दालचीनी इलायची तालपत्र नागकेसरि लौंग जायफल नागरमोथा. वंसलोचन धनियां सोंठि पीपरि मिर्चे असगंध. हरैं लोहा भस्म सब दो दो तोले लेकर कूट कपड छान करिके उस दवामें डालके पाक तय्यार करके एक तोला रोजीना खाय तो वीस परमा जायँ

घात दोष. हिन्न. सिररोग वगैरे रोगको दूर क

अथ बवासीरका लक्षण.

घात पित्त कफके कोपसे तीनोके मिलनेसे एक
एक वादी पानी मांसवाली होती है औरएक
अर्थात् जन्मके साथही उत्पन्न होती है ये ६ प्रका
बवासीर होती है तीनों दोषोसे त्वचा मांस वा मे
दूषित करके गुदा आदि स्थानोमें मांसके अंकुर उ
करते हैं बस उन्हीं मांसके अंकुरोंको बवासीर क
है सो गुदही में नहीं कभी २ नाक नेत्र लिंग वा तों
भी मांसके अंकुर वा मसे होजाते हैं.

अथ बादी बवासीरका लक्षण.

हाथ पैर गुदा मुख वृषण इतनी जगह शूल
पसली में शूल हो खाजु पीड़ा बहुत होय गुदा
बहुत हो तो बवासीर रोग असाध्य है.

अथ खूनी बवासीरका लक्षण.

तृषा अरुचि गुदामें शूल रुधिर चले देह दु
होय अतीसार होय खाजु बहुत होय गुदाके
मस्सा होय ये लक्षण खूनीके हैं

अथ बवासीरका इलाज.

कलमी सोरा निसौत दोनों एकमें मिलायके

करके चना बराबर गोली बनावे एक सवेरे एक सामको खाय तो सब बवासीरका रोग जाय जो वादी होय तो फोरापर यह गोली घिसिके लगावे तो खूनी वादी दोनों बवासीर दूरहोयँ.

२बवासीरका इलाज.

अच्छी सुर्ती अच्छा चूना अच्छा गुड मिलायके अग्निपरदवा रखके वादी बवासीरको धूवा दे तो दूरहोय.

अथ खूनीबवासीरका इलाज.

नागकेसरि मिश्री मिलायके बराबर दोनो मक्खन घीके साथ छःमासे साम दमासे सवेरे खाय तो दूर होय.

दवा दूसरी.

माखनके साथ काला तिल सवेरे एकतोले खाय तो बवासीर दूर होय.

अथ बवासीरका इलाज.

सूरनका भरता बनाकर दहीके साथ रोज खाय तो रक्तबवासीर दूर होय.

अथ बवासीरकी गोली.

लहसुन सज्जी हींग नीबोलीकी गिरी बराबरले पाँचर टंक गुड २० टंक सब दवा एकमें मिलायके तीन

टंककी गोली बांधकर एक सबेरे एक सामको खाय तो छःप्रकारके बवासीर दूर होयँ.

२बवासीरकी गोली.

संखिया ६ मासे अँवरासार गन्धक एक तोला हरताल १ तोला हरैं १ तोला यह सब दवा एकमें मिलायके परईमें रखकर दूसरी परईसे ढांपके कपडमिट करके सुखायके चूल्हापर रखकर पन्द्रह मिनिट आंच दे तब उतारकर दो तोले घी तावा पर रखकर दवा डारके घोटै दो पहर तब बाजरा बराबर गोली बांधकर एक गोली नींबूके रसमें बवासीरके मसापर लगावै तो बवासीरकी जड़ टूटै ६ प्रकारका बवासीर दूर होय इस दवाके माफिक दूसरी दवा नहीं और इस दवासे जड़ टूटती है और भगन्दर दूर होताहै.

अथ भगन्दररोगका बयान.

गुदाके दो अंगुलकी दूरपर बगलमें एक छोटा फोडा होताहै वह पीडा बहुत करताहै उसके फूटजानेसे भगन्दर होजाताहै वह भगन्दर पांच प्रकारका होताहै.

अथ भगन्दरका लक्षण.

कसैली व रूखी बस्तुओंके खानेसे वायु अतिकुपित होकर गुदाके निकट एक छोटीसी फोडिया कर-

ताहैउसकी अपेक्षा करनेसे वह पकती है व दारुण पीडा करती है फूटनेपर लाल फेना बहने लगताहै और फिर उसमे वहुत घाव होजातेहैं.

अथ भगन्दररोगनाशक लेप.

हरदी, आकका दूध,सेंधानोन, चीता,शरपुंखी, मजीठ, कूडा इन सब दवोंको तेलमें सिद्ध कारे भगन्दर पर लगावे तो शीघ्र अच्छा होवे.

पुनःलेप.

कूट, निसोत, तिल, जमालगोटाकी जड़, पीपल, सेंधानोन, शहद, हल्दी, त्रिफला, तूतिया, मिलाय लेप करनेसे भगन्दरको नाशताहै.

भगन्दर नाशक खानेकी दवा.

हर्र, वहेड़ा,आँवरा, पीपल,शुद्ध गूगुल ले कूटि कपड़ छानकर २ टंक खानेसे भगन्दर रोग जाय.

पुनःदवा.

नागकेसरि, पोस्ताकी गिरी दोनों दो दो टंक ले काढा कारे पीवे तो भगन्दरको शीघ्र नाशै.

अथ आमवातके लक्षण.

अंगटूटे, अरुचि होय, तृषा लगे, शरीर भारी हो

आलस्य आवे, ज्वरहो, अन्न पके नहीं, अंगोमें सूजन हो तो आमवात जानिये.

अथ मिश्रित आमवातके लक्षण.

कोपको प्राप्त हुआ जो आमवात वह सब रोगो में कष्टसाध्य होताहै अब उसका दोष लिखते हैं. हाथ, पैर, शिर, गांठ त्रिकस्थान और जांघोंकी संधियो में प्राप्त होकर विच्छूके डंकके समान पीड़ा करे औ इन्हीं २ स्थानोंमे सोजा हो अग्नि मंद होजावे उत्साह जातारहै, अरुचिहो, शरीर भारी रहै मुखका स्वाद जाता रहै,मूत्र बहुत उतरै,कुक्षिमें कठिन शूल हो नींद नहीं आवै व वमन हो, तृषा अधिकलगै, भ्रम और मूर्छाहो, मल उतरै नहीं, शरीर जड होजाय, आंतें बोला करैं, अफारा हो और वातव्याधिके कहे हुए और भी उपद्रव हों और जिस्मे पित्त अधिक हो ऐसे आमवातमें दाह और पीलापन हो और वाताधिक आमवातमे शूल हो कफाधिकमें जडता हो शरीर भारी रहै खरज चलै येलक्षण जानो.

अथ आमवातकी दवा.

रास्ना देवदारु अमलतास सोंठि मिर्च पीपल अरंडजड़ सांटी गिलोय इन्हों के काढ़ामें सोंठिका कल्क मिलाय पीनेसे आमवात जावे.

दूसरा काढ़ा.

रास्ना, गिलोय, सुंठि, अरंडजड़, दारुहरदी, इन्होंका काढ़ा बनाय एरंडका तेल मिलाय पीनेसे आमवात जावै.

अथ अजमोदादि चूर्ण.

अजमोद, बायविडंग, सेंधानोन, देवदारु, चीता, पीपल, पीपलामूल, सौंफ, मिर्चे ये सब दवा दश दश मासे, छोटी हर्रे ४। तोले, सुंठि ८ तोले, भिदारा ८ तोले सब दवा एकमें मिलाय कूटि चूर्ण करि गरम पानीके संग लेनेसे सूजा हुआ तथा पीड़ा सहित सब तरहका आमवात दूर होय गुड़में गोली बांधिके खाय तो शरीर भरेकी पीडा और सूजन दूर होय

अरंडीका योग

अरंडीके बीजोंका तुष दूर करिके दूधमें खीर बनाय खानेसे आमवात दूर होय.

पुनः हरीतकी योग.

हरों के चूर्णमें अरंडीका तेल मिलाय पीने से सब तरहका आमवात नाश होय.

पुनः आमवातका इलाज.

त्रिफला, नागरमोथा, कूट, बायविरंग सब दवा बराबरले कूटके चूर्ण कर गिलोयके रसमें एक २ टंक

की गोली बांधकर एक सवेरे एक शामको खाय तो कमलवाय आमवात दूर होय.

अथ प्लीहा रोगका इलाज.

शुद्ध सिंगिया, शुद्ध सोहागा दोनों अदरखके रस में खल करके बजरीके एक दानाके बराबर खाय तो प्लीहा, वायुगोलादि उदरके सब रोग दूर होयँ.

अथ सर्वउदररोग नाशक चूर्ण.

हर्रे, बहेडा, आंवरा, मिर्चे, पीपरि सोंठि, दोनों जीरा, पांचो नमक, जवाखार, झाऊके पत्ता, फिटकरी, अजवाइन, चिरैता, लौंग ये सब दवा बराबरले कपड-छान करके नींबूके रसकी एक पुट देकर छःमासे चूर्ण खाय तो सब उदररोग दूर होय.

तथा.

हींग, पीपलामूल, धनियां, चीत, वच, बडा कचूर अमिलतास, पॉचों नमक, सोंठि, मिर्चे, पीपरि, सज्जी-खार, जवाखार, अनारकी छाल, जीरा, तुलसी सब बराबर ले कपड़छान करके ६ मासे रोज खाय तो सब प्रकारके उदर रोग दूर होयँ.

अथ स्त्रीरोगका इलाज.

स्त्रीको जो खून परता होय तो जीराशंख शुद्धलेकर इसमें मिश्री मिलायके छःमासे खाय तो खून बंद होय

वातके प्रदर रोगकी दवा.

सोंचरनोन, जीरा सफेद, जेठी मधु, कमलगट्टा इनका चूर्ण कर शहदके साथ खाय तो प्रदररोग और पित्तको गुण करता है.

सब प्रकारके प्रदररोगका इलाज.

मुलहठी अढाई टंक, चौराईकी जड़ का रस दो टंक दोनोंको शहदसे मिलाइके पीवै तो सब प्रकारका प्रदर रोग दूर होय.

१ स्त्रीधर्म होनेका इलाज.

कालातिल, सोंठि, पीपरि, मिर्च, भारंगी, गुड सब दवा बराबर ले काढा बनाय वीस रोज तक पीवै तो सब रोग दूर होयँ, धर्म होय, पुत्रनिश्चय होय.

२ तथा.

बिजौरा नींबूके बीज पीसकर जिस गऊके बछवा पैदा हुआ होय उसके दूधके साथ पीवै तो पुत्र होय सही

३ तथा.

नागकेसरि, बछवावाली गायके दूधके साथ पीवै तो बाँझिनीके पुत्र होय.

वेश्यास्त्रीको गर्भ न रहनेका इलाज.

पीपरि, वायविरंग, सोहागाबराबर पीसकर ऋतुके समय स्त्री ९ दिन जलसे पीवे तो कभी गर्भ न रहे.

२ गर्भ न रहनेका इलाज.

पलाशके बीज जरायके राख और हींग दोनोंमिलाय दूधसे पीवे तो गर्भ नरहे.

१ गर्भिनीस्त्रीका यत्न.

मुलहठी, रक्तचंदन, खश, गौरीशर, कमलगट्टा की जड, मिश्री ये दवा बराबर लेकर काढ़ा बनाकर पीवे तो गर्भिनी स्त्रीका ज्वर दूर होय.

२ तथा.

धनियांके कल्कमे मिश्री डालके और पुराने चावलका धोवन मिलायके पीवे तो उलटी दूर होय ज्वर दूर होय.

३ तथा.

कुशकी जड, कांसकी जड, दूबकी जड, तीनोंके काढ़ाकर पीवे तो मूत्र उतरे प्रसूत होय.

गर्भिनीस्त्रीका लक्षण.

गर्भिनी स्त्री सात महीनाके बाद दस्तावर वस्तु नहीं खावे और डरकी बातो से, भयंकर शब्दसे बचीरहे पर दो महीनाके व्यतीत होते ही पुरुषको त्याग करना चाहिये और अधिक खाना खावे नहीं खराब चीजसे

चो रहे अजीर्णसे डरती रहे और गर्भिनी स्त्रीको गाली न देवे न मारे और न कोई बातकी त्रास देवे जो देवने दगीना व कपडा घरसे दिया होय उनको देना और जिस देवताका दर्शन चाहे सो कराना मनुष्यको चाहिये कि जिस चीजपर गर्भिनीका दिल चले वही जहां तक बनपरे देना.

जो लडका जल्दी न होवे उसकी दवाई.

गायका दूध आधा पाव और पानी पावभर मिलायके स्त्रीको पिलावे तो तुरंत लडका पेदाहोवे कष्ट न होवे तथा चक्रव्यूह कागजपर बनाकर दिखाना चाहिये और कोई चीज सुगंधित सोवरमें न जाना चाहिये.

बालककी दवाई.

बालकको कोई रोग होतो खानेकी दवाई एकमासासे ज्यादा न देवे जब बालक चार बरससे ऊपर हो तब दवाई बढ़ाना चाहिये बालक को घी मिश्री शहद मिलाकर पिलावे तो कोई रोग हो दूर हो जो बालक चूंची न पीवे और बारम्बार रोवे तो यह दवा दे सेंधानमक, घी, मिश्री एकमें मिलाकर बालकको देवे तो रोगशांति होवे अथवा पीपल, अतीस, ककडासिंगी, नागरमोथा सब समभागले कपडछानकर

होवे; इन्द्रियोंका बल जाता रहै ऐसे त्रिदोषके पांडु रोगीको त्यागना वैद्योंको योग्यहै.

अथ मिट्टी खानेसे उपजे पाण्डुका लक्षण.

वातादिक अलगर कोप करते हैं जैसे कसैली मिट्टीके खानेसे वायुकोप करताहै खारीके खानेसे पित्त;सफेद मिट्टी खानेसे कफ कुपित होताहै फिर वह खाई हुई मिट्टी पेटमें जैसीकी तैसी रहतीहै और कोप करके तमाम शरीरकी इन्द्रियोंको क्लेश देती है पेटमें कृमि पड़ जाते हैं वात पित्त कफके कोपसे पाण्डुरोग बढ़े है यही लक्षण पांडुका जानो.

अथ वातपांडुकी दवा.

शुद्ध मंडूर २००तोले; लोहेके टुकड़े तिल सरीखे २००तोले; पुराना गुड़ २९२ तोले, जलवेत ८ तोले चीता ८ तोले, पीपल १६ तोले, वायविडंग १६ तोले हड़ ६४ तोले, बहेड़ा ६४ तोले, आमला ६४ तोले पानी १०२४तोले,इन्होंको बर्त्तनमें घालि १५दिन तक अन्नके कोठामें धरै पीछे रोगीका बल देखि विचारिके देय तो पांडुको नाशै और कृमि, बवासीर, कुष्ठ, कास श्वास व कफके रोगोंको नाशै व पाँचो प्रकारके पांडुरोगको हरै.

अथ पित्त पांडुकी दवा.

आँवराका रस १०२४ तोले मन्द मन्द अग्निसे चुरावे फिर ये दवा डारे पिपली ६४ तोले, मुलहठी ८ तोले, मुनक्का ६४ तोले, सुंठि ८ तोले, वंशलोचन ८ तोले, खाँड़ २०० तोले, शहद ६४ तोले सब मिलाय खानेसे पांडुरोगको नाशै जैसे हाथीको शेर नाशै.

अथ कफपांडुकी दवा.

दशमूल, सुंठ इन्होंका काढ़ा करि पीनेसे पांडुको नाशै ज्वर अतीसार सूजन संग्रहणी कास अरुचि है कंठके रोगोंको किन्तु सब रोगोंको दूरकरै.

पुनः मंडूरलवण.

लोहेके कीटको अग्निमें लाल करिके गोमूत्रमें बीस-वार बुझावे फिर सेंधानोन मिलाय खल करै तब बहे-ड़ाके रसमें पांच दिन घोटै तत्पश्चात् रोगीका बल देखके तक्रके संग खानेकोदे पांडुरोग दूर होय.

अथ सन्निपातपांडुकी दवा.

हड़ १ भाग, बहेडा १ भाग, आमला १भाग,सुंठ१ भाग, मिर्च १ भाग, पीपल १ भाग, चीता १ भाग, बायविडंग १ भाग, शिलाजीत ५ भाग, चांदी का भस्म ५ भाग, मंडूर ५ भाग, लोहा भस्म ८ भाग,

२ मलहम.

राल दो तोले, कपूर दो तोले, नीलाथोथाकी भस्म एक तोला, मोम दो तोले, सेंदुर एक तोला, केवला एक तोला, सफेदा एकतोला, सब कपडछान करके घीमें मिलाकर मलहम तय्यार करै इससे असाध्य भी जख्म अच्छा होवे और सब तरहका फोरा फोरी अच्छा होवे.

सब दर्दपर लेप.

आंबा हरदी दो तोला, पियाज दो तोला, शहद दो तोला, चूना एक तोला, गुड एक तोला, तीसीकाचूरण दोतोला, सबदवा एकसेमिलाकर गर्मकरके जहांदर्दहोय वहां लगावै और ऊपरसे रुई लिपटावै सब दर्द दूरहोय.

पेटकी पीड़ाका लेप.

दोनों जीरा, बबूना, आंबाहरदी, रेंडीका तेल, ये सब मिलाकर गेहूकी रोटी बनायके उसपर दवाई लगाके गर्म करके दर्दपर लगावै तो अच्छा होय.

असाध्य रोगियोंकी छातीपर कफ रहनेका लेप.

बनारसी राई, आंबाहरदी, महुआके फूल सब बराबर लेकर चुराय छाती पर लेप करै.

खांसीदमा नाशकवटी.

बदामका तेल नवमासे, मधु तीन तोला, तीसीकी आठ तोला ये सब मिलाकर खावे खुराक छःमाश.

तेल बनानेकी विधि.

मदार, धतूर, थूहर, सेहुंड, मेंहदी, अडूसकी पत्ती एरंडकी जड, मेवडीकी पत्ती, सहिजन सबका रस पाव पावभर, सोंठि, पीपल, रसवत, अजमोदा, कुलिंजन, कलियारी, सोवा, पीपलामूल, चिरैता, सब दो दो तोला ले मेथी बारह तोला लहसुन वीस तोला इन सब दवाइयोंका तीनसेर पानीमे जोशदे जब आधा पानी रहै उपरोक्त रस डारिके तिलका तेल आधा सेर, कडू तेल एक सेर, रेंडीका तेल आधासेर सब अर्क डालके मधुरी आंचसे चुरावे जब पानी जल जाय तब बीस भेलावां छोडै जब भेलावां भी जल जाय तब तेल ठंढाकर सीसीमे रखदे वात, जोडा, साना, गठिया इत्यादि सब तरहका दर्द मालिश करनेसे जाय.

अथ जीवनारायण तेल.

दस सेर तिलका तेल, दस सेर कडू तेल, दससेर बकरीका दूध, दस सेर गायका दूध, शतावरीका रस दससेर, हड, आंवला, गिलोय, बेलका मगज, दोनो गोखरू, भटकटइआ, जीवंती, मुलहठी, दोनो अरंड, महाछुंडी, मुंडी, जायफल, निसवत, इंद्रायन, चिरायता नीम, बकाइन, मैनफल, सम्भालू, बरियारी, रासना, सहिजन, गदापुरैना, मेडुकी गुलसकरी, फफई, गंधपसारन, असगंध, कटसरैया, कुश, करंज, खैर, चन्दन, वच, बिजैसार, रेंड, वरुना, दोनो अलप, नव पड़ी.

कुटकी, दोनों सिरसा, चिचिरी, रूस, हँस, जामुन कचनार,केथा, किरवारा, दूधिया, विधारा, दरिमा, निर्गुंडी, जसापुरैया, पुष्करमूल, तज, पीपल गजहर्ण, गूलार, नागफणी, घीकुवारी, चम्बेली, खस, बेरी, कुलथी, केवॉच, मन्दार, गुर्च, सेहुड, केतकी कलिह्यारी, पलास, चितावरि, बड, पाकरि, टेकारि मुसली, हंसपदी, थूहर, धतूर, दात्यून, अरागंध ये सब दोदो तोले ले सब चीजमें दो मन पानी छोडकर चुरावे जब एकमन पानी रहजाय तब दूध तेल डारिके सब एकमें चुरावे जब तेल मात्र रहजाय तब सीसीमें उठायके रक्खै इस तेलके मालिश से शरीरके सर्व रोग दूर होयँ इसका गुण अपारहै वर्णने योग्य नहीं है.

१ अंडकोषसूझेका इलाज.

वायविडंग, कुन्दर, पुरानी ईंट, तीन तीन तोले लेकर कपड़छान करके चारमासे घीके साथ खाय जो पहले उलटी हो तो अंड अपनी जगहपर चला जाय.

२ इलाज.

दूध और रेंडीका तेल मिलाके कुछ दिन पिये तो असाध्य अंडकोष दूर होय. अथवा पलाश व जमींकन्दका चूर्ण करके इक्कीसदिन खाय तो अंडकोष दूर होय. अथवा आंवाहरदी, रेंडीकी जड, व फल व तेल मेथी, चारों दवा बराबर लेकर गर्म करके लेप करे तो अंडकोष अच्छा होय.

३ इलाज-लेप.

टेसुके फूल, आंबा हरदी, खुरासानी अजवाइन तीनों बराबर ले पीसे फिर गर्मकर लेप करै तो अंडकोष जाय. अथवा असगन्ध, जसवंतीकी पत्ती, रेंडीका मगज तीनो कूट करके गर्मकर लेप करै तो अंडकोष जाय. अब एक तंत्र लिखतेहै जिससे अंडकोष दूर होय.

अथ अंडकोषनाशक तंत्रकी विधि.

जिस मनुष्यका अंड बाईं ओरका फूला होय तो दाहिनी ओरकी गुट्टीके चार अंगुल नीचे एक रस्सी बांधे, इक्कीस रोजके भीतर पैरमें गुट्टीके नीचे एक नस निकलेगी उस नसको अग्निमुखीके तेलसे दागै दूसरे दिन वह नस सूज आवेगी तब उसपर थोड़ा घी लगा. यदे फिर वहाँसे पानी निकलना आपही आप शुरू होगा. फिर उस नसपर खोपड़ा जरायके लगावै तो अच्छी होय. असाध्य रोग या बीस वर्षसे ऊपरका हो तोभी अच्छा होय पर प्रथम चार मासे बूकके खानेको देवै.

अथ साँपके काटेकी दवाई.

सफेदमिर्च, सफेद मंदार की भस्म, नीलाथोथा ये तीनों बराबर खल करके मासे२भरकी गोलीबांधे फिर पानी के साथ एक गोली खानेको देवे तो जहरदूर होय.

सांपकाटेका नास.

कच्चा नीलाथोथा आककी जड दोनों बराबर लेकर

चूर्ण करके नाकमें छः छः मासे भरे फिर एक फूकनी लेकर फूंके तो तुर्त छींट होय आध घंटेमे वह आदमी अच्छा होय. अथवा जमालगोटा शुद्ध मटर बराबर खिलावे तो जहर दूर होय. अथवा कसौंजीकी जड पीसकर पिलावे और कसौंजीके बीज घिसके आंखोंमे लगावे व पियाज खिलावे तो जहर दूर होय. अथवा एक चूहा मारके उसका पेट फाड जहाँ साँपने काटा होय वहां रखदे तो जहर दूर होय.

बिच्छूके काटनेकी दवाई.

अधझाडाका रस जहां बिच्छू डंक मारे वहां घसिके लगावे फिर उसकी अढाई पत्ती गुरमे मिलायके खाय तो जहर दूर होय. अथवा नौसादर कलीका चूना, सोहागा एकमे मलके सूंघे तो जहर दूर होय. अथवा इन्द्रायनकी जड़, जायफल, हरताल दोनों घसके लगावे तो जहर दूर होय.

अथ बावले कुत्तेके काटनेकी दवाई.

दोनो जीरा, कालीमिर्च पीसके एक महीना तक खिलावे तो सब जहर दूर होय. अथवा पियाज कूटके शहदके साथ लेप करे तो जहर दूर होय. जो अंगपर बडे बडे चट्ठा, कोढके समान परजावें तो आंवलासार गंधक छःमासे, जमालगोटा छःमासे, नीलाथोथा छः मासे तीनोंको बूकके लोनी घींमें डालके तांबेके बर्तनमें एकसे एक दफे पानीसे धोवे तब सब शरीरमें लेप

करके एकप्रहर अग्निमें तापै आंखकान यानी गलेकेऊपर न लगावे और तापनेसे शरीरमें वजरीसे दाने सब जगह परजायँ तो दूसरे दिन गोबरसे धोय डाले नीरोग्य होय.

अथ नोकरससाना असाध्यरोगकी दवा.

साम्पुरोमी सात मासे, जीरा करमनी सात मासे, सफेद मिर्च सात मासे, छोटी पिपरी सात मासे, वेरका मगज सातमासे, दालचीनी मोटी साढेतीन मासे, सोंठि चौदह मासे, फरफीऊन चौदह मासे, रुमीमस्तगी पौनेदो तोले, सुरंजन जंगली जिसको सिघारा भी कहते हैं पांच तोले सबका चूरण करि साम्पुके रसमें गोली बांधे सात मासे जीराके अर्कके साथ खाना बहुत गुणकारकहै.

१ महजूमसांदेकी.

सुरंजन तीनतोले, सनायकै पत्ती १७ मासे, तगर सात मासे, सोंठि७ मासे, जीरा करमनी७मासे, पीपरी७ मासे सब दवा कूट कपडछान करके दवाके बराबरमधु लेके एकमें मिला महजूम तय्यार करे खुराक नौ मासे गर्म पानीके साथ खाय तो सबप्रकारका दर्द दूर होय.

२ महजूम.

केसरि, अकरकरा, अजवाइन खुरासानी, फरफिऊन, कुलिंजन, इलायची वडी, पीपरी, सब दवाले कपडछान करिके मधुमें मिलाकरके महजूम तय्यार करे खुराक ६मासे मनीको बढ़ाताहै सुस्ती को दूरकरताहै शरीरको मजबूत करताहै. सब तरह के मरजको दूर करताहै.

रोग दोष दूर होनेका उपाय.

आक अरंडी फूलमँगाव। पुनितापर सेंदूरल
गूगुल धूप देय अति चायन। मंत्रराज यह करिके
यन ॥ ॐ श्रीं ह्रीं फट्स्वाहा॥ रोगी के शिरसे उ
करिके बाँये कोनेमें गाडै तो संपूर्ण रोग दोष मिट

घावके झारनेका मंत्र.

राम मारे पेडुकी, लछिमन ओढे घाव॥
फूलै औ न पाकै दरै सूखि जाव॥

अथ मंत्र वेरवा घिनहीं जहरबात थन
इलगोहिया का इलाज.

चौ०—लंका के दानव पलंकाके पूत अंजनीके
नरक हवा झारै अंजनी के पूत बेरवा झारै अंजन
पूत घिनही झारै अंजनीके पूत जहरबात झारै अं
केपूत थनइल झारै अंजनीके पूत गोहिया झारै ना
आवे नाचत जाय खेलत खात पखंडे जाय पि
सामननी हंक डंकनी आलीम सालीम दुख रचाहा
जाय राम लछिमन तीनो भाय बेरवाके पानमें
राम लछिमन तीनो भाय धृक चं नरक हवा झारै
चं जहर बात झारै धृकचं थनइल झारै धृकचं गोहि
झारै हमरे झारे लेइ झारि जाय.

कानका मंत्र.

आससीन न गोट वन्दी कर्म हीन न जायते दो

महावीरकी जो रहै कान पीरकी अंजनीपुत्र कुमारी
बाये पुत्र महाबलको मारि ब्रह्मचारि हनुमंताई
नमो नमो दोहाई महावीरकी जो रहै पीर मुंडकी.

प्रेतका मंत्र.

तुममाया मोहिता सर्वं ब्रह्मा त्रिपुरैकसःतुमजानंगतः
देवी प्रचंड त्रिशूलंधारिणी ॥ साकला होमकरै भूतदूरहो.

सनाय खानेकी विधि.

शहदके साथ सनाय जो कोई खावै.
बल होय अतुल्य जो नव मासा पावै.
सक्करके साथ सनाय जो खावै.
छातीको दर्द और सुस्ती मिटावै.
गुलकंदके साथ सनाय जो खावै.
शर्दी सब दूर हो खाना बहुत खावै.
मिश्रीके साथ सनाय जो खावै.
तमाम बदनमें ताकत दिखावै.
गायके घीके साथ सनाय जो खावै.
कोई दर्द नहीं सदा खुश होवै.
दहीके साथ सनाय जो खावै.
जहर खाया होवै सभी दूर होवै.
चोपचीनीके साथ सनाय जो चालिस दिन खावै.
आंखोंकी रोशनी सदा बढावै.
आधा तोला सनाय पानीसे जो खावै.

हमेशा तन्दुरुस्त रहै रोग कभी ना पावै,
गायके दूधके साथ सनाय जो खावे.
नवा खून पैदा करै गलीजको नशावे.
बकरीके दूधके साथ सनाय जो खावे.
तीसदिनामें अतिसुख पावै.
हरिनीके दूधके साथ सनाय जो खावे.
नामर्द मर्द होवै बल अतुल्य होवै.
अगर ऊंटके दूधके साथ सनाय जो खावै.
खुशीरहै हमेशा कलेश ना पावै.
छोहाराके साथ सनाय जो खावे.
मुँह दाँतकी दुर्गंध तुरत हटावै.
अनारके शरबतके साथ सनाय जो खावै.
छातीके रोग दूर और उदरसाफ होवै.
अगर भंगराके रसके साथ सनाय जो खावै.
जवानी रहै सदा बाल सफेद न होवै.
इमलीके रसके साथ सनाय जो खावे.
छातीका कफ और कब्जियत नशावै.
अदरखके रसके साथ सनाय जो खावै.
जीरनज्वर सन्निपातको मिटावै.
गर्म पानीके साथ सनाय जो खावे.
कान शिर और नाकका दर्द तुरत हटावै
ककरीके बीजके रसके साथ सनाय जो खावै.

इन्द्रीकी पथरीको तुरत हटावे.
इसका गुण बहुत कहांतक वरणन कर बतावे.
जो सेवै तो रोग कभी नहिं पावे.
चेला नादान भगवान दास कहावे.
फारसीको उल्थाकर हिन्दी बनावे.

अथ पारेका सिद्ध गुटका.

पारा दोतोले, संखिया चार तोले, नमक दो तोले, जामुनका सिरका तीनसेर यह सब लेकरके पहिले तवापर आधा नमक रक्खे फिर पारा रक्खे फिर पारे को नमकसे ढांप देवे और तवाके नीचे अग्नि जरावे ऊपरसे सिरका छोडे कलछुलीसे चलाता जावे सिरका छोडता जावे जबतक मसका न होवे तब तक अग्नि जराता और सिरका छोडता जावे जब मसका हो जावे तो मोटे कपडेमें रखकर पोटरी बांधिके गारे जो कपडेमें पारा रहजाय उसको साफ कर ऐसा धोवे कि सूर्यकीसी ज्योति होवे तब गोली बांधिके धतूरेके तेलमें दोदिन रक्खे फिर नींबूके रसमें दोदिन रक्खे फिर पोस्ताके रसमें दोदिन रक्खे फिर निकाल करके जसवंतीके पत्ताके रससे धोकर साफ करले इस गोलीको जो दहिने भुजापर बांधे तो वो मनुष्य देवताओंके सदृश होवे गोली दिवाली या होलीके रोज बनावे अथवा शुद्ध होकर ग्रहण लगनेपर बनावे.

अथ केशजमनेका इलाज.

खरबूजेके बिया; अंडाकी जर्दी ३० जैतून तेज पत्ता, मोरद लोहचूर्ण ये सब दवा बराबरले कूटकर मलहमकी तरह बनाकर लगावे तो जिस जगह केश न होयँ उस जगह १५ रोजमें केश जमें सही.

चित्रकादि चूर्ण.

चित्ता; पीपलामूल; पीपरि; गजपीपरि ये सब दवा बराबर ले कूट कपडछान करके शहदके साथ छःमासे खाय तो खांसी दूर होय.

हरीतक्यादि चूर्ण.

हर्र,बहेडा,लोहारस.सब दवाबराबरले कूट कपड़ छान करके छःमासाखाय तो सब प्रकारके वात रोग दूर होयँ.

पंचवटिकादि चूर्ण.

पाँचो नमक दो तोले, कलमीसोरा दो तोले, नौसा दर दोतोले,पीपरि दो तोले, मिर्च दो तोले,ये सब दवा कूट चूर्ण बनाय छःमासा खाय तो उदररोग दूर होय.

हिंगाष्टकादि चूर्ण.

सोंठि एक तोला, भुंजा सोहागा एक तोला, बड़ी हर्र एकतोला, सेधानमक एक तोला, हींग एक तोला, ये सब दवा कूट कपडछान करिके सहिंज-नेके पत्तोंके रसमें खल करिके जंगली बेरके बराबर गोली बाँधे एक गोली सबेरे एक शामको खाय तो भूख लगे सब प्रकारके उदर रोग दूर होयँ.

दशमूलासव.

दशमूल २० तोला, पुस्करमूल १०० तोला हर्ड़ ८० तोला, आंवरा १२८ तोला, चित्र १०० तोला, धमासा ५० तोला,गुरुची ४०० तोला, बिसाला २० तोला, खैरसार ३२ तोला, बिजौरा १६ तोला, मंजिष्ठ ४ तोला,मुलहटी ४ तोला,वायविडंग ४ तोला, चवंक ४ तोला, लोध ४ तोला, जीवक ४ तोला, ऋषभक ४ तोला, मेदा ४ तोला, महामेद ४ तोला, ऋद्धि ४ तोला, वृद्धि ४ तोला, कंकोल ४ तोला, क्षीरकाकोली ४ तोला, पीपरि ४ तोला, जीरा ४ तोला, गजपीपरि ४ तोला, चीकनी ४ तोला द्राख ४ तोला, कचूर ४ तोला, एला ४ तोला हर्ड़ काबुली ४ तोला, जटामासी ४ तोला, पित्तपापडा ४ तोला, नागकेसरि ४ तोला, निसोत ४ तोला, हरदी ४ तोला, रास्ना ४ तोला,मेढासींगी ४ तोला, सोठि ४ तोला, सतावरि ४ तोला, इन्द्रयव ४तोला, नागरमोथा ४ तोला,सब दवाका चौगुने पानीमें काढ़ा बनावै जब पानी आधा रहै तो पीछे दाख २४० तोला, धौकेफूल १२० तोला, गुड १६ तोला, शहद १२८ तोला मिलायके घीके चीकने वरतनमे रखदे पहले जटामासी मिर्चीं दोनोंके चूर्णका धूप देवै पीछे पीपरि ८ तोला, चन्दन ८ तोला, वाला ८ तोला, जायफल ८ तोला, लौंग ८ तोला, दारुचीनी ८ तोला, इलायची ८ तोला,

तमालपत्र ८ तोला, नागकेसरि ८ तोला, कस्तूरी १ तोला, धत्तूरबीज ४ तोला, सब दवा घडामें डारिके मुँह बंद करिके जमीनमें गाड़दे १५ दिनके पीछें रोगीका बल विचार देखिके खानेको देय तो धातु क्षय पाँच प्रकारके साँस छःप्रकारकी बवासीर ८ प्रकारका उदर रोग, बीस प्रकारका परमा, महाव्याधि, अरुचि, पांडु सब प्रकारके वातरोग, शूल, शर्दी, रक्तप्रदर अठारह प्रकारके कुष्ठ रोग, मूत्र शर्करा, मूत्रकृच्छ्र इन सब रोगोंको दूर करताहै और बाँझको पुत्र देताहै. शरीरको पुष्ट और निरोग करताहै.

गूगुल योग.

गिलोय ९६ टंक, गूगुल १२८ टंक, त्रिफला २००टंक, इस औषधको तिगुना पानी डारिके चुरावे जब तीन भागजरिजाय एक भाग पानी रहिजाय तब छानिले फिर दात्यून, कूट, त्रिफला, वायविडंग तज गिलोय निसोत ये सब दवा ४ चार टंक लेकर चूर्ण करके आगके काढ़ामें मिलादे खुराक तीन टंक तो वातरक्त, दुष्टवर्ण, परमा, भगंदर, आमवात इत्यादि सब रोगदूर होयँ.

अथ गूगुलकिशोर.

शुद्ध भैंसागूगुल एक सेर, एक मन पानीमें चुरावे पीछे हर्रे एक सेर, बहेड़ा एकसेर, आंवला एक सेर गुरुची १६ तोला डारिकेचुरावे जब आधा रहिजाय तब छान पारा अढाई टंक, गंधक अढाई टंक, वायविरंग अढाई

टंक,निसोत अढाई टंक,गुरुच अढाई टंक दाल्चूनी अढाई टंक, पहले पारा गंधककी कजरी करै तब दवा कूट कपड छान करिके सब दवा एकमें मिलादे खुराक ८ मासा सवेरे खाय तो आमवात और वातरोग इत्यादि दूरहोयँ.

१ दवा हैजाकी बीमारीको तुर्त शांत करै.

मिर्च एकमासे,अरहरके पत्ता एक तोले लेके खूब घोटै फिर पावभर पानी डालके पिलावे तो तुर्त हैजामिटै.

२ तथा.

आककी जडको अदरखके रसमें खल करै फिर मिर्च बराबर गोली बांध एक गोली पानीके साथ खिलावे तो हैजा जावे.

३ तथा.

बिजौरा नींबूके पंद्रह बीज दोतोला पानीके साथ मिश्री डालके पिलावे तो तुर्त अच्छा होय.

हुचकीकी पहली दवाई.

कलौंजी ३ मासा चूर्ण करके माखनमें खाय तो अच्छा होय.

तथा.

काला उर्द चिलमपर रखके तंबाकूके समान पीवे तो अच्छा होवै.

पीपलका चूर्ण.

एक सेर पीपल, दो सेर दूधमें चुरावे, जब दूध जल जाय तो पीपलको सुखायके चूर्ण करिके चौदह मासे

चूर्ण और छः तोला मिश्री डेढ पाव दूध डालके दर रोजपीवै तो नामर्दपन मिटै वीर्य बढे.

पीपलकी गोली.

अस्पंद, कपूर, बीजाबोल, अजवाइन सब कूटके अदरखके रसमें चना प्रमाण गोली बनावै एक गोली खाकर दूध पीवै तो बहुत जोर होय.

हर्डोंकी जवारिस.

हर्डे बारह तोले, सनाय बारहतोले, हर्डे घीमें चुराय कूट कपडछानकरिके मधुमें मिलायके जवारिस तय्यार करे फिर नव मासे खानेको देवे आंखोंकी गर्मीको दूर करता अन्नको पचाता और सबरोगोको फायदा देताहै.

मिर्चादि चूर्ण.

मिर्च सोंठि पांचो नमक मिलाकर कपड़छान करके सवेरे फंकी मारै तो कब्जियत दूर होय. यह बात रोगको बहुत फायदा करती है.

सुंठयादि चूर्ण.

सोंठि. मिर्च, पीपल, तज, तेजपात, इलायची, लवंग, जायफल, वंशलोचन, कचूर, बावची, अनारदाना, सब बराबर लेकर कूट कपड़छान करके सब चूर्णके बराबर लोहरस लेवे और लोहारसके बराबर मिश्री मिलायके छः मासे रोज सवेरे खाय ऊपरसे बकरीका दूध पीवै तो क्षयरोग, मन्दाग्नि, बीसों परमा दूरहोयँ अत्यंत पुष्टहोय

इति श्रीमुन्शी भगवान प्रसाद शिष्य भगत भगवानदास विरचित वैद्यक रसराज महोदधि मध्ये गजकर्णकी दवा, मलहम, लेप, तेल बनानेकी विधि. खाँसी, दमा और अंडकोष सूजनेका इलाज, साँप काटेकी दवा, विच्छूकी दवा, बावले कुत्ता काटनेकी दवा, सांदेकी दवा, महजूम, वन्धेजकी दवा, गर्मी तिजारीकी दवा, सब रोगोंकी दवा, हूककी दवा, सर्व ज्वरका चूर्ण और चौथिया तिजारीकी दवा, अति उपयोगी मंत्र यंत्र प्रयोगादि और घावका मंत्र,कानका मंत्र, प्रेतका मंत्र, और नर्कहवा वेरवा घिनहीं जहरवात थनइलका एकमंत्र सनाय खानेकी उनइस विधि पारेका सिद्ध गुटिका, चूर्ण, गोली, दशमूल गूगुलयोग, गूगुल किशोर सब रोगोंकी दवाई व सबके बनानेका सहल २ उपाय वर्णनं नामपंचमो खंड सम्पूर्णम् ॥ ५ ॥

अथ कुष्ठ रोग वर्णन.

गुरूकी स्त्रीके संग तथा गौके संग तथा गोत्र की स्त्रीके संग मैथुन करनेसे कुष्ठ होवै अथवा विरुद्ध भोजन करनेसे, अजीर्णमें भोजन करनेसे, पतली चीकनी भारी वस्तुके खानेसे, मल मूत्र रोकनेसे, मछली और दूध के एकही संग खानेसे, शीतल गरम एकही संग खाने से ब्राह्मण गुरू माता पिता इन्होंका आदर न करनेसे कुष्ठ होवै तथा पापकर्म्म करनेसे

१ वात पित्त कफके कोप करके त्वचा रक्त मांस लोहूको बिगाड़ कर १८ प्रकार का कुष्ठ उत्पन्न होता है सो इसमें ७ महाकुष्ठ हैं और छोटे छोटे ११ कुष्ठ हैं सब मिलके १८ कुष्ठहैं.

अथ सात महाकुष्ठके लक्षण.

जिस कुष्ठका रंग काला लाल मिला हुआ ताम्रके रंगका हो वा मिट्टीके खपरेके समान रूखा हो, कड़ा पतला चर्म्म होजाय और गूलरके फलके रंग लाल होय और अंगमें पीड़ा सूजन हो रुधिर काला हो हाथ पैरमें कांखमें फुन्सियहों इनसबउपद्रवोंके शांतिभोजन वास्ते २ चांद्रायण व्रत करेऔर ब्राह्मणोंको करावे और दान दे तो पापशांति होय और वैद्यकशास्त्र में कही औषधोंका दान करै तो कुष्ठ शांति होय.

अथ कुष्ठकी दवा.

वायविडंग, त्रिकुटा, नागरमोथा,चीता, मीठा तेलिया, बच,गुड़ये समभागले तीनवार लेप करैतो कुष्ठदूरहोय.

पुनःदूसरा लेप.

कलमी सोरा इमलीकी लकडीके कोइलापर धरे फिर कोइलामें अग्नि जराय रात्रिभरि अग्निमें रहने दे सबेरे निकालिके कलीका चूना १ भाग सोराका खार २ भाग मिलाय जहां कुष्ठकी फुन्सियां होयँ तहां सँभारिके थोरा लेप करै तो कुष्ठ अच्छा होय.

कुष्ठके खानेकी दवा.

सेहुंडका दूध आधासेर, भुंजाचना पांच तोला एकमें मिलाय खल करै फिर चनाबराबर गोली बांधे कुष्ठवाले रोगीका बल देखि दे तो गलितकुष्ठ दूर होय इसपर खटाई और सब परहेज रक्खे कुछदिन सेवै तो आराम होय.

कुष्ठकी दूसरी दवा.

निंब, कड़ू परवर, कटेली, गिलोय, बांसा सब चालीस चालीस तोले ले कूटिके एक द्रोण पानीमें चुरावे जब चतुर्थांश काढ़ा रहिजाय तो घृत ६४ तोले त्रिफलाका काढ़ा ६४ तोले मिलायके पकावे घृतको सिद्धकर खानेसे कुष्ठ दूर होय और ८० प्रकारका वात रोग ४० प्रकारका पित्तरोग २० प्रकारका कफ-रोग दुष्टव्रण कृमि बवासीर पाँचों खांसी इन्होंको नाशे.

अथ त्रिफलादि मोदक.

त्रिफलाका चूर्ण ६० तोले, वायविडंग २८ तोले, लोहभस्म ८ तोले, बाबची ४० तोले, शिलाजीत २ तोले, गूगुल ८ तोले दुस्करमूल ४ तोले, निसोत १ तोला, मिर्च, पीपल, सुंठी, दालचीनी, तमालपत्र केसर, नागरमोथा ये सब दवा दो दो तोले लेय सब औषधोंके समान मिश्री मिलाय ४ तोलेके लड्डू बनाय प्रभातसमय १ लड्डू रोज खाय तो मनोवांछित भोजन करे १८ प्रकारके कुष्ठ, तिल्ली, गुल्म, भगंदर ८० प्रकार

रके वायुरोग, ४० प्रकारके पित्तरोग, २० प्रकारके कफरोग द्वंद्वज सन्निपात, शालक्यरोग, नेत्ररोग, भृकुटीरोग, कंठरोग, तालुरोग, जीभरोग, उपजीभरोग, कांधा कंठके बीचके रोग, भोजनके ऊपर देनेसे औ पेटके रोगोंमें भोजनके मध्यमें खानेसे सम्पूर्ण रोगोंको नाशै और यह रसायन है.

अथ सफेदकुष्ठको लेप

असगन्ध, वायबिडंग, चीता, भिलावाँ, जमालगोटाकी जड, अमलतास, निंबोली इन्होंको कांजीमें पीसि लेप करनेसे सफेद कुष्ठ नाश होवै.

पुनःलेप.

हरताल ४ मासे, बावची १६ मासे, इन्होंका गोमूत्र में पीसि लेप करनेसे श्वित्र नाश होवै.

अथ घोड़ाचोली लिख्यते.

रस विस गंधक औ हरताल। त्रिकुटा त्रिफला औ भृंगराज ॥ जमाल मिलायके बांधै गोली। कह गोरख यह घोडाचोली ॥ औषध.

पारा, हरताल, गंधक, बच्छनाग, पीपलामूल, मघुपीपरी, सोहागा, हड़, बहेड़ा, आँवरा, सोंठ सफेद निवरसी सब ओषधि सम भाग ले कपड़छान कर भृंगराजके रसमें छः दिन खल करै फिर मिर्च बराबर

गोली बांधे और रोगी का बल विचार के एक गोली शाम एक सवेरे एक महीनाभर खावै तो भूख बहुत लगे जिस स्त्रीके बालक नहीं होता हो तो इस गोली को रजस्वलाके पीछे तीन दिन स्त्री पुरुष दोनों आदमी पानके साथ खावैं तो जरूर बालक होय यह गोली गायके घीके साथ खाय तो अजीर्णज्वर जाय, दही और अनारके दानेके साथ खाय तो संग्रहनी रोग जाय, जिसका पेट पत्थरके सरीखा कठोर होय तो इस गोलीको पानीमे पीस पेट पर लेप करै तो पीड़ा औ कठोरता दूर होय. और जो कोई यह गोली अदरखके रसके साथ खाय तो सब तरहका वात रोग जाय और जिस आदमीको बीछीने डंकमारा होय तो यह गोली सोंठिके साथ घिसि घावपर लेपकरे तोतुर्त बीछीका जहर दूर होय और अरसीके चूर्णकेसाथखाय तो ताप ज्वरजाय, जीरा और शक्करके साथ खाय तो पुराना ज्वर जाय.

सेंदुर एक टंक, घी छःटंकके साथ एक गोली घिसिके लगावै तो मुखकी झाई दूर होय.

और यह गोली मिर्चमे पीस नास लेवे तो मृगी रोग, नाक रोग दूर होय. और खीराके बीजके साथ गोली खाय तो मूत्र रोग जावे पेशाब होवे, अकरकराके साथ यह गोली खाय तो इन्द्रियकी पथरीको तुर्त निकाले और पानके रसके साथ पंद्रहदिन खाय तो भूख

लागे, मधु पीपरिके साथ खाय तो इडफूटन रोग जाय खसखसके रसके साथ खाय तो वायशूल रोग जाय. कडुआ गुंजा औ अनारके रसके साथ गोली घिस बालपर लगावै तो बाल झरिजायँ और फिर जमिआवैं, पानीके साथ घिसि आँखों में लगावै तो जो आँखें लाल होयँ तो अच्छी होयँ.

मोचरस बदामके साथ उपरोक्त गोली खाय तो खून गिरता बन्द होय, सोंठि औ स्त्रीके दूधके साथ गोलीको घिसि कानमें डारै तो कानकारोग दूर होय और तुलसीके रसके साथ गोली खाय तो तिजारी ज्वर जाय.

कोहरीया धतूरके बीजके साथ यह गोली खाय तो सफेद कुष्ठ दूर होय और भंगराके रसके साथ खाय तो शरीरकी सुस्ती जाय, संभालूके रसके साथ खाय तो प्रमेह रोग जाय.

पीपरि और गुर बेलके साथ यह गोली लेप करै तो सन्निपात दूर होय पुराने गुरके साथ यह गोली खाय तो मुँहका दुर्गंध दूर होय, पावर रसके साथ यह गोली खाय तो मुँहकी जरदी और सूजन दूर होय अँवराके चूरणके साथ गोली खाय तो सब तरहकी गरमी जाय, अँवराके चूरणके साथ वर्षदिन खाय तो निरोग होय रोग कभी न पावै, मधुके साथ खाय तो शरीर पुष्ट होय बल अतुल्य होय.

मधुके साथ इन्द्रियपर लेप करे तो औरत बहुत प्यार करे शंखाहोलीके साथ खाय तो पिंड रोग जाय- छोहाराके बीजके चूरणके साथ गोली खाय तो बाँझिनीके गर्भ रहे आल्हीरस दमयंती रसके साथ गोली खाय तो जलंधर रोग जाय.

नकछीकनी ओर निबोरा के रसके साथ गोली खाय तो पेटका वाय तुर्त दूर होइजाय.

पीपल व हींगके साथ गोली खाय तो बवेशी रोग जाय गंगेरूके रसके साथ गोली खाय तो बिन्दुकुशादि जाय,छांछके साथ गोली खाय तो शरीरका सूजन जाय सोंठिके चूरणके साथ गोली खाय तो हथरस रोग जाय जावित्रीके साथ गोली खाय तो बाँझिनीके पुत्र होय.

ऊँटकटेरीके साथ गोली खाय तो पेटकी अग्निको तुर्त बुझावे निबोरीके साथ गोली खाय तो दांतका चवाव बन्द होय, सफेद गुंजामे घिसिके आंखोमें लगावे तो आंखोंका रोग दूर होय, निबोरेके साथ गोलीको घिसिके शरीर पर लगावे तो भूत प्रेत भागि जायँ. नीबीके फूलके साथ यह गोली खाय तो सांपका विष दूर होय, नीबीके पत्रके साथ गोली खाय तो सब ज्वर जाय पीपरके साथ गोली खाय तो अवलेह रोग जाय, काला नमकके साथ गोली खाय तो पेटका मल दूर होय भंगराके रसके साथ यह गोली खाय तो सन्निपात जाय. जीरा मिश्रीके साथ गोली खाय तो शरीरको पुष्ट

करे शहदके साथ गोली खाय तो वायगोला रोग जाय इमलीके रसके साथ गोली खाय तो पित्तज्वर जाय, तुलसी और अनारके दनाके रसके साथ गोली खाय तो शूल रोग जाय तुलसीके रसके साथ घिसि आंखोंमें लगावे तो रतौंधी जाय.

सफेद गुंजामें घिसि आंखीमें डारे तो फूली रोग जाय.

अथ दूसरा घोड़ाचोली.

पारा त्रिफला सोंठि जमालगोटा निसोत कुटकी व- च्छनाग हरताल हरदी मिर्च सोहागा अफीम लवंग जायफल जावित्री मधु पीपरि वायविडंग ये सब दवा स- म भागले कूट कपडछान करिके भंगराके रसमें छः दिन खल कर मिर्च बराबर गोली बांधे और ऊपरकीघोड़ा- चोलीके अनोपान मुवाफिक रोगीको देवै ॥ चौ० ॥ भगवानदास धन्वन्तारिको शीशनवावे ॥ घोडा चोली गोली बनावे ॥ जो गुरुका ध्यान लगावे । अरु- संतनको शीशनवावे ॥ यहि औषधको करै विचारी इसका गुणहै सबसे न्यारी ॥ संतन वचन ध्यान में लावे । सोई वैद्यक सुख उपजावे ॥ जो परहेजसे गोली खावे । सोनर कभी रोग नहिं पावे ॥

इति घोडाचोली समाप्तम् ।

अथ गोरखमुंडी कल्प प्रारंभः ।

अमावसके रोज जड़समेत मुंडी उपारके छायामें

सुखायके एक तोले गायके दूधके साथ ४० दिन खा-य तो शरीर निरोग होय. और इस विधिसे वर्ष-दिन खाय तो महाबली होय आचारसे रहै. फिर वही चूर्ण शामको पानीमें भिगावे और सबेरे बालोंमें मलै तो बाल काले होयँ फिर वही चूरण इकइसदिन खाय और ब्रह्मचर्य्यसे रहै तो अग्निमें मुख न जरे और पानी मे डूबे नहीं और जिस मुंडीमे फल फूल नहीं लगा होय तो उसको उपारि लावे और छायामे सुखाय चूरण कर दूधमे पीवै तो ब्रह्मज्ञानी होय आगमजाने महासिद्ध होय फिर उसी चूरणको पानीमे भिगोय आंखमें डारै तो आंख रोग दूर हों और फिर वही चूरण जौके आटामे मिलाय गायकी छॉछ लेकर सानै और रोटी बनाकर गायके घीके साथ खाय तो कायाकल्प होय सुवर्ण जैसा शरीर होय कुछ दिन सेवै तो पूज्यमान होय ब्रह्मचर्य्यसे रहे फिर मुंडी उखाडके रस निकाल शरीरमे मलै तो पीड़ा दूर होय फिर मुंडीका बीज एक तोला रोज खाय वर्षदिन सेवै तो बूढा नहीं होय जो आचारसे रहै.

फिर मुंडीपंचांगले चूरण करके शहदके साथ कुछदिन खाय तो कवि होय और बल बहुत होय.

इति गोरखमुंडी समाप्तम् ।

अथ शुक्रपाक ।

एरंडीका बीज एकसेर, दूध आठसेर, मिश्री चारसेर पहिले एरंडीका छिलका दूर करके पीस दूधमें मिलाय मिश्री डाल मधुरी आंचसे खोवा करै तब सोंठि पीपरि लवंग इलायची दालचीनी साठी हड़ बाला जावित्री जायफल तमालपत्र नागकेसर असगंध रास्ना खडगंधा पित्तपापड़ा दोदो तोला लेकर कूट कपड़ छान करके खोवामें डालै पीछे अदरखरस एक तोला लोहा भस्म एक तोला सब एकमें मिलाय पाक तैय्यार करै रोगीका बल देखकर सवेरे खानेको देवै कुछ दिन सेवै तो अस्सी प्रकारका वातरोग दूर करै चालिस प्रकारके पित्तरोगको दूर करै आठ प्रकारके उदररोगको हरै बीस प्रकारके प्रमेह रोगको हरै साठि प्रकारके नाड़ी-व्रण रोग हरै अठारह प्रकारका कुष्ठरोग हरै सात प्रकारका क्षयरोगहरै पांच प्रकारका पांडुरोग हरै पांचप्रकार काश्वास रोग हरै चार प्रकार संग्रहनी रोग हरै और नेत्र रोग इत्यादिक सब रोग दूर करै पथ्यसे ब्रह्मचर्य्यसे रहै

अथ मेथीपाक प्रारम्भः ।

मेथी बत्तीस तोला सोंठि बत्तीस तोला इन्होंका चूरण करके कपड़छानकर दूध दोसौ छप्पन तोला घृत बत्तीस तोले सब एकमे मिलाय चुरावै जब कड़ा होजाय तब अग्निपरसे उतार लेवै पीछे मिर्च पीपरि सोंठि पीपलामूल चित्ता अजवाइन धनियाँ जीरा

लौंगी सौंफ जायफल कचूर दालचीनी तमालपत्र
ागरमोथा ये सब दवा चार चार तोला और सोंठि
ःतोला मिर्चे छःतोले इन्होंका चूरणकर मिलाय
ाक तैयार करै ये मेथीपाक चार तोले अग्नि बलको
वेचार खाय तो आमवात और सब वातरोगोंको
ांति करै और विषमज्वरको पांडु रोगको कामलाको
उन्मादको अपस्मारको प्रमेहको वा रक्तपित्तको वा
अम्लपित्तको शिरपीड़ाको नासिका रोगको नेत्ररो-
को प्रदररोगको सूतिका रोगको यह सब रोगको हरै
शय नहीं यह शरीरको पुष्ट करै और बलवीर्यको
ढ़ावै सम्पूर्ण रोगोंको हरै पथ्यसे रहै;

जुलाब अमीरोंका ॥

चावल ९ टंक शक्कर ९ टंक गुलाबके फूल ९ टंक दूध आधासेर ये सब एकमें मिलाय खीर बनावे तब ९ टंक घी डालके खाय तो जितना ठंढा पानी पीवै तितना जुलाब होवै और गर्म पानी पीनेसे बन्द होइ-जाय इसके बराबर दूसरा जुलाब नहीं ॥

इति श्रीभगतभगवानदास विरचित चोडाचोली गोरखमुंडीकल्पशुक्रपाक मेथीपाक जुला-वादिवर्णनं नाम उत्तर भाग समाप्तम् ॥

अथ लकवाकी दवा.

सवा ३। तोले सनके बीज शहदमें मिलाय सवेरे खायतो लकवा १९ दिनमें नाश होय.

पुनः.

यह तेल लकवाको गुण करताहै. सफेद कनेरकी जड़ का छिलका सफेद चिर्मिटीकी दाल काले धत्तूरका पत्ता सब दवा दो दो तोला चारि चारि मासे लेना फिर कूटिके टिकिया बनाकर पावभर तेलमें टिकिया डालि खूब घोटै तव अग्निपर चुरावै जब दवा जल जाय तो उतारि ठंढा करि अर्द्धाङ्गवायवालेके और पक्षाघात वालेके तेल मलनेसे शरीरका रोग दूर होय.

पुनःमिर्चादि लेप.

कालीमिर्च महीन पीसि कर तेलमें मिलाय गर मकर पतला लेप करै तो पक्षाघातको तुरंत नाश करै इसके बराबर दूसरी दवा नहीं.

पुनःवचका पाक.

लकवाकी दवा अजमाई हुई वच ५ तोले सोंठि कालाजीरा प्रत्येक दो दो तोले एकमे मिलाय कूटि कपडछान करि शहदमें मिलाके साढे ३ मासे नित्य खाय तो अच्छा होय.

पुनःलकवाकी दवा.

वच ३ तोले कालीमिर्च पोदीना स्याहजीरा कलौंजी प्रत्येक दश २ मासे सब कूटि कपडछान करि पावसेर शहदमें मिलाय सात मासे खावे तो पक्षाघात लकवाको दूरकरे.

लवंगादि चूर्ण.

लवंग १ तोले जायफल १ तोले पीपली १ तोले बहेडा ३ तोले मिर्च २ तोले सूंठि १६ तोले इन्हीं सब दवाओंके बराबर खांड़ मिलाय खानेसे खांसीको व श्वासको व ज्वरको व गुल्मको व अग्निमंदको व संग्रहणीको इन सब रोगोको हरै.

अथव्रण फोडनेका लेप.

मालकांगनी सज्जीखार एरंडीबीज तीनो दवा बराबर ले कूटि कपडछान करि पानी डारि गरमकर लेप करे तो फोड़ा तुरत फूटै.

तथा

हाथीके दांतका चूर्ण पीसि व्रणपर लेप करै तो फूटै पुराना व्रण नाश होय.

पुनःलेप.

भंगरा हरदी सेंधानोन धतूरके पत्ता सब बराबर लेकर पीसि गरम करके लेप करै तो व्रण फूटै.

अंडाका लेप.

महुवाका फूल एरंडीका बीज मुलतानी मिट्टी काले तिल सब मिलाय पीसि भेंडीके दूधमें चुराय अंडपर लेप करै तो बहुत दिनका सूजन दूर होय.

तथा

अंडकोशवाले रोगीको जुलाब देय तब ये लेप

करे मालकांगनी एरंडीके बीज असगन्ध आमाहरदी सब पीसि भेडीके दूधमें मिलाय गरमकर लेप करे तो अच्छा होय सूजन हटे.

अथ अजीर्णका बयान.

पेट भारी रहे शिर भारी रहे आलस रहे देह टूटे मुँहसे पानी छूटे तो जानो कि अजीर्ण हुआ और पेटमें पीडा, जँभाई बहुत आवें, अजीर्ण में गरम पानी पीना हित है स्नेह जुलाब देना उलटी करना हित है जलदी से इसकी दवा करे नहीं तो नाना प्रकारका रोग पैदा करता है.

अथ आहारका बयान.

हलकी रोटी तुरत पचजाती है मावेदार रोटी देरमें पचतीहै गरम गरम रोटी भोजन करनेसे उदर की तरीको सोख लेती है ठंढी रोटी उदरको तर करती है और सूखी रोटी भोजन करनेसे रोग पैदा करती है और दालि तरकारी कच्ची न रहे अच्छी तरह से चुराइ लेइ रोटी भी अच्छी तरहसे सिझाइ लेय भोजन से मनुष्य का जीवन आधार है सो मनुष्य को चाहिये कि सँभारि के भोजन करै कच्ची पक्की देखि लेय और गरम शरद देखि लेय और जब तक अच्छी क्षुधा न लगै तब तक भोजन न करै.

अथ मलका बयान.

मनुष्य को चाहिये कि मल को दो दफे

त्याग करे रोके नहीं जो रोके तो मलकी गरमी से वात पित्त मिल कर तमाम शरीर में नाना प्रकार के रोग पैदा करतेहैं मनुष्य मलको बराबर त्याग करै और पेशाव इसी तरहसे करै रोकै नहीं पेशाव रोकनेसे सुजाक परमा पैदा होता है सोइसे बचाये रहना.

अथ पानीका बयान.

पानी भोजनमे कमती पीवे भोजन के दो घरी पीछे पीवे गरम शरद की प्रकृति समझ कर पीवे दरियाव का पानी सबसे अच्छा पीछे कूए का पानी अच्छा है और तालपोखरी का पानी रोग पैदा करता है मैथुनमें पानी विकार है कुस्ती मेहनति मे विकार है ठंढे पानी से गरम पानी का स्नान करना हित है

अथ शीतपित्तका बयान.

शीतपित्त महारोगहै क्षणमें निकलता है क्षणमें समाता है दवासे दूर होता है लेकिन उसकी जड़ नहीं जाती मरने तक रहतीहै कभी शीतमें निकलता है कभी गरमीमें निकलता है शरीरका खून सब बिगाड़ देता है इसके दूर करनेको दवा लिखते हैं परमेश्वरकी कृपासे रोगी निरोग होगा निश्चयसे यही दवा करना भूलना नहीं.

अथ शीतपित्तकी मालिश.

सज्जीखार सेंधानमक करुवातेल मिलायके शरीर

और अनेक तरहका दुःख उठायाहै हे सज्जन
ऐसे सब लोगोंको त्याग करो यह वेदकी रीति है

नाडीभेद–चौपाई.

वात पित्त कफ ये सुनि लेहू । क्लेश होत इनहींसेदे
जो तिहुँते एको बढ़ि जावै ॥ तौ जानैमृत्युनिकटै
जो त्रिदोष येबढ़हिंसमाना ॥ तो नर पहुँचे यमके ध
रहि रहिधुनि हलकेही हालै ॥ नाड़ीप्राण नाशनीन

दोहा.

रहि रहि नाड़ी जो चलै, जो वह प्राण हराय ॥
पुःन क्षीण शीतल चलै, सो यम घर लै जाय ॥

चौपाई ॥

समझ इलाज करे जो कोई।ताको अपयश कबहुँन
भगवान दास है बहुतनदाना।सज्जनपुरुषसुनहु सुजा
कठिन पारसी भाषाकीन । रोगचिकित्सा और निद
तनिकलोभ ना कीजे भाई । दयाधर्म करिदेहु दनाई

इति श्री मुन्शी भगवान प्रसादका शिष्य
भगत भगवानदास बिरचित वैद्यक रसराज
महोदधि भाषाग्रंथसमाप्तः ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास.
" श्रीवेंकटेश्वर " छापाखाना–मुंबई

॥ श्रीः ॥

वैद्यक रसराजमहोदधि भाषा ।

दूसरा भाग २.



जिसमे

सर्व प्रकारके रोग विनाशार्थ अनेक प्रकारकी यूनानी मिस-
रानी दवा और फकीरोकी जटी बूटी वनस्पति विविध
भाँतिमो सरल रीत्यनुसार संगृहीत हैं ।

जिसको

मुन्शी भगवानप्रसादका शिष्य भगत भगवानदास
वल्द सुनराज मुराई गाँव चकवढवल निवासी
जिला जौनपुरने निर्माण किया ।

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् मुद्रणयन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९७७, शके १८४२

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं
गली सम्राटौष्ठन स्वकीय "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें
अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया

भूमिका।

सब सज्जन विद्वान वैद्यजन भारतवासी भाइयोंको विदित हो कि, यह वैद्यक "रसराजमहोदधि भाषा, दूसरा भाग" बनाके प्रगट करताहूं इस ग्रंथमें पांचखंड बनाये है और यूना नी मिसरानी दवा सब हिन्दीमे बनाई हैं और फकीरोंकी जड़ी बूटी सब किस्मकी दवा और सब किस्मके रोग दूर होनेके वास्ते नानाप्रकारकी तरकीबे बताई गई हैं और जो इस ग्रंथके विधिप्रमाण तन, मन, धन और ईमानसे दवा करेंगे तो परमेश्वरकी कृपासे इस संसारमें उस मनुष्यको यश और मान मिलैगा और मैं इस ग्रंथकी उपमा और गुण कहाँतक लिखूं जो ग्रंथ देखेंगे सब गुण मालूम होजायँगे और इस "रसराजमहोदधि" के वास्ते बहुत मित्र विद्वान जनोंने कहा कि, इसका दूसराभाग बनाओ तब मैंने परब्रह्म परमेश्वरको नमस्कार कर उनकी कृपासे यह दूसराभाग बनायके तय्यार किया और अब मैं सबको प्रणाम करताहूं साधु विद्यावान् वैद्यजन पंडित स्वामी लोगोंसे विनय करताहूं कि, जो कुछ मेरी भूल चूक होय सो कृपादृष्टिसे शुद्ध कर लेवें और जैसा मैंने ग्रंथ बनाया उसी मुताबिक भैया गजाधर लालने लिखाहै और यह ग्रंथ श्रीमुन्शी भगवान्प्रसादका शिष्य भगत भगवानदास वल्द सुवराज मुराई जिला जौनपुर गाव चकवढवल निवासीने ठाठरी के गोदामके पास बनाके अपनी खुशीसे सेठजी–सन्तनउपकारी खेमराज श्रीकृष्णदासजीको हक रजिस्टरी सहित देदिया ॥ मिती वैशाख सुदी तीज वार बृहस्पति संवत् १९५३ तारीख १६ अप्रैल सन् १८९६ ईसवी।

आपका सेवी–भगत भगवानदास.

रसराजमहोदधिके दूसरे भागकी अनुक्रमणिका।

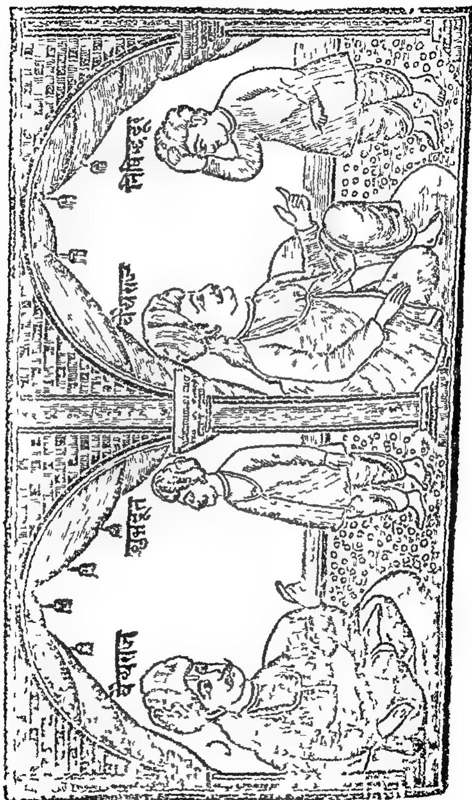


इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।



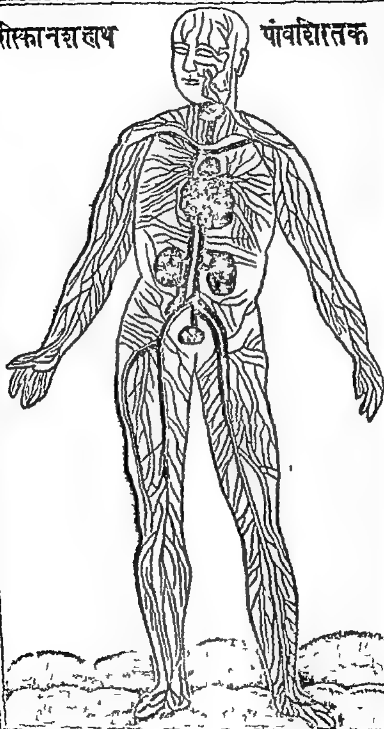


आदिनाथ धन्वंतरी महाराज.


वैद्यराज
शुभदत्त
वैद्यराज

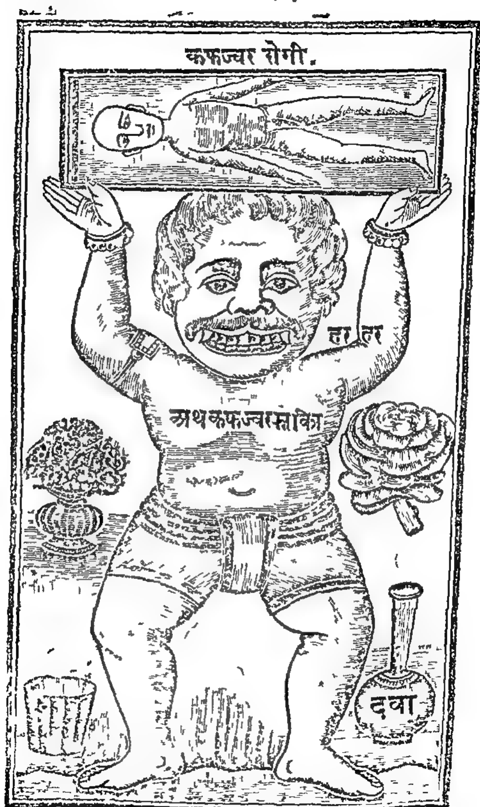

भगत
भगवानदास


अर्कस्थान
दवापानी

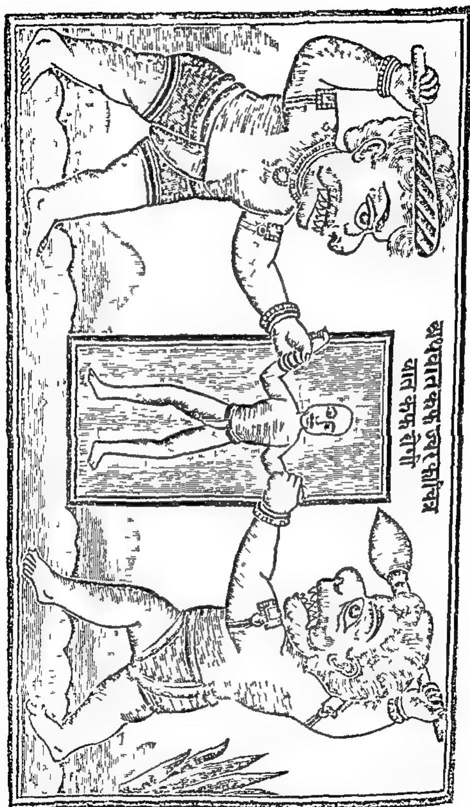

शरीरका नश हाथ
पांवशिरतक


वातज्वररोगी
अथवातज्वरका
चित्र
गिलासमें
दूध


अथपित्तज्वाकाचित्र
पित्तज्वरोगी

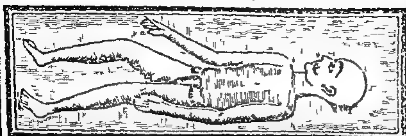

कफज्वर रोगी.
हा हा
दवा

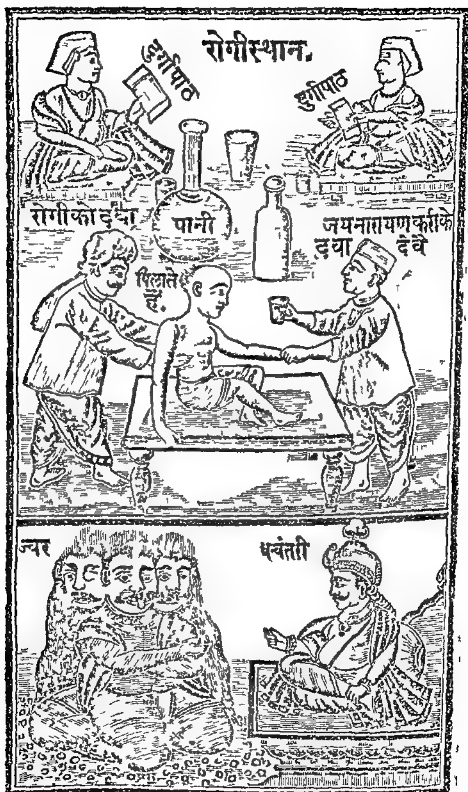

वातपित्तज्वरका चित्र.
वातपित्तरोगीका चित्र


अथवात कफ ज्वर कोचित्र
वात कफ रोगी

अथकफपित्तज्वरका चित्र

कफपित्त ज्वररोगी




रोगीस्थान.
दुर्गापाठ
दुर्गापाठ
रोगीको दवा
पानी
जयनारायणकरीके दवा देवे
पिलाते हैं.
ज्वर
धन्वंतरी

लँगड़ा, अशुभवचन बोलता हुआ, ऐसा दूत वैद्यके बुलानेको नहीं जाय ये सब अशुभहैं ॥

अथ दूतशकुन ।

शकुनसे वैद्यजन को शुभाशुभ साध्य व असाध्य रोगीको जनाय देताहै और बुलानेको दूतके चलते हुये सौम्य शकुन बाजादिक अच्छे नहीं अंगारादिक प्रदीप्त शकुन अच्छे हैं ॥

अथ दूत शुभाशुभ ।

जो दूत वैद्यके पूर्वदिशा व उत्तर, पश्चिमदिशा व ईशान दिशामें बैठे तो अच्छाहै और दिशाओंमें बैठे तो नेष्टहै और जो दूत तृण राख कोइलादिक लिये बैठजाय तो अच्छा नहीं और लालमाला, लाल वस्त्र, तृण, लाठी, दलकाटता, कीच तेलमें भीजा, चूतीनाक, माथेऊपर हाथ, रखकर बैठे ऐसा दूत नेष्टहै ॥

अथ दूतके कहे अक्षर शुभाशुभ ।

दूतके मुखसे निकसे अक्षर दुगुनेकर तीनका भागदे शून्य बचै तो रोगी मरै, अंक बचै तो आरोग्य होय और दूतके मुखसे निकसे अक्षर तीन गुणेकर ८ आठका भाग दे सम बचै तो मृत्यु होय विषम बचै तो आरोग्य होय ॥

अथ रोगीके पास जातेहुये वैद्यको शुभाशुभ ।

रोगीकी चिकित्सा करनेको चलते हुये मार्गमें बाजा इत्यादि शुभहैं, दीप्त याने अंगारादिक शुभ नहीं और वैद्यके

अथ दूतपरीक्षा ।

दूतकी चेष्टासे साध्यासाध्य रोगीको वैद्यजन जान सक्ते हैं। दृष्टान्त जैसे—दूरसे धूमको देखकर अग्निका अनुमान करते हैं तैसेही वैद्य विद्यावान् रोगीके रोगका अनुमान करसकते हैं ॥

अथ दूतलक्षण ।

जो दूत वैद्यको बुलानेजाय तिस दूतका लक्षण कहते हैं—रोगीके जातिका होय और सफेद वस्त्र पहने हुए कछु द्रव्य फलादिक हाथमें लिये हाथी घोड़ा सवारीपर सवार होय ऐसा दूत वैद्यबुलानेको श्रेष्ठ है. अथवा चतुर, विद्यावान्, शीलवान्, ब्राह्मण क्षत्रियजातिका हो पान खाये हुये शीलस्वभाववाला शुभवचन मुखसे बोलताहुआ ऐसा दूत वैद्य बुलाने जाय तो श्रेष्ठ है ॥

अथ दूसरा दूतलक्षण ।

जो दूत वैद्यको बुलाने जाय, वह काले लाल कपड़े पहनेहुए हाथमें लकड़ी लिये बालोंकी जटा शिरपर धारण किये अथवा मूँडमुड़ाये हुये तेलमें भीगे कपड़ा पहनेहुये भयकारी वचन कहताहुआ दरिद्री व रोताहुआ राख, कोइला, अँगारा, खोपरी, फाँसी हाथमें लियेहुये सूर्यके अस्तसमय जाय चुप होकर वैद्यके पास बैठजाय ऐसा दूत यमरूप है और वैद्य बुलानेके हेतु स्त्रीको नहीं भेजना चाहिये क्योंकि महाअशुभहै और दो आदमीका जाना भी अच्छा नहीं और अंगहीन, रोगी, शोकित, रोताहुआ, काणा, अन्धा, लूला,

लँगड़ा, अशुभवचन बोलता हुआ, ऐसा दूत वैद्यके बुलानेको नहीं जाय ये सब अशुभहैं ॥

अथ दूतशकुन ।

शकुनसे वैद्यजन को शुभाशुभ साध्य व असाध्य रोगीको जनाय देताहै और बुलानेको दूतके चलते हुये सौम्य शकुन बाजादिक अच्छे नहीं अंगारादिक प्रदीप्त शकुन अच्छे हैं ॥

अथ दूत शुभाशुभ ।

जो दूत वैद्यके पूर्वदिशा व उत्तर, पश्चिमदिशा व ईशान दिशामें बैठे तो अच्छाहै और दिशाओंमें बैठे तो नेष्टहै और जो दूत तृण राख कोइलादिक लिये बैठजाय तो अच्छा नहीं और लालमाला, लाल वस्त्र, तृण, लाठी, दलकाटता, कीच तेलमें भीजा, चूतीनाक, माथेऊपर हाथ, रखकर बैठे ऐसा दूत नेष्टहै ॥

अथ दूतके कहे अक्षर शुभाशुभ ।

दूतके मुखसे निकसे अक्षर दुगुनेकर तीनका भागदे शून्य बचै तो रोगी मरै, अंक बचै तो आरोग्य होय और दूतके मुखसे निकसे अक्षर तीन गुणेकर ८ आठका भाग दे सम बचै तो मृत्यु होय विषम बचै तो आरोग्य होय ॥

अथ रोगीके पास जातेहुये वैद्यको शुभाशुभ ।

रोगीकी चिकित्सा करनेको चलते हुये मार्गमें बाजा इत्यादि शुभहैं, दीप्त याने अंगारादिक शुभ नहीं और वैद्यके

गमनमें हस्ती, घोड़ा, ब्राह्मण, बैल, फल, छत्र, मांस, जल, कुम्भ, स्त्री पुत्रवती, गौ वत्ससहित, खंजरी, सिद्धान्न, राजा, पुष्प, वेश्या चन्दनादिक शुभ हैं. हरिण, काक,बांये वैद्यगमनमें शुभहैं और कुत्ता, सर्प, मूषा नकुल, मांस, दही, दूध, रूपा, बकरा, मुर्दा, रोदन वर्जित, अग्नि प्रकाशित, सफेद वस्त्र, ध्वजा चित्तको आनन्द यह शकुन वैद्यको शुभहै ॥

अथ रोगीके पास जाते वैद्यशकुन ।

छत्र, गौ, ब्राह्मण, कन्या, मांस, मदिरा, वेश्या, गोरोचन, मंगलशब्द, राजा, घोडा, हस्ती, दही, स्तोत्रपाठ, संगीत भया-नक करुणा विहीन शब्द करतेहुये क्रीडारूप मनोहर मुखसे कहतेहुये बालकादिक शुभहैं और पुरुषनामक पक्षी पास शुभ हस्ती खच्चर वीन स्त्री नामक पक्षी दक्षिण शुभहै ॥

अथ वैद्यको अपशकुन ।

बिलाव, गोह, कीरली, या वानर या कोई जीव मार्ग-में छेदकरे तो अशुभहै और रोगीके द्वारपै मंगल अमंगल रूप जानो ॥

अथ वैद्यगमननिषिद्धकाल ।

सन्ध्याकालमें, रात्रिमें, स्नान, भोजन समयमें विपरीत कालमें बुद्धिमान् वैद्य गमन नहींकरे इन सबका ध्यानरक्खे॥

अथ वैद्यरोगीविषयक नियम ।

वैद्य रोगीके मकानमें शयन करेनहीं रोगीके घरकाभोजन करे नहीं और बिना बुलाये जाय नहीं वैद्य रोगीके मुखप

मृत्यु प्रगट करै नहीं, सुंदर चिकित्सा करै तिसे वैद्य कहतेहैं और वैद्य गुरु द्वारा (सकाशते) शास्त्रार्थ जानताहोय सम्पूर्ण कर्म्म क्रिया जानताहो और अपने हाथसे औषध करनेवाला हाथका हलका हो और शुद्ध शूरवीर सम्पूर्ण रसादिक जिसके पास होंय चंचल चतुर शीघ्रबुद्धिवाला और उद्योगी प्रियवचन बोलनेवाला सत्यधर्मवाला ऐसा वैद्य शुभश्रेष्ठहे श्रेष्ठवैद्य महाअसाध्य रोगीकी चिकित्सा करै नहीं और चतुर होय, गुरुमुखसे पठन कियाहोय, सर्वकर्मग्रंथ चिकित्साके देखेहुये पवित्रहो, वह वैद्य उत्तमहै ॥

अथ निषिद्ध वैद्य ।

पुराना कपड़ा पहनेहुये, क्रोधी, अत्यन्त गर्ववाला, ग्राम २ में जानेवाला, बिनाबुलाये रोगीके पास आवे और ऐसे पाँचप्रकारके वैद्य धन्वन्तरि समान भी प्रशसाको प्राप्त नहीं होतेहैं ॥

अथ वैद्यकर्त्तव्य ।

रोगका निश्चयकर पीड़ाकी शांतिकरना यह वैद्यका वैद्यत्वहै ॥ उमरका मालिक वैद्य नहीं है और मनुष्यकी १०१ मृत्युहैं तिन्होंमें १ मृत्युकाल संयुक्त है, बाकी सब रोगरूप साध्यहैं काल सबीको ग्रसता है महामृत्युको दूर करनेको कोई रसायन नहीं है रोगी रोगशान्तिके पीछे वैद्यको द्रव्यदेके पूजाकरे जो नहीं करै तो रोगीका सुकृत पुण्यक्रिया आधा वैद्यको मिलताहै ॥

अथ रोगीकी अष्टस्थान परीक्षा ।

रोगीके आठस्थान देखै प्रथम नाड़ी १ मूत्र २ मल ३ जिह्वा ४ शब्द ५ स्पर्श ६ नेत्र ७ शरीरका आकार ८ यह आठप्रकारसे रोगीकी परीक्षाकरै. प्रथम नाड़ीदेखै कि, दोष कोपज्यादाहै या कम और वैद्यजन नाड़ीकी आदि व अन्तमें स्थिरता देखै (दृष्टान्त) जैसे वीणामें प्राप्त स्वर यंत्री सम्पूर्ण रागोंको प्रकाशकरै तैसे वैद्यके हाथमें नाडीभी प्राप्त होतीहै इसीसे सब रोग जाने जातेहैं ॥

अथ नाड़ीलक्षणकथनम् ।

दोहा—प्रथम गुरूपद वन्दिकै, धन्वतरि धरिध्यान ।
करै परीक्षा रोगकर, सो वैद्यक जगमान ॥
प्रातकालके आदिमें, नाड़ी देखै आन ।
पुनः चिकित्सा कीजिये, कहेदास भगवान ॥

अथ वातनाड़ीलक्षण—चौपाई ।

सरस्वती सुमिरण करिभाई । तब नाड़ी पर ध्यान लगाई ॥
भगवानदास कहत विचारी । प्रातकाल उठि धारै नारी ॥
पित्त वात श्लेषम जानै । देखि धामिनीको पहिचानै ॥
कहता तिक्त उष्णके खान । सो नाड़ी परखत यह जान ॥
काक चालुसम चंचलनाड़ी । चपल चित्त जो चलै उछाड़ी ॥
दूध दही पुनि केला खाय । यह सुभाय जाते सुनिभाय ॥
प्रातसमयमें पानी प्याय । जाकी नाड़ी कफ वर थाय ॥
खारो खाय संपूरण नाड़ी । मिष्ट सार फल पित्त बिगाड़ी ॥

पेत्त पापनी होसंतापू । वात पित्त कफ होय बतापू ॥
जलदी जलदी मृग ज्यों फाँदे । हंस मयूरगती नहिं ज्यादे ॥
फुल धनिया या जीरासाखिया । वा घूघू की चाल परखिया ॥
मिश्री गरीजु जीरा खाय । वात पित्तका भेद बताय ॥

दोहा–पहिले नाड़ी देखिये, अयअंगुठकरमूल ।
तीनदोष परगटकरै, आदि गुरू नहिं भूल ॥
दहिना हाथ पुरुषकर, बायां स्त्रीजान ।
ऐसे नाड़ी देखिये, सुनहू वैद्य सुजान ॥

चौपाई ।

पितनाड़ी कहु कफघर बास । जो जानीये वैद्य हुलास ॥
मक्खी हो जो आवै भारी । फिर पीछे कफके घर प्यारी ॥
पानी शरदी होय अलाप । लक्षण नाडी पित्त कलाप ॥
पेट रक्त जो धमनी जान । वातप कोपै शीतल खान ॥
शीघ्र चलै शीतलना आवै । वात पित्त का भेद लखावै ॥
सूखे कोख चपल हो चलै । रक्त उष्णकी जानहुभलै ॥
तपं औ निरखा बहुत अहार । वेगवतीसो वेग अपार ॥
गिटप दूध दही पुनि खाय । चिड़ी कुलंग जु
शीतल भोग कपोत जु जावै । जब नाडी कफके प
कफ श्लेष्म दोनों यक रास । शीत वात स्वायक
क्षुधाहीन मल बहुते देहा । गुप्त नाड़ि पलमें न
भगवानदास गुरु ध्यान लगावै । सबही नाड़ी भेद
दोहा–लम्बा हाथ करायके, मन स्थिर चितलाय

तीनबार नाड़ी धरै, बुधिसे रोग बताय ॥
वात पित्तकफ जानिकै,साध्य असाध्य विचार ।
आठ परीक्षा आदिहै, लक्षण बहुत प्रकार ॥

अथ पित्तनाड़ीलक्षण—चौपाई ।

आदि चलै जे पित्त कहीजै । मध्यम श्लेष्म जानि लीजै
अंत होय सो वायु विचारै । त्रय विधि नाडी लक्षण सारै
श्लेषम नाडी परभात । दूजे याम पित्त हो जात
तीजे याम वायु बखानी । पुनि संध्यामें पित्तहि आनी
नागसमान वायुकी नाडी । चपल चित्त ज्यों चलै उघाडी
मंद मंद श्लेषम संध्या । लक्षण त्रय नाड़ीका बंध्या

सोरठा—नाड़ी इकसौ सात, जानि जानि चौबीस तन ॥
प्रथमहि जानो जात, आवहु वेगरु वाहिनी ॥
दोनों दोय जनाय, थानक मिष्ट कुरंगज्यों ॥
पुनि आवै यहि भाय, ज्यों मेंढक पक्षी फिरै ॥

चौपाई ॥

रहि रहि पुनि चलती हलकाने । नाडी प्राणनाशनी जानै ॥
अतीक्षीण बल होय वसीत । सो जीवति जो कर निरजीत ॥
पित्त दग्ध जो केहुके होवै । ताते नाडी वह थिर जोवै ॥
देह महाबल तनु जो घटै । कंपैरोम क्षुधा घणि मिटै ॥
वात दग्धकी नाडी चंचल । रक्त विकारत होवै अंचल ॥
इनपर देखो नाडी सारी । पेखि वैद्य तुम करो विचारी ॥

दोहा—ज्वरकै कोपै धामनी, वेग उष्णता होय ।

काम क्रोध पुनि वेगसे, चिंता क्षीणा सोय ॥
मंदगती चपली चलै, धातु क्षीण होजात ।
अंश पूर्णते उष्णता, भारी भइ दिन रात ॥
दीपक अग्निरु लघु बहै, पुनि वेगवती भेद ।
गुरु माहीं थिरता हवे, बलवंती उनमेद ॥
मंद मद पुनि शीतता, व्याकुल थिरता धाम ।
वदति धमनीसुषमना, चलै क्षीण यह नाम ॥

सोरठा–पंचभेद यह जानि, लक्षण नाडीके कहे ॥
समक्ष वात जिय जानि,पीछे औषधि कीजिये ॥
व्याकुल मल पित देन,भार खेद मल शीलता ॥
शीतल सुखमें लेन, चिहुठ कुसुममें धीरता ॥
भोजन मिष्ट करेन, ताते सेवै पित्तमें ॥
अथवा गान धरेन, पितलक्षण जिसकी थकी ॥
रक्त धातु पुनि जाय, पित्त पिंगु कफ वायु हो ॥
ताको पित घर थाय, वायूसी नाडी चलै ॥

चौपाई ।

काम क्रोध पुनि होय स्वक्रीडा । वायु थकी पुनि होवे पीडा ॥
मज्ञसमय तनु होवै क्षीण । तनु जो क्षीण रोग होय क्षीण ॥
पित्तनाडी येता उत्पात । स्वरांग मन्दाग्नि जात ॥
तीक्ष्ण खार श्वास पुनि थाय । धातु क्षीणहो निश्चय जाय ॥
कण्ठ शोष अधर पुनि सूखे । इन्द्रिय थकित देह सग दूखे ॥

धन्वन्तरि समबंधहि मानै । इत्यादिक लक्षण ये जानै ॥

दोहा—सनिसनि जो नाड़ी चलै, वकरतही पुनि बीत ।
हृदय धवल तनु शीतता, क्षीणकरैगे भीत ॥
क्रोध उदेगह कामकर, थिर चिन्ता मदक्षीन ।
मन्दअग्नि मंदैचलै, बाय झिकोला दीन ॥
रोधरूप परमानको, क्रोध शीत बिच नैन ।
देहथकै अरु बलघटै, भोजनकी रुचिहैन ॥

अथ कफनाड़ीलक्षण—चौपाई ।

हससरखी एकैगति होड़े । तब नाड़ी कफके घर मीड़े ॥
भारीहोय शीतना राखै । थिरथिर बहती मृत्यू भाखै ॥
तन उद्वेग वृद्धिकी नारी । सुखराखै कफ नाड़ी प्यारी ॥
सन्निपातको भेद लखावै । सो नाड़ी कफके घर जावै ॥
ज्योतिःहीन श्वेत जबहोई । ताकर भेद कहै सब कोई ॥
चक्र समान नेत्र जे जोवै । कफ कोपै यह लक्षण होवै ॥

दोहा—रहि रहि नाड़ी जो चलै, सो वह प्राण हराय ।
पुनः क्षीण शीतल चलै, सो यमघर ले जाय ॥

अथ त्रिदोषनाडीलक्षण ।

दोहा—तीतर लवा बटेरसी, इनहीगति जे जाय ।
सो नाड़ी त्रयदोपकी, रोग तुलक्षय जाय ॥
तंद्रा निद्रा मोहवश, व्याकुलतामें आय ।
भग्ननेत्र अरु अरुण पुनि, रक्त वर्ण होजाय ॥
नेत्रदोष बलि जानिकै, वह त्रिदोष पहिचान ।

छष्णनाडि पुनितापकी,रुधिर अधिक सुखमान ॥
गरुई सामग्री धसी, तामें दिये बताय।
परिहासुखकी छविभई,छष्ण फिरै पुनि भाय ॥
विकल नैन हो देहमें, सुख नहिं पावै सोय।
भैनउतप्फुल बाय था, औ उन्माद जु होय ॥

अथ पित्तलक्षण–चौपाई।

ढ़ैपित्त दाह अतिकरे। सूखैं अधर मूत्र बहुसरे ॥
य पित्त मुख हलद समान। शीत उपाय किये सुख जान ॥
ड़ीचलै वेगवत जोई। सूखैजीभ कठिनसी होई ॥
तलवस्तु माँगि मुखलेइ। कोऊ आन मिष्ट मुखदेइ ॥
यों जलहीन मीनतरफरै। पित्तकोप ये लक्षण करै ॥

अथ वायुलक्षण–चौपाई।

हीं वायुके लक्षण ऐसे। कहता भगत वैद्यरह जैसे ॥
वै वैद्य मत एकै जानो। यहीविचार सत्यकरि मानो ॥
खा अंग होय बहुत्रास। झूठोमुख राखै विश्वास ॥
रीएक चुपको नहिं रहै। चूकी बात मुखहिते कहै ॥
भमराखै चित निशि दिन रोवै। दुखैअंग पीड़ा नित होवै ॥

दोहा–हड़पीड़ा अरु उदर दुख, प्रगट मचेसी होय।
तैल बराबर मूत्रहै, वायुकोपहै सोय ॥

अथ कफलक्षण–चौपाई।

सुनो मीत कफलक्षण जोई। श्वेत वर्ण मुख शुद्ध न होई ॥
लघु गरीष्ठ भोजन नहिं पंचै। चलैपेट अति देहो तंचै ॥

रामनाम लै करै इलाज। जीवे रोगी सिद्धि सुकाज।
आदि गुरूको मनमें राखै। तब रोगीको औषध भाखै।

अथ मूत्रपरीक्षा–चौपाई।

मूत्रपरीक्षा कहौं बखान। जिससे रोग होय पहिंचान॥
रात्रि अन्त दोघडी रहाय। तब रोगीको लेय जगाय॥
काँचपात्रमें मूत्र धरावे। विकसत सूर्य्य परीक्षा लावे॥
वातरोग अधिके जो होई। तेकर मूत्र सफेद जोई॥
झागदार हो कफका कहिये। पित्तमें लाल मूत हो सहिये॥
वात पित्त कफ तीनों होय। रंग अनेक मूत्रमें जोय॥
वात पित्त कफ जाके होई। नीला पीला लौहे होई॥
सन्निपात जो होवे रोग। मूतै कृष्णवर्ण नहिं सोग॥

दोहा–करौ परीक्षा मूत्रकर, सुनहू वैद्य सुजान।
तेलमूत्रमें डारिये, रोग होय पहिचान॥

चौपाई।

फैलै तेल मूत्रमें जबै। कहु असाध्य रोगीको तबै॥
वातकोपमें मूते नीला। पित्तकोपमें होवे पीला॥
मूत्र तेल सम जाकर होई। कफ क... ॥
गर्मह लाल मूत्र हो ताके। अन्न न पाक ॥
धूमा लिहे मूत्र अधिकाय। वातपित्त ॥
मूत्र रुधिर सम जाके होई। पित्त
वात कफज्वर मूत्र सफेद। अनेक रंग
मूत्र पात्रमें तेल डराई। रोग दोप

दोहा—मूत्र पात्रको लायकर, तेल बूंद इकडार।
पूर्व दिशामें जायतो, घटै रोग तत्काल॥

चौपाई।

दक्षिणदिशा बुन्द बढिजाय। ता रोगीको ज्वर अधिकाय॥
उत्तरदिशा बुन्द बढ़ि जोई। जीवै रोगी निश्चय सोई॥
पश्चिम दिशा बुन्द बढ़िजावै। तौ रोगीको सुख उपजावै॥
जो चलनी सम छिद्र देखाई। प्रेत दोष तो देहु बताई॥
तेल होय नरके आकार। झार फूकसे रोग उतार॥

दोहा—मूत्रपरीक्षा भेद अरु, लक्षण विविध प्रकार।
रोग जानहू यहींसे, कहुँ मैं वैद्यकसार॥
वैद्यक विद्यापढ़े जो, निजगुरुकेरेपास।
क्षणहु एक भूलै नहीं, कहै भगवानदास॥

अथ मृगीकी दवा—चौपाई।

रसगन्धक कजली करलीजे। भृंगराज रस खरलक दीजै॥
कर गोली गुंजा परमान। वर्ष एक लग खाय सुजान॥
एकप्रात इक संध्या काल। सेवे रोगी मृगी बहु टाल॥
तुवर वस्तु सबही परिहरी। दही मांसको अशन नकरी॥
अहितवस्तु सबको तजिदेय। कहै वैद्य रोगी सुन लेय॥

पुनः मृगीकी दवा।

जा मशानसे खोपरि लावै। कूटि छानकर चूनबनावै॥
घृत आनि भावै नहिं सोई। करैयुक्ति जानै नहिं कोई॥

घासे तीन रोज जो खावे । रोगीसेवे मिरगी जावे ॥
सुनहु पुण्यकरै जो कोई । मृगी रोग ताको ना होई ॥

अथ वैद्यभेद ।

दोहा—वैद्यकविद्या आदिसे, पढ़ सीखै मनलाय ।
आदि अन्त भूलै नहीं, देवै भेद बताय ॥
भगवानदास करजोरिकै, विनतीकर मनलाय ॥
सुनहू वैद्य सुजान सब, लीजे चूक बनाय ॥

अथ मलपरीक्षा ।

वातकोपसे मल टूटाहुआ अरु झागवाला व रूक्ष व धूम्रवर्ण होवैहै । और वात कफमें मल पीलारंगका होवे है । और वातपित्तकोपसे मल बँधाहुआ और टूटाहुआ होयहै । और पीला व काला होताहै और पित्तकफकोपसे मल श्याम व कुछएक गीला व चिकना होवेहै और त्रिदोषसे मल काला व त्रुटित व पीला व बँधाहुआ होवे है । जो मल दुर्गंधयुक्त व शिथिल होवे तो अजीर्ण रोग जानो और क्षयी रोगमें श्याममल होवे आमवातमें मल पीला दस्तसमय कटिमें पीड़ा होवे अतिकृष्ण व अतिसफेद व अतिपीत व अतिलाल अतिगर्म ऐसा मल जिस रोगीके आवे तो मृत्युहोय वातमें मल काला पित्तमें पीला कफमें लाल अरु सफेद मिला[illegible] होवे है वात पित्त व वात कफमें मल आमरूप होवै है[illegible] मिश्रित रंग होवे है अजीर्ण में मल कच्चा हो[illegible] चाहिये कि मलकी परीक्षा अच्छीतर[illegible]

लकी परीक्षासे रोगीका रोग मालूम होजाताहै तब
गीकी विधिसे परीक्षा करै तो यश होताहै ॥

अथ जिह्वाकी परीक्षा।

वात अधिकमें जीभ शीतल व खरखरी स्फुटित होवे है
कोपमें लाल व काली होवेहै और कफकोपमें सफेद व
गी होवेहै और सन्निपातमें काली व कांटेवाली व
ी, दोदोषके कोपमें मिश्रित रूपा जानो तीनदोषके
पसे एकदम काली जानो ॥

अथ शब्दपरीक्षा।

मोटे स्वरसे बोले तो कफदोष जानो, स्पष्ट बोले तो पित्त
ष जानो, पूर्वोक्त दोनों तरह रहित बोले तो वातकोपजानो।

अथ स्पर्शपरीक्षा।

पित्तकोपमें गर्मशरीर जानो, वातकोपमें शीतल शरीर
ानो, कफकोपमें चिकना शरीर जानो, सबही चिह्न मिलैं तो
निपात जानो, कफरोगवाला गीला सम रहैहै ॥

अथ नेत्रपरीक्षा।

नेत्र रूक्ष धूम्रवर्ण व किंचित् लाल गोलकमें प्रविष्ट गये-
ाला मनुष्यकी तरह देखना ऐसे लक्षण वातकोपकेहैं और
पित्तसे नेत्र हल्दीके समान पीले व लाल व हरे व दीपकको
न देखसकें दाहसहित ऐसे नेत्र पित्तकोपसे कहेहैं और चिकने
व जलयुक्त व सफेदवर्ण व ज्योतिरहित कफयुक्त ऐसे नेत्र
कफकोपसे होवैहैं दो २ दोष कोपसे दो दो दोषके नेत्र

होवे है त्रिदोष कोपसे त्रिदोष लक्षण वाले नेत्र जा
और त्रिदोष दूषित जो नेत्रहैं सो गोलकमें गडे हु
व जलसे भरेहुये व बराबरसे खुले हुये ऐसे नेत्र जि
रोगीके हों तिसको सन्निपात ग्रस्त जानो, जिस रोगीक
एकनेत्र भयानक हो दूसरा मिचा रहै तिसकी तीनदिन
मृत्युहो और जिसके नेत्र लाल व कालेरंगके हों भयान
देखे तो अवश्य मरे और जिसके नेत्र ज्योति रहित ह
कछुक कालेरंगहों तिसकी मृत्यु होय वैद्यजन अच्छी तरह
नेत्रपरीक्षा करैं ।

अथ मुखपरीक्षा ।

वातकोपसे मुख मीठा रहै है पित्तकोपमें मुख कडुवा रहैहै
कफदोषमें मुख मीठा व खट्टा रहैहै त्रिदोषमें मुख सर्वरस
करके युक्त रहैहै और अजीर्णमें मुख घृतसे पूर्णके सम रहैहै
अग्निमंदमें मुखका स्वाद कसेला रहैहै ॥

अथ स्वरूपपरीक्षा ।

वायु सब दोषोंमें प्रबलहै, कारण समर्थहोने
होनेसे व बलवान् होनेसे व अन्यको
होनेसे स्वतंत्रसे व व्याधिकारकसे इ
और बहुत करके पवनयुक्त मनुष्य
ताका वैरी चलायमान बुद्धिवाला
मित्रदृष्टि व ज्यादा प्रबल करनेव

रूप है पित्तकोपसे तृषा अरु भूंख ज्यादा लगैहै सफे-
रीर व गर्म व हाथ पाँव गर्म व मुख तांबासम शूरवीर
भेमानीकी सम पीले केश होवैहैं अल्प रोमावली यह
ोपके लक्षणहैं और कफ चंद्र रूपहैं इसवास्ते कफ
भपने शरीरका कपड़ा चिकना देखे ॥

अथ आयुविचार ।

ा आदिमें आयुपरीक्षा करै मनुष्यकी और जो आयु
हो तो चिकित्सा सफल होय और जो रोगी की आयु
ो दवा करे नहीं तो रोगीको त्यागदेवै ॥

अथ नक्षत्रके वृक्षका फल ।

अश्विनीका वृक्ष कुचिलाहै १, भरणीका वृक्ष आमला
कृत्तिकाका वृक्ष गूलरहै ३, रोहिणीका वृक्ष जामुनहै
ृगशिराका वृक्ष खैरहै ५, आर्द्राका वृक्ष अगरहै ६, पुन-
ा वृक्ष बाँसहै ७, पुष्यका वृक्ष पीपलहै ८, आश्लेषाका
चमेलीहै ९, मघाका वृक्ष बडहै १०, पूर्वाफाल्गु-
वृक्ष ढाकहै ११, उत्तराफाल्गुनीका वृक्ष पिलखनहै
हस्तका वृक्ष जाईहै १३, चित्राका वृक्ष बेलपत्रहै १४,
ीका वृक्ष अर्जुनहै १५, विशाखाका वृक्ष बब्बुलहै
अनुराधाका वृक्ष नागकेशरहै १७, ज्येष्ठाका वृक्ष शंभ-
१८, मूलका वृक्ष शालवृक्षहै १९, पूर्वाषाढाका वृक्ष
२०, उत्तराषाढाका वृक्ष पनसहै २१, श्रवणका वृक्ष
कहै २२, धनिष्ठाका वृक्ष जांठीहै २३, शतभिषाका

अथ वमनकी दूसरी द्रव्य।

नीलाथोथा फिटकरी दोनों एकमें मिलाय निंबूरस डारिके रलकरि गोला बनाय आधामन गोबरीमें फूँकिदेवै, शीतल नेपर मिश्रीके साथ खावै ऊपरसे गरम पानी पीवे तो उलटी य बहुत उत्तम कंठ उदर साफ होजावे और दो दो तोले मिमें फूँके खानेको रोगीका अग्निबल विचारके देवे।

अथ वमनकी तीसरी द्रव्य।

शुद्ध नीलाथोथा, मैनफल, फिटकरी, तीनों एकमें मिलाके वै ऊपरसे गरम पानी पीवे तो बहुत उत्तम वमन होय॥

अथ जुलाव विधि।

जमालगोटा छिलका रहित एक तोला लेकर भैंसाके गोब- में दो घंटा चुरावे फिर धोयके जीभी निकालिके इमलीके समें चुरावे फिर गायके दूधमें चुरावे फिर तीन तोला भुना आ चना छिलका रहित एकमें मिलायके निंबूरस डारिके ल कारि मटर बराबर गोली बनाय अग्निबल विचारके गरम नीके साथ खावै तो बहुत उत्तम जुलाव होय पथ्य घी खिचडी खावै मगर शीतल पानीसे बचारहै॥

अथ दूसरा जुलाव।

शुद्ध जमालगोटा १ तोला रेवलचीनी १ तोला सेहुँडका
ध १ [illegible] दही डारिके तीन दिन खरल करे
फेर [illegible] बांधिके एक गोली थोड़ा गरम
॥ [illegible] त उत्तम होय पथ्य मूँगकी

पीवे तो लपटज्वरको दाहको देहकी चिनिगवायको दूर करै भूंखलागै ॥

अथ शर्बत जीराका कलेजेकी गरमीको ९.

जीरा १ तोला मिरच १मासा मिश्री ५मासे १पाव पानीमें पीसिके पीवै तौ कलेजेकी गरमी देहकी जलन हाथ पाँवकी जलन दूर होय उलटी बन्द होय और मन प्रसन्नहोय ॥

अथ शर्बत बबूनाका वातज्वरको १०.

बबूना १ तोला वच १ मासा मिरच १ मासा लेकर आध पाव पानीमें पीसि पीवै तो वातज्वर दूर होय और अजवायन सोंठिका चूर्ण करि शरीरपर मालिश करै तो शरीरका शितंग और वातकी पीडा सब दूर होय ॥

अथ शर्बत सोंठिका कफज्वरको ११.

सोंठि ५ टंक तीन पाव पानीमें शामको भिगो दे वे सवेरे म-लिके छानलेवै मिश्री डारिके पीवै तो कफज्वरको नाश करै और कफका संग्रहणीरोग दूर होय ॥

अथ शर्बत हर्रका कफज्वरको १२.

हर्रका छिलका ५ टंक तीनपाव पानीमें शामको भिगोय देवै सवेरे मलिके कपडछान करिके रुईका खार १ मासा सेमरका गोंद १ मासा डारिके पीवै तो कफज्वर, पित्तज्वर दूर होयँ भूंख लागै कुछ दिन पीवै तो बुद्धि होय ॥

अथ शर्बत बहेडेका सर्वज्वरको १३.

बहेड़ेका छिलका १ टंक तीन पाव,

सवेरे मसलिके कपड़छान करिके कूट १ मासा चन्दन
मासा मिरच १ मासा पीसि छानिके मिलाके पीवै तो कफ-
र पित्तज्वर और वातज्वरको नाशै और छातीका दर्द शूल
रका दर्द शिरका दर्द और खांसी दूर होय ॥

अथ शर्वत आँवलोका जलनवायको १४

आँवला १० टंक तीनि पाव पानीमें भिगोय देवै सवेरे
को छानि लेवै फिर वायविडंग २ मासे दालचीनी १ मासा
को पीसि छानिके उसी पानीमें मिलायके पीवै तो जलन
को दूर करै, तृषा और हाथ पाँवके जलन तथा हडफूट-
[नाश करे ॥

अथ शर्वत नागरपानका उन्मादरोगको १५.

बंगला नागरपान १ तोला लेवै मिरच १ मासा आधपाव
मिं पीसि पीवै तो जलनवाय दूर होय और उन्मादरोगको
श करै शरीर पुष्ट होय ॥

अथ शर्वत खीराके बीजका चिलिक प्रमेहको १६.

खीराका बीज २ तोले इलायची ५ मासे मिरच २ मासे
ली १ मासा सबको १ पाव पानीमें पीसि पीवै तो चिलिक
हरोग नाशै और चिलिकवाय वा मूत्रकृच्छ्र दूर होय
को बढावे शरीर पुष्ट होय ॥

अथ शर्वत ककरीके बीजका मूर्च्छाको १७.

ककरीके बीज १ तोला तरबूजके बीज १ तोला पीपरि ६
। इन सबको आधसेर पानीमें पीसि छानिके पीवै तो जिस

गीको मूर्च्छा आवै उसकी मूर्च्छा दूर होय, शरीरकी हड़फू-
न, शिरके दर्दको नाशै तथा बल वीर्य्यको बढावै.

अथ शर्बत कदूके बीजका संग्रहणीको १८.

कदूका बीज ६ मासे खीराका बीज १ तोला कोहडाका
बीज १ तोला मिरच १ मासा पीपरि १ मासा इन सबको १
पाव पानीमें पीसिके पीवै तो संग्रहणी और सर्वज्वरको नाशै,
नाभीका शूल और नासारोग दूर होय ॥

अथ शर्बत कमलगट्टाका फोरीफोराको १९.

कमलगट्टा ४ तोले लेकर उसका मगज निकाल लेवै और
मिर्च २ मासे मिलाके १ पाव पानीमें पीसि पीवै तो जो देहमें
फोरी फोरा होयँ तो सब दूर होयँ ॥

अथ शर्बत दहीका पित्तको २०.

गायका दही १ सेर जीरा २ तोले १ सेर पानीमें मथिके
तीनि भाग बनावै एकभाग सबेरे एकभाग बारहवजे दिनको
एकभाग शामको पीवै तौ पित्तरोगको एकही दिनमें नाश करै
और शरीरकी गरमी दूर होय ॥

अथ शर्बत गुडूचीका शीतज्वरको २१.

गुडूची १ तोला चिरायता १ टंक पीपर २ मासे मिरच
१ मासा सबको १ पाव पानीमें पीसिके
पित्तज्वरको नाशै और अज
शरीरपर मालिश करे तो
ज्वरको नाशै शरीर

अथ शर्बत वचका शूलवायको २२.

च खुरासानी १ टंक अजवायन १ टंक कायफल क मिरच १ मासा इन सबको १ पाव पानीमें पीसिके रोज पीवे तो शूल अफरा अंगवाय दोनों अंगवाय रीघ- चिनंगवाय चमकवाय इन सबको नाशै (पथ्य) घी खावै ॥

अथ शर्बत लौंगडीका अर्धंगवायको २३.

लौंगडीका पत्ता ५ टंक मिर्चे १ मासेको १ पाव में पीसि पीवै तो अर्धंगझोला और अर्धंगवायको नाशै दिनमें गठियावाय दूर होय खांसी और पेटका शूल होय ॥

अथ शर्बत संभालूका कमलवायको २४.

संभालूका पत्ता ५ टंक मिरच १ मासा पीपरि १ मासा ठे १ मासा इन सबको १ पाव पानीमें पीसिके पीवै तो लवाय जावै और शरीरका बाय और शूल नाश होय ॥

अथ शर्बत एरंडीका गठियाको २५.

एरंडीका बीज १ मासा मिरच २ मासे लेकर १ पाव नीमें पीसके पीवे तो जिसका हाथ पांव चिंगुरि गया होय और शरीरकी सूजन दूर होय और गठियावाय दूर होय हा मीठा पथ्य राखै ॥

अथ शर्बत गुलखैरका क्षीणधातुको २६.

गुलखैरका फूल ५ टंक मिरच १ मासा पावभर पानीमें

पीसिके पीवै तो जो पेशाबद्वारा धातु जाती होय तो बन्द होय पेशाब खुले चिलकजाय ॥

अथ शर्बत बोखलीका पित्तज्वरको २७.

बौखली ५ टंक मिरच १ मासा आनसेर पानीमें शामको भिगोदेवे सबेरे मसलिके २ मासे मिश्री मिलाके पीवै तो पित्त-ज्वर दूर होय धातु बढ़े शरीर पुष्ट होय बन्दपेशाब खुलै और हाड़का ज्वर और शिरका दर्द दूरहोय ॥

अथ शर्बत अनारका छाती जलनको २८.

अनारके दाना १ तोला मिर्च दो मासेको १ पाव पानीमें पीसि पीवै तो पित्तज्वर और छातीका जलन दूर होय उलटी बन्द होय भूँख-लागै ॥

अथ शर्बत दादोरीका शीतज्वरको २९.

दादोरी १ तोला सोंठि ६ मासे मिरच ६ मासे आधसेर पानीमें पीसि पीवै तो शीतज्वर और आमवात रोगको दूर करै और चिलगबाय मूत्रकृच्छ्र शूल सब दूर होय ॥

अथ शर्बत शतावरिका सुन्नबायको ३०.

शतावरि ५ टंक चिरायता १ मासा पीपरी १ मासा सोंठि १ मासा शामको १ पाव पानीमें भिगोयदेवै सबेरे मसलिके छानि लेवै तब पीवै तो सुन्नबाय चमकबाय माथेका शूल कम-रका दर्द स्त्रीकी प्रसूत ये सब दूरहोयँ भूँख लागै ॥

अथ शर्बत इनाईका [illegible]

इनाई ५ टंक मिरच २ मासे [illegible]

अथ शर्बत मूलीका अजीर्णको ७९.

मूलीकी जड़ २ तोले पाँचों नमक १ तोला मिरच २ मासे आधपाव पानीमें पीसके पीवे तौ सब तरहके अजीर्णको नाशै ॥

अथ शर्बत अफीमका संग्रहणीको ८०.

अफीम १ मासा अदरख ६ मासे हिंगु आधा मासा ६ तोले पानीमें पीवे तो संग्रहणीरोग दूर होय ॥

अथ मुन्जिश ।

उन्नाव लसोढा मकोय गुलाबका फूल बनफ्शा सौंफ खतमी खबाजी नीलोफर हंसपदी मुनक्का अंजीर हर्रै छोटी, कासनीके बीज ककरीके बीज मुलहटी खीराके बीज मिश्री सनायपत्ती ये सब दवा तीन २ मासे लेवे थोड़ा कचराय लेवै तब डेढ़ सेर पानीमें शामको भिगोय देवै सवेरे अग्निपर रखके चुरावै जब आधसेर रहै तब छानिके सवेरे पीवे तो यह मुन्ज़िश मलको पकाताहै जुलाबको उतारताहै तीनों दोषोंको निकालताहै शरीरको सुधारताहै जिसका पेट कठिन होय उस रोगीको मुन्ज़िश पियावे सात दिन नौ दिन गेरह दिनतक तो दोष निकलताहै मुन्ज़िश सर्वरोगको हितहै ॥

अथ दूसरी मुन्ज़िश ।

सनायपत्ती १ तोला गुलाबके फूल ६ मासे त्रिफला ६ मासे मुलहठी ३ मासे मकोय ३ मासे हंसपदी ३ मासे बनफशा ३ मासे सौंफ ३ मासे कासनीबीज ३ मासे ककरी

का बीज ३ मासे मिश्री ३ मासे अंजीर ३ मासे मुनक्क ३ मासे उन्नाव ३ मासे लसोढ़ा ३ मासे इन सब दवाइयोंको सवासेर पानीमें शामको भिगोयदेवै सवेरे चुरवै जब आधासेर शेष रहै तब पीवै यहभी मुनृजिश प्रथमके मुनृजिशके समान गुणदायक है इसका गुण बहुत है परन्तु प्रथमकी विधिपर पीवे ॥

अथ तीसरी मुनृजिश ।

त्रिफला ९ मासे सौंफ ६ मासे सनायपत्ती १८ मासे गुलाबफूल ६ मासे मुलहठी ६ मासे मुनक्का ६ मासे हंसपदी ३ मासे ककरी–खीराके बीज ६ मासे बनफूशा ३ मासे मिश्री ६ मासे सबको सवासेर पानीमें चुरावै जब आधसेर बाकी रहै तब छानके पीवै यह मुनृजिश दो जुलाब साफ उतारे खूनको साफ करै पेटकी गाँठिको नरम करै रोग दूर करै सब रोगोंपर देवे जिसके जुलाब नहीं होय से इसको नौ दिन पीवै ॥

अथ मअजून सब रोगपर।

उसवा ९ तोले सौंफ ३ तोले बिसपैज ३ तोले सहत्रा तोले लालचन्दन २ तोले सफेद चन्दन १ तोला सनायपत्ती तोले मिश्री ७ तोले सबको कूटि कपड़ छान करिकै डेढ़से मधुमें मिलाके शामको १ तोला हररोज खावै तो मलको साप उतारै भूख लगावे शरीरके बिगड़े खूनको साफ करै और नव खून पैदा करै साना गठियाको दूरकरै देहको कुव्वत लावे इं सब रोगोंपर देवै ॥

अथ मअजून उसवा।

उसवा मगरबी सात तोले सनायपत्ती पाँच तोले सौंप ढाई तोले बिसपैज ढाई तोले सहतरा ढाई तोले चन्दन लाल दो तोले भांग एकतोला मिश्री सात तोले सबको कूटि कपड़ छान करके मधुमें मिलाके खावै तो उपदंश और सानाको नाशै भूखको लगावे शरीरको पुष्ट करै खूनको साफ करै अजीर्णको दूरकरै कलेजेको ताकत देवै अग्निबलको बढ़ावे ॥

अथ मअजून उसवा मगरबी।

१ उसवा मगरबी १ सेर भाग ५ तोले पानी ४ सेरमें शामको भिगोयदेवै सबेरे अग्निपर रखिकै पकावै जब एक सेर बाकी रहै तब डेढ सेर मिश्रीकी चासनी करके लाल चन्दन १ तोला सफेद चन्दन १ तोला सौंफ ३ तोले बिसपैज ३ तोले सहतरा ३ तोले सनायपत्ती १२

तोले इलायची ३ तोले शहद १ सेर सबको चूर्ण कर चासनीमें मिलायके बल विचारिके खावे तो सर्व रोगोंको नाश करै बल और शरीरको बढ़ावै भूंखको लगावै गठिया सानाको दूरकरै शरीरके बिगड़े खूनको दूरकर नवाखून बढ़ावै ॥

अथ मअजूम छोटी हड़का ।

छोटी हरैं ७ तोले और सौंफ ३ तोले लेकर एरंडीके तेलमें भूँजिके चूर्ण करिके उसी चूर्णके बराबर सानायकी पत्तीका चूर्ण मिलावे पश्चात् डेढ़सेर शहद मिलाके खावे तो उदररोगको दूर करै भूंखको लगावै बिगड़े कोठाको सुधारै मल मूत्रको उतारै कब्जियतको दूरकरै ॥

अथ मअजूम पुष्टिकरण ।

पीपली १ तोला अजवाइन खुरासानी १ तोला अकरकरा १ तोला दालचीनी १ तोला केसर १ तोला जावित्री १ तोला रूमीमस्तगी १ तोला मुसली दोनों २ तोले इलायची २ तोले सालममिश्री २ तोले बदाम १ तोला कबाबचीनी १ तोला अफीम २ तोले इन सबको कूटि कपड़छान करिके मिश्री १ सेर मधु १ सेरकी चासनी करिके उसीमें सब [illegible] मिलायके अग्निबल विचारिके ६ मासे [illegible] सबेरे खावे ऊपरसे आधासेर दूध पीवै [illegible] करै अग्निबलको बढ़ावै स्त्रीके प्रसंगमें [illegible] वीर्य्य बंधेज होय भूंख लागे ॥

अथ माजूस नपुंसकपना पर।

दालचीनी ६ मासे जावित्री ६ मासे जायफल ६ मासे लौंग ६ मासे इलायची ६ मासे कस्तूरी २ मासे जेठीमधु ६ मासे केसर १ मासा सालममिश्री ६ मासे सतावरी तिखुरी ३ तोले केवाचके बीज ६ मासे गोखुरू ३ तोले वंशलोचन ६ मासे भीमसेनी कपूर १ मासा बदाम २ तोले भांग ५ तोले गायका घी ९ तोले दूध ३ सेर मिश्री ३ सेर मधु १४ तोले सब दवाको कूटि कपडछान करिके दूध मिश्री और मधुकी चासनी करिके पहिलेकी सब दवा चासनीमें मिलाके अग्निबल विचारिकै खावै तो शरीरको पुष्ट करै नपुंसकपना दूर करै बल वीर्य्यको बढ़ावै कब्जियत दूर होय भूंखको लगावै ॥

अथ माजूम राहुलसोमियानी।

दालचीनी ८ मासे अगर ४ मासे तगर ८ मासे इन्द्रयव ८ मासे लौंग ४ मासे कुलंजन ४ तोले बहिमन सफेद ४ तोले बहिमन लाल ४ तोले सौंफ रूमी ४ मासे सेमरकी छाल ८ मासे सकाकुल मिश्री ८० मासे तवाखीर ८ मासे कतीरा गोंद ८ मासे जायफल ८ मासे बनफशा ८ मासे बदाम ८ मासे सोंठि १६ मासे मधु ४४० तोले सब दवाको कूटि कपड़छान करिके मधुमें मिलायके ६ मासे खावै तो तमाम बदनको खुश करै और उदरको ताकत देताहै दशो इन्द्रियोंको कुव्वत देताहै नपुंसकपनेको दूर करताहै शरीरको पुष्ट

अथ पित्त वायकी दवा ।

गुरुच चिरैता आंवरा, दाख मुनक्का आनि ।
काढा करके पीजिये, पित्तवाय हो हानि ॥

अथ वायपित्तकी दवा ।

उज्ज्वलजीरा भूँजिकै, चूरण लेय बनाय ।
गुडमिलाय भोजनकरै, वायपित्त नशिजाय ॥

अथ पित्तवायज्वरकी दवा ।

चौ०—भटकटाइगुरुचीलेआवै । बरियाराभारंगिमिलावै ॥
लायकोरैयाकाथ बनावै । पीवै पित्तवायज्वरजावै ॥

अथ शीतपित्तज्वरकी दवा ।

दोहा—जेठीमधु औ बरियरा, त्रिफलाकाथ कराय ।
सहतमेलिकैपीजिये, शीत पित्तज्वर जाय ॥

अथ सन्निपातज्वरकी दवा ।

चौ०—त्रिफला लेके काथ बनावै। गायघीउ इकटंक मिलावै ।
प्रात समय जो पीवै कोई । सन्निपात तुरतै सो खोई ॥

अथ सन्निपातज्वरकी दूसरी दवा ।

लाय मुनक्का काथ बनावै । पीपरि मासा दोय मिलावै ॥
जो रोगी पीवै उठि भोरे । रहै न

अथ कर्णफू ।

दोहा—सैंधोमिर्च अरु पी
जलहि नास जो

वै तो तिजरा ज्वर विषमज्वर जाडेका ज्वर उन्मादज्वर यें म दूर होयँ भूख लागै ॥

अथ शर्वत वाईसुरठिका विषमज्वरको ३२.

घाईसुरठि १ तोला मिरच १ मासा १ पाव पानीमें पीसिकें वै तो विषमज्वर अंतराज्वर दूर होय और जो पेशाव कडक ाय तो वह दूर होय और पेटका शूल दूर होय खट्टे मीठेका रहेज रक्खै ॥

अथ शर्वत गुलखुलका प्रमेहरोगको ३३.

गुलखुलका पंचांग ५ टंक मिरच १ मासा मिश्री ५ मासे नको आधसेर पानीमें शामको भिगो देवे सवेरे छानिके पीवै ो असाध्य प्रमेह चिलिक प्रमेह इत्यादिक सर्व प्रकारके प्रमेह दूर होयँ शरीरको पुष्टकरै आंखोंकी ज्योतिको बढावै भूंखको लगावै पथ्य रोटी, घी और परहेज रक्खै ॥

अथ शर्वत निंबूका हाथ पाँवके जलनको ३४.

कागज़ी निंबूका रस आधपाव मिश्री १ तोला मिरच २ मासेको पावभर पानीमें मिलाके पीवै तो हाथ पांवका जलन और पित्तज्वर दूर होय शिरका दर्द तथा अरुचिको दूर करै भूंख लगावै. पथ्य मूंग चावल ॥

अथ शर्वत खुरासानी अजवायनका भ्रमवायको ३५.

अजवायन ६ मासे वच ६ मासे मिरच २ मासे मिश्री ५ मासे इन सबको पीसिके पीवै तो भ्रमणवाय हौलदिल

दूर होय और पेटका दर्द छातीका दर्द इन सबको दूर करै खट्टे मीठेका परहेजहै ॥

अथ शर्बत नीमका बिगड़े खूनको ३६.

नीमकी छाल १० टंक खुरासानी वच १ मासा मिरच २ मासे इनको आधपाव पानीमें पीसिके पीवै तो बिगड़े खूनको दूर करै दाद ददोरा फोड़ा फुंसी इत्यादिको दूर करै स्त्री पीवै तो बालकोंको रोग नहीं होवै और इस दवापर खट्टे मीठेका परहेज रक्खै नमक खावै नहीं ॥

अथ शर्बत ककहीका प्रमेहरोगको ३७.

ककहीका पत्ता ३ तोले मिर्च १ मासा मिश्री १ तोला सबको आधसेर पानीमें पीसि पीवै तो प्रमेहरोग दूर होय चिलक पेशाबको दूर करै थोड़ा निंबूरस डारिके पीवै तो सुजाक दूर होय और इन्द्रियका जलन जाय ॥

अथ शर्बत यशवंतीका प्रमेहको ३८.

यशवंतीके पत्ते ४ तोले मिरच २ मासे मिश्री १ तोला पावभर पानीमें पीसिके पीवै तो सुजाकको, प्रमेहको और इन्द्रियके जलनको दूर करै शरीरके जलनको दूर करै पेशाब बिगड़ेको अच्छा करै ॥ ३९ ॥

अच्छा होय और प्रमेहरोग सुजाक इन्द्रियके चिलक तथा सर्व-ज्वरको दूर करै ॥

अथ शर्बत महुआका प्रमेहको ॥ ४० ॥

महुआकी छाल ६ मासे मिर्च आधा मासा आधपाव पानीमें पीसिके पीवै तो असाध्य प्रमेहरोग दूर होय ॥

अथ शर्वत बकायनका बवासीरको ॥ ४१ ॥

बकाइनकी छाल ५ टंक मूलीके बीज २ मासे आध-पाव पानीमें पीसिके छानलेवै मिश्री डारिके पीवै तो खूनी बवासीर संग्रहणी हाथपाँवका जलन शिरका दर्द गुल्मरोग और प्लीहारोग इन सबको दूर करै खट्टे मीठेका परेहज रक्खै ॥

अथ शर्बत हुरहुरका बवासीरको ४२.

हुरहुरके पत्ता ५ टंक मिर्च १ मासा आधपाव पानीमें पीसिके पीवै तो बवासीररोग जड़से जाय और तिल्ली बरवट बायगोलाको नाशै ॥

अथ शर्बत कुकुरौंधाका पुष्टिको ४३.

कुकुरौंधाको दश टंक आधपाव पानीमें पीस गायका घी डारिके पीवै तो शरीरको पुष्ट करै कमरके दर्दको दूरकरै और आँखोंकी ज्योतिको बढ़ावै सुस्तीको मिटावै भूंखको लगावै ॥

अथ शर्वत सीसोंका प्रमेहरोगको ४४.

सीसोंके पत्ता ५ टंक मिर्च २ मासे १ पाव पानीमें

अथ शर्बत पीपरका कलेजेकी ज्वालाको ५९.

पीपरकी छाल १ तोला मिरच १ मासा १ पाव पानी पीसके पीवै तो संग्रहणीरोगको कलेजेके जलनको हाथपाँव जलनको दूर करै पेटपीड़ाको गुण करै भूख लागै ॥

अथ शर्बत आमकी गुठुलीका संग्रहणीको ६०.

आमकी गुठुली १ तोला मिरच १ मासा आधपाव पानी में पीसके पीवै तो संग्रहणीरोग जाय और कलेजेकी गरमी जाय और कोई विष खाया हो सो दूर होय ॥

अथ शर्बत गूलरिका प्रमेहको ६१.

गूलरका फल और जड़ १ तोला मिरच १ मासा १पाव पानीमें पीसके पीवै तो सुजाक प्रमेह देहकी जलन तथा तृषा दूर होय और भूख लागै ॥

अथ शर्बत फिटकरीका विषको ६२.

फिटकिरी ६ मासे नीलाथोथा शुद्ध २ मासे आधपाव पानीमें पीसके पीवै तो जो विष खाया होय तो दूर होय सर्पका विष दूर होय पित्तरोग और ज्वर सर्व दूर होयँ वमन बहुत होयँ रोगी चंगा होय ॥

अथ शर्बत बेलपत्रका संग्रहणीको ६३.

बेलपत्र ६ मासे कालानोन २ मासे मिरच १ मासा १ पाव पानीमें पीसके पीवै तो संग्रहणीरोग दूर होय हाथ पांवका जलन दूर होय वायरोग और उलटी दूर होय ॥

अथ शर्बत अफीमका हैजाकी बीमारीको ६४.

अफीम आधा मासा निंबूरस १ तोला मिश्री ३ तोले १ पाव पानीमें पीसके पीवै तो उलटी और जुलाब होता होय तो बन्द होय और छातीका धकधकाना बन्द होय और कलेजेका जलन तृषा बन्द होय ॥

अथ शर्बत भांगका पुष्टिको ६५.

भांग २ मासे भंगरा २ मासे गोरखमुन्डी ४ मासे मिरच १ मासा खांड ३ तोले सवापाव पानीमें पीसके पीवै तो शरीरको पुष्ट करै बलको वढावै रोगको नगीचे नहीं आने देवै नशा करैहै ॥

अथ शर्बत कासनीके बीजका हौलदिलको ६६.

कासनीके बीज ६ मासे ककरीके बीज ६ मासे मिरच १ मासा १ पाव पानीमें पीसके पीवै तो हौलदिल और करेजेकी गरमी दूरहोय ॥

अथ शर्बत असगन्धका पुष्टिको ६७.

असगन्ध ६ मासे मुसरी ३ मासे मिरच १ मासा मिश्री १ तोला १ पाव पानीमें पीसके पीवै तो शरीरको पुष्ट करै वीर्यको बांधै ॥

अथ शर्बत रहरीका हैजेको ६८.

रहरीके पत्ते ९ मासे निम्बूका रस १ तोला मिरच १ मासा आधपाव पानीमें पीसके पीवै तो उलटी जुलाब बन्द होय गरमी दूर होय ॥

अथ शर्बत कटेरीका खांसीको ६९.

कटेरीकी जड १ तोला पीपरि ६ मासा इलायची १ मासा आधपाव पानीमें पीसके पीवै तो खांसी और दमा दूर होय तथा तीनों ज्वर दूर होयँ ॥

अथ शर्बत कैंवाचका पुष्टिको ७०.

कैंवाचके बीज १६ मासे लेकर शामको पानीमें भिगोय देवै सबेरे डेढ़पाव गायके दूधमें पीसके मिश्री मिलाके पीवै तो शरीरको पुष्टि करै बल धातुको बढ़ावै और प्रमेहरोग जावै ॥

अथ शर्बत नोनीका सुजाकको ७१.

छोटी नोनी जो ज़मीनमें चपकी रहतीहै तिसी ऐसी पत्ती होतीहै उसे १ तोला मिरच १ मासा मिश्री १ तोला आधपाव पानीमें पीसके पीवै तो पथरी, मूत्रकृच्छ्र, सुजाक और प्रमेहको दूर करै ॥

अथ शर्बत चिरायतेका सर्वज्वरको ७२.

चिरायता १ तोला धनियां १ तोला पीपरि ३ मासे इन सबको १ पाव पानीमें शामको भिगोयदे सबेरे छानिके पीवै तो सर्वज्वरको नाश करै फिर इस दवापर १ पाव दूध पीवै तो बहुत गुण करै भूंख लागै खट्टा मीठा पथ्य रक्खै ॥

अथ शर्बत धतूरेका चौथिया ज्वरको ७३.

धतूरेके पत्ता ६ मासे नागर पान ६ मासे गुड़ १ तोला पावभर पानीमें पीसके पीवै तो चौथिया ज्वर तीसरा ज्वर दूर

होय परन्तु चौथियाज्वरवालेको प्रथम जुलाब देवै तब इस दवाको पिलावै ॥

अथ शर्बत सनायपत्तीका जुलाबको ७४.

सनायपत्ती ५ तोले धनियाँ १ तोला गुड़ ३ तोले पहिले सनायपत्ती और धनियाँको शामको आधसेर पानीमें भिगोय देवे सबेरे कपड़ासे छानिके गुड़ मिलायके पीवे तो जुलाब होय और उदररोगके सब विकार दूर होयँ भूंख लागै ॥

अथ शर्बत चन्दनका गर्भिणी स्त्रीको ७५.

चन्दन सफेद ३ मासे धनियां ३ मासे मिश्री १ तोला आधपाव पानीमें पीसके पीवे तो गर्भिणी स्त्रीका ज्वर तृषा छलटी दूर होय ॥

अथ शर्बत इसबगोलका प्रमेहको ७६.

इसबगोल १ तोला निंबूरस १ तोला मिश्री २ तोले १ पाव पानीमें पीसके पीवै तो प्रमेहरोग दूर होय पथ्यसे रहै ॥

अथ शर्बत केसरका पुष्टिको ७७.

केसर १ मासा शहत १ तोला गायका दूध आधसेरमें पीसके पीवे तो शरीरको पुष्ट करै धातु और बलको बढ़ावै ॥

अथ शर्बत कइतका बरबटको ७८.

कइत ६ मासे पांचों नमक ६ मासे पांचों खार ३ मासे १ पाव पानीमें पीसके पीवे तो बरबट वायगोला उदररोग दूर होयँ ॥

अथ आठोंज्वरकी दवा।

गुरुचि चिरायत पीपरी, पितपापड़हि मिलाय।
ताहि बराबर सोंठिलै, लीजे काथ बनाय॥
रोग दोष बल देखिकै, प्रात-समय लवलाय।
सातदिवस सो पीजिये, आठोज्वर तनु जाय॥

अथ सन्निपातज्वरकी दवा।

मोथा सोंठि चिरायता, चूरणलेय बनाय।
मधुसों ताको खाइये, सन्निपातज्वर जाय॥

अथ अतीसारकी दवा।

सोंठि अजमोदा मोचरस, चूरण समकरि लेय।
अतीसारका दुखहरै, छाँछ संग जो देय॥
लोध इन्द्रयव मोचरस, गूदा बेल मिलाय।
गुड़में गोली बाँधिये, अतीसार मिटिजाय॥

अथ आमवातकी दवा।

देवदारु हड सोंठि अरु, बायबिरँग सम पाय।
काथ बनाके पीवही, आमवात मिटिजाय॥

अथ शूलकी दवा।

पुष्करमूल लवंग अरु, जवाखार जलसंग।
टक डेढ़ लै खाइये, करै शूलको भंग॥

अथ हुचकीकी दवा।

बेरीबीजरु मुलहटी, मिरच लौंग सम आनि।
ताहि बराबर मीसिरी, कूटि पीस लै छानि॥

टंकदोय लै खाइये, सहतसंग धरि ध्यान ।
हुचकी रोग सबहिं हरै, सात दिवसमें जान ॥

अथ मुखरोगकी दवा ।

मैनशील अरु हलदिको, पीसै सम संयोग ।
मुखमें धूनी दीजिये, नाशै मुखके रोग ॥

अथ मन्दाग्निकी दवा—ज० छं० ।

सैंधो सोंचर वायविरंग । त्रिकुटा त्रिफला और लवं
चित्रक हींग जवाइन आन । लेय बराबर जोखि प्रमा
कूटि छानिके चूरण करै । पुनि त्रयपुट नींबूके धरै
एकटंक जु प्रात उठिखाय । मन्दअग्नि क्षणमें घटिजाय

अथ परमाकी दवा ।

दोहा—शंखाहुली इलायची, शिलाजीत पुनि लेत ।
सर्व प्रमाका दुखहरै, खाँड़ संग जो देत ॥

अथ पित्तदाहकी दवा ।

देवदारु औ कूटकी, इन्द्रयव सम लेय ॥
नागरमोथा जायफल, विधिसे काथ करेय ॥
आधपाव जो पीजिये, पित्त दाहज्वर जाय ॥
नौ दिनलौं ऐसहि करै, रोग नियर नहिं आय ॥

अथ श्वास दमा खांसीकी दवा—ज० छं० ।

सेर पांच भटकटैया आन । बबुलकी छाल ताहि परमान ॥
पोस्ता सेर जु तीन मँगाई । धायफल सब एक मिलाई ॥

आठसेर पानी लै आवे। ताहिमें डारिके काढा बनावे॥
एकसेर बाकी रहिजाय। तब कपडा में लेय छनाय॥
और दवा मैं दियो बताई। सोंठि इलाची लेय मिलाई॥
मिरें पीपर लौंग मिलान। चारि चारि तोला परमान॥
लावै कूटिकै कपड़छनाई। डारि काढ़ामें गोली बनाई॥
ल विचारिके गोली खावे। खट्टा मीठा एक न पावे॥
साँझ सवेरे गोली खाय। श्वास दमा खांसी सबजाय॥
भूलो नहीं दवा यह कीजे। बात हमारि मानि तुम लीजे॥
सिद्धि दवा यह जानो भाई। भगवानदासने दिया बताई॥

अथ उदरवायुकी दवा।

समुद्रफेन औ बायाविरंग। सोंचर सैंधा पाय निसंग॥
स्याह मिर्च अजमोदा आन। जवाखार शुंठी सम ठान॥
बारहि चारटंक सब लेहु। भूनी हिंग टंक इक देहु॥
चूरण तप्त नीरसों खाय। कर्षएकमैं दियो बताय॥
नित खाय प्रातै सुखहोय। बाढ़े भूंख वायु तनु खोय॥

अथ उदरपीड़ाकी दवा।

दोहा—सैंधौ सोंचर कुट धनियां, हड कचूर समतूल।
जीरा बासा त्रीकुटा, लीजै पिपलामूल॥
सबै औषधी पीसिकै, तप्त नीरसों खाय।
छःमासे परमानहै, लगै भूंख अधिकाय॥
वायुपीड़ सब उदरकी, घंटा एक प्रमान।
औषध कही विचारिके, भगवानदास धरिध्यान॥

अथ इन्द्रियलेप–ज०छं० ।

वीरबहूटी केचुये आन । तिलका तेल ताहि परमान॥
मेलि एकमें अग्नि चढ़ाई । मन्दअग्निसे लेय पकाई ॥
जारि केचुये लेहु उतार । छान काँचके भर्त्तनधार ॥
बहुरि लिंगपर लेप कराय । वृद्धिस्थूल कठिन होजाय ॥

अथ पुष्टताकी दवा ।

सतुवासोंठि मूसरी श्याम । तामें मुंडी आवै काम ॥
सबै पीसिकर मैदा लेहु । खंड बराबर तिहिको देहु ॥
दूध संग पैसाभरि खाइ । धातु पुष्ट बलकी अधिकाइ॥
दो दो पहर रमावै रंडी । गिरै न बिंदु नवै नहिं डंडी ॥

अथ कास श्वासकी दवा ।

तोला पोसत डोडे आन । ताते आधी शुंठि बखान ॥
धवै फूल इक तोला पाय । सेर नीरमें मेलि पकाय ॥
रहे चतुर्थ अंश जब आय । ताको लीजे वसन छनाय ॥
शयन समय निशि कीजे पान । प्रातहि होय कासकी हान ॥

अथ फकीरकी बताईहुई उपदंशकी दवा ।

(कण्टारिका बूटी)

उपदंश–गरमीवालेको पहिले स्ने[illegible]
जुलाब देवै पश्चात् यह दवा देवै–[illegible]
जड़ और पत्ता लेवै [illegible]
बनाय छायामें सुखा[illegible]

रसे अग्नि रख कोठरीके अंदर कपड़ा ओढ़िकै पीवै औ
जहाँ घाव चट्टा होय वहाँ धुआं छोड़े इसी विधिरे
सातदिन पीवै और इसपर खानेका पथ्य चनाकी रोटी
चनाकी दालके सिवाय सातदिनतक दूसरी चीज़ कुछ
नहीं खावै और वैद्यजनोंको इस दवापर एक अशर्फी
लेना हरामहै ॥

अथ गठिया-सानेका तेल ।

दालचीनी ३ तोले कुचिला ३ तोले अच्छी खानेकी सुरती ३ तोले लहसुन ४ तोले भिलावाँ १ तोला मीठा तेल २० तोले एकमें मिलाय मन्दमन्द अग्निसे पकावे जब दवा जरि जावै तब तेल छानिकै शीशीमें रखदेवै जिधर दर्द होय उधर मालिश करै तो सब प्रकारका दर्द दूर होय ॥

अथ दूसरी बूटी ।

सत्यानाशी जिसको भन्भना तथा (करवा) बोलतेहैं उसका फल जब फूल गिरै तब तोड़ लावै २ तोले और उसीकी जड़ २ तोले मिरच १ तोला कूटिकै खल करिकै बड़ी मटर बराबर गोली बाँधिकै खावै शाम सवेरे एक एक गोली खावै तो गरमी उपदंश सुजाक सब प्रकारका परमा दूर होय पथ्य चनाकी रोटी दाल खावै और सब चीज़ोंका परहेजहै रोगीसे एक पैसा लेना वैद्यको मनाहै ॥

अथ शीतवातको तेल ।

हिंगु १ तोला अफीम २ मासे लहसुनका रस २ तोले

करू तेल १० तोले एकमें मिलाके पकावै जब दवा जरिजाय तब इस तेलकी मालिशकरै तो सब प्रकारका शीतंगवाय तथा सब व्याधि दूरहोयँ परंतु शीतल जलसे बचा रहे ॥

अथ सर्ववातव्याधिको तेल ।

कुचिला २ तोले अफीम ६ मासे धतूरका रस ४ तोले लहसुनका रस ४ तोले चिरायताका रस ४ तोले नीबूका रस ४ तोले टेकारीका रस ४ तोले तमाखूका रस ४ तोले दालचीनी ४ तोले अजवाइन ४ तोले मेथी ४ तोले करूतेल १ सेर मीठा तेल १ सेर एरंडीका तेल आधासेर एकमें मिलायके अग्निपर राखिके चुरावे जब सब दवा जरिजावैं तब छानि लेवे और जिस जगह दर्द होय उस जगहपर मालिश करै तो सब तरहकी वातव्याधि दूरहोय ॥

अथ दाद गजकरणका मलहम तुरत अच्छा करै ।

जावित्रीका चूर्ण २ तोले पारा ९ मासे गन्धक ६ मासे मुरदाशंख ६ मासे मोम १ तोला मीठातेल ५ तोले पहिले चारों दवा खल करै पीछे मोम अग्निपर गरम कर तेल मिलाय सब दवा डारिके मलहम बना लेवै और जिस जगह दादका चट्टा होय उस जगहपर दोदफे साँझ सबेरे लगावे तो अच्छा होय ॥

अथ फुन्सी फोड़ाका लेप ।

कुचला गुगल एलुवा ये तीनों एकमें मिलाके पानीके साथ

समान करै बल और कांतिको बढ़ावै नपुंसकपना दूर करै स्त्रीके प्रसंगमें कभी हारे नहीं ॥

अथ सोंठिपाक ३.

सोंठि ४०० तोले घृत ८० तोले दूध ८१९२ तोले मिश्री २०० तोले इन सबको एकमें मिलायके पकावै जब चासनी होजाय तब सोंठि मिरच पीपरी इलायची तमालपत्र नागकेसर पिपलामूल काला अगर जावित्री जायफल कचूर पाषाणभेद तांबाभस्म सोनामाखीभस्म मंडूरभस्म लोहा भस्म कांतिभस्म ये सब दो दो तोले लेवे सबको कूटि कपड़छान करिके घीमें भूजिके चासनीमें मिलायके बल देखिके खावै तो बल उमरको बढ़ावै निर्बल पडै नहीं सफेद बालोंको काला करै तथा आमवातरोगको दूर करै और सौभाग्यको बढावै इंद्रिया दृढ़ होयँ ॥

अथ सौभाग्यशुंठीपाक ४.

सोंठिका चूर्ण ३२ तोले गायका दुग्ध १२८ तोले खांड २०० तोले इन सबोंको एकमें मिलायके चासनी करै फिर त्या मिरच सोंठि पीपली दालचीनी इलायची तमालपत्र ये सब चार २ तोले ले कूटि कपड़छान करिके घीमें झलकारि लेवै तब पहलेकी चासनीमें मिलायके रोगीका बल विचारिके देवै तो आमवातरोग तुरत नाश करै शरीरको सुधारै धातुको पुष्ट करै और उमरको बढावै मनो पडै देवै नहीं और सफेद बालोंको काला करै और पेष्पापनको हरे यह पाक रसायनहै॥

रस लोहारस चांदीरस ये सब दवा दो दो तोले लेवे सबको कूटि कपड़छान करके घीमें भूजि लेवै तब चासनीमें मिलाके एक तोलेके प्रमाण गोली बाँधे एक गोली शाम और एक सवेरे खावे तो ८० प्रकारके वायुरोगको ४० प्रकारके पित्तरोगको ८ प्रकारके उदररोगको २० प्रकारके प्रमेह रोगको ६० प्रकारके नाड़ीव्रणरोगको १८ प्रकारके कुष्ठरोगको ७ प्रकारके क्षयरोगको ५ प्रकारके पांडुरोगको ५ प्रकारके श्वासरोगको ४ .... संग्रहणीरोगको तथा नेत्ररोग गलग्रहरोग अनेकप्रकारके वात रोग इत्यादिको यह एरंडीपाक दूर करै जबतक रोगको नहीं निकालै तबतक खातेही रहै ॥

अथ केसरपाक २.

केसर १ तोला कस्तूरी ३ मासे मृगांकरस ३ मासे चांदीरस ३ मासे अभ्रखरस ३ मासे बंगरस ३ मासे लोहारस १ तोला सब रसोंको एकमें घोटिके जुदा रखना फिर जायफल बदाम पिस्ता चिरौंजी जावित्री सोंठि पीपरी मिरच ये दवा दो दो तोले लेवै असगन्ध १० तोले सब दवाइयोंको कूटिके घीमें थोड़ा भूजि लेवै तब २॥ सेर मिश्रीकी चासनी करिके ऊपरके कहे हुये रस और पांचसेरके दूधका खोवा और सब दवा एकमें मिलाके ६ मासे खावे ऊपरसे आधा सेर दूध पीवे तो धातुको पुष्ट करै और शरीरको पत्थरके

दो सेरमें पकावे फिर केवल पानीमें सिझाकर उन
सहतमें २० दिन रक्खे पीछे उस सहदको दूर कर
हद दो सेर मिश्री डेढ सेरकी चासनी करै तब गजपी-
लायची बंशलोचन लोहाभस्म वंगभस्म सब दो दो तोला
एकमें मिलाय दश दिन पीछे एक तोला रोज खावै तौ
र व राजरोगको नाश करै यह पाक मधुर है पथ्यसे
प्रमेहरोगको दूरकरै मूत्रकृच्छ्र कुष्ठ पित्तरोग
दोषोंको दूर करै और यह सर्वरोगोंको नाशै बल-
ो बढावे यह पाक वाजीकरण उत्तमहै और सबरो-
गुण करताहै ॥

अथ सेवतीपाक ७

फेद सेवतीके फूल एक हजार लेवे इनको ६४ तोले
पकाय पीछे मिश्री २५६ तोले सहद ३२ तोले
चीनी ४ तोले नागकेशर ४ तोले इलायची ४ तोले
ज पत्र ४ तोले मुनक्का २४ तोले गिलोयका सत २ तोले
लोचन २ तोले सफेदजीरा २ तोले सीसाकी भस्म २
वंगभस्म २ तोले कपूर ३ रत्ती इन सब दवाइयोंको
टे कपड़छानकरि मिलाय विधिप्रमाण पाक बनाय सुन्दर
नमें घालि धरे पीछे प्रभातमें ६ मासे खावे और
से रहै तो यह पाक जीर्णज्वर, क्षयी, कास, मन्दाग्नि,
, दिनज्वर, रात्रिज्वर, मस्तकरोग, रक्तप्रदर, रक्तविकार,

रोग, कुष्ठरोग, बवासीररोग, नेत्ररोग, मुखरोग इनसबोंको ए
महीनामें नाशै और जो कोई कुछ दिन और सेवै तो और
गुणकरै दिनपर दिन शरीर पुष्टहोय ॥

अथ छोहारापाक ८.

छोहारा १० तोले पिस्ता ४ तोले जटामासी १ तोले के
वांचबीज १ तोले तेजपात १ तोले नागकेसर १ तोले बदा
४ तोले जायफल १ तोले दालचीनी १ तोले केसर १ तो
चव्य १ तोले सोंठि १ तोले कमलगट्टा १ तोले चिरौंजी
तोले जावित्री १ तोले घी १॥ सेर मिश्री ५ सेर दूध १०से
अभ्रखरस २ तोले लोहसाररस २ तोले बंगरस २ तोले
पहिले सब दवाइयोंको कूटि कपड़छान करके और मेवाको
जुदाकरि दवाको घीमें भूजिलेवै तब दूधका खोवा करै
पश्चात् मिश्रीकी चासनी करि उसीमें सब दवा मिलाय रस और
मेवा छोड़ि एक २ तोलेके प्रमाण गोली बांधि खावै तो भूंख
लगै शरीरको पुष्ट करै और सौस्त्रीसे भोगकरै बल न घटै
बल्कि दशों इन्द्रियोंको ताकत देवैहै ॥

अथ लौंगादिपाक ९.

लौंग ४ तोले दालचीनी ४ तोले नागकेसर ४ तोले
असगन्ध ४ तोले सोंठि ४ तोले मिरच ४ तोले पीपली ४
तोले कमलगट्टा ४ तोले जटामासी ४ तोले गरी ४ तोले

४ तोले पिस्ता ४ तोले किसमिस ४ तोले केसर ४
चरौंजी ४ तोले जावित्री ४ तोले छोहारा ४ तोले
४ सेर घी २ सेर दूध ९ सेर चांदीरस २ तोले लोहा-
२ तोले अवरख ३ तोले सब दवाइयोंको कूटि कपड़-
रि घृतमें झलकारिके दूधका खोवा बनाय मिश्रीकी
ी करिके उसी चासनीमें सबजिन्स मिलायके बल
रिके खावै तो खांसी श्वास दमाको गुणकरै और कमजो-
दूर करै शरीरको पुष्टकरै बल दिनपर दिन बढ़ता जावै
; खट्टा मीठा तीतासे परहेज रक्खै ॥

अथ सुपारीपाक १०.

सुपारी आधासेर दो सेर पानीमें चुरावै फिर सुखायके
करि पीछे दशसेर दूधमें चूर्ण डारिके पकावै जब खोवा
ाय तो दशसेर मिश्रीकी चासनी करि तब इलायची २५
बरियारका बीज २५ मासे गुरसकरी २५ मासे जाय-
२५ मासे लौंग २५ मासे जावित्री २५ मासे तेजपात
मासे सोंठि २५ मासे शतावरी २५ मासे श्याममूसरी
मासे केवांचबीज २५ मासे बिलारीकन्द २५ मासे
रू २५ मासे दाख २५ मासे सालममिश्री २५ मासे
लोचन २५ मासे असगन्ध २५ मासे केसर २५ मासे
र २५ मासे कस्तूरी ४ मासे सब दवाइयोंको कूटि कप-
ानकरिके घीयें भुजिके चासनी में छोड़िके तब मृगां-

करस ४ मासे चंद्रोदयरस ४ मासे वंगरस ४ मासे लोहरस ४ मासे अवरखरस ४ मासे ये सब रस छोडि मिलाय पूर्वोक्त मिश्रितकरि गोली बांधि बल विचारिके खावै तो धातुको पुष्टकरै वीर्य्यस्तंभन होय और नपुंसकपना दूर होय शरीरको सुधारै स्त्रीप्रसंगमें सुखदेवै बलघटै नहीं भूंखको लगावै ॥

अथ सेमरपाक ११.

सेमरकी जड़का छिलका आधसेर लेकर छायामें सुखाय कूटि कपड़छान करि सातसेर दूधमें डारिके पकाय खोवा करै फिर पांचसेर मिश्रीकी चासनी करि पीछे इलायची लौंग पीपरि सोंठि नागकेसर जटामाँसी जायफल पिस्ता बदाम चिरौंजी केसर और भांग ये सब दवा एक एक तोले लेवै कूटि कपडछानकरिके घीमें भूंजिके चासनीमें सब दवा और खोवा मिलाय लड्डुवा बनाय बल विचारिके खावै तो कमरकी दर्दको तुरंत दूर करै शरीर और धातुको पुष्टकरै विगड़े खूनको दूर कर नवा खून जारी करै, यह पाक सब रोगोंपर देवै ॥

अथ शुक्रपाक १२.

एरंडीके बीज ६४ तोले तुष दूर किये हये ५१२ तोलेमें डारिके मंदअग्निसे तब एरंडीके बीज पीसि घी सब एकमें मिलाय चासनी

ोनी इलायची तमालपत्र नागकेसर पीपलामूल चीता सौंफ लघु सौंफ कचूर बेल अजमोद दोनों जीरा, दारु-देशी हलदी असगन्ध बलियार पाढ़ा शरणी बायविडंग गोखुरू कूट त्रिफला देवदारु भिदारा ककरोलीके बीज शतावरी इन सब दवाओंको एक २ तोला लेवै कूटिक-नकर घीमें भूजिके चासनीमें मिलायके बल विचा-खानेको देवै तो वातव्याधि, सूजाक, पेटरोग, अफरा, वात, गुल्म, आमवात, कटिग्रह, ऊरुस्तंभको नाशै जैसे हाथीको वैसेही यह पाक इन रोगोंको दूर करै को पुष्टकरै तथा धातुको बढावै यह पाक बहुत उत्तमहै॥

अथ रसोतपाक १३.

ुप दूर किया हुआ लहसुन ६४ तोले लेकर छांछमें को भिगोयदेवे सबेरे पीसि ५ सेर दूधमें पकाय तैयारकर घी १६ तोले मिलाय शीतल कर शतावरी रासना । गिलोय कचूर सोंठि देवदारु भिदारु अजमोद चीता सांठी हरें बहेडा आंवला पीपली बायविडंग यह सब दवा २ तोले कपड़छानकरिके घीमें भूजिके सहत १६ तोले र सब सामग्री एकमें मिलायके बल विचारिकें खावे अर्धंगवात, हनुग्रह, अक्षेप, भग्नवात, कटिवात, ऊरुस्तंभ, ग, सर्वांगवात, संधिगतवात ८० प्रकारके वात ो नाशै कमरदर्दको दूर करै तथा गठिया साना, जिसको

शरदी वो काँपना बहुत रहताहै (अथ इसकी दवा) सौंफ ४ मासे, सौंफकी जड़ मुलहठी, काजुवां, बेख फरफस हर एक ६ मासे, पर्स ओशाँ ६ मासे, रातको गरम पानीमें भिगोदें फिर सवेरे छानके २ तोले गुलकंद और २ तोले शर्बत बजूरी मिलाके पिलावे (दूसरी दवा) सरदी लगनेसे पहले खिलावें । मकडीका एक सफेद जाला गुलकंदमें मिलाके तीन दिन तक निगले (तीसरी दवा) मदारकी कली जो खिली न हो गुलकंदमें लपेट गोली बनाके तीन दिनतक खावे (दवा) धतूरा १ तोला, रेवंदचीनी ८ मासे सोंठ ४ मासे, बबूलका गोंद २ मासे कूट छानके चनेकी बराबर गोली बनावें २ गोली सरदी लगनेसे पहले खिलादें (दवा) करंजवेकी कोंपल ३ कालीमिर्च २ पानीमें पीसके पिलादें ॥

अथ आनन्दभैरवगोली ।

यह दवा तमाम बलगमी बीमारियों और

कालीमिर्च, पीपल, हरताल ५ मासे, धतूरेके बीज
से हरताल ८ मासे (तरकीब) पारे और गंधकको
ो और बाकी कूट छानले फिर अदरकके रसमें ४
क खरल करै और २ रत्तीकी गोली बनावे खूराक
गोली पानीके साथ (दवा) गंधक, पारा, सोंठ, पीपल,
ीमिर्च, सुहागा और जमालगोटा. सब बराबर तौलके २
नींबूके रसमें पीसे और कालीमिर्चकी बराबर
ी बनावे. खूराक १ गोली (दवा) जर्द पत्ते मदारके
लेकी आगमें रख करके सवेरेके वक्त ४ रत्ती शहतदमें
के चटावे ॥

अथ रामबाण गोली ।

भूखको बढ़ावे कब्जको दूर करै और पित्त बलगमीको
द है (तरकीब) पारा, गंधक, बच्छनाग, लौंग, हरएक
मासे जायफळ १। मासे, जमालगोटा १॥ मासे, कूट
कर ३ दिनतक नींबूके रसमें घोटे फिर कालीमिर्चकी
र गोली बनावे खूराक २ गोलीतक गरम पानीके
दे (सफूफ) तप आनेसे पहले खिलावे । पीपल
ीमिर्च, कलौंजी, चिरायता, गेरू सब एक २ मासे
पत्ते २ मासे कूट छानके खूराक १ मासे रोज दे
।) यह दवा तप बलगमी और सोदावीको मुफीदहै ।
लि संखिया १ बैंगनमें रखके ऊपरसे कपड़ा मट्टी

और हुब्बुलास या जुत्फवलूत या गुलनार शीरीं और माज जोश करके उस पानीसे आवदस्त करावे (दवा) बीमारी मिरगी जो लडकोंको होतीहै. पोदीना और कालाजीरा पानीमें पीसके पिलावे या ऊदउलसलीव घिसके पिलावे या तिर्याकअर्वा खिलावे । और खून गोशखरका हलक में टपकावे उसी वक्त आराम होगा और जदवार गाके दूधमें घिसके पिलाना और मोहरह मुजांनसे दोनों अवरूके याने भौंहके बीचमें दागदेना मुफीदहै (दवा) अगर दिमाग में बालक के वरम होजावे तो पहँचान यहहै कि मुँह सुर्ख या जर्द होगा और पेशानी दुखेगी इस बायससे लड़का पेशानी मलेगा. ताजी मकोके पत्तोंके पानीमें गुलनार पीसके रोगन गुलमें मिलाके शिरपर लगावे या मुर्गके अंडेकी जरदी रोगन गुलमें मिलाके चांदपर लगावे (दवा) अगर छींक बहुत आवें तो पुरानी रुई या अरहर भूनके शिरको सेंक करे (दवा) अगर जुकाम होजावे तो एक कपड़ागरम पानीमें तर करके दिमागपर रखदे और थोड़ा शहत चटाकर चिड़ियाका पर चिकना करके हलकमें डाले उसी वक्त के आवेगी (दवा) अगर खांसी हो तो खत्मी मुलहठी उन्नाव और शक्कर जोश करके पिलावे (दवा) बीमारी पसलीकी हो तो पहले दस्त आनेकी दवा दे. गावजुबां सिपिस्तां, बनफ्शा, मुलहठी, खतमी, और गुलकंद, जोश

करके पिलावे पियाजके रसमें एलवा घोलके पहलूपर लगावें या मुश्क शहदमें मिलाके चटावे (दवा) अगर रोवे और कान मले तो कानमें दर्दहै तो पोदीनेका अर्क डाले या हरी मकोका अर्क डाले (दवा) अगर कानसे मवाद जावे तो फट-करी, माजू, पीसके शहदसे मिलाके बत्ती बनाके उसपर ल-गाके कानमें रखदे या जाफरान शहदमें घिसके इसी तौरसे कानके अंदर रखदे (दवा) अगर आंखकी पलकें फूली रहैं तो रसोत गरम करके आँखमें लगावे ॥

अथ बयान अनाजका और फ़ायदा नुकसान गेहूं ॥

गेहूं सबसे अव्वल चीज आदमीके वास्ते है और गिजा-यत जियादह रखताहै और गरमी शरदीमें मोतदिल है (चना) पहले दरजेमें गरम तरहै और मुकव्वी बाहहै और खून पैदा करताहै (चावल) गिजायतमें अच्छाहै जिस कदर खुशबूदार और बारीख और पकानेमें दराज हो बेहतर है, गरमी और शरदीमें मोतदिल मगर दूसरे दरजेपर शर्द और गर्म मिजाजमें गरमी और शर्द मिजाजमें शरदी पैदा करताहै और जिस कदर सुर्ख और मोटा हो खराबहै रिहाको नुकसानमंदहै और काबिज़ है जिसको बवासीर खूनी या बादी हो उसको बड़ा नुकसान करताहै (मूंग) शर्द और खुश्कहै और बहुत अफारा नहीं करता इसवास्ते हकीम लोग अक्सर बीमारीमें तज-

बीज करतेहैं (जौ) शर्द खुश्क है लेकिन काबिजहै प्यास कम लगाताहै (अरहर) बहुत कहतेहैं कि शर्द वो खुश्क और कोई गरम खुश्क कहतेहैं और शर्द बीमारी को मुफीद है गरम मिजाजको नुकसान करताहै (बाजरा) तीसरे दर्जेमें शर्द वो खुश्क है और बाह पैदा करताहै और रतूबतको दफे करताहै (उड़द) गरम और तरहै मुकव्वी बाहहै (मसूर) गरम वो खुश्क है मगर अफारा करतीहै (लोबिया) गरम खुश्कहै (मोठ) गरम और खुश्कहै (मकी) बादी बदरजे कमालहै (मटर) अफारा बहुत करतीहै ॥

अथ फायदा खमीरी रोटीका ।

खमीरी रोटी जल्द हजमहै लेकिन् थोडासा अफारा रखती है और मैदेकी रोटी बहुत सकील है और आटेकी रोटी बहुत मुफीदहै और गरम रोटी रतूबत पेटकी खुश्क करतीहै और शर्द रोटी कुछ नुकसानमंदहै, मगर न बहुत शर्द हो न गरम मुफीद है. बाजरे और ज्वारकी रोटी शर्द वो खुश्क और काबिज है और यवकी रोटी बाजरेसे जल्द हजमहै लेकिन शर्द वो खुश्कहै और अफारा करतीहै ॥

अथ पानीका बयान ।

सबसे अच्छा पानी दरियाका है. बाद उसके कुएँका, खाना खानेके पीछे पानी पीना अच्छा नहीं मगर जो लोग

गरम मिजाज हों उनको मुनासिबहै कि खाना खानेके बीचमें कुछ पानी पीलेवें लेकिन् दो तीन घड़ी बाद पानी पीना बहुत अच्छाहै और वक्त भूंखके पानी कम पिये या पानीकी जगह थोड़ा शर्बत या कुछ खाना खाके पिये तो नुक़सान नहीं करता और निहार मुख पानी पीनेसे कमजोरी और बीमारी पैदा होतीहै और खरबूजा या तरबूज़ ऐसी चीज़ोंपर भी नुकसान करताहै और हरवक्त बहुत पानी पीना बुराहै तांबे और सीसेके बर्तनमें पीना खराबहै कलईदार बर्तनमें नुकसान नहीं करता अगर सफ़रमें जावे तो पियाज खाताहो या भंग पीताहो या ये चीजें काममें लावे तो उस मुक़ामका पानी उस आदमीकोकभी नुकसान न करेगा ॥

अथ बयान सोने और जागनेका ।

चित्त सोना खराबहै ख्वाब बुरे दिखाई देवें और दिमाग़का भी नुकसानहै अगर आदतभी होवे तो छोड़ देवे पट सोना इस तरहसे कि शिर तकिये पर इस तौरसे रक्खे कि मुँह और दोनों आँखें दाहिने या बायें तरफ हों,तो फायदा करताहै और खानाभी बहुत जल्द हज़म होताहै और करवँट सोना किसी सूरतमें नुकसान नहीं करता और निहार सोना नुकसान पैदा करताहै और भूंखमें सोना बदनको दुबला करताहै और धूपमें सोना खराबहै और चांदनीमें सोना मुफ़ीदहै और बहुत सोना रतूबतको पैदा करताहै और

बहुत जागना गरमी और खुश्कीकी निसानीहै. पस लाज़िमहै कि न बहुत जागे और न बहुत सोवे जहांतक होसके वक्तसे काम करे ॥

अथ ताकत और उमरका बयान ।

आदमीकी उमरके वक्त चारहैं—एक बढ़नेका कि वह तीस वर्षतकहै. इस वक्तमें जो कुछ खावे पीवेगा वह उसके वास्ते आखीर उमरतक काम आवेगा बल्कि उस आदमीकी ताकत ओर बीनाई कमती न होगी दूसरा वक्त जवानीका चालीस वर्ष तक है. इस जमानेमें हरारत असली कायम रहतीहै. तीसरा ज़माना साठ वर्षतक इसको अधेड़ कहतेहैं. इस वक्तमें आदमीके मिजाज़पर शरदी ज़ोर करतीहै चौथा बुढापा यह साठ वर्षसे आखरि उमरतकहै ओर इसवक्तमें शरदी रतूबत खारजीके साथ मिजाज़ पर गालिब रहतीहै ओर इस वक्तमें खुराकभी अपना काम नहीं करती, ओर औरतका मिजाज मर्दकी निशबत शर्द होताहै ॥

अथ इलाज़ ज़हरका ।

जिस आदमीने ज़हर खालियाहो उसको गरम पानीसे कै करावे घी और दूध कई दफेमें पिलावे ओर मुर्गकी बीट पानीमें घोलके पिलावे उसी दम कै होगी. जंगम और दरियामें काटनेवाले जानवर बहुत होतेहैं उनके काटनेसे मिजाजमें

ारजे ज़हरके होते हैं इसका क़ायदा यह है कि, ज़हरको
ुखावे जबतक दूसरी बीमारी न जावे जख्मको भरने नदे ॥
(अथ दवा) साँपके काटेको मुफीदहै-तीन तोले गायके
ीमें ६ मासे लाहोरी नमक मिलाके पिलावे (दवा)
ोडा कुचला और कालीमिर्च पीसके पिलावे साँपके ज़ह-
को मुफीदहै (दवा) सब तरहके ज़हरको मुफीदहै-
ारियाई नारियल पानीमें पीसके पिलावे (दवा) बकरीकी
ंगनी जलाके खिलावे और लेप करे (दवा) बिनो-
ेकी गिरी कूटके गायके दूधमें जोश देके पिलावे (दवा)
ापूर १ मासा घी १ तोला मिलाकर पिलावे (दवा)
ाहरके कै करानेके वास्ते मुफीदहै-कमलगट्टा १ मासे
ूतिया २ रत्ती गरम पानीमे पीसके पिलावे ज़हरको कै में
ेकाले (दवा) अफीमके ज़हरको मुफीदहै-अरंडकी
कड़ी पीसके पिलावे (दवा) अफीमके नशेको मुफीदहै-
२ मासे हीराहींग दो तीन दफेमे खिलावे (दवा) अखरोटकी
ेरी अफीमके नशेको मुफीदहै (दवा) गायका घी और
ूध अफीमके वास्ते मुफीदहै (दवा) धतूरेके जहरके
ास्ते. एक बेगनके टुकडे २ करके पानीमें खूब मलके
ेलावे अगर बैंगन न मिले तो उसके पत्ते या जड़ पानीमे
ीसके पिलावे (दवा) साँपके काटेको मुफीदहै-तीन
दारकी कोंपल गुडमें लपेटके खिलावे और बादमें पिलावे

लेकिन साँप बहुत तरहके होते हैं और इसकी जातें बहुतहै मगर काला साँप जहरमें और साँपोंसे ताक़तदार बल्कि फुरसत नहीं देताहै, मुनासिबहै कि, जिस जगह साँप काटे अगर वह मुक़ाम क़ाबिल काटनेके हो जैसे उंगली उसी वक्त काटडाले और जो काटनेके लायक न हो उस मुक़ाम को आगसे जलादे और आवाज चक्कीकी उसके कानमें न जानेदे (दवा) अगर काले साँपने काटाहो तो सात जमाल-गोटा या और क़िस्मके साँपने काटाहो तो दो या तीन कूटके खिलावे और आंखोंमें भी आंजे बाद जमालगोटा खानेके सींगीसे उस मुकामको खूब चूसे कि जिसमें जहर तमाम बदनमें अपना असर न करे और लहसन प्याज राईका खाना मुफीदहै एक किताबमें लिखाहै कि साँपका काटा बेहोश होजावे लेकिन् मरा न हो तो कुचला पानीमें पीसके उसकी हलकमें डाले और पीसके बदनपर मले उसी वक्त होशमें होगा (दवा) बिच्छूके जहरको मुफीदहै— हरताल, हींग, सांठी चावल पानीमें पीसके लगावे (दवा) बंगके बीज कूटके मोममें मिलाके खावे, या नींबूका रस लगावे, या ६ मासे इंद्रायनका फल ताजा खावे बहुत मुफ़ीदहै (दवा) हींग, हरताल, तरंजके रसमें पीसके गोली बनावे और जिस मुकामपर बिच्छूने काटाहो लेप करे (दवा) मोम जलाके बिच्छूके जख्मको धूनीदे (दवा) भिडके

को मुफ़ीदहै—ईसबगोल सिर्केमें डालके लुआब निका-
पिलावे या खतमी खुब्बाजीका लुआब निकालके
या शहद खावे या गरम पानीसे धोवे ॥

अथ मोतियाबिंदका इलाज ।

यह बीमारी होनेसे पहले आँखोंके आगे मच्छरसे
े मालूम होते हैं और जब पानी नजलेका उतर आताहै
पुतलीका रंग बदल जाताहै और बीनाई जाती रहती
ुरू नजलेके वास्ते कनपटी पर गुल और जोंकें लगाना
ीदहै और जब पानी बिल्कुल उतर आवे तब दिमाग़का
किया करे (माजूम) नजलेके वास्ते—हींग, बच, सोंठ,
क बराबर शहदमें मिलाके ४ मासे रोज़ खावे (दवा)
फ़ूर भीमसेनी औरतके दूधमें, कि जिसकी गोदमें लड़का
, पीसके लगावे (दवा) नौसादरको सुरमेकी तरह लगावे
दवा)कव्वेका पित्ता शहदमें मिलाके लगावे मुफ़ीदहै ॥

अथ आँखोंके दर्द और वरमका इलाज ।

जो सुरखीके साथ होवे तो उसके वास्ते जोंक लगाना
ौर फस्द सरेरू खुलवाना मुफ़ीदहै (गोली) फटकरी
तोले हलदी २ मासे अफीम १ मासा पहले फटकरीको
ूनके फिर ७ तोले नींबूके रसमें लोहेकी कढ़ाईमें कम
ागपर मिलाने जब गाढी होजावे तब गोली बनावे और
ाँखके ऊपर पानीमें घिसके लेप करे और अंदर भी लगावे.

नाकमें फूँके । बेरीके पत्ते पीसके माथेपर लेप करै घोंघा, गायका सींग, या बकरीका सींग जलाके नाकमें फूँकै बहुत फ़ायदा करैगा ॥

अथ जुकाम और नजलेका इलाज ।

जो फुजलात याने रतूवत दिमाग़से नाककी राह निकले उसको जुकाम कहतेहैं और जो हलके रास्ते गिरै उसका नाम नजला. अगर इस मवादमें खराश और जरदी या ऑखमें सोजिश हो तो गरमीसे होगा नहीं तो शरदीसे है इस बीमारीमे औंधेसोना और दूध दही और स्त्री संगतसे बहुत परहेज करै (माजूम) अजवाइन ५ मासे, अफीम ५ मासे, कालीमिर्च १० मासे और अकरकरा, बालछड़, नरकचूर, गुग्गल, तज, कायफल, सोंठ ये सब दवा एक २ मासा, मरमकी आधा मासा सबकी बराबर तीनगुणे शहदमें किवाम करके अंदाजसे खावे (बफारा) झाऊके पत्ते जोश देके बफाराले । शक्कर और चंदरसका धुऑ जुकाम गरमको मुफीदहै (गोली जदवार) जदवार, खताई, कतीरा, गोंद, मुलहठी, कालीमिर्च, दाने इलायची सब दवा दो दो मासे, और नरकचूर, नागरमोथा, बालछड़, तेजपात, कबाब, पीपल, खोलन जान, सोंठ, इस्पंद, दो २ मरमकी, अकरकरा चार २ रत्ती गोलियां बनावे खुराक २ गोली रो

को मुफीद है और भूख जियादा करै। दमा कूजा नजलेको सीनेपर गिरने नहीं देताहै (दवा) ७ कालीमिर्च पानीसे निगला करै मुफीदहै (दवा) समुद्रफलकी गिरी औरतके दूधमें पीसके नास करै (तिला) लौंग पीसके तालूपर लगावे (जुशांदा) जुकामके वास्ते मुलहठी, गावजुवां बनफ्शा, खतमी उन्नाव, मुनक्का रातको गरमपानीमें भिगोके सवेरे मल छानके शर्वत या मिश्री मिलाके ३ दिन पिलावे और खांसीको मुफीदहै ॥

अथ इलाज दांतोंके दर्दका।

मुनासिबहै कि कड़ी चीज न खाके और बाद खाना खानेके दांतोंको साफ करता रहै और जो दर्द दांतोंके हिलनेसे हो और दांत कम हिलतेहों और बुढ़ापा नहो इलाज करै (इलाज) नरकचूर मुंहमें रखना मुफीदहै। अगर मसूढ़ोंपर वरमहो तो एकवार शर्द पानीसे और एकदफे गरम पानीसे कुल्ली करै और ख्याल करै कि किस पानी से फायदा मालूम होताहै। अगर दर्द शर्द है तो गरम पानीसे फायदा मालूम होगा तब वैसा इलाज करै जो दर्द गरमहै तो शर्दपानीसे फायदा मालूम होगा। हल्दी पीसके मलना मुफीदहै। कालीमिर्च तुलसीकी पत्ती पीसके गोली बनाके दांतोंके नीचे दबावे। अंजीरके दूधमें रुई भिगोके दबावे। इसबगोल सिरकेमें भिगोके दांतोंमें रखना मुफीदहै। सिरके और शहदमें सोंठ

नाकमें फूँके । बेरीके पत्ते पीसके माथेपर लेप करै घोंघा, गायका सींग, या बकरीका सींग जलाके नाकमें फूँकै बहुत फ़ायदा करैगा ॥

अथ जुकाम और नजलेका इलाज ।

जो फुजलात याने रतूबत दिमागसे नाककी राह निकले उसको जुकाम कहतेहैं और जो हलके रास्ते गिरै उसका नाम नजला. अगर इस मवादमें खराश और जरदी या आँखमें सोजिश हो तो गरमीसे होगा नहीं तो शरदीसे है इस बीमारीमे औंधेसोना और दूध दही और स्त्री संगतसे बहुत परहेज करै (माजूम) अजवाइन ५ मासे, अफीम ५ मासे, कालीमिर्च १० मासे और अकरकरा, बालछड़, नरकचूर, गुग्गल, तज, कायफल, सोंठ ये सब दवा एक २ मासा, मरमकी आधा मासा सबकी बराबर तीनगुणे शहदमें किवाम करके अंदाजसे खावे (बफारा) झाऊके पत्ते जोश देके बफाराले । शक्कर और चंदरसका धुआँ जुकाम गरमको मुफीदहै (गोली जदवार) जदवार, खताई, कतीरा, गोंद, गुलहठी, कालीमिर्च, दाने इलायची सब दवा दो दो मासे और नरकचूर, नागरमोथा, बालछड़, तेजपात, कबाब, पीपल, खोलन जान, सोंठ, इस्पद. ये सब दो २ मासे और मरमकी, अकरकरा चार २ रत्ती पीस छानके चने बराबर गोलियां बनावे खुराक २ गोली रोज, नजले, और जुकाम

को मुफ़ीद है और थूंक जियादा करै । दमा कूज़ा नजलेको सीनेपर गिरने नहीं देताहै (दवा) ७ कालीमिर्च पानीसे निगला करै मुफीदहै (दवा) समुद्रफलकी गिरी औरतके दूधमें पीसके नास करै (तिला) लौंग पीसके तालूपर लगावै (जुशांदा) जुकामके वास्ते मुलहठी, गावजुबां बनफ्शा, खतमी उन्नाव, मुनक्का रातको गरमपानीमें भिगोके सबेरे मल छानके शर्बत या मिश्री मिलाके ३ दिन पिलावे और खांसीको मुफीदहै ॥

अथ इलाज दांतोंके दर्दका ।

मुनासिबहै कि कड़ी चीज न खावे और बाद खाना खानेके दांतोंको साफ करता रहै और जो दर्द दांतोंके हिलनेसे हो और दांत कम हिलतेहों और बुढापा नहो इलाज करै (इलाज) नरकचूर मुंहमें रखना मुफीदहै । अगर मसूढ़ोंपर वरमहो तो एकवार शर्द पानीसे और एकदफे गरम पानीसे कुल्ली करै और ख्याल करै कि किस पानी से फायदा मालूम होताहै । अगर दर्द शर्द है तो गरम पानीसे फायदा मालूम होगा तब वैसा इलाज करै जो दर्द गरमहै तो शर्दपानीसे फायदा मालूम होगा । हल्दी पीसके मलना मुफीदहै । कालीमिर्च तुलसीकी पत्ती पीसके गोली बनाके दांतोंके नीचे दबावे । अजीरके दूधमें रुई भिगोके दबावे । दसबगोल सिरकेमें भिगोके दांतोंमें रखना मुफीदहै । सिरके और शहदमें सोंठ

तहलील करे (चूरण) सोंठ १ तोला, सौंफ ५ तोले मस्तगी ३ तोले पीसके ५ मासे खावे (चूरण) भूंखके वाते मुफीदहै—कालानमक, कालीमिर्च, पीपल दो २ तोले और सुहागा भुना १ तोला नींबूके रसमें पीसके १ मासा खाना खानेके बाद खावे ॥

अथ सोजाकका इलाज ।

बहुत शर्द दवाई पेशाबकी सो जिसके वास्ते मुफीदहै—(गोली) पिया बांसेका पेड़ जलाके उसकी राखको कतीरेके पानीमें मिलाके चनेके समान गोली बनावे और १ गोली गुलखेरूके पानीके साथ खावे (सफूफ) सेलखरी राल, मिश्री दो दो तोले, तालमखाना, गोखरू और सरयाली एक २ तोला, कूट छानके १४ हिस्से करे १ हिस्सा लस्सी बकरीके दूधके साथ फांके (दवा) जिसका शर्द मिजाज हो उसको मुफीद है—सहिंजनेका गोंद १ तोला, पीस के सवेरेके वक्त ७ दिन दहीके साथ खावे (दवा) आमला और हल्दी बराबर की कूट छानके उसके बराबर शक्कर मिलाके खुराक १ तोला रोज पानीके साथ खाना मुफीद है (दवा) सोजाककी पीबके वास्ते मुफीद है—राल पीसके उसके बराबर मिश्री मिलाके ३ मासे रोज १८ दिन तक खावे ॥

अथ आतशकका इलाज ।

इस बीमारीमें शर्द दवा बहुत न खावे क्योंकि बीमारी

गठियाकी हो जातीहै, मुनासिव है कि पहले मुसहिल ले फिर और दवा करै (मुसहिल) पुरानी सुपारी ४ तोले, जवा हड़ ४ तोले कूटकर रातको एक सेर पानीमें भिगोदे सवेरे आग पर जोशदे जब तीन हिस्से पानी जल जावे तब छानके पिला देवे इस तौरसे एक एक दिनका बीच देके तीन जुलाब दे और खानेको मूंगकी खिचड़ी खिलावे और खटाई-मिर्च, तेल, गुड़ थोड़े दिनतक न खावे (गोली) तुलसीकी पत्ती हरी ४ मासे, तूतिया १ मासा पीसके बेरके समान गोली बनावे १ गोली सवेरेके वक्त गरम पानीके साथ खावे. खुराक खिचड़ी बे घी देवे (गोली)कत्था, संखिया, इला, यचीके दाने, खरिया सब बराबर तौलके गुलाबके अर्क में पीसके ज्वारके समान गोलियाँ बनावे फिर १२ दिन तक १ गोली रोज खावे । अगर कम ताकत हो तो १ गोली रात दिन बीच देके खिलावे परहेज बहुत करे ॥

अथ गठियाका इलाज ।

इस बीमारीका इलाज बहुत जल्दी करे हर एक बंदमें दर्द होताहै और हाथकी उंगली टेढ़ी होजातीहैं इसका एक नुसखा माजूमका आजमाया हुआ लिखतेहैं— (माजूम) अरंडीके फलकी गिरी १० तोले, बादामकी गिरी ५ तोले लौंग ६ मासे, जाफरान ६ मासे, पीपल छोटी ६ मासे और इलायची ६ मासे सब दवा बारीक पीसके १ सेर दूधमें

पकावे जब दूध जल जावे तब तीन पाव खांड मिलाके किवाम पकावे और एक अमृतवान जो चीनीका हो उसमें भरके चालीस दिनतक यवके भीतर दबावे फिर शरदी- के दिनोंमें रोगीको ३ मासे से शुरू करे । अगर ताकत होतो १ तोलेतक रोज खिलावे नारायणकी कृपासे आराम होगा मगर चालीस दिनतक परहेज करे बादमें ताकतकी गिजा खिलावे ॥

अथ जुजामका इलाज ।

यह बीमारी सोदावी है मुश्किलसे आराम होती है । फस्द और मुसहिल इस बीमारीमें मुफीद है । बकरीका दूध पीना फायदेमंदहै । (दवा) नींबकी पत्ती और उसके बराबर काले तिल, थोड़ासा लाहोरी नमक और सबके बराबर पुराना गुड़ मिलाकर हररोज ५ दिवस खावै । झाऊ और शीशमका शर्वतभी मुफीद है ॥

अथ बवासीरका इलाज ।

इसकी दो किस्में हैं—एक खूनी, दूसरी बादी. मगर परहेज तेल, गुड़, खटाई, मिर्च और गन्ना या जो चीज बादी या काबिज हो न खावे (गोली) खूनी और बादीके वास्ते मुफीद हैं बल्कि आजमूदा हे । नगर कोठी रसोत५ तोले, शोरा कल्मी ५ तोले, एक मूलीको अंदरसे खाली करके उसके भीतर ये दोनों चीजें भरके और मलीन

लगाके ऊपरसे कपड़ा मिट्टी लपेटके आगके भूबलमें दबा दे फिर निकालकर कपड़ा छुदाकर मूली समेत पीसले और चनेके समान गोलियाँ बनाके छायामें सुखाके आठ दश गोली रोज़ खावे ॥

अथ दर्द गुर्देका इलाज ।

(दवा) गुलदाउदीकी पत्ती सुखाके कूट छानके बराबरकी शक्कर मिलाके खावे मुफीदहै (दवा) जंगली कबूतरकी बीट २ मासे बराबरकी शक्कर मिलाके खावे (दवा) तिलकी लकडीकी राख करके २ मासे रोज २ तोले शहदमें मिलाके खावे मुफीदहै (दवा) १ मासा करंजवेकी गिरीकूट छानके १ तोला शहदमें मिलाके खावे मुफीदहै । जवारिश कलौंजीभी बहुत मुफीद है ॥

अथ पेशाब बहुत आनेका इलाज ।

(दवा) काले तिल और शक्कर मिलाकर खावे और जवारिश कलौंजीभी मुफीद है तथा जवारिश खोलनजान बहुत मुफीद है (सफूफ) सूखे सिंघाडे कूट छानके शक्कर मिलाके १ तोला रोज खावे (दवा) सूखी बबूलकी फली कूट छानके घीमें भूनकर शक्कर मिलाके ६ मासे रोज़ खावे॥

अथ पेशाब बंद होजानेका इलाज ।

(दवा) राई १ मासा, शोरा कलमी १ मासा, बराबर की शक्कर मिलाके दो खुराक करै (दवा) चूहेकी मेंगनी

पानीमें पीसके नाकके नीचे लगावे पेशाब खुल जावे (दवा) शोरा कल्मी कपड़ेमें तर करके नाकके नीचे रखदे ॥

पेशाबमें खून आना ।

(दवा) जवासा पीसके पीना मुफीद है (दवा) १२ दाने चाकसूके पीसके खावे ऊपरसे बुरादा चन्दनका पानीमें भिगोके छानके पीवे ॥

अथ ज्यादा पियासका इलाज ।

अक्सर गरमीसे होतीहै । शीरा तुख्म खुरफा या शिकंजबीन सादा पिलावे और लुआब ईसबगोल शर्बत नीलोफरमें मिलाके पीना मुफीद है (दवा) पियास और कैको मुफीदहै—पीपलकी छाल जलाके पानीमें डालदे जब राख नीचे जम जावे तब पानी नितारके पिलावे (दवा) लडकोंकी पियासके लिये, जो गरमी होतीहै कमलगट्टा कूटके पानीमें भिगोदे फिर वह पानी पिलावे (दवा) नीबकी पत्ती मिट्टी पिंडोलमें मिलाके गोली बनाके आगमें डालदे फिर पानीमें बुझाके वह पानी पिलावे बहुत फायदा करे (दवा) आमला और सफेद कत्था मुँहमें रखना मुफीदहै (दवा) नारियलका छिलका आगमें जलाकर पानीमें बुझाकर फिर पानीको छानके पिलावे मुफीदहै ॥

अथ हिचकीका इलाज ।

अगर खाना खानेके पीछे हिचकी आवें तो के करानी मुनासिबहै और हाथ पांवका बांधना, खुशी, डर,

गुस्सा, गफलतसे शर्द पानी मुँहपर डालना, छींक लाना दम रोकना, कंधोंपर सींगी और पछने लगाना हिचकीके वास्ते बहुत मुफीदहै (दवा) ३ मासे कलौंजी पीसके दहीके गरमेमें मिलाकर खाना बहुत मुफीदहै और तरकीब गरमेकी यहहै कि, ताजे दहीको कपड़ेमें बांधदे जब पानी निकलजावे तब काममें लावे (दवा) काले उड़द चिलममें रखकर पीना बहुत फायदेमंद है (दवा) चनेका भूसा हुक्केमें पीना मुफीदहै (दवा) झाऊका जीरा पानीमें जोश देकर छानकर पीना मुफीदहै (दवा) बबूलके कांटे आध-सेर पानीमें जोशदे जब तीन हिस्से पानी जलजावे तब छानकर पिलावे बहुतमुफीद है॥

अथ पेटमे दूध और खून जम जानेका इलाज॥

पेटका फूलना और शर्द पसीना आना और गशका आना इसकी निशानीहै (दवा) पोदीनेके अर्कमें शक्कर मिलाके पीना मुफीदहै (दवा) राई पानीमें पीसके पीना मुफीदहै (दवा) अंजीरकी लकड़ी जलाके उस राखको पानीमें घोलके पीना फायदा करताहै॥

अथ बगलकी बदबूका इलाज।

चूना पानीमें पीसकर लगावे (दवा) जामुनकी छाल और पत्ते पानीमें जोश देके बगलको धोवे (दवा) अडूसेके पत्ते पीसके बगलपर मले (दवा) मुरदारसिंग पानीमें पीसके बगलमें मले॥

अथ शीतका इलाज ।

मूंग जलाकर पीसके मले (दवा) बैंगन और पोस्ता खसखसकूटके पानीमें जोश देके हाथ पांवको उसमें तर करै (दवा) काले धतूरेके बीज जलाकर पीसके ८ दिन तक १ मासे रोज खावे फायदा करै (दवा) बबूलके पत्ते पीसके हाथ पांवपर मले (दवा) ऊंटकटारेकी सूखी जड़ पीसके १ तोला शहद मिलाकर ७ दिनतक खावे मुफीदहै ॥

अथ नासूरका इलाज ।

पापोटनकी जड़ पानीमें घिसके नासूरपर लगावे (दवा) सांपकी कैंचली जलाकर उसकी राख बरगदके दूधमें मिलाकर फिर उसमें रुई भिगोके नासूरपर रखदे १० दिन बाद फायदा देखे (दवा) एरंडकी कोंपल पानीमें पीसकर नासूरपर लगावे (दवा) छोटी कटाईके फलको कूट छान कर पानीमें मिलाके फीहा भिगोकर लगावे (दवा) घोड़ेका सुम जलाकर अलसीके तेलमें मिलाके लगावे (दवा) चिड़याकी बीट पानीमें पीसके लगावे मुफीदहै ॥

अथ खूनके बंद करनेका इलाज ।

घोड़ेकी लीद बांधे उसीवक्त खून बंद होजावे (दवा) संगमरमर जलाके उसकी राख लगावे मुफीदहै (दवा) माजूम जलाके उसकी राख लगावे मुफीदहै (दवा) कूएँकीकाई खूनको बंद करतीहै मुफीदहै

अथ आगसे जलजानेकी दवा।

इमलीकी छाल पीसके घीमें मिलाके लगावे (दवा) बरगदकी कोंपल पीसके दहींमें मिलाके लगावे (दवा) सीप घिसके अंडेकी सफेदी मिलाके लगावे (दवा) लालमिर्च पीसके लगावे मगर उसवक्त तकलीफ बहुत होगी ॥

अथ कंठमालाका इलाज।

इस बीमारीमें आदमीके गलेपर वरम होजाताहै। पहले बलगमको दूर करै अगर मुनासिब होवे तो जोंक लगावे और परछावेका ख्याल करै (दवा) लसोढेके पत्ते भूभलमें गरम करके रोज कंठमालापर बाँधे मुफीदहै (दवा) मूलीके बीज बकरीके दूधमें पीसकर लेप करै बहुत मुफीदहै (दवा) कसोंदीकी पत्तियां और चार कालीमिर्च रोज़ पीसकर लेप करै मुफीदहै (दवा) कतीरा पाँच हिस्से नानख्वा दो हिस्से बारीक कूट छानकर फिर धनियाँकी पत्तीके रसमें मिलाकर रोज़ लेप किया करै बहुत मुफीद होगा (फ़ायदा) लिखाहै कि बीमारी अच्छीतरह नजावे तबतक ४ मासे छोटी हड़ कूट छानकर रोज़ खायाकरै और यह दवा लगाया करै बहुत मुफीदहै (मलहम) गूगल १ तोला कालीमिर्च तीन मासे सिरकेमें पीसके मलहम बनावे ॥

अथ आवाजके बढ़ानेका इलाज।

जो नजला हलककी तरफ गिरै और उससे आवाजबढ़-

जावे तो थोड़ी अफीम खायाकरै और खसखस और अजवायन जोश देके गरारे करै बहुत मुफ़ीदहै और जो बलगमके बायससे हो तो गोंदीकी जड़ पुरानी तीन वर्षकी हो वह जमीनके नीचे होतीहै थोड़ी २ मुँहमें रक्खे (दवा) आवाज बंदको खोलदे— अदरखमें सुराख करके थोड़ी हींग और नमक भरके फिर अदरखको कपड़ेमें लपेटके उसपर मिट्टी लगाके भूभलमें रखदे जब अदरख पकजावे और खुशबू आनेलगे तब आगसे निकालके कपड़ा उतारके थोड़ी २ खावे आवाज खुलजावे (दवा) मूलीके बीज कूटके गरम पानीमें मिलाके फिर साफीमें छानके खावे (दवा) मालकांगनी, बच, अजवायन खुरासानी, कुलींजन और पीपल सब बराबर तौलके पीस छानके शहदमें मिलाके २ मासे रोज दोनों वक्त चाटे मगर लालमिर्च खटाई तेल और गुड़ कुछ दिन न खावे (दवा) थोड़ी हींग गरम पानीके साथ खावे (दवा) करनबकी चटनी बारीक पीसके खावे मुफीदहै (दवा) मुँहमें कबाबचीनी रखना मुफ़ीदहै ॥

अथ चोटका इलाज ।

आदमीको मुनासिब है कि, पहले इस बातका ख्याल करै कि, चोटसे पहले कोई बीमारी तो न थी अगर वरम या तप होवे तो पहले इसका इलाज करै फिर चोटका इलाज करना मुनासिबहै । (गोली) चोटके वास्ते—पीपलकी

२१ पत्ती पीसके गुड़में मिलाके गोली बनाके ७ दिनतक खावे (दवा) बारहसिंगेका सींग पानीमें पीसके पीवे ॥

चोट और बदनमें खून जम जानेको इलाज।

एक मासा फटकरी पीसके ४ तोले घीमें भूने जब फटकरी घीमें जमजावे तब ऊपरके घीको लेके उसके बराबर की शक्कर और मैदा मिलाके हलुवा पकाके खिलादे बहुत मुफीदहै (सफूफ) चोट और दर्दके वास्ते मुफीद है—नमक ६ मासे शक्कर ६ मासे मिलाके फांके ॥

अथ बदनके दुबला होजानेकी दवा।

दूधमें रोटी भिगोके खाना मुफीदहै (दवा) औरतोंके वास्ते मुफीद है—असगंध और दोनों मूसली बराबर गायके दूधमें पकाके खावे या दूधके साथ फांके ॥

अथ कमलबायका इलाज।

बबूलके फूल और मिश्री बराबरकी मिलाके सवेरे १ तोला खावे (दवा) दो तोले बिनौले रातको भिगोदे सवेरे पीसके कुछ लाहोरी नमक मिलायके पियाकरै (दवा) मूलीके पत्तोंका रस १० तोले उसमें १० तोले शक्कर मिलाकर सात दिनतक पिलावे नारायणकी कृपासे बहुत जल्दी आराम होगा ॥

अथ तिल्लीका इलाज।

पानी खराब तौरसे पीनेसे यह बीमारी होजातीहै। एलवा

बक्कल, बड़ी हड़, सोहागा, कालीमिर्च, सब बराबर लेके घीगुवारके पानीसे ४ पहर खरल करै फिर गोली बनाके एक मासे रोज खावे (गोली) हींग, एलुवा, सुहागा, नौसादर, सज्जी सफेद, बराबर लेकर घीगुवारके लुआबमें जंगली बेरके बराबर गोलियां बनावे और एक गोली खावे (फायदा जिस आदमीके तिल्ली हो उसको मुनासिबहै कि, रोज लोहेका पानी बुझा हुआ पिया करै (गोली) सुहागा भूना हुआ, सोंठ, सैंधानमक और हींग सब बराबर लेके सहिंजनेके रसमें जंगली बेरके बराबर गोली बनाके सबेरे वा शाम एक गोली खायाकरै (दवा) नमदेका टुकड़ा सिरकेमें भिगोकर तिल्लीपर बांधे (दवा) भूनाहुआ सुहागा एक हिस्सा-राई तीन हिस्से बारीक पीसकर एक २ मासे सबेरे और शाम खायाकरै (दवा) नींबूका रस एक तोला, प्याजका रस एक तोला मिलाकर १४ दिनतक पिया करै और दाल चावल या खिचडीके सिवाय और कुछ न खावे ॥

अथ दादका इलाज।

यह बीमारी सोदावीहै और जिल्दके ऊपर फैलाती है और खूनसे भी होजातीहै अव्वलमें इसका अलाज अच्छी तरह होसक्ताहै फिर जरूरत पछने और जोंक लगानेकी होजाती है (गोली) राल, गंधक, सुहागा, अजवायन खुरासानी पीसके पानीसे गोली बनावे और दादको खुजाके उसपर लगावे

(गोली) गंधक, मुर्दासिंघ, नौसादर, कत्था, सुहागा, माजू, अफीम, चीनिया गोंद पीसके गोली बनाके नींबूके रसमें घिसके लेप करै (तिला) दादको खुजाके पहले घी लगावे फिर चूना उसपर मले (दवा) मदारके फूल और पवाँडके बीज पीसके खट्टे दहीमें मिलाके मालिश करै (दवा) मूलीके बीज शरीफेके पत्तोंके रसमें पीसके लगावे (दवा) कुचला सिरकेमें पीसके लगावे (दवा) इमलीके बीज सिरकेमें पीसके लगावे ॥

अथ नाखून फटजानेका इलाज।

अनारके पत्ते पीसके बांधे अगर नाखून टूटगया हो तो गीला कपड़ा उसपर लपेटकर पेशाब किया करै और जो नाखून फटगयाहो तो सिरका और तिलका तेल और सरेस आगपर पकाकर थोड़ा २ बांधाकरै।

अथ शिरके जूका इलाज।

पारा मूलीके पत्तोंके रसमें या पानके रसमें हल करके बालोंमें डाले या कालीमिर्च पानीमें पीसके शिरमे डाले (दवा) शरीफेके बीज पानीमें पीसके डाले ॥

अथ फिसाद मुंहके रंगका इलाज।

अगर तिल्ली जिगर या पेटके फसादसे हो तो पहले उसका इलाज करै और जो चीजें खराब हों उनको न खावे बल्कि धूपके फिरनेसे और गरम हवासे बचै और रंज याने

गम और स्त्री सत्संग न करै (दवा) गायके दूधमें जर्द सरसों पकावे जब दूध जलजावे तब सरसोंको सुखाले फिर पीसके उसका उबटना करे (दवा) चना, चावल, मटर यव इनके आटेका उबटना करै (दवा) गोंद, कतीरा, निशाशता, इसबगोलके पानीमें पीसके मलै तो मुँहका रंग उजलाहो ॥

अथ झाईका इलाज ।

आमकी बिजली जामुनकी गुठली पानीमें पीसके मलै (दवा) तुलसीकी पत्ती पानीमें पीसके मलै (दवा) सिरकेमें शहद और नमक मिलाके लगावे ॥

अथ खारिश या खुजानेका इलाज ।

इस बीमारीकी दो किस्मेंहैं एक तर जिस्में खुजानेसे पानी निकल आताहै और दूसरी खुश्क और बदनके ऊपर यह बीमारी मालूम होतीहै और अक्सर यह बीमारी एक आदमीके होनेसे दूसरेके भी होजातीहै इसवास्ते इसको उड़ना रोग कहतेहैं लेकिन मुनासिबहै कि, पहले फस्द हफ्तअंदाम खुलवावे और मिर्च खटाई तेल गुड़ नमक न खावे (दवा) खुजली तरके लिये मुफीद है—छोटी हड़, चिरायता, शातरा, सब दवा एक २ तोले, मुंडी ६ मासे रातको गरम पानीमें भिगोदे सवेरे छानके शर्बत उन्नाव मिलाके पिलावे (दवा) चैत्रके महीनेमें

की कोंपल २ तोले पानीमें पीसके छानके कुछ दिनतक
ा मुफ़ीदहै और सरफ़ाका पीनाभी इसी तरकीबसे इस
ारीके वास्ते मुफ़ीदहै (दवा) छोटी हड़ ३ तोले,
लीमू १० मासे आधसेर गरम पानीमें भिगोदे सवेरे
के २ तोले मीठा मिलाके दो दफ़ेमें पिये (दवा)
कका तेल खुजली तर और खुश्कके वास्ते मुफ़ीद है
रकीब) गंधकको मदारके दूधमें दो दिनतक खरल करे
गोली बनाके छायामें सुखाले फिर बर्त्तनमें रखके पानी
 चार पहर तक नरम आगपर जोशदे जब तेल पानीके
र आजावे उसको काममें लाना मुफ़ीदहै ॥

ालका तेल दाद और खुजलीके वास्ते मुफ़ीदहै ।
हरताल जर्द एक हिस्सा मीठा तेल दो हिस्से पहले तेलको
दे जब लाल हो जावे तब हरताल पीसकर थोड़ा २
 डालके लकड़ीसे हिलाता जावे लेकिन आग नरम करे
तेलमें भड़का याने आग लग जावे तब उस वक्त उस
को बंद करदे इसी तरह पांच दफ़े बर्त्तनको बंद करे
भडका दे फिर ठंढ़ा करके शीशेमें रखदे और धूपमें
 मालिश करे फिर कुछ देर पीछे गरमपानीसे बदनको
ले ॥

रोगन पँवाड़ ।

ाडके बीज एक सेर गंधक ३ दाम एक सेर गायका

दूध और पावसेर घी मिलाके जोश करै जब दूध जल जावे तब छानकै वर्त्तनमें रखले और मालिश करै बहुत मुफ़ीदहै (दवा) २१ दफ़े गायका घी धोके उसमें गंधक और नीलाथोथा गिलाकर मालिश करै ॥

अथ छीप का इलाज ।

काले तिल और हलदी भैंसके दूधमें पीसके लगावे । (दवा) चंपाके फल और छाल उस्के पानीमें पीसके लगावे । (दवा) चंपाके फूल नींबूके रसमें पीसके लगावे (दवा) सीप जलाके सिरकेमें मिलाके लगावे मुफ़ीदहै (दवा) चुकंदरके पत्तेभी मुफीदहैं ॥

बदका इलाज ।

मुनासिबहै कि पहले उसको तहलील याने बैठ जानेका इलाज करै क्योंकि जब पकके फूट जातीहै तब बहुत तकलीफ होतीहै (दवा) केलेकी जड़ आदमीके पेशाबमें पीसके कुछ गरम करके बांधदे (दवा) लसोढ़ेके पत्ते गरम करके बांधना मुफ़ीदहै (दवा) बिनौले कूटके गरमकरके बांधदे (दवा) जब बद निकल आवे तब एक कपड़े पर चूना और शहद लपेट कर लगावे (दवा) चनेका आटा और गूगल पानीमें टिकिया बनाके बाँधना मुफ़ीदहै । (दवा) राई पानीमें पीसके लगावे और पियाज कूटके लड़केके पेशाबमें पकाके बाँधना मुफ़ीदहै ॥

अथ हाथ पाँव फट जानेका इलाज।

अगर ऐंडी फटजावे तो बड़का दूध भरदे।(दवा) बबूलका गोंद पानीमें पीसके भरदे। (दवा) मेंहदी पानीमें पीसके भरदे मुफ़ीदहै। (दवा) चूनेकी मेंगनी सिरकेमें मिलाके लगावे (दवा) पानीमें लसोढेके पत्ते डालके जोशदे जब पानी गाढ़ा होजावे तब मले (दवा) सफदरिया जलाके सिरकेमें मिलाके लगावे ॥

अथ फुन्सी याने छोटे दानाका इलाज।

सिरसकी छाल पानीमें पीसके लगावे (गोली) रसोत गेरू, मुरदारसिंघ, कत्था, लाल चन्दन, काबली हड़, ये बराबर, कूट छानके मकोयके रसमें गोलियां बनाके फिर पानीमें घिसके लगावे (गोली) हरएक क़िस्मकी फुंसीको मुफ़ीदहै मुरदारसिंघ, बड़ी हड़का बक्कल, भंग, चूनेकी कलई, कत्था, ये सब दो दो मासे, नीलाथोथा १ मासा पानीमें पीसके गोली बनावे फिर पानीमें घिसके लगावे (गोली) कत्था मुरदारसिंघ, नीलाथोथा, ये सब बराबर लेके भूनले और मग्ज बेलगिरीभी बराबर ले फिर बारीक पीसके गोली बनाके जब ज़रूरत हो पानीसे घिसके लगावे ॥

अथ मकड़ीके फलका जानेका इलाज॥

सफ़ेद जीरा और सोंठ पानीमें पीसके लगावे (अथ तिला) मंढवा पानीमें पीसके लगावे ॥

अथ सफ़ेद दागोंका इलाज ।

यह बीमारी बहुत खराबहै जहाँतक हो शर्द चीज़ न खावे इसकी दो क़िस्में हैं एक वह है जो जिल्दके ऊपर हो दूसरी वह है जो जिल्दके भीतर याने मांसके अंदर घुसे रहतेहैं इलाज जल्दी करे (गोली) अंजीरकी छाल ४तोले शीतरज २ तोले, गंधक २ तोले, यवाहड़ १ तोला, धनियां १ तोला, कूट पीसके गायके बच्चेके पेशाबमें मिलाकर जोशदे जब गाढ़ा होजावे तब जंगली बेरके बराबर गोलियां बनावे और एक महीने या बीस दिनतक बराबर १गोली सवेरे १ शाम खावे (गोली) गेरू, गंधक, बावची, बराबरकी बारीक पीसके अदरखके पानीमें रीठेके बराबर गोलियाँ बनावे और १ गोली कूटके आधपाव पानीमें रातके वक्त भिगोदे सवेरे पानी नितारके पी जावे और फोक उसका बदनपर मलके धूपमें बैठ जावे और खटाई या बादी चीज़ न खावे ॥

अथ घूंसका तेल ।

दागोंपर मालिश करना मुफ़ीदहै (तिला) मालकांगनी गायके पेशाबमें २१ दिन भिगोके तेल निकालके मालिश करे (तिला) कलौंजी सिरकेमें पीसके सफ़ेद दाग पर लगावे (गोली) अजमोद, बावची, पँवाड़के बीज, कमलगट्टा, बराबर लेके गुड़में [illegible] खुराक ४[illegible] ॥

अथ बाँझ स्त्रीका बयान।

यह बीमारी औरतोंको होतीहै और अक्सर मर्दोंकोभी होतीहै और जैसे बाजा पेड़ बगैर फलके रहजाताहै और पहँचान यह है कि सात २ दाने बाकलेके या गेहूँके वर्त्तनमें रखके पेशाब करे जिसके दाने फूट निकलें उसकी तरफ इस बीमारीका ख्याल न करो॥

अथ दूसरी पहँचान।

दो प्यालोंमें पानी भरके मर्द औरत उनमें अपनी २ धातु डालें जिस्की धातु पानीके नीचे बैठ जावे तब मालूम करो कि उसे यह बीमारी नहीं है॥

अथ तीसरी पहँचान।

दो पेड़ कद्दु या काहूके हों और जुदा २ मर्द औरत उन पेड़ोंके जड़में पेशाब किया करैं जिसके पेशाबसे पेड़ सूख जावें तो मालूम करो कि उसको यह बीमारीहै मगर औरतोंका इलाज होसक्ताहै जो नारायण कृपाकरैं॥

दवा॥ १॥

बुरादा हाथी दांतका कूट छानकर बराबरकी मिश्री मिलाके रखछोड़े जब औरत रजस्वला हो उसके तीसरे दिन ९ मासे रोज ७ दिनतक खावे फिर मर्दके साथ संवसंग करै॥

दवा ॥ २ ॥

कायफलको ३ तोले ले कूटि कपड़छान करिकै उसीके बराबर मिश्री मिलाके ९ मासे ऊपरकी तरकीबसे खावे ऊपरसे दूध चावल खावै तब पुरुषकी संगत करै ॥

दवा ॥ ३ ॥

असगंध नगौरी ५ तोले लेकर कूटि कपड़छानकर स्त्री रजस्वलाके पीछे स्नानकर साफ होय तब १ तोला पहिले दिन खावे दूसरे दिन २ तोले खावे और ऊपरसे दूध चावल खावे तब पुरुषके साथमें स्त्री रमण करै ॥

दवा ॥ ४ ॥

हाथीका पेशाब सत्संगसे पहले या उसवक्त औरतको पिनाला बहुत मुफ़ीद है ॥

दवा ॥ ५ ॥

समुद्रफल थोड़े दहीके साथ औरत निगल जावे बहुत मुफ़ीद है ॥

दवा ॥ ६ ॥

बाजकी बीट अगर औरत खावे तो बहुत मुफ़ीद है ॥

अथ इलाज उस वक्तका कि जब औरत गर्भसेहो.

औरतके वास्ते चौथे महीनेसे पहले और सातवें महीनेके पीछे जुलाबका देना और फस्तका खुलवाना नुक्सान देताहै और दो महीने बाद मर्दसे संगत न करै और खाना-

भी पेट भरके न खावे अगर औरतको कोई बीमारी दर्द-शिर या मितलीकी नहो और उसको अपने दाहने तरफ बोझ मालूम हो और दाहनी छाती बड़ी हो और छातियोंपर सुरखी हो तो उस औरतके लड़का ज़रूर पैदा होगा और जिसकी भूख कमती होगी और उसका शिर भारी होगा और मुँहपर जरदी और रूखापन होगा और सुस्ती होगी और नींद आवे और चलते वक्त पहले दाहिना पैर उठावे और दाहिना हाथ टेकके उठे तो उसके लड़की पैदा होगी. बल्कि हकीमोंने लिखाहै कि, अगर औरत गर्भवाली अपनी हथेलीपर जूं रखके उसपर अपना दूध दुहे अगर जूं उस दूधमें रिंगें तो लड़का होनेकी निसानी है और जूं मरजावे तो लड़की होगी और यों भी कहतेहैं कि चुकंदरके सूखे पत्ते मलके औरतकी नाकमें भूंखे अगर छींक आवे तो लड़की होगी और जो न आवे तो लड़का जनेगी ।

अथ वह दवा कि जो गर्भको गिरने न दे ।

बड़ी इलायचीके दाने २ मासे कंदमें मिलाके रोज़ खावे ।

तदवीर ॥ १ ॥

लाल कपड़ेमें तागेसे कि जो कुसुम्भमें रँगाहो करंजवा बांधके नव महीने कमरमें बांधे गर्भ न गिरै

तदवीर ॥ २ ॥

कहरुवाभी कमरमें बांधना मुफ़ीदहै ॥ जो सूत

कुँवारी लड़कीने काताहो औरतके शिरके तालूसे पैरके नाखूनतक नापके उसे २१ तार बनावे और काले धतूरेकी जड़ लेके उसके ७ टुकडे करके उस तागेमें जुदी २ बांधे फिर औरतकी कमरमें बांधे गर्भ न गिरै ॥

तदबीर ॥ ३ ॥

जमुर्रदकी अँगूठी बनवावे हाथमें पहने औरतके वास्ते नुक्सानमंद है ॥

अथ बीमारी खूनहैजका इलाज ॥

अगर खून हैजका वक्तसे आगे पीछे जावे तो खराब है बल्कि औरतको कमजोरी बहुत होतीहै और इस बीमारीमें छातियोंके नीचे सींगी लगाना बहुत मुफ़ीदहै ॥

दवा ॥ १ ॥

खून हैजका बंद करै ॥ बैंगनकी कोपल पानीमें घोटके पीना मुफ़ीद है ॥

दवा ॥ २ ॥

चने जलाके तज और लोध बराबरका मिलावे सबके बराबर शक्कर मिलाके एक हथेली भरके सवेरेके वक्त फांके खूनको बंद करै ॥

दवा ॥ ३ ॥

६ मासे मालतीके फूल और ६ मासे शक्कर मिलाके फांके ॥

दवा ॥ ४ ॥

६ मासे गेरू और ६ मासे सेलखड़ी पीसके पानीके साथ फांके मुफ़ीद है ॥

दवा ॥ ५ ॥

लाखका दाना बराबरकी शक्कर मिलाके एक हथेली भरके फाँके ॥

दवा ॥ ६ ॥

सात हरसिंगारकी कोंपल और ७ कालीमिर्च पानीमें पीसके पिलावे ॥

दवा ॥ ७ ॥

सुपारीपाक इस बीमारीको मुफ़ीदहै ॥

अथ इलाज बंद होजाने खून हैजका ॥

अगर औरतके तमाम बदनमें खून कमती मालूम होवे और इसी बायससे वह खून बंद होगया हो तो कुछ अंदेशे-का मुकाम नहींहै और अगर किसी और सबबसे बंद होगया हो तो इलाज करना जरूर है ॥

दवा ॥ १ ॥

कपासके पत्ते और फूल आधपाव एकसेर पानीमें जोश दे जब तीनपाव पानी जल जावे तब ४ तोले गुड़ मिलाके छानके पिलादे खून हैजका जारी होजावे ॥

दवा ॥ २ ॥

नीमकी छाल २ तोले सोंठ ४ मासे कूट छानके गुड़

२ तोले सबको पावसेर पानीमें जोशदे फिर छानके पिलां बहुत मुफ़ीदहै ॥

दवा ३ ॥

काले तिल और गोखरू दोनोंको पानीमें भिगोदे सवेरेके वक्त शीरा निकालकर २ तोले शक्कर मिलाकर पिलादे ॥

सफूफ ॥ ४ ॥

खूनको जारी करै ॥ मूलीके बीज, गाजरके बीज, मेथीके बीज सबको कूट छानके एक हथेली भरके गरम पानीके साथ फांके मुफीदहै ॥

जवारिश कलौंजी ॥ ५ ॥

इस बीमारी और पेटके दर्दके लिये मुफ़ीदहै और तरकीब इसकी इस किताबके पहले भागमें लिखीहै ॥

लेप ॥ ६ ॥

नलोंके दर्दके वास्ते मुफीदहै । कालाजीरा २ तोले एरंडीका गूदा आधपाव सोंठ १ तोला सबको जोश देके बारीक पीसकर पेटपर लेप कर देवे इस बीमारीके वास्ते बहुत मुफीद होगा।

दवा ॥ ७ ॥

मँजीठ पीसके खावे खून हैजका बंद होजावे ॥

बत्ती ॥ ८ ॥

गुड़ थोड़े घीमें मिलाके बर्त्तनमें रखके आगपर रखदे,घन-

बत्ती बनानेके काबिल होजावे तब थोड़ा बिरोजा सूखा मिलाके बत्ती बनाके पेटके अंदर पहुँचावे तो खून हैजका अच्छी तौरसे जारी होगा ॥

अथ वरम छाती याने स्तनका इलाज ।

अगर दमवी हो तो फस्द खुलवाना मुफ़ीदहै या जोंक लगाना।

दवा ॥ १ ॥

नीम और बकायनके पत्तोंसे सेंकना और बांधना मुफीदहै ॥

दवा ॥ २ ॥

गुले अब्बासीकी पत्ती और मकोकी पत्ती पीसके गरम करके लगाना वरमको मुफीदहै ॥

दवा ॥ ३ ॥

नागरमोथा और मेथी भेडके दूधमें पीसके लगावे ॥

दवा ॥ ४ ॥

काहू सिरकेमें पीसके लगावे (दवा) इसबगोल सिरकेमें पीसके लगाना या टकोरे देना फायदेमंद है ॥

अथ स्त्रीके दूध बढ़ जानेका इलाज ॥

सातवार दूधमें पीसके मीठा मिलाके औरतको पिलावे ॥

दवा ॥ १ ॥

जीरा सफ़ेद और सांठीके चावल दूधमें पकावे और थोडे दिनतक खिलावे ॥

अथ इलाज परसूतके बयानमें ।

यह बीमारी अक्सर बालक पैदा होनेके पीछे औरतोंको होजातीहै जिस वक्त बालक पैदा होवे उसी वक्तसे खाने और पानीका ख्याल रक्खे और इसकी दो क़िस्में हैं.एक शर्द, दूसरी गरम. जैसा मुनासिबहो वैसा इलाज करै॥

दवा ॥ १ ॥

लोहबानका सत १ मासे और मुश्क २ रत्ती आठ दिनतक खिलावे ॥

दवा ॥ २ ॥

नागकेसर एकहिस्सा कालीमिर्च दो हिस्से बारीक पीसके अदरखके रसमें जंगलीबेरके समान गोलियां बनावे और ४ गोली दोनों वक्तमें खिलावे ॥

दवा ॥ ३ ॥

अजमोद, दालचीनी और लोबान इन तीनोंको बराबर तोलके बारीक पीसले फिर उसमें थोड़ी शक्कर मिलाके जिस क़दर मुनासिब हो खिलावे ॥

॥ ४ ॥

पीपल २ मासे, सोंठ २ मासे और धतूरेके बीज १ मासा इन्हें कूट छानके १ रत्तीकी गोली बनावे और जिस क़दर मुनासिब हो दे ॥

(दवा) ॥ ५ ॥

चुकन्दर, नरकचूर, जदवार सब दो २मासे पीसके शहदमें मिलाके जिसक़दर मुनासिबहो दे ॥

अथ इलाज उस वक्तका जब बच्चा पैदाहो।

मालूमहो कि उस वक्त होशियार दाईको औरतके पास रखना जरूरहै और खुशबूदार चीज़ उस मकानमें न जानेदे बच्चेके पैदा होनेमें तकलीफ बहुत हो तो छिल्के अमलतासके १ तोले पानीमें जोश देके थोड़ी शक्कर मिलाके पिलावे॥

(दवा) ॥ १ ॥

घोड़ेके दोनों पावँकी सुमकी धूनी देना या घोड़ेकी लीद और कबूतरकी बीट पानीमें घोलके औरतको पिलाना मुफ़ीदहै ॥

(दवा) ॥ २ ॥

साँपकी कैंचलीकी धूनी मरे लड़केको पेटसे उसी वक्त निकाले और गाजरके बीजोंकी धूनी मुफ़ीदहै ॥

(दवा) ॥ ३ ॥

गुलेबाबुना ९ मासे थोड़े पानीमें जोश देके शहद मिलाके पिलावे ॥

(दवा) ॥ ४ ॥

अगर हालत गर्भमें खून हैजका जारी होजावे तो गूलरकी छाल कूटके पानीमें जोश देके पिलावे॥

सफूफ ॥ १ ॥

कड़ २ तोले, काले तिल ७ तोले, खसखस ५ तोले, बिनौलेकी गिरी ४ तोले, इन्द्रयव ४ तोले कूट छानके सबके बराबर मिश्री मिलाके चूरण बनावे खुराक १ तोले गायके दूधके साथ ॥

सफूफ ॥ २ ॥

पावसेर पीपलको आधसेर दूधमें जोशदे जब दूध-बाक़ी न रहै तब पीपलको सुखाके पीसले खुराक मिश्री मिलाके ६ मासे रोज़ ॥

सफूफ ॥ ३ ॥

बाहको कुव्वतदे मनीको पैदाकरै सेंभलका मूसला बारीक पीसके बराबरकी खांड मिलाके १ तोले गायके दूधके साथ खावे ॥

सफूफ ॥ ४ ॥

सिरसके बीज और पलाशके बीज़ बराबर कूट छानके मिश्री मिलाके दूधके साथ खावे ॥

सफूफ ॥ ५ ॥

चिनियागोंद और बहुफली बराबर पीसके १ तोले गायके दूधके साथ चालीस दिन खावे बहुत मुफ़ीदहै ॥

गोली ॥ ६ ॥

अजवायन ५ मासे, कद्दूके बीज ५ मासे, इसबंद ९

।, भंग ८ मासे, भूनेचने ७ मासे, अफीम ३ मासे
फ़रान ४ रत्ती, इलायची दाने १ मासा पोस्तदो सब-
कूट छानकर उस पानीमें कि जिसमें पोस्त भिगोया हो
ले बेरके बराबर गोलियां बनाकर सुखाले फिर खूराक
गोली रोज़ अगर मुनासिब हो तो २ गोली देवे ॥

शकरकंदका हलुवा ॥ ७ ॥

धातुको पैदा करताहै (तरकीब) पहले शंकरकंदीको
ाके छायामें सुखादे फिर कूटके छानले और घी खांड़
लाके हलुवा पकावे ॥

अंडेका हलुवा ॥ ८ ॥

ेका अंडा १ बताशे ३ घी ३ तोले चिमचेमें पकावे ॥

चमेलीका तेल ॥ ९ ॥

यह तेल बाहको ताक़त देताहै ॥

गुलशब्बूका तेल ॥ १० ॥

बाहको ताकत देताहै इसके फूलोंको तेलमें मिलावे जब
फ़ूल कुम्हिलाजावें तब वे फूल निकालके और फूल बदल दे
ीन बार बदले फिर साफ करके थोड़ा अकरकरा मिलावे
और मालिश करके पान बांधदे ॥

ऊंटकटारेका तेल ॥ ११ ॥

सुस्तीके वास्ते मुफ़ीदहै. इसका १ पेड़ जड़ पत्ते समेत
टावे फिर बकरीके दूधमें भिगोके पतालयंत्रके तरीकेसे
तेल निकाले ॥

अथ इलाज गुरदे और मसानेका।

ये दोनों बीमारी दर्दसे मालूम होतीहैं रंग और पथरी गुरदेमें सुर्ख रंगकी होतीहैं. और मसानेमें सफ़ेद रंगकी ॥

शर्बत ॥ १ ॥

अंगूरके पत्तोंका शर्बत गुरदेकी पथरीको मुफ़ीदहै हंसराज ७ तोले, गोखरू १० तोले, खरबूजेके बीज ५ तोले, सौंफ ३ तोले, मुनक्का १५ तोले, नरम पत्ते अंगूरके ४० तोले, एक रात दिन पानीमें भिगोदे फिर जोश देके तीन गुणी शकरमें किवाम पकावे ॥

सफूफ ॥ २ ॥

संगमसानेको मुफ़ीदहै. गुलदाउदीकी पत्ती सुखाके कूट छानके शक्कर मिलाके फांके ॥

दवा ॥ ३ ॥

जवाखार २ मासे, सुहागा २ मासे, गोखरूके शीरेके साथ पिलावे ॥

दवा ॥ ४ ॥

करंजवेकी कोंपल सुखाकर जलाके उसकी राख ६ मासे गोखरूके शीरेके साथ पिलावे ॥

दवा ॥ ५ ॥

तिलकी लकड़ी जलाके ६ मासे राख २ तोले शहदमें मिलाके खिलावे ॥

दवा ॥ ६ ॥

१ जंगली कबूतरको थोड़े दिन अल्सी खिलावे फिर मासे उसकी बीट और ६ मासे शक्कर मिलाके पानीके थ फांके ॥

दवा ॥ ७ ॥

संगमसाने और गुरदेको मुफ़ीदहै करंजवेकी गिरी कूट नके १ मासे और तीन मासे शहदमें खावे और १ मासा न ११ दिनतक बढ़ाया करै फिर १ मासा रोज़ कमती- रै मुफ़ीदहै॥

जवारिश कलौंजी ॥ ८ ॥

दर्दगुरदेको मुफ़ीदहै ॥

दवा ॥ ९ ॥

पत्थरफोड़ी एक पेड़ होताहै उसके पत्ते ३ मासे कूट ानके शक्कर मिलाके फाँके ॥

दवा ॥ १० ॥

संगगुरदेको मुफ़ीदहै और पेशाब जारी करताहै । झाऊके फूल २ तोले दो पहर पानीमें भिगोदे फिर उसका पानी छानके उसमें ख्यारेन गोखरू सब छः २ मासे, भंग २ मासे पीसके मिलावे और थोड़ी शक्कर डालके पिलावे ॥

दवा ॥ ११ ॥

७ तोले मूलीके पत्तोंका रस निकालके तीन मासे अज-

थोड़ा फाँकके उसी रसके साथ निगले बहुत मुफ़ीद है । या जैसी ताक़त होवे ॥

अथ इलाज हलक याने नरखरेका ।

इस बीमारीकी दो क़िस्में हैं एक सांसका रुकना और दूसरी खाना या पानी मुश्किलसे हलकके नीचे उतरे. इसका बहुत जल्दी इलाज करे ॥

शर्बत शहतूत ॥ १ ॥

नरखरेके वरम, गलेके वरम, कव्वेके वरम और ज़बानको बहुत मुफ़ीदहे (तरकीब) काले शहतूतका रस निकालके बराबरकी कंद मिलाके किवाम पकावे ॥

गरगरा ॥ २ ॥

गलेके वरमको मुफ़ीद है । मको सूखी और नीमके पत्ते और थोड़ा शहद मिलाके पानीमें जोशदे जब आधा पानी जल जावे तब ठंढा करके कुल्ली करे ॥

दवा ॥ ३ ॥

शहतूतका रस, धनियां, मसूर और मकोके पत्तोंका रस निकालके सबको इसी रसमें भिगोदे फिर पानी छानके कुछ गरम करके गरारे करे. वरम गरम तथा सर्द और हलकके दर्दको मुफ़ीद है ॥

दवा ॥ ४ ॥

धनियां और मिश्री चबाना गलेके दर्दको मुफ़ीद है ॥

लेप ॥ ५ ॥

गलेके वरमको मुफीदहै । मक्को, कालीजीरी, कालीमिर्च, खरियामिट्टी, सब बराबर ले और पानीमे पीसके गलेपर लेप करै ॥

लेप ॥ ६ ॥

सूखा करेला पानीमें पीसके या सिरकेमें घिसके लगावे मुफ़ीद है ॥

दवा ॥ ७ ॥

मुरगेकी बीट सिरकेमें मिलाके हलकपर लगावे वरमको मुफ़ीद है ॥

लेप ॥ ८ ॥

तोंबेके बीज, गेरू, लालचन्दन, कालाजीरा, सिरसकी, छाल, कालीमिरच, मसूर, कालीजीरी, करेला सूखा, सोए-के बीज, सब दवा बराबर लेके सिरकेमें पीसके गरम करके लगावे गलेके वरम और दर्दको बहुत मुफ़ीद होगा ॥

दवा ॥ ९ ॥

लड़कोंका कव्वा लटक आवे तो मुल्तानी मिट्टी सिरकेमें मिलाके ऊपर रखदे उसीवक्त आराम होगा ॥

दवा ॥ १० ॥

...हेकी मिट्टी, राई और लाल मिर्च एक २ पीसके मिट्टीमें

अथ जिनूका इलाज।

जो दीवाना बहुत हो उसको जिनू कहतेहैं॥

दवा ॥ १ ॥

गुलेसेवती, गुलेसुर्ख, गुलेनीलोफर, गुलबनफ्शा, अ खद, दूस, गावजुबां, जुशांदा या खिशांदा करके म मिलाके पिलावे जुशांदा रातको गरम पानीमें भिगो खिशांदेकी दवा सवेरेको शोज देतेहैं दवा एकहै लेकिन फायदा जुदा २ है॥

दवा ॥ २ ॥

कद्दूके बीज बकरीके दूधके साथ खिलावे॥

अथ माली खोलिया याने दीवानगीका इलाज।

इसका जलदी इलाज करना चाहिये. पहले फस्त खुलवाना जरूरहे. मरीजको खुश रखना, अच्छी जगह बैठाना, गिजा अच्छी खिलाना और बहुत सुलाना ब अच्छा है और जुलाब देना मुफीदहै और जो बात म ज़को पसंद हो उसमें मशगूल रखना चाहिये लेकि कोई वक्त अकेला न छोड़े॥

दवा ॥ १ ॥

ऑबरेशमखाम, संदलसफेद, आमलातुरुम, खयारेन, तुख कासनी, बादरंजबोया, काजुबां, धनियां, कद्दूकी गिरि काहू, खुरफा, पालक, गुलाब, चाँदीके वर्क, रंग यशब

जहरमोहरा, इन चीजोंमेंसे जो मुनासिब देखे वह देवे और पानी बुझा हुआ पिलावे ॥

दवा ॥ ४ ॥

बकरीका दूध खूबकलाके साथ पिलावे और मिराकभी एक किस्म इस बीमारीसे है बल्कि खट्टी डकार और दर्दभी होताहै किसी हकीम कामिलसे इलाज करावे ॥

अथ जलंधरका इलाज।

इसकी ३ किस्में हैं पहली लहमी, दूसरी जकी, तीसरी तबली. मालूम हो कि लहमीमें तमाम बदनपर वरम होजाताहै बायस उसका जोफ जिगरहै और जकीमें पेट बढ़जाताहै और जिल्द भारी होजातीहै और तबलीमें पेट बढ़जाता है और नाफ निकल आतीहै अगर पेटपर हाथ मारो तो तबलेकी आवाज आतीहै सबसे खराब लहमीहै इलाज इसका यूनानी किताबोंमें लिखाहै कि पानी न दे बल्कि पानीके जगह अर्कसौंफ या अर्कमको पिलावे अगर पानी देवे तो जोश करके थोड़ा २ पिलावे और मुंजिज और मुसहिल देना बहुत मुफीदहै और बीमारको गरम रेतोंमें गर्दनके नीचे तक दबाना मुफीदहै और सूर्यकी तरफ पीठ करके धूपमें बैठना अच्छाहै ॥

शर्बत रेवंद ॥ १ ॥

तबलीके वास्ते मुफीदहै। रेवंद ५ दिरम, तुख्मकासनी

७ दिरम, बेखकासनी १० दिरम, सौंफ २ दिरम, मगसूल २ दिरम, पावसेर कंदमें किवाम पकावे खुराक २ तोले रोज़॥

जुशांदा ॥ २ ॥

लहमीके वास्ते मुफ़ीदहै,लेकिन बगैर हरारतके हो । अजवायन सौंफ जोश करके पिलावे ॥

गोली ॥ ३ ॥

हरे पत्ते मदारके पावसेर, हलदी १ तोला ९ मासे दोनोंकी पीसके उडदके समाने गोली बनावे और ४ गोली रोज ताजे पानीके साथ खावे और १ गोली रोज़ बढ़ावे सात दिनतक बहुत मुफीदहै ॥

गोली ॥ ४ ॥

एलवा ४ दिरम, बकल बडी हड १ दिरम, अजवायन १ दिरम, कालीमिर्च १ दिरम कूट छानके चनेकी बराबर गोली बनावे. खुराक ३ दिरम रोज़ और १ दिरम ३ मासेका होताहै ॥

दवा ॥ ५ ॥

सिरसकी छाल पानीमें जोशदेके पीना मुफ़ीदहै ॥

दवा ॥ ६ ॥

हुक्केका पानी जो दो तीन दिनका हो, पीना मुफ़ीदहै ॥

दवा ॥ ७ ॥

गायका गोबर नमक मिलाके लगाना मुफ़ीद है ॥

दवा ॥ ८ ॥

गोबर जलाके उसकी राख साढ़ेतीन मिस्काल रोज़ खावे ॥

दवा ॥ ९ ॥

इंद्रायनकी जड़ पानीमें जोशदेके पीना मुफ़ीदहै ॥

दवा ॥ १० ॥

ऊंटका पेशाब पीना मुफ़ीदहै । सवेरे वक्त ७ तोले ऊटके पेशाबमे ३ मासे बड़ी हडका बक्कल मिलाके पिलावे ।

दवा ॥ ११ ॥

ऊंटनीका दूधभी इस बीमारीमें बहुत फ़ायदा करताहै ॥

दवा ॥ १२ ॥

मूंलीके पत्तोंका पानी अगर बीमारको पिलावे मुफ़ीदहै ॥

दवा ॥ १३ ॥

लाल बकरीका पेशाब ६ तोले उसमें २० मासे बाल-छड मिलाके पिलावे ॥

माजूम जाफरान ॥ १४ ॥

जलंधर-और सख़्ती और दर्द जिगर तबलीको मुफ़ीदहै॥

तरकीब ।

जाफरान, कुस्त, असारो, बालछड, तुख्म, करफस, अनीसूं, गुलाबके फूल, तुख्मकासनी ये सब दवा दो दो तोले, मस्तकी, रेवद १ तोला पीस छानके तीन गुणे शाहदमे केमाम पकाके तीन मासेसे बीस मासे तक सौंफके अर्कके साथ खिलावे ॥

गोली ॥ १५ ॥

गंधक, बहेड़ा, पारा, हड, आँवला, सज्जी, कालानमक लाहौरीनमक, सांभरनमक, सो॰ेर, कालीमिर्च और सुहागा ये सब दवा बराबर ले और जमाल गोटा दो हिस्से पीसके २१ दफे नींबूके रसमें पीसके खावे लेकिन सुहागेको भूनले फिर कालीमिर्चके समान गोलियाँ बनाके एक गोली रोज ऊंटनीके दूधके साथ खावे ॥

सफूफ ॥ १६ ॥

जलंधर लहमी और तबलीको मुफीदहै । सोंठ, नागरमोथा, जीरा सफेद, शीतरज, कटाई, हल्दी, गजपीपल, सब बराबर तौलके कूट छानके चूरण बनावे। खुराक जैसी ताक़त होवे ॥

सफूफ ॥ १७ ॥

जलंधर तबलीके वास्ते मुफीदहै । तुख्म करेफस, बिरंजकाबली, शीतरज, कालीमिर्च, पीपल, पीपलामूल, सौंफ कालानमक ये सब दो दो और पांच बड़ी हडका बकल सोंठ पीस कूट छानके खुराक ३ तोलेसे २ तोले तक सौंफके अर्कके साथ ॥

अथ कुलंजका इलाज ॥

इस बीमारीमें रीह और पाखानेका आना मुश्किल है और दर्दके साथ होताहै अगर कुलंजरीहसे हो तो सेंक करे ।

गोली ।

फटकरी, अजवायन, पीपलामूल, कालीमिर्च, गिरी क-रंजवा, वावींरंग, एलवा, कालानमक सब बराबर तोलले फिर कूट छानके अदरखके रसमें ४ मासेकी गोलियां व-नावे और १ गोली दर्दके वक्त खिलावे ॥

दवा ॥ १ ॥

वायगोलेको मुफ़ीदहै समुद्रफलकी गिरी, कफेदरिया लाहौरीनमक,कालानमक, सज्जी सफेद, जवाखार, सुहागा पीपल, सोंठ, हींग, बड़ी हड़का वक्कल ये सब दवा एक २ तोले अमलवेत ४ तोले कूट छानके गोली बनावे खूराक १० मासेतक ॥

दवा ॥ २ ॥

कुलंजके दर्दको मुफ़ीदहै एलवा, सुहागा, नमक लाहौ-री, जवाखार और सज्जी घीकुवारके लुआबमें बेरके स-मान गोली बनाने खूराक २ गोलीसे ४ तक ॥

दवा ॥ ३ ॥

दो मासे मीठा तेल शक्कर मिलाके पीना मुफ़ीद है बक-रीकी मेंगनी लड़केके पेशाबमें जोश देके कपड़ेपर लगाके तिला करे ॥

अथ पेटके कीड़ोका इलाज ।

ये कीड़े आंतोमें पैदा होतेहैं एक दो दिन दूध पीके ये

गोली खावे सोनामक्खी ५ तोले, गुलकंद ५ तोले, दोनों हड़का वक्कल दो २ तोले, सोंठ और मुनक्का एक २ तोले, शाहदमें मिलाके गोली बनावे खूराक १ तोला रोज़ ॥

दवा ॥ १ ॥

अजमोद, विरंग, काबुली, नमक लाहौरी, जवाखार, हड़का बक्कल, पीपल, सोंठ ये सब दवा बराबर ले और हींग भूनके एक दवासे आधीले फिर कूट छानके खूराक ६ मासे निहार खावे पेटके कीड़े मरजावें ॥

दवा ॥ २ ॥

कमीला, हींग, पोदीना, वायविडंग, नमक लाहौरी, बड़ी हड़का वक्कल ये सब दवा बराबर लेवे कूट छानकर जंगली बेरके समान गोलियां बनावे खूराक ९ मासे रोज़ निराहार पानीके साथ खावे बहुत मुफीद होगी ॥

अथ कांच निकल आनेका इलाज ।

यह बीमारी अक्सर बच्चोंको बाद दस्तोंके होजातीहै ॥

दवा ॥ १ ॥

पुरानी चलनीका चमड़ा जलाके उसकी राख लगावे ॥

दवा ॥ २ ॥

पहले घी लगावे फिर लसोढ़े जलाके उसकी राख लगावे ॥

दवा ॥ ३ ॥

अपने पेशाबसे आबदस्त लेना फ़ायदा करताहै ॥

दवा ॥ ४ ॥

आमकी पत्ती और छाल, जामनकी पत्ती और छाल कूटके जोशकरै फिर पानी छानके आबदस्त करावे ॥

दवा ॥ ५ ॥

बकरीका सुम जलादे, माजू, अनारके फूल, अनारके छिलके, फिटकरी भूनके बराबर कूट छानके छिडके ॥

अथ पेचिशका इलाज।

ये बीमारी नाफ़ टल जानेकीहै ॥

दवा ॥ १ ॥

पेचिश, खून और बलगमके इसहालको मुफीदहै ॥ २० मासे मड़ोडफली पानीमें भिगोके हाथसे मलके साफ करके पिलावे ॥

दवा ॥ २ ॥

सांकरकी फली पकाकर चावलके साथ खावे ॥

दवा ॥ ३ ॥

फाल्सेकी जड़ कूटके रातको पानीमें भिगोदे सबेरे लुआब निकालके १ तोले इसबगोल फांकके पीजावे ॥

जवारिश ॥ ४ ॥

मड़ोड़ और बवासीरके वास्ते मुफ़ीदहै । कालीजीरी ४ तोले, हड़ ४ तोले, हालों १ तोला इनको घीमें भूनके पीसले और खांड़के किवाममें मिलाके ऊपरसे ६ मासे मस्तगी मिलादे खूराक २ तोले रोज़ ॥

दवा ॥ ४ ॥

आमकी पत्ती और छाल, जामनकी पत्ती और छाल कूटके जोशकरै फिर पानी छानके आबदस्त करावे ॥

दवा ॥ ५ ॥

बकरीका सुम जलादे, माजू, अनारके फूल, अनारके छिलके, फिटकरी भूनके बराबर कूट छानके छिडके ॥

अथ पेचिशका इलाज ।

ये बीमारी नाफ़ टल जानेकीहे ॥

दवा ॥ १ ॥

पेचिश, खून और बलगमके इसहालको मुफीदहै ॥ २० मासे मड़ोडफली पानीमें भिगोके हाथसे मलके साफ करके पिलावे ॥

दवा ॥ २ ॥

सांकरकी फली पकाकर चावलके साथ खावे ॥

दवा ॥ ३ ॥

फाल्सेकी जड़ कूटके रातको पानीमें भिगोदे सवेरे उस्का लुआब निकालके १ तोले इसबगोल फांकके पीजावे ॥

जवारिश ॥ ४ ॥

मड़ोड़ और बवासीरके वास्ते मुफ़ीदहै । कालीजीरी ४ तोले, हड़ ४ तोले, हालों १ तोला इनको घीमें भूनके पीसले और खांडके किवाममें मिलाके ऊपरसे ६ मासे मस्तगी मिलादे खूराक २ तोले रोज़ ॥

सफूफ ॥ १ ॥

पेचिशके वास्ते मुफ़ीदहै । गोंदकीकर, इसबगोल, तुख्मरीहाँ, निशास्ता, सब बराबर तौलके पीसके खूराक २ तोलेसे ४ तक ॥

सफूफ ॥ २ ॥

खूनके वास्ते मुफ़ीदहै । बेलगिरी १ तोला, कुराकी छाल २ तोले, सौंफ १ तोला, छोटी हड़ १ तोला, ईसबगोल ६ मासे, मिश्री ३ मासे पहले तीन तोले हड़को घीमें भूनले फिर ईसबगोलको छोड़के और दवाको कूट छानके मिश्री और ईसबगोल मिलावे फिर ७ मासेसे १ तोला तक खावे ॥

दवा ॥ ४ ॥

छोटी हड़ और सौंफ दोनोंको घीमें भूनके पीसले और मिश्री मिलाके १तोला रोज़ खावे ॥

अथ दमेका इलाज ।

यह बीमारी बुढ़ापेमें बलगमके जोरसे होजातीहै मगर इसके इलाजसे आदमी गाफिल न रहै ॥

गोली ॥ १ ॥

हल्दी १ तोला, राई १ तोला, लाटासज्जी १ तोला गुड़ ४ तोले, कूट छानके बेरके बराबर गोली बनावे १ सबेरे १ सांझको खावे मुफ़ीदहै ॥

गोली ॥ २ ॥

मदारकी कली जो खिली न हो दो हिस्से, लाहौरी नमक

एक हिस्से पीसके झलबेरी बेरके बराबर गोली बनावे खुराक १ गोली रोज ॥

गोली ॥ ३ ॥

कालीमिच २५ मदारका पत्ता १ पीसके कालीमिर्चके बराबर गोली बनाके ७ गोली रोज खावे ॥

गोली ॥ ४ ॥

सज्जी सफेद, एलवा, कालीमिर्च, हल्दी, कूट छानके गोली बनावे खुराक १ गोली ॥

दवा ॥ १ ॥

मदारके पत्ते जो पेडसे पीले होकर गिरपडे हों ले आवे और सवापाव तौल लेवें फिर चूना एक तोला, नमक साँभर एक तोला पीसकर उनप तोपर लगाकर सुखाले फिर मट्टीके वर्तनम रखके उपलेकी आगमें एक पहरतक जलावे जब राख होजाय तब १ रत्ती रोज पानमें खावे और दही दूध खटाई लालमिर्च न खावे ॥

दवा ॥ २ ॥

जाडेके दिनोंम मदारकी कोंपल पानमें रखकरतीन दिनतक १ कोंपल खावे चौथे दिनसे आधी कोंपल चालीस दिनतक बढाता जावे जल्दी आराम होगा ॥

दवा ॥ ३ ॥

तम्बाकूका गुल आगमें जलाके जब सफेद होजावे तब लो

रत्ती पानमें रखके खाया करै खटाई और बादी चीज न खा

दवा ॥ ४ ॥

बहुतसा तम्बाकूका गुल आगमें जलाके एक बर्त्त पानी भरके उसमें घोलदे ओर एक रातदिन रहनेदे सार्फीमें छानके पानी एक बर्त्तनमें करके आगपर जो जब वह नमकसा होजावे तब २ रत्ती लेके पा खायाकरै बहुत मुफ़ीदहै ॥

दवा ॥ ५ ॥

फिटकरीको भूनके और मिश्री बराबर लेके पीसले खूर एक मासेसे ६ मासे तक खावे तथा मकड़ीका जाला सा करके गुड़में लपेटके खावे कै होतीहै लेकिन मुफ़ीदहै ॥

दवा ॥ ६ ॥

गंधक ७ मासे मिश्री ७ तोले शहदमें मिलाके २ मा पानपर मलकर खावे ॥

दवा ॥ ७ ॥

बारहसिंगेका सींग आगमें जलाके उसकी राख पह दिन २ चावल फिर जियादा करदे गरम बहुत होताहै औ बीसमन कोयलेकी आगमें जलेगा अगर गरमी बहुत क तो न खावे ॥

दवा ॥ ८ ॥

मदारकी छाल ३ तोले, छाल सहिंजना ३ तोले, जवा

खार १ तोला, पीपल ७ तोले, तूतिया ३ मासे पहले नीलेथोथेको भूनले फिर सबको बारीक पीसके १ मासा सवेरे १ मासा सांझको खानेके पीछे खावे और परहेज करै ॥

दवा ॥ ९ ॥

लाहौरीनमक पहले दिन २ मासे पीसके सोतेवक्त खावे फिर आधमासे रोज बढ़ाते जावे ६ मासेतक इसपर पानी न पीवे अगर पियास मालूम हो तो गरम पानी पीवे ॥

शर्बत तम्बाकू ॥ १० ॥

इसके लिये मुफ़ीदहै। (तरकीब) पावसेर तंबाकूकाअर्क और पावसेर गुड़का किवाम करके खुराक १ दामसे २ तक॥

चटनी ॥ ११ ॥

खांसी और दमेके वास्ते मुफ़ीदहै। अलसी और ईसबंद दो २ तोले पीसके ४ तोले शहदमें मिलाके १ तोला खावे ॥

अथ इलाज पसली जो लड़कोंको बीमारी होजातीहै॥

इसमें तप और खांसी और पसलीका दबना जरूरहै और दो क़िस्मैंहैं एकमें तप होती है और दस्तबंद होजातेहैं। मुनासिबहै कि अमलतास, उन्नाब, मुनक्का, बनफ़शा जोश देके पिलावे दूसरा बलग़मके साथ इसमें तप और साँसको क़रार नहीं होता बल्कि खौफ़का मुक़ामहै ॥

गोली ॥ १ ॥

एक करंजवेकी गिरी और नीलाथोथा एक रत्ती पीसकर

सरसोंके बराबर गोलियाँ बनाके एक गोली बालकको खिलावे मुफ़ीदहै ॥

अथ हैजेके बीमारीकी दूसरी दवा ।

इलायची छोटीके छिलके २ तोले लेके १ सेर गुलाब पानीमें जोश देवै जब आधा रहजाय तब कपड़ासे छानिके पीवै तो उलटी जुलाब बन्द होय और थोड़ी अफीम डारिके पिलावे तो कलेजेकी जलन दूर होय ॥

तीसरी दवा ।

पेठेके फूल ६ मासे पानीमें पीसके पीवै तो हैजा दूरहोजावे॥

चौथी दवा ।

लालमिरचका बीज १ मासा मोम अच्छा २ मासे एकमें मिलाके खावे शरीरकी गरमी पेटकी जलन दूर होय ॥

पाँचवी दवा ।

नींबूका रस ३ तोले, अफीम आधा मासा, चीनी ५ तोले, १ पाव पानीमें शर्बत बनाके पीवै तो कलेजेकी जलन उलटी बन्द होय ॥

अथ बावले कुत्तोंके काटनेका बयान ।

जिस मनुष्यको बावला कुत्ता काटे उस मनुष्यके थोड़ी देर पीछे तमाम शरीरमें विष फैल जाताहै और उसके जीनेकी उम्मैद नहीं रहतीहै और इस मरीजको दवा करनेमें देर न करै बहुत जल्दी तदबीर करै और उस

धावका खून निकालके लहसुन सिरकेमें पीसके लेप करै और जो पानीमें डरै और दैव बरसतेमें गर्जना सुनिकै डरै सो वह मनुष्य अवश्य मरै ॥

दवा ।

लसोढ़ेके पत्ते १ तोला, कालीमिर्च १ मासा, आधपाव पानीमें पीसके पिलावे ९ दिन तथा १५ दिन इसी विधिप्रमाण॥

दूसरी दवा ।

जीरा १ मासा, मिर्च १ मासा, आधपाव पानीमें १० दिन पीवे॥

लेप ।

जिस जगह कुत्ता काटै उस जगहपर पियाजका रस शहदमें मिलाके लेपकरै तो घाव जल्दी अच्छा हो ॥

दूसरा लेप ।

कुचला आदमीके पेशाबमें पीसके लगावे और कुचला शराबमें पीसि गरम करके लेपकरै तो आराम होय ॥

अथ खानेकी दवा ।

शुद्ध कुचला, शुद्ध तेलिया, चौकिया सोहागा शुद्ध ये तीनों दवा बराबर लेवे खल करके रत्तीभर खानेको देवै तो परमेश्वरकी कृपासे २१ दिनमें सब जहर कुत्तेका दूर होय ॥

अथ शिरके गंजका इलाज ।

पैदायश इस बीमारीकी सौदावीहै और अक्सर लड़कपनके जमानेमें रतूबत, गालिब होतीहै जोंके लगाना मुफी-

दहै और जिसके मां बापके यह बीमारी होगी तो शायद उसके बच्चेकोभी होजावे ॥

दवा ॥ १ ॥

आँवला जलाके पोस्त खशखशमें दो कमीला, तूतिया, सुहागा, भडभूंजेके छप्परका धुआँ, भट्टीकी राख सब को कूट छानकर सरसोंके तेलमें मिलाके लगावे ॥

तिला ॥ २ ॥

गधेकी लीदका तेल गंजको मुफ़ीदहै ॥

दवा ॥ ३ ॥

राई आधी भूनके और आधी कच्ची पीसके तेलमें मिलाके लगावे ॥

दवा ॥ ४ ॥

मेहदीकी पत्ती ४ तोले, बावची, मुरदारसंग, कमीला, कत्था, सुहागा, हरएक दो २ तोले और तूतिया ३ मासे कूट छानके तेलसे मिलाके लगावे ॥

तिला ॥ ५ ॥

पोस्त हलेह काबली, कत्था, जीरा, कायफल, हरएक १ दाम तूतिया आधा दाम कूटछानके लगावे ॥

दवा ॥ ६ ॥

कमीला, कत्था, गेरू, शोरा, तूतिया, एक २ तोले, मुरदारसंग, कालीमिर्चे, दो दो तोले मेहदीकी पत्ती एक तोले सरसोंके तेलमें गरम करके लगावे ॥

दवा ॥ ७ ॥

अरंडीकी कोंपल कूटके उसमें थोड़ा नमक मिला लगावे ॥

दवा ॥ ८ ॥

पुराने जूतेका तला जलाकर थोड़ा तेल मिलाके लगा बहुत मुफ़ीदहै ॥

सब तरहके मरहम और तरकीब और उनका फ़ायदा ॥

मरहमकोंच ॥ ९ ॥

ज़ख्मको जल्दी भरताहै और बहुत जल्दी अप फायदा दिखाताहै . पहले पावसेर मीठे तेलको लोहेके ब नमें गरम करके आगपरसे उतारले फिर कोंचकी गि पीसके मिलावे और नीमके नरम पत्ते पीसके टिकि बनाके तेलमें जलावे पीछेसे सात तोले मोम उसमें डाल आगसे उतारके छानले ॥

मरहम ॥ १० ॥

यह मरहम पानीसे बनताहै और पानी घावपर नुकस कभी नहीं करताहै ॥

गोली ॥ ११ ॥

एलवा और जमालगोटा बराबर लेके लोहेके बर्त्तन बछियाके पेशाबमें पीसके मूँगके बराबर गोली बनावे औ जैसी ताक़त हो देवे ॥

गोली ॥ १२ ॥

कबीला ८ मासे, हींग १ मासा कूट छानके दहींके पानीमें कालीमिर्चके बराबर गोली बनावे दूध पीनेवाले बालकको १ गोली देवे या जैसी ताक़त होवे वैसी देवे ॥

अथ जोड़ोंके दर्दका इलाज ॥

इस बीमारीमें फस्दका खुलवाना और कै करना और मुंजिस और मुसहिलका पिलाना मुफ़ीदहै ॥

जुशांदा ॥ १ ॥

दर्द कमरको मफ़ीदहै अंजीरकी छाल, सोंठ, धनियां सब बराबर ले और कूटके रातको पानीमें भिगोदे सबेरे जोश देके जब थोड़ा पानी रहजावे तब छानके पिलादेवे ॥

हलुवा ॥ २ ॥

कमरके दर्दको मुफ़ीदहै । सोंठ, अरंडी छीलके गिरी निकालके फिर दोनों चीजें दश २ तोले लेके पीसले पहले पावसेर घीमें गिरीको भूनले फिर आधसेर दूधमें मिलाके जोशदे जब दूधका मावा भुन जावे तब खांड डालके हलुवा पकावे खूराक जैसी ताकृत हो वैसी देवे ॥

गोली ॥ ३ ॥

तमाम बदनके दर्दके वास्ते जिसको हडफूटन कहतेहैं मुफ़ीदहै दोनों हड़का बक़ल, कालीमिर्च, सोंठ करंजवाकी गिरी, कालीजीरी सब एक २ तोला मुनक्का ५ तोले कूट छानके गोली बनाके खूराक ३ तोले रोज़ ॥

दवा ॥ ४ ॥

बलगम और वायके दर्दको मुफ़ीदहै मालकांगनी पहले दिन १ दाना निगले इसी तरहसे सौ दिनतक १ दाना बढ़ाता जावे और अगर ज़ियादह करनेसे दिलमें गरमी मालूम हो तो उसी दिनसे बढ़ावे नहीं, बल्कि कमती करदे ॥

दवा ॥ ५ ॥

करेलेकी लकड़ी जलाके २ मासे थोड़े घीके साथ खावे ॥

दवा ॥ ६ ॥

बायके दर्दको मुफ़ीदहै। एक मासे खासनके बीज खावे ॥

दवा ॥ ७ ॥

शोराकल्मी २ मासे कतीरा ६ मासे २१ मासे शहदमें मिलाके तीन दिनतक खावे और २ मासे मीठे तेलमें मिलाकर कमरपर लेपकरै, दर्दको फायदा करै ॥

दवा ॥ ८ ॥

शक्कर और खोपरा दर्द कमरको मुफ़ीदहै ॥

दवा ॥ ९ ॥

महुवाका तेल कोल्हूमें निकलवावे और रंग उसका घीकी मानिन्द होताहै कमरके दर्दको बहुत मुफ़ीदहै ॥

अथ सब तरहके जख्म याने घावका इलाज।

जिसमें पीव निकले उसको जख्म कहतेहैं और चालीश दिन बाद नासूर होजाताहै ॥

दवा ॥ १ ॥

सिरसकी छाल सुखाके पीसके छिड़के ॥

दवा ॥ २ ॥

मुर्गीका पर जलाके घावपर छिड़के ॥

दवा ॥ ३ ॥

गधेका मांस जलाके घावपै लगावे ॥

दवा ॥ ४ ॥

कछुवेका शिर जलाके उसकी राख घी लगाके छिड़के ॥

दवा ॥ ५ ॥

साबुन और गरूको पीसके लगावे ॥

दवा ॥ ६ ॥

हल्दी पीसके छिड़के ॥

दवा ॥ ७ ॥

फटकरी भूनके पीसके लगावे और गंदेमांसको दूर करै ॥

दवा ॥ ८ ॥

कमल और बड़के पत्ते जलाके राख मलमें मिलाके लगावे ॥

दवा ॥ ९ ॥

गुड़ जख्मपर बांधनेसे बहुत जल्दी मवादको निकालताहै ॥

रोगन ॥ १० ॥

घावको भरलावे संभालु, फराश, चँबेली, धतुरा, इनके

पत्ते एक २ दिरम और मीठा तेल आधसेर पहले पत्तोंको पीसके कड़ाहीमें तेल डालके पत्तोंकी टिकिया डालदे जब गलजावे तब तेलको कपड़ेसे छानके बोतलमें भरले और काममें लावे ॥

रोगन ॥ ११ ॥

घावको भरनेके वास्ते मुफ़ीदहै. नीमके पत्ते १० तोले कनेर २० तोले, बकायन ८ तोले सबको पीसके टिकिया बनावे और आधसेर मीठा तेल तथा १४ तोले मोम कड़ाहीमें डालके जोशदे फिर उन टिकियोंको डालके जलावे और छानके बोतलमें भरले यह रोगन कानके दर्दको मुफ़ीदहै ॥

रोगनकमीला ॥ १२ ॥

घावको जल्दी भरताहै और थोड़े दिनमें अच्छा करताहै १० तोले कमीला ३ दफ़े फीस (फेटके) १ तोले कड़के (कड़वे) तेलमें मिलाके कपड़ेमें छानके रुईका फीया तर करके घावपे रखदे ॥

अथ रोगन भिलावाँ ॥

कई क़िस्मके घावको अच्छा करे १० तोले तिलके तेलमें भिलावें जलाके छानके उसमें ३ तोले सेत खड़ी पीसके मिलादे जब घावपे लगावे तो मुरगीके परसे ॥

अथ कुचलेका तेल ।

नासूर और शिरके गंज तथा अकोतको मुफ़ीदहै ॥

अथ सब तरहके मरहमकी तरकीब और फायदा ।

मरहमकोंच ॥ १ ॥

जख्मको जल्दी भरताहै । पहले पावसेर मीठे तेलका लोहेके वर्त्तनमें गरम करके उतारले फिर कोंचगिरी पीसके मिलावे और नीमके नरमे पत्ते पीसके टिकिया बनाके तेलमें जलावे पीछेसे ७ तोले मोम डालके आगसे उतारके छानले ॥

मरहम ॥ २ ॥

यह मरहम पानीसे बनताहै और पानी घावपर नुकसान नहीं करताहै बल्कि नासूरको भरताहै गूगल २० मासे, पारा २० मासे, रसोत ३ तोले ४ मासे, पहले गूगल और रसोतको पानीमें पीसले फिर पारा मिलाके एक दिन खरलमें पीसे और काममें लावे ॥

मरहम ॥ ३ ॥

यहभी पानीसे बनताहै । घाव और नासूरके वास्ते मुफ़ीदहै राल १० तोले, घी १० तोले और कत्था, फटकरी, नीलाथोता, हरएक १९ मासे रालको पीसके घीमें मिलाके थोड़ा पानी डालके २ घड़ीतक हाथोंसे मलके फिर और दवा पीसके मिलावे और काममें लावे ॥

मरहम ॥ ४ ॥

राल ३ ॥ मासे, कोंच ३ ॥ मासे, शिंगरफ, १ मासा

मुरदारसंग १ मासा और सरसोंका तेल ३॥ तोले पहले सब दवा जुदी २ बारीक कूट छानले फिर कोचको तेलमें जलावे फिर नीमके पत्तोंकी टिकिया जलावे और छानके बाकी चीजोंको डालके हल करे और काममें लावे ॥

मरहम ॥ ५ ॥

बिवाईके वास्ते मुफ़ीदहै राल १ तोला, घी १ तोला, मोम ३ मासे, घीको गरम करके मोमको मिलावे फिर राल डालके मिलावे और पांव धोके लगावे ॥

मरहम ॥ ६ ॥

किम्मुख्त (एक चमड़ाहै) सुपारी, हड़की गुठली इनको जलाले और मदारकी कोंपलभी जलावे मुरदारसंग और कत्था पीसले तौलमें सब एक २ तोले और ४ तोले घी गरम करके मिलावे सब तरहके घावको मुफ़ीदहै ॥

मरहम ॥ ७ ॥

राल ६ मासे, हिर्मजी मिट्टी ६ मासे, नीलाथोथा ४ रत्ती पीसके मीठे तेलमें मिलाके लगावे ॥

मरहम ॥ ८ ॥

सब तरहके घावको बल्कि आतशकके वास्तेभी मुफ़ीदहै। मोम १ तोला, राल १ तोला, कत्था १ तोला पहले मोमको पिघलावे फिर राल पीसके मिलावे फिर तीन जोश देके कत्था डालके मिलावे और ऊपरसे ४ मासे काफूर पीसके मिलावे बहुतही मुफ़ीदहै ॥

मरहम ॥ ९ ॥

राल २ तोले, मोम १ तोला, रोगन ४ तोलेमें ये चीजें डालके पकावे मुफ़ीदहै ॥

अथ उबकाईका आना और जी मिचलानेका इलाज

उबकाई उसे कहतेहैं कि कै के वास्ते हरकतहो मगर कोई चीज़ न निकले और कै उसको कहतेहैं कि कुछ चीज़ खराब मुँहसे बाहर निकले, लेकिन् मितलीका होना ज़रूरहै तब बादमें कै होगी ॥

(दवा) ॥ १ ॥

थोड़ी गेरू आगमें गरम करके दो तीन बार पानीमें बुझाके पिलावे ॥

गोली मितलीके वास्ते ॥ २ ॥

कपूरकचरी पीसके मूंगके समान गोली बनावे और तीन चार गोली खिलावे मुफ़ीदहै ॥

(दवा) ॥ ३ ॥

रीठेकी गिरी चार घड़ी पानीमें भिगोदे फिर चाबे ॥

गोली ॥ ४ ॥

झड़बेरीकी गुठलीकी गिरी २ तोले, तुल्सीकी पत्ती २ तोले, मिश्री २ तोले, कालीमिर्च १ तोला कूट छानके पानीमें बेरके समान गोली बनावे और १ गोली खिलावे मितलीको मुफ़ीदहै ॥

दवा ॥ ८ ॥

उस कै के वास्ते कि जो शराबके सबबसे होवे बहुत मुफ़ीदहै । सांठीके चावल पानीमें भिगोके थोड़ा गुड़ मिलाके पिलावे अगर मीठा न डाले तो बहुत जल्दी फ़ायदा करै ॥

जवारिश इलायची ।

कै को रोकतीहै और हाज़िमहै ॥

शर्बत अनार ।

कै को बंद करैहै ॥

अथ हैजेका इलाज ।

जब गिज़ा पेटमें खराब होजावे उसको कै और दस्तसे निकाले और पियास या मिज़ाज पर गरमी या ह्‌री कै होवे तब गरम दवा न दे और गुलाब या अर्क मको या अर्क-सौंफ बजाय पानीके देवे ॥

अथ गोली ।

मदारकी जड़ २ तोले, अदरखका अर्क २ तोले पीसके मिर्चके समान गोली बनाके १ गोली खिलावे बहुत मुफ़ीदहै॥

अथ दवा [illegible]की बीमारीको ।

नरकचूरको लेकर पानीमें मसलकर थोड़ा पिलावे तो उलटी और दस्त बन्द होयँ, छातीका उछलना दूर होय कलेजेकी गरमी शांत होय और नासूरकोभी भरलाताहै ॥

अथ मरहम अलसी ।

यह मरहम सब क़िस्मके घावको मुफ़ीद होगा ॥

अथ तरकीब ।

मोम २ तोले, राल ४ तोले, सिंदूर ६ मासे, कौंचके बीज ६ मासे, तेल अलसीका १० तोले पहले तेलको आग-पर रखदे फिर मोमको डालदे फिर सिंदूर और राल पीसकर मिलावे और कौंचके बीजभी मिलाकर इतनी आंचदे कि, तेल दश तोलेका पांच छः तोले बाकी रहजावे फिर काममें लावे यह मरहम घोड़ेकी पीठके वास्ते बहुत फ़ायदा देताहै अगर कारबोलिक तेल (जो अंगरेज़ी दवाफरोशोंकी दूकानसे मिलताहै) पहले घावपर चुपड़कर फिर इस मरहमका फीया लगाया जावे तो बहुत जल्दी आराम करैग लेकिन् दिनमें एक दफ़े या दोदफ़े नीमके पानीसे जख्मको धोयाकरै पीछे इसे लगावे ॥

अथ कुश्ता बारहसिंहेका ।

यह कुश्ता दमे-श्वासके लिये बड़ा मुफ़ीद देखनेमें आयाहै

तरकीब ।

सींग बारहसिंहेका ५० तोले, दूध आकका २० तोले पठा घीगुवारका ५० तोले पहले इन तीनों चीज़ोंको एक मट्टीकी हांड़ीमें भरके आठ दिनतक रख छोड़े लेकिन् सींगके छोटे छोटे टुकड़े कराले फिर प्रथमकी हिकमत करके लोहेकी पेंचकी भट्टीमें रखवादे जिसमें लोहा गलाया जाता है जबतक २० मन कोयलाकी आगमें न रक्खा जावे तब-

तक कामका नहींहै फिर आगसे निकालके देखे कि, खील की तरह खिलजावे फिर मलाईके साथ १ चावल रोज़ खावे अगर गरमी मालूम हो तो लुआब बिहीदाना और गावज़ुबां रातको पानीमें भिगोके सबेरे मिश्री मिलाके पिया करै ॥

कुश्ता सोनेका।

ताक़तके वास्ते मुफ़ीदहै ॥

कुश्ता चांदीका।

श्वासकी बीमारीको बहुत मुफ़ीदहै ॥

कुश्ता रांगका।

यह भी कुव्वतबाहके वास्ते मुफ़ीदहै और अगर तरकीबसे दिया जावे तो जुज़ाम और गठियाको फ़ायदा देगा ॥

कुश्ता पारेका।

यह कुश्ता खाम न हो और किसी हकीम कामिलकी तरकीबसे खाया जावे तो बहुत बीमारियोंके लिये मुफ़ीद होगा मालूम हो कि ये सब कुश्ते शहर देहलीमें आजदिन बाबू घासीराम साहेब डाक्टर पिंशन याफ्ता सर्कारीके दवाखानेमें मौजूदहैं और जनाब मौसूफ इलाजभी बड़ी कोशिश और तवज्जहसे करतेहैं बल्कि गरीब आदमीका इलाज बहुत गौरसे करतेहैं और सब क़िस्मकी दवा अंग्रेजी व हिन्दुस्तानी होंगी ॥

अथ मिर्गीका इलाज ।

यह बीमारी भी बहुत खराबहै और इससे बीमारको कोई चीज़ जूंठी खानी न चाहिये और पानीके देखनेसे इस बीमारीका दौरा बहुत जल्दी होताहै ॥

दवा ॥ १ ॥

घूसका दिल (कलेजा) निकालकर और सात टुकड़े करके एक टुकड़ा आगपर भूनके रविवारके दिन खिलावे इसी तरहसे सात रविको करै फ़ायदा होवे ।

दवा ॥ २ ॥

गिलहरीका मांस आगपर भूँजके खिलावे ॥

दवा ॥ ३ ॥

पिलास पापड़ा पानीमें पीसके नाकमें टपकावे उसी दम बीमार होशमें आजावेगा ॥

दवा ॥ ४ ॥

जदवार जिसको निरविसी कहतेहैं ४ रत्ती औरतके दूधमे पीसके बालकको देवे बहुत जल्दी आराम होगा ॥

दवा ॥ ५ ॥

नवलेका मांस भूनके खिलावे मुफ़ीदहै ॥

अथ जुजामका इलाज ।

यह बीमारी सोदावीहै और जब अपनी जगह करलेतीहै तो मुश्किलसे आराम होतीहै अव्वलमें फ़स्द और मुसलिह

लेना जरूर है बल्कि हर महीनेमें जुलाब देना चाहिये और गम, रंज और जागनेसे बचावे अगर खुश्की ज़ियादह हो तो जो चीजोंकी रतूबत असलीको तहलील करे उनसे परहेज़ करे और इस बीमारीके वास्ते दूध बकरीका बहुत मुफ़ीदहै ॥

दवा।

हरतालका कुश्ता बहुत मुफ़ीदहै । आधारत्ती पानमें रखके खावे पचास दिनमें अपना फ़ायदा दिखावे ॥

तरकीब।

१ दाम हरताल अंडेकी सफ़ेदीमें मिलाके गोली बनाके मट्टीके सकोरेमें रखदे फिर १ सकोरेसे बंद करके कपडौटी करके सुखावे फिर ४ पहर आगमें रखदे कुश्ता हो जावेगा ॥

सफूफ़।

जुजामको मुफ़ीदहै फूल, पत्तियां, फल, जड़ और छाल पुराने नीमकी हरएक आध आध सेर, कालीमिर्चे पोस्त हलेह ज़र्द, बहेड़ा, आंवला, बावची, हरएक पाव सेर कूटछानके सफ़ूफ बनावे खूराक ८ मासेसे १६ मासेतक मँजीठके जुशांदेके साथ चार महीनेतक खावे, गोश्त और नमक तथा गरम चीजोंसे परहेज़ करे ॥

दवा ।

बबूलकी छाल दो दाम कूटके पानीमें भिगोदे सवेरे मल छानके पिलादे ॥

दवा ।

नीमके पेड़का मद जो निकलताहै बदनपर मालिश करना मुफ़ीदहै ॥

दवा ।

नीमके फूलोंका अर्क इसके वास्ते मुफ़ीदहै ॥

दवा ।

मेंहदीकी पत्ती ४० दिन पानीमें भिगोके मीठा मिलाके पिलावे मुफ़ीदहै ॥

दवा ।

सिरसकी पत्ती १ दाम, कालीमिर्चे २ मासे, हररोज़ पानीमें पीसके ४० दिन तक पिलावे ॥

अथ शीशमका शर्बत इस बीमारीके वास्ते मुफ़ीदहै ।

तरकीब ।

यहहै कि, इसकी लकड़ीका बुरादा पावसेर तीनसेर दरियाके पानीमें आठ पहर भिगोवे फिर जोश दे जब आधा पानी जलजावे तब और नरम आग करै फिर जब पावसेर पानी रहजावे तब तीन पाव खाड डालके क़िवाम पकावे और खूराक सवेरे सांझमें ६ तोले चालीस दिनतक पिलावे मुफ़ीद होगा ॥

अथ तरकीब बाल बढ़ानेकी।

बालकी पैदायश खूनसे है जब आदमीके बदनमें खून कमती होताहै तब बालभी नहीं निकलतेहैं ॥

दवा ॥ १ ॥

हाथीदांतका बुरादा जलाके राख करले फिर बकरीके दूधमें मिला मले बाल जामें सही ॥

दवा ॥ २ ॥

कालादाना पानीमें पीसके लगावे ॥

दवा ॥ ३ ॥

नींबूका रस और आँवला पानीमें पीसके मलै सवेरेके वक्त तिलीका तेल मलके पानीसे धो डाले ॥

अथ नुस्खे खिजाबके।

बुढ़ापे में जो बाल सफ़ेद होजातेहैं इन दवाइयोंके लगनेसे काले बाल होजावेंगे मगर कयाम कमहै—

दवा ॥ १ ॥

चूना, मुलतानी, मुरदारसंग बराबर लेके पानीमें पीसके बालोंपर लगावे फिर अंजीरके पत्ते उसके ऊपर बांधे ३ घंटेके बाद खोल डाले और पानीसे धोवे फिर तिलीका तेल मलै ॥

दवा ॥ २ ॥

लुहारकी भट्टीकी राख और साबुन दोनोंको पानीमें धोके दस्तेसे ४ घड़ी हलकरे फिर खिजाबकरै ॥

दवा ॥ ३ ॥

माजू ऐसे भूनेहुये कि करीब जलनेके होजावें और ३ तोले संगरासिखं, २ मासे नोसादर तीनोंको कूट छानके लोहेके वर्त्तनमें पत्थरके दस्तेसे खूब हल करै फिर बालों-पर मलै बाद ४ घड़ीके धोवे ॥

इति श्रीमुन्शीभगवानप्रसादकाशिष्यभगतभगवानदास विरचितवैद्यकरसराजमहोदधिभाषा दूसराभाग चौथाखंडसमाप्त ॥ ४ ॥

अथ नवदुर्गचूर्ण ॥

अनारदाना ऽ।, जीरा स्याह १५ मासे, जीरा सफेद ३० मासे, सोंठि १५ मासे, तंतरीक १५ मासे, हड़का बकला १५ मासे, छोटीहड़ १५ मासे, निसोत १५ मासे, लाहोरी नोन ३ मासे इन सब ओषधियोंको कूटपीस कपड़छानकरि चूर्ण बनावै फिर नित्य भोजनके पश्चात् तीन मासे खाय तो मन्दाग्नि जाय और भूंख बढ़ै ॥

अथ दूसरा चूर्ण ।

पोस्त, हड़, सौंफ, सोंठि, इन सबको बराबरले फिर सौंफ और हड़को खाली घृतमें भूनले और फिर उन दोनोंकोभी मिलाय दो पैसाभर नित्य पांचदिनतक ठंढे पानीसे खावै तो आंव लोहू और मरोड़ा सब दूर होयँ ॥

अथ बाईका चूर्ण ।

सोंठि पीपरि, सनाय, हड़, बहेड़ा, आँवला, चीता, सेंधा

नमक, सांभरनमक, खारीनमक, कालीमिर्च, निसोत-पोदीना, सौंफ़, अनारदाना, हींग १ मासा, अजवाइन, अज-मोदा, मेथी, तेलिया सुहागा, हींगको छोड़ और सब दवा-इयां छः २ मासे ले फिर सबको कूट पीस नींबू और अदर-कके रसमें गोली बनाके एक तथा दो नित्य खाय तौ वायु-के सब विकारोंको दूर करै ॥

पाचनचूर्ण।

हड़, आंवले, चीता, पीपरी, सेंधानोन इन पांचों ओष-धियोंको बराबर ले फिर कूट पीस चूर्ण बनावै फंकी गरम पानीसे करै तौ सब उदर विकारोंको दूर करै और पाचन करै भूख बढ़ावै ॥

वायुनाशनचूर्ण।

सोंठि २ मासे, सुहागा तेलिया २ मासे, पीपर २ मासे कालीमिर्च २ मासे, हड़ ६ मासे, पांचोंनोन ५ तोले और अजवाइन ६ मासे इन सब ओषधियोंको कूट पीस सहिंजनेके रसमें गोली बाँधे फिर एक तथा दो नित्य खाय तौ चौंसठ वायु दूर करै ॥

अथ अग्निदीपकचूर्ण।

पारा १ टंक, सुहागा २ टंक, गन्धक १ टंक, मीठा-तेलिया ३ टंक, शंख ४ टंक, कौडी जर्द जली हुई ४ टंक सोंठि १ टंक, कालीमिर्च १ टंक नींबूके रसमें सातपुट

देकर मूंगबराबर गोली बांधे फिर नित्य खावे तो अजीर्ण मंदाग्निको दूर करै क्षुधाको बढ़ावे और अर्द्धांगशूल विशूचिका इन सब रोगोंको दूर करै ॥

अथ नागरादिचूर्ण ।

सोंठि, मोथा, अजवाइन, जावित्री, तज, पत्रज, श्वेतजीरा, कालाजीरा, पीपरी, कालीमिर्च, जायफल, आंवला चीता और लौंग इन सब औषधियोंको बराबर ले कूट पीस छान चूर्ण बनाय नित्य खाय तो अनेक गुणकरै ॥

अथ अमृतचूर्ण ।

हड़, बहेड़ा, आंवला, सोंठि, कालीमिर्च, पीपरि, लौंग, जावित्री, वायविडंग, जायफल, सफेदजीरा, धनिया, अजवाइन, अनारदाना और पांचोंनोन इन सब औषधियोंको बराबर ले कूट पीस छान चूर्ण बनावे फिर नित्य खाय तो बहुत गुण करै ॥

अथ ज्वरका चूर्ण ।

आँवले, चीता, हड़, पीपरी और सेंधानमक इन सबको बराबरले कूट पीस छान चूर्ण बनाय गरम पानीसे फांका करै तो सब ज्वरोंको दूर करै ॥

अथ आमवात और शूलका चूर्ण ।

सोंठि, हड़, वायविडंग, सेंधानमक और पीपरि इन सबको कूट पीस छान चूर्ण बनावे. फिर टंक प्रमाण खाय तो तीन दिनमें आमवात जाय ॥

अथ हिंग्वाष्टक चूर्ण।

हींग १ तोले, अजमोद ३ तोले, जीरा ३ तोले, सों
३ तोले, कालीमिर्च ३ तोले, पीपर ३ तोले, सेंधानोन
तोला और सांभरनमक १ तोला इन सब ओषधियोंको कू
पीस छान चूर्ण बनावे फिर भोजनके ग्रासमें घृत औ
चावलके साथ खाय तौ शूल, अर्द्धांग और अजीर्ण र
रोगोंको दूर करै और भूख बहुत लगावै ॥

अथ वायुका चूर्ण।

सोंठि, मिर्च, पीपरि, हड़, सहँजनेके बीज और लै
इन सब ओषधियोंको एकत्र कर सहँजनेके रसमें बे
प्रमाण गोली बाँधे फिर नित्य खावे तौ चौसठ वायु और बहु
शूलोंको दूर करै॥

अथ वायुका दूसरा चूर्ण।

पीपरि, सौंफ, लौंग, लौटक, सज्जी, सेंधानोन इ
सब ओषधियोंको तोले तोले भर लेकर कूट पीस छान चू
बनावे फिर नित्य खाय तौ वायुको दूर करै ॥

अथ वायुका तीसरा चूर्ण।

लौंग, इलायची, तज, पत्रज, तगर, ककोल, का
अगर, नागकेशर, जायफल, सोंठि, जावित्री, सफेद, जीर
स्याह जीरा, सौंफ, पीपरि, मिर्च, पुष्करमूल नरकचू
हड़, बहेड़ा, आंवला, चीता, तालीस, देवदारु, धनियां, अ

वायन, मुरेठी, वंशलोचन, अजमोद, काकड़ाशृङ्गी, पीपरामूल, भूनीहींग, मोथा, अतीस और शतावरी ... ओषधियोंको तोला तोला भर लेकर पीस छान ... उसमें बराबरकी मिश्री मिलावे फिर प्रातःसमय ... तौ वायुको दूर करै तथा औरभी अनेक गुण ... ॥

अथ सुदर्शन चूर्ण ।

हड़, बहेड़ा,आँवला, सोंठि, कालीमिर्चे पीपरि हल्दी दारुहल्दी, गिलोय, कूट, मोथा, जवासा, काकडाशृङ्गी कटहरीकी जड, पीपरामूल, कचूर, वच, पुष्करमूल, मुलहठी, कुडाकी छाल, सौंफ, कमलगट्टा, इन्द्रयव, देवदारु, मँजीठ, पद्माख, खस, तज, गोखरू, सालममिश्री, अजवायन, अतीस, वेलगिरी, पत्रज और चीता, इन सब ओषधियोंको तोला तोला भरले पीस कूट छान चूर्ण बनावै फिर गरम जलसे फंकी करै तौ सर्वज्वरोंको दूर करै तथा इससे सन्निपात, अजीर्ण, और शूल और विशूचिकाभी जाय ॥

अथ लवंगादि चूर्ण ।

लौंग, अगर, कपूर, कमलगट्टा, सफेद चन्दन, स्याह जीरा, सफेद जीरा, खस, इलायची मोथा, जटामासी, तगर, वंशलोचन, पीपरि, कंकोल, कालीमिर्चे, जायफल, तज और नागकेसर इन सब ओषधियोंको तोला तोला भर ले कूट पीस छान चूर्ण बनावे और आधी मिश्री मिलावै फिर

३ मासे नित्य फंकी करै तो इतने रोग जायँ--मन्दाग्नि १ त्रयोदश वायु २ पित्त, कफ ३ कंठरोग ४ कास ५ श्वास ६ अतीसार ७ गुल्म ८ प्रमेह ९ और संग्रहणी १० ॥

अथ भास्करचूर्ण।

पीपरि, पीपरामूल, सांभरनोन, सैंधानोन, कालानोन कचनोन, मनिहारिनोन, सफेद जीरा, स्याह जीरा, वायविडंग, पत्रज, तालीस, चव्य, कालीमिर्च, सौंफ, तज, इलायची, और अनारदाना इन सब ओषधियोंको ले कूट पीस छान चूर्ण बनावे फिर नित्य खाय तो उदरके सब विकारोंको दूर करै और गरम जलसों फांके तो अजीर्ण सन्निपात जाय ॥

अथ चन्दनादि चूर्ण।

चन्दन, लौंग कपूर, अगर, कमलगट्टा, सफेद जीरा, स्याह जीरा, अनारदाना और काला नमक इन सब ओषधियोंको तोले २ भरले कूट पीस छान चूर्ण बनावे फिर नित्य खाय तो उदरके सर्व विकारों को दूर करे ॥

अथ गंगाधर चूर्ण।

मोथा, सोंठि, इन्द्रयव धवईके फूल, लोध, मोचरस, पेठेके बीज, राल, लज्जालूकी जड़, अतीस, पोस्त इन सब ओषधियोंको तोला, २ भरले कूट पीस छान चूर्ण बनावे फिर चावलके धोवनके साथ फंकी करै तो पेटके रोग, अतीसार और संग्रहणी दूर होयँ ॥

अथ इलायचीका चूर्ण ।

इलायची, लौंग, नागकेसर, झड़बेरीकी मींगी, धानकी खील, तज, नागरमोथा, चंदन, पीपरि, भूनीहींग, गेरू, हड़ नारियलके जटाओंकी राख और तुलसीपत्र इन सब ओषधियोंको एक एक तोला पीस कूट छान चूर्ण बनावे और शहदसे चाटै तो त्रिदोषकी छर्दि नाश करै ॥

अथ सरस्वती चूर्ण ।

कूट, अजमोद, असगन्ध, सफेद जीरा, स्याह जीरा, सोंठि पीपरि, कालीमिर्चें और हल्दी, इन सबको एक २ तोला ले कूट पीस छान चूर्ण बनाय सहतसे चटावै तो बुद्धि निर्मल होय विद्या आवे ।

अथ सिद्धार्थ चूर्ण ।

सफेद सरसों, बच, भूनी हींग, करंजके बीज, देवदारु मंजीठ, हड़, बहेड़ा, आंवला सफेद चमेलीकी छाल, मालकांगनी, तज, सोंठ, कालीमिर्च, पीपरि, हींग सिरसकी छाल हल्दी, दारुहल्दी, इन सब ओषधियोंको एक एक तोला ले कूट पीस छान चूर्ण बनाय गौके मूत्रसे खावे तो इतने रोग जायँ—सन्निपात आठो ज्वर ॥

अथ पेटके दुःखका चूर्ण ।

पटोल, हल्दी, वायविडंग, हड़, बहेड़ा आंवला, कमलगट्टा, नीलकी जड़, निसोत इन सब ओषधियोंको एक एक

तोलाले कूट पीस छान चूर्ण बनाय दूधसे फांके तौ पेटका दुःख दूर होय ॥

अथ निंबादिक चूर्ण।

नींबकी कोंप, नींबकी छाल, नींबके फूल, नींबकी जड़ नींबके फल, हड़, बहेड़ा, आंवला, सोंठि, कालीमिर्चें, पीपरि, भारंगी, गोखरू, पुष्करमूल, चीता, बिडंग, बिदारीकंद, सारकुन्ता, गिलोयका सत, हल्दी, दारुहल्दी, बावची कूट और इन्द्रयव इन सबको तोला तोला भरले एकत्रकरि विजयसारकी ७ पुटदे और फिर भँगराके रसकी ७ पुट दे फिर खाय तौ रक्तपित्त, रक्तवायु, भगंदर नाडीव्रण, मुखके रोग-दुःख तथा औरभी अनेक रोग दूर करै ॥

अथ शृङ्गादिक चूर्ण।

काकडाशृंगी १ तोला, त्रिगन्ध १ तोला, त्रिफला ३ तोला, खरेटीकी जड १ तोला, भारङ्गी १ तोला, पुष्कर-मूर १ तोला और नोन ५ तोले इन सबको एकत्र करि कूट पीस छान चूर्ण बनाय गरम जलसों फंकी करै तौ इतने रोग जायँ हड़फूटन, पीनस, नजला, वायु और शरीरके दुःखको दूरकरै ॥

अथ पथरी मूत्रकृच्छ्रका चूर्ण।

बड़की जटा, पीपलकी जटा, खस, चीता, पुराने आंबकी गुठली, जामुनकी गुठली, चिरौंजी, आलूबुखारा धौंका

गोंद, महुआ, लोध, बरनेकी छाल, नींबकी कोंपल पवाँडकी जड, हड़, इन्द्रयव, भिलवा इन सबको एकत्र करि पीस छान चूर्ण बनावै शहदके साथ खाय तौ मूत्रकृच्छ्र और पथरी जाय ॥

अथ अग्निमुख चूर्ण ।

चीता, पाठा, लोटक, सज्जी, जवाखार करंजके बीज समुद्रफेन, इलायची, पखाख, भारंगी, बिडंग पुष्करमूल नरकचूर, दारुहल्दी, निसोत, मोथा, वच, इन्द्रयव, हाऊ बेर, अनारदाना, त्रिकुटा, भिलावां, अजमोद, अजवाइन देवदारु, अतीस, हड़, तिलका खार, सहिंजनेका खार, बाव, च्चीका खार, ढालका खार और कौटी कुत्ता इन सब ओषधियोंको तोला तोला भरले एकत्र करि अदरखके रसमें १२ पहर खरल करै फिर दूधके साथ फांके तो गुदाके सब रोग जाँय भोजन दूधभात करै ॥

अथ भगन्दर विजयचूर्ण ।

त्रिकुटा, वच, हींग पाढ़ा, जवाखार, सज्जी, हल्दी, हड़, चिरायता, इंद्रयव, चीत, गजपीपरि, नमक, पीपरामूल, बिडंग, अजमोद, त्रिफला, सफेद जीरा और स्याहजीरा, इन सब ओषधियोंको एक एक तोलाले एकत्र करि कूट पीस छान चूर्ण करै फिर ताते पानीके साथ खाय तो वायु, शोथ, अर्श हृदयशूल, पार्श्वशूल, अरुचि, प्लीहा, प्रमेह, कमलवायु

पांडुरोग, आमवात, संग्रहणी प्रसूति इन सब रोगोंको दूरकरै॥

अथ अतीसारका चूर्ण ।

समुद्रशोप, मायी, राल, माजू, पत्रज, जायफल, छोटी इलायची, सेलखड़ी, और बेलगिरी इन सब ओषधियोंको तोला तोलाभर ले एकत्र करि कूट पीस छान, चूर्ण बनावे फिर पानीसे फंकीकरै तो अतीसार जाय ॥

अथ संग्रहणी और अतीसारका चूर्ण ।

कालीमिर्चें, पीपल, तमालपत्र, पीपरामूल, इलायची, दालचीनी, जायफल, नेत्रवाला, वंशलोचन और चन्दन इन सबको एकत्र करि तोले तोले भरले कूट पीस छान चूर्ण बनावे फिर २ मासे नित्य फंकी करै तो संग्रहणी पुरानाज्वर, अतीसार सब दूर होंय ॥

अथ वायुशूलका चूर्ण ।

बड़ी हड़का बकल, सोंठि, सनाय, गुजराती निसोत, पुरानी सौंफ, और स्याह नमक इन सब ओषधियोंको पैसा २ भरले एकत्र करि कूट पीस छान चूर्णकरि ताते पानीसे फंकी करै तो तत्काल वायुगोला जाय । पथ्य मूंगकी दाल भात अथवा रोटी या खिचड़ी खाय और चीजोंसे परहेज करै॥

अथ कालचूर्णकी विधि ।

सोंठि १। पीपरि १। कालीमिर्चें १। सफेद जीरा १। स्याहजीरा १। हींग १। सैंधा नमक १। सांभरनमक १।

कच्च नमक १। अमचुर सेरभरि और चूक ऽ। भरि सबको एकत्रकरि चूर्ण बनाय खावै तौ पाचन शक्ति उत्पन्नकरै ॥

अथ शीतज्वरका चूर्ण ।

पीपरि, सोंठि, गिलोय, पीपरामूल इनका चूर्णकरि जलसों फंकी करै तो शीतज्वर दूर होय ॥

अथ तालीसादि चूर्ण ।

तालीस, तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर, सोंठि, मिर्च, पीपरि, पीपरामूल, सारिवाके बीज, त्रिफला, जायफल, जावित्री, पुष्करमूल, चीतेकी छाल, दोनों अजवाइन, असगन्ध नागौरी, नागरमोथा, वंशलोचन, दोनों जीरे कलौंजी, धनियां, काकड़ाशृंगी, सार, और बंग ये सब औषध दो दो टंक ले एकत्र करि कूट पीस छानि ऽ॥। कच्ची खांड मिलाय बासनमें धर रक्खे फिर टका भरि मात्रा खाय तौ ज्वर जाय, पित्त पचिजाय, भूख लगै, खांसी जाय और बल बढ़ै, पुष्टता होय ॥

अथ तुम्बुरू आदि चूर्ण ।

तुम्बुरू, सोंचर नमक, सारिवा, अजमोद, जवाखार, पीपरि, मिर्च और वच इन सब औषधियोंको तीन तीन टंकले एकत्र करि पीस कूट कपरछानकर चूर्ण बनावै फिर अधेला भरि गरम पानीके साथ खाय तौ सात प्रकारके ज्वर दूरहोंय ॥

अथ गुडूच्यादि चूर्ण।

गिलोय, तेजबल, अतीस, मोथा, पीपरि और काकड़ाशृंगी इनको बराबर चूर्ण करि मद्यके साथदे तो ज्वर खांसी, अतीसार ये सब रोग जायँ ॥

अथ तालीसादि चूर्ण।

तालीस, ब्रह्मदण्डी, मोचरस, सोंठि, वंशलोचन, गजपीपरि, इलायची, और तज ये सब औषध टकाटका भरिले चूर्ण करि ३२ टका भरि खांड़ मिलाय अधेला भरि खाय तो ज्वर, खांसी, मस्तकशूल, अजीर्ण ये सब रोग जायँ ॥

अथ अतीसारपर चूर्ण।

अतीस, गजपीपरि, कुडाकी छाल, जायफल, इलायची, मोचरस, बेलगिरी, धायके फूल, नागरमोथा, काकड़ाशृंगी और सुगधबाला। ये सब औषध दो दो टंकले कपरछान करि पैसे भरि शहतके साथ खाय तो अतीसार दूर होय और शूल जाय, रक्त बन्दहोय ॥

अथ तेरहवां सन्निपात पर सिद्धार्थ चूर्ण।

सरसो, बच, कूट, पीपरि, मिर्च, सोंठि, कुटकी, कायफल, चीतेकी छाल, वायविड़ंग, मँजीठ, जीरा, कलौंजी, अजवाइन, अजमोद, भारंगी, पाढा, हींग, जायफल, पीपरामूल ये सब औषधियोंको पांच पांच टंक ले कूटि छानिके गोमूत्रसे मर्दन करे तो १३ प्रकारके सन्निपात, शीत, उन्माद, वायु,शर्दी, पसेव ये सब दूरहोंय ॥

अथ आमातीसारपर चूर्ण ।

सेंधानोन, कालानोन, हींग, बच, हड़, अतीस, इनको चूर्ण बराबरले फिर अधेलाभर गरम पानीके साथ खावे तो अतीसार अच्छा होय ॥

अथ द्वितीय चूर्ण ।

नागकेशर, तवाखीर, रक्तचन्दन ये बराबरलें चूर्णकरि शीतलजलके साथ खाय तौ अतीसार जाय ॥

अथ हिंग्वाष्टक चूर्ण सर्व रोग पर ।

हींग, दोनो जीरा, कालीमिर्चे, सोंठि, पीपरि, सेंधानमक, गजपीपरि और अजमोद ये सब दवा बराबरले अदरखके रसमें गोली बांधे अथवा अदरखके रससे चूर्णखाय तौ सर्वरोग जाँय॥

अथ दूसरा हिंग्वाष्टक चूर्ण ।

हींग, सोंठि, मिर्चे, पीपरि, पीपरामूल, त्रिफला, अजवाइन अजमोद, खुरासानी अजवाइन, कायफल, बच, चीतेकी छाल, वायविडंग, रेडुका, पत्रज, पुष्करमूल, गजपीपरि सेंधानोन, कालानोन सांभरनोन, सज्जी, जवाखार, अकरकरहा और सुहागाभूना ये सब बराबर पैसा पैसा भरि लेकर कपरछानकर चूककी ३ पुटदे मट्टीके कोरे पात्रमें धरे और ३ टंक खाय तो ७ प्रकारके शूल जायँ और वायुगोला, हिचकी, पेटका भारीपन, खांसी, कफ ये सर्व रोग जायँ ॥

अथ द्वितीय तालीसादि चूर्ण सर्व रोगपर ।

तालीस, लौंग, पत्रज, पीपरि, पुष्करमूल, वायविडंग, जाय-
ठ, जावित्री, खैरसार, भारंगी, बच, दोनों जीरा, कायफर,
चेला, गजपीपरि, कलौंजी, असगन्ध, मिर्च, अकरकरहा
जवाइन, अजमोद, खुरासानी अजवाइन, भूनी फिटकरी
ठे, चिरायता, हींग, कूट, त्रिफला, कुटकी, काकराशृङ्गी,
छोटी और बड़ी, वंग, अभ्रक सार, सेंधानोन, ये सब
ध पैसा पैसा भर ले कपरछान करि तिस पीछे चारसेर
औटावे जब दूध १ सेर शेष रहै तब दूधमें सब औष-
लाय दो दो पैसा भरिकी गोली बांधै १ गोली प्रातः-
खाय तौ बल बढ़ै, पुष्टता होय, पुरुषशक्ति अधिक
परन्तु खटाईका परहेज़ करै ॥

अथ मिरचादि चूर्ण सर्व प्रमेह पर ।

मिर्च, कंकोल, लौंग, खस, रक्तचन्दन, कमलगट्टा
ती, अगर, नागकेसर, पीपरि, सोंठि, सोंचर, सुगंध-
चीनियां कपूर, जायफल, वंशलोचन, छिकुराकी
तज, पत्रज, केलाकी जड़, कौंचके बीज, असगंध,
स, नागरमोथा, सिंघाड़ा, उर्दकी दाल धुली, गंगेरन,
, दोनों सेमरका मूसरा, शतावरि, दोनों मुसली,
, मुंडी और भांगरा ये सब औषध दो दो टंक ले
१० टंक, सार १० टंक वंग १० टंक, सब औ-

पथ कपरछान करि कच्ची खांड १ सेर मिलायके रखछोडै फिर पांच टंक प्रातःकाल और संध्यासमय खाय तो सर्व प्रमेह दूर होयँ, मूत्रका प्रवाह थमै, दाह जाय, पुष्टता होय खांसी, शूल और वात जाय, स्त्री खाय तौ पीर दूर होय, यह चूर्ण राजाओंके योग्य है ॥

अथ पुष्टिकरण चूर्ण ।

मुलहठी, विदारीकन्द, तज, लौंग, गोखुरू, गिलोय सफेद मूसरी इन सब ओषधियोंको बराबर ले कूट पीस छान चूर्ण बनावे फिर धेला भर नित्य आध सेर दूधके साथ खाय तौ पुरुष सदा बली रहै ॥

अथ मधुयष्टीचूर्ण विधि ।

मुलहठी, गिलोय, त्रिफला, विदारीकन्द, दोनों मूसली, नागकेसर और शतावरि ये सब औषध [illegible] कपडछान-करि चूर्ण बनावे फिर घृत और शहद [illegible] ७ [illegible] दिनतक नित्य खाय तौ वृद्ध [illegible]

अथ प्र[illegible]

शंखाहूली, इलाय[illegible] और तवाखीर, क[illegible] सबको एकत्र करि [illegible] नित्य शीतल जलके सा[illegible]

खांड ऽ॥ मिर्च, [illegible]

इलायची, रक्तचन्दन, पीपरि, दोनों जीरा, सोंठि, धनियां, पीपरामूल, कौंचके बीज, मोथा, वंशलोचन, कमलगट्टा, तवाखीर, दोनों मूसली और शतावरि ये सब औषध पैसा पैसा भरि ले फिर कूट पीस कपड़छान करि २५ दिनतक नित्य खाय तौ सर्व प्रमेह दूर होयँ और धातु बढ़ै पुष्टता होय ॥

अथ असगन्धादि चूर्ण।

असगन्ध, बिधारा, स्याह मूसली, सफेद मूसली, तालमखाना, बिदारीकन्द, बीजबन्द, सेमरका मूसला और बड़ी गोखुरू ये सब औषध टका टका भरिले कूट पीस कपड़छान करि चूर्ण बनावै फिर उसमें वंग १० टंक, अभ्रक १० टंक, सार १० टंक, खांड़ ऽ३ शहद ऽ१ गौका घी ऽ१ गौका दूध ऽ५ ये सब औषध कपड़ छान कर दूधसे खोआ करै जब दोसेर शेष रहै तब उतारि सब औषध मिलाय २ पैसा भरिकी गोली बांधै फिर एक गोली प्रभात समय खाय तो धातुकी पुष्टता होय देहमें बल बढ़ै वात दूर होय ॥

अथ प्रसूतिका चूर्ण।

देवदारु, अजमोद, वायविडंग, सोंठि, चित्रक, मिर्च, सैंधानोन, कालानोन, सौंफ, हल्दी ये सब औषध पैसा पैसा भरले ८ पैसा भरि पुराने गुड़में अधेला भरिकी गोली बांधै और दोनों समय खाय तो प्रसूति जाय ॥

अथ श्वेतकुष्टका चूर्ण।

कठूमरि वा कठी अंजीरका बकला ऽ। भरि, बकुची ऽ।

भर इन ओपधियोंको एकत्र करि चूर्ण करै फि पैसा पैसा भरि नित्य दोनों समय पानीके साथ खाय तो श्वेतकुष्ठ जाय ॥

अथ लाहीचूर्ण ।

त्रिजातकव्योषवरारसेन्द्रगन्धाजमोदामिसिवेल्लरात्रयः ॥
बिल्वानलाजाजिलवंगधान्यगजोपकुल्यामधुकंवदन्ति ॥ १ ॥
कुबेरहिंग्वाह्वयमोचसाराःक्षारौजया सर्वचतुर्थभागः ॥
इदंहिचूर्णं विनिहन्ति तूर्णंप्रसूतिकासंग्रहणीविकारम् ॥ २ ॥
समस्तरोगान्तकमग्निकर्तृ भ्राजिष्णुनाकारिसुतक्रपीतम् ॥
इमंप्रयोगंबहुधानुभूतं चकारधात्रीकिलकापिलाही ॥ ३ ॥

अर्थ–त्रिजात अर्थात् तज, पत्रज, इलायची, व्योष अर्थात् सोंठि, मिर्च, पीपरि, त्रिफला अर्थात् हड़, बहेड़ा, आँवला, पारा, गन्धक, अजमोद, सौंफ, वायविडंग, हल्दी, बेलगिरी, चीतेकी छाल, जीरा, लौंग धनियां, गजपीपरि, मुलहठी पंचोंनोन अर्थात् सेंधा १ काला २ बिड ३ सामुद्र ४ गर ५ कंजाकी मींगी, हींग, मोचरस, सज्जी, जवाखार और सब ओपधियोंसे चौथाई भाग इन सब ओपधियोंको कूट चूर्ण बनावे और रोगीको मट्ठाके साथ दे तो शीघ्रही संग्रहणी रोग दूर होय और सब रोगोंका नाशक तथा अग्निका और कांतिका बढ़ानेवालाहै यह प्रयोग बहुत अनुभूतहै और इसको लाही नाम किसी धायने बनाया है ॥

अथ अमलवेत लवणभास्कर चूर्ण ।

संचल्नोन १ पैसा भरि, समुद्र नोन १ पैसा भरि, साँभरि नोन १ पैसाभरि, सेंधानोन १ पैसाभरि, पीपरि २ पैसाभरि, पीपलामूल २ पैसाभरि, स्याहजीरा १ पैसाभरि, पत्रज २ पैसाभरि, नागकेसर २ पैसाभरि, तालीस २ पैसाभरि, कालीमिर्च १ पैसाभरि, जीरा सफेद २ पैसाभरि, सोंठि १ पैसाभरि, अनारदाना १ पैसाभरि, इलायची २ पैसा भरि, लौंग १ पैसाभरि, दालचीनी ८ मासे, जवाखार २ पैसाभरि, खुरासानी अजवायन २ पैसाभरि, कलौंजी २ पैसाभरि त्रिफला ३ पैसाभरि, मूलीके बीज १ पैसाभरि, अमलवेतकी गिरीको काढले फिर उसमें और सब दवाइयोंको कूटि पीसभरै उसको रीता न रक्खे जबहीं रीता होय उसमें निचोडता जाय और प्रातः घाम और रात्रिको छायामें सुखावै फिर ३ मासे नित्य खाय तो उदर विकार सब दूर होयँ भूख बहुत लगै अन्न पचै ॥

अथ संचलक्रिया ।

संचल ऽ। भरि, सेंधा ऽ। भरि, जंगरो नोन ऽ१ सेर, सांभर ऽ। भरि, आंवला ऽ १ सेर पीस पान और गोमूत्रके साथ हांडीमें भर चूल्हेपर चढ़ावै नीचे अग्निदे शीतल होय तब हांडी फोर फेंकै फिर उसे नित्य खाय तो रोग सत्यही जाय ।

अथ वाईशूलका चूर्ण ।

त्रिकुटा, अजमोद, सेंधा, स्याहजीरा, सफेद जीरा, हींग

इन सबोंको एकत्र करि पीस कूट चूर्ण बनावै और हींगको भूनकरि मिलावे फिर ४ मासे नित्य भोजनके पहिले ग्रासके साथ खाय दोनों समय और घृत खाय तौ वायुशूल जाय ॥

अथ समुद्रचूर्ण ।

सैंधानोन, सोंचरनोन, समुद्रनोन, खारीनोन, अजमोद, जवाखार, वायबिडंग, हड़, पुष्करमूल, पीपरि, सोंठि, अजवाइन और निसोत इन सब ओपधियोंको बराबर लेकर पीस कूट छानि चूर्ण बनावै फिर एक टंक गरम पानीके साथ ले तो गुल्म, क्षयीकी आंटी, पवनबद्धवाई इन सबको दूर करे और भूंख बहुत लगावै ॥

अथ पाचकचूर्ण ।

त्रिफला, त्रिकुट, वायबिडंग, लौंग, पीपरि, तज, सुहागा शुभ्रफूल इतने नोन, तीनों शोरा, चित्रक इन सबको समान पीस कूट छान चूर्ण बनावै फिर दो मासे नित्य, खाय तो हाजमा बहुत करै और भूख बहुत लगै ॥

अथ चित्रादिचूर्ण ।

खुरासानी अजवाइन, हड़, बिहारी, सोंठि सतुआ, लौंग, पीपरि, मधु, बहेड़ा, आँवला, मिर्च, सोंचर, सेंधा और जवाखार इन सबको नींबूके रसमें तीन पुटदे फिर छायामें सुखाय बेर प्रमाण गोली बांध खाय तो बहुत गुण करै ॥

अथ प्लीहाको चूर्ण ।

सेंधा, सोंचर, जवाखार, हींग, हड, पीपरि, अजमोदा,

बायविडंग और सज्जी इन सबको एक एक टंक ले एकत्र करि चूर्ण बनावे फिर ७ मासे नित्य पाँच पैसा भरि गौके घृतके साथ मिलाय कर खाय तो प्लीहा रोग जाय ॥

अथ अग्निकर चूर्ण।

मीठा चूक ४ पैसाभर, मिश्री पावभर, लौंग ४ पैसा भर, पीपरि १ पैसाभरि, कालीमिर्च १ पैसाभर, और बड़ी इलायची एक पैसाभर सबको पीस चूकमें मिलावे फिर इसे करवेमें मले और ६ मासे भरि खुराक खाय तो इतने रोग जाँय गरमी, चिनग, ज्वर, जर्दी और भूंख बहुत लगे ॥

अथ अफरेका चूर्ण।

सोंठिका सत १ पैसाभर, पीपल १ पैसाभर, अजमोद ३ टंक, अजवाइन १ टंक, सेंधा २ टंक और हड़ें १४ सबको जुदा २ पिसाय रक्खे फिर प्रातःसमय ताजे पानीसे पहिले हड़ें और सेंधा मिलाकर खाय पीछे सबको मिलाके खाय जो माफ़कत आवै तौ और अधिक खाय और संध्या-समय खिचडी खाय तौ अफरा जाय ॥

अथ हड्डाक्रिया।

हींग २ टंक, संचल २० टंक, सेंधा १६ टंक, साँभर १२ टंक, चारों पानीमें मिलाय पहले तयार करै फिर त्रिकुटा पानीमें डाल उसका मुँह बाँधि चार दिनतक धूपमें सुखावै

फिर पावभर आंवला डाले फिर तीसरे दिन चूक डा चूक डाले चूक न डाले तो नींबूका रस डाले. फिर सबक हड़ोंसमेत बांधले फिर हड़ोंको जितने पानीमें डूबजाँ छोंड़दे तो हड़ें बनै ॥

अथ अपूर्व चूर्ण ।

त्रिफला, त्रिकुटा, हींग, सुहागा, सेंधा, सोंचर, लौंग औ चीता इन सबको बराबर ले हींग और सुहागेको भूनले फिर सबको एकत्र करि सहँजनेके रसमें गोली बांधै च प्रमाण जब चाहे खाय क्षुधा बढ़ावे और अन्न पचावै ॥

अथ ज्वरपर पीपरिचूर्ण ।

पीपरिको कूट पीसकर शहदके साथ चाटै तौ ज्वर, कास, श्वास, हिचकी, कंठरुज, पिलही आदि सकल रोगोंको नाश करै ॥

अथ प्रमेहपर त्रिफलाचूर्ण ।

हड़ १ भाग, बहेड़ा २ भाग, आमले ४ भाग इन सब को कूट पीस चूर्ण बनावे और खाय तौ प्रमेह शोथ विषमज्वर आदिको नाश [illegible] है और कफ पित्त नाशन है कुष्ठ हरण रसायन [illegible] घृत युक्त खानेसे नेत्ररोग नाश हो[illegible]

पं। [illegible] इसका

चूर्ण दीपनहै-कफ, कुष्ठ और पीनस इन सबको नाश करता है आम, अरुचि,प्रमेह,गुल्म और कंठरोग इनकोभी दूरकरताहै॥

अथ कफादिपर पंचकोलचूर्ण ।

पीपरि, चाव, सोंठि, पीपरामूल, चीता, इसे पंचकोल कहतेहैं इसका चूर्ण बनाकर खानेसे पाचन, दीपन होताहै और आनाह, पिलही, गुल्म, शूल, कफ, उदररोग सबको नाश करताहै ॥

अथ त्रिगन्ध चूर्ण ।

पत्रज, तज, इलायची इसको त्रिगंध कहतेहैं इसका चूर्ण रूखा और उष्णहै यह चूर्ण कुक्ष, पित्तकारक है कांति, रुचिकर्त्ता, तीक्ष्ण है विष और कफको नाश करताहै ॥

अथ जीवनी चूर्ण ।

कांकोली, क्षीरकांकोली, जीवक, ऋषभक,मेदा, महामेदा, जीवन्ती, दूधिया, तलाकी छीमी जिसकी तरकारी होतीहै मुरैठी, मूंगफली, उर्द फली, इनका चूर्ण स्थित कारक है भारी दुग्ध वर्द्धनीहै, धातुपोषक तथा धातुशोधक है, स्निग्ध ठंढी, तृष्णा, रक्त पित्त, क्षयी, शोष, ज्वर, दाह, वायु इन सबको हरताहै ॥

अथ बद्धमूत्रपर लवणपंचक चूर्ण ।

सेंधानोन, कालानोन, बिड़नोन, खारीनोन, गड़नोन, सांभरनोन, ये पांच क्रमसे जानो, इनमें सेंधा मुख्यहै जहां

किसी नोनका नाम न लिखाहो वहां सैंधानमक ले
चाहिये इनके चूर्णका पाक मधुर है, मल, मूत्र पकाके गिराता
चिकना, वशकर्त्ता, बलहर्त्ता धातुको गर्म कर्त्ता, दीपन, तीक्ष
पित्तको बढ़ाता है और गुल्मादि दोखारहैं सज्जीखार औ
जवाखार सो वे दोनों अग्नि समान दीप्यमानहैं ॥

अथ वृद्धसुदर्शन चूर्ण ।

त्रिफला, हलदी,दोनों भटकटैया, कचूर,त्रिकुटा, पीपरामूल
मूरी, गुर्च, जवासा, कुटकी, पित्तपापडा, मोथा, त्रायमाण
पेत्रवाला, नींबकी छाल, पुष्करमूल, मुरैठी, कुरैया, अजवा
इन, इन्द्रयव, भारंगी, सहँजनकाबिया, भूनी फिटकरी, बच
तज,पद्माख, खस, श्वेत चन्दन, अतीस, बरियारा, बनउर्दी
बनमूंग, बायबिड़ग, तगर, चीता, देवदारु, चाब, पटोल
जीवन्ति और ऋषभक इन दोनोंके अभावमें बिलाई कन्द-
लेना लौंग, वंशलोचन कमलपत्र, कांकोलीके अभावमें
मुलैठी लेना, तेजपात, जावित्री, तालीसपत्र इन सब औ-
षधियोंको समानले चूर्ण करै फिर उसमें सब चूर्णका आधा
चिरायता डाले इस वृद्ध सुदर्शन चूर्णके खानेसे त्रिदोष और
सर्वज्वर नाश होतेहैं और एकाहिक, द्वंद्वज, त्रिदोष, मानस
आदि सर्वज्वरोंको दूर करताहै, शीतज्वर, जूड़ी, अँतरिया
तृतीयक, चातुर्थिक, मोह, तन्द्रा, भ्रम, तृषा, कास, पांडु, हृदय
रोग, पीठपीड़ा, कटि, पाँव, जाँघ, पसली, इन अंगोंकी पीडाको

नाश करता है और जैसे सुदर्शन चक्र दैत्योंको नाश करता है उसी प्रकारसे यह वृद्ध सुदर्शन चूर्ण भी सर्वज्वरोंको नाश करता है ॥

अथ कास श्वास ज्वर पर त्रिफलादि चूर्ण ।

त्रिफला और पीपरि दोनोंको कूट पीस चूर्ण बनावै तब सहतके साथ चाटै तौ कास श्वास ज्वरको नाश करै और अग्निको प्रबल करै ॥

अथ कफज्वरपर कायफलादि चूर्ण ।

कायफल, मोथा, कुटकी, कचूर, काकराशृंगी, पुष्करमूल, इन्द्रायन इनको इकट्ठेकर कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर सहत और अदरखके रसके साथ चाटै तौ ज्वरहरै, कंठ शुद्ध होय, कास, श्वास, अरुचि, ताप, शूल छर्दि क्षई इन सबोंको दूर करै ॥

बालकोंकी खांसी और ज्वरपर काकराशृंगी आदि चूर्ण ।

काकराशृंगी, अतीस, पीपरि इन सबोंको कूट पीस छान मधुसे चटावै तौ बालककी खांसी, ज्वर, छर्दि दूर होय ॥

अथ आमातिसारपर शुंठ्यादि चूर्ण ।

सोंठि, अतीस, हींग, मोथा, कुरैया और चीता इन सब दवाओंको ले इकट्ठीकर कूट पीस छान चूर्ण बनाय उष्ण पानीके साथ खानेसे आमातीसार दूर होय ॥

अथ आमवातपर हरीतक्यादि चूर्ण ।

हरीतकी, सेंधानोन, कालानोन, बच, हींग, इन स ओषधियोंको ले इकट्ठाकरि कूट पीस छान चूर्ण करि ठं जलके साथ पिये तो आमवातातीसार जाय यह चूर्ण ग्राह है और अचल अग्निको दीपन करै है ॥

अथ सर्वातिसारपर लघुगंगाधर चूर्ण ।

मोथा, इन्द्रयव, बेल, लोध, मोचरस, धौ फूल इन स ओषधियोंको कूट पीस छान चूर्ण करि महासे गुड़ डालक ले तो सब अतीसार, प्रवाहिक बन्द करै यह लघुगंगाधर चूर्ण परमग्राही है ॥

अथ अतीसार पर अन्य वृद्ध गंगाधरचूर्ण ।

मोथा, सोंठि, कुरैया, धौफूल, सुगन्धवाला, बेल मोचरस, पाढ़ा, इन्द्रयव, मधुकटैया, आमकी बिजली अतीस और लजालू इन सब ओषधियोंको इकट्ठी कर कूट पीस छान चूर्ण बनाय शहत और चावलके धोवन संयुक्त ले तो प्रवाहिक, सब प्रकारका अतीसार, ग्रहणी जल्दी आराम होय यह वृद्धगंगाधरचूर्ण सरितप्रवाहको रोंकसक्ताहै और मद्दा मिर्च चूर्ण, चीता, कालानोन, संगपीनेसे ग्रहणी नाश होय, उदररोग, प्लीहा, मन्दाग्नि, गुल्म और अर्श इन सब बीमा- रियोंको अच्छा करताहै ॥

अथ संग्रहणीपर कपित्थाष्टक चूर्ण।

पक्काकैथा ८ भाग, खांड़ ६ भाग, अनार, इमिली बेल, धौफूल, अजमोद, पीपरि, इन सब ओषधियोंको तीन २ भागले मिर्चे, श्वेतजीरा, धनियां, पीपरामूल, सुगन्धवाला, अजवाइन, तज, पत्रज, इलायची, नागकेसर, चित्रा और सोंठि इन सबको एक एक भागले फिर सबको कूट पीस छान महीन चूर्ण बनावै इस कपित्थाष्टक चूर्णके खानेसे गलेके रोग, अतीसार, क्षयी, गुल्म, संग्रहणी आदि ये सब रोग अच्छे होंय ॥

अथ संग्रहणीपर दाड़िमाष्टक चूर्ण।

अनार ८ रु० भर, शक्कर ३२ रु० भर, तज, पत्रज, इलायची, तीनों मिलाकर ४ रु० भर, त्रिकुटा १२ रु० भर इन सब ओषधियोंको ले एकत्र करि कूट पीस छान चूर्ण करै इसके खानेसे रोचन, दीपन, कंठ शुद्ध और ज्वर नाश होताहै और यह चूर्ण ग्राहीहै ॥

अथ अतीसारपर वृद्ध दाड़िमाष्टक चूर्ण।

अनार ८ पल, पीपरि, पीपरामूल, अजवाइन, धनियां, श्वेतजीरा और सोंठि ये सब पल पल भरले वंशलोचन दश मासे, पत्रज, एला, नागकेशर, इनको पांच पांच मासे ले यह दाड़िमाष्टक चूर्ण अतीसार, गुल्म, संग्रहणी, जलग्रह, मन्दाग्नि और पीनस इन सब रोगोंको नाश करे है ॥

अथ सुकुमार लवंगादि चूर्ण ।

लौंग, शुद्ध कपूर, इलायची, नागकेसर, जायफल, खस, सोंठि, कृष्णजीरा, कृष्णअगर, वंशलोचन, जटामाँसी, नीलकमल, पीपरि, चन्दन, तगर, सुगन्धवाला, और कंकोल इन सब ओषधियोंको कूट पीस छान चूर्णकी आधी मिश्री मिलावै तब यह चूर्ण तयार होय. फिर इसके खानेसे रोचन और तृप्तिहोतीहै, धातुको पुष्ट करताहै, त्रिदोषको हरताहै और बलप्रदहै, कंठ, हृदय, कास, हिचकी, पीनस, क्षयी, तमक, श्वास, अतीसार, उरक्षत, प्रमेह, अरुचि, गुल्म और संग्रहणी इन सबको दूर करताहै ॥

अथ जातीफलादि चूर्ण ।

जायफल, लौंग, इलायची, तज, पत्रज, नागकेशर, कपूर, चन्दन, तिल, वंशलोचन, तगर, आंवला, तालीसपत्र पीपरि, हड, चीता, कालाजीरा, सोंठि, विड़ग, मिर्च, और सबके समान मोथा लेना फिर इन सब ओषधियोंको इकट्ठी कर कूट पीस छान चूर्ण करि उसमें चूर्णके समान खांड मिलावै फिर कर्ष प्रमाण खाय तो इसके प्रभावसे संग्रहणी, काश,श्वास, अरुचि, क्षयी, वात, कफ, नाक टपकना ये सब रोग शीघ्र नाश होजातेहैं ॥

अथ अरुचिपर महाखांडव चूर्ण ।

मिर्च, नागकेसर, तालीसपत्र, पांचोंनोन इन सबको

समान भागलेना और ग्रन्थि, चित्रक, तज, पीपरि, अमिली, तथा जीरा ये सब दो दो भागले, धनियां, अमलवेत, सोंठि, बड़ी इलायची, बेर, अजमोद, मोथा इनको तीन तीन भागले। इन सब ओषधियोंकी चौथाई अनार ले और आधी मिश्री मिलाकर खाय तो रोचन, दीपनकरै, हृदयको बलप्रद है अतीसार, हृदयरोग, कण्ठजलन, मुखरोग, शीतरस, पेट फूलना अर्श, गुल्म, कृमि, छर्दि पंचविधि सब श्वास नाशकरै ॥

अथ उदररोगपर नारायण चूर्ण।

चीता, त्रिफला, सोंठि, पीपरि, मिर्च, जीरा, हड़, बेर बच, अजवाइन, ग्रन्थि, सौंफ, असगन्ध, अजमोद, कचूर धनियां, विडंग, कालाजीरा, चूक, पुष्करमूल, दोनों खार पांचोनमक, इन सबको समान ले और इन्द्रायण दो भागले, निसोत तीन भागले, जमालगोटा तीन भाग पीत-पुष्प सेहुड़मूल चारिभागले फिर इनसबको एकत्रकरि कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर कठिन कोढ़रोगीको प्रथम पाचन स्वेदनकरि यह चूर्ण रेचनार्थ देइ तो हृदयरोग, पांडु-रोग, कासश्वास, भगन्दर, मन्दाग्नि, ज्वर, कुष्ठ, ग्रहणी कंठरुज, इन सब रोगोंको नाश करताहै ॥

अस्य अनुपानः।

पेट फूले तो मट्ठा संग, गुल्ममें बेरकाथ संग, मल फोरनेमें दही वा जलके संग अजीर्णमें उष्णोदक, पेटरोगमें अमला,

संग कठोदरादिकमें उष्ट्रीदुग्ध अथवा गोतक्रमें, वातरोगमें सुरा-मण्डमें दे अर्शमें अनारासके साथदे, दोनों विषमें घीके साथदे यह नारायण चूर्ण दैत्यरूपी दुष्ट रोगोंको हननेवालाहै ॥

अजीर्णपर चूर्ण ।

हाऊबेर, त्रिफला, त्रायमाण, पीपरि, चूक, निसोत, पीतपुष्प, सेंहुड़की जड़, कुटकी, वच, नीलकी पत्ती, सेवन, कालानमक इन ओषधियोंको लेकर कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर इसको उष्णोदक अथवा गोमूत्र अनारका रस, त्रिफलाका रस वा मांसरस आदि किसीके साथ रोगीको जैसा उचित समझे दे तो अजीर्ण, प्लीहा, गुल्म, शोथ, अर्श विषमाग्नि, हलीमक, कमल, पांडु, कुष्ट, पेट फूलना, उदररोगादि सब रोगोंको दूर करताहै ॥

अथ शूलादिपर पंच सम चूर्ण ।

सोंठि, हड, पीपरि, निशोत और कालानमक इन सब ओषधियोंको सम भाग लेकर कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर खाय तो बडा शूल, पेट फूलना, जठर सम्बन्धी अर्श, आम-वात इन सबको दूर करे ॥

अथ नाराच चूर्ण

पीपरि १० मासे, निशोत ४ रुपयाभर, खांड़ पलभर इन सबको एकत्र कर चूर्ण बनावै फिर कर्ष प्रमाण सहतके

साथ खाय तो पेट फूलना जाय, गोटे उदर, कफ, पित्त, आदि सबको नाश करै ॥

अथ प्लीहादिपर लवणत्रितयादि चूर्ण ।

तीनों लवण, दोनो खार, सौंफ, सोवाबीज, अजमोद, ममरी, हाऊबेर, दोनों जीरा, मिर्च, पीपरामूल, पीपरि, हुरहुरा, कचूर, मगरेल सोंठि, चीता, चाव, विडंग, अमलवेत अनार, इमलीकी छाल, निशोत, जमालगोटा, सतावरि, इंदोरन, भारंगी, देवदारु, अजवाइन, धनियां, तुंबुरु, पुष्करमूल, वेर, हड़ ये सब समान ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर अदरख और बिजौरेके रसमें भावनादे फिर इसको घी अथवा पुरानी मद्य अथवा उष्णोदकके साथ अथवा वेरके काथ या मठा. ऊँटीपय या दहीके तोड़के साथ ले तौ यकृत, प्लीहा, कटिशूल, गुदा, कोख और हृदयरोग,अर्श, मन्दाग्नि, मलस्तंभ, गुल्म,प्लीहा, उदररोग, हिचकी, पेटफूलना, श्वासकास इन सबको दूर करता है अथवा वैद्य इनका घी बनाकर दे तो भी ये सबरोगजाँय ॥

अथ शूलपर तुंबुरु आदि चूर्ण ।

तुम्बरु, तीनोंलवण, अजवाइन, पुष्करमूल, जवाखार, हड़, हींग, विडंग इन सब द्रव्योंको बराबरले और निशोत तीन भागले फिर कूट पीस छान चूर्ण बनावे फिर उष्णोदक अथवा यवकाथके साथ पिये तो सबशूल जाँय गुल्म, पेट फूलना ये रोग दूरहोंय ॥

अथ मन्दाग्निपर चित्रकादि चूर्ण ।

चीता, सोंठि, हींग, पीपरि, पीपरामूल, चाव, अजमोद, मिर्च इन सबको कर्ष २ भरले और दोनों खार, सेंधा, काला, पांगा, कदीला, सांभर इनको कोल कोल भरले फिर सबका चूर्णकर बिजोरेके रसमें बाँधि धूपमें सुखाले यह चूर्ण गुल्म, ग्रहणी, आम रोगको हरै, अग्निको दीपन करै, रुचि बढ़ावे और कफको नाश करै ॥

अथ मन्दाग्निपर अग्निदीपन चूर्ण ।

सेंधानमक, पीपरामूल, पीपरि, चाव, चीता, सोंठि, हड़ क्रमसे बढ़ाय कूट पीस छान चूर्ण करे जैसे सेंधा १ मासा तो पीपरामूल २ मासे फिर इसी प्रकारसे बढ़ाते चले जाओ इसके खानेसे सकल मन्दाग्नि नाश होजातीहैं ॥

अथ वातादिपर अजमोद चूर्ण ।

अजमोद, विडंग, सेंधानमक, देवदारु,चीता, पीपरामूल, सौंफ, पीपरि, मिर्च इन सब द्रव्योंको कर्ष कर्ष प्रमाण ले और हड़ पांचकर्ष, विधारा दश कर्ष, सोंठि एक कर्ष ले इन सब ओषधियोंको कूट पीस छान चूर्ण करै फिर गुड़ा मिश्रित करि उष्णोदकसे पिये अच्छीतरहसे खाय तो सूजन दूरहोय, आमवात, गांठि पीर, गृध्रसी, वायु, कटिपीडा, पीठ, गुदा, जांघ पीर, तूनी वायु, प्रतूनी वायु, विश्वाची कफरोग वायुरोग ये सब नाश होयँ ॥

अथ शूलादिपर हिंग्वादि चूर्ण।

हींग, पाठा, हड़, धनियां, अनार, चीता, कचूर, अजमोद, त्रिकुटा, हाऊबेर, अम्लवेत, ममरी, इमलीकी छाल जीरा, पुष्करमूल, वच, चाव, दोनों खार और पांचों नमक इन सब ओषधियोंको ले कूट पीस छान चूर्ण बनावे फिर भोजनादि अथवा पुरानी भंगमें खाय तौ वात कफका गुल्म, कोष्ठबद्ध, ष्ठीलिका, हृदय,पेड़ू,पसुरी, गुदा, योनि आदिके सर्व शूलोंको नाश करै और मूत्रकृच्छ्र, पेट फूलना, पांडु अरुचि,हिचकी,यकृत,प्लीह, श्वास, कास,गलारोग, ग्रहणी, अर्श इन रोगोंकोभी यह चूर्णनाशै और बिजौरेके रसकी सातभावनादे गोली बांधके खाय इससे वात, कफरोग नाशहोयँ ॥

अथ अरुचिपर अजवाइनिखांड चूर्ण।

अजवाइन, अनार, सोंठि, इमलीकी छाल, अमलवेत इन सबको चार २ शाणले और मिर्च ढाई शाण, पीपरि दश शाण, तज, कालानमक, धनियां, जीरा ये सब दो दो शाणले और शर्करा ६४ शाण इन सबोंको कूट पीस छान चूर्ण बनावे इस चूर्णमें जो शाण कहाहै वह शाण ४ मासे का होताहै और इस चूर्णके खानेसे पांडु, हृदयरोग, ग्रहणी छर्दि, शोष, अतीसार, प्लीह, पेटफूलना, कोष्ठबद्ध,अरुचि,शूल मन्दाग्नि, अर्श, जीभरोग, गलरोग, ये सब नाश होयँ ॥

अथ अरुचिपर तालीसादि चूर्ण।

तालीस, मिर्च, सोंठि, पीपरि, वंशलोचन इन ओषधियों

को क्रम २ से १ कर्ष २ कर्ष ३ कर्ष ४ कर्ष ५ कर्षले और इलायची, तज ये आधा २ कर्षले खांड ३२ कर्षले फिर इनका चूर्ण बनाय खावे तो पाचन और रोचन करै और कास, श्वास, ज्वर, छर्दि, अतीसार, शोष, पेटफूलना प्लीह, ग्रहणी, पांडु इन सबको नाश करै ॥

अथ कास, क्षय, पित्तादिपर शीतोपलादि चूर्ण ।

मिश्री १६ कर्ष, वंशलोचन ८ कर्ष, पीपरि ४ कर्ष छोटी इलायची २ कर्ष और तज १ कर्ष इनका चूर्ण कर सहत और घी मिलाके चाटै तौ श्वास, कास, क्षयी, हाथ, पांवका तपना, मंदाग्नि, जीभ सूखना, पसुरी पीडा, अरुचि, ज्वर, रक्त पित्त ये सब रोग नाश करै ॥

अथ ग्रहणी गुल्मपर लवणभास्कर चूर्ण ।

पांगा नमक ८ रु०भर, कालानमक ५ रु०भर, विड़, सेंधा, पीपरि, पीपरामूल कालाजीरा, पत्रज, नागकेसर, तालीस, अमलवेत इन सबोंको दोदो कर्ष ले और मिर्च, जीरा, सोंठि कर्ष कर्ष भरले अनार ४ कर्ष, इलायची और तज पांच मासे इन सबोंको एकत्र करि कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर इसकी एक शाण मात्रा मद्य मठा अथवा दहीके तोड़के साथ देतौ वात, कफ, गुल्म, प्लीह, पेट रोग, छर्दि, अर्श, ग्रहणी, कुष्ठ, कोष्ठबद्ध, भगंदर, सूजन, शूल, श्वास, कास, आम दोष, हृदयरोग मंदाग्नि, आदि सब रोगोंको दूर करताहै

और दीपन पाचनभी है इस चूर्णको श्रीभास्करने प्रथम सब लोगोंके हित कहाहै ॥

अथ वात पित्त कफ छर्दिपर एलादि चूर्ण ।

इलायची, प्रियंगु, मोथा, बेरकी मींगी, पीपरि, श्वेतचन्दन, लावा, लवंग और नागकेसर इन सबोंको एकत्र करि कूट पीस छान चूर्ण करे फिर इसमें सहत और मिश्री मिलायके चाटै तो वातपित्तकफजन्य छर्दि नाश करै ॥

अथ कुष्ठपर निंबचूर्ण ।

नींबके पञ्चांगका चूर्ण सूक्ष्म पीसकर १५ पल लोहभस्म हड़, चाब, बकुनींब, चीना, भिलावां, विडंग, खांड, आँवरा, हल्दी, पीपरि, मिर्च, सोंठि, बकुची, अमलतास, गोखुरू इन सब ओषधियोंको पल पल भरि लेकर कूट पीस छानि चूर्ण बनावै फिर उसे भांगरेके रसमें भावना दे फिर खैर और आसन सेरभर पानीमें काढाकरि अष्टमांश रहने दे फिर उसमे उसकी भावना दे फिर सुखाकेचूर्ण रखछोड़े पश्चात् इसे एक कर्षप्रमाण खैर आसन के क्वाथ अथवा दूध अथवा घीके साथ एक मासपर्यन्त ले तो सब प्रकारके कोढ़ नाशकरै यह रसायन है सब प्रकारके रोग नाश करताहै ॥

अथ पुष्टताकारक शतावरि चूर्ण ।

शतावरि, गोखुरू, किमाचके बीज, गुलशकरि, बरियारा, तालमखाना, इन सब ओषधियोंको बराबर ले कूट

पीस छान चूर्ण बनावे फिर गोदुग्धमें नित्य पिये तो इसके प्रभावसे स्त्रीसे तृप्ति कभी न हो और जो स्त्री प्रसंग न करै तौ बली होय वर्ण श्वेत होय ॥

अथ पुष्टतापर अश्वगंधादि चूर्ण ।

नागौरी असगंध ४० तोला, बिधारा ४० तोला भरले दोनों को चूर्ण कर घृतके बर्त्तनमें रक्खे फिर १० मासे दुग्धमें पिये तो स्त्री से कभी तृप्ति न होय ॥

अथ धातुवृद्धिपर नवायसादि चूर्ण ।

चीता, त्रिफला, मोथा, विडंग, त्रिकुटा इन सबोंको समानले और पोलादभस्म सबके बराबर इनका चूर्ण सहत और घृतके साथ चाटै अथवा गोमूत्र या मठाके साथ पिये तौ पांडु, हृदयरोग, भगंदर, सूजन, कोढ़, उदररोग, अर्श, मन्दाग्नि अरुचि और कृमि आदि रोगोंको नाश करै ॥

अथ स्तंभनपर अकरकरादि चूर्ण ।

अकरकरा, सोंठि, कंकोल, मिर्च, केसर, पीपरि, जायफल, लौंग, श्वेतचन्दन इनको कर्ष कर्ष भरले फिर कूट पीसकर पलभर अफीमदे कपड़छान करले और सबके बराबर खांड मिलावै फिर मासे भर शहतसे चाटै तौ वीर्यस्तंभन करै, पुरुष स्त्रीदोनोंको सुख देताहै, कामीपुरुष इस चूर्ण को रात्रिसमय सेवन करै ॥

अथ चन्द्रकाल भिधं चूर्णम् ।

चिरायता, कुटकी, मोथा, इन्द्रयव, सोंठि, मिर्च पीपरि

इनको समान भागले और इन्द्रयवके वृक्षकी छाल सोलहवां भागले और चीतेकी छाल दो भागले फिर कूट पीस छान चूर्ण बनावे फिर इस चूर्णकी फंकी उससे दूना पुराना गुड पानीमें मिलाकर करै तो पांडुरोग, ज्वर, अतीसार, अरुचि कामला, ग्रहणी, वायुगोला और प्रमेह ये सब रोग नष्ट होयँ और रोगी सुखी होय ॥

अथ अन्य चूर्ण ।

सज्जी, जवाखार, खारीनमक, कालानमक, सैंधानमक, सोंठि, मिर्च, पीपरि, चाव, अजमोद, चीता, पीपरामूल, हींग, जीरा और सौंफ इन सबको समान भागले कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर इसको गरम पानीके साथ अथवा झड़बेरीकी बेरोंके औटे जलके साथ अथवा मट्ठेके साथ पीवै तो हृद्रोग, क्षुधाकी मन्दता, वायुगोला, अर्श, संग्रहणी आदि सब रोग दूर होंय ॥

अथ अन्य चूर्ण ।

सज्जी, जवाखार, पीपरामूल, पीपरि, चाव, चीता सोंठि, मिर्च, सैंधानमक, सांभरनमक, खारीनमक, समुद्र नमक, हींग और अजवाइन इन सबको समान ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर इसमें अमलवेत अथवा बिजौरा निंबू अथवा पानी, आमला इन तीनोंमें से किसी एक- के रसकी भावना देके बनाय रक्खे यह चूर्ण अति दीपन

पाचन है और कफ, वादी, संग्रहणी और अर्श रोग आदि इन सबोंको नाश करताहै ॥

अथ अन्य चूर्ण ।

चीता, बच, बेलगिरी, सोंठि, इन सबोंको एकत्र करि कूट पीस छानि चूर्ण बनावै फिर इस चूर्णको तक्रके साथ लेनेसे दुष्ट संग्रहणी दूर होजातीहै ।।

अथ अन्य चूर्ण ।

कालानमक, चीता, मिर्च, इनके चूर्णको तक्रके साथ पीनेसे संग्रहणी, उदररोग, वायुगोला, अर्श, क्षुधाकी मन्दता और प्लीह ये सब रोग नाशहोयँ ॥

अथ चिंतामणिचूर्ण ।

जैतके बीज, बरियारेकी जड़, पद्माख, काहू, देवदारु, त्रिफला, सोंठि, मिर्च, पीपरि, विडंग इन सबोंको समानले कूट पीस छान चूर्ण बनावे फिर इस चूर्णको विषममधु घृतके साथ खायाकरै तौ श्वासरोग और कासरोग दोनों दूर होयँ ॥

अथ अन्यचूर्ण ।

पीपरि, पीपरामूल, बहेड़ेका बकल और सोंठि इनके चूर्ण को माक्षिकके साथ चाटनेसे खांसीका रोग शांत होजाय ॥

अथ अन्यचूर्ण ।

सोंठि, मिर्च, पीपरि इन्हें समभाग लेकर चूर्ण करै

..... समान गुड़ और दुगुना घी मिलायके चाटनेसे श्वास
रोग बहुत शीघ्र नष्ट होताहै ॥

अथ अन्यचूर्ण ।

त्रिफला, गिलोय, चीता, रायसन, वायविडंग, सोंठि
मिर्च और पीपरि इन दशों द्रव्योंको बराबरले कूट पीस
छान चूर्ण बनावै जितना चूर्ण होय उसमें उसी हिसाबसे
...कर घोरकर उसका सेवनकरै तौ खांसी रोग जाय ॥

अथ लोलिंबराजमिदं चूर्णम् ।

सोंठिके पांच भाग, पीपरिके चारिभाग, अजमोदके
...नभाग, अजवाइनके दोभाग, नमकका एकभाग इन पन्द्रह
...गोंके तुल्य इड़ लेकर कूट पीस छान चूर्णबनाय खाय तौ
...की गुड़गुड़ाहट तथा पेटका शूल, आमके रोग, वायुगोला
...र मलके रोग हरै ॥

अथ अमलवेत चूर्ण ।

संचल नमक १ पैसाभर, सेंधानमक १ पैसाभर, समुद्र-
...क १ पैसाभर, सांभरिनमक १ पैसाभर, पीपरि २
...भर, पीपरामूल २ पैसाभर, स्याहजीरा २ पैसाभर,
...ज २ पैसाभर, नागकेसर २ पैसाभर, तिल २ पैसाभर,
...र्च १ पैसाभर, जीरासफेद २ पैसाभर, सोंठि १ पैसाभर,
...ारदाना १ पैसाभर, इलायची २ पैसाभर, लौंग १
...भर, दालचीनी २ पैसाभर, जवाखार २ पैसाभर,

खुरासानी अजवाइन २ पैसाभर, कलौंजी २ पैसाभर, त्रिफला ३ पैसाभर, मूलीके बीज १ पैसाभर, अमलवेतकी गिरी काढले इन सब ओषधियोंको कूट पीस गिरीमें भर फिर जितना खाली होता जाय उसमें नींबू निचोड़ता जाय कभी खाली न होने देवे और जब प्रातः घाममें और रात्रिको छायामें सुखाचुके तब ३ मासे खाय तो सर्व उदर-विकार जाँय और भूखलगै तथा हजम बहुतकरै ॥

अथ संचल क्रिया ।

संचल ऽ। भर, सेंधा ऽ। भर, जंगरानमक ऽ१ सेर सांभर ऽ। भर, आमलाऽ१ सेर पीसछान गोमूत्र में सान हांडीमें भरके चूल्हेपर चढावै नीचे आंचदे जब पकजावे तब उतारले शीतलहोय तब हांड़ी फेंकदे और दवा खाइ तो रोग जाय सही ॥

अथ समपाचक चूर्ण ।

धनियां ८ तोले, जीरा २ तोले, इलायची १ तोला पांचों नमक २ तोले, पांचोंखार २ तोले, सबको कूटि कपड़छान करिके निंबू और चूकका पुटदे फिर ६ मासे खावे यह चूर्ण शीतलहै, पाचकहै, रुचिको करैहै, भूखको लगावै, वायुके वेगको दूर करैहै ॥

अथ वायुहरण चूर्ण ।

सोंठि ८ तोले लेकर चूर्ण करि अदरखके रसमें दो पुट देकै दहीके दो पुट देवे फिर हींग भुजी १ तोला, कालानोन

दो तोले, पांचो खार ३ तोले सबको कूटि कपड़छान करि बल देखिके खावे यह चूर्ण वायुको तुरंत निकालै और भूखको लगावे ॥

अथ काबुली हड़का चूर्ण।

काबुली हड़ २ तोले, सनायपत्ती २ तोले, कालानोन २ तोले लेकर कूटि कपड़छान करके १ तोला शामको गरम पानीके साथमें खावै यह चूर्ण पेटको साफ करैहै, भूख को लगावे है, अजीर्ण को दूर करैहै, बुद्धिको बढ़ावे और बलको करै है ॥

१–अर्क हर्रोंका–हर्रोंका अर्क पीनेसे शूल मूत्रकच्छ्र कामला, अफरा, फेफरा, इनको दूर करताहै और बुद्धिको निर्मल करताहै और आँखोंको गुण करता है बल्कि सब रोगोंको फायदा करताहै ॥

२–अर्क बहेडाका–बहेडाका अर्क पीनेसे तृषा शर्दी और कफ, खांसी इनको दूर करताहै और आंखोंको गुण करताहै और मातदिलहै, दुबलेपनाको दूर करताहै ॥

३–अर्क आँवलेका–आँवलेका अर्क पीनेसे सन्निपात रक्तपित्त और प्रमेह तथा तीनों दोषोंको दूर करताहै शरीरको सुधारताहै, बिगडे खूनको दूरकरताहै ॥

४–अर्क सोंठका–सोंठका अर्क पीनेसे मलको

बांधताहै, वात और आमवातको दूर करताहै और शूल श्वास, कफ इनको नाशताहै, संग्रहणीको गुण करताहै ॥

५–अर्क अदरखका–अदरखका अर्क पीनेसे ज्वर दाहको हरै, अरुचि और अग्निको पैदा करै, वातको दूर करै, मनको प्रसन्न करै ॥

६–अर्क पीपलीका–पीपलीका अर्क पीनेसे श्वास खाँसीको दूर करताहै, आमवात, बवासीर, ज्वर, शूल, इनको दूर करताहै और बातवाले रोगको बहुत फायदा करताहै और मलको बाँधताहै ॥

७–अर्क मिर्चका–मिर्चका अर्क पीनेसे श्वासकृमिको दूर करताहै मिर्चका अर्क सब रोगोंको गुण करता है इस अर्कमें कोई अवगुण नहीं है ॥

८–अर्क पीपलामूलका–पीपलामूलका, अर्क पीनेसे तिल्ली, गुल्मरोग, वातरोग इनको दूर करताहै ॥

९–अर्क चवक–चवकका अर्क पीनेसे अत्यन्त रुचिको बढ़ावे और विशेषकर बवासीरको दूर करै ॥

१०–अर्क गजपीपलिका–गजपीपलिका अर्क पीनेसे वायु और कफ तथा मन्दाग्निको दूर करताहै ॥

११–अर्क चित्रक–चित्रकका अर्क पीनेसे जठराग्निको बढावै और खांसी, संग्रहणी, कफ, शोष इनको नाशैहै ॥

१२–अर्क अजवाइनका–अजवाइनका, अर्क पीनेसे

और बलको हरै है, पाचकहै, दीपन है, रुचिको
है ॥

१३-अर्क अजमोदका-अजमोदका अर्क पीनेसे
और कफको हरे है और बस्तीको शुद्ध करे है ॥

१४-अर्क जीराका-जीराका अर्क ग्राहीहै और गर्भा-
शुद्ध करैहै ॥

१५-अर्क कृष्णजीराका-कालेजीरेका अर्क पीनेसे
गुण करैहै और गुल्म, छर्दि, अतिसार इनको
है ॥

१६-अर्क कारवी-कलौंजी जीराका अर्क बलको
और ज्वरको हरैहै, पाचनहै, दस्तावरहै ॥

१७-अर्क धान्य-धनियाका अर्क दाह, तृषा, छर्दि, श्वास
पित्त इनको हरैहै ॥

१८-अर्क सौंफका दूसरा-दूसरी सौंफका अर्क ज्वर
कफ, व्रण, शूल, नेत्ररोग इन्होंको नाशै है ॥

१९-अर्क बड़ीसौंफका-बड़ी सौंफका अर्क मंदाग्नि
शूल और कृमिरोगको हरै है ॥

२०-अर्क लाल मिर्चका-लाल मिरचों का अर्क कफ
मार, धृतधात्रा, सन्निपात इन सबको नाशै है ॥

२१-अर्क मेथीका-मेथीका अर्क कफ, वात, ज्वर,
इन सबको नाशै है ॥

२२–अर्क चंद्रसूर–वनमेथीको चंद्रसूर कहतेहैं इसक अर्क हिचकी, रक्तवातको हरैहै और पुष्टताको करैहै ॥

२३–अर्क हींगका–हींगका अर्क पाचन है, रुचिकं उपजावे है और कृमि, शूल, पेटरोगको नाशैहै ॥

२४–अर्क वच–वचका अर्क पाचनहै, अग्नि औ छर्दिको उपजावे है और विबंध, आध्मान, शूल इन सबको नाशै है ॥

२५–अर्क पारसी कवच-पारसी कवचका अर्क भूतोन्माद को हरै है और बलको करैहै ॥

२६–अर्क कुलिंजन–कुलिंजनका अर्क स्वरको पैदा करै है, कंठ, हृदय और मुखको शुद्ध करै है ॥

२७–अर्क कूट–कूटका अर्क विशेष कर कफकी खाँसीको हरैहै ॥

२८–अर्क चोपचीनीका–चोपचीनीका अर्क शूल और फिरंगोपदंशकोहरैहै ॥

२९–अर्क शेरणी–हाऊबेरका अर्क तिल्ली और विषसे उपजे भयंकर मोहको हरै है ॥

३०–अर्क वडी शेरणीका–बड़ाहाऊबेरका अर्क वायु, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म और शूलको हरैहै ॥

३१–अर्क वायविडंग–वायविडंगक अर्क पेटरोग–कफ, कृमि, वायु और विबंधको हरैहै ॥

३२-अर्क तुंवरू-तुंबरूका अर्क भारीपना, श्वास तिल्ली, गुल्म, कृमि, इन सबको हरैहै ॥

३३-अर्क वंशलोचन-वंशलोचनका अर्क तृषा, क्षय, श्वास और ज्वरको हरैहै ॥

३४-अर्क समुद्रफेन-समुद्र झागका अर्क ठंढाहै, रोचनहै और खांसीको हरैहै ॥

३५-अर्क जीवक-जीवकका अर्क वीर्य, कफ, बल इनको करैहै और समशीलहै, ठंढाहै ॥

३६-अर्क ऋपभक-ऋपभकका अर्क पित्त, दाह, रक्त खांसी, वायु और क्षयको हरैहै ॥

३७-अर्क मेदा-मेदाका अर्क स्तनोंमें दूध और शरीरमें बल तथा कफको बढ़ावैहै ॥

३८-अर्क महामेदा-महामेदाका अर्क ठंढाहै, रक्त वात और ज्वरको हरैहै ॥

३९-अर्क कांकोली-कांकोलीका अर्क धातुको ब-ढावैहै, शीतलहै, पित्त और शीतज्वरको हरैहै ॥

४०-अर्क क्षीरकांकोली-क्षीरकांकोलीका अर्क पुष्टताको बढावैहै, दाह और वायुको हरैहै ॥

४१-अर्क ऋद्धि-ऋद्धिका अर्क बलको बढावैहै और त्रिदोष रक्त, पित्त इनको हरैहै ॥

४२-अर्क वृद्धि-वृद्धिका अर्क ठंढाहै, गर्भको दहै, क्षत, कास और क्षयको हरैहै ॥

४३–अर्क मुलहठी–मुलहठीका अर्क केश और स्वरको बढ़ावैहै और पित्त, वायु, क्षय इनको हरैहै ॥

४४–अर्क जल मधुयष्टिका–जलमधुयष्ठीका अर्क विष, छर्दि, तृषा, ग्लानि, क्षय इनको हरैहै ॥

४५–अर्क कपिला–कपिलाका अर्क दस्तावरहै और प्रमेहको हरैहै ॥

४६–अर्क अमलतास–अमलतासका अर्क पित्त अम्लवात, उदावर्त्त, शूल, खाज, प्रमेह, श्वास, खांसी, कृमि, कुष्ठ इनको हरैहै ॥

४७–अर्क चिरायता– चिरायताका अर्क, तृषा, कुष्ठ, ज्वर, व्रण, कृमि इनको हरैहै ॥

४८–अर्क इन्द्रयव–इन्द्रयवोंका अर्क पित्तरक्त, कृमि, विसर्प, कुष्ठ इनको हरैहै ॥

४९–अर्क मदनफल–मैनफलके अर्कसे वमन करनेसे चातुर्थिकज्वरका नाश होवै ॥

५०–अर्क रास्ना–रास्नाका अर्क वायु, रक्त, वात शूल, उदररोग इन सबको हरैहै ॥

५१–अर्क नागदमनी–नागदमनीका अर्क सांप, मकड़ी, मूसा इनके विषोंके विकारको हरैहै ॥

५२–अर्क काकमांची–काकमांचीका अर्क पक्वातिसार इनको हरैहै और ह

५३–अर्क तेजस्विनी–तेजोवंतीका अर्क श्वास, कास और कफको हरैहै और जठराग्निको बढावैहै ॥

५४–अर्क मालकांगनी–मालकांगनीका अर्क छर्दि, बुद्धि, स्मृति, जठराग्नि इनसबको बढावै है ॥

५५–अर्क पुष्करमूल–पुष्करमूलका अर्क अरुचि श्वास विशेषकर पसली शूल इनको हरै है ॥

५६–अर्क स्वर्णक्षीरी–चोखका अर्क छर्दि और दस्तों को उपजावै और खाजको हरै है ॥

५७–अर्क काकड़ाशिंगी–काकड़ा शिंगीका अर्क ऊर्ध्ववात, हिचकी, तृषा, क्षय, ज्वर इनको हरैहै ॥

५८–अर्क कायफल–कायफलका अर्क श्वास, खांसी- प्रमेह, बवासीर, अरुचि इन सबको हरै है ॥

५९–अर्क भारंगी–भारंगीका अर्क कफ, श्वास, पीनस ज्वर, वायु इनको हरै है ॥

६०–अर्क, पाषाणभेद–पाषाणभेदका अर्क योनिरोग मूत्रकृच्छ्र, पथरी, गुल्म इन सबको हरै है ॥

६१–अर्क धवकेफूलका–धवके फूलोंका अर्क तृषा अतिसार, विष, कृमि, विसर्प इनको हरै है ॥

६२–अर्क मंजिष्ठा–मँजीठका अर्क विष, कफ, रक्ता- तिसार, कुष्ठ इन सबको हरै है ॥

६३–अर्क कुसुंभा–कुसुंभाका अर्क वर्णको बढ़ावै है रक्तपित्त और कफको हरै है ॥

त्रिफला कहतेहैं इसका अर्क प्रमेह, कुष्ठ, विषमज्वर-तथा पित्तको हरैहै ॥

१७१–अर्क त्रिकुटाका–सोंठि, मिर्च, पीपल इन्होंको त्रिकुटा कहतेहैं इसका अर्क गुल्म, कफ, मोटापना, मेदरोग, श्लीपद तथा पीनसको हरैहै ॥

१७२–अर्क पंचकोलका–पीपली, पीपलामूल, चीता, सोंठि इन्होंको पंचकोल कहतेहैं इसका अर्क गुल्म, तिल्ली, अफरा और उदररोगको हरैहै ॥

१७३–अर्क देवीज्वरहर–चंदन, वासा, नागरमोथा, गिलोय, दाख इन्होंका अर्क शीतलहै और शीतलासे उपजे ज्वरको नाशैहै ॥

१७४–अर्क गर्भकरन–असगंधके अर्कमें दूध और घी मिलाय रजस्वलाके पीछे चौथे दिन स्नान करके जो स्त्री प्रभातमें पीवै तो वह अवश्य गर्भ धारण करै ॥

इति श्रीमुन्शीभगवानप्रसादकाशिष्यभगतभगवानदास
विरचितवैद्यकरसराजमहोदधिभाषादूसराभाग
पांचवांखड समाप्त ॥ ५ ॥

समाप्तोऽयंग्रन्थः ।

बीकानेर (राजपूताना)

॥ श्रीः ॥

वैद्यकरसराजमहोदधि भाषा

३ तीसरा भाग ।



जिसमें

अनेक प्रकारकी नवीन रीतिमे जडी बूटीसे सब धातु भस्म शोधन, मारण, शुद्धकरण, गुण, अनुपान, सर्व रोगोंपर नाना प्रकारके उपाय, रोगनाशन सरल क्रिया विधि-पूर्वक वैद्यकमतानुसार रचित किया गया है ।

आजतक ऐसी विधिसे वैद्यक नहीं बना है, नई तरकीबसे रचित है.

जिसको

मुन्शी भगवानप्रसादका शिष्य भगत भगवानदास
वल्द सुखराज मुराई गाँव चकयढवल निवासी
जिला जौनपुरसे निर्मित कराय

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् मुद्रणयन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९७८ शके १८४३

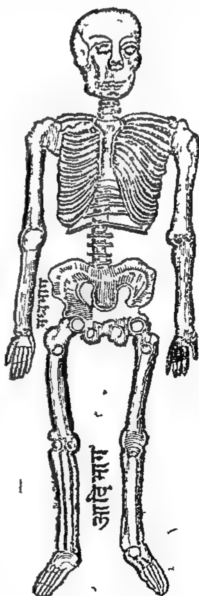
यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली, खम्बाटा लेन, निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया ।


अथसब किस्मके धातुका भस्मात है.
भगत
भगवानदास

अथ हाडकी संख्या और चित्र.

शरीरमे ३०० हाडको जुदाजुदा भागमें लिखते हैं आदि भागमें १२० हाडहै, मध्य भागमे ११७ हाडहै. अन्तभागमें ६३ हाडहैं. सो सब अंगमें अलग २ लिखतेहै देखो

अन्तभागमें ६३ हाडहै. ग्रीवामें ९ हाड है. कठकी नाडीमें ४ हाड ठोढीमें २ हाडहैं. दातमें ३२ हाडहैं नाकमें ३ हाड, है तालुमें १ हाड है कपोलमें २ हाड है. कानमें२हाडहैं शिरमें ६ हाड हैं. कनपटिओंमें२ हाड हैं इसीसे सब हाड जानो

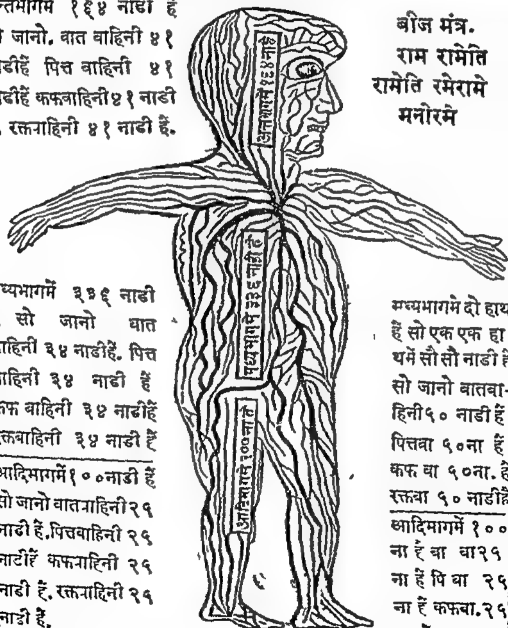


मध्यभागमें११७हाड है.सो कटिमें ५ हाड हैं लिंगगुदानितंब इन्होंमे ४ हाडहैं त्रिकमें १ हाड है. ऐसे मिलके ५ हाड हैं. गलेमें ३० हाड हैं. छातीमें ८ हाड हैं अक्षसञ्ज्ञक २ हाडहैं एक पसुलीमे ३६ हाडहैं दूसरीपसुलीमे ३६ हाड हैं. ऐसे सब मिलके ११७ हाड हैं.

आदिभागमें १२० हाडहैं सो पैरोंके एक एक अगुलीमें तीनतीन हाडहैं. ऐसे सब दोनों पैरोंमें १५ हाडहै तलओंमे १० हाड हे. पर्ष्णिमें१हाड है. जघोंमें २ हाडहै. गोडोंमे १हाडहै.ऊरुओंमे१ हाडहै. दोनों हाथमे६०हाड है.ऐसे सबमिलके९० हाडहैं. दोनों पैरोंमें३०हाड हैं. सब १२० हाडहैं. यही जानो.

अथ सातसौ नाडी संख्या और चित्र.

शरीरमे ७०० नाडी है और शरीरमे तीन भाग है आदिभाग मध्यभाग अन्त भाग.सो आदि भागमे२००नाडी. मध्यभागमे३३६ नाडी.अन्तभागमे१६४नाडी है सो अलग अलग अगमे लिखतेहैं देखो चित्रको



अथ देवता नाडीका स्वरूप चित्र.

१ ब्रह्मा लोक	विष्णु लोक	रुद्रलोक ६
वातनाडीका देवता ब्रह्मा	पित्तनाडीका देवत विष्णु	कफनाडीका देवता रुद्र
वातनाडीसतो गुण.	पित्तनाडी रजो गुण.	कफनाडी तमोगुण.

अथ धातु भस्म भट्टी स्थान.

पहिले नवविधिसे पूजा करावे तब पांच देवताको नमस्कार करि भट्टीमें दवा रखै तब नीचेका दोहा पढै तब पाच बार नीचेका मन्त्र पढै तब अग्नि भट्टीमे छोडै

दोहा.

सिद्धिविनायक सिद्धिकरो, सिद्धिरूप भगवान
हनुमानकाली कालभैरव, सदा करो कल्यान
मन्त्र—ॐह्रीं क्रीं ग्रीं गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र
ईश्वरो वाचा ऊऊकार स्वाहा भगतभगवानदास

अथ गजपुट भट्टी



राम राम राम राम
राम राम राम राम
राम राम राम राम
राम राम राम राम
राम राम सिद्धि
करो सबकाम १८



भूमिका ।



सब वैद्य हकीम सुजन जनोंको विदित हो कि, अब इस संसारमें नाना-प्रकारके वैद्यक ग्रंथ छपे हैं देववाणीमें देश परदेशमें विराजमान हैं किस्मकिस्मके सब दवा तरकीब लिखे हैं लेकिन संस्कृतमें शब्द है तो कुछ मालूम नहीं होताहै, विना वैद्यक पढे अब वैद्य होना चाहता है दाम देकर वैद्यक लेकर रख देता है, दवा देने लगा खासा वैद्य बन गया । विना दश पन्द्रह वर्ष गुरुके पास पढे कुछ वैद्यक विद्या समझमे नहीं आतीहै । वैद्यक विद्या कठिन है तिसको देखकर मुन्शी भगवान प्रसादका शिष्य भगत भगवानदासको बहुत पंडित वैद्यलोग हकीमजन और छापेखानेके मालिक सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासने भी लिखा कि "रसराजमहोदधि" वैद्यक भाषाका तीसरा भाग बने तब भगत-जी सब देव मनायके और मुन्शी भगवानप्रसाद, पंडित कामताप्रसाद, पंडित इन्द्रदत्त, पंडित भगवानदत्त, पंडित रामअवतार इन सबकी कृपादृष्टिसे और सिद्धि रूपको नमस्कार करिके सहज हिन्दी भाषामे नवीनरीतिसे अनेक प्रकारके धातु शोधन मारण शुद्धकरण गुण अनुपान सर्व रोगोंपर नाना प्रकारके उपाय रोगनाशन सरल क्रिया विधिपूर्वक वैद्यक मतानुसार रचित किया गया। ऐसी भस्मक्रिया सहज विधि दूसरे वैद्यक ग्रंथमें मिलना कठिन है सो परउप-कारी समझके मुन्शी भगवानप्रसादका शिष्य भगत भगवानदास वल्द शुबराज मुराई चकबढवलनिवासी जिले जौनपुरने निरचित किया । जो शब्द भूल चूक होय शुद्ध करलेवें । मिती भादों सुदी पंचमी वार रविवार संवत् १९५९ तारीख ७ सितम्बर सन १९०२ ईसवी ॥

आपका कृपाभिलाषी—
भगत भगवानदास

॥ श्रीः ॥

अथ वैद्यक रसराजमहोदधि भाषाकी अनुक्रमणिका।

भाग तीसरा.

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीः ॥



अथ वैद्यक रसराजमहोदधि भाषा ।

तीसरा भाग ।

बन्दना–दोहा ।

बन्दौ चरण गणेशके ॥ शब्द कठिन विकराल ॥
दीजै बुधि विद्या कछुक ॥ जानिक आपन बाल ॥
जगदम्बा परमातमा ॥ तुम हौ दीनानाथ ॥
सरस्वती हियमें बसो ॥ सब विधि नावो माथ ॥
सिद्धिसुरूप दयालु प्रभु ॥ वैद्यक पर मन लाग ॥
सब मिलिके रक्षा करहु ॥ बनै तीसरो भाग ॥
रसराज महोदधि ग्रंथ यह ॥ यक में करहुँ प्रकाश ॥
नहि पिंगल नहिं कोप कछु ॥ रामनाम कर आश ॥
शीलवान अरु भाग्यवान् ॥ भगवान् प्रसाद है नाम ॥
वैद्यनाथ बुधिवान अति ॥ तिनको सदा प्रनाम ॥

सबही देव मनायके ॥ परमारथ कार्य विचार ॥
शोधन मारण धातु सब ॥ वैद्यकके अनुसार ॥
सबकर आज्ञा पायके ॥ वैद्यक लिखों अपार ॥
धातू भस्म रसायनी ॥ गुण बल अपरम्पार ॥
भारतवासी दुःखिया ॥ नानाविधिके रोग ॥
तिनके नाशन वासते ॥ वैद्यक बना सँयोग ॥
विधिपूर्वक बनवे कोई ॥ गुरुक्रिया मतानुसार ॥
एक भस्म अनुपानसे ॥ नाशैं रोग हजार ॥
परआजा हमारो जीत है ॥ आजा चुरामणि जान ॥
भक्त शिवराज कर पुत्रमैं ॥ भगवानदास सो मान ॥
ठाठर गोदामके पासही ॥ चकबढ़वल है स्थान ॥
जिला जौनपुर जानहू ॥ जानत सकल जहान ॥
सजननको परनाम करि ॥ विनय करौ कर जोरि ॥
भूले शब्द सुधारियो ॥ हास्य न करियो मोरि ॥
भादों मास पुनीत है ॥ सुदि पंचमी रविवार ॥
संवत उन्निससौ उनसठ ॥ योग लग्न अनुहार ॥
उनइस सौ दुइसन ईसवी ॥ सितम्बर तारीख सात ॥
शुभग ग्रंथ पूरण भयउ ॥ दियों सेठके हात ॥
गंगाविष्णु खेमराजजी ॥ पिता श्रीकिसनदास ॥

मारवाड निज देश है॥ कीन्ह वम्बई वास॥
तिनकर यन्त्रालय शुभग॥ श्रीवेंकटेश्वर नाम॥
बहुप्रकारके ग्रन्थ छपें॥ नानाविधिके काम॥

इति।

अथ वैद्यके हेतु शिक्षा।

पहिले जो वैद्यक विद्या सीखना होय तो अपने देशकी भाषा पढ़े तब देवनागरी आदि अच्छी तरह पढ़े तब पीछेसे कोप शास्त्र और निघंटु शास्त्र चार पांच पढ़े तब वैद्यक शास्त्र पढ़े वाग्भट्ट निघण्टुरत्नाकर चरक सुश्रुत पढ़े पन्द्रह वर्ष गुरुके पास रहकर सब वैद्यकी क्रिया सीखै अर्क रसायन धातु-शोधन मारण चूर्ण गोली मोदक अवलेह हलुवा कपाय काढा सर्वत चासनी पाक कल्क तेल लेप चीर फार मलहम इन सबको गुरुके सामने अच्छी तरहसे देखै, और करै सब किसमकी वनस्पती बूँटी जडी पहचानै और थोरा ज्योतिप पढ़ै तब ठीक होताहै। सम्पूर्ण वैद्यक क्रिया मालूम होय तब वैद्यजन रोगीके रोगका निदान लक्षण नाडी चेष्टा इत्यादिको देख रोग निश्चय करै तब दवा रोगीको देवै तब रोग-दोप छूटता है इति.

अथ शरीरकी भूत संख्या ।

शरीरमें सब २४ तत्त्व हैं सो सब अंगमें अलग २ भी हैं शरीरमें सब २०० संधि हैं सो सब अंगमें अलग २ भी हैं शरीरमें १०७ मर्म हैं सो सब अंगमें अलग २ भी हैं शरीरमें ५०० पेशी हैं सो सब अंगमें अलग २ भी हैं शरीरमें ३०० हाड हैं सो सब अंगमें अलग २ भी हैं शरीरमें ७०० नाडी हैं सो सब अंगमें अलग २ भी हैं शरीरमें सब९०० नसें हैं सो सब अंगमें अलग२ भी हैं शरीरके रोमकी संख्या गिनने लिखने योग्य नहीं है। ऊपर जो भूतसंख्या लिखी है उसीसे सब शरीर रचित है उसीमेंसे कोई एक बिगडती है या चोट लगती है तो यह शरीरमें जो जीव है उसको दुःख तुर्त होता है और जैसे जहाज खीलासे लोहासे बन्धी रहती है तैसे यह शरीर हाड नसआदिसे बंधा है। जैसे मकान सब सामानसे रचित है तैसे यह शरीर रचित है जैसे मकानको मनुष्य छोडके कहीं चला जाता है वह मकान गिर जाता है तैसे यह शरीरमेंसे जीव छोड़के निकल जाता है पीछेसे सुन्दर शरीर बिगड़ सारे गलि जाता है। सो भाई लोग। परलोकका खियाल करो परमार्थ करो सच्चा बोलो झूठको छोडो बुरे कामको त्याग करो चार दिनोकी यह जिन्दगी है यह तन

पीछेकी छपी जानो परमेश्वरको जपो सब काम उनके अधीन हैं वही एक बुन्द पानीसे इस शरीरको रचते हैं उनको ख्याल करो.

अथ शरीरके हाडकी संख्या चित्र ।

सब शरीरमे ३६० हाड हैं और ऐसे वेदवादी कहते हैं, कि शल्य तन्त्रमें सब हाड ३०० कहते हैं सो यही ३०० हाडको अलग २ भी लिखते हैं सो यह शरीरमें तीन भाग हैं आदि भाग मध्य भाग अन्त भाग । आदि भागमें १२० हाड हैं, मध्यभागमें ११७ हाड हैं, अन्त भागमें ६३ हाड हैं और सब शरीरमें अलग अलग भी हाड हैं सो चित्रके मोकाबिले दिखाये जायंगे । सब अंग अंग पर अंक रक्खा रहेगा.

अथ नाडीका स्वरूप भेद ।

इस शरीरमें ७०० नाड़ी हैं सो शरीरका दुःख सुख उन्हीं नाडियोंके आधीन है । सातसौ नाडियोंकी जड नाभि है । नाभिसे नाड़ी मस्तक और पांवतक दोनों हाथ बलकिन सब शरीरमें फैली रहती हैं सो नाडी सब शरीरमे रस पहुंचाती हैं शरीरको तृप्त करतीहैं । जैसे फूल अन्न वगीचा आदिको वहती हुई जलकी नाली तृप्त करतीहै सीचतीहै तैसे सातसौ नाड़ी शरीरको भापण नीद जागना शरीरको सुख देती हैं,

मनुष्यका प्राणजीव नाभि है । देखो एक बुन्द कोई अच्छी वस्तु शीतल वोलाके शरीक होय खाय लेय उसी दम आंख कान नाक हाथ पाँव तक तृप्त कर देतीहै । नाभिपर परतै जो गरम वा कडुवा खाय लेवै तो ऑख कान नाक पावमेंसे अग्नि निकलने लगती है ऐसा जानो.

अथ मुख्य शिराभेद नाडीका वर्णन ।

पहिले जड़ चार नाडी हैं–वात नाडी पित्त नाडी कफ नाडी रक्त नाडी । तब वातवाहिनी १० नाडी हैं पित्तवाहिनी १० नाडी हैं कफवाहिनी १० नाडी हैं रक्तवाहिनी १० नाडी है । सो वातवाहिनी नाडी वात स्थानमें जाके १७५ होजाय हैं और पित्तवाहिनी नाडी पित्त स्थानमें जाके १७५ हो जाय हैं और कफ-वाहिनी नाडी कफ स्थानमें जाके १७५ होजाय हैं और रक्तवाहिनी नाडी रक्त स्थानमें जाके १७५ हो जाय हैं । ऐसे सब मिलकर ७०० नाडी । जैसे मस्तक शिर कांधेके ऊपर १६४ नाडी हैं अन्त भाग है और कांधेके नीचे जांघतक दोनो हाथ लेके ३३६ नाडी हैं मध्य भाग है और जांघके नीचे दोनों पॉवमें २०० नाडी आदि भाग है.

अथ सब रोगका दान उपदान।

पहिले सब रोगका कर्मविपाक करावै रोगीके रोग दोपको निश्चय करै तब उसका दान उपदान करावै। विना दान पूजा पाठ किये रोगीका जन्मपाप नही छूटताहै महादेवका महारुद्रका जप मृत्युंजय और परमेश्वरका सहस्र नामका पाठ करावै ब्रह्माके स्तोत्रका पाठ करवावै ब्राह्मणको भोजन देवै दीन मनुष्यको अन्न देवै और गोदान करवावै दुर्गाकी पूजा करवावै तव रोगीको दवा देवै, दवा गुण करै.

अथ रोगीके हितकी शिक्षा।

अच्छा वैद्य वैद्यकशास्त्र पढा हुआ होय तब द्रव्य होय तब अच्छा दवा लेवै तब अच्छा रोगी विश्वासी दवाका निश्चय करनेवाला पथ्य करनेवाला रोगी होय तो रोग छूटता है। रोगी निरोग होयके चंगा होताहै वैद्यको द्रव्य और यश मिलता है। जो रोगी दवा नही करता है तो रोग साध्य होताहै जो साध्य दवा नही करताहै तो महासाध्य होता है जो महा-साध्य दवा नही करता है तो असाध्य होता है जो असाध्य दवा नहीं करता है तो महा असाध्य होताहै जो महाअसाध्य दवा नही करताहै तो मृत्यु होती है। निश्चय करके रोगका मालिक वैद्य है उमरका मालिक

वैद्य नहीं है। रोगका दवा उपाय नाना प्रकारका है मृत्यु कालका दवा नहीं है । जबतक श्वास शरीरमें आता रहै तबतक हजारों तरकीब करे रोगीको त्याग नहीं करै। दवासे रोगीके रोगको नाशै. विना दवा रोगीका रोग नहीं छूटताहै । रोगीकी दवा करै पापके वास्ते दान पुण्य करै पूर्व जन्मके पापसे भी रोग होताहै उसके वास्ते मृत्युंजय जप करवावै.

अथ दूत लक्षण ।

रोगीके जातिका होय सफेद कपड़ा पहने होय लंगड़ा काना न होय दूतके कहे अक्षरको गिनि तीनको गुणाकर आठका भाग देवै सम बचै तो मृत्यु होय विषम बचै तो आरोग्य होय.

अथ रोगीकी परीक्षा ।

रोगीकी चेष्टा देखकर नाडी देखकर पूंछकर परीक्षा करै । बिना रोगीका रोग निश्चय किये दवा नहीं गुण करती है। पहिले अच्छी तरहसे रोग चीनके दवा करै। गरम शरद कमती ज्यादा बालकका मोताद तरुणका मोताद वृद्धका मोताद अनुपान समझके दवा देवै । रोगीका सुपारस न करै रोगीके सुपारससे वैद्यक और वैद्यकी प्रशंसा जाती रहती है.

अथ रोगीके पथ्य।

रोगीको चाहिये कि पथ्यसे रहै वैद्यके कहे प्रमाण
व पथ्य करै और कच्चा पानी न पीवै। साधारण
में अधचुरा पानी पीवै। धुनि ज्वरमें अढाईभाग
वरमें जलजाय तो पीवै। सन्निपात ज्वरमें चतुर्थ
ो जलजाय तो पीवै, तो रोग छूटजाय.

अथ सोना आदिक धातुप्रकार।

सोना चान्दी तांबा रांगा शीशा लोहा जस्ता यह
त धातु हैं सो इन्हीके जुदा २ शोधन मारण गुण
ुपान इत्यादि लिखते हैं.

अथ प्रथम सोनाशोधन विधि।

जंबीरी निम्बूके रसमें कांजीमें सेन्धानोनमें तेलमें
मूत्रमें छांछमें गायके दूधमें त्रिफलामें इन सबमें
नाका पतला पात करिके अग्निमें लाल करके सात
त वार बुझावै तब शुद्ध होय। इसी विधि प्रमाणसे
तो धातु शुद्ध करै तब मारण करै दोप रहित हो.

अथ सोनामारण विधि।

शुद्ध सोना २ तोले पारा ६ मासे आँवरासार
न्धक ६ मासे दोनो को एकमें मिलायके खरल करै
व कजली होय जाय तब स्वर्णक्षीरीके दूधमें मिला-

यके सोना [illegible] पानपर रखके गोला बनायके कोविदारके छालकी लुगदी बनाय उसीके बीचमें सोनेका गोला धरके कपडमिट्टी कर गजपुट आँच बीनुवा गोबरीकी सात देवै । इसी विधिप्रमाण तब कपोतके रंग बहुत उत्तम भस्म होय.

अथ सोना भस्म शुद्ध करण ।

गुंजाके पत्तीके रसमें सातवार भिगोय सुखाय तब कपडमिट्टी करके गजपुट आंच देवै फिर कोविदारके पत्ताके रसमें सातवार भिगोय सुखाय कपडमिट्टी करके गजपुट आंच देवै फिर निंबूके रसमें सातवार भिगोय सुखाय कपडमिट्टी करके गजपुट आंच देवै फिर कुमारीके रसमें सात वार भिगोय सुखाय कपडमिट्टी कर गजपुट आंच देवै फिर भृंगराजके रसमें सातवार भिगोय सुखाय कपडमिट्टी करके गजपुट आंच देवै तब शुद्ध भस्म अमृतके तुल्य होय । अनुपानके साथ सर्वरोगको नाश करै.

अथ सोना भस्म खानेका गुण ।

सोनाका भस्म १ रत्तीसे २ रत्ती तक देवै निर्बल पुरुष स्त्री रोगीका रोगबल विचारिके देवै तो दिव्य शरीरको करै और क्षयरोग श्वास खाँसी प्रमेह संग्रहणी अतिसार कुष्ठ नया ज्वर विषमज्वर उन्माद रक्तविका-

रको नाशै नवा रक्तको बढावै नपुंसकताको दूर करै जवान अवस्थाको स्थिर रखै कांतिको बढावै बल वीर्य रुचिको करै बुद्धिको वाणीको शुद्ध करै आयुको बढाय निर्बलताको हरै शरीरको दृढ करै काम करनेमें शक्ति देवै त्रिदोषको नाशै अपस्मार शूल ज्वरको हरै। मनोहर है शीतल है पवित्र है जैसा सोनाका नाम है, वैसा गुण देवै है.

अथ सोना भस्म खानेका अनुपान।

सोनाका भस्म त्रिकुटाके चूर्ण घृत मिलाय खानेसे क्षयी मन्दाग्नि श्वास खांसी अरुचि इन्होंको नाशै बल और धातुको बढावै पांडुरोग संग्रहणीको हरै सर्पका विष तुरत नाशै और मच्छके पित्तके संग सोना भस्म खानेसे दाहको जल्द नाशै और भृंगराजके रसके संग सोनाभस्म खानेसे वीर्य बढै और गायके दूधके संग सोनाभस्म खानेसे बल धातु बढै सांठीके रसके संग सोनाभस्म खानेसे नेत्ररोग दूर होय घृतके संग सोनाभस्म खानेसे बुढापा नाशै वचके चूर्णके संग सोनाभस्म खानेसे स्मृति बढै केसरसंग सोनाभस्म खानेसे कांति बढै पीपली चूर्ण दूध संग सोनाभस्म खानेसे क्षयीरोग सात प्रकारका दूर होय और सोंठ लोंग मिरच इन्होंके संग सोनाभस्म खानेसे सन्निपातज्वर

और उन्मादरोग दूर होय और आँवलाके चूर्ण शहदके संग सोनाभस्म खानेसे प्राण कैसाही संकटमें रहें तो बचै, बचके चूर्ण गायके दूध संग सोनाभस्म खानेसे कुछ दिन बुद्धि बढे. बचके चूर्ण संग सोनाभस्म शहद मिलाय खानेसे अपस्माररोग उन्माद रोग दूर होय, कमलकेसर संग सोना भस्म खानेसे शरीर पुष्ट होय कांति बढै । शंखपुष्पीके रससंग सोना भस्म खानेसे उमर आयु बढै बिलारीकन्दके संग सोना भस्म खानेसे पुत्र उपजै आदी पीपली रससंग सोनाभस्म खानेसे तेरह प्रकारका सन्निपातज्वर दूर होय त्रिफलाचूर्ण संग सोनाभस्म खानेसे आँव दस्त चार प्रकार संग्रहणी नाश होवै नागकेसरका चूर्ण गोदनदूधीके रससंग सोनाभस्म खानेसे खूनी बवासीरको हरै हल्दी पीपली चूर्ण शहद मिलाय सोनाभस्म खानेसे खांसीरोग श्वासरोग दूर होय बडी इलायची पीपरी संग सोनाभस्म खानेसे शहद मिलाय ऊपरसे गायका दूध पीपली नपुंसकता दूर होय नैनु घृत संग सोनाभस्म खानेसे शरीरका दाह पित्तरोग जावै मिश्री घृतसंग सोनाभस्म खानेसे सब किसमका शिरोरोग दूर होवे राल बडी इलायची मिसरी कपूर चूर्णसंग सोनाभस्म खानेसे पेशावके

रस्तासे खून गिरना चिल्क बन्द होय मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात नाश होवै पेडुकी पीडा दूर होय उमरका छाल और मिरचके रस संग सोना भस्म खानेसे स्त्रीका गर्भस्थान शुद्ध होय और दाह प्रदर नाश होय काकमाच्छीके अर्क संग सोनाभस्म खानेसे स्त्रीका १४ प्रकारका प्रदर हरै गर्भ रहै रजोधर्म शुद्ध होय चौलाईके जडके अर्कमें शहद मिलाय सोना रस छोड पीनेसे स्त्रीके प्रदररोग नदीके समान बहता बन्द होय सब किसमकी वेदना दूर होय सोना भस्म जिस रोगपर दिया जायगा अनुपानके साथ तो स्त्री पुरुष बालक जवान वृद्ध सबहीको गुण देवेगा। शरीर पवित्र होजायगा जैसा सोनाका कीमत और नाम है वैसा गुण सोनाके भस्ममें है खानेसे सब पाप छूटि जाता है। सोनाका जारन बडे कठिनसे होता है जिसपर महादेव कृपा करते हैं वही पुरुष बनाता है.

अथ चांदीशोधन विधि।

चांदीका पतला पात बनायके अग्निमें लाल करिके अगस्तके रसमें इमलीके रसमें भंगराके रसमें काला धतूरके रसमें निबूके रसमें बनगोभीके रसमें बनकपासके रसमें इन सबोमें सात सात बार बुझावै तब शुद्ध होय.

अथ चांदीमारण विधि।

शुद्ध चांदी लेकर सफेद कण्टकारिके जड पत्ताको कूटिके लुगदी बनायके उसमें शुद्ध चांदी रखके कपडमिट्टी करिके बिनुवा गोबरीका गजपुट सात आंच देवै तब भस्म होय.

अथ चांदी भस्म शुद्ध करनेकी विधि।

निंबूके रसकी पांच भावना देवै तब कपड़मिट्टी करके एक गजपुट आँच देवै फिर गोदनदूधीके रसकी पांच भावना देवै तब कपडमिट्टी करके एक गजपुट आंच देवै फिर केलाके पानीकी पांच भावना देवै तब कपडमिट्टी करके गजपुट आंच देवै फिर तितलीके रसकी पांच भावना देवै तब कपडमिट्टी करके एक गजपुट आंच देवै फिर मेहदीके रसकी पांच भावना देवै तब कपडमिट्टी करके एक गजपुट आंच देवै फिर घीकुमारके रसकी पांच भावना देवै कपडमिट्टी करके एक गजपुट आंच देवै तब अति उत्तम भस्म होय इस भस्ममें कोई दोष नहीं है.

अथ चांदीभस्म खानेका गुण।

चांदीभस्म कसेला है और मीठा है मन्दाग्निको दीपन करे है वीर्य उमर बुद्धि बलको बढ़ावे है और पांडुरोग क्षयीरोगको नशावे है कांतिको बढ़ावे है शरी-

रको पुष्ट करै है मनुष्यको रोगरूपी समुद्रसे पार करै है क्षुधाको लगावै है विषको तुर्त नाशै निर्बलताको दूर करै वात पित्त कफको हरै प्रमेहरोग तापतिल्ली खाँसी यकृत मदात्यय अपस्मार शूल नवा ज्वर विषमज्वर इन्ही सबोंको नाशै शरीरको नीरोग करै है.

अथ चान्दी भस्म खानेका अनुपान।

चान्दी भस्म आधीरत्तीसे १ रत्तीतक अथवा २ रत्ती तक देवै मिसरीके संग चान्दी भस्म खानेसे शरीरका दाह जावै त्रिफलाके चूर्णके संग चान्दी भस्म खानेसे वातपित्त रोग जावै त्रिकूटाके चूर्णके संग चान्दीभस्म खानेसे क्षयी पांडुरोग पेटरोग ववासीर रोग श्वास खांसी तिमिररोग पित्तरोग इन्ही सबोंको दूर करै इलायची तमालपत्र दालचीनी इन्होके चूर्णके संग चान्दीभस्म खानेसे सब किसमके प्रमेह रोगको नाशै पिपली चूर्ण शहद संग चान्दी भस्म खानेसे नवाज्वर पुराणा ज्वर विषमज्वर एकज्वर पित्तज्वर तीसराज्वर इन्होको नाशै है, पिपली इलायचीका चूर्ण संग चान्दी भस्म खानेसे उसके ऊपरसे अर्क धनिया पीनेसे सर्व प्रकारका ज्वर दूर होय नाताकत शरीरको ताकत देवै नवा खूनको पैदा करै शरीरको लाल करदेवै बच चूर्ण संग चांदीभस्म खानेसे ऊपरसे गायका दूध पीवै तो बुद्धि

बढ़ै बालरोगको तुरत नाशै शूल हरै वच ब्रह्मडंडीका चूर्ण घी संग चान्दीभस्म खानेसे उन्मादरोग अपस्मार रोगको दूर करै असगन्धके जड संग चान्दीभस्म बच्चावाली गायके दूधमें पीसके खानेसे स्त्री बांझ होय तो पुत्र होय बांझपना दूर होय जो कुछ दिन सेवै तब पान बीडाके संग चान्दीभस्म खानेसे शरीर पुष्टि होय मिसरी और दूधके खोवा संग चांदी भस्म खानेसे शरीरमें धातु बढायके नाताकतको हरै बलको करै है मातुलिंगीके बीजको बच्चावाली गायके दूधके संग पीसके चान्दीभस्म खानेसे स्त्रीका बांझपना दूर होय पुत्र होय सही आंवला पीपरी चूर्ण शहद संग चान्दी भस्म खानेसे पांच प्रकारका हुचकी रोग दूर होय शिवलिंगीके बीज संग चान्दी भस्म खानेसे स्त्रीके पुत्र होय बरबट तापतिल्ली पुराना ज्वर दूर होय दमा खांसी गोला सब रोगोंको दूर करै सही बबुल छाल कटहल छाल महुआ छाल पानीमें पीस चान्दीरस छोड़के पीवै तो बीस प्रकारके प्रमेहरोग दूर होयँ अनुपान बदलता जावै सब रोगको नाशै रोगीका बल रोग विचारके देवै बालक जवान वृद्धको समुझिके देवै तो सब रोगको शरीरमें हलने देवै नहीं सदा शरीरपुष्टि बनी रहै निर्बल कभी होवै नही.

अथ तामाशोधन विधि।

अच्छा तामाका पतला पत्र बनायके अग्निमें लाल करिके छांछमें थोहरके दूधमें आकके दूधमें निसक के पानीमें निम्बूके रसमें गोमूत्रमें गायके दूधमें इन सबोंमें सात सात बार बुझावै तब सब दोष तामाका दूर होय तब शुद्ध होयके तामाकी गरमी नाश होय.

अथ तामामारण विधि।

शुद्ध तामा १२ तोले गौरीबीज २ तोले चौकिया सोहागा १ तोला इन सबको खरलमें छोड़ ऊखका शिरका डालिके खरल करै तब गोला बनायके तिनपतियाकी पत्ती लेकर लुगुदी बनाय इसीमें तामाका गोला रखके कपड़मिट्टी करके दस गजपुट आँच इसीविधि प्रमाण देवै तब मोरके पंखके रंग भस्म होय.

अथ तामाभस्मशुद्धकरण विधि।

जिमीकन्दके रसमे सात भावना देवै तब कपड़मिट्टी करके १ गजपुट आंच देवै फिर ऊखके रसकी सात भावना देवै तब कपडमिट्टी करके एक गजपुट आंच देवै फिर शहदमें खरल करके तब कपडमिट्टी करके एक गजपुट आंच देवै फिर घीमें खरल करके

तब कपडमिट्टी करके एक गज पुट आंच देवै फिर गायके दूधमें खरल करके तब कपडमिट्टी करके एक गजपुट आंच देवै फिर कुमारीके रसकी सात भावना देवै और कपड़मिट्टी करके एक गजपुट आंच देवै तब अति उत्तम अमृतके तुल्य भस्म होय. सब रोगोंको अनुपानके साथ नाश करै । इस रसमें कुछ दोष नहीं है.

अथ तामाभस्म खानेका गुण ।

तामाभस्म खानेसे अठारह प्रकारके कुष्ठ रोगको तिल्लीको ज्वर पुराना वायु कफ रोग श्वास खांसी दमा तन्द्रा शूलरोग उदररोग कृमिरोग छर्दिरोग पांडुरोग अतिसार रोग बवासीर रोग गुल्मरोग क्षय भ्रम मस्तकरोग प्रमेहरोग हुचकीरोग इत्यादि सबरोगोंको नाशै जठराग्निको बढाय क्षुधाको लगावै रुचिको करै रक्तवात हरै दस्तावर है बलदायक है वलीपलितको नाशै अनुपानके साथ सब रोगोको दूर करै.

अथ तामाभस्म खानेका अनुपान ।

मिसरी२तोले खोवा८तोले इलायची छोटी दो मासे तामाभस्म १ रत्ती संग खायके दो महीना ऊपरसे गायका दूध पीवै तो महाबल होय शरीरपुष्टि होय नामरदपना दूर होय धातु शरीरसे कमती होवै नही

कोई दुःख देहमें आवे नहीं गूलरके फल चूर्ण–संग तामाभस्म खानेसे बीस प्रकारका प्रमेह रोग दूर होय। अनार फलके दाना संग तामा भस्म खानेसे कलेजाका दाह और पीड़ा दूर होय भूख लगे। बड़ी इलायची मिसरी संग तामा भस्म खानेसे वात पित्त कफको नाशै धातुपुष्टि होय आदिरस हरैं छोटी सेन्धा-नोन संग तामाभस्म खानेसे अजीर्ण रोग कभी होवै नही। बतासाके संग तामाभस्म खानेसे पित्तज्वर जावै। पीपली चूर्ण संग तामाभस्म खानेसे वातज्वर कफ-ज्वर जावै आदी मिरच संग तामा भस्म खानेसे सन्नि-पात ज्वर तेरह प्रकारका दूर होय। कच्चा बेल भूँजके उसके रस संग तामाभस्म खानेसे अतीसार आँवद-दस्त अच्छा होय सोंठचूर्ण घी संग खानेसे संग्रहणी रोग दूर होय. बनगोभी मिरच संग तामाभस्म खा-नेसे वादी खूनी बवासीर रोग दूर होय। आंवलाचूर्ण तथा पीपलीचूर्ण संग तामाभस्म खानेसे आँवदस्त बन्द होय पांच प्रकारका हुचकीरोग श्वासरोग दूर होय। नि-म्बूके रस बीज संग तामाभस्म खानेसे हुचकी५ प्रका-रकी दूर होय। रोगका लक्षण निदान परीक्षा अच्छी तरह करके रोगीका रोग निश्चय करके गरम शरद दवाका मोताद अनुपान विचारके सर्व रोगपर तामा-

भस्म देवै जैसा रोग हो वैसा अनुपानसे देवै तो सव रोगोंको नाशै है.

अथ रांगाशोधन विधि ।

अच्छा रांगा खुरासानी लेवै अग्निमें गलायके त्रिफलाके काढामें तेलमें कांजीमें माठामें गोमूत्रमें आकके दूधमें इन सवोंमें सात सात बार वुझावै तव शुद्ध होय । सब दोप रांगाका शांत होय.

अथ वंगनाम रांगा मारण विधि ।

बबूलके कोयलाकी भट्टी बनाय अग्नि छोड उसीके ऊपर तांबा रख देवै जब तांबा लाल होय तब उसी पर रांगा छोड देवै रांगा गलि जाय तब ऊपरसे हल्दी पीपर धनियाँका चूर्ण छोडता जाय कलछुलीसे चलाता जावै ऊपरसे हरिप्रियाका रसभी छोडता जावै इसी विधि प्रमाण एक घण्टामें बहुत उत्तम भस्म होय, इसीको बंगरस कहते हैं.

अथ वंग शुद्धकरण विधि ।

तीनपतियाके रसमें मेहदीकी पत्तीके रसमें बरके बरोंहके रसमें निम्बूके रसमें कुमारपाठाके रसमें छोटी गोदनदुद्धीके रसमें एक एक वस्तुके रसमें सात सात

भावना देवै और एक एक गज पुट आंच जुदा जुदा देवै, तब उत्तम बंग भस्म लोक प्रसिद्ध होय.

अथ बङ्ग भस्म खानेका गुण।

खांसी श्वास पीनस गुल्म उदर वायु इत्यादि सबको नाशै दीपन है रुचि और बलवीर्य और बुद्धिको बढावै भूखको लगावे कांतिको बढावै ठंढा सुन्दरताको बढावै बुड्ढेको जवान करै नपुंसकताको हरै धातुको स्थिर करै क्षयी प्रमेह सब रोगको नाशै। इस रसके सेवन करनेसे स्वप्नमें भी वीर्यक्षय न होय.

अथ बंगभस्म खानेका अनुपान।

कपूर शुद्ध किया तिसके संग बंग भस्म खानेसे मुखकी दुर्गंधि जावै दूधके खोवा संग बंगभस्म खानेसे शरीरमे धातु बढायके शरीरको पुष्ट करै, लौंग पीपरी इलायची चूर्ण संग बंगभस्म खानेसे नामर्दी जावै और शरीर जो गरम रहे तिसको नाशै। जायफलके संग बंग भस्म खानेसे शरीरकी कांति बढै धातुपुष्टि होय, तुलसी पत्ताके संग बंगभस्म खानेसे प्रमेह रोग जावै, घृतके संग बंग भस्म खानेसे पांडुरोग जावै, भूंजा सोहागाके संग बंग भस्म खानेसे गुल्म रोग

जावे हल्दी चूर्ण शहद संग बंग भस्म खानेसे रक्तपित्त रोग जावै पिपली चूर्ण शहद संग बंग भस्म खानेसे पुराना ज्वर, देहका दाह दूर होय शरीरमें बल बढे। मिसरीके संग बंग भस्म खानेसे पित्तज्वर पित्तरोग जाय । नागबेलके रस संग बंग भस्म खानेसे अंगवन्धनरोग जावै पिपली चूर्ण संग बंग भस्म खानेसे मंदाग्नि जावै हल्दी आधी कच्ची आधी भूँजी हुईका चूर्ण शहद संग बंग भस्म खानेसे ऊर्ध्व श्वास रोग जावै चमेलीके रससंग बंग भस्म खानेसे शरीरकी दुर्गंधि जावै। निम्बूके रससंग बंगभस्म खानेसे शरीरका दाह मिटै कस्तूरीके संग बंग भस्म खानेसे वीर्यका स्तम्भन होय खैर चूर्ण संग बंग भस्म खानेसे चर्मरोग जावै। सुपारी चूर्ण संग बंग भस्म खानेसे अजीर्ण रोग जावै नैनुघी संग बंग भस्म खानेसे पुराना हाड नवीन होय शरीरकी गरमी मिटै दूध मिश्रीसंग बंगभस्म खानेसे धातु बढै बलवीर्य बढै प्रसन्नता उपजै। भांगके चूर्ण दूध और शहदसंग बंगभस्म खानेसे वीर्यस्तंभन होय लहशुन घीमें भूँजिके उसके संग बंगभस्म खानेसे वायुकी पीड़ा देहका जकडना दूर होय समुद्रफलके चूर्ण संग बंग भस्म खानेसे तथा निर्गुण्डीके रससंग बंगभस्म खानेसे कुष्ठ ऐसे जावैं जैसे सिंहके शब्दसे मृग भगिजावैं

ऊंगाकी जडके चूर्णसंग बंगभस्म खानेसे नपुंसकताको नाशै लौंग समुद्रफलचूर्ण नागर पानके रसमें शहद बंगभस्म मिलाय इंद्रियपर लेप करनेसे इन्द्री बढै कठिन भी होय। गोलोचन लौंग संग बंगभस्म तिलक करनेसे जगत् मोहै। अरंडी जडके संग बंगभस्मका शिर पर लेप करनेसे शिरकी पीडा नाश होय काकमॉचीके रससंग बंगभस्म खानेसे पेटमेंका वायु शिर पीडा कडक पेशाब होना इन्होको नाशै। नागकेशर मिसरी गायके दूधसंग बंगभस्म खानेसे स्त्रीका सोमरोग प्रदर रोगको दूर करै। गोखरू चूर्ण मिसरी संग बंगभस्म खानेसे धातुका गिरना बन्द होय प्रमेहरोग दूर होय। शुद्ध मुरदासींग शुद्ध गौरीबीज संग बंगभस्म खानेसे वा शरीरपर मालिसके करनेसे चर्मरोगसे हुवा दीनाईरोग जडसहित जावे गोरखमुंडीका रस गोखरूका रस चीनी मिलाय बंगभस्म छोडके सबेरेके वखतमें पीवै तो बीस प्रकारके प्रमेहरोगको नाशै। पुराणा घी पुराणा गुडसंग बंगभस्म खानेसे शिरकी-पीडा सब प्रकारकी नाश होय। अफीम केसर बराबर लेवै इसमें बंगरस छोड छोटी मिरच बराबर गोली बनावै और एक गोली खावै ऊपरसे छांछ पीवै आंव दस्त बन्द होय तथा अतीसार खूनका गिरना दूर होय.

अथ शीशाशोधन विधि ।

शीशाको अग्निपर गलायके अंकोलके रसमें त्रिफलाके काढामें गायके मूत्रमें कांजीमें आकके दूधमें कुमारीके रसमें इनके रसमें जुदा जुदा सात २ बार बुझावे सब गरमी और दोष दूर होयँ.

अथ शीशामारणविधि ।

अग्निपर तांबा रख देय तब उसमें शीशा छोड देवै जब शीशा गलजाय तब ऊपरसे केवडा और तुलसीका चूर्ण छोडता जाकर कलछुलीसे चलाता जावै चूर्ण छोडता जावै तो एक घड़ीमें हल्दीके रंग भस्म होय.

अथ शीशाभस्मशोधन विधि ।

निबूके रसमें खरल करके कपडमिट्टी करके दो गजपुट ऑच देवै फिर वनतुलसीके रसमें खरल करके कपडमिट्टी करके दो गज पुट ऑच देवै फिर यसवन्तीके रसमें खरल करके कपडमिट्टी करके दो गजपुट ऑच, भृंगराजके रसमें खरल करके कपड़मिट्टी करके दो गज पुट ऑच देवै,गोदन्दुद्धीके रसमें खरल करके कपडमिट्टी करके दो गज पुट ऑच देवे फिर घीकुमारीके रसमें खरल करके कपडमिट्टी करके

दो गज पुट आंच देवै तो सिन्दूर रसके रंग शीशा भस्म होय.

अथ शीशा भस्म खानेका गुण।

शीशा भस्म खानेसे क्षयी वायु गुल्म पांडु भ्रम कृमि इन सबोको नाशै कफ शूल प्रमेह खांसी श्वास संग्रहणी मन्दाग्नि इन्होको दूर करै शीशाभस्म कुछ दिन सेवन करनेसे १०० हाथीके बलको देवै। बल वीर्य उमर शरीरको पुष्ट करै त्रिदोषको नाशै आमवातको दूर करै। अनुपानके साथ बल विचार रोगविचारके साथ खानेसे सब रोगोंको हरै.

अथ शीशाभस्म खानेका अनुपान।

मिरचके चूर्ण बतासा संग शीशा भस्म खानेसे नवा ज्वर पुराना ज्वर विषम ज्वर त्रिदोष ज्वरको नाशै। खोवा मिसरी जायफल पिपली संग शीशा भस्म खानेसे शरीरकी पुष्टि करै। बल कमती होवै नहीं, दम फूलै नहीं, सोंठचूर्ण गुड शीशाभस्म खानेसे छर्दि और कमरकी पीडा शिरकी पीडाको नाशै। पिपली चूर्ण शहद संग शीशाभस्म खानेसे तिल्ली रोग यकृतरोगको नाशै। पिपली चूर्ण काकमांची-रससंग शीशाभस्म खानेसे स्त्रीका प्रसूतज्वर प्रदर नदीके समान बहतेको नाशै। विषमज्वर वातज्वर देहका

सुजापनाको नाशै। शुंठ सोंचरनोन चूर्ण संग शीशाभस्म खानेसे ऊपरसे मकोयका अर्क पीनेसे गुल्मरोग आमवात रोग शूलरोगोंको दूर करै, सोंठ सौंफ चूर्ण संग शीशाभस्म खानेसे अजीर्ण सब प्रकारका जावै ऑवदस्त बन्द होय । शीशाभस्म सबरोगोपर देवै अनुपानसे.

अथ लोहाशोधन विधि ।

अच्छा पोलाद लोहाको रेतीसे रेतायके चूर्ण करि अग्निमें लाल करके त्रिफलाके काढामें निंबूके रसमें गायके गोमूत्रमें बथुवाके रसमें इमलीके रसमें छाछमें आकके दूधमें एक एक जिन्ससें जुदा जुदा चार चार बार बुझावै तब लोहाके सब दोप दूर होयँ.

अथ लोहामारण विधि ।

शुद्ध लोहा २१ तोला अनारके रसमें एक महीना रक्खै तब गौरीबीज २ तोले पारा २ तोले पारा गौरीबीज एकमें खरल करके लोहाचूर्ण मिलाय गोल गोला बनाय कपडमिट्टी करके सात गजपुट आंच देवै इसीविधि प्रमाण । तब लोहाभस्म मोरपंखके रंग होय.

अथ लोहाभस्म शुद्धकरण विधि ।

निंबूके रसकी तीन भावना देवै। कपडमिट्टी करि

एक गजपुट आंच देवै फिर केलाके पत्तेके रसकी तीन भावना देवै कपडमिट्टी करि एक गजपुट आंच देवै फिर बबूलकी छालके रसकी तीन भावना देवै कपडमिट्टी कर एक गजपुट ऑंच देवै फिर मेहदीके रसकी तीन भावना देवै कपडमिट्टी कर एक गजपुट आंच देवै फिर आकके दूधकी तीन भावना देवै कपडमिट्टी कर एक गजपुट ऑंच देवै घीकुमारके रसकी तीन भावना देवै कपडमिट्टी करके एक गजपुट आंच देवै तब लोहाभस्म काजल सरीखा उत्तम बनै.

अथ लोहाभस्मखानेका गुण।

लोहाभस्म खानेसे बल वीर्य उमरको करै है सब रोगोंको हरै है कामदेवको बढावै है शरीरपुष्टिके वास्ते लोहाभस्म उत्तम है लोहाभस्मके समान उत्तम रसायन नही है।क्षीणपना खांसी श्वास कफविकार भ्रम बवासीर गुल्मशूल ८० प्रकारके और वात ८० प्रकारके नाशै पीनसरोग पांडुरोग प्रमेहरोग सब प्रकारके नाशै अरुचि छर्दि इन सब रोगोको दूर करे शरीरकी पुष्टि करै है

अथ लोहाभस्मखानेका अनुपान॥

त्रिफलाचूर्णसंग लोहाभस्म खानेसे वलीपलित जाय पिपली चूर्ण शहदसंग लोहाभस्म खानेसे शरीर पुष्टब कफ रोग दूर होय मिसरीसंग लोहाभस्म खानेसे रक्त

पित्त जावै साठीकी जड गायके दूधमें पीस लोहाभस्म छोड पीनेसे बल बढावे शरीरकी पुष्टि करै सांठीरस संग लोहाभस्म खानेसे पांडुरोगको नाशै हरी पिपली चूर्ण शहदसंग लोहाभस्म खानेसे प्रमेहरोगको दूर करै है । शिलाजीतसंग लोहाभस्म खानेसे मूत्रकृच्छ्र रोग मूत्राघात दूर होय । बांसा रसके संग लोहाभस्म खानेसे ५ प्रकारकी खांसीको नाशै दाख पिपलीचूर्ण शहदसंग लोहाभस्म खानेसे मन्दाग्निको नाशै नागर-पानके संग लोहाभस्म खानेसे वीर्य और कांति बढै शरीरकी पुष्टि करै त्रिफला शहद संग लोहाभस्म खानेसे शरी नीरोग करै कोई रोग शरीरमें आवै नही छोटी हरैं मिसरी संग लोहाभस्म खानेसे लोहाके सरीखे शरीरको करै बल धातु कमती होवै नही हिंगु घीसंग लोहाभस्म खानेसे अस्सी प्रकारके शूल वातको नाशै । पिपली सहद संग लोहाभस्म खानेसे जीर्णज्वर जावै लहशुन घी संग लोहाभस्म खानेसे श्वासरोग जावै सोठ पिपली मिरच चूर्ण शहद संग लोहाभस्म खानेसे शरीरका शीतरोग छर्दिरोग जावे पान मिरच संग लोहाभस्म खानेसे प्रमेहरोग दूर करै त्रिफला चूर्ण और मिसरीसंग लोहाभस्म खानेसे सन्निपात । जावै नवों इन्द्रियोमें ताकत देवै आदीरस घी

शहदसंग लोहाभस्म खानेसे वातज्वर जावै आदी-
रस मिरच संग लोहाभस्म खानेसे सन्निपात ज्वर जावै
आदी रस संग लौग चूर्ण शहत संग लोहा भस्म
खानेसे पित्तज्वर जावै लोहाभस्म खानेसे कफज्वर
जावै आदी पिपरी पीस रस निकालि लोहारस छोड
पीवै तो तेरह प्रकारका सन्निपातज्वर जावै निगुंडीके
रस सोठ चूर्ण संग लोहाभस्म खानेसे८० प्रकारके वात-
रोगोंको नाशै मिसरीसंग लोहाभस्म खानेसे ४०
प्रकारका पित्तरोग जावै पिपली संग लोहाभस्म खा-
नेसे २० प्रकारका कफरोग जावै इलायची दालचीनी
तमालपत्र इन्होके चूर्णसंग लोहाभस्म खानेसे संधि-
रोग जावै सातसौ नसमें बल देवै। त्रिफलाचूर्ण संग
लोहाभस्म खानेसे बीसप्रकारका प्रमेहरोग जावै मिरच
चूर्ण घी तुलसीकी पत्ती संग लोहाभस्म खानेसे वात-
रोग शरीरमे आवै नही.

अथ जस्ताशोधन विधि।

पहिले जस्ताको अग्निपर गलायके गायके दूधमें२१
वार बुझावै फिर इसीविधि प्रमाण त्रिफलाके रसमें
२१ वार बुझावे फिर आकके दूधमें तीनवार बुझावे
तब शुद्ध जस्ता मारण योग्य होय.

अथ जस्ता मारण विधि।

जस्ताको तवापर छोड तवा अग्निपर रखदेवै जब

जस्ता पिघल जाय तो बथुवाका रस छोडता जावै नींबके सोंटासे घोटता जावै तेज अग्नि देवै तो आधा घंटामें सफेद भस्म होय.

अथ जस्ताभस्म शुद्धकरण विधि ।

त्रिफलाके रसमें भंगराके रसमें घीकुमारके रसमें इन्होंके रसमें अलग अलग बत्तीस बत्तीस भावना दे तब जुदा जुदा एक गजपुट तेज अग्नि देवै तब पंचामृतकी एक भावना देवै तब एक गजपुट आंच देवै उत्तम भस्म होय.

अथ जस्ताभस्म खानेका गुण ।

जस्ताका भस्म खट्टा है कडुवाहै ठंढा है कफ पित्तको हरै है एक रत्तीसे दो रत्तीतक देवै तो सर्व रोगको दूर कर शरीरकी पुष्टि करैहै नेत्ररोग प्रमेह पांडु श्वास ज्वर इत्यादि रोगोको नाशै है.

अथ जस्ताभस्म खानेका अनुपान ।

गायके पुराणे घी संग जस्ताभस्म खानेसे नेत्ररोगको नाशै पानके संग जस्ता भस्म खानेसे प्रमेहरोग को दूर करै है अरनीके संग जस्ता भस्म खानेसे मन्दाग्निको नाशै है इलायची दालचीनी तमालपत्र इन्होके चूर्ण संग जस्ता भस्म खानेसे त्रिदोषको नाशै

पिपरी चूर्ण शहद संग जस्ता भस्म खानेसे विषम-ज्वर तपत ज्वरको नाशै है जायफल जावित्री इला-यची मिसरी गायका दूध संग जस्ता भस्म खानेसे नपुंसकपना दूर होय शरीरपुष्टि होय बल न घटै जस्ताभस्म अनुपान बदलता जावै तो सर्वरोगोको नाशै है.

अथ अभ्रक शोधन।

वज्राभ्रकको अग्निमे तपाय गौके दूधमें त्रिफला-में कांजीमें गोमूत्रमें निबूके रसमें चौलाईके रसमें इन्हों सबोंमें अलग अलग सात सात बार बुझावै शुद्ध होय.

अथ अभ्रक सहस्त्रपुट भस्म विधि।

शुद्ध अभ्रकको मिश्री गौका दूध सांठी चावल सब बराबर मिलायके पकावै जब खीरके मिसाल होय जाय तो एक गज पुट ऑच तेज देवै फिर चौकिया सोहागा निबूरसमें खरल करके कपडमिट्टी करके एक गज पुट आंच तेज देवै फिर घी शहदमें खरल करके कपडमिट्टी करके एक गजपुट आंच तेज देवै. अब वनस्पतीका ६४ जिनसका पुट लिखते हैं--पाठा-हर्रा-बहेरा-आंवला-गोमूत्र-वाला-कुम्भी-तालीसपत्र-ताड-मूल-वांसा-असगंध-अगस्त-भंगरा-केला-मिरच-

अनार-मकोय-शंखपुष्पी-सहँजना-नागबेल-सांठ
आकदूध-बड़दूध-थोहरदूध-कुमार पट्ठा-अरंड
कुटकी-नागरमोथा-गिलोय-भांग-गोखुरू-कटेली
बडीकटेली-शालपर्णी-पृष्ठपर्णी-शिरसमसफेद
ऊँगा-बडका अंकुर-बकराका रक्त-बेलफल-अरनी
चीता-भिलावाँ-मँजीठ-सूर्यमुखी-गडूभा-भारंगी
देवडागरी-केसू-शिवलिंगी-करूपखर-मूषाकर्णी
धमासा-कनेर-अजमान- चन्दन- जमालगोटा
शतावरी-करूतोरई-धतूरा-लोध-देवदारु-कसीबदा
इन सबोंमें अलग अलग खरल करके सोलह सोल
गज पुट आँच बबूरके कोयलोकी देवे तब अभ्रक
भस्म चन्द्रिकारहित लाल रंग इन्द्रगोप तुल्य होय
यह मृत्युलोकमें दुर्लभ है.

अभ्रक सहस्रपुट भस्म खानेका गुण।

अभ्रक सहस्र पुट खानेका गुण-त्रिदोषको नाशता है नपुंसकको पुरुष करता है, युवावस्थाको स्थापन करता है इस भस्मके समान पुष्ट करनेमें कोई भी भस्म पृथ्वीमें नही है। शरीरको दृढ करे है बल वीर्य और उमरको बढावे है बुड्ढाको जवान करे है सिंह सारिस पराक्रमी पुत्रको उपजावे है और निरन्तर सेवन करनेसे मृत्युको नाशै है। अनेक स्त्रियोंको सुख

देवे है बल वीर्य कमती होवे नहीं सन्निपातरोग असाध्य जिसके जीनेकी कुछभी आशा न रही हो तो वह रोगी इस भस्मका प्रयोग होनेसे एक बा अवश्यही बोल उठैगा, जो बोल बन्द होगया हो तो बोलेगा जो कुछ पूछना होय तो वह रोगी पूँछलेवे लेन देन धरा हुआ रुपैया जमीनमें हो सो स बताय सकैगा वह रोगी भी परमेश्वरकी कृपासे जी जावैगा यह भस्म खानेसे शरीर नीरोग होयके हमेश सुखसे रहे है. गुण लिखने योग्य नही हैं.

अथ अभ्रकभस्म सहस्रपुटका अनुपान।

अभ्रक भस्म सहस्रपुटका पिपली शहद संग कुछ दिन खानेसे तो बीस प्रकारका प्रमेह रोग अच्छा होय श्वास खाँसी कुष्ठ वायु शरीरका पित्त कफ क्षयकी खाँसी संग्रहणी इत्यादि सभी रोगोको नाशे है चान्दी वर्क संग अभ्रक भस्म खानेसे शरीरमें धातुको वढावे है लौंग चूर्ण शहद संग अभ्रक भस्म खानेसे उमर और वीर्यको वढावे है गोदुग्ध मिसरी सङ्ग अभ्रक भस्म खानेसे पित्तरोगको नाशे शरीरको पुष्ट करे बल वीर्य कमती होवे नहीं. त्रिकुटाके चूर्ण घृत संग अभ्रक भस्म खानेसे क्षय पांडु अरुचि दुर्धर खांसी मन्दाग्नि पेटशूल शोप बुढापा मृत्यु इन सबोंको

नाशै है निरन्तर अभ्रक भस्म घी सङ्ग खानेसे कुछ दिन सेवन करनेसे रक्तविकार क्षय पांच प्रकारके श्वासको नाशै और महाव्याधिको दूर करै आदी पीपलीके रस सङ्ग अभ्रक भस्म खानेसे तेरह प्रकारके सन्निपात ज्वरको नाशै पथ्यसे पीपली शहद सङ्ग अभ्रक भस्म खानेसे महेश्वर ज्वरको नाशै है पिपली इलायची बड़ी शहद सङ्ग अभ्रक भस्म खानेसे विषमज्वर हाडोंमें का पुराना ज्वरको नाशै है दाहज्वर तपतज्वरको भी नाशै है पिपली मिसरी सङ्ग अभ्रक भस्म खानेसे वातज्वरको दूर करै मातुलिंगी बीज केशर सेन्धानोंन मिरच इन्होंके चूर्ण संग अभ्रक भस्म खानेसे वात रोग कफ रोग मुखशोष रोग जड़पना अरुचि इन्होंको नाशै है धनियां छोटी इलायची मिसरी संग अभ्रक भस्म खानेसे पित्तज्वरको दूर करै है आदी मिरच शहद संग अभ्रक भस्म खानेसे कफज्वर दूर होय तुलसीके रस पिपली चूर्ण संग अभ्रक भस्म खानेसे सर्वज्वरको नाशै त्रिफला चूर्ण गायके दूधसंग अभ्रक भस्म खानेसे चातुर्थिक ज्वरको नाशैं ताम्बूलसंग अभ्रक भस्म खानेसे चातुर्थिक ज्वरको दूर करै गदहपुर्नाके जड़ पिपरी सोंठ संग अभ्रक भस्म खानेसे सर्व ज्वरको आठ प्रकारके उदर रोगको

दूर करै है राल मिसरी संग अभ्रक भस्म खानेसे अती-सारको नाशै है वटके प्ररोह संग अभ्रक भस्म खानेसे अतीसारको नाशै है बकरीका दूध चुरावा हुआ शीतल होने पर शहद संग अभ्रक भस्म खानेसे रक्तातीसार-को नाशै है। अनारका दाना शहद संग अभ्रक भस्म खानेसे सब प्रकारका अतीसार जावै है सोंठ घी संग अभ्रक भस्म खानेसे आम अतीसार जावै वात दूर होय पेसाब अलग होय रोग दूर होयके शरीर सुधरि जावै। गण्डा पीरोजाका सत छोटी इलायची मिसरी इन्हों-को तीन तीन तोले लेवै, शुद्ध कपूर ६ मासे एकमें चूर्ण करि ६ मासे अभ्रक भस्म दो रत्ती मिलायके खानेसे सुजाक मूत्राघात मूत्रकृच्छ्र पेसाबके रस्तासे खून गि-रना बन्द होय कडक पेसाब होना अच्छा होय बडी गोदनदूधी बडी इलायची मिरच पानी संग पीस अ-भ्रक भस्म छोडके पीनेसे खूनी बवासीर दस्तका होना कलेजाकी गरमी दूर होय पीपल वृक्षकी छाल मिरच पानी संग अभ्रक भस्म खानेसे कलेजाका जलना तृषा दूर होय पेसाब जलन अच्छा होय भांग चूर्ण घी संग अभ्रक भस्म खानेसे बीछीका विष और कोई विषधर जनावरका विष होय सो भी दूर होय अमावस्या व ग्रहण

लगा होय तो बचको लायके चूर्ण कारि गायके दूध संग अभ्रक भस्म खानेसे उन्मादरोग अपस्माररोग वातकी वेदना दूर होय पुराना घी संग अभ्रक भस्म खानेसे शिरकी पीड़ा उदरकी पीड़ा नेत्रकी पीड़ा दूर होय आदी रस पीपरी चूर्ण शहद संग अभ्रक भस्म खानेसे श्वास खाँसी दूर होय लड़कनका पलई मारना बन्द होय कंटकारीकी जड मिरच संग अभ्रक भस्म खानेसे उपदंश रोग दूर होय इस दवापर नोंन नहीं खाय पथ्यसे रहै चौलाईकी जड़ पीपल वृक्षकी छाल पुराने चांवलके पानीसे पीसके शहद संग अभ्रक भस्म खानेसे स्त्रीका रजोधर्म नदी समान बहता बन्द होय सब किसमका प्रदर रोग सब प्रकारका सोम रोग दूर होय अभ्रक भस्म एक किसमका अमृत है कि जो कोई पथ्यसे खाय कुछ दिन तो शरीरमें एक दुःख नियरे आवै नहीं शरीर निर्बल होवै नहीं सदा पुष्टि बनी रहै रोगीका रोग और बल और बालक और जवान वृद्ध स्त्री पुरुष सबको अच्छी तरह विचारके देवै और गरम शरद ऋतु देखके अनुपानसे देवै तो सर्व रोगको नाश करे है जैसे एक थालीभर पानीमें एक बुन्द तेल फइल जाता है वैसे तिछी भर दवा शरीरमें फैल जाती है.

अथ हरतार मारण विधि।

पीला हरतार सोनहरी ५ तोले लेकर शुद्ध करके खरलमें रखकर दस दिन खरल करै तब सनके पत्ताके रसमें दसदिन खरल करै तब गायके दूधमें खरल करै तब आकके पत्ताके रसमें दस दिन खरल करै मुरईके जडपत्ताके रसमें दसदिन खरल करै तब नागफनीके रसमें दसदिन खरल करै तव भृङ्गराजके रसमें दसदिन खरल करै तब गोला बनायके मुरई पलासकी राखी और नोना माटी मिलायके हण्डीमें भरे बीच हण्डीमें हरतालका गोला धरै तब हण्डी चूल्हेपर रखके सात दिन बहुत मन्दमन्द आंच देवै शीतल भये निकाले अग्नि पर रखकर परीक्षा करै जो धुवां न देवै तो शुद्ध भस्म जानो जो धुवां देवै तो हण्डीमें भरकर विधिपूर्वक फिर आंच देवै तब भस्म होय रक्तपित्त रोगको बहुत गुण देवै। अनुपानसे सर्व-रोगोंको नाशैहै खुराक एक चावल भर पथ्यसे खावै.

अथ गन्धकशोधन विधि।

अच्छा आंवलासार गन्धकको घीमें पिघिलायके गायके दूधमें कपडामें छोडे४वार तब भृङ्गराजके रसमें घीमें गन्धक पिघिलायके चार बार छोडे तब आकके दूधमें एकदिन खरल करके तब घीमें पिघलाय दूधमें

छोडै तब घीकुमारीके रसमें पांच दिन खरल करै तो गन्धकका सब दोष मिटै अनुपानसे सब रोगपर देवै रोगको हरै शरीरको नीरोग करै है॥

अथ सिन्दूरशोधन विधि।

सिन्दूर अच्छा लेकर नींबूरसमें दसदिन खरल करै पुराना चावलके धोवनमें दो दिन खरल करै तब गाय के दूधमें दो दिन खरल करै तब शुद्ध होय दवाके काममें लावै.

अथ फिटकिरीशोधन।

फिटकिरीको नींबूरस और पानीमें घोलिके अग्नि पर चुरावै जब गाढा होयजाय गोला बनायके सुखाय-के दो घरी आंच देय उत्तम भस्म होजाय तो दवाके काममें लेवै.

अथ मूँगामारण विधि।

शुद्ध मूँगा लेकर बिछिया बूँटीके रसमें दो गजपुट में फूंके तो भस्म होय तब गोदनदूधीके रसकी पांच भावना देवै तब घीकुमारीके रसकी पांच भावना देवै, तब एक गजपुट आंच देवै बहुत उत्तम भस्म होय सर्व रोगको अनुपानसे नाशै इस भस्ममें कुछ दोष नही है.

अथ मोतीमारण विधि ।

शुद्ध मोती पक्का लेकर पताल नीमकी पत्तीकी लुगदीमें रख कर फूक देवै एक गजपुट आंचसे भस्म होय तब नींबूरसमें खरल करे थोडी आंच देवै तब घीकुमारके रसमें खरल करके एक गजपुट आंच देवै तो शुद्ध भस्म होय सब रोग पर अनुपानसे देवै तो रोग नाशै.

अथ चौकिया सोहागाशोधन विधि।

चौकिया सोहागाको नीबूके रसमें खरल करके तब निर्धूम अग्निपर रखके फुलाय लेवै तब गायके दूधमें खरल करै तब शुद्ध होय सब काममें लेवै.

अथ इंगुर शोधन मारण विधि।

इंगुर अच्छा रूसी लेकर गायके दूधमें एक महीना खरल करै तब गायके दहीमें एक महीना खरल करै तब गायके घीमें एक महीना खरल करै तब घीकु-मारीके रसमें एक महीना खरल करै तब आकके दूधमें एक महीना खरल करै तब मेहदीका पत्ता हिंगु एकमें मिलायके लुगदी बनायके उसमें इंगुर रख कपड-मिट्टी तान मुलतानी मिट्टीकी देवै तब वालुकायंत्रमें चार दिन रात आंच देवै तो बहुत उत्तम भस्म गुलाब-के फूलके सरीखा रंग होय सब रोगपर अनुपानसे

देवै रोगको नाशै कांतिको बढाय शरीरको पुष्ट करै.

अथ सर्वरसभस्म अनुपानवर्णन ।

जैसे एक थालीमें पानी भरदेवो ऊपरसे एक बुन्द तेल छोड देवो तब थलियाभरमें फैल जाता है उसी सरीखा रस वा भस्म कोई होय अनुपानसे खातेही शरीरभरमें फैल जाता है बिना अनुपानके रस भस्म माटीका खाना समझो.

अथ अभ्रकदसपुटीभस्म विधि ।

शुद्ध अभ्रक २० तोले लेकर कलमी सोरा ५ तोले चौकिया सोहागा ५ तोले गायका दूध १ सेरमें इन सबोंको खरल करके गोला बनाय कपडमिट्टी करके एक गजपुट आंच देवै तब फिर कलमी सोरा ४ तोले चौकिया सोहागा २ तोले मिसरी १ पाव दूधमें खरल करके कपड़मिट्टी करके एक गजपुट आंच देवै फिर शहद ५ तोले घी गायका ५ तोलेमें खरल करके कपडमिट्टी बनाय एक गजपुट आंच देवै फिर सांठीका चावल १ पाव कलमी सोरा चौकिया सोहागा मिसरी पांच पांच तोलेमे खरल करके एक गजपुट आंच देवै फिर गायके दूधमें खरल करके एक गजपुट आंच देवै फिर भृंगराजके रसकी दश भावना दै कपड़मिट्टी करके एक गजपुट आंच देवै

फिर सहँजनके रसकी दस भावना देवै कपड़ मिट्टी करके एक गजपुट आंच देवै फिर नीबूके रसकी दस भावना देवै कपडमिट्टी करके एक गजपुट आंच देवै फिर मुरईके रसकी दस भावना देवै कपडमिट्टी करके एक गजपुट आंच देवै फिर घीकुमारीके रसकी दस भावना देवै कपडमिट्टी करके एक गजपुट आंच देवै फिर वनगोभीके रसकी दस भावना देवै कपड़मिट्टी करके एक गजपुट आंच देवै तव अति सुन्दर भस्म होय चन्द्ररहित होय यह भस्म सर्व रोग-पर देवै अनुपानके साथ सर्व रोगको नाश करै है इस भस्मके वरावर दूसरा रस दवा नही यह भस्म शरीर-की रक्षा करतीहै यह एक भस्म अनुपानसे वैद्यको यश मान द्रव्य मिलातीहै.

अथ धूर्तसे वचनेकी शिक्षा।

अवके पहरेमें वहुत मनुष्य वैद्यक मँगायके घरमें रखदेते हैं वैद्यक देखके दवा करने लगे वैद्यककी क्रिया एक नही जानते हैं रोगीको दवा देनेलगे दवा लगी तो ठीक नही रोगी जीवै चाहै मरै वैद्यके वाप-का क्या जाताहै वह तो अपना काम करके जो मिला सो लेकर चम्पत होगया रोगीको दवा नुकसान करै चाहै गुण करै पैसासे काम इनसे वचो.

अथ विद्यावानके हितकी बात ।

अच्छा वैद्य गुणवान् चतुर शास्त्र पढाहुआकी दवा करै मूर्खकी दवा न खाना चाहिये अब अनेक वैद्य बन गये हैं विना वैद्यक पढे सीखे दुनियामें फिरते हैं झूठ बात बनाय बुझाय समुझाय मीठी बात कह अच्छेभोले मनुष्यके मुहपैं मारिके रुपैया लेकर चल देतेहैं कहते हैं कि हमारे पास सब किसमका भस्म है सोना चांदी तांवा बंग शीसा जस्ता लोहा अभ्रक मालती वसंती चंद्रोदय है जो आपके मन होय सो लेवो यह नहीं कोई जानता है कि ईट कोइला गेरू सेतखरी बूकके नकली रस बनाया है धूर्तबाजी करके कमाते हैं तो भाई लोग पंखनसे बचो । इसी धूर्त पंखनसे वैद्यकका गुण जातारहा अच्छा वैद्यको बुलायके दवा बनवावे पथ्यसे खाय तो जरूर रोग दूर होय समुझके दवा करै वैद्यक शास्त्र कठिन है सहज नही है अब तो जितना रोगी है उतना वैद्य है विना मेहनतका अब वैद्य हैं.

अथ पाराशोधनविधि ।

पांच देवताकी पूजा करके तब पारा लेवे तब शीशीमें पाराको छोड़के तब काकमाचीके रसमें दस दिन झकझोरै तब पुरइनके पत्ता जडके रसमें दस दिन झकझोरै

तब सेन्धानोनमे दस दिन झकझोरै तब नौसादरमें दस दिन झकझोरै तब शिवलिंगीके रसमें खरल करै तब हरदी आकके रसमें खरल करै तब तलावहिङ्गु गूलरके दूधमें खरल करके गोली बनायके तब फिर मेहदीका पत्ता बडका वरोह पीस हिंगु मिलाय लुगदी बनाय उसीमें पाराका गोला रख मुलतानी मट्टीका बाहर कपडमिट्टीकरके वालुकायन्त्रमें पांच रात दिन आंच देवै तो भस्म बहुत उत्तम होय सब मनोरथको देवै रोगी खावै रोग छूटै अमर होय ऐसा भस्म देवताको दुर्लभ है जो बनावै तो सर्वसिद्धि होय दुनियामें यश मिलै यह लोक परलोक दोनों बनैं अनुपानसे सब रोगोको नाशै सही.

अथ सर्ववातव्याधिपर तेल।

अच्छी सुरती गंगापारी १० तोले सोंठ १० तोले पिपली ५ तोले भांग ५ तोले हिंगु १ तोले अफीम १ तोले भेलावाँ १ तोले कुचिला १ तोले मिरच १ तोले कड़वा तेल १ सेर तिल्लीका तेल १ सेर इन सबोंको एकमें मिलायके अग्निपर रखके मन्द मन्द धुरावै जब सब दवा जल जाय तो उतारके रख देवै जब शीतल होय तब छानके तेल शीशीमें रख देवै जिस पुरुषके वातका दर्द होय उसके शरीरमे थोरा थोरा

मालिस करै तो वातरोग नाश होय जाय कमरका दर्द छातीका दर्द पसुलीका दर्द दोनों हाथका दर्द दोनों जांघ व गोड़का दर्द कुबडापना पंगुलापना देहका सूजा हुवा सब दूर होय शीतके सन्निपात-वाले रोगीके देहमें मालिश करै तो सन्निपात ज्वर दूर होय और वह तेल वातवाला रोगी और कफ-रोगीको बहुत गुण देवैगा पित्तरोगवालेको कमती गुण देवैगा और इस तेलको बहुत कमती मालिस करै जैसा रोग होय और रोगीका बल विचारके मालिस करै और शीतकाल गरमकाल विचार रक्खे.

अथ दूसरा तेल वातपर ।

धतूरेका बीज आधासेर मालकांगुन आधासेर जैपाल आधा पाव इन्द्रायनका बीज आधासेर करुई लौकीका बीज आधासेर निबोलीका बीज आधासेर बकायनका बीज आधासेर सिरसमका बीज आधा-सेर इन सबको एक यन्त्रमें रख कपड़मिट्टी करके पताली यन्त्रसे तेल निकाल लेवै यह तेल अतिगुण-कारी है वातका दर्द तुर्त निकाले घाव किसी तरहका होय तिसको दूर करै घावमें जो कृमि पड़ा होय तो दूर होय इस तेलको शरीरपर मालिस करै तो पामा-रोग चर्मरोगको दूर करै थोरा थोरा मालिस करै.

अथ तीसरा तेल वात दर्दपर ।

मन्दारकी जड़ कनइलकी जड़ बछनागकी जड़ अरूसकी जड़ केशुकी जड़ भटकटैयाकी जड़ कारिआरीकी जड़ लेहशुनकी जड़ जमालगोटाकी जड़ यह सब दवा एक एक छटांक लेवै करू तेल १। सेरमें चुरावै जब सब दवा जल जाय तो तेल छानके धर देवै जहांपर बातका दर्द होय मालिस करै तो दूर होय ऊपरसे अवटा हुआ दूध पीवै रोज दो महीना तक कोई रसायन भस्म भी खावै तो कोई तरहका नामर्दपना न रहै पथ्यसे रहै.

अथ सर्व ज्वरपर चूर्ण ।

गिलोय पिपली चिरायता धनियां मिरच सोठ पांचो खार पांचो नमक इन सबको कूटि कपडछान करिके तव पारा गन्धक औरासार दोनोको एकमें खरल करि कजली बनाय सब दवाको एकमें मिलायके निंबूके रसमें खरल करै तव तुलसीके पत्ताके रसमें खरल करै तव सहीजनके छालके रसमें खरल करै तव आदीके रसमें खरल करै तव कपूर मिलायके गोली बनावै रोगीका वल विचारके देवै पथ्यसे रोगी खावै तो सब किस्मका ज्वर नाश होय भूख लगै रोग दूर होय.

भूखको लगावै चित्तको प्रसन्न करै पथरीरोग मूर्च्छा रोग और जो पेसावके रास्ते खून गिरता होय तो दूर होय पेसाव कडक होना दूर होय.

अथ दूसरा चूर्ण।

मुलहटी ४ तोले इलायची ४ तोले पीपली ४ तोले मिसरी ४ तोले बडी इलायची ४ तोले जायफल४तोले इनको कूटि कपड छानकर ४ मासे शहदके साथ खावै साम सबेरेको तो शरीरको पुष्ट करै कामदेवको ताकत देवै निर्बल मनुष्यको सुधारै भूखको लगावै रुचिको करावै.

अथ पुष्टिकरण दवा–चौपाई।

सोठ पीपरी मुरली आन ॥ मुसरी साम मुलहटी जान ॥ सबही समान पीसिके राखी ॥ दवा समान मिसरी कह भाखी॥ आधासेर दूध अवटाई ॥ दवा रुपया भरि लेहु मिलाई ॥ निशीसमै सोवतकै खाई ॥ धातुपुष्टि बलकी अधिकाई ॥ [illegible]गायके मदन जगावै ॥ नर जो कुछ दिन ए[illegible] ॥ [illegible] हारु नहिं आवै । [illegible]

चूर्ण बनाई॥ शहद मिलायके लेप बनावै ।निशा समै इन्द्रीमें लावै ॥ कठिन होय नामरदी जावै ॥ एकइस दिना ध्यानसे लावै.

अथ इन्द्रीका दूसरा लेप-दोहा ।

भांग मदार अकरकरा,रस जु धतूरे पाय॥मिलाय लेप करे इन्द्रिपर, कठिन रु दृढ होय जाय ॥

अथ इच्छाभेदी जुलाव ।

जमालगोटा शुद्ध ४ तोले मिरच १ तोला चौफीया शुद्ध पारा १ तोला गन्धक आंवरासार १तोला सोंठ इन सबको खरलमें खरल करै गायके दूधमें १ दिन खरल करै इमलीके रसमें एक दिन खरल करै निंबूके रसमे एक दिन खरल करै अदरखके रसमें एक दिन खरल करै तब छोटे मटरकी बराबर गोली बनायके बल विचारके मिसरीके साथ खावै तो बहुत अच्छा जुलाब होय। पथ्य खिचरी घी खावै.

अथ दस्त बन्द करनेकी गोली ।

सोठ भांग बेलका गुझा बबूरकी गोंद जायफल मिरच सब दवा एक एक तोले, अफीम ६ मासे सब कूटि खरलसे खरल करै चना बराबर गोली बनावै जो सफेद आँव पड़ता हो तो तक्र वा पानीके साथ खावै

जो लाल आँव पड़ता होय तो चावलके धोव
शहद मिलायके खावै जो पीला नीला आँव पड़
होय तो अनारदानाके साथ खावै सब प्रकार
अतिसार जावै.

अथ लक्ष्मीविलासरस ।

अभ्रक रस बंग रस लोहा रस रूपा रस एक तो
करायल लौंग मिरच खस चन्दन दोनों कंको
मिरच कमलगट्टा नागकेशर पीपरी मुसली दो
निरगुंडी सोंठ सोंचर सुगंधवाला कपूर जायफ
तवाखीर शीतलचीनी छेकुरकी छाल तज (तेजपात
गुजराती इलायची गोरखमुंडी भांग मोचरस बडी इल
यची असगन्ध केरकन्द केवांचबीज नागकेशर नाग
मोथा सिंगाडा उरदकी धोई दाल गुरसकरी स्याहजीर
सफेदजीरा सेमरकी छाल शतावरी इन सब दवाओंक
कूटि कपडछान करिके इससे दूनी मिसरी मिलायके
खावे तो वात संग्रहणी प्रमेह इनको नाशै धातु बढ़ै
शरीर पुष्ट होय नपुंसकपना छूटै पथ्यसे खावै
ऊपरसे दूध अवटा पीवै तो निर्बल शरीरको बली
करै शरीरमें हार कभी नही आवै और जो खावै सो
बराबर हजम होता जावै.

अथ वायुके सब प्रकारकी दवा ।

करीसाव कमलगट्टा वंशलोचन कचूर तालीस चेतावर सोनामाखी शुद्ध जायफल मोचरस यह सब दवा समभाग लेकर कूटि कपडछान करि चूर्ण करि चूर्णके बराबर मोचरस लेवे एकमें सब दवा मेलाय दूनी चीनी मिलायके अधेला भारि चूर्ण शाम वा सवेरेको खावै तो अजीर्ण पेटका मिटै अग्नि-शुद्धि होय सब प्रकारका वायु दूर होय पित्त चालीस दूर होयँ कफ बीस दूर होयँ हृद्रोगको छर्दिको संग्र-हणीको अतीसारको क्षयीको कासश्वासको उदररोग-को मूत्रकृच्छ्रको गलरोगको बांझ रोग सन्निपातको विस्फोटकको भगंदर रोगको कानके रोगोको इत्यादि सबको दूर करै । यह चूर्ण कुंकुमादि है.

अथ पेटदर्दपर चूर्ण ।

काबुली हरड ५ तोले निसवत ५ तोले चूर्ण करि मिसरी संग खाय पेट पीडा दूर होय.

अथ अजीर्णपर चूर्ण ।

सोंठि शुद्ध गन्धक सेन्धानोन सब समभाग लेकर कूटि कपडछान करि निंबूके रसमें खरल करि एक एक टंकके प्रमाण गोली बनायके खाय तो अजीर्ण रोग जाय भूखको लगावै सही.

अथ भ्रममूर्च्छाकी दवा।

त्रिफलाको कूटि कपडछान करिके चूर्ण बनायके बल विचार देखिके शहदके साथ शामको खानेको देवै और सवेरेको अद्रखके रसमें गुड मिलायके पीवै तो भ्रम मूर्च्छा जावे.

अथ भ्रममूर्च्छाकी दवा।

इलायची त्रिफला धूप बराबर लेकर कूटि कपडछान करि चूर्ण बनायके शहत मिलायके खावै ऊपरसे पुराने चावलका धोवन पीवै वा गायका दूध पीवै तो भ्रम मूर्च्छाको दूर करै.

अथ भ्रममूर्च्छाकी दवा।

मुलहटी सोंठ इलायची समभाग लेकर कूटि कपडछान करिकै शहदके साथ खावै तो भ्रम मूर्च्छ दूर होय.

अथ खांसी श्वासकी दवा।

अदरख पिपरी भटकटैयाकी जड इन दवाओंको समभाग लेकर कूटि कपडछान करिके शहदके साथ खावै तो खांसी श्वास ज्वरको नाशै शाम सवेरेको खावे.

अथ खुजली रोगकी दवा।

शुद्ध जमालगोटा ४ तोले आंवलासार गन्धक ४

तोले नीलाथोथा ४ तोले इन दवाओंको कूटि पीसि पिसान सरीखा करिके तांबेके बासनमें रखके १२ तोले नैनू घी मिलाय और ऊपरकी दवा मिलाय फिर उसमें पानी छोड आठ दस आना पैसा छोडके खूब मसलै एकसौ पानीसे धोवे रगड़ै तब रख देवै शामको खजुरीरोगीके शरीरपर मलै काछ शिर छोडके मलै और अग्नि बालिके तापै खूब मलै जबतक पसीना निकल आवै दो घण्टातक।लेकिन यह दवा शिरके ऊपर न लगने पावै काछमें न लगावै बचायके दवा लगावै। राततक दूसरे दिन कुछ न खाय न नहाय शामको भैंसका गोबर लेकर सब शरीरपर मलै गरम पानीसे स्नान करिके शरीर साफ कपडासे पोंछके ऊपरसे कडु-वा तेल लगाय देवे पहिले दिन दहीभात खावे पथ्यसे रहै तो असाध्य खजुरी जो सब शरीरमें सरिगई हो तो एक दिनमें अच्छी होय सुवर्ण सरीखा शरीर बनै इस दवाकी वरावर दूसरी दवा नहीं।पामा गजकर्ण सेहुँआ सब नाश होयँ सही.

अथ हरतालगुटिका रस।

हरतालरस शोधा गन्धक शोधा पारा शोधा इंगुर शोधा सुहागा सोंठ मिरच पीपल यह दवा बराबर लेवै गन्धक पारेकी कजली कर सब दवा एकमें मिलायके

अदरखके रसमें खरल करै सात पुट अदरखके रसके देवै और मूँग प्रमाण गोली बांध एक गोली प्रभात खाय तो सब प्रकारके वात जायँ प्रसूत रोग मन्दाग्निरोग संग्रहणी शीतज्वर इन सबको नाशै। जब यह गोली खाने लगै तो पथ्यसे खावे.

अथ हरतालरस गुटिका ।

पारा गन्धक आंवरासार हरताल इन तीनोंको शुद्ध करलेवै तब घीकुमारके रसमें खरल करै सात-दिन तब निम्बूके रसमें सात दिन खरल करै सनके रसमें सात दिन खरल करै पलाशके रसमें पांचदिन खरल करै तब सीसीमें भर कपडमिट्टी कर सुखावै तब बालुकायन्त्रमें एक दिन आंच तेज देवै. निकालके अजवाइन सोंठ पिपरी मिरच गुरुच नागकेशर बडी इलायची सब दवाओंको कूट कपडछान करके ऊपरकी दवायें मिलायके निर्गुंडीके रसमें एक दिन खरल करै एक दिन काली मकोयके रसमें खरल करै बबूरके छालके काढ़ेमें एक दिन खरल करै तब रोगका बल उमिर देखके खावै ऊपरसे आदीका रस पीवै तब अच्छा पक्का पानका बीड़ा खावै पथ्यसे रहै तो वात रोग सब प्रकारका नाश होय अरुचि मन्दाग्नि सबको नाशै अजीर्णको दूर करै विषमज्वर शीतज्वर

भी जावे उदररोगको हरै मन प्रसन्न करै कामको बढावे भूखको लगावे धातुको शुद्ध करै शरीरमें हरारत न आने देवे पथ्यसे खावै.

अथ प्रसूतज्वरकी दवा।

इंगुर शुद्ध बच्छनाग शुद्ध मिरच पीपरी सोहागा सब दवाओंको अदरखके रसमें एक दिन खरल करै फिर बंगला पानके रसमें खरल कर एक दिन तब अदरखके रसकी सात भावना देकर तब खरल कर १ रत्ती भरकी गोली बनाय एक गोली खिलावे ऊपरसे आदीका रस देवै तो सन्निपातज्वरको नाशै है शीत वात प्रमेह शूल प्रसूतिज्वर विषमज्वर सबको नाशै यह आनन्दका देनेवाला रस है.

अथ सन्निपातमें निद्रानाशकी दवा।

मकरीके घरकी मिट्टीको चूक पिसान बनायके कडवे तेलमें मिलायके और इसीमें मकरीका जाला भी समभाग मिलायके बत्ती बालेइसीके धुवॉका काजल पारै ऑखोमें अंजन करै तो सन्निपातज्वर छूटै नींद बहुत लगे यह योग्य है.

अथ सन्निपातज्वरकी दवा।

ब्राह्मी त्रिकुटा वंगरस केसर चिरायता तज अकर-

करा सोंचरनोन जीरा सब दवा बराबर लेकर चूर्ण बनाय सब दवासे दूनी दाख मिलायके घोटै खूब तब दो टंक खाय तो सन्निपात दूर होय धूलिज्वरवाला पथ्यसे रहै.

अथ शीतज्वरकी दवा ।

हरताल शुद्ध २५ टंक कलीका चूना २५ टंक नीला थोथा २५ टंक इन दवाओंको घीकुमारके रसमें खरल करै दस दिन तब गोली बनायके सुखाय कपड-मिट्टी करि तब फिर सुखायके एक गजपुट आंच देवै, शीतल भयेपर निकाल एक रत्ती कचूरमें खाय तो शीतका ज्वर जाय जो केवल विषमज्वर होय तो चीनीके साथ खावै और पानके रसके साथ खावै तो खाँसी ज्वरको दूर करै पथ्य दूध मांसका करै और खट्टा विकार छांडै.

अथ पुष्टिकारक दवा ।

पारा एक भाग सोंठि ४ भाग पीपली ४ भाग बंग २ भाग सबके बराबर शतावरी ले तज (तेजपात) नाग-केसर इलायची जायफल त्रिकुटा लौंग जायपत्री इन सब दवाओंको दो दो भाग लेवै दवाके बराबर मिसरी मिलायके तब घी शहत मिलायके दोदो रुपैया भरिकी गोली बांधि खाय तो नपुंसकपना मिटै ऊपरसे दूधको

पीवै तो वृद्ध पुरुष भी तरुण होय शरीरपुष्टि होय भूख लागै.

अथ शरीर पुष्टिकारक दवा।

पारा भाग २५ गन्धक भाग २५ इन दोनों दवाओंको खरल कर तव कनेरके रसमें तीन दिन खरल करै और कमलके बेलमें खरल करै तीन दिन तक तब बालुकायंत्रमें एक पहर पकावे तेज अग्निसे और फिर लाल अगस्तिके पातसे एक पहर खरल करै तब बालुकायंत्रमें एक आंच देवै तब अगस्तिकी छालमेंसे रस निकालके उसमें खरल करै तब दो रत्ती वा चार रत्ती भर इस दवाको मिसरीके साथ खाय ऊपरसे दूध पीवे तो सौ स्त्रियोसे रति करनेपर बल न घटै.

अथ चौथियाज्वरका टोटका।

जिस पुरुष वा स्त्रीको चौथिया आवता हो वह रविवारके दिन घरसे निकलै जहांपर हाड़ मिलै कोई जन्तुका उसीपर पांच फूल लौंग धरिके हाथसे नोन लेकर पांच फेरी परिक्रमा करके तव उस हाडके ऊपर पेशाव कर नोन रख देवै ऊपरसे थूकि देवै तव अपने घरको चला आवै फिर पीछे नही ताके यह

विधि प्रमाण जो टोटका करै तो ईश्वरकी कृपासे फिर चौथिया ज्वर नहीं आवे यह उपाय निष्फल नहीं जाताहै.

अथ चौथियाज्वरका दूसरा उपाय।

शनीचरके दिन शामको काला धत्तूराको नेवता देआवे इस विधिसे गुड़ घी पानी साफ आगि लेकर उसीसे धतूरेकी पूजा करके यह कहै कि हे महाराज! हम कल तुमको लेचलेंगे हमारे मुदईको दूर करना। फिर पीछे न ताके अपने घरको आवे फिर रविवारके प्रातःकालको जायकर उसी धतूरेकी एक छोटीसी डाली तोडके अपने भुजापर बाँधै घरको आवै तो परमेश्वरकी कृपासे फिर चौथिया ज्वर न आवे.

अथ चौथियाज्वरकी दवा ।

सफेद फूलका गदहपुरनाकी जड़ ५ मासे पांच मिरच गायके दूधमें पीस पीवे तो सब प्रकारका चौथिया ज्वर जावे.

और चौथियाज्वरकी दवा ।

काकजंघाकी जड पत्ता ९ माशे पिपरी दो पानीमें पीस शहत छोड़के पीवे तो यह दवा चौथिया ज्वरको नाश करै.

अथ सर्व ज्वरको शर्वत।

गुरुच धनियां पीपरी सोंठि चिरायता पांचोंको सात सात तोले लेकर कूटिके चारसेर पानीमें काढ़ा करै जब दो सेर शेष रहै तो उतारिके छान लेवै तब तीन पाव मिसरी छोड़के ऊपरके काढामें मिलायके चूले पर कराही रखि उसीमे सव दवा छोड़के अग्नि जलावे जब शर्वतकी चासनी होय तो उतारके रखदेवै पीपरीके चूर्णके साथ थोडा थोडा रोग दोष बल विचारके खावै तो सर्व ज्वरको नाशै भूखको लगावै बलकिन सब रोगको हरै यह शर्वत तर है कलेजेकी गरमीको नाशै है न गरम है न शरद है.

अथ शर्वत सर्व रोगपर।

चन्दन दोनों इलायची गुरूची उसवा पिपरी धनियां मुलहठी इन सबको आठ आठ तोले लेकर १०सेर पानीमें काढा करै जब तीन सेर पानी शेष रहै तब डेढ़सेर मिसरी छोडके चुरावै कड़ाहीमें छोडके मन्द मन्द आंच देवै तब शर्वतकी चासनी करि रखि देवै इस शर्वतको पिपरीके चूर्ण करिके उसके साथ खाय तो वातज्वर पित्तज्वर कफज्वरको नाशै और यह बलको करै शरीरको दृढ करै आम अरुचिको हरै

धातुको बढायके शरीरकी पुष्टि करै हुचकीरोगको दूर करै दिल मचलानेको गुण करै यह शर्बत कठिन दिलको नरम करै भूखको लगावै है.

अथ शर्बत पित्तज्वरका ।

अनारका रस एक पाव चन्दनका चूर्ण ५ तोले मुलहटीका चूर्ण १० तोले केसर २ तोले गुजराती इलायची २ तोले इन सब दवाओंकी सवासेर मिसरीमें चासनी करै जब शर्बतकी चासनी होजाय तो शीशीमें रख देवे रोज एक तोले सबेरे खावै तो पित्तज्वरको दूर करै शरीरको खुश करै बलवीर्यको बढाके शरीरकी पुष्टि करै दिल दिमागको तर करै यह शर्बत बहुत गुणकारी है सर्वरोगपर देवै.

अथ शर्बत प्रसूतज्वरका ।

सोंठ एक पाव पिपरी एक पाव चन्दन दोनों ७ तोले कालीमकोय ७ तोले गुरूची ७ तोले चिरायता ७ तोले इन सब दवाओका ५ सेर पानीमें काढा करे जब अढाईसेर बाकी रहे तब काढा छानके डेढसेर मिसरी छोडके शर्बतकी चासनी बनाय लेवै शीशीमें रख देवै एक तोला यह प्रसूतवाली स्त्री खाय पथ्यसे रहै व

खट्टा मिट्ठा तीता सब छोड देवे तो प्रसूतज्वर बलकिन्न स्त्रीका सब रोगको गुण देवै कमरका दर्द पेटका दर्द शूल गर्भ स्थानको भी शुद्ध करै भूखको लगावै.

अथ बालकके ज्वरके शर्वत।

काकड़ासींगी ४ तोले पीपरी ४ तोले गुरूची ४ तोले वंशलोचन ४ तोले सेंधानोन २ तोले इन सब दवाओंका डेढसेर पानीमें काढ़ा करै जब आधा जल जाय आधा रहै तब छान लेवै तीन पाव मिसरी घी ५ तोले सहत ५ तोले इन सब दवाओंको एकत्रै करि कडाहीमें छोडके तब मधुरी आंचसे शर्वत तैयार करै जब चासनी होयजाय तो शर्वत सीसीमें रखदेवै बल विचारके बालकको देवै तो बालकके सर्वरोगोंको नाशै बालकको भूख लागै अच्छी तरहसे रहै यह दवा छः महीनासे १० वर्षके बालकको देवै बलकिन पुरुषको भी देवै सबको गुण देवै.

अथ पानका शर्वत।

अच्छा बंगलापानका रस आधासेर आदीका रस आधासेर अनारका रस आधासेर पिपरी ७ तोले मिरच ५ तोले सब दवाओको एकमें मिलायके शर्वत-के विधि प्रमाणे चासनी करि लेवै तब सीसीमें रखके रोज एक तोला सांझ सवेरेको खाय तो खांसी श्वास

ज्वर सब प्रकारके नाशैं यह बालक स्त्री पुरुष सबको रोगमात्रमें देवै तो सबको गुण करै मन्दाग्निको निकालै भूखको लगावै पथ्यसे खावै.

शर्बत हैजाकी बीमारीका।

धूप ७ तोले इलायची २ तोले मुलहठी ५ तोले कापूर १ तोले अफीम ६ मासे जहरमोहरा खटाई एक जातका पत्थर है हरारंग होता है वह दो तोले इन सब दवाओंको डेढसेर चीनीके शर्बतकी विधिसे शर्वत बनाय लेवै जब शर्बतकी चासनी होयजाय तो सीसीमें रखदेवै हैजावाले रोगीको देवै तो तुरंत उलटी दस्त दोनों बन्द होयँ गरमी कलेजेकी नाश होय पियास बन्द होय कलेजेका छातीका धड़कना बन्द होय.

अथ शर्बत प्रमेहका।

महुवाकी छाल बबूरकी छाल पीपरकी छाल कटहलकी छाल चन्दन गुरूची यह दवा नौ नौ तोले लेकर ८ सेर पानीमें सब दवाओंको कूटिके शामको भिगोवै सबेरे काढा करै जब २ सेर शेप रहै तब सवा सेर मिसरी छोडके शर्बतकी विधि प्रमाने शर्वत बनायके सीसीमें रख देवै सवा तोले यह शर्बत खावै तो प्रमेह रोगको नाशै गरमको तर करै शरीरको दृढ करै यह शर्बत पित्तवालेको बहुत गुण देवै है.

अथ प्रमेहका दूसरा शर्बत।

गोखुरू आधा सेर गुरूची आधासेर चन्दन सफेद आठ तोले इन सब दवाओको कूटिके ७ सेर पानीमें काढा करै जब अढाई सेर पानी बाकी रहे तो छानके डेढसेर कन्द छोडके शर्वतके विधि प्रमाणे शर्बत चासनी करिके विधिसे १ तोले खावै यह शर्बत प्रमेह रोगको नाशके धातुको बढायके शरीरको दृढ करै पथ्यसे रहै खट्टा तीता मीठा न खाय.

अथ शर्बत आंवलाका अतीसारपर।

आंवला२५नग अच्छा लेकर और आंवलोके बराबर बेलका गुझा लेवे सोठ आठ तोले लेवे चूर्ण करि सब दवाओंको तीन सेर पानीमें औटावै जब डेढसेर पानी शेष रहे तव सवासेर मिसरी मिलायके शर्वतकी चासनी शर्बतके विधि प्रमाणे करै जब शर्बत तैयार होय तव सीसीमें रखदेवे यह शर्बत अतीसारवाले-को देवे एक तोले सबेरे एक तोले शामको तो संग्र-हणी रोग अतीसारको चावलके धोवनके साथ खानेको देवे तो नाश करैहै यह शर्वत रक्तका गिरना आमका गिरना बन्द करै.

अथ उदररोगकी विधि।

उदररोगवाले रोगीको पहिले दिन ५ तोले घी

पिलावे इसी विधि प्रमाणे पांच दिन देवे तव रोगीका रोग दोष बल देखिके तव पांच दिन रेंडीका तेल पिलावे तव पांच दिन मुंजीस पिलावे मुंजीस जिस विधि प्रमाणे लिखा होय उस विधिसे तब रोगीका बल देखि जुलाब देवे उदररोग आठ प्रकारका है जिस प्रकारका रोग होय उस प्रकारकी दवा करना तब रोग जल्दसे नाश होता है.

अथ मुंजीसकी विधि ।

सौंफ २ तोले सनायपत्ती २ तोले गुलाबका फूल मकोय काली एक तोले हर्रे छोटी १ तोले अमलतास १ तोले मिसरी ३ तोले इन सबका सवासेर पानीमें काढा करै जब आधासेर रहै तब छानके पीवे रोग नरम होय इसी विधि प्रमाणसे पांच दिन पीवै तो पेटका मल साफ होय जाय.

अथ बडी मुंजीस ।

उन्नाब ६ मासे हंसपदी ७ मासे मुलहटी ७ मासे गुलाब फूल ७ मासे मुनक्का ७ मासे अमलतास ७ मासे अंजीर ७ मासे सौंफ ७ मासे सनायपत्ती १ तोला कासनी ७ मासे मिसरी २ तोले इन दवाओंको थोडी दरकचायके डेढ सेर पानीमें शामको भिगोय

देवे सबेरेको अग्निपर चुरावे जब अढाई छटांक रहिजाय तब पीवे यह मुंजीस उदररोगको दूर करै. शरीरके नस नसको नरम करै पेशाब दस्तके रस्ताको शुद्ध करै.

अथ चूर्ण सर्वरोगपर।

पांचों खार ५ तोले पांचों नोन ५ तोले धनियां ५ तोले मिरच ५ तोले सोठि ५ तोले हिंगु भूंजी हुई १ तोला निसोत ५ तोले इन दवाओको कूटि कपड-छान करिके निबूकी चार भावना देवे तब सहीजनेके रसकी चार भावना देवे अदरखके रसकी चार भावना देवे चूर्ण तैयार करै यह चूर्ण अरुचिको दूर करै अजीर्ण मन्दाग्निको नाशै भूखको लगावै वायु बता-सको दूर करै.

अथ नाकसे खून गिरनेकी दवा।

धनियां आंवला बराबर पीस छान शहत छोडकें पीवै शामको सबेरेको गरम वस्तुसे पथ्य रखे और आंवलाको घृतमें भुंजके पानीसे सिलपर पीसै तब दो दफे शिरपर लेप करै तो जल्द गुण करै.

मुखसे खून गिरनेकी दवा।

धनियां ४ मासे पुदीना २ मासे मुलहटी १ मासें

इलायची २ रत्ती मिसरी ३ तोले अफीम एक सरसों भरि इन सब दवाओंको पानीसे पीसके पीवै तो मुखसे खूनका गिरना एकदम बन्द होय कलेजेकी गरमी शान्त होय.

दूसरी दवा ।

नीमकी ढेपी सात पुदीना धनियां पांच पांच मासे लेकर पीस सेन्धानोंन शहत छोडके पीवै तो उलटी बन्द हो पेटका गरमपना दूर होय.

अथ ज्वर उपवासपर गोला ।

हर्रे पीपरी काला नोंन हींग धनियां आदी मुर्रा सेन्धानोंन अजवाइन यह सब दवा एक एक मासे लेकर एक पात्रमें रखके पोटरी बनावै तब पोतनी माटीको सानिके उस पोटरीपर लेप करै गोलाके समान करके अग्निमें छोडे जब पक्क होजाय निकालके सिलपर बूकके रोगीको खिलावै दो दिनतक जूस देवै तो अजीर्ण नही होय भूख लगै अन्न पचै.

अथ वालकके पलईकी दवा ।

आदी पीपरी पीसके छानके गरम करिके वालकको पिलावै एक सुतुही पानीमें पीसै और वालकको शीतसे बचायरखै.

दूसरी बालकके पलईकी दवा।

पक्के नागरपान ३ मासे, पीपली २ मासे, पानी एक घूंट भरिमें पीसे छानै तब गरम करिके बालकको पिलावै तो बालकका पलई रोग दूर होय ज्वरभी होय तो उसको भी दूर करै.

अथ बालकके पलईका लेप।

धतूरेके पत्तोंका रस सोठका चूर्ण अफीम एकमें मिलायके अग्निपर गरम करके जहांपर पलई मारती होय वहांपर लेप करै और बालूकी पोटरी बनायके गरम पोटरी करके बालकको खूब सेंकै जिसमें शीत शरीरमेंसे दूर होय सांसका खींचना बन्द हो सही.

अथ बालकके माटी खानेकी दवा।

जो बालक माटी खाता होय उस बालकको रेंडी-का तेल बारंबार पिलावै रोज जिससे जो माटी बाल-कने खायी होय तो सब दस्तके रास्तेसे गिर पडै फिर नीमका तेल हीग पिलानेसे बालकके पेटसे सब कृमि गिरपडैं.

अथ बालकके जुलाब।

निसोत १ तोले रेंडीके बीज १ तोले पीस पानीमें रेंडीतेल मिलायके हलुवा बनावै तब बालकके पेडूपर लेप करै तो बालकको जुल्लाब होय.

अथ सर्व वातपर तेल ।

नीम बकायन मेवँड़ी अरूसा धतूर मनार सेहुँड कनयल सुरती इन सबको आधासेर लेकर एक मन पानीमें काढ़ा करै जब आधा रहि जाय तो काढा छान लेवै तब करू तेल अढाई सेर लेवे तिल्लीका तेल अढाई सेर छेरीका दूध अढ़ाई सेर सोंठ ९ तोले पिपली९तोले मिरच ९ तोले अजवाइन ९ तोले लहसुन ९ तोले भांग ९ तोले हींग ५ तोले अफीम ५ तोले लेला ५ तोले इन सब दवाओंको कूटिके काढामें छोडै और सब तेल छोडै मन्द मन्द अग्निसे ऑच देवै जब सब दवा जल जायँ तब उतारिके तेल छानके रखि देवै जहांपर दर्द होय वहांपर मालिस करै तो परमेश्वरकी कृपासे सर्व दर्द नाश होजायँ पंगुलपना कुबड़पना तेरह प्रकार सन्निपातज्वरवालेके शरीरपर मलाजाय तो तेरह प्रकारके सन्निपातको नाश करै है यह तेल वातव्याधिको हरै है कोई दर्द होय तो इस तेलसे दूर होय.

अथ लेपकी विधि ।

लेप तीन प्रकारका है, एक सूखा दूसरा जो पानीसे पीसा जाय तीसरा जो दूध तेल घी कांजीसे पीसिके लेप करै तो यह तीन लेप हैं और यह लेपकी विधि शास्त्रकी नही है.

अथ गर्भिणीकी दवा।

महुआ चन्दन बाला सारिवा मुलहटी पद्माख इन्होंका काढा करि मिसरी शहद मिलायके पीवै तो गर्भिणीका ज्वर शांत होयजाय.

अथ दूसरी गर्भिणीकी दवा।

चन्दन सारिवा लोध मुनक्का दाख इन्होके काढेमें खांड मिलाय पीनेंसे गर्भिणीका ज्वर दूर होय.

अथ गर्भिणीको पथ्य।

गर्भिणीको चाहिये कि गरम वस्तुसे पथ्य रक्खै बहुत अलाबला न खाय विकार वस्तुके खानेसे वात पित्त कफ कोप करिके गर्भको नुकसान पहुंचाता है इससे बचीरहै हमलतक.

अथ अंतराज्वरकी दवा।

अंतराज्वरवालेको मुंजीस पिलायके तीन दिन-तक तब जुलाब देवै दो दिन जिस्में ज्वरकी गर्मी करेजे परकी ज्वरकी रेखा दस्तके रस्तासे निकल जाय तब मसीका जड पत्ता समेत १॥ तोले पीपरी एक पानीमें पीसिके पीवै सवेरे शामको, विषमज्वर अंतराज्वर नाश होय पथ्यसे रहै.

अथ अंतराज्वरकी दवा ।

जुलाब देकर रोगीको साफ करै तब गुरूची चिरायता पीपरीका अर्क ४ तोले निकालके ३ तोले मिसरी छोडके पीवै तो अंतरा सर्व ज्वरको दूर करै.

अथ शूलपर लेप ।

जहांपर दर्द होय वहांपर यह लेप करै तो तुरंत गुण देवै एरंडकी जड़ सोंठ सुरती अफीम धतूरका पत्ता यह दवा माफिक लेकर पानीमें पीसिके गरम करै तब जहांपर दर्द होय वहांपर लेप करै तो शूल दूर होय.

अथ शर्वत गुरुचीका ।

हरी गिलोयका रस ६ तोले चन्दन १ तोले नीलोफरके फूल ४ तोले गुलाबके फूल २ तोले धनियां ४ तोले सफेद मिसरी ३२ तोले प्रथम सबं दवाओंको थोड़ा कूटिके पौने दो सेर पानीमें शामको भिगोय देवै सबेरे चुरावै जब तीन पाव पानी शेष रहिजाय तब छानके मिसरी मिलायके शर्वतकी चासनी विधिसे शर्वतको बनाय लेवै तब सीसीमें रख देवै यह शर्वत विषमज्वर खांसीको सततज्वरको दूर करै मन प्रसन्न करै ग्लानिको नाशै.

—

अथ शर्बत आलूका।

कुलफाके बीज ककड़ीके बीज खीराके बीज काहूके बीज बिजौरेका छिलका यह सब एक एक तोले लेवै आलूबोखारा पचास लेवै ईमली ४ तोले यह सब दवा सवासेर पानीमें औटावै जब तीन पाव पानी शेष रहे तब छान लेवै. तब अढाई पाव बूरा सफेद मिलायके चासनी करि लेवै तब सीसीमें रख देवै यह शर्बत रुधिर और पित्तज्वर और मलज्वरको दूर करे और मस्तककी पीडाको और हाथ पांवकी जलनको दूर करै और उलटीको गुण करै.

अथ शर्बत कासनीका।

कासनीकी जड़ पत्तोका रस २० तोले लेकर और मिसरी सवासेरको एकमें मिलायके चासनी करै जब चासनी होने लगै तब चार तोले निंबूका रस छोडके शर्बत तैयार करै तब सीसीमें रख देवै। यह सब २ तोले खावै तो पित्तज्वरको दूर करै और दिलको कलेजेको उदरको ताकत देवै गांठोको खोले और पेशावको जारी करै.

अथ शर्बत गुलाबके फूलोंका।

गुलाबके फूल एक पाव सफेद चन्दनका चूर्ण एक

पाव मिरचका चूर्ण ४ तोले इन सबको तीन सेर पानीमें औटावे जब सवासेर पानी रहे तब सवा सेर मिसरी मिलायके शर्वतके विधि प्रमाण चासनी करिलेवे तब सीसीमें रख देवै. यह शर्वत पित्तको गरमीको शान्त करता है। यह शर्वत पियासको बुझाता है दिलको दिमागको बल देवे इस शर्वतमें सुगन्ध भरी है मात्रा २ तोलेकी.

अथ शर्वत कातका ।

तुलसीकी पातीका रस आधासेर मिरचका चूर्ण १ पाव घी ७ तोले मिसरी डेढ सेर इन सबको शर्वतकी विधिप्रमाण शर्वत बनाय लेवे तब सीसीमें रख देवे। यह शर्वत वातरोगी प्रातःकालमें डेढ तोला पीवे तो वातरोग दूर होय भूखको लगावे शीतपनाको दूर करे मात्रा १ तोलेकी है.

अथ शर्वत गांजवाँका ।

गांजवाँ एक पाव खांड एक सेर ले गांजवाँको तीन बार धोय साफ करै तब कपडाकी पोटरीमें बांधिके दो सेर पानीमें औटावे जब आधासेर पानी शेष रहे तब छानके उसमें खांड डालिके शर्वतकी विधिप्रमाण शर्वत तैयार करै तब सीसीमें रखदेवे मोताद

इस शर्बतकी १ तोलेसे चार तोले तक है जोखामको दूर करता है मनको प्रसन्न करता है भूखको लगाता है अरुचिको खोता है.

अथ शर्बत ब्रह्मडण्डीका।

ब्रह्मडण्डी आधा सेर बच एक पाव शंखाहोली आधासेर मिसरी डेढसेर घी १० तोले प्रथम ब्रह्मडण्डी बच शंखाहोलीको तीनसेर पानीमें अग्नि पर चुरावै जब एक सेर शेष रहै तब छानके कडाहीमें डारि मिसरी मिलाय घी छोड़िके शर्बतकी विधिप्रमाण शर्बतकी चासनी करि लेवे तब सीसीमें यह शर्बत रख देवे यह शर्बत उन्मादको अपस्मारको दूर करै हौलदिलको साफ करै विह्वल चित्तको ठिकाने करै कलेजेकी गरमीकी शांति करै भ्रमको नाश करै यह शर्बत बुद्धिका दाता है यह शर्बत १ तोला खावे रोज शाम सबेरे पथ्यसे अलाबला न खावे.

अथ शर्बत उसवा मगरबीका।

उसबा मगरबी डेढ पाव सौंफ सहत्रा चन्दन चूक यह सब दवा दस दस तोले लेकर तीन सेर पानीमें शामको भिगोय देवे थोरा दरकचायके सवेरे अग्निपर

रखिके चुरावै जब सवासेर पानी शेष रहै तो सवासेर सफेद कन्द मिलायके अग्निपर चुरावै जब शर्बतकी चासनी करि लेवै तब सीसीमें रख देवे यह शर्बत एक तोले वा दो तोले खावे शाम सबेरेको तो खूनके विकारको नाशै खराब खूनको दूर करै नवा खूनको पैदा करै अजीर्णको दूर करै भूखको लगावे यह शर्बत मुसफी खूब है.

अथ शर्बत उन्नावका ।

उन्नाब अच्छा डेढ पाव लिसोड़ा आधासेर मुलहटी २ तोले गुलाबके फूल १० तोले सौंफ ४ तोले इन सबको थोरा दरकचायके डेढसेर पानीमें शामको भिगोय देवे सबेरे चुरावै जब तीन पाव बाकी रहिजाय तो छानके १ सेर सफेद कन्द मिलायके अग्निपर रखके चुरावे जब शर्बतकी चासनी होय तो शर्बतको सीसीमें रख देवै डेढ तोले खावै तो मादाको नरम करै अजीर्ण ज्वरको दूर करै बादीको तोरै दिलको खुश करै यह शर्बत कुछ दिन खावे तो उदररोग नहीं होय.

अथ शर्बत शिवलिंगीका ।

शिवलिंगीका फल अधपका एक सेर पिपरी डेढ

पाव मिसरी डेढसेर पहिले दवाको थोड़ा कूटिके तीन पाव पानीमें शामको भिगोय देवे और सबेरेको अग्निपर रखके चुरावै जब सवा सेर बाकी रहिजाय तो छानके मिसरी मिलायके शर्बतकी चासनी करै जब शर्बत तैयार होजाय तो सीसीमें रख देवै। यह शर्बत सर्व सिद्धिदायक है। दमा खांसी उदररोग आदि आठ प्रकारके रोगोंको दूर करै है पुराने ज्वरको दूर करै गर्भको देवे है.

अथ वीर्यस्तंभन।

जायफल अकरकरा लौंग सोंठि केसर पिपरी कस्तूरी भीमसेनी कपूर अभ्रक रस इन सबके बराबर अफीम लेवै और पीछे इन सबको कपड़छान करि मूंग बराबर गोली बांधै तब १ गोली वा दो गोली नित्य खाय ऊपरसे औटा दूध मिसरीके साथ पीवे तो वीर्य्य नहीं गिरै एक घड़ी बन्धेज होय स्त्री प्यार करै.

अथ दूसरा प्रयोग।

सिन्दूर रस १२ भाग वंग १२ भाग लोहारस १२ भाग अभ्रक १२ भाग ताम्रेश्वर रस १२ भाग कपूर २९ भाग जायपत्री २९ भाग जायफल२९भाग लौंग २९ भाग सफेद चन्दन २९ भाग कस्तूरी १२ भाग

तज १२ भाग तेजपात १२ भाग इलायची छोटी १२ भाग नागकेसर १२ भाग इन सब दवाओंको कूटि कपड़छान करिके ४मासे खाय ऊपरसे मिसरी दूध पीवै तो वीर्य बन्धै शरीर पुष्ट होय दस स्त्रियोंसे भोग करनेसे बल न घटै यह दवा नपुंसकपनाको दूर करै भूखको जगावै.

अथ मदनकामदेवरस ।

रूपरस १ तोला हीरा रस २ तोले सोना रस ३ तोले तामारस ४ तोले पारा शुद्ध ५ तोले गन्धक शुद्ध ६ तोले लोहासार ७ तोले इन सबको कुमारके रसमें घोटे तब सीसीमे भरि कपडमिट्टी करि एक हंडिया लेवे उसमें नोंन भरै बीचमें सीसी धरै ऊपरसे नोंन भरि बन्द करै चुल्हापर हंडी धरि ४ पहर मन्द मन्द ऑच देवै तब उतारिके मदारके दूधमें खरल करै तब असगन्धके रसकी तीन भावना देवै तब केवांचके फलके रसकी तीन भावना देवै दोनों मुसलीके रसकी तीन भावना देवै तब गोखरूके रसकी तीन भावना देवै तालमखानाके रसकी तीन भावना देवै शतावरीके रसकी तीन भावना देवै कमलके रसकी तीन भावना देवै कसेरूके रसकी तीन भावना देवै तब कस्तूरी त्रिकुटा कपूर शीतलचीनी छोटी इलायची लौंग इन सब

दवाओंको दो दो तोले लेकर कूटि कपड़छान करिके ऊपरके रसमें मिलायके एकरस करिके तब सब दवाओंके बराबर मिसरी मिलावै तब छः मासे खाय ऊपरसे दूध पीवै तो इस दवाको खानेवाला बहुत स्त्रीगमन करै बल न घटै कामको बढायके शरीरकी पुष्टि करै स्त्री प्यार करै भूंख लागै ग्लानि मिटै नपुंसकता दूर होय.

अथ स्तंभनचूर्ण।

लोहासार १० टंक सोंठ सालममिसरी १० टंक इन दवाओका चूर्ण करिके रोज खाय ऊपरसे दूध मिसरी पीवै तो स्तंभन होय जरूरसे धातु बल वीर्य्य बढै पथ्यसे खावै.

अथ वीर्य्यकरन नपुंसकको।

जायफल जायपत्री चिरौजी मुनक्का छोहारा बदाम कमलगट्टा सोंठ पीपरी मिरच लौंग असगन्ध मुसली दोनो तालमखाना शतावर केवांचका बीज बीजबन्द इसबगोल नागकेसर यह सब दवा चार चार तोले लेवै कूटि कपडछान करिके घीमें भूंजे तब दूनी मिसरीकी चासनी बनावै जब शर्बतके मिसाल होजाय तब उतारिके सब दवा इसी चासनीमें मिलायके खावै डेढ़ तोलेसे दो तोले तक रोज शाम सवेरे ऊपरसे

दूध पीवै यह दवा तमाम बीमारियोंको रफा करे, बल वीर्यको बढायके शरीरको पत्थरके मिसाल करै नपुंसक-पनाका नाश करै कड़क पेशावको मूत्रकृच्छ्रको मूत्राघात पथरीको वातव्याधिको नाशै बहुत स्त्रियोंका सुख देवै गर्भको देवै है जो पथ्यसे खावे तो स्त्री पुरुषकी बीमारीको नाशै है शरीरमें बल न घटै गरम सरदका खियाल रखै.

अथ अमर अमृतरस ।

पारा २० तोले लेकर पहिले काकमाचीके रसमें एक दिन घोटै सत्यानासीके रसमें १ दिन घोटै शिवलिंगीके रसमें एक दिन घोटै पानीकी काईके रसमें एकदिन घोटै कमलके रसमें एक दिन घोटै तीनपतिया जो पानीमें छाये रहती है उसके पत्तोंके रसमें एक दिन घोटै सनके रसमें एक दिन घोटै फिटकरीमें एकदिन खरलमें घोटै सेन्धानोनमें एकदिन खरल करै तब साफ गरमपानीसे धोयडारै तब शुद्ध आँवलासार गन्धक ५ तोले लेकर खरलमें पारा गन्धक छोडिके खरल करै जब पारा गन्धककी कजली होजाय तो निंबूका रस छोड़के पांच दिन खरल करै तब मदारके रसमें पाँच दिन खरल करै तब घीकुमारके रसमें पाँच दिन खरल करै तब हरदीके रसमें

पांच दिन खरल करै तब मेंहदीके रसमें पांच दिन खरल करै तब आतशीसीसीमें भरिके सीसीपर सात कपड़मिट्टी करिके सुखायके तब एक कड़ाहीमें बालू भरै तब उस बालूके बीचमें सीसी धरिके बालूसे सीसीके मोहरातक भरि देवै और सीसीका मुँह खुला रक्खै तब पांचदेवतोंका पूजन करिके कडाही भट्टीपर धरै तब अग्नि तीन दिनरात देवै तब उतारिके खरलमें डारिके खरल करै तब घीकुमारीके रसमें तीन दिन खरल करै और मदारके दूधमें तीन दिन खरल करै तब एक मट्टीके दीयामें दवा भरि ऊपरसे दुइ दियासे ढाँप देवै तब कपडमिट्टी सात करै धूपमें सुखायके एक गजपुट आंच देवै निकालके सीसीमें रख-देवै पांच ब्राह्मणोंको भोजन देकर तब यह अमर अमृतरस तैयार होय इस रसको पीपरीके चूर्णसंग रत्ती वा दोरत्ती शहतसंग खाय तो अनेक स्त्रीयोंके मदको नाशै बल वीर्य न घटै इस रसका अनुपान बदलता जाय रोगीको पथ्य ते राखै तो शरीर भरके रोगको दूर करै फिर रोग नियरे न आवै शरीरपुष्टि हमेशा बनी रहै.

अथ दादकी दवा।

ऑवलासार गन्धक सिन्दूर मुरदासिंग फिटकरी

मैनशिल इन दवाओंको कूटिके खूब बारीक पीसिके जहांपर दाद पामा गजकरन होय वहां करूतेलमें मिलायके लगावै ऐसा मलै कि जिसमें दवा शरीरमें समाय जाय यह दवा हजारों दफे अजमाइस किया है.

अथ सेहुआँकी दवा ।

केसर २ तोले मैनशिल२ तोले आँवलासार गन्धक ४ तोले चौकिया सोहागा ४ तोले मुरदासिंग ८तोले इन दवाओंको कूटि कपडछान करिके खरलमें खूब घोटै तब करूतेलमें मिलायके सेहुआँपर मलै तो सेहुआँ गजकरन दाद सब दूर होयँ.

अथ राजा अमीरोंकी दवा ।

चौकिया सोहागा ३ तोले केसर ३ तोले सिंगरफ शुद्ध ३ तोले मैनशिल ३ तोले मुरदासिंग६ तोले इन दवाओंको कूटि पिसान करि खरलमें डारिके पांच दिन खरल करे तब थोरा थोरा तिलके तेलमें शरीरपर मलै तो सेहुंआ दाद मुहँपरकी झाईं यह सब दूर होयँ.

अथ भैंसवा दादकी दवा ।

मिरच४ तोले गन्धक नीलाथोथा पारा फिटकरी

यह दो दो तोले ले कूटि निंबूके रसमें तीन दिन खरल करै तब दादपर लगावे तो दाद जडसे नाश होय जाय.

अथ योगराज गुग्गुल।

सोंठ ४ मासे पीपल ४ मासे चाव ४मासे पीपलामूल ४ मासे चीता ४ मासे भूंजी हींग ४ मासे अजमोदा ४ मासे सिरसम ४ मासे जीरा ४ मासे स्याह जीरा ४ मासे रेणुकबीज ४ मासे इन्द्रयव ४ मासे पाढ़ा ४ मासे वायविडंग ४ मासे गजपीपल ४ मासे कुटकी ४ मासे अतीस ४ मासे भारंगी ४ मासे बच ४ मासे मूर्वा ४ मासे इन सबको कूटि कपडछान करिके चूर्ण बनावे इन सबसे तिगुणा त्रिफला लेवै पीछे सब दवाके तुल्य शुद्ध गूगल लेवे और बंगभस्म ४ तोले चाँदी भस्म ४ तोले अभ्रक भस्म४ तोले लोहा भस्म ४ तोले शीशा भस्म ४ तोले मंडूर भस्म ४तोले सिन्दूर भस्म ४ तोले इन सबको मिलाय गुडके पाक सरीखा पकाय एक गोला बनाय घीसे चिकने बरतनमें रक्खे पीछे रोज ४ मासे खावे तो यह योगराजगूगुल त्रिदोषको हरै है और रसायन है और इसमें मैथुन वा खाने पीनेका त्याग नही है, यह सब वात-

रोगोंको वा कुष्ठको वा बवासीरको वा संग्रहणीको वा प्रमेहको वा वातरक्तको वा नाभिशूलको वा भगन्दरको वा उदावर्तको वा क्षयको वा गुल्मको वा अपस्मारको वा ऊरुग्रहको वा मन्दाग्निको वा श्वासको वा खांसी-को वा अरुचिको वा वीर्यदोषको वा स्त्रीके रजोदो-षको हरै है और पुरुष खाय तो वीर्य बंधि सन्तान पैदा करै और स्त्री खावै तो गर्भ रहै और इसको रास्नादि काढ़ाके संग खानेसे अनेक प्रकारके वायु-रोग दूर होयँ और यह काकोल्यादि काढाके संग खानेसे पित्तको हरै है और अमलतासके काढाके संग खानेसे कफरोगको हरै है और दारुहल्दीके काढाके संग खानेसे प्रमेहको हरै है और गोमूत्रके संग खा-नेसे पांडुरोगको हरै है और शहतके संग खानेसे मेदो-वृद्धिको हरै है और नींबकी छालके काढेके संग खा-नेसे कुष्ठको हरै है और गिलोयके काढेके संग खानेसे वातरक्तको हरै है और पीपलीके काढेके संग खानेसे शोथरोगको हरै है और शूलरोगको हरै है और पटोलके काढेके संग खानेसे मूषाके विषको हरै है और त्रिफलाके काढेके संग खानेसे नेत्ररोगको हरै है और सांठीके काढेके संग खानेसे सब तरहके पेटरोगोंको हरै है.

अथ दूसरा योगराज गुग्गुल।

पीपली गजपीपली चीता वायविडंग इन्द्रयव धमासा कुटकी पिपलामूल भारंगी पाढ़ा अजवायन मूर्वा शुंठ हींग चवक यह सब दवा बराबर लेकर चूर्ण बनायके चूर्णके बराबर शुद्ध गुग्गुल चूर्णमें मिलायके शहतके संग १० मासे खावे तो यह योगराजगुग्गुल रक्तकी बवासीरको वातकी बवासीरको गुल्मको संग्रहणी पांडुको हरैहै अथवा राळके चूर्णको कडवे तेलमें मिलायके धूप देनेसे गुदाके रोगोंको हरैहै.

अथ तीसरा योगराज गुग्गुल।

चीता पिपलामूल अजमोदा सौंफ बायबिडंग अजवाइन जीरा देवदारु चाव इलायची सेंधानोन कूट रास्ना गोखरू धनिया त्रिफला नागरमोथा शुंठ मिरच पीपल दालचीनी वाला जवाखार तालीसपत्र तमालपत्र यह दवा समभाग लेकर चूर्ण बनायके और चूर्णके बराबर शुद्ध गुग्गुल मिलायके घृतमें खरल करै तब मनोवांछित भोजन करै यह प्लीहाको गुल्मको उदररोग अफारा बवासीर इन सब रोगोंको नाशै है और अग्निको दीपन करै है और तेज बलको बढावै है यह आमवातको हरै है यह योगराजगुग्गुल घृतमें एक दिन खरल करै तब खाय.

अथ कैशोरगुग्गुल ।

नया भैंसागूगल ६४ तोला गिलोय ६४ तोला त्रिफला ६४ तोला इनको आधा मन पानीमें चुरावे जब आधा पानी रहिजाय तब छानलेवे तब फिर अग्निपर चुरावे जब गाढा होजाय तब उतारिके हरें ८ तोला त्रिकुटा ६ तोला वायबिडंग २ तोला निसोत डेढ तोला जमालगोटाकी जड़ डेढ तोला गिलोय ४ तोला इनका चूर्ण बनाय घृत मिलायके रख देवे तब देवता और अतिथि आदिकी पूजा करि और अग्निबलाबल विचारिके रोगीको खानेको देवे यह गुग्गुल खानेसे वात रक्त दोषको वा त्रिदोषकों दूर करै है खांसीको घावके दमाको श्वासको कुष्ठको गुल्म-को सोजाको पेटके रोगोंको मेदरोगोंको पांडुरोग मन्दा-ग्निको दस्त बन्दको प्रमेहरोगको इन सबोंको हरै है यह सेवन करनेसे बूढापनको दूर करै है इस कैशोर गुग्गुलमें जैसा नाम वैसा गुण है.

अथ गुग्गुलवटी।

शुद्ध गूगल लहशुन निबोली हिंगु सोंठ इनको पानीमें खरल करि गोली बनायके पथ्यसे खावे तो यह बवासीर रोगको दूर करै है.

अथ त्रिकटुवटी।

सोठ मिरच पीपल सोहागा इनको कूटि कपडछान करिके नागरपानके रसमें खरल करै, तब मिरच बराबर गोली बांधै तब एक गोली खाय तो कफको हरै है.

अथ फलत्रयवटी ।

हरैं बहेड़ा आंवला सूंठ देवदारु पीपली बच मिरच नागबला इनको कूटि कपडछान करिके धतूराके और भंगराके रसमें ३ दिनतक खरल करै तब गोली बनायके खावै तो श्वास कफके विकारको दूर करै है.

अथ दमाकी दवा ।

थोहरके दूधमें गुड मिलायके ६ रत्ती खानेसे खांसी श्वासको नाशै क्षयीको हरै हृद्रोगको भी दूर करै.

अथ श्वासकुठार रस ।

पारा शुद्ध गन्धक शुद्ध मीठा तेलिया सोहागा मैनशिल यह सब एक एक तोले मिरच ९ तोले पीपली एक तोले सोठि १ तोला इन सब दवाओंको

लेकर पहिले पारा गन्धककी कजली करिके तब सब दवाओंको कूटि कपड़छान करिके एकमें मिलायके खानेसे यह श्वासकुठार रस सब प्रकारके श्वासको हरै है.

अथ दमाकी दवा।

कंटकारी अरूसा पीपरी सोंठि धवका फूल पोस्तका ठोढ बबूरकी छाल इन दवाओंको तीन तीन मासे लेकर थोरा दरकचायके तीन पाव पानीमें काढा करै जब डेढ छटांक शेष रहि जाय तब छानके शीतल करिके शहद छोड़के शाम सबेरे पीवै तो बालक स्त्री पुरुष सबकी श्वास खांसी ज्वरको नाशै है।इसको कुछ दिनतक पीवै और पथ्यसे रहै तो दमाको दूर करै है.

अथ श्वासदमापर दवा।

सोंठ पीपरी मिरच इन दवाओंको बराबर लेय कूटि कपड़छान करिके बबूरके काढेमें दो दिन खरल करै तब भटकटैयाके काढामें दो दिन खरल करै तब धवके काढ़ामें दो दिन खरल करै तब सुखायके बराबर मिसरी मिलावै तब शहदके साथ खावै तो श्वास खांसीको [illegible] है पित्तज्वरको दूर करै है.

अथ त्रिफलायोग ।

त्रिफला ८ तोले दालचीनी ८ तोले मुलहटी ८ तोले महुवाका फूल ८ तोले जायफल ८ तोले कमलगट्टाका गूंद ८ तोले सबको कूटि कपड़छान करिके सब दवाओसे आधी मिसरी मिलायके घी शहत संग सांझ सबेरे खाय तो यह त्रिफलायोग सब रोग हरे है और पुष्टि करनेमें तो यह रस गोली चूर्ण पाक इत्यादि सबसे अव्वल है यह योग हजारोमें आजमाया हुआ है.

अथ मृतसंजीवनी रस ।

सिंगरफ ३ भाग मीठातेलिया २ भाग सुहागाखार १ भाग जमालगोटा १ भाग इन्होको अदरखके रसमें दो प्रहर खरल करे पीछे आकके दूधमें खरल करै पीछे शतावरीके रसमे खरल करै, दो रत्तीभर खानेसे वातरोग, ऊरुस्तंभ आमवात, संग्रहणी, बवासीर और आठ प्रकारके ज्वर रोगोंको यह रस ऐसे नाशै है जैसे सूर्य अंधेरेको नाशै है परंतु यह रस पथ्यसे खावै.

अथ प्रभागुटी ।

चीता४तोले हरड़ ४ तोले बहेडा ४ तोले आंवला ४ तोले नीब ४ तोले परवल ४ तोले मुलहटी४ तोले

दालचीनी ४ तोले नागकेशर ४ तोले अजवाइन ४ तोले अमलबेत ४ तोले चिरायता ४ तोले दारुहल्दी ४ तोले इलायची ४ तोले नागरमोथा ४ तोले पित्तपापडा ४ तोले रसोत ४ तोले कुटकी ४ तोले भारंगी ४ तोले चाव ४ तोले पदमाख ४ तोले खुरासानी अजवाइन ४ तोले पीपली ४ तोले मिरच४ तोले जमालगोटा ४ तोले कचूर ४ तोले सोंठ ४ तोले पोहकरमूल ४ तोले बायबिडंग ४ तोले पीपलामूल ४ तोले जीरा ४ तोले देवदारु ४ तोले तमालपत्र ४ तोले कूडाकी छाल ४ तोले रास्ना ४ तोले धमासा ४ तोले गिलोय ४ तोले निसोत ४ तोले कौचके बीज४तोले तालीसपत्र ४ तोले सेंधानोंन ४ तोले मणियारीनोंन ४ तोले काला नोंन ४ तोले धनियां ४ तोले अजमोदा ४ तोले सौंफ ४ तोले सोनामाखी ४ तोले जायफल ४ तोले वंशलोचन ४ तोले असगन्ध ४ तोले अनारकी छाल ४ तोले कंकोल ४ तोले बाला ४ तोले जवाखार ४ तोले सज्जीखार ४ तोले शिलाजीत ३२ तोले गूगुल ८ तोले लोह भस्म ३२ तोले सोनामाखी भस्म ८ तोले इन सबोंको कूट कपडछान कारिके चूर्ण करे तब घीके चिकने बरतनमें रक्खे तब इस दवाको रोगीका बलाबल देख विचारके देवै तो

वातव्याधिको हरै है और ऊरुस्तम्भको अर्दितको गृध्रसी विद्रधि श्लीपदको गुल्मको पाण्डु हलीमक पांचप्रकारकी खांसीको मूत्रकृच्छ्रको गलरोगको अफाराको अश्मरीको अण्डवृद्धिको संग्रहणीको अपबाहुक अरुचिको पसली शूलको पेटरोग आठप्रकारके भगन्दररोगोंको हृदय रोगको शूलको ऊर्द्धकंपको विषमज्वरको छातीके फटनेको मुखरोगको प्रमेह रोगको रक्तपित्तरोग कामला रोग वातोत्पन्न कफोत्पन्न द्वन्द्वज, इन सबको नाशै है इस दवाकी मौताद १६ मासे तक खावै इस दवाको महादेवजीने कहा है पथ्यसे खावै.

अथ गन्धकरसायन।

शुद्ध गन्धक दालचीनी इलायची तमालपत्र नागकेशर गिलोय हरड बहेडा आंवला सोंठ भंगरा अदरख इन सबको काढामें आठ आठ भावना देवै पीछे बराबर मिसरी मिलायके रखे तब गन्धकरसायन तय्यार होय इसके १ तोले रोज सेवनसे वीर्य अग्नि पुष्टि देहमें दृढता इनको बढावै है और कुष्ठ, कण्डू, विषदोष, घोर अतीसार, संग्रहणी, वातरक्त,

शूल, जीर्णज्वर, सब प्रमेह, तीव्रवात, वातव्याधि, अण्डवृद्धि, सोमरोग आदि संपूर्ण रोगोंको नाशै है; आयु तथा बुद्धिको बढावै केशोंको काला करै पथ्यसें खावै तो देवोंकी समान कांतिको बढावै है.

अथ दूसरा गन्धकरसायन ।

गन्धक २० तोले लेकर कडाहीमें घी छोड़के गन्धकको छोडै पीछे अग्नि जलावै जब पिघलजाय तो भङ्गराके रसमें ६० बार बुझावै तब गायके दूधमें ३० बार बुझावै तब गन्धकके बराबर मिसरी मिलायके खावै तो सर्वरोगोंको नाशै कुष्ठको बे तकलीफ दूर करै यह एक किस्मका कल्प है खराब कायाको सुन्दर करै है इस दवापर चनेकी रोटी खाय नोंन छोड देवै बल्कि गायके दूधसे रोटी खाय.

अथ वातादि सर्वरोगपर रस ।

मीठा तेलिया ८ तोले सिगरफ २ तोले मिरच ६ तोले इन दवाओंको खरलमें छोडके खरल करे निंबूके रसमें एक दिन खरल करै आदीके रसमें दो दिन खरल करै तब सुखायके बजरी बराबर गोली बनायके खानेसे दमा खांसी प्रमेह इत्यादि सब रोगोको दूर रै पथ्यसे खावै खट्टा तीता मीठा छोडै.

अथ सर्वरोगोंपर चूर्ण।

अदरख ६४ तोले गुड ३२ तोले बिजौरा निंबूका रस १६ तोले इन्होंको मन्दाग्निसे पकावै पीछेसे दालचीनी १ तोले तमालपत्र १ तोले इलायची १ तोले शुण्ठी १ तोले मिरच १ तोले पीपल १ तोले त्रिफला ३ तोले धमासा १ तोले चीता १ तोले पिपलामूल १ तोले धनियां १ तोले जीरा १ तोले स्याह जीरा १ तोले इन सबको कूट कपडछान करके चूर्ण बनायके खानेसे अरुचि, क्षय, मन्दाग्नि, कामला, पांडु, सोजा, खांसी, श्वास, आध्मान, पेटरोग, गुल्म, प्लीहा, शूल इत्यादि रोगोंको हरे है पथ्यसे खावै सब रोग दूर होयँ।

अथ इन्द्रीजुलाब।

दालचीनी कबाबचीनी इलायची इनको ६ मासे लेवै शोरा जीरा १० मासे केसर २ मासे इनको चूर्ण करके खावै ऊपरसे गायका पावसेर दूध पीवै उसके ऊपर जितना पानी पीवै दूध मिलायके पीवै इन्द्रीजुलाब होय शरीरकी गरमी सब दूर होय पथ्यसे रहै गरम वस्तुको त्यागै.

दूसरा इन्द्रीजुलाब।

बीहीदाना ६ मासे फरीद बूँटी १ तोले इन्होको

१ सेर पानीमें भिगोयदेवे शामको सबेरे मलवे
आधासेर गायका दूध मिलावे और ६ मासे कलमी
सोरा मिलायके पीवे तो इन्द्रीजुलाब होय गरम वस्तु
को त्याग देवे.

अथ मोहनभोग ।

मैदा अच्छा गेहूँका एक पाव मिसरी १ पाव घी
एक पाव गायका दूध १ पाव पहिले मैदाको घीमें भूंजे
तब एकपाव पानी और ऊपरसे दूध मिलायके मिसरी
छोड़के चासनी करै जब सर्बतकी चासनी होयजाय
तो आटा भुंजा हुआ मिलायके रखदेवे यह मोहनभोग
बहुत गुणकारी है पुष्टिको करै है शरीरको सुन्दर करै
है लेकिन थोडा गुरु है.

अथ शरीररत्न ।

सोंठि पीपली श्याममूसली सफेदमूसली गुरु-
चीका सत मुलहठी मुरुली, इसबगोल तालमखाना
बबूरका गोंद रोमीमस्तंगी बीजबन्द लौंग जायफल
इन सबको कूटि कपडछान करिके सब दवा चारि
चारि तोले लेवे केसर ४ तोले भांग १० तोले यहभी
मिलायके सब दवाओंके बराबर मिसरी मिलायके १
तोले अवटादूध आधासेरमें मिलायके शामको सोवते

बखतमें खावे खट्टा मीठा तीता पथ्यसे खावै तो शरीरको पुष्टि करै बल वीर्यको बढावे शरीर लोहाके सरीखा होय कानको ऑखको नाकको दांतको बलकिन सब शरीरको ताकत देवैहै जो कुछ दिन सेवै तो सुन्दर देह बनै है.

अथ उदररोगपर चूर्ण।

जवाखार सेन्धानोन त्रिकुटा हींग इन्हेंको चूर्ण करिके खाय तो उदरपीड़ा मिटिजाय.

अथ पिलहीपर दवा।

सरफोंकाकी जड ७ नग मिरिचि दोनोंको पानीमें पीसके दो महीना पीवे तो उदररोग आठ प्रकारका नाशै ज्वर जड़से दूर होय लेकिन पथ्यसे खावै तब अलाबला सबको त्याग देवे.

अथ आमवातपर बाण।

काबुली हर्रे १ पाव निसोत १ पाव कौलादाना १ पाव रेंडीका बीज १ पाव इन सबको कूटि कपडछान करि आधासेर रेंडीका तेल मिलायके रोगी बल दोष विचारके खावे ऊपरसे गरम पानी पीवै सबेरेको और शामको औटा दूध पीवै और शरीरपर कड़वातेल



सेन्धानोंन जवाखार मिलायके मलै, गरमपानीसे स्नान करै बादी वस्तुका त्याग करै आमवात जाय.

अथ सब ज्वरकी जडी।

सांठीकी जड सरफोकाकी जड़ काकजंघाकी जड़ डुगांकी जड़ पिपली सबको बराबर लेकर पानीसे पीसिके पीवै तो सब ज्वरको दूर करै है पथ्यसे खावै सब वस्तुका त्याग करै.

अथ तिलक योग।

ब्रह्मडंडीको शनिश्चरके दिन स्नान करिके दशांगका धूप देकर आवै रविवारको जडसे उपाडि लावै और बडका बरोंह लावै और केशर लेवै इन तीनोंको कूटि चूर्ण करिके धूप देकर रख देवे जब काम लगै तिलक करै तो जिस कामके वास्ते जावै सो काम सिद्ध होय सही.

अथ शरीरदाह प्यासकी दवा।

शीतलचीनी १ मासे इलायची १ मासे बडकी छाल २ मासे गूलरकी छाल २ मासे पानीमें पीसके मिसरी मिलायके पीवै तो दाह प्यास मिटै कलेजेकी गरमी दूर होय गरम वस्तु त्याग करै.

अथ सर्ववातपर तेल।

दूध १२८ तोले मीठा तेल ६४ तोले शतावरीका रस ६४ तोले बच कूट चन्दन देवदारु काबुली घटोली रास्ना मंजीठ इलायची रूदवन्ती शिलाजीत असगन्ध जटामांसी बालिया यह सब दवा दो दो तोले लेकर खरल करिके तेल दूधमें मिलायके कडाहीमें सब छोडके अग्निपर कडाही रखके चुरावै जब सब दवा जल जायँ तो तेल सिद्ध जानो यह तेल मालिशसे एकांगवात सर्वांगवातको टूटे हाडको टूटी संधिको कुब्जवातको पंगुलवातको इत्यादि सब वातको नाशैहै तृषाको दूर करै है.

अथ स्तंभनकी दवा।

खुरासानी बच असगन्ध अकरकरा जायपत्री जातीफल चीनियां कपूर चोखी बिजया रस सिंदूर इन दवाओको डेढ़ डेढ़ टंक लेवे कूटि कपड छान करिके सब दवाओके बराबर मिसरी मिलायके टंकप्रमाण गोली बांधै सांझको एक गोली खावै ऊपरसे मूली खावे स्तंभन हो वीर्य्य नही गिरै निंबूका रस खाय तो वीर्य्य गिरै.

अथ दूसरी स्तंभनकी दवा।

सोंठि शतावरी निर्गुंडी भांगरा मुंडी कूटि

कपडछान करिके शहतमें गोली खाय तो स्तंभन होय ।

अथ स्तंभनकी दवा ।

पारा गन्धक जायफल लौंग उटंगनके बीज आफू केसर मस्तंगी कपूर जायपत्री सब समभाग ले कूटि कपडछान करिके शहतके साथ खावै तो स्तंभन होय.

अथ लेप इंद्रीका ।

मधु हिंगु असल खरल करिके इन्द्रीपर लेप चिपकाये तो स्तंभन होय.

अथ स्त्रीके फूल आनेकी दवा ।

अच्छा श्याम तिल एक पाव लेवै एक सेर पानीमें काढा करिके पीवै तो स्त्री पुष्पवती होय.

अथ दूसरी दवा ।

मुण्डीकी पत्ती भंगरा गुरुच शतावरी एक २ तोले लेकर काढा करिके सबेरे पीवै तो स्त्रीके फूल आवै १४ दिन पीवै तो गर्भ रहै बालक होय.

अथ स्त्री वांझकी दवा ।

लक्ष्मणाकी जड गायके दूधमें पीसिके स्त्री रजस्वलाके पीछे पीवै तो गर्भ रहै बालक होय.

अथ स्त्रीके फूलकरन दवा।

सोंठ मिरच पीपल ब्रह्मडंडी इनका चूर्ण बनाय ३ मासे खाय ऊपरसे तिलका काढा पीवै पुष्प होय.

अथ स्त्रीगर्भकरण दवा।

शंखहोली मोरशिखा गजकेशर सब बराबर लेकर कूटि एक एक तोलेकी गोली बनावै ऋतु मज्जन स्नान करिकै एक गोली रोज खाय ऊपरसे गायका दूध पीवै और दूध चावलका भोजन करै पथ्यसे रहै तो बांझ स्त्रीको पुत्र होय सही.

अथ गर्भरहनेकी दवा।

लाजवन्ती सिता लौंग इसबगोल माजूफल बंसलोचन मोचरस यह दवा एक एक टंक ले सीप भस्म दो मासे खरहटी एक टंक खैर एक टंक सहॅजन गोखुरू सोंठ अजवायन कमलगट्टा जातीफल यह सब दवा एक एक टंक गजकेसर दो टंक कायफल १ टंक सांच पथरी एक टंक उटंगन पांच टंक सब कूटि कपडछान बनायके गायके घृत शहत संग सबेरे खाय तो परमेश्वरकी कृपा होय तो बांझ

कपडछान करिके शहतमें गोली खाय तो स्तंभन होय ।

अथ स्तंभनकी दवा ।

पारा गन्धक जायफल लौंग उटंगनके बीज आफू केसर मस्तंगी कपूर जायपत्री सब समभाग ले कूटि कपडछान करिके शहतके साथ खावै तो स्तंभन होय.

अथ लेप इंद्रीका ।

मधु हिंगु असल खरल करिके इन्द्रीपर लेप चिपकाये तो स्तंभन होय.

अथ स्त्रीके फूल आनेकी दवा ।

अच्छा श्याम तिल एक पाव लेवै एक सेर पानीमें काढा करिके पीवै तो स्त्री पुष्पवती होय.

अथ दूसरी दवा ।

मुण्डीकी पत्ती भंगरा गुरुच शतावरी एक २ तोले लेकर काढा करिके सबेरे पीवै तो स्त्रीके फूल आवै १४ दिन पीवै तो गर्भ रहे बालक होय.

अथ स्त्री वांझकी दवा ।

लक्ष्मणाकी जड गायके दूधमें पीसिके स्त्री रजस्वलाके पीछे पीवै तो गर्भ रहे बालक होय.

अथ स्त्रीके फूलकरन दवा।

सोंठ मिरच पीपल ब्रह्मडंडी इनका चूर्ण बनाय २ मासे खाय ऊपरसे तिलका काढा पीवै पुष्प होय.

अथ स्त्रीगर्भकरण दवा।

शंखहोली मोरशिखा गजकेशर सब बराबर लेकर कूटि एक एक तोलेकी गोली बनावै ऋतु मज्जन स्नान करिके एक गोली रोज खाय ऊपरसे गायका दूध पीवै और दूध चावलका भोजन करै पथ्यसे रहै तो बांझ स्त्रीको पुत्र होय सही.

अथ गर्भरहनेकी दवा।

लाजवन्ती सिता लौंग इसबगोल माजूफल बंसलोचन मोचरस यह दवा एक एक टंक ले सीप भस्म दो मासे खरहटी एक टंक खैर एक टंक सहॅजन गोखुरू सोंठ अजवायन कमलगट्टा जातीफल यह सब दवा एक एक टंक गजकेसर दो टंक कायफल १ टंक सांच पथरी एक टंक उटंगन पांच टंक सब कूटि कपडछान बनायके गायके घृत शहत संग सबेरे खाय तो परमेश्वरकी कृपा होय तो बांझ

स्त्रीको गर्भ रहै पथ्य दूध भात भोजन करै और एक महीना सब वस्तुओंका त्याग करै.

अथ गर्भ रहनेकी दूसरी दवा।

निर्गुंडी २४ तोले जातीफल २ तोले लाजवन्ती १ तोला जायपत्री १ तोला इसबगोल १ तोला मगजी १ तोला शतावरी५ मासे शिलाजीत२तोले सब दवाओंको कूटि कपडछान करिके चूर्ण बनाय तव पांचसेर गायके दूधमें दवा मिलाय औटावै जब दवा सूख जाय चूर्णके सदृश तव दवासे दूनी मिसरी और १ सेर गायका घी४तोले बंगेश्वर मिलाय सब दवाओंको एक रस करिकै सोपारीके बराबर एक महीना वा दो महीना भरि खावै तो ईश्वरकी कृपासे स्त्रीको दस महीनामें बालक होय खट्टा मीठा तीता सबका पथ्य रखै.

अथ पुनः दवा।

गाजरके बीज २ तोले नागबेली १० तोले इन दवाओंको कूटि कपडछान करके गाय जो बछवा बिआनी होय उसका ऊपरसे दूध पीवै खट्टा वगैरहका त्याग करै तो स्त्रीके गर्भ रहै.

अथ स्त्रीपुरुष बांझ विचार।

एक एक बीताका खेत बनावै उसमें खादनावै

दोनों खेतमें जौ बोवे एक खेतमें स्त्रीसे पेशाब करावे एकमें पुरुष पेशाब करे जिस खेतका जौ जामे वोह निर्दोषी है जिस खेतका बीज न जामे उसे बांझ समझना चाहिये.

अथ बालकके खांसी श्वासकी दवा।

काकडासीगी पीपर पुष्करमूल अतीस इनका चूरण करिके शहदके संग खाय तो बालकके खांसी और श्वासको दूर करै पथ्यसे देवै.

अथ दूसरी दवा बालककी।

बंसलोचनका चूरण करिके शहदके साथ बालकको देवै तो बालककी खांसी दूर होय.

अथ बालकके अतीसारकी दवा।

काकडासींगी पीपरि मोथा उशीरका चूरण करके शहदके संग खानेको देवै तो बालकका अतीसार दूर होजावै और ज्वरका भी नाश होय.

पुनः बालकके अतीसारकी दवा।

मोथा, सोठि, अतीस, हूई, रेडकी जड इनका काढा करि बालकको पिलावै तो बालकका अतीसार जाय.

अथ बालकके ज्वरकी दवा ।

कुटकी मिसरीका चूरण कारिके शहदके संग बालकको देवै तो ज्वर नाश होजाय और मिसरी पीपरी सेन्धानोंनका चूरण करिके घीके संग देवै तो बालकको सब रोगोंमें गुण देवै.

अथ ज्वर अतीसारकी दवा ।

सोंठ, मिरच, पीपरि, इन्द्रयव, नींबकी छाल, चिरायता, घमिरा, चितावर, कद्दूकी पाती, दारुहलदी इन सब दवाओंको समभाग लेकर कूटकर कपडछान कारिके चूरण बनाय सब दवाओंके बराबर कोरैयाका चूरण बनायके चावलके धोवनके साथ खानेको देवै तो अतीसार ज्वर नाश होय और चावलका धोवन मधुमें देवै तो अरुचि, कामलाको प्यासको वातसंग्रहणीको गुल्मको प्लीहाको, प्रमेहको, पाण्डुको, शोथ इत्यादि सबोको दूर करै भूखको लगावै अजीर्णको हरै.

पुनः अतीसार सन्निपातकी दवा ।

पीपरि, पीपरामूल, चाव, चितावर, सोंठ, बारिंयारी, बेलका गूदा, गुर्च, गधा पुरैना, पाढ़ी, चिरैता, कोरैयाकी छाल, इन्द्रयव, सब दवाओको कूट कपड-

छान करिके रोगीको तजबीज करके देवै तो सन्निपात अतीसारको नाशै शरीरको सुधारै.

अथ आम अतीसारकी दवा।

धनियां, सोठ, बेलका गूदा, नागरमोथा, सुगन्धबाला इन सब दवाओंको बराबर ले कूट कपडछान बनाय दो तोलेको डेढ पाव पानीमे क्काथ बनायके पीवै तो आम अतीसारको नाशै.

अथ सब अतीसारकी दवा।

जायफल, लौंग, धवके फूल, बेलका गूदा, नागरमोथा, सोंठि, मोचरस, इंगूर, अफीम सब दवा बराबर लेकर कूटि कपडछान बनायके पोस्ताके रसमें खरल करै तब मटर बराबर गोली बनायके छायामें सुखाके गायके दूधके साथ यह गोली खावै वा चावलके धोवनके साथ खावै तो सब प्रकारके अतीसारको नाशै यह गोली भूखको लगावै.

अथ सब अतीसारकी दवा।

जायफल, छोहारा, अफीम, तीनोंको खरलमें खरल करै पानका रस छोड़के एक रत्ती प्रमाण गोली बनायके गायके दही वा चावलके धोवनके साथ खावै तो सब प्रकारका अतीसार रोग दूर होय.

अथ पेट फूलनेपर दवा।

वच, सोंठ, जीरा, मिरच, हींग, चितावर, तज यह सब दवा बराबर लेकर कूट कपड़छान करके घमिराके रसमें खरल करके चना बराबर गोली बनायके एक गोली खाय तो पेटका फूलना पेटका शूल दर्द वात सबको नाशै, अग्निमन्दता इत्यादि सबको हरै.

अथ सब रोगोंपर चूर्ण।

केसर, नागरमोथा, गुरसकरी, जटामांसी, कुटकी, पीपर, पीपरामूल, कस्तूरी, तज, तेजपात, बड़ी इलायची, नागकेसर, गोखरू, अकरकरा, अभ्रकरस, धनियां, अनार, मिरच, अजवाइन, तंतरीख, इंगुर, कपूर, तुवर, तगर, सुगन्धवाला, जावित्री, लजनी, पुष्करमूल इनका चूर्ण सब रोगोको नाशै है.

अथ तेरह सन्निपातोंपर दवा।

चिरायता, भारंगी, नीमकी छाल, नागरमोथा, कायफल, बच, सोठ, मिरच, पिपरी, वंसलोचन, इन्द्रायणकी जड, रासना, परवरकी पाती, देवदारु, दारुहल्दी, पाढा, सोना, ब्राह्मी, हल्दी, गुर्च, तिधारा,
५ , अतीस, पुष्करमूल, त्रायमाण, भटकटैयाकी

जड छोटकी बडकी दोनों, इन्द्रयव, त्रिफला, कचूर, यह सब दवा बराबर लेकर चूरण कर रोगीका बल देख काढ़ा करके पिलावे तो तेरह प्रकारके सन्निपातोंको और शूल, श्वास, हुचकी, कास और गुदाके रोग इत्यादि सबको नाशै। गलरोगको दूर करै जैसे सिह हाथीको मारताहै तैसे यह काढा सब रोगोंको मारता है.

अथ कासकर्तरी गोली।

बंग १ पीपरी २ हड़की छाल ३ बहेडाकी छाल ४ रूसके पाती ५ भार्गी ६ इन सबोंको बराबर भाग लेकर कूटि कपडछान करके बबूरके काढामें चूरणको दो भावना देवे तब शहद छोडके गोली जंगली बेर बराबर बनाय एक गोली खावे तो श्वास कास क्षयी इन सबोको दूर करै.

अथ हुचकीकी दवा।

सोंठि पीपरिका चूरण करके शहदमे खावै तो हुचकी रोग दूर होय पथ्यसे रहै.

अथ कृमिरोगकी दवा।

नीमके पत्तोका रस १० टंकमें सोंचरनोन १ टंक डारिके पीवे तो सब कृमि झरपरें.

अथ शिरके कृमिकी दवा ।

अरहरकी दाल, घोडा बच दोनों पीसके शिरपर मलै तो शिरके कृमि दूर होयँ.

अथ विजयभैरव रस ।

हरैं ३ टंक, चीता ३ टंक, नागरमोथा २५ टंक, सम्भालू४ टंक, नागकेसर अढाई टंक, सोंठि १०टंक, मिरच १० टंक, पीपरी १० टंक, पीपरामूल १० टंक, पारा १० टंक, गन्धक १० टंक, सिंगिया १० टंक, पारा गन्धकको खरलमें छोड़के खरल करै तब सब दवा कूटि कपडछान करके मिलावै तब गुड पुराना दवाके बराबर छोडै तब सब दवाओंको घृतसे सानिके रख देवै तब शाम सबेरे दोनों बखत बल रोग विचारके दो महीना तक खावै तो कफरोग पित्त-रोग जाय और चार महीना खाय तो वातविकार जाय जो एक वर्ष खाय तो आयुर्बल बढै शरीर नीरोग होय.

अथ वायुरोगकी दवा

अफीम, कुचिला, मिर्च तीनों बराबर लेकर चूरण बनायके नागरपानके रसमें खरल कर एक रत्ती

प्रमाण गोली बनायके एक गोली खाय ऊपरसे पान-का रस पीवै और दो चार बीडा पान चाबे तो सब तरहकी बाई विषूचिका अरुचि मृगी यह सब जायँ दूध घी खाय ऊपरसे खट्टा मीठा तीताका पथ्य रखै.

अथ चिन्तामणि रस।

अजवाइन, जीरा, अजमोदा, काकडासींगी, असगन्ध यह सब दवा बराबर ले महीन बांटि १ माशे गरम पानीके साथ खाय तो सब तरहके वात जायँ श्वास कास जाय प्रलाप मन्दाग्नि तन्द्रा अरुचि जाय.

अथ विषमज्वरकी दवा।

पारा शोधा, गन्धक शोधा दोनोंकी कजली करके तब दवा छोडे दोनों दवाओंके बराबर हरताल छोडै तब इन सब दवाओके बराबर रांगा गलायके छोडै तब मदारके दूधमें सात दिन खरल करै पीछे सुखायके कांचकी आतसी सीसीमें दवा भर कपड़मिट्टी कर सुखायके बालुकायन्त्रमें १२ पहर पकावै तेज आंच देवै तब निकालके १ रत्ती भरि आधे पानमें खाय तो सब प्रकारका वातरोग जाय। उन्माद क्षीणता मन्दाग्नि कोढ व्रण विषमज्वर इन सबोको यह रस नाश कर देता है.

अथ नामर्दीका लेप ।

असगन्ध हरताल पारा यह तीनों दवा चारि चारि टंक लेवै मनशिल आठ टंक संभलखार सोहागा दो २ टंक लेवै सब दवाओको चूरण करके गौका घी सब दवाओंके बराबर लेवै एकमें मिलायके इन्द्रीपर मर्दन करै सब दोप मिटैं नामर्दी ॰ ॰.

अथ प्रदररोगकी दवा ।

मुलहटी ३ तोले नागकेसर ५ तोले राल २ तोले मिसरी १० तोले गायके दूधके सङ्ग सात माशे खाय तो चौदह प्रकारका प्रदररोग सोमरोग इत्यादि सबको नाश करै पेशाबका चूना परना करक सब दूर होय.

अथ प्रदररोगकी दवा ।

काकमाची कृष्णाको रविवारको लेकर पांच मिरच मिलाय पीसके पीवै तो नारीके प्रदर सोमरोगको नाशै तथा गर्भस्थानको शुद्ध करै पेट पीड़ाको नाशै ज्वरको जड़से निकाले भूखको लगावै यह जडी बहुत गुणकारी है.

अथ दांतका मंजन ।

चौकिया सोहागा भूंजा हुआ १ तोला मस्तंगी रोमी १ तोला अकरकरा १ तोला सुपारी १ तोला

हरे ६ मासे बहेडा १ तोला खैर १ तोला फिटकरी १ तोला हीराकशीश चन्दन सफेद २ तोले कपूर ६ मासे इन दवाओंको कूट कपडछान करके जामुनके रसमें दो दिन खरल करै महुवाके रसमें दो दिन खरल करै बबूरके रसमें दो दिन खरल करै तब १ तोला मुरदारशिंग १ तोला तमाकूका कोइला दोनो बूकिके ऊपरके मंजनमें मिलाय दांतमें मजन करै तो दांतका हिलना दांतका पिराना दांतका पानी लगना मुखके सर्व रोगोंको नाश करै यह मंजन दांतको वज्र बनाय देवै फिर जन्मतक नहीं हिलै कृमीको नाशै.

अथ छोटा मञ्जन।

अकरकरा, चूल्हेकी मिट्टी, फिटकिरी, हरैं, मुरदारशिंग पीसके कपडछान करके मंजन करै यह भी दांतकी पीडाको हरै.

अथ सर्वज्वरपर दवा।

त्रिफला १२ मासे त्रिकुटा १२ मासे,नीम४८मासे पांचो नोंन ४८ मासे अजवायन २० मासे सबको कूटि कपडछान करके बल विचारके गरम जलके साथ खावै तो सर्व ज्वरको नाशै ।

अथ पुनः सर्वज्वरपर गोली।

हरतार, पारा, गन्धक, चौकिया सुहागा,नीलाथोथा

ये समभाग लेकर खरल करके मिरच बराबर गोली बनायके खावै तो तनसे ज्वर जावै खट्टा मीठा तीता का पथ्य करै.

अथ ज्वरपर बूँटी।

काकजंघा जडपत्ता, समेत १ तोला और बारह गोल मिरच ले पानीमें पीसके रोज सबेरे पीवै तो विषमज्वर जीर्णज्वरको नाशै.

अथ चौथिया ज्वरकी दवा।

त्रिफला ७ मासे गायके दूधके सङ्ग पीसके नेमसे पीवै और सब वस्तुका परहेज रक्खे ऊपरसे ताम्बूलपत्र एक महीना खावै तो विषमज्वर जीर्णज्वर चौथिया जावै.

अथ ऊरुस्तम्भरोगकी दवा।

पीपर, सोंठ, गूगल, शिलाजीत इन दवाओंको बल विचारके दशमूलके काढाके साथ पिलावे तो ऊरुस्तम्भको नाशै.

अथ दूसरी दवा ऊरुस्तम्भकी।

त्रिफला कुटकी चाव पिपलामूल इनका चूर्ण समभाग शहदके साथ खावै ऊरुस्तम्भ रोग दूर होय पथ्यसे खावै.

अथ आमवातरोगकी दवा।

गिलोयका रस एरंडकी छाल देवदारु अमलतास चित्रक इनका काढा करके दिनमें तीन बार पीवै तो आमवात रोग जावै खट्टा मीठा तीताका पथ्य करे.

अथ आमवातकी दूसरी दवा।

बाल हर्रे ६ मासे गुड तीन तोले रेंडीका तेल पांच तोले मिलाके इतना एक मौताद है जो रोज खाय तो आमवात रोग जडसे जाय जो कुछ दिन सेवै तब भूख लागै शोथ दूर होय.

अथ गलित कोढकी दवा।

आमला २० टंक हरडेकी छाल २६ टंक बायबिडंग १६ टंक निसोत ४८टंक इन सब दवाओंको कूट कपडछान करिके दूना गुड मिलाय एक सुपारीके प्रमाण खावै ऊपरसे गरम पानी पीवै पथ्यसे रहै तो गलित कोढ़ दूर करै.

अथ सफेद कोढकी दवा।

टेशूबीज गुंजाके बीज नौसादर यह औषध चार चार मासे लेवे अफीम १६ मासे लेकर कूटि पीसि

नीमके रसमें खरल कारिके गोली बनाय रखै नीमके रसमें चटा पर लेप करै दूर होय.

पुनः दवा ।

आककी जड आंवलासार गन्धक हरताल कुटकी हलदी यह बराबर लेकर कूटि पीसिके गोमूत्रमें लेप करै तो चटा नाश होय.

पुनः दवा ।

चित्रक हरड हलदी तीनों बराबर पीसि भृंगराजके रसमें मिलाय लेप करै पीछे ऊपरसे लिशोड़ाके पत्तेका भृंगराजके रसमें खरल करै तब उस लेपपर चौदह दिनतक बांधै तो चटा दूर होय.

अथ क्षयीरोगकी दवा ।

अगर लौंग कपूर कमलगट्टा चन्दन जीरा उशीर इलायची मोथा जटामांसी तगर वंशलोचन अरूवारो पीपल कंकोल जायफल तज नागकेसर मिसरी सब दवा दो दो तोले लेवै मिसरी दवासे आधी लेवै सब चूरण करके बल विचारके खावै तो क्षयरोग दूर होय तृपाको नाशै अरुचिको दूर करै कंठरोग हियरोग कास हिचकी पीनसरोग अतीसार संग्रहणी प्रमेह गुल्मरोग इत्यादि सब रोग दूर होयँ । यह दवा खाने-

वाला रोगी खट्टा तीता मीठा सबका त्याग करै तब रोग दूर होय नहीं तो दवा खानेसे कुछ नही जैसे पानी पीयेते हो तैसे दवा जानो पथ्यसे दवा है.

अथ पुष्टिकरन दवा।

सोंठ तालमखाना इसबगोल स्याममूसली मुरुली सतावरी पीपल समभाग लेकर कूटि कपडछान करके इन दवाओंके बराबर मिसरी मिलाय अवटा दूध-में छोडके खावै तो परमेश्वरकी कृपासे शरीरका बल कमती न होय प्रमेह खांसी श्वास दूर होय थकावट शरीरमें आवे नहीं पथ्यसे रहै.

अथ कानकी पीडाकी दवा।

आकका पत्ता बनकपासका पत्ता और कारिआरी तीनों बराबर पीसके पोटलीसे गरम करि रस निकालि कानमें छोडनेसे कानकी पीडाका कृमि नाश होय कानका शूल बन्द होय.

अथ कानमें पीब बहनेकी दवा।

नीमकी पत्ती चिरायताकी पत्ती सहदेइयाकी पत्ती आककी पत्ती सेंधानोंन पानीमें पीसके रस निकाल-के कानमें छोडै तो कानका बहना बन्द हो पीडा सब दूर होय सही.

अथ आँखोंकी दवा।

घी रसौत सेन्धानोंन हीराकशीश शहद इन दवा-ओंको बराबर लेकर पीसि स्त्रीके दूधमें मिलायके आंखोंमें अंजन करै तो सबलवायु और आंखोंकी सब किसमकी पीडा दूर होय.

अथ नास लेनेकी दवा।

मिरच गुड सेन्धानोंन हींग केसर पानीमें पीसि नास लेनेसे सबलवायु दूर होय शिरपीडा आँखोंकी पीडा दूर होय.

अथ सबवायुपर खानेकी दवा।

मुलहटी ५ तोले पोस्ताका बीज ४ तोले जायफल २ तोले मिसरी १२ तोले सब मिलायके ३ मासे दवा एक तोला घृतमें मिलायके खावै तो सबल वायुरोग दूर होय शिर आंखोंकी पीडा नाशै.

अथ शिरलेपकी दवा।

नौसादर चूकि कच्चा नयनूमें मिलाय शिरपर मलै तो शिरकी पीडा दूर होय.

अथ प्रमेहरोगकी दवा।

असगन्ध बारियारीकी जड़ मुरुली मेंहदीकी पत्ती

मिर्चं पानीमें पीसिके पीवै तो प्रमेहरोगका नाश होय पथ्यसे खावै गरमको त्यागै.

अथ सुजाककी दवा।

गन्दा पीरोजाका सत ५ तोले धूप कच्ची शुद्ध ४ तोले इलायची २ तोले मुलहटी ५ तोले मिसरी १० तोले सब दवाओंको कूटि कपडछान करिके ७ मासे खावै ऊपरसे शीतल पानी पीवै तो बीस प्रकारका प्रमेह रोग जावै सुजाक कड़क पेशाव होना बन्द होय पेशाबके रास्ते रक्त गिरना अच्छा होय.

अथ आंखोंकी दवा।

सुरमा अच्छा २ तोले मोतीकी भस्म २ तोले कपूर ५ मासे फिटकरी १ तोला मिसरी २ तोले इन दवाओंको कूटि कपड़छान करिके घीकुमारीके रसमें खरल करै ५ दिन, काकमाचीके रसमें खरल करै ५ दिन, नींबूके रसमें खरल करै ५ दिन, तब निंबूके रसमें पाँच महीना रखि खरल करै तो अंजन देवै आँखोंका सब रोग इस अंजनसे जाय.

अथ पुष्टिकरन दवा।

स्याह मुसली सफेद मुसली मुरुली सोंठ लौंग पीपरि मिरच जायफल,जावित्री नागकेसर असगन्ध कम-

द्दा शतावरी लालचन्दन सफेद चंदन केसर सब ओंको पांच पांच तोले लेवै मिसरी पैंतालीस तोले सबको कूटि कपडछान करिके दो तोले खावै ऊप- अवटा दूध पीवै तो शरीर वज्रके समान हो शरीर- बल न घटै धातुकी कमी होवै नहीं.

अथ शरीरपुष्टि करनेका वर्णन ।

मनुष्यको चाहिये कि अपने शरीरको हररोज सेवा ोसाकसे पोसन करै तन्दुरुस्ती है तो सब है जो तन्दु- रुस्त नहीं है तो दुनियामें सब है कौन कामका, तन बना रहता है तो धन शोभता है तन बना है तो विद्या शोभती है तनसे बल होता है बलसे बुद्धि होतीहै बुद्धिसे सारा कार होता है जब तन है बल है बुद्धि है तो उस पुरुषके क्या कमती है यही जानो तन्दुरु- स्तीका उपाय करो.

अथ शिरपर लेपकी दवा ।

अरंड जड सोंठ अकास इन सबके बराबर बजरी सबको पीसके गायके दूधमे मिलायके शिरपर लेप करै या विना ज्वरवालेके शिरपर लेप करै तो सब प्रकारका शिर रोग नाश होय.

अथ शिरपीडाकी मालिश।

तिल्लीका तेल ४४ तोले नींबू २४ का रस, गुजराती इलायची ४ तोले, कपुर १ तोला पोस्ताका तेल ४ तोले, नौसादर २ तोले इन सब दवाओंको एक सीसीमें एक महीना रख देवै तब निकालके शिरपर मलै तो सबलवायु शिरपीडा दूर होय शिरकी गरमी-को नाशै शिरको तर करै.

अथ उदररोगकी दवा।

सनायपत्ती ७ तोले, बिसपैज २ तोले, सहत्रा ७ तोले, भांग ४ तोले, उसबा मगरबी ७ तोले, लाल चन्दन सफेद चन्दन ४ तोले, मिसरी १४ तोले सबको कूटि कपड छान करिके १ तोला शहदके साथ शामको खावै तो एक दस्त साफ होय पेटपीडा अच्छी होय भूख लगै.

अथ सर्वव्याधिपर तेल।

सोंठि९तोले, सुरती ९ तोले, पिपरी ९ तोले, भांग ९ तोले, हिंगु २ तोले, अफीम १ तोला, मिरच ४ तोले, लहशुन ४ तोले, आंवलासार गन्धक १ तोला सब दवाओको थोडा दरकचायके कड़वा तेल १ सेर और तिलोका तेल १ सेर सबको कडाहीमें छोडके मन्द अग्निसे चुरावे जब सब दवा जलजायँ तो तेल

रख देवै । इस तेलको छेलीके दूधमें मिलायके जहांपर दर्द होय मले बलकिन सब शरीरपर मालिश करै तो सब प्रकारके वातविकारोंको दूर करै सन्निपात-ज्वरको भी मालिश करनेसे गुण करै, और मालिश करै तो पोटलीमें बालू भरके अग्निपर तवा रखके सेंक देवै शीतसे बचारहै.

अथ वातपर दवा।

मेवडीकी जड २ मासे भर भरवाका बीज १ मासा नीमका बीज पानीमें पीसके पीवै पथ्यसे रहै नोंन न खाय तो सब वातरोग नाश होयँ.

अथ नामर्दीकी दवा।

सोंठ, लौंग, अकरकरा, तीनों दवाओंको कूटि कपड-छान करिके शहद मिलायके इन्द्रीपर एक महीना लेप करै शामको ऊपरसे बंगला पान बांधे तो इन्द्री दृढ होय.

पुनः दवा।

कपूर सुहागा पारा तीनों दवा बराबर लेकर खरल करिके गायके घृतमें मिलायके इन्द्रीपर पन्द्रह दिन मर्दन करै तो हतरस कर्मसे जो नस मारी गयी होय तो निश्चित मरद होय अजमायश की गई दवा है॥

पुनः दवा।

सोंठ पीपल असगन्ध इलायची सफेद मूसली सब दवाओंको बराबर भाग लेकर कूटि कपड़छान करि सबके समान मिसरी मिलायके १तोले दवा आधासेर भैंसका अवटाहुवा दूधमें मिलायके शामको सोवते वखतमे एक महीना खावै तो सब प्रकारकी नामरदी दूर होय शरीरका धातु पुष्ट होय सही.

पुनः दवा।

मुलहटी ८ तोले, सोठ ४ तोले, इलायची२ तोले, लौंग १ तोला, पीपरी ६ तोले यह दवा कूटि छानिके सबके समान मिसरी मिलायके ६ मासे यह दवा ३ तोले घीके संग सबेरे और शामको रोज खाय सोठ मिसरी मिलायके दूध पीवै तो शरीरको पुष्ट करै नामरदी जाय स्त्री पियार करै.

पुनः दवा।

शुद्ध आंवलासार गन्धक ५ तोले, इलायची ५ तोले, मिसरी १४ तोले, पिपरी २ तोले, केसर २ तोले मिलायके खरल करिके ५ मासे गायके दूधमें मिलायके खावै तो नामरदी जाय सही.

पुनः दवा ।

आंवलासार गन्धक १० तोले, संखिया शुद्ध २ तोले, सींगिया २ तोले, पीपरी५ तोले, लौंग ५ तोले, मालकांगनी ५ तोले, तिली १० तोले, चौकिया सुहागा इन दवाओंको १२ तोले गायके घीमें खरल करिके पातालीयंत्रसे तेल निकालके इन्द्रीपर थोरा थोरा मालिश करै वो हाथरस नामरदीवालाको बहुत गुण करे टूटी नसको जोडे सब किसमकी नामरदी जाय शरीरका दोष मिटै.

पुनः दवा ।

भेडीका दूध चौकिया सोहागा आंवलासार गंधक सुवरका तेल अच्छी वारंडी यह इन्द्रीपर रोज एक महीना तक मालिश करै चार दिन तक मलै तब दो दिन बीचमें अंतर देवे सब प्रकारका नामरद मरद होय.

पुनः दवा ।

अतवारके रोज असगन्धको पीपल मिलाय पानीमें पीस गायका दूध मिसरी मिलायके उमर देखके रोज सवेरे पीवे परहेजसे रहै तो सब प्रकारकी नामरदी जाय.

पुनः दवा।

तिलोंका तेल भेडीका दूध शरीरपर मलै तो नामरदी जाय दो महीना मरदन करे तो शरीरका खून बिगडा होय नस मारी होय तो दूर होय.

पुनः दवा।

केवांचके बीज १ सेर, इमिलीके बीज १ से इन दोनोंको पानीमें भिगोय देवै तब छिलके दूर क शिलपर पीसि सुखायके कूट कपडछान करके घ आधा सेरमे भूंजे तव दो सेर मिसरीकी चासनी का उसीमे अगलकी दवा मिलाय मोदक तीन ती तोलेका बनायके एक मोदक खावे ऊपरसे गायक अवटा दूध आधासेर रोज पीवे पथ्यसे खावे त निर्बल शरीर पुष्ट होय शरीरसे वल न घटै धा तुका विकार दूर होय नामरदी छूटे प्रमेह नाश हो खून शरीरमे बढै सही.

अथ मूत्ररोगकी दवा।

त्रिफला सोंठि गोखुरू खरहॅटीवीज इन दवाओंक एक एक तोले लेकर काढा करै रोज सवेरे पन्द्र दिन पीवै तो मूत्रदोष मिटिजाय.

अथ मूत्ररोगकी पुनः दवा ।

सफेद राल ५ तोले, मुलहटी २ तोले इलायची छोटी १ तोला, कपूर शुद्ध २मासे मिसरी९तोले सब दवाओंको कूटि कपड छान करिके ६ मासे खावे ऊपरसे शीतल जल पीवै गरम वस्तुका पथ्य करै तो पथरी मूत्रदोप कडक पेशाब होना इन्द्रीके रास्ते रक्त बहना मूत्राघात चिलिक होना सब अच्छे होयँ, यह दवा हजारों रोगियोंको देकर परीक्षा की है.

अथ मूत्ररोगकी पुनः दवा ।

महुवाकी छाल, बिहीदाना १ तोला, मिसरी ३तोले शामको पानीसे भिगोय देवै सबेरे शिलपर पीसि छानके पीवै तो मूत्र पथरी मूत्र कड़क होना अच्छा होय.

अथ बहुत मूत्र होय उसकी दवा ।

मिसरी ३ तोले, सोंठ ४ तोले, मिरच ३ तोले चूरण करिके ४ मासे घीके साथ खाय तो बहुत पेशाब होना बन्द होय.

अथ प्रमेह रोगकी दवा ।

बडकी छाल, महुवाकी छाल, गोखुरू, सफेद चन्दन, यह दवा छः छः मासे लेवै मिरच सात जलमें

पीसिके पीवै तो बीस प्रकारका प्रमेह रोग दूर होय पथ्यसे रहै.

अथ उपदंशरोगकी दवा।

सफेद कनइलकी जड २ मासे, भटकटैयाकी जड ४ मासे, मिरच पांच, पानीमें पीसिके पीवै खट्टा तीता मीठा न खाय नोंन छोड देवै चनाकी रोटी खाय तो उपदंशरोगी नीरोग होय.

अथ उपदंशकी पुनः दवा।

सत्यानाशीकी जड मिरच जलके साथ पीसि गायके दूध संग पीवै तो उपदंश रोग अच्छा होय पथ्यसे रहै चनाकी रोटी खाय। जातीफल २ टंक, गोखरू ३ टंक, मुसली दोनो ४ टंक, जायपत्री २ टंक, नागकेसर १टंक,तवाशीर १ टंक, मुण्डी ४ टंक, झाऊ ४ टंक इन दवाओंको कूटि कपड़छान करके खरलमें खरल करके एक टंककी गोली बनायके एक गोली शामको एक सबेरेको शहदसंग खाय तो अति बन्धेज होय नपुंसकता दूर होय शरीरमें धातु बढके पुष्टि होय बल कमती नही होय जिस स्त्रीके गर्भ न रहता होय तो उस पुरुषकी सोहबत करनेसे जरूरसे गर्भ रहै स्त्री पुरुषका दोष मिटै पथ्यसे खावै तब सही.

पुनः दवा ।

असगन्ध गोखरू शतावरी देवदारु सर्व दवाओंके बराबर मिसरी मिलाय कूटि कपड़छान करके स्त्री पुरुष दोनों जने पांच टंक नित्य खायँ ऊपरसे बच्छेवाली गायका दूध पीवै ऊपरसे गायका घी पीवै तो परमेश्वरकी कृपासे बांझ स्त्रीके गर्भ रहै.

पुनः दवा ।

सनके बीज अठारह,गायके दूधसंग पीसि पीवै तो स्त्रीको गर्भ रहै खट्टा तीता मीठाका परहेज रखै तब नहीं तो यह नहीं खाने योग्य है.

पुनः दवा ।

सहसमूली, त्रिजटा, स्याहजीरा, मोरसिखा, सब दवाओंको कूटि कपड़छान करिके गायके घृत और दूधसंग २१ दिन खाय तो ईश्वरकी कृपासे गर्भ रहै सही.

अथ कष्टी स्त्रीकी दवा ।

सरफोंकाकी जड लेकर स्त्रीकी कटिमें बांधे तो सुखसे बालक होय.

पुनः दवा।

बच, सेहुँडको बांटिके स्त्रीके नाभिपर लेप करे तो स्त्रीको बालक होय और मुंडीकी जड भी कटिपर बांधे तब सही.

अथ प्रदररोगकी दवा।

पुराने चावलोके धोवनसे बरियाराकी जड पत्ता पीसि गायके दूध घी मिसरी मिलायके खावै तो जरूरसे प्रदररोग नाशै.

अथ रोगीके शुद्ध करनेका बयान।

पहिले रोगीको स्नेह नरम भोजन देवै दो दिन तब अवटा दूधमें मिसरी मिलायके प्यावै तीन दिन तक रोगीका रोग दोष देखि बल विचारके तब वमन करावै दो दिनतक फिर जुलाब देवै तीन दिनतक नरम जुलाब देवै जिसमें तीन दस्त व चार दस्त होयँ जो रोगीका मादा साफ होजाय तब दूसरी दवा रोगके माफिक देवै जो मादा साफ न भया होय तो फिर कडी जुलाब देवै तब रोगीका रोग छूटिके शरीर नीरोग होय.

अथ वमन करनेकी दवा।

शुद्ध फिटकिरी और शुद्ध माजूफल इन दोनों

दवाओंके बराबर मिसरी मिलायके रोगीका रोग बल विचारके खवावै तो उदर साफ होय । पुन नींबूके पात एकसौ परवरका पात दस दोनोंका काढा करके पीवै बहुत उत्तम वमन होय । पुनः शुद्ध नीलाथोथा नींबूके रसमें खरल करके अग्निमें जलाया हुवा और शुद्ध फिटकिरी और कसौंजीका पात तीनों दवाओंको सम-भाग लेकर मिसरी मिलायके खावैं ऊपरसे गरम पानी पीवै तो बहुत वमन होय शरीरका सब विकार दूर होयँ सर्पका विष दूर होय कैसाभी सर्पने काटा होय इस दवाको कोई सर्पडंसवालेको पिलावे तो पर-मेश्वर चाहेंगे तो जहर पांच मिनटमें दूर होय दवा सैकड़ों दफे अजमाइस की हुई है.

अथ जुलाबकी दवा ।

सनाय पत्ती २ तोले. सौंफ २ तोले, काबुली हरड़ २ तोले, निसोत १ तोला, अमलतास २ तोले, गुल-कन्द ३ तोले, गायका दूध एक सेर पहिले सनाय सौंफ हरड़ निसोत थोड़ा दरकचायके दूधमें छोड़के शामको रख देवै सबेरको अग्निपर रखके चुरावै जब डेढ पाव रहिजाय तो उतारके छान लेवै और जब सनाय सौंफ इत्यादि दूधमें भिगोवै तब उसी घडी अमलतास तीन छटांक पानीमें भिगोय देवै सबेरे

छानके ऊपरकी दवामें मिलायके ऊपरसे गुलकन्द छोडके पीवै तो उदररोग, शूलरोग, कृमिरोग, वायु विकार मलविकार सब रोगोंका नाश करै.

अथ दूसरा जुलाब ।

निसोत ३ मासे, काला दाना ४ मासे, सनाय ५ मासे,मुनक्का ६मासे;मिसरी७मासे इन सब दवाओंको खरल करके खावै तो बहुत उत्तम जुलाब होय यह जुलाब सब महीनोमें देने लायक है.

अथ तीसरा जुलाब।

छोटी हरैं ५ तोले तीन पाव पानीमें चुरावै जब तीन छटांक रहिजाय तो ५ तोले गुड मिलायके खावै तो जुलाब होय सब रोग दूर होयँ भूख लागे आठ प्रकारके उदररोग अच्छे होयँ.

अथ संग्रहणीकी दवा ।

दोहा–सोठि वेल चित्रा धना, चाव बांटि करचूर ।
पानी तक्रके संगही, कारि संग्रहणी दूर ॥

पुनि।

दोहा–चूरण चित्रा मिर्चको, शहत तक्र कारि खाय ।
गुल्म पिलीहा उदर दुख,संग्रहणी मिटि जाय॥

पुनि।

दोहा–बेल इन्द्रयव मोचरस, मोथा सम घृत खाय।
अतीसार संग्रहणि अरु,रुधिर आँव मिटिजाय॥

पुनि।

दोहा–छालि कुड़ेकी इन्द्रयव, कुटकी पाठा लाय।
मोथा बेल रसौर पुनि, धायफूल लै आय॥
सोंठ अतीस जु पीसिके, सब सम बस्तरछान।
चांवल धोवनसों सहत, मिले दीजिये खान॥
अर्श गुदाकी पीड सब, संग्रहणी अतिसार।
या औषधिके खात ही, इतने रोग निवार॥

अथ कोढकी दवा।

दोहा–पीपल सरसों तेल अरु, गाय आक पुनि दूध।
गायघीउ ये चारिऊ, पाव पाव भरि सूध॥
सैंधव नोन सुहाग लै, अरु हरताल मँगाय॥
टंक टंक ये तोलि करि, दीजै सबै मिलाय॥
पानीमधि मर्दन करै, दीजै आँख बचाय।
कोढ़ अठारह और हू, रक्त विकार नशाय॥

पुनि।

दोहा–श्वेत आक जड़ छालि ले, अद्रकके रस गारि।
गोली घुघुचीभरि भखे, छप्पन रोज विचारि॥

पुनि।

दोहा-पथ्य अलोनो दीजिये, गेहूँ चावल तासु।
और बस्तु सबही तजैं, कोढ़ अठारह नासु॥

पुनि।

दोहा-मिरचैं अरु सिन्दूर पुनि, महिषी घृत संयोग।
मथिकै लेपन कीजिये, नाशै पामा रोग॥

पुनि।

दोहा-नीलाथोथा बावची, गन्धक हरद मिलाय।
दूनी सज्जी चोख ले, कटुक तेलमे पाय॥
करै उबटनो अंगमें, महिषी गोबर नाय।
कंडू नाना भांतिकी, या औषधिते जाय॥

पुनि।

दोहा-मनसिल आंवाहरद ले, बकुची चोख मँगाय।
गन्धक थूथो ल्याय सम,चूरण पीसि बनाय॥

अथ उदररोगकी दवा।

दोहा-जवाखार अरु कूट वच, चित्रक जीरो लेउ।
अजमोदा दात्यूनि ले, हिंगु चाव पुनि देउ॥
तीनि नोंन साजी बहुरि,पाढ सोंठि पिसवाय।
ताते जल संग खाइये, उदररोग सब जाय॥

पुनि।

दोहा-जवाखार सेंधव त्रिकुट, हींग सहित पिसवाय।
बीजपूर सरसो-सरस, खातहि पिलही जाय॥

अथ मूत्ररोगकी दवा ।

दोहा-बाँसा अरु एरंड लै, और लायची आनि ।
प्रात पिये दधिसंग तो, मूत्रकृच्छ्रकी हानि ॥

पुनि ।

दोहा-क्वाथ जु गोखुरु बीजको, जवाखारयुत लेय ।
मूत्रकृच्छ्र अति जो रहै, ताहि दूरि करिदेय ॥

अथ अर्शरोगकी दवा ।

दोहा-लै बांदा जु बबूरको, कटिसों बांधै कोय ।
अर्शरोग बहुदिवसको, जाय बहुरि नहिं होय ॥

पुनि दवा ।

चौ०-सतवासोंठरुदसवाआन।चतुर्गुणा कूपोदक ठान॥
हरड छील लै सूंठप्रमान।गुड आधा मन लीजै जान॥
गाडै भूमि पत्रको पाई । दिवस चतुर्दश तहां धराई॥
बहुरि काढिकै लेहु चुआई।सिद्ध होयतब याको खाई
मृगमद माशे दोय सुआन।सुगन्ध जलभीकह्यो मिलान
दोहा-अरसरोग बहुदिवसको, षटप्रकारको जाइ ।
ताते ढील न कीजिये, यहि पीजिये बनाइ ॥

पुनि दवा ।

दोहा-कुडा सोंठ गजकेसर, तीनों पीसो जानि ।
पथ्य नेमसे पीयही, रक्तबवासिर हानि ॥

अथ प्रमेहरोगकी दवा ।

दोहा–त्रिफला मोथा दारिवा, निशा धानकी खील ।
याको काढो दीजिये, हरदी चूरण मील ॥
मिटिहैं रोग प्रमेह सब, पीवत पलमें जाय ।
पथ्य रहै जो रोगिया, खट्टी वस्तु न खाय ॥

पुनि प्रमेहरोगकी दवा ।

दोहा–कूटि आंवले काढि रस, मधु अरु हरदि मिलाय ।
मिटै बीस परमेह दुख, यह थोरे दिन खाय ॥

पुनि दवा ।

दोहा–शहत संग रस गुरचको, खाय प्रात दिन सात ।
मिटै बीस परमेह दुख, नर सुख पावे गात ॥

पुनि दवा ।

दोहा–त्रिफला चूरण करि सरस, शहत संग नर चाट ।
तौ नर बीस प्रमेहकी, व्यथा बेगि ही काट ॥

पुनि दवा ।

दोहा–रससेमरकी छालिको, हर्र सहित जो खाय ।
वा तनु बीस प्रमेहकी, व्यथा बेगि मिटिजाय ॥

पुनि दवा ।

दोहा–मुँहमूंदी दाडिमकली, खांड खेर पुनि श्वेत ।
यह चूरण परमेहको, खात विदा करिदेत ।

पुनि दवा।

दोहा–बड़ी लायची खांड सम, चूरण कर्ष प्रमान।
दूध भात भोजन करै, तौ परमेह परान॥

पुनि दवा।

दोहा–शंखाहूली लायची, शिलाजीत पुनि खांड।
खातनि यह चूरण करै, सब प्रमेहको भांड।

अथ अर्शरोगकी दवा।

दोहा–सज्जी हींग निबोलिको, और रसोन मँगाय।
सब समान गुड डारिकै, पीसै सबै मिलाय॥
प्रातकाल संध्या समै, दो मासाभरि खाय।
अरसरोग अरु वायु सब, दिन इकइसमें जाय॥

अथ अतीसारपर लेप।

दोहा–आमभिंगी अरु जायफल, कुड़ा अफीम मँगाय।
लेपै जलघिसि नाभिपर, अतीसार थमजाय॥

पुनः दवा।

दोहा–बांटि अतीस अफीम सम, जलयुत नाभिलगाय।
अतीसार या लेपते, बेगिःबिदा होजाय॥

पुनः दवा अर्शरोगकी।

दोहा–पैसाभरि ले लायची, तज दुइ पैसा डारि।
पत्रज पैसा तीनिभरि, गजकेसरि पुनि चारि॥

मिरच पांच पैसाभरी, पीपरि छहभरि आनि।
सोंठि सात पैसाभरी, बांटि औषधै छानि॥
सब सम मिश्री डारिकै, देइ रोगियै खान।
अरस अरुचि हियरोग पुनि, गुल्मशूलकी हान॥

पुनः अर्शरोगकी दवा।

दोहा—सैंधव अरु दधि नीरमें, बांटि बीज देवदारु।
गुद अंकुरपै लेप दै, अर्शरोग निरवारु॥

अथ अजीर्णरोगकी दवा।

दोहा—जवाखार सम सोंठि लै, प्रात घीउसो खाय।
भूख लगे अति रुचि बढै, अन्न तुरत पचिजाय॥

पुनः दवा।

दोहा—अभया सोचर सोठि पुनि, पीपरि बायविडङ्ग।
हिंगु शतावरि लीजिये, अरु अजमोदा सङ्ग॥
मोथा डारि मजीठ पुनि, करि चूरण नित खाय।
शीतल जलसो टङ्क दो, अन्न तुरत पचिजाय॥

पुनः दवा।

दोहा—मिश्री आधा सेर ले, मिर्च टङ्क दस आन।
पुनर्नवाकी जड़ कही, टङ्क पचास प्रमान॥
पीसि इन्हे चूरण करे, पैसाभरि नित खाय।
भूख लगे अरु रुचि बढे, अग्नि कामरस आय॥

अथ आँखकी दवा ।

दोहा–मिंगी बहेड़े आमकी, जल घिसि अंजन देय ।
निशि अंधाके रोग को, कै दधि मिर्च हरेय ॥

पुनः दवा ।

दोहा–मिरच मिंगी हिगोटकी, चूरण सम करि लेय ।
भॅंगराको रस काढिकै, तीनि भावना देय ॥
मास एक अञ्जन करै, कण्डू मूर्च्छा जाय ।
माथा वायु बिच्छू सरप, इनको जहर मिटाय॥
निशि अंधो फूली तिमिर, अरु कांवरिबिनशाय।
नयनरोग सब हरणको, यह अञ्जन सुखदाय ॥

अथ कानरोगकी दवा ।

दोहा–आकपत्र तिलपत्र पुनि, लहसुन घृत सब सङ्ग ।
मींजि निचोरै कानमें, पीर बधिरता भङ्ग ॥

पुनः दवा ।

दोहा–आकपत्र लहसुन मिले, बांटि काढि रस लेय ॥
तातो डारै कानमें, पीर बिदा करि देय ॥

पुनः दवा ।

दोहा–तुम्बारि, शुण्ठी हिंगुसो, बांटै सरसों तेल ।
डारि बधिरता शूलदुग्द, हरे शब्द अनमेल ॥

पुनः दवा।

दोहा–गुड गूगल बच हिंगु पुनि, सैंधव सोंचर आनि।
डारि निबरस खरलिये, नीको बहिरो कानि॥

अथ नाकरोगकी दवा।

दोहा–कुरा कलौंजी पीपरै, बच लै सरिस बॅटाय।
पुटरी सूंघै जो सदा, तौ पीनस मिटिजाय॥

पुनः दवा।

दोहा–पाठ मुलहठी दो हरड, पीपरि जैती पात।
अरु दात्यूनि मॅगायकरि, बांटि छानि लै तात॥
चुरै जु तिल्ली तेलमें, नास लेत नित जास।
या विधिसों पीनस तबै, तनते जात निरास॥

पुनः दवा।

दोहा–शुण्ठी गुड पिपरी मिरच,करि गोली नित खाय।
शीशपीर पीनस दुख, सो हरिजाय बिलाय॥

अथ मुखरोगकी दवा।

दोहा–तवाखीर एलायची, माखन खयर मिलाय।
मथि लेपै मुखके विषे, सब पकिबो मिटिजाय॥

पुनः दवा।

दोहा–राल नैनुघृत डारिकै, गुड मिलि लेय बनाय।
ओठ दरकिबो कठिनता, मुखपकिबो मिटिजाय

पुनः दवा।

दोहा-कारो जीरो इन्द्रयव, कूटि तीन दिन पीसि।
वदनपाक दुर्गन्धि व्रण, दूर करे यह मीसि॥

अथ दांतरोगकी दवा।

दोहा-थूथो एला फिटकरी, खैर जु सम बँटवाय।
चौदह दिन दंतनि मलै, बहुत पीर मिटिजाय॥

पुनः दवा।

दोहा-सरसों सैन्धव लोध बच, जलसँग बांटि बनाय।
वदन प्रात नित लेपिये, कीलारोग पराय॥

अथ कामलारोगकी दवा।

दोहा-त्रिफला कटू चिरायतो, वांसा नीम गिलोय।
या काढ़ेके पियत ही, नाश पाण्डुको होय॥

पुनः दवा।

दोहा-त्रिफला रजनी आमले, लोह चून घृत लेय।
शहद सङ्गके खात ही, कमल पाण्डु हरलेय॥

पुनः दवा।

दोहा-दूधी छोटी आनिके, पीसे मिर्चं मिलाय।
गायदूध सङ्ग पिवत ही, कमलरोग सब जाय॥

अथ तापतिल्लीकी दवा।

दोहा–हुरहुर अरु सरफोंक जड़, पीसैं मिर्च मिलाय।
पानीके संग पिबतही, तिल्लीरोग बिलाय॥

अथ सबलवायुकी दवा।

दोहा–जीरा काही फिटकिरी, त्रिफला सोवा ल्याय।
रसवत हालो हलद पुनि, तामहँ लोध मिलाय॥
ये औषधि सम आनिकै, करहु पोटली पीसि।
सबलवायुको नाशिकै, नयननि निर्म्मल दीसि।

अथ नहरुवाकी दवा।

दोहा– गाय मूत्रसों पीसिकै, बीज बबूर लगाय।
रोग नहरुवा शोथ पुनि, पीडा पीसि नशाय॥

अथ शिररोगकी दवा।

दोहा–मृगमद मिगी जु अंडकी, वांटि नासु यह लेय।
अधशीशी बहु दिवसकी, ताहि बिदा करिदेय॥

पुनः दवा।

दोहा–बच मुलहेटी सारिवा, कूट पीपरै आनि।
कांजीसों लेपन करै, अर्द्धशीश दुख हानि॥

पुनः।

दोहा–मिरच निबोली सम करो, नीबू रस पिसवाय॥
अंजन कीजै नयनमें, अर्द्धशिरो गद जाय॥

पुनः ।

दोहा–नास दीजिये घीउमें, सैंधव नोंन पिसाय ।
अर्द्धशीशकी पीर अति, या औषधिते जाय ॥

पुनः ।

दोहा–मिश्री शीतल नीरसों, घोरि पियावै कोय ।
आधाशीशी पीर पुनि, ताको कबहुं न होय ॥

पुनः ।

दोहा–छड़ बच मोथा रासना, कूट सु अंड मिलाय ।
तप्त नीर सँग लेपिये, कफ शिरपीडा जाय ॥

पुनः ।

दोहा–जड़ एरंडकी कायफल, कूट मिर्च जलसंग ।
तातो करि शिर लेपिये, दुख त्रिदोष कर भंग ॥

पुनः ।

दोहा–चन्दन शिवा कचूर लै, हाऊवेर उशीर ।
दूब कमलके बीज सम, लेपत नाशै पीर ॥

अथ आंखकी दवा।

दोहा–त्रिफला चूरण शहद घृत, नयन रोगको खाय ।
कै जल पीवै नाकसो, अति दृग ज्योति बढाय ॥

पुनः ।

दोहा-सोठ नीमके पत्र पुनि, सैंधव जलमें बांटि ।
तातो करि दृग लेपिये, सब पीड़ाको डांटि ॥

पुनः ।

दोहा-सैंधव गेरू फिटिकिरी, अभया जलमहँ पीस ।
नयनन लेपत ही तवै, सबै रोग करि खीस ॥

पुनः ।

दोहा-लोध लाख त्रिफला बहुरि, पीपरि सैंधव नौन।
भँगरा जड़ रस आंजि दृग, फूली रखिहै कौन॥

पुनः ।

दोहा-हरड़ मिर्च पीपरि कही, किरमालाके बीज ।
मधु घृत सों अंजन करै, नाश फूलिके कीज ॥

अथ मृगीरोगकी दवा ।

दोहा-ब्राह्मी सोंठि चिरायता, पुष्करमूल कचूर ।
दारुहलद सुरदारु वच, मोथा पीपलमूर ॥
अभया रोहिप सिरस फल,कूट क्वाथ सम जानि।
अपस्मार उन्माद भ्रम, रोग विसूची हानि ॥

पुनः ।

दोहा—सहत संग बच लीजिये, खुरासान दो टंक ।
दूध भात पथ दीजिये, मृगी रहै नहि अंक ॥

पुनः ।

दोहा—सेहुँड़मैं मिरचै धरै, दिन इकईस बिचारि ।
नास दीजिये नीरसों, मृगीरोगको टारि ॥

पुनः ।

दोहा—बच रस ब्राह्मी कूटि सम, शंखाहूली संग ।
गाय घीउसँग साधिये, मृगी रोगको भंग ॥

अथ तृषारोगकी दवा ।

दोहा—धना खील मिश्री बहुरि, दाखसमेत खजूरि ।
शर्बत करिकै पीजिये, तृषा जाइहै दूरि ॥

पुनः ।

दोहा—शिलाजीत मिश्री बहुरि, बडी लायची कूठ ।
वड़की जड सुंठी सहत, खात तृषा तन छूठ ॥

अथ शूलरोगकी दवा

दोहा—पीपल सोंठि हरीतकी, सोंचर तिबी समान ।
तप्त नीरसों पीजिये, नाश शूलको जान ॥

अथ उन्माद रोगपर दवा ।

दोहा–कूट लौग असगन्ध पुनि, दोऊ जीरो आनि ।
त्रिफला अरु अजमोद लै, शंखाहूली जानि ॥
पाढ आनि चूरण करै, ता समान बच लेय ।
ब्रह्म नोनिया काढि रस, तीनि भावना देय ॥
बहुरि शहद घृत भावना, दै चूरण धरि राखि।
पैसा भरि ले प्रात ही, उठिकै चूरण चाखि॥
साठि दिवसके नियमते, बढै बुद्धि उर धीर ।
सागर सुत यहि नाम है, हरि उन्मादकी पीर॥
उलटी बुधि नाशै बहुरि,अपस्मार मिटिजाय ।
चतुरानन भाष्यो यहै,जग जीवन हित पाय ॥

पुनः दवा ।

दोहा–गूगल ग्रंथिक हरमली, नील वस्त्रमें पाय ।
धूप जिन्द देखत भजै, अरु उन्माद विलाय॥

पुनः दवा ।

दोहा–कंजा पत्र पलाशके, देवदारु बच आनि ।
मालकांगनी हलद दो, कांजा पत्र बखानि ॥
त्रिकुटा और मजीठ पुनि, निरबीसा लै हींग ।
बांटि छानिके मूत्रमें, छानि छागके रींग ॥

मन्त्र यन्त्र अरु तंत्र ही, भूत प्रेत उन्माद ।
और डाकिनी शाकिनी, मेटहि धूप उपाद ॥

अथ सुन्नबायकी दवा ।

दोहा–सेमरबीजा बांटि जल, पैसाभरि पी जाय ।
दोष वर्ण नाशै तुरत, सुन्न बेगि नशि जाय ॥

अथ दादकी दवा ।

दोहा–माजूफल गन्धक मिलै, जलसों पीसि लगाय।
कै चूना गन्धक कहो, दाद रोग बिनशाय ॥

पुनः दवा ।

दोहा–जव सरसो तिल तीनिके, न्यारे खार बनाय ।
बकुची बीज पवाँरके, बायबिड़ंग मँगाय ॥
औ माठा दे गायको, तीनि दिना सँग वाय ।
सात दिवस लगि लेपिये,औषधि मिही बँटाय।
और सर्व संयम करै, पामा आदिक जाय ।
वैद्यक विद्या यह कहो, सर्व दाद बिनशाय ॥

अथ व्रण–घावपर मलहम ।

चौपाई ॥

खैर पापरी तोला एक । लेप सुपारी चिकनी टेक ॥
रूमि मस्तँगी मुर्दाशंग । हरिया थूथो फुलै निशंग ॥

बांटि छानिकै औषधि करै। मैन एक तोला लै धरै॥
पहिले तेलमें थूथो डारि। ता पीछे सब औषधि डारि॥
जो सु होय नीके करि लेप। खता होय पुनि ऊपर देय॥
व्रण जु अनेक जातिके होयँ। मल्हम लगाये नीके होयँ॥

अथ कोढपर दवा।

चौपाई।

अर्कमूल गन्धक हर्तार। कुटकी रजनी लेउ सँभार॥
गऊमूत्र लेपत दिन सात। श्वेत कुष्टको होवै घात॥

अथ पुनि दवा।

दोहा–खैर आमरे क्वाथ करि, डारि बावची दोय।
एक मासमें सब मिटैं, श्वेत दाग तनु लोय॥

अथ कंठावरोधकी दवा।

चौपाई।

सैंधा नोन कूठको आन। और बावची बच खुरसान॥
सोंठि भंगरा पीपर लीजे। मिरच दक्षिणी सब समकीजै
पीस सहतसों बहुदिन खाय। कंठारोध रोग मिटजाय॥

अथ घंटीरोगकी दवा।

दोहा–बोल आनिके नीरसों, पीसि कानमें पाय।
सिद्ध योग पंडित कहैं, घंटी रोग नशाय॥

अथ कंठरोगकी दवा।

दोहा–तूत जटाके पत्रके, काढै रस जो कोय।
हरै गँडूषा बहुत दिन,खुलै कंठ सुख होय॥

अथ मुखझांईकी दवा।

दोहा–फूल तिलनको आनिकै, अथवा पेठे फूल।
मुखपर मर्दन कीजिये, झांई रहै न मूल॥

अथ नामर्दीकी दवा।

दोहा–ब्रह्मडंडी अरु मोचरस, हालों गुखुरू ल्याय।
मालकांगनी ये सबै, दश दश पैसा भाय॥
पैसा पांच प्रमाण ही, ताल बुखारे बीज।
आधासेरै खांड पुनि, चूरण एकत कीज॥
आधसेर पय गायको, लीजै प्रात मँगाय।
चूरण पैसा एक भरि, मेलि बेगि पी जाय॥
मण्डल भरिके खाय नित,नामर्दी मिटि जाय।
खट्टा तीता पथ्य कर, लिखिके दिहा बताय॥

अथ बिवाई रोगकी दवा।

दोहा–पीसि राल तिल तेलमें, पग मरदन कर जान।
ब्याई ताके ना रहै, वैद्यक कहेउ बखान॥

अथ खांसीकी दवा।

दोहा–ले अजवायन जायफल, अकरकरा मँगवाय।
कनकबीज आफू सरस, जवाखारको ल्याय॥
बांटि यहे चूरण करे, कनक फलनि भरि देय।
गेहूं चून लपेटिके, अग्निमांझ धरि देय॥
काढि ताहि बुकनी करे, मासे भरि नित खाय।
महाप्रबल खांसी मिटे, ब्यारो सबै तजाय॥

अथ वातज्वर लक्षण।

दोहा–चित्तभ्रम अरु ताप तनु, पीडित होय अधीर।
देही शीतल होय पुनि, नींद न आवै बीर॥
टूटै तन आलस बहुरि, तालू जरै अचेत।
वचन कठिन रोवै हँसै, बाद करै बिनुहेत॥
लेय जम्हाई तन कँपै, चलै ताप उर शूल।
पेट पीर फूलै बहुरि, नीद नही गति शूल॥
चौंकि उठै जिह्वा कठिन, लकरीसी ऐंठाय।
लगै थरहरा देहमें, ताहि जानि ज्वरवायु॥

अथ पित्तज्वर लक्षण।

दोहा–मुख कडुवो तनु ताप बहु, व्याकुल देही होय।
तृषा बहुत परलाप बहु, नींद न आवै कोय॥

नयन जरै अरु लाल पुनि, सूखै अधर कठोर।
रक्त नील पीरो वदन, पलभा तीक्षण छोर ॥
कान भनक लागै बहुत, चहै खटाई खान।
मूत्र पीत अरु गरम पुनि,कफ मुख कड़वो जान॥
कर पद तप्त हियो जरै, ये लक्षण लखि लेय।
पित्तहिको यों जानिकै, पाछे औषध देय ॥

अथ कफज्वर लक्षण।

दोहा—वदन लाल पुनि लाग दृग, आलस होवै श्वास।
वमन करै लघु नींद पुनि, बेदिल नयन उदास॥
जरै शीश खांसी बहुरि, जीभ करेरी जानि।
करिहां पीर पिराय अति,गलगेही जड़ मानि॥
अति अभूख मीठो वदन, मीठर गरो खुजाय।
हिम भारी अरु पीठि पुनि,नासा स्वर मुँदिजाय।
भूख प्यास थोरी लगै, मन्दी अग्नि शरीर।
देह वदन फीको लगै, यों कफ जानहु चीर॥
केकी हंस कपोतकी, चलै नाडिका बाल।
तौ कफको यों जानियो, परखो वैद्य विशाल॥

अथ वातज्वरकी दवा।

पिठवन सोठि उशीर सरवन गोखुरू कुटकी गिलोय किरात मोथा कास्मरी पिपरामूल इन

वाओंको डेढडेढ तोला कूटिके तीन पाव पानीमें काढा करै जब तीन छटांक रहिजाय तो छानके पीवै तो वातज्वर जाय.

अथ पित्तज्वरकी दवा।

चिरायता पीपरि बांसा प्रियंगु कूट जवांसा मिसरी इन सब दवाओको बराबर दो दो तोले लेकर ढाईपाव पानीमे काढा करै. जब आधापाव रहिजाय तो छानके सबेरे पीवै तो पित्तज्वर जाय.

अथ कफज्वरकी दवा।

चाव मिरच तालीस इन दवाओंको एक एक भाग लेवै, पीपला मूल २ भाग, सोठ ३ भाग, पीपरी ४ भाग, इलायची ५ भाग, तज ६ भाग, पत्रज ७ भाग इन सब दवाओको कूटि कपड छान करिके चूरण करै सब चूरणके बराबर मिसरी मिलायके सुपारी बराबर गोली बनायके एक शाम एक सबेरेको खावै तो कफज्वरका नाश होय.

अथ मलज्वरकी दवा।

किरमालो मोथा हर्रै कुटकी पीपरामूल इन दवाओंको सम भाग लेवै थोडी कूटके रोगीका बल देखके क्राथ करि पिलावै तो मलज्वर जाय.

अथ अजीर्णज्वरकी दवा।

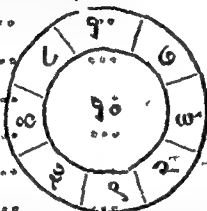
सोंचर हर्रै अजमोदा सोंठि पीपरी चूरण करिके खाय तो अजीर्णज्वर जाय.

अथ सर्वज्वरकी दवा।

सोंठ पीपरी गिलोय मिरच दोनों चन्दन अतीस पीपरामूल इन सब दवाओंको तीन तीन तोले लेवै सब दवाओके बरावर चिरायता लेवै कूटि कपडछान करके इस चूरणको रोगीका रोग दोष बल विचारके देवै, रोगीका रोग जैसा होय तैसाअनुपान बदलके देवै शीतज्वरमें गरम अनुपान देवै दाह गरम ज्वरमें शीत अनुपान देवै जैसा ज्वर होय वैसा तजबीजके देवै तो इस चूरणसे किसी प्रकारका ज्वर होय तो नाश हो जाय और पथ्यसे खावै खट्टा तीता मीठा त्याग करै.

अथ यह यन्त्र बीसा अष्टदलकमल है ॥

इस यन्त्र बीसाको जगाय सिद्ध करके अपने पास रखनेसे सर्व कार्यसिद्धि होती है ॥ १ ॥



यह यन्त्र-दोहा-नागबेलिके पत्रपे, लिखि करि देय खवाय ॥ जाय सासुरे सो त्रिया, सब उचाट मिटि जाय ॥ २ ॥

ह्री	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्री	ह्री	ह्री	ह्री
ह्रीं	ह्री	ह्री	ह्रीं	ह्री
ह्रीं	ह्री	ह्री	ह्रीं	ह्री
ह्री	ह्री	ह्री	ह्री	ह्री

जाके कोठा बीचमें, लिखि रोगीको नाम । महा कठिन तो ताप हो, जाय आपने धाम ॥ ३ ॥

कं	ठः	सें	नः
रीः	जूः	डा	दाः
वै	पै	कः	छः

इति श्रीमुन्शी भगवानप्रसादका शिष्य भगत भगवानदास विरचित वैद्यक रसराजमहोदधि भाषा तीसरा भाग समाप्त ।

पता-खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बम्बई.

नीचेके भस्मरस हमारे पास तैयार हैं.

१	सोना रस १ तोले ...	... ३०) रुपैया.
२	चान्दीरस १ तोले ...	... ३) रुपैया.
३	तांमा रस १ तोले ...	... १) रुपैया.
४	लोहासार रस १ तोले ...	... १) रुपैया.
५	बंगरस १ तोले ...	... १।) रुपैया.
६	शीशारस १ तोले ...	... १) रुपैया.
७	जस्तारस १ तोले ...	... ।।।) आना.
८	पारारस १ तोले ...	... १०) रुपैया.
९	अभ्रकरस १००० पुटी १ तोले ...	१२) रुपैया.
१०	मूँगारस १ तोले ...	... २) रुपैया.
११	मोती रस १ तोले ...	... २) रुपैया.

॥ श्रीः ॥

रसराजमहोदधि ।



(चौथा भाग)

श्रीगौरीशंकर त्रिपाठी वैद्यशास्त्री निर्मित ।



वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणयन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९७६, शके १८४१.

श्वर" स्टीम्-प्रेसमें उपस्थित होकर संशोधन किया, मैंने अपनी प्रसन्नतासे इस पुस्तकके सर्वाधिकार गौ ब्राह्मणहितकारी परमोदार धर्मरत्न सेठ खेमराजजी श्रीकृष्णदासजी प्रोप्राइटर "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस बम्बईको समर्पण किया। विद्वान् तथा न्यायी पुरुषोंसे विनय है कि, यदि इसमें कोई अशुद्धियां देखें वह कृपया मुझे सूचित करें ताकिआगामी मुद्रणमें दुरुस्त कर दीजावें।

ग्रन्थकर्ता-

श्रीगौरीशंकर त्रिपाठी वैद्यशास्त्री

जि. रायपूर. सी. पी.

॥ श्रीः ॥

अथ रसराजमहोदधिकी विषयानुक्रमणिका।



इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता।





॥ श्रीः ॥

रसराजमहोदधि।

चौथा भाग ४.



ज्वर कई प्रकारका है उसका विस्तार बहुत भारी है जो आज तक कहीं किसी ग्रंथमें छपा नहीं है परन्तु उनमें वातका पित्तका कफका वातपित्तका वातकफ-का पित्तकफका सन्निपातका चोट लगनेका कामका क्रोधका आदि कहांतक वर्णन करेंगे यों तो केवल सन्निपातहीका ज्वर ५२ प्रकारका है-इसलिये इस छोटेसे ग्रंथमें उनका वर्णन नही कर सकते। प्रथम नवीन ज्वरवाला इतने कर्मोंको त्याग देवे सो लिखते है। स्नान करना, उबटना लगाना, ठंडा पानी पीना, दिनमें सोना, कसरत करना, मैथुन करना, क्रोध करना, अधिक भोजन करना, दही खाना, दूध खाना, खटाई खाना, मिठाई खाना और बादी वस्तुयें, पथ्यसे चलता रहे गर्म पानी पीता रहे तोभी कष्टका नाश हो जायगा।

श्लोक-विनापि भेषजैर्व्याधिः पथ्यादेव निवर्त्तते।
न तु पथ्यविहीनस्य भेषजानां शतैरपि ॥ १ ॥

(अर्थ) पथ्य (परहेज) से चलतारहे और औषधी

भी करे तबभी रोग दूर होजायगा और अगरपथ्य रहेज कुछ न किया तो सैकड़ों दवाइयां अथवा ौकड़ों वैद्योंसेभी कुछ न होगा। वातज्वर ७ दिनमें और पेत्तज्वर १० दिनमें और कफज्वर १२ दिनमें पकता ;, ज्वरमें इतनी वस्तुयें खाना चाहिये सो लिखतेहैं। शाल चावल, पुरानेचावल, सांठीके चावल, धानकी खील व लाई, मूग, मसूर, चना, मोठकी दाल और परवल, करेला; ककोडा, पित्तपापडा; गोभी, मूली, गुर्चके पत्ते, तुरई, आलू इनका साग और जौ व गेहूँकी रोटी। नवीन ज्वरमें दूध खाना विषके तुल्यहै और पुराने ज्वरमें दूध पीना अमृतके समानहै। अगर ज्वरमें नींद जातीरही हो तो भांग १ मासाको भूनकर शहद मासा २ के साथ मिलाकर चाटे तो निद्रा आवे अथवा मकोय की जड़को सूतमें बांधकर शिरमें बांधे तो निद्रा आवे अथवा पकाहुआ बिजौरा नींबू १ सिरहाने रक्खे तो निद्रा आवे।

गुर्च और आमला चार चार मासे लेकर पावभर पानीमें काढा करे जब एक छटांक रहजावे तब ठंडाकर पीवेतो पित्तज्वर दूर हो। अथवा पित्तपापड़ा तोले १॥ लेकर पावभर पानीमेंकाढाकरेजब एक छटांक रहे तब पीवे तो पित्तज्वर दूर हो और दाह और प्यास और श्रमभी मिटे। अथवा गुर्च मासे ६ को मिट्टीके कोरे

बर्त्तनमें रातको एक छटांक पानीमें भिगोदेवे सबेरे बांटकर कपडेमें छान लेवे और तोला१ शक्कर डालकर पीवे तो पित्तज्वर, दाह, शोष दूर होवे, अथवा धनियां मासे ६ को उक्त प्रकारसे भिगोकर पीवे तो पित्तज्वर और अन्तर्दाह दूर हों अथवा अडूसा मासे ६ को उक्त प्रकारसे भिगोकर पीवे तो पित्तज्वर व खांसी और मुख वा नाकसे खून गिरना बन्द होवे, अथवा पलाश व बेरी व नीम इनमेंसे किसीके कोमल पत्ते लेकर खट्टे मट्ठेमें पीसकर पेट और छाती पर लेप करे तो अन्तर्दाह शीघ्र ही दूर होवै अथवा तांबे व कांसेके बर्त्तनको रोगीकी नाभिपर रखकर उसमें शीतल जलकी धारा छोडे तो अन्तर्दाह दूर हो अथवा केलेके पत्ते या कमलके पत्ते चारपाई पर बिछाकर उसपर सोवे और छाती तथा पेटपर भी आठ दस पत्ते रक्खे तो अन्तर्दाह दूर हो अथवा सौबारका धुला हुआ गायका मक्खन लेकर उसमें कपूर और कबाबचीनी और गुलाबजलमें घिसा हुआ चन्दन और नीमकी पत्तीको पानीमें बांटकर फिर हाथसे मथकर निकाला हुआ फेना ये सब चीजें अनुमान माफिक लेकर उसी मक्खनमें मिलाकर जहां दाह होताहो वहां लगावे तो इस सर्वोत्तम औषधीके प्रतापसे अति शीघ्रही दाह व अन्तर्दाह दूर हो, यह कई बारका परीक्षा

किया हुआ है, छोटी पीपरिको बारीक पीस छान-
कर मासे ४ शहद मासे ६ में मिलाकर चाटे तो कफ-
ज्वर, श्वास, खांसी, तापतिल्ली और हिचकी दूर हो
अथवा सम्हालूके पत्ते तोले १ लेकर पाव भर पानीमें
काढ़ाकरेजबएकछटांकरहे तब छानके ठंडाकर उसमें
पीपरि छोटी बारीक पिसीहुई मासा १डालकर पीवे तो
कफज्वर दूर होवे और कानोंका दर्द व आवाज और
जाँघोंका दर्द दूर होवे। अगर कफज्वरवाले रोगीके
एकबारभी बहुत ही पसीना निकलने लगे तो आधपाव
अरहरको भूनकर महीन पीसकर उसीमें पीले रंगकी
पच्चीस कौडी जलाकर महीन पीसकर मिला लेवे
औरबारीक कपडेमें रखकर पोटली बांधकर जहांजहांसे
पसीना निकलता हो वहां वहांपर वह पोटली फेरै तो
पसीना निकलना अवश्यही बन्द होवे।

शक्कर तोले १० और कुटकी बारीक पिसी हुई
मासे ६ दोनोंको मिलाकर आधा पाव गर्म पानीसे
खावे तो पित्तकफज्वर प्रथम दिवसहीसे दूर हो।
यह औषधी सबसे उत्तम है इसके खानेके दो घण्टे
बाद दो दस्त केवल सफेद आमके होते हैं और
जाडा बुखार उसी दिन दूर होजाता है। अथवा
अरूसाके पत्ते और फूलोंका स्वरस तोले १० और
शहद तोला १ दोनोंको मिलाकर पीवे तो पित्तकफका

ज्वर दूर हो और मुख व नाकसे खून गिरना और कमलवाय और खांसी इतने रोग दूर हो; अथवा अदरख ६ मासे, परवल ६ मासे दोनोंका पावभर पानीमें काढा करे जब एक छटांक रहे तब ठंडा कर पीवे तो पित्तकफज्वर छर्दि दाह इतने रोग दूर हों। अगर सन्निपातवाला रोगी बेहोशीसे बकता होवे तो गुलरोगन अथवा काहूका तेल मासे ६ एक एक घंटे पीछे शिर मस्तक और खोपडीमें लगाया करे। अथवा सिरसके बीज, पीपरि छोटी, मिर्च, सेंधानमक, लहसन,मनसिल, वच इन सबको बराबर लेकर गोमूत्रमें महीन पीसकर आंखोंमें अंजन लगावे वो बेहोशी और बकवाद दूर होवे रोगी अपने होशमें आजावे। जीरा सफेद मासा ४चारको बारीक पीसकर गुड मासा ६ मे मिलाकर खावे तो विषमज्वर अर्थात् जाडा बुखार दूर हो। अथवा बडी हरकी बकली माशा ६ को महीन पीस छानकर शहद माशे ६ से चाटे तो जाडा बुखार दूर हो वमन दूर हो संग्रहणी दूर हो और प्रतिश्याय अर्थात् जुखाम भी दूर हो उक्त चारो रोगों पर उक्त दवा अपूर्व काम करतीहै कभी खाली नही जाती उक्त दवा खानेके(२) दो घन्टे बाद दो दस्त होते हैं उक्त चारो रोगोपर यह कई वार परीक्षामें आचुकी है ॥

तुलसीके पत्तोंका स्वरस माशे ६ अथवा द्रोण पुष्पी (दडघल) अर्थात् गोमाका स्वरस माशे ६ में काली मिर्च महीन पिसीहुई माशे २ मिलाकर पीवे तो३दिनमें जाडा बुखार दूर हो अथवा फिटकरी भुनी हुई मासा १ मिलाकर आधा पाव ठंडे पानीसे खावे परन्तु जाडा बुखार आनेके एक घटे पेश्तर खावे तो पहिलेही दिन जाडा बुखार अवश्यही दूरहो अथवा इतवारके दिन अपामार्ग (चिरचिरा) की जड लाकर लालरंगके सात तारके डोरामें बांधकर कमरमें बांधे तो तिजारी दूर हो। अथवा अगस्तके पत्तोंका रस निकालकर नास लेवे तो चौथिया दूर हो.गुर्च तोले १॥ का पावभर पानीमें काढा करे जब एक छटांक रहे तब ठण्डा कर शहद तोला १ डालकर पीवे तो जीर्णज्वर अर्थात् कई महीनेका पुराना ज्वर दूरहोवे और अगर इसी काढामें पीपारि छोटी महीन पिसीहुई माशे २ मिलाकर पीवे तो जीर्णज्वर,कफ, तापतिल्ली, खांसी, और अन्नमें अरुचि इतने रोग दूर हों,आमला चीताकी जड, हर्र, पीपारि छोटी, सैंधानमक, ये पांचों चीजें बराबर लेकर महीन पीसकर कपडेमें छानलेवे फिर उसमेंसे मासे ४ अथवा ६ मासे गर्म जल आधा पावसे सवेरे खावे तो वात, पित्त, कफ इत्यादि सर्व ज्वर दूर हो पाखाना साफ होवे,भूख बढे कफ-

नाश हो, शरीरकी पीडा मिटे । अथवा अदरखका स्वरस या अदरखही माशा २ लेकर महीन पीसकर उसमें जवाखार मसशा १ मिलाकर खावे तो नाना-प्रकारके देशोंके नाना प्रकारके दुष्ट पानी पीनेसे जो ज्वर हुआ हो उसको शीघ्रही दूर करे और अगर देशाटन करनेमें इस औषधीको अक्सर खाया करे तो किसी देशकाभी पानी कभी हानि न करसके । अदरखके स्वरसके २ या ४ बूंदको नाकमें नास लेनेसे ज्वरमें उपजी मूर्च्छा (बेहोशी) दूर होतीहै । लोहेकी सलाईको गर्म कर युक्तिपूर्वक पसलीमें दाग देनेसे ज्वरमें उपजी श्वास दूर होती है ॥

सेंधानोंन महीन पीसकर पानीके साथ नास लेनेसे ज्वरमे उपजी हिचकी दूर होती है अथवा सोंठि पिसी हुई मासे २, मिसरी मासे २ मिलाकर खानेसे ज्वरमें उपजी हिचकी दूर होतीहै । अथवा हीगको आगपर रखकर उसका धुआं लेनेसे हिचकी दूर होती है ॥

आधा पाव बालूको कपडेमें बांधकर गर्म तवापर रक्खे जब खूब गर्म होजावे तब खट्टे सिरकामें पोटलीको बुझाकर उसी पोटलीसे चढेहुये ज्वरवाले रोगीका सर्व शरीर सेके परन्तु कपडा ओढाये रक्खे तो इससे पसीना आवेगा और मस्तकका दर्द तथा सारे शरीरकी हडफुटन दूर होगी और जो बुखार चार

छः दिनसे बराबर चढकर रहगया है और किसी दवासे नहीं उतरता सो इससे दो घंटेमें उतरेगा। मकडीके जालेको इकट्ठा कर बत्ती बना तिलोंके तेलके चिरागमें डालकर काजल पाडकर वही सूखा काजल दोनों आंखोंमें लगावे तो तिजारी दूर हो। अथवा उल्लू पक्षीके दाहिनी तरफके पंखको सफेद सूतमें बांधकर रोगीके बांयें कानमें लटकावे तो इकतरा दूर हो। घमराकी जड़ अथवा सफेद फूलवाले आककी जड़ अथवा सफेद फूलवाली कनेरकी जडको सूतसे कानमें बांधे तो शीतज्वर (जाडाबुखार) दूर हो। सहदेईकी जड़को कानमें बांधे तो चौथिया दूर हो। अथवा मोमाके रसका आंखोंमें अंजन करे तो चौथिया दूर हो। जो ज्वर चौथेदिन जाडादेकर आताहै उसको चौथिया या चातुर्थिकज्वर कहते हैं उसके दूर होनेका मंत्र--"ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः क्रोधेश्वराय नमोज्योतिःपतंगाय नमो नमः सिद्धरुद्र आज्ञापयति स्वाहा॥" इस मंत्रसे सात पीली सरसों लेकर फिर प्रत्येक सरसों पर सात सातबार मंत्र पढकर रोगीके शरीरमें जोरसे मारे तो चौथियाज्वर दूर हो।आलूबुखारादाना १ कोआगमेंभूनकर मुखमें दबायेरहे और धीरेधीरे रस चूसे तो प्यास दूर हो। अरंडके पत्तोंपर लेटे तो ज्वरका दाह दूर हो। कलमी शोरा माशे२को बारीक पीस पानीमें मिलाकर

हृदय अथवा नाभिमेंलेपकरदेतो कईदिनकाचढाहुआ ज्वर शीघ्रहीउतरेअथवा साफ कियाहुआशोरा रत्ती २ खाकर ऊपरसे एक छटांक ठंडा पानी पीवे तो कई दिनकाचढ़ाहुआ ज्वर शीघ्रहीउतरे। अमिलीके चियां अर्थात् आरम्भिक फल लेकर उनमेंसे थोडा थोडा कई वार मुखमें दबाकर धीरे धीरे रस चूसनेसे ज्वरमें उपंजी उबाक व वमन दूर होतीहै, बकरीके कच्चेदूधकी दोनों पैरोंके तलुओंमें मालिश करनेसे दाह शान्त होवे ज्वरमें गईहुई निद्रा आवे अथवा श्रीमहादेवजी का षडक्षर मंत्र (ओं नमः शिवाय) का यथाशक्ति जप करे या करावे और गाय के दूधमें जल व शक्कर मिलाकर महादेवजीको स्नान करावे फिर चन्दनअक्षत बेलपत्र आक व धतूर व कनेर व पियाबाँसा व कमल इनमेंसे किसीके फूल चढाकर धूप देकर कपूरकी आरती कर मिठाईका भोग लगावे तो सर्व प्रकारके ज्वर तुरन्तही शान्त होवें अथवा बच, हर्र, घी इनकी धूनी ज्वरवालेको दे तो जाड़ा बुखार दूर हो। अथवा मसूर की भूसीका धुआं देनेसे सर्व प्रकारके ज्वर शान्त हों। एकान्तरा ज्वरके दूरकरनेका मंत्र–"ओं गंगायामुत्तरे कूले अपुत्रौ तापसौ मृतौ। ताभ्यां तिलोदकं दद्यान्मुं चत्येकाहिको ज्वरः ॥ १ ॥"

चौराहेपर अथवा पीपलके पेडमें अथवा मूसेके

बिलमें तिल सहित जलकी १०८ अंजली १०८ मंत्र पढकर देवे तो एकान्तरा ज्वर दूर होवे अथवा पुराना घी, हींग और सेंधानोन मिलाकर नासलेवे तो जाडा बुखार व पुराना बुखार दूर हो। "समुद्रस्योत्तरेतीरे द्विविदो नाम वानरः॥तस्य स्मरणमात्रेण ज्वर एकाहिको गतः ॥ १ ॥" इस मंत्रको ज्वरवाला पुरुष बार बार पढ़ा करे तो ज्वर शान्त होवे। अथवा छोटी दुद्धीकी जड़ या मकोयकी जड डोरेसे कानमें बांधेतौ जाडा बुखार दूर हो। "वज्रहस्तो महाकायो वज्रतुण्डो महेश्वरः॥हतोसि वज्रतुण्डेन भूम्यां गच्छ महाज्वर॥ठः ठःशंतः" इस मंत्रको ताम्रपत्र अथवा भोजपत्र पर लिखाकर रोगीके गले या भुजापर बांधेतो जाडा बुखार दूर होवे "ॐबाणयुद्ध महाघोरे द्वादशार्कसमप्रभे॥ जातोऽसौ हि महावीर्यो मुंचत्वेकाहिको ज्वरः॥१॥" इस मंत्रको लाल चन्दनसे पीपलके पत्तेपर लिखकर रोगी पुरुषकी दाहिनी और स्त्रीकी बाई भुजापर बांधे तो विषमज्वर सर्वप्रकारका ज्वर दूर हो "ॐ नमो भगवते छिंधि छिंधि अमुकस्य ज्वरस्य शिरः प्रज्वलितपरशुपाणये पुरुषाय फट् ॥१॥" इस मन्त्रको भोजपत्र पर लालचन्दनसे लिखकर गलेमें बांधे अथवा रेशमके सात तारके डोरामें मन्त्र पढ पढकर २१ गांठ लगावे फिर वह गंडा गलेमें बांधे अथवा

छुरीसे धरती पर लकीरें करता जावे मन्त्र पढता जाय रोगी पर फूक डालता जाय तो ज्वर दूर हो 'ॐविद्यु-दानन हुं फट् स्वाहा ॥१॥' इसमन्त्रको पानपर चूनेसे लिखकर चाबे तो तीन दिनमें सर्व प्रकारके ज्वर शांत होवें अदरखका स्वरस मासे६अरूसेके पत्तोका स्वरस माशे६शहद मासे६इन तीनोंको मिलाकर तीन दिन खानेसे एकान्तरा ज्वर दूर हो इतवारके दिन सम्हालूकी जड या धतूरेकी जड या चिरचिरेकी जड़ या घमराकी जड डोरेसे हाथमें बांधनेसे एकान्तरा ज्वर दूर होताहै. अथवा भटकटाईकी जड या मयूरशिखाकी जड़ बांध नेसेभी ज्वर दूर होता है। "ॐ नमो वानरस्य मुखं घोरमादित्यसमतेजसम् ॥ तस्य स्मरणमात्रेण ज्वरो नश्यति तत्क्षणात् ॥"

मिट्टीकी छोटी हांडी १ और १ दीवा ये नये मँगवाकर दीवाके भीतर लाल चन्दनसे ऊपरका मन्त्र लिखकर रोगीके ऊपर सात बार उतारकर रोगीको छुआकर फिर अगर शीतज्वर (जाडा बुखार) हो तो उस दीवाको चूल्हाके भीतर गाडिये और ऊपरसे आग जलाइये तीन दिन तक चूल्हामें गाडा रक्खे और आग हर वक्त जलती रहे तो शीतज्वर सन्निपात ज्वर भी अवश्यही दूर हो और अगर दाहज्वर हो जो चार या छः दिन अथवा

अधिक दिनसे चढकर रह गया हो और किसी
यत्नसे न उतरता हो और दाह व प्यास व बेचैनी
हो तो उस दीवाको हांडीके भीतर औंधा रक्खे और
ऊपर तक ठण्डा पानी भरदे और तीन दिनतक रक्खा
रहनेदे तो दाहज्वर आराम हो।जो जाडा देकर चढता
और पसीना देकर उतरताहै सो शीतज्वर है और
जो दाह और जलन देकर चढता और हाथ पैर ठण्डे
होकर उतरता है वह दाहज्वर है।फिर तीसरे दिन हनु
मानजीके नामकी लाल मिठाई सवा पाव बांटे तो
दाहज्वर शीतज्वर दूर हो। अथवा हुरहुरके दो पत्ते
लेकर उन्हें हाथोंसे थोडा मसलकर सीधी कलाई पर
बांधे और ऊपरसे दो चनाके बराबर फिटकरी रखकर
कपडेसे खींचकर बांध देवे परंतु ज्वर आनेके एक घंटा
पेश्तर यह यत्न करे तो प्रतिदिन आनेवाला व एकान्तरा
व तिजारी व चौथिया इतने ज्वर इस दवासे अवश्यही
जावें दवा कभी खाली नहीं जाती परंतु जहांपर दवा
बाँधीहै वहां बताशेके बराबर छाला पड जावेगा विना
दर्द व तकलीफके दो तीन दिनमें आपही अच्छा हो
जावेगा परन्तु ज्वर आनेके एक घन्टा पहिले बाँधे
और जब देखो कि, ज्वर आनेका वक्त निकल गया
आधा घन्टा और होगया तब खोलकर तुरंत फेंक दे
आककी मुखबंद कली२०अथवा आककी जडमासा

ीन पीसकर एक मासा गुडमें मिलाकर तीन दिन
ज्वर आनेके १ घंटे पेश्तर खाओ तो जाडा बुखार
वश्य ही दूर हो अथवा करंजकी मींगीको पानीमें
न्दनकी तरह घिसे फिर तीन या चार बूंद बुखार
ानेके आधा घंटे पहिले नाकमें टपकावे और चार
ांच मींगी पानीमें पीसकर गोली बनाकर बराबर
ाता रहे तो जाडाबुखार दूर हो। 'सुखदा वटी' करंजकी
ींगी मासे ४ पीपारि छोटी माशे ४ जीरा सफेद मासे २ बबू-
लकी हरी पत्ती माशे ४ सबको पानीमें डालकर महीन
ीसकर चनाके बराबर गोली बांधे और छायामें सुखा-
कर १ गोली सवेरे १ दोपहर १ शामको खावे तो ३
दिनमें जाडा बुखार दूर हो। बनप्सा मासा ४ उन्नाव
दाने ५ मौरेठी मासे ४ गुलाबके फूल मासे ४ स्याहतरा
ासे ४ मकोय मासे ४ इन सबका डेढ पाव पानीमें
ाढा करे जब आधा पाव रहे तब उतार छान ठण्डा
ार मिसिरी पिसीहुई तोले २ डालकर पीवे
ो तीन दिनमें प्यास, दाह, सिरमें दर्द, जाडाबुखार
। अवश्यही दूर हो यह खाली कभी नही जाता बड़ा
उत्तम काढा है। हुरहुरके पत्तोंको थोडी काली मिर्च
डालकर महीन पीसलो फिर काली मिर्चके बराबर
गोलियां बनाकर छायामें सुखालो फिर १ गोली रोज
३ दिनतक खाओ तो कफज्वर दूर हो। आकके पीले

पत्तोंको आगमें जलाकर राख करलो । फिर वह राख रत्ती ४ शहद मासे ३ में मिलाकर ३ दिन तक खावे तो कफज्वर दूर हो । हींग माशे२नमक काला माशे२ पानी सेर १ में औटावो जब सब पानी जलकर डेढ छटांक रहे तब उतार कर गुनगुना २ पीजाओ और कपडा ओढकर लेटे रहो तो इससे बहुत पसीना छूटे- गा इसी तरह ४ दिन बराबर पीवो तो ताप, तिजारी, चौथिया सब दूर होगे । नौसादर रत्ती२मिर्च काली२ इनको पीसकर बुखार आनेके एक घंटे पहिले पानी ठंडेके साथ खाजाओ तो ताप तिजारी चौथिया ये सब दूर हों । चूना तोले ४ को पानी तोले १० में घोलदेओ और उसी पानीमें तुरन्तही पकाहुआ नींबू १ निचोडदेओ जब चूना गाढा होकर पानीके नीचे जमजावे तब ऊपरका साफ पानी धीरेसे उतारकर किसी शीशीमें रखलो और जब बुखार आनेका लक्षण जम्हाई ऐंडाई शुरू हो तब तुरन्तही वह शीशीका आधा पानी पिलादो अगर देखो कि फिर जम्हाई ऐंडाई आने लगीं तो फिर वह बचाहुआ आधा पानी पिलादो तो बुखार हरगिज न आवेगा । अथवानावे नामकी बूटीके पत्ते मासे२मिर्च काली५डालकर एक छटांक पानीमें बांट छानकर पीवे तो३दिनमे तापतिजारी चौथिया और जीर्णज्वर आराम होवे परन्तु यह बूटी

नीमसे बीस गुणी कड़ुई होतीहै इस वास्ते जो नपीजावे तो आधी छटांक शक्कर मिला लेनाचाहिये तिटलीके हरीपत्ती मासा २ पानमें रखकर सबेरे खावे तो ३ दिनमें तिजारी दूर हो। यदि ज्वरमें बहुतदस्त होतेहों तो ईसबगोल तोला १ को रात्रिको पानीमें भिगो देओ सबेरे बांटकर रस निकाल छानकर रस तोले २ में मिसरी मासे ६ मिलाकर पिलाओ तो ज्वरातिसार अवश्यही बन्द हो यह दवा कभी खाली नहीं जाती। यदि ज़्वरमें प्यास व वमन होती हो तो पाव भर पानीमें एक छटांक चूना घोल दो थोडी देरके बाद जब देखो कि चूना नीचे बैठ गया तब ऊपरका साफ पानी किसी शीशीमें धीरेसे भरलो और फिर उस पावभर पानीमें पावभर गायका कच्चा दूध मिलाओ और शक्कर आधी छटांक डालो अथवा न डालो फिर बोतलको हिलाहिला कर उसीमेंसे एक एक तोला पानी पीनेको देते रहो तो वमन व प्यास एक घंटेमें बन्द होगी। अथवा पीपलकी लकडी या छालको आगमें भस्म करदो फिर वह गर्म राख पानीमें बुझा दो थोडी देरमें जब देखो कि राख पानीके नीचे बैठगई तब ऊपरका साफ पानी किसी बर्तनमें करलो फिर उसीमेंसे थोडा थोडा पीनेको देओ तो प्यास अवश्यही बन्द हो अथवा सेरभर . नं

चांदी गर्म करके या सोना गर्म करके बुझादो तो इस पानीके पीनेसे भी प्यास बन्द होती है क्रोधज्वर को नम्रता और मीठी मीठी बातें करके दूर करो कामज्वरको स्त्रीसे और खेदज्वरको आश्वासन (तसल्ली) से दूर करो, दृष्टिज्वरको नरसिंहजीके मन्त्रसे दूर करो इसी पुस्तकमें नरसिंहजीका सिद्ध मन्त्र मिलेगा । अगर अजीर्ण ज्वर हो तो सरसोंका तेल एक छटांक लेकर आगपर गर्म करो और गर्मही सारे शरीरमें मर्दन करो तो अजीर्णज्वरका तत्क्षण नाश हो अथवा सेंधानमक मिर्च पीपरि छोटी सिरसके बीज हल्दी इन सबको बराबर लेकर बकरीके मूत्रसे महीन पीसकर आंखोमें अंजन करे तो अजीर्णज्वर तत्काल मिटे माथाका दर्द जाय और इस अञ्जनसे सर्व प्रकारके ज्वर दूर हों अगर ज्वरमें कई दिनसे बडे जोरसे पेटमें दर्द होता हो जिससे बडी बेचैनी हो तो मदारके पीले पत्ते पांच छः मँगाकर उनमें सीधी तरफ थोडा थोडा घी चुपडो और महीनपिसा-हुआ सेंधानमक मासा २ दो दो प्रत्येक पत्तेपर बुरका देओ फिर आगमें थोडागर्म कर पेटपर रख देओ ऊपरसे थोडीसी रूईकी गद्दी रखकर कपडा लपेट देओऔर यह रातको करो तो आशा है कि पहिलेही दिन दर्द अवश्यही अच्छाहो जावेगा। अगर मलज्वर

हो तो अमलतासका गूदा, हर्रकी बकली, निसोत, एलु-
आ ये सब तीन तीन मासे लेकर पावभर पानीमेंकाढा
करे जब डेढ छटांक रहै तब ठंडा कर पीवे तो मलज्वर
दूर हो चार विरेचन (दस्त) हो कोठा साफ हो। अथवा
पीपरी छोटी, कुटकी, चिरायता, हर्र, एलुआ ये सब बरा-
बर लेकर तोले२ पानी डालकर महीन पीसे और थोडा
गुनगुना करके पेटपर लेप करदेवे तो दो घण्टेमें दोदस्त
हों या मल पेटहीमें भस्म हो, जब ज्वरमें तीनचार अ-
थवा अधिक दिन पाखाना बिल्कुलही नहीं होताहै उस
समयके लिये उक्त लेप बडा उपकारी है दो तीन पा-
खाना अवश्यही कराताहै कभी खाली नहीं जाताऔर
भूख लगती है जब दो तीन दस्त होचुकें तब उक्त लेप
को पेटपरसे धो डालना चाहिये।

कफज्वर पर नास।

कायफल, सोंठि, मिर्च, पीपरी छोटी, नकछिकनी,
नीमकी छाली ये सब बराबर लेकर बहुत महीन पीस
कपडेसे छानकर नाकमें नास सूंघे तो कफज्वर मिटै
छींके बहुत आवें माथेका दर्द तुरन्त अच्छा हो।

निम्बादि अरिष्ट।

नीमकी छाली, पत्ते, फूल, फल और जड ये सब
२ तोले सोंठि २तोले मिर्च २ तोले पीपरि छोटी २
तोले हर्रकी बकली २ तोले आंवलाकी बकली २

तोले, बहेडाकी बकली २ तोले काला नमक २ तोले सेंधानमक २ तोले सांभर नमक२ तोले सज्जी खार २ तोले जवाखार २ तोले अजवाइन २ तोले इन सबको महीन पीसकर कपडछानकर किसी शीशीमें रखछोडे फिर मासे ६या७खाकर ऊपरसे आधा पाव गर्मपानी पीवे तो अति शीघ्र प्रतिदिनका आनेवाला जाडा बुखार,एकान्तरा, तिजारिया,चौथिया, रात्रिमें आनेवाला ज्वर, दाहज्वर, मलज्वर, सन्निपातज्वर, मधुरा, कफज्वर, इत्यादि सर्व ज्वर अच्छे हों अगर नीमका पंचांग न मिलसके तो फूल अथवा पत्ते इन दोमेंसेजो मिले उसको छायामें सुखाकर उतनी तोल लेनाचाहिये यह निम्बादि चूर्ण सर्व ज्वरोंका नाशक है। इक्कीस दिनसे जब ज्वर अधिक हो जाता है तब उसको वैद्य जीर्णज्वर, परन्तु बहुतसे वैद्य डेढ महीनेसे अधिकदिनवाले ज्वरको जीर्णज्वर कहतेहैं यह बडी मुश्किलसे छूटता है जब देखो कि अनेक दवा दी और जीर्णज्वर नहीं जाता तब वमन विरेचन देकर रोगीको शुद्ध कर लो फिर यह वसन्तमालती खानेको देओ विधि–खपरिया तोले २ लेकर दोलायंत्रसे गोमूत्रमें अग्निपर चढाकर चार प्रहरमें शुद्ध कर लेना फिर उसी शुद्ध खपरियाको लेकर उससे आधी सफेद मिर्च कि जिसको कंकोल मिर्च कहतेहें लेना फिर गायके मक्खन में दोनोंको एक पहर मर्दन करे फिर नींबूका रस डाल-

कर खरल करे जबतक मक्खनकी चिकनाई दूर न हो तबतक नीबूका रस डाल डाल कर बारबार घोटता जावे जब मक्खनकी चिकनाई दूर हो तब इसकी गोली रत्ती २ या ३ की बनाकर छायामें सुखा लेवे फिर एक गोलीको प्रति दिन शहद मासे ६ और पीपारि छोटी महीन पिसीहुई मासा १ के साथ खावे तो कुछ दिन इसके सेवन करनेसे जीर्णज्वरका नाश अवश्य ही हो और शीतज्वर, विषमज्वर, धातुगत ज्वर, लोहूके दस्त, खूनके बिगडनेसे उत्पन्न हुये रोग, घोर व्यथावाले पित्तके रोग,बवासीर,कांच निकलना,प्रदर रोग, सर्व प्रकारके पित्तके रोग और सर्व प्रकारके रुधिरविकारके रोगोंका जडसे नाश हो। बवासीरसे खून गिरता हो तो बन्द होवे नेत्रके अनेक रोग दूर करे यह बहुत उत्तम और अत्यन्त प्रसिद्ध सिद्ध औषधी है कि जिसपर सबका विश्वास है ऐसा ज्ञात होता है कि ये तीन दिव्य अमोघ औषधियां सर्व पुरुष अपने अपने घरोंमें हमेशा रखते थे।एक मालती बसन्त, दूसरा लाक्षादि तेल,तीसरा योगराज गूगुल, क्योंकि प्रत्येक घरोंमें कोई न कोई इन तीनोंका नाम अवश्य जानता है तथा अन्य औषधियोंकी बनिस्बत इनका मान भी अधिक करता है । ऊपर जो दवा बताईगई इसका नाम 'लघु मालती बसन्त' है इसको

साधारण पुरुष भी बनाकर खा सकता है।अब 'बृहन्मा; लती बसन्त' बनानेकी विधि लिखता हूं–सोनेके वरक, अनबिंधे मोती, शोधा हुआ सिंगरफ, काली मिर्च ये सब क्रमवृद्धिसे लेओ अर्थात् सोना १ तोला मोती २ तोले हिंगलू ३ तोले मिर्च ४ तोले लेओ और गोमूत्रमें शुद्ध कीहुई खपरिया ८ तोले लेओ फिर सबको खरलमें डाल गायका मक्खन डालकर तीन पहर घोटो फिर नींबूका अर्क डालकर जबतक मक्खन की चिकनाई दूर न हो तबतक बराबर घोटो फिर एक एक रत्तीकी गोली बनाकर छायामें सुखालो फिर १ गोली शहद मासे ६ और पीपरि छोटी पिसीहुई मासा १के साथ खावे तो धातुगत जीर्णज्वर,अतीसार रक्तके सर्व विकार,रक्तातीसार,पित्तके सर्व दारुणरोग, नेत्रके सर्वरोग, प्रमेह, धातुके विकार इत्यादि सर्व रोगोंको यह दूर करे गर्भवती स्त्रियोंके गर्भको पाले. गर्भवती स्त्री अरनीके एक माशा फूलोंके साथ इसको शहद मिलाकर खावे तो बालकके सर्व विकारोंको दूर करे माताके दूध और दो बूंद शहदमें बालकको खवा- वे। धातु प्रमेहकी बीमारीमें मक्खन मिसरीके साथ ४९ दिन खावे पित्तके सर्व रोगोंमें गायका दूध और मिसिरीके साथ।बवासीरमें छःमाशे शक्करमें मिलाकर

एक गोली फांक कर ऊपरसे पाव भर गायका कच्चा ताजा दूध पीवे इत्यादि यह 'बृहन्मालती वसंत' है ।

अथ लाक्षादितैल ।

पीपल वृक्षकी लाख १ सेर लेकर ४ सेर पानीमें औटावे जब एक सेर बाकी रहै तब उतारकर छान लेवे फिर उसमें तेल तिलोंका सेर १ डाले और गायके दहीका पानी निचोड़ा हुआ सेर ४डाले फिर सौंफ, असगन्ध, हल्दी, देवदारु, रेणुका,कुटकी, मरोरफली कूट, मौरेठी, नागरमोथा,लालचन्दन, रास्ना,कमलगट्टा, और मजीठ ये एक एक तोले लेकर पानी डाल महीन बांटकर उसीमें डाल देवे फिर सबको कड़ाहीमें आगपर चढाकर मन्दाग्निसे चार प्रहरमें तेलको सिद्ध करे फिर ठण्डा कर छानकर शीशीमें रख छोडे और नित्य इसकी मालिश किया करे तो जीर्ण ज्वर,विषम ज्वर,ताप,तिजारी, खुजली, शूल, शरीरकी दुर्गन्ध और सर्व शरीरके फोडे दूर हो,माथेका दर्द मिटे। स्त्री लगावे तो गर्भवती हो और गर्भवती लगावे तो गर्भ पुष्ट हो, दाह मिटे इत्यादि यह और भी अनेक रोग दूर करे कभी निष्फल नहीं जाता महा उत्तम तेल है । अथवा दूधमें छोटी पीपरि प्रथम दिन ३ फिर एक एक नित्य बढ़ावे इस वर्द्धमान पीपरिसे २१ दिनमें जीर्णज्वर छूट जाता है ॥

अथ कुर्स कपूर ।

कपूर,केशर ये चार चार माशे मौरेठी बकली छिली हुई, बिहीदाना, खसखस, ये आठ आठ माशे खीरेके बीजोंकी गिरी,ककडीके बीजोंकी गिरी,काहूके बीज, चन्दन गुलाबजलमें घिसा हुआ, तरबूजके बीजोंकी गिरी, ये सब एक एक तोले, बबूलका गोंद दो माशे सबको कूट छानकर गोली बनाले खुराक दो या तीन या चार माशे तक ॥

कुर्स सन्दल ।

चन्दन गुलाबमें घिसा हुआ, माशे ४.जहरमोहरा गुलाबमें घिसा हुआ, सफेद कत्था, खुरफेके बीज, गुलबनफसा, खसखस ये सब चार चार माशे, केशर दो माशे, मीठे कद्दूके बीजोंकी गिरी, बिहीदानेकी गिरी छः छः माशे लेकर सबको कूट छानकर ईसबगोलके लुआबमें या बिहीदानेके लुआबमें गोली बनाले खुराक दो या ३ माशे । यह उत्तम दवा है इससे जीर्ण ज्वर दाह राजयक्ष्मा ये तीनो रोग अवश्य ही आराम होते हैं यह कई बारका परीक्षा किया हुआ है । खूनकलां पावभर लेकर ३ दिनरात नदीके पानी या कुएँमें पोटली बांधकर लटका दो चौथे दिन मलकर छायामें सुखाकर मिट्टीके बर्तनमें भरकर रखदेओफिर

गुर्च नीमकी मासे ६ कासनी मासे ९ इन दोनोको पानी डालकर खुब महीन बांटकर डेढपाव पानीमें छान लेओ फिर पीतल या कांसेके कटोरामें डालकर बिना धुएँकीअग्निपर रखदेओ जब चुरने लगे और कालामैल ऊपर आजाय तब मैलको निकालकर फेंकदेओ और कटोरेको उतार ठंढा करके छानलो फिर इसमें तीन तोले शर्बत बिजूरी मिलाकर पहिले रखीहुई खूबकलां-मेंसे मासे ६ खूबकलां फांककर ऊपरसे वह कटोराकी औषधि पीजाओ इसीतरह४० दिन करो और खानेको चावल मूंगकी दाल धोई या शक्कर भात गेहूँकी रोटी तुरईकी तरकारी खाओ घी दूध और चिकनाईसे बचे रहोतो४० दिनमें निश्चय जीर्ण ज्वरका नाश होजावेगा यह औषधि कईवारकी परीक्षा की हुई है.खाली नहीं जाती ॥ (तर्कीब शर्बत बिजूरी) कासनीके बीज,खर बूजेके बीजोंकी गिरी, ककडीके बीजोंकी गिरी, सब डेढ डेढ तोले, कासनीकी जडकी बकली दो तोले, फिर इन सबको थोडा कुचलकर सेर १ पानीमें आग-पर काढ़ा करे जब आधा सेर रह जावे तब कडाहीमें छानदेवे और शक्कर सेर एक इसीमें डालदेवे फिर आधा घण्टा तक मन्द अग्निसे पकावे फिर उतार ठढा कर बोतलमें भर देवे बस यही शर्बत बिजूरी है और इसी तर्कीबसे सर्व प्रकारके शर्बत बनते हैं ॥

अथ सिंहशार्दूलगोली ।

हींग मासे ४ बच मासे ४ अजवाइन मासे ४ बाय बिडंग तोला १ सेंधानमक तोला १ जीरा सफेद तोला १॥ सोंठि तोला १॥ मिर्च तोले २ पीपरि छोटी तोले २॥ कूट तोले २ मासे ८ हर्र तोले ३ मासे ४ भारंगी तोले ३ मासे ८ चिरायता तोले ४ अजमोद तोले ४ इन सर्व औषधियोंसे गुड दूना ले सुपारी प्रमाण गोली बनावे फिर १ गोली सबेरे और १ शामको खावे तो चौरासी वायु, प्रलाप, सन्निपात, बवासीर, भगन्दर, शाकिनी दोष, भूत, प्रेत, राक्षस, बेताल, पिशाच, मूर्च्छा, अजीर्ण अहार, फोडा, फुंसी, मंत्र, यंत्र, टोना टामण, दीठ, मूठ, पेटपीडा, अफरा, स्थावरजंगमविष, बिच्छूका विष, बावले कुत्तेका विष, अफीम इत्यादिका विष दूर हो जैसे सिंहको देखकर हिरना भागे इसतरह इस औ-षधिको देखकर रोग भागें यह श्रीधन्वन्तरिजीने अ-पने पुत्रको बताई है ॥

खूबकलां एक छटांक और मुनक्का एक छटांक इन दोनो को कपडेमें पोटली बांधकर नदीके पानीयाकुएँमें रातभर लटकी रहने दो सबेरे निकालकर उसके ऊपर गेहूँका आटा मांडकर एक एक अंगुल मोटा चढाओ और ऊपरसे कपडा लपेट देओ फिर भाड़ या चूल्हे-में रखदेओ जब गोला लाल होजावे तब निकालकर

ठंढा कर दोनोंको बांटकर झडबेरीकी बराबर गोलियां बनाकर छायामें सुखालो फिर उसमेंसे एक गोली एक छटाक शर्बत् शक्करके साथ सात दिन तक खाओ तो एकांतरा ताप,तिजारी, चौथिया इत्यादि सर्व ज्वर दूर हों। प्रथम मुनक्का लाकर उनके बीज निकालकर फेंकदेओ तब पोटली बांधो यह उत्तम दवा है कभी खाली नहीं जाती कईबारकी परीक्षा की हुईहै॥

जब देखो,कि अनेकदवाकरने पर भी ज्वरछूटताही नहीं तब रोगीके कन्धेके बराबर लम्बा और एक गज चौड़ागोलगढ़ा खोदकर उसमेंखूबआगजलाओयहां तक कि गढ़ा सर्व तरफसे लाल और खूबगर्म होजावे फिर उसमेंसे सब आग निकालकर फंकदेओ औरनीम की हरीरकनइयां लेकर डोरेमें बांधकर उस गढेमें इस किस्मसे लटकाओ कि गढा कहीं पर खुला न रहे फिर रोगीको उसमें खड़ा करो और चौथाई याआधा घण्टा खड़ा रक्खो पसीना खूब आवेगा जब रोगी बहुत घबरावे और कहेकि,अब दम निकलताहै जल्दी निकालो तब निकाल लो और पसीना पोंछकर निर्वात स्थानमें चारपाईपर बिठादो और गुर्चका सत मासा १ शहद मासा३ में मिलाकर तुरन्त चटादो और एक पानभर अच्छा गुलाबजल लेकर उसमेंएक छटांक मिसरी डालकर ऊपरसे पिलादो। फिर पान

इलायचीसे युक्त खानेको देओ तो मन प्रसन्न हो शरीरमें बल बढे ज्वर दूर हो यह अनेकवारका परीक्षा किया हुआ है ॥

अथ अतीसार चिकित्सा।

दस्त होनेका नाम अतीसार है, वह ६ प्रकारका है यथा वातका १, पितका २, कफका ३, सन्निपातका ४, शोकका ५ और आमका ६, कसौंदीकी जड मासे ६ चांवलोंका धोवन तोले ४ में पीसकर पीवे तो दस्त बन्द हों यह बालकों और बृद्धोंको अत्यन्त लाभदायक है। अथवा लोहेके पात्रमें,थोडेसे घीमें हर्र भूने फिर ३ या ४ मासे खावे तो दुर्बल पुरुषका अतीसार दूर हो। अथवा इन्द्रजौका बृक्ष कि, जिसको कुटज या कुरैया कहते हैं उसकी छाली तोले४लेकर आधा सेर पानीमें काढा करे जब आधा पाव रहे तब ठंडा कर पीवे तो दस्त बन्द हों ॥

जायफल, छुहारा, अफीम ये तीनों एक एक माशा लेकर बंगलापानके अर्कमे महीन पीसकर चनेकी बराबर गोलियां बनाकर छायामें सुखा लेवे फिर १ गोली खाकर ऊपरसे गायका आधा पाव मट्ठा पीवे तो घोर अतीसार जाय। अथवा आमकी गुठलीकी गिरीतोला१,बेलगिरी तोला१इसकाआधासेर पानीमें

काढा करे जब डेढ छटांक रहे तब उतार छान ठंढा कर उसमें शहद माशे ६ और शक्कर माशे ३ डाल-कर पीवे तो वमन व दस्त दोनों बन्द हों। अथवा नकछिकनीको जलाकर राख करे वह राख तोला १, अजवायन तोला १, सोंठि तोला १ इनको पीस कर गुड़ तोले ३ मिलाकर जंगलीबेरके बराबर गोलियां बनाले फिर १ गोली एक मासा घीके साथ खावे तो नाभि अर्थात् पोतनारीके टलजानेसे जो दस्त होते हैं उनको तुरन्त बन्द करे। अथवा फटकरी तोला १, माजूफल तोला १ दोनोंको महीन पीसकर सिरकामें मिलाकर नाभिपर लगाकर ऊपरसे कड़ी पट्टी कपडेकी खूब खैंचकर बांध देवे तो पोतनाडी अ-र्थात् बाउटे हटजानेसे जो दस्त होतेहों सो बन्द हों॥

अनारकी कली मासा १, बबूलकी हरी पत्ती मासा १, सौंफ घीमें भुनी हुई मासा १, खसखस (पोस्तादाना) जलाकर राख करदे वह राख मासे ३ फिर सबको एकसे मिलाकर रत्ती २ वा तीन माके दूधसे बालकको देवे तो बालकके दस्त बंद हों। अथवा बेलकी गिरी मासा १ कत्था सफेद मासा १ दोनोंको बारीक पीसकर रत्ती ४ माके दूधसे देवे तो बालकके वह दस्त जो कि दांत निकलनेके समय होने लगते हैं दूर हो। अथवा अती-स रत्ती ७ को पीसकर माके दूधसे देवे तो बालकके

दस्त बन्द हों अथवा बडका दूध माशे ६ तोंदीमें भरदे तो दस्त बंदहों अथवा आमकी छाली तोला १ को दही या सिरकामें चंदनकी तरह घिसो फिर तोंदीके चारों तरफ गाढ़ा गाढ़ा लेप करे तो दस्त बंद हों अथवा कैथाके बीज माशा२भून कर खावे तो पुराना अतीसार दूर हो। गूलरका दूध एक मासा भर बताशे में रखकर खावे तो दस्त बंद हों । जामुन,आम, आमला इन तीनोंके हरे पत्तोंका स्वरस मासे दो दो भर निकालकर उसमें बकरीका दूध तोला १ और शहद मासे२मिलाकर पिये तो खूनके दस्त बंद हों । शतावरी तोला दो का आधापाव पानीमें काढा करे जब एक छटांक रह जावे तब बकरीका दूध छटांक एक डालकर पीवे तो खूनके दस्त बंद हों। गायकादूध तोले५,मक्खन तोला १,मिसिरी मासे ६, शहद मासे ३ डालकर पीवे तो दस्तसे लोहूका गिरना बंद होवै। काले तिल तोला १ को एक छटांक पानीमें बांटकर मिसरी मासा ६ मिलाकर बकरीका दूध आधपावसे पीवे तो दस्तसे खूनका गिरना बंद होवे । अगर बहुत दस्तोंके होनेसे पाग्वानेकीजगह पकजावे या दर्द करने लगे तो बकरीका दूध पावभर,शक्करतोले२,शहदतोले २डालकर धोवे तो आराम हो।गायके आधापावदही मे शहद तोला १ डालकर पीवे तो दस्त बन्द हो ।

धानकी खील तोले २ को तीन छटांक पानीमें आग पर पकाकर खावे तो ज्वरमें जो दस्त होते हों सो बन्द हो अथवा इसबगोलकी भूसी मासे २ और शक्कर मासे ३ दोनोंको आधपाव शर्बत या ठंडे पानीसे खावे तो खूनके दस्त बहुत पुराने भी बन्द हों । यह कईबारका परीक्षा किया हुआ है । आमलाकी पत्ती बबूलकी पत्ती आमकी पत्ती इन तीनोका स्वरस मासे दोदोभर और शहद मासे ६ इसीमें मिलाकर खावे तो सर्व प्रकारके दस्त बन्द हों ॥

लघुलीलावती वटी ।

जावित्री, जायफल, नागकेशर, लौंग, अफीम इन सबको चार २ मासे ले महीन पीस पानीसे रत्ती रत्ती भरकी गोली बांधकर छायामें सुखालेवे फिर सफेद जीरा रत्ती ४ और सोंठि रत्ती ४ दोनोको पीसकर उसीमें एक गोली रखकर फांकलेवे और ऊपरसे एक छटांक ठंडा पानी पीवे तो दाह वा प्यास युक्त अतीसार एकही खुराकमें बन्द हो यह कईबारकी परीक्षा की हुई है कभी खाली नहीं जाती उत्तम है । करेलाकी पत्तीका स्वरस, अनारकी पत्तीका स्वरस, मासे तीन तीन इसमें बकरीका दूध तोला १ मिलाकर फिर उसमे रूई भिगोकर नाभिपर रक्खे तो सर्व प्रकारके दस्त बन्द हों । अथवा आँवले आधी छटांक लेकर खूब

महीन पीसे फिर रोगीको सीधा लिटाकर तोंदीके चारों तरफ गोलाकार परिधिसी मेंड बांध देवे और नाभिमें खूब अदरखका स्वरस निचोड़ देवे तो सर्व प्रकारके दस्त बन्द हों ।

अथ लीलावती बटी ।

बच, रूमीमस्तंगी, अनारकी कली, वंशलोचन, आमकी गुठिली, लोध, मौरेठी, धवईके फूल, मोचरस, कुडाकी छाली, जायफल, बबूरकी कली, माईं ये सब एक एक तोले लेवे और सफेद कत्था सबसे दुगुना लेवे और कत्थासे दुगुनी कुम्हडाके बीजोंकी गिरीलेवे फिर सबको बारीक पीसे छानकर पोस्तादानाके पानीमें चार चार मासेकी गोलियां बांधे फिर १गोली चावलके धोवनके साथ खावे तो सात भांतिका अति स　जाय । पथ्य दही भात । यह गोली हजारोंबार की परीक्षाकी हुई हैं और सर्व प्रकारके दस्त बन्द करनेके लिये रामबाण सरीखी अमोघ हैं यह गोली वैद्योंको प्रशंसित करती हैं ॥

अथ संग्रहणीचिकित्सा ।

अतीसारमें पतला दस्त होता है और संग्रहणीमें गाढा मल दर्द होहोकर बहुत ही थोड़ा थोड़ा निकल ता है इतना भेद है यह संग्रहणी ४ प्रकारकीहैं-वातकी

पित्तकी, कफकी, त्रिदोषकी। तीन मासे आमके मौरको महीन पीसकर बासी पानीके साथ पीवे तो संग्रहणी जाय। अथवा राल मासे४या६को महीन पीस गुड या शक्कर मासे ६ में मिलाकर बकरीके दूध या पानीसे खावे तो संग्रहणी दूरहो। मरोरफली तोला १एकछटांक पानीमें बांट छानकर पीवे तो संग्रहणी दूर हो। अथवा फालसेकी जड तोला दोको खूब बारीकबारीककाटकर एक छटांक पानीमें रातभर भिगोदे सबेरे मलकर छान ले और ईसबगोल मासे ६ फांककर ऊपरसे फालसेका पानी पीले तो संग्रहणी दूर हो। गोंद बबूरका मासे९ को आधा पाव ठंडे पानीके साथ ३ दिनतक खावे अगर दस्त अधिक आते हों तो इसीमें खसखस मासे ३ और मिलाले तो तुरन्त ही संग्रहणी बन्द हो अथवा अफीम तोला १, चूना सीपका तोला १, दोनोंको पानीसे पीसकर मसूरके बराबर गोलियां बनाले फिर १ गोली सबेरे और एक शामको खावे तो सर्वप्रकारकी संग्रहणी और अतीसार दूर हो। अथवा खजूरके फल मासे ६ गायके दो तोला दहीके साथ खावे अथवा कतीरा गोंद मासे ६ रातको आध पाव पानीमें भिगोदे सबेरे मलकर शक्कर तोला १ डालकर पीवे तो संग्रहणी जाय। अथवा लहसोडेकी कोमल पत्ती मासे २ बाटकर खावे, या जीरा सफेद मासे

६गायका दही तोला २ के साथ खावे अथवा सुपारी चिकनी३जलाकर उसकी राख गायके दो तोलादहीमें मिलाकर खावे अथवा सफेद मूसलीमासे ६ कोमहीन पीसकर गायका मट्ठा आधापावके साथ पीवे अथवा शंखकी भस्म मासे २ सेंधानोंन मासे २ इनको शहद मासे ३ के साथ खावे तो संग्रहणी दूर हो । अथवा भांग मासे २ को भूनकर शहद मासे ३ के साथ चाटै तो संग्रहणी जाय । अथवा मसूर तोले २ को तीन छटांक पानीमें भिगोय देय और काढा करे जब १ छटांक पानी बाकी रहे तब उसमें बेलगिरी मासे ६ डालदे जब देखे कि बेलगिरी गलगई तब उतार छान ठंडा कर पीवे तो संग्रहणी, आम, पांडुरोग, कामला व कोखका दर्द दूर होवे । अथवा सोंठि, मिर्च, पीपरि ये दो दो मासे लेकर शहद मासे ६ से चाटे तो आंव दूर हो अथवा अफीम और केशरको शहदमें घिसकर एक चावल भर देनेसे सर्व अतीसार व संग्रहणी दूर हो। संग्रहणी रोगवाला अनाज कम खाया करे, और गायके मट्ठेमें काला नमक सोंठि डालकर खूब पिया करे तो संग्रहणी दूर हो ॥

अथ बवासीरचिकित्सा ।

चरक सुश्रुतमें बवासीर६ प्रकारकी कही है अर्थात बातकी १, पित्तकी २, कफकी ३, त्रिदोषकी ४, रुधिर

की ५,सहज ६ परन्तु लोकमें खूनी व बादी ये ही दो प्रसिद्ध हैं ॥

काले तिल तोला १,मक्खन तोला १ ये दोनों सबेरे आठ दिन तक खाय तो खूनी बवासीर जाय। नागकेशर मासे ६, सिसिरी मासे ६, मक्खन मासे९ सब मिलाकर७दिनतक सबेरे खावे तो खूनी बवासीर जाय। जंगली गोभीकी तरकारी घीमें पकाकर सेंधानमक डालरोटीके साथ आठ दिन खावे तो छओंप्रकार की बवासीर जाय। बबूलकी पतली फली जिनमें बीज न पड़े हों छायामें सुखाकर पीसछान मासे६ पानीके साथ दिन१९खावे तो सर्व प्रकारकी बवासीर जाय। कड़ुई तोबीको सिरकामें महीन पीसले और फिर पाखानेकी जगहमें लेप करे तो शीघ्रही बवासीर जडसे आराम होयह कईबारका परीक्षा किया हुआहै।अथवा शोधे हुए कुचिले महीन पीसकर प्रथम दिन रत्ती ४ शक्कर मासा १ में मिलाकर खावें और प्रतिदिन दो रत्ती बढाता जाय तो२१दिनमे छः प्रकारकी बवासीर २० प्रकारके प्रमेह १८ प्रकारके कोढ और कृमि इतने रोगोंका जडसे नाश हो ॥

कुचिला सोधनेकी विधि।

वैद्यकके सबही ग्रन्थोंमें लिखी है परन्तु एक सर्वो-

पत्तोंको बारीक बांटकर लेप करे अथवा नीम और पीपलके पत्तोंको बारीक बांटकर लेप करे अथवा कडुई तोंबी और गुडको सिरकामें महीन पीस कर लेप करे अथवा बडके पीले पत्तोंको भस्म कर उसकी राख मासे ६ सरसोंके तेलमें मिलाकर लेप करे अथवा काले सांपकी केंचुलीकी भस्म सरसोंके तेलमें मिलाकर लेप करे तो बादी बवासीर अवश्य ही दूर हो। ऊपरके सर्व लेप कईबारके परीक्षा किये हुये हैं। सेंधानोन मासे २ देवदाली कि, जिसको घूंघरबेल और बन्दाल भी कहतेहैं जो गुर्चकी तरह एक प्रकार- की बेलि दरख्तोंपर चढती है मासे२ देवदालीके बीज लेकर दोनोंको सिरकामें महीन पीसकर बवासीरके मस्सोंपर लेप करे तो अतिशीघ्र ही अर्थात् दो तीन बारके लेप करनेसे ही बवासीरके सर्व मस्से गलकर गिरजावें यह अनेक बारका परीक्षा किया हुआ है। और कभी झूठ नही होता एक जगह इसकी प्रशंसा एक वडेभारी वैद्यने ऐसी लिखी है कि, कौन कहता है कि, इसके लेप करनेसे बवासीरके मस्से नहीं गिरते हैं यह लेप अगर पहाड पर करदिया जाय तो वह भी टूटकर गिरपडे अथवा उक्त देवदालीका काढा कर उस से आवदस्त लेवे और एक तोला महीन पीसकर एक

छटांक पानीमें छानकर पीवे तो मस्से कटकर गिर जावें बवासीर दूर हो ॥

बवासीर नाशक सिद्ध मन्त्रः ।

ॐ भिभित्तिद्विः ॐ ठः निवारिनि गरलं विषं स्वजीर्ण संभवं नानार्शं नाशय नाशय ठं ठं ठं फट् स्वाहा ॥

विधि—इस मन्त्रसे कुशोंके द्वारा जल सात बार पढकर पीवे तो ७ दिनमें बवासीर दूर हो ॥

अथ द्वितीयमन्त्रः ।

ॐ काली काली महाकाली मतरो वहुभिर्गच्छ यत्किंचिद्विहितं तत् कुरु कुरु स्वाहा ॥

विधि—इस मन्त्रसे जलको ७ बार पढके प्रातःकाल पीवे तो बवासीर दूर हो ॥

अन्य मन्त्रः।

ॐ काका करता करोरि करता आकर करता जो जो करता सो सो होय हेरसना रसहीसे परवस विष दूर होयदुहाई लोनाचम्मारीकी ॥

विधि—एक लोटामें पानी भरकर उस पानीपर २१ बार मंत्र पढकर फूंक दो परतु लोटेको हाथमें रक्खे रहो फिर वही पानी लेकर पाखाने जाओ परन्तु लोटेको जमीन पर मतरक्खो और उसी पानीसे आबदस्त

लेओ तो बवासीर दूर हो परंतु ऐसा ११ दिन करो। येऋतीनों मंत्र अनेक बारके परीक्षा किये हुये हैं। अथवा महानीमके बीज ११, शकर मासे ६ मिलाकर पानीसे पीवो तो खूनी बवासीर अवश्य हीं दूर हो स्यारकी खालके मोजा बनाकर पहिरे तो बवासीर जाय। अथवा २५ बिच्छुओंको सरसोंके तेलमें डालकर ४० दिनतक धूपमें रक्खेफिर उस तेलकी मालिश बवासीरके मस्सोंपर करे तो मस्से अच्छे हों। सीपका चूना पानी डालकर झडबेरीके बेर बराबर प्रतिदिन खावे तो २१ दिनमें बवासीर दूर हो। पाखाना फिरकर वह जगह आकके पत्तोंसे पोंछे। नीमके बीजोंका तेल निकालकर मस्सोंपर मले। सोवाके बीज तोले २ पानीसे महीन पीसकर टिकिया बनाकर पाखानेकी जगहमें बाँधे ऊपरसे आकका पत्ता या तमाखूका पत्ता या अरंडका पत्ता बाँधे तो तीन दिनमें बवासीरके मस्से कटकर गिरपड़ें यह उत्तम दवा परीक्षा की हुई है। बवासीर वाला खटाई, मिठाई और बादी वस्तुएँ और दिनमें सोना, मैथुन करना छोड देवे मूलीकी तरकारी, जंगली गोभीकी तरकारी, कुसुमके पत्तोंकी तरकारी, जमीकंद और करेलेकी तरकारी खावे। हारसिंगारके बीजोंकी मींगी तोला १ कालीमिर्च मासे ३ इनको पानीसे पीसकर तीन तीन मासेकी

गोलियां बनाकर ठंडे पानीसे १ गोली रोज खावे तो अतीव चमत्कार यह दवा दिखावे। गायका कच्चा दूध आधासेर एक कटोरीमें रखकर एक घूंट पीवे फिर बडी जल्दी और फुर्तीके साथ एक कागजी नींबूका रस उसी कटोराके दूधमें निचोडकर तुरन्त ही पीजावे देरी एक मिनटकी भी न करे तो तीन दिन इस प्रकार करनेसे यह औषधि अद्भुत चमत्कार दिखावे। कुकुरौधेका स्वरस एक सेर लेकर कडाहीमें डालकर मन्दाग्निसे औटावे जब गाढ़ा होजावे तब कालीमिर्च मासे ६ पीसकर उसीमें मिलाकर जंगलीवेरकी बराबर गोलियां बनाकर छायामें सुखाले फिर १ गोली सबेरे और १ गोली शामको खायाकरे और इसी गोलीको सरसोंके तेलमें पीसकर पाखानाकी जगहपर रोजलगायाकरे तो २१ दिनमें सर्व प्रकारकी बवासीर जाय। करंजकी मींगी मासे ३ शक्कर मासे ६ मिलाकर सबेरे २१ दिनतक खावे तो सर्वप्रकारकी बवासीर जाय। अथवा निर्मलीके फलको जलाकर उसकी राख मासे ३ शक्कर मासे ३ मिलाकर सबेरे दिन १५ खावे। बबूलके फूल या फल मासे ६ शक्कर मासे ६ मिलाकर खावे। आंधाहूली छायामें सुखाकर उसकी आधी कालीमिर्च मिलाकर महीन पीसले फिर सबेरे ठंडे पानीसे तोला १ दिन १५ खावे तो सर्वप्रकारकी बवासीर दूर हो। भांगकी

पत्ती, नींबकी पत्ती, अमिलीकी पत्ती, बकायनकी पत्ती, सम्हालूकी पत्ती, नीलकी पत्ती ये एक एक छटांक लेकर सेरभर पानी आगपर औटावे फिर बांसकी नलीसे उसकी भाफ पाखानेकी जगहमें ले तो बवासीर जाय।कुचिलेको आगपर रक्खे और उसका धुआं पाखानेकी जगहमें दे तो दर्द और लोहू तुरन्तही बन्द हो। कचनार, जामुन, मौलसिरी इन तीनोंकी छाली तोले दो दो लेकर जवकुट कर आधासेर पानीमें काढा करे, जब पावभर रह जावे तब उतार ठंढा कर पाखानेकी जगहको उससे धोवे सात ७ दिन करे तो सर्वप्रकारकी बवासीर दूर हों। अथवा सोवाके बीज तोले २ को पानीमें पकाकर पानीसे पीसकर टिकिया बना कर पाखाना फिरनेकी जगह पर रक्खे और ऊपर उसके फिटकरी तोला १ आगमें भूनकर घीमें रगडकर रुईके फोहेमें लगाकर उसी टिकियाके ऊपर रखदे और ऊपरसे एक पान लगाकर लँगोटसे खूब जोरसे कसकर बांधदे और सबेरे बाँधे सो शामतक बँधारहे और शामको बांधे सो सबेरे तक बँधारहे इसी प्रकार ७ दिन बांधे तो ९० वर्षके भी मस्से सर्व बैठ जावें और बवासीर दूर हो यह बहुत उत्तम दवा है और कई बारकी परीक्षा की हुई है अथवा शोरा कलमी मासे ३ फिटकरी भुनीहुई मासे ३ दोनोंको पीसकर साबुनके

पानीमें छोटी सुपारीकी बराबर गोलियां बनावे और मस्सोपर लगावे तो मस्से दूर हों अगर मस्से भीतर हो तो आबदस्त लेनेके बाद एक गोली अन्दर प्रवेश कर दे और ऐसा ही ३ दिन करे तो तीन ही दिनमें मस्सोंको अवश्य ही दूर करे यह हमारे पढाये हुये लालमनने कईदफा परीक्षा किया है॥

धूप।

मनुष्यके बाल, सांपकी कैंचुली, बायविडंग,आककी जड़,छिकुराके पत्ते, मेढासींगी, हींग इन सबको बराबर लेकर आगपर रख कर उसका धुआँ बवासीरको देवे तो अतिशीघ्र बवासीर दूर हो। अथवा रसौत तोले४,शोरा कलमी तोले ४ दोनोको पीसकर मूलीके रससे झडबेरीके बेरकी बराबर गोलियां बनाकर छाया में सुखाले और सबेरे ४गोली रोज पानीके साथ खावे तो खूनी व बादी बवासीर दूर हो यह कई बारका परीक्षा किया हुआ है। आंवाहल्दी और सफेद मोम दोनों बराबर मिलाकर जुआरके बराबर गोलियां बनालो फिर प्रतिदिन सबेरे १ गोली पानीसे दिन१६ खाओ तो खूनी व बादी दोनो प्रकारकी बवासीर अच्छीहो।अथवा चाकसू तोला १,वंशलोचन,इलायची सफेदके बीज, मूलीके बीज, कत्था, रसौंत हर एक छःछः मासे तन्तरीककी छाल५तोले सबको कूट छान

और जंगली बेरकी बराबर गोलियां बनाकर छायामें सुखालो फिर प्रति दिन एक गोली पानीके साथ खाओ तो खूनी बवासीर अच्छी हो ॥

अथ भस्मकचिकित्सा ।

चाहे जितना खावे परन्तु भूख लगी रहै और भूः खा भूखा चिल्लाया करै यह भस्मक रोग है यह असाः ध्य होता है ।

लटजीराके बीजोंको दूधमें पकाकर खावे तो भस्म क जाय । बेरकी गुठलीकी मींगी तोले२को पानीसे बांटकर पीवे तो भस्मक अवश्य ही दूर हो । गूलरकी छाल तोला १ स्त्रीके दूधमें बांटकर ७ दिन पीवे तो भस्मक दूर हो । अथवा सफेद चावल तोले १० को आधासेर ऊंटनीके दूधमें खीर पकाकर दिन ३ खावे तो १५दिन तक भूख बिलकुलही न लगे और भस्मक रोग दूर हो । अथवा बिदारीकन्दका स्वरस तोले १०में भैंसका घी तोले २०डालकर सिद्ध करे फिर उस घीके पीनेसे भस्मक रोग अवश्यही दूर हो ।

अथ अजीर्ण रोग (हैजा) की चिकित्सा ।

अजीर्ण४प्रकारका है आमाजीर्ण१,विदग्धाजीर्ण२, विष्टब्धाजीर्ण३,रसशेषाजीर्ण४इसको मुसलमान लोग हैजा कहतेहैं लौंग तोला १का एकसेर पानीमें काढा करे

जब एक पाव जलजावे तो उतार ठंडा कर जब प्यास लगे तब यही पानी थोडा थोडा पीवे ॥

पोदीनाकी ३० पत्ती, कालीमिर्च ३, काला नमक मासा १, इलायची छोटी भुनीहुई दो, अमिली कच्ची या पक्की मासा १ इन सबको पानीसे महीन बांटकर चाटे वमन व दस्त और पेटका दर्द उसी समय बन्द हो और प्यास भी मिटै ॥

लेप ।

हींग सोंठि मिर्च पीपरि सेंधानोंन ये सब एक २ मासा लेकर इनको पानीसे पीसकर पेटपर लेपकर सो रहै तो सर्व प्रकारके अजीर्ण दूरहों । जौके आटाको पानीमें सानकर उसमें जवाखार व गायकी छांछ मिलाकर गर्म कर गर्मागर्म पेटपर लेप करे तो पेटका दर्द और अफरा दूर हो।अथवा सरसोंके तेलको आग पर गर्म कर गर्मागर्म शरीरमें मालिश करे तो सर्व शरीरका दर्द व पेटका दर्द और हाथ पैरकी अंगुली अगर खाली जाने लगी हो और उनमें तशन्नुज आगया हो तो उसी तेलके मालिशसे वह भी दूर हो अथवा लाल मिर्च ११ को नीबूका रस डाल डाल कर ४० दिन तक खरल करे फ़िर दो २ रत्तीकी गोलियां बनाकर छायामें सुखाकर १ गोली साथ पानके खावे तो अजीर्ण दूर हो क्षुधा लगे यह परीक्षा किया हुआ है अगर गुलाबजलमें एक जौकी बराबर दरियाई

नारियल व पपीता घिसकर चटावे तो दस्त व कै बन्द हों ॥ अफीम रत्ती १, कपूर रत्ती २, काली मिर्च रत्ती २, हींग रत्ती २, सोंठि रत्ती २ इन सबको पीसकर मूँगकी बराबर गोलियां बनाले और १ गोलीसे ४ गोलीतक दिनभरमें दे तो हैजा दूर हो। सिरसकी हरी पत्ती मासे ३, कालीमिर्च १२ इनको एक छटांक पानीमें बांटकर पीवे तो पेटका दर्द दूर हो। चूहेकी मेंगनी तोला १, सौंफ तोला १, दोनोंको पानीमें पीसकर गर्म कर पेटपर लेप करे तो पेटकी पीडा और स्त्रीके गर्भाशयकी पीडा और पोलनाडी व बाउटकी पीडा व पेटकी सर्व पीडा दूर करे। निर्मलीको पानीमें चन्दनकी तरह घिसकर तोला १ गुनगुनी करके तोंदी के चारों तरफ लेप करे तो पेटका दर्द दूर हो॥ आँककी जड तोले २ को अदरखके अर्क तोला दोमें खरल करे और कालीमिर्चके बराबर गोलियां बनाकर छायामें सुखाले फिर १ गोली हैजावालेको दे तो मरता भी हो तो भगवान्की दयासे बच जावे यह बहुत उत्तम दवा है ॥ छोटी इलायचीकी बकली एक तोला पानी एक सेरमें काढा करे जब आधासेर रहजावे तब ठंढा कर प्यास लगे तब पिया करे। पेठाके फूल मासे ३ एक छटांक पानीमें घोटकर पीवे तो हैजा तुरन्त ही अच्छा होवे। अथवा सरफोकाकी जड मासे २

या बरियारीकी जड़ मासे२तितलीकी पत्ती मासे छः पानी तोले दोमें बांटकर पीवे तो हैजा दूर हो । अथवा लालमिर्चका बीज१थोडेसे मोममें गोली बनाकर निगल जावे तो हैजा दूर हो ॥

अथ कृमिरोगचिकित्सा ।

कृमि दो प्रकारके हैं एक बाहरके जैसे जुआं वगैरः दूसरे भीतर के जैसे चुन्ने वगैरः । भीतरके कृमि ४ प्रकारके हैं और अलग अलग नामोंसे बीस प्रकारके हैं ॥

वायबिडंग मासे ९ को शहद एकतोलासे खावे तो पेटके सब कीड़े दूर हों । पलासके बीज मासे ९ को महीन पीस शहद या मट्ठासे खाय तो पेटके कृमि दूर हों। कबीला मासे ३को गुड़ तोले छः में मिलाकर खावे तो३दिनमें पेटके सबकृमि नाश हों । धतूरेके पत्तोंका स्वरस या पानके पत्तोंका स्वरस तोले३मेंपारा तोला१घोटकर शिरके बालोपर लेप करे तो जुआं व लीख सब दूर हों । खुरासानी अजवाइन मासे ६ को पीसकर गुड़ तोला १ में मिलाकर बासी पानीसे तीन दिन खावे तो पेटके सब कृमि बाहर निकल पड़ें । इन्द्रायनके पके फलका थोड़ासा गूदा लेकर लोहेके पात्रपर रखकर आगमें गर्म करे जब धुआं

निकलने लगे तब उस धुएँको दांत डाढमें जहाँ कीड़ा लगा हो वहां लगनेदे कीड़ा तुरन्त ही मरजावे। छोटे बच्चोंके अगर चुन्ने होजावें तो अरंडके पत्तोंका स्वरस या घमिराके पत्तोंका स्वरस या धतूरेके पत्तोंका स्वरस तीन दिनतक तीन तीन बार मलस्थानमें लगाया करे तो सब चुन्ने दूर हों। घमिराका रस, धतूरेका रस, बङ्गलापानका रस तीन तीन मासे लेकर सबको मिला कर तीनदिन तक दिनमें तीन दफे अंगुलीमें लगाकर बालकके पाखानेकी जगहमें लगावे तो सब कीड़े बाहर निकल आवें। खजूरके पत्ते तोले२का डेढपाव पानीमें काढा करे जब आधापाव रहे तब उतार छान एक दिनरात रक्खा रहने दे दूसरे दिन उसी बासी काढ़ामें शहद मासे ६ डालकर पीवे तो महादारुण कृमियोंका नाश होवे परन्तु ७ दिन करे। अथवा कच्ची सुपारीको मीठे नींबूके अर्कमें तीन पहर तक घोटकर पीवे तो दारुण कृमि नाश हों। पक्की खजूर एक छटॉक खाकर ऊपरसे दो जंभीरी नींबू चूसे तो मलके सर्व कृमि दूर हों॥

अथ पांडुरोगचिकित्सा।

पॉडुरोग५प्रकारका होता है-वातका १, पित्तका२, कफका ३, त्रिदोषका ४, मिट्टीखानेका५; इसी पांडुके

और भी भेद हैं कामला और हलीमक । कामलाको कोई कमलवाय या कवल, और फारसीमें यरकान कहते हैं इसमें आंखें व पेशाव व पाखाना सब पीला होजाताहै। लुहारकी दूकानपर जब हथियार या लोह पीटनेपर जो मैल जमा रहता है उसको कीटी कहते हैं उसको लेकर महीन पीस मासा १, गुड मासे ६ में मिलाय दिन ११ खावे तो पांडुरोग जाय । लोहेके मैलको तपाकर गोमूत्रमें बुझाकर ठीक कर लेवे रत्ती४, फिर शहद मासे ६, घी मासे ३ में मिलाकर चाटे तो पांडुरोग जाय। और असाध्य भी उदरशूल नष्ट हो यह परीक्षा किया हुआ है। अथवा त्रिफलेका चूर्ण मासे ६ शहदमें मिलाय खाय तो पांडुरोग जाय। दारुहल्दीका चूर्ण मासे ६ अथवा गुर्चका चूर्ण मासे ६ या कालीमिर्च मासे ६ शहदसे चाटे तो पांडुरोग जाय। गोमाके स्वरसका आंखोंमें अंजन करे तो कमलवाय दूर हो। घीगुआरपाठाके रसकी नास लेवे तो कमलवाय दूर हो। गेरू, आमला, हल्दी इनको बराबर बराबर पानीमें चन्दनकी तरह घिसकर आंखोंमें अंजन करे तो कामला दूर हो। कुटकी मासे ६, शक्कर मासे ६ मिलाकर पानीसे पीवे तो कामला जाय। पलासके फूल २ तोले रातको पानीमें भिगो दे सबेरे मलकर वही पानी पीवे। चन्दनको पानीमें

घिसे मासे २ फिर उसीमें आंबाहल्दी मासे ९ घिसे फिर शहद मासे ६ में मिलाकर चाटे दिन ७ भोजन दालभात । देवदालीके पत्तोंका रस नाकमें दो तीन बूंद टपकावे । लौग तोला १ को पानी आधीछटांकमें भिगोदे सबेरे मलकर वह पानी पीवे । कडुई तोंबी पीसकर दो तीन बूँद स्वरस नाकमें टपकावे । पके केलेकी एक फली लेकर दो टुकडे करें एक टुकडेमें चूना सीपीका मासे १ रखकर खाजावे ऊपरसे वह दूसरा टुकडा भी खाजावे तो कमलवाय अवश्य ही आराम हो । नींबूका अर्क दो तीन बूँद आंखोंमें टपकावे । कामलाका रोगी पीले कपडे पहने रहे । मेंहदीकी पत्ती तोले २ रातको छटांक भर पानीमें भिगोदो सबेरे मलकर छानकर पीजाओ । हर्रका चूर्ण मासे ६ या सफेद निसोतका चूर्ण मासे ६ या इन्द्रायणका चूर्ण मासे ६, गुड या शक्कर मासे६मिलाकर खाय तो पांडु कामला, हलीमक जाय ॥

अथ रक्तपित्त चिकित्सा ।

जब खखार, थूंक, डकार, वमन इत्यादिमें मुख आदि स्थानोंसे लोहू निकलता है उसको रक्तपित्त कहते हैं ।

रक्तपित्तवाला चांवलका भात, कोदोका भात, और मूंग,मोठ,मसुर,चना,की दाल खावे । अडूसेके पत्तोंका

स्वरस मासे६, शहद मासे६,मिसिरी मासे ६ मिलाकर पीवे तो दारुण रक्तपित्त अच्छा होवे और राजयक्ष्मा व खांसी भी दूर हो। बकराका खून तोला१, शहद तोला १ मिलाकर पीवे तो अत्यन्त रुधिरका गिरना दूर होवे। नाकसे लोहू गिरता होवे तो आंवलाको घीमें भूनकर महीन पीस मस्तक पर लेप करै अथवा शक्करका शर्बत नाकसे पीवे या अनारके फूलके स्वरसकी या दूबके स्वरसकी या आमकी गुठलीके रसकी या पियाजके स्वरसकी नाकमें नाश लेवे तो नाकसे रुधिर गिरना बन्द होवे। कोहके फलका रस मासे ६ या हर्रका चूरण मासे ६, शहद मासे ६ में मिलाकर खावे तो रक्तपित्त दूर हो, भोजन पचै अग्नि दीपन होवे, कफरोग, शूल, अतीसार, वमन दूर होवे॥ पीपरि ४ मासेको या पके हुये गूलरको या खजूरोंको या दाखोंको या फालसेको शहद मासे६से खावे तो रक्त पित्त दूर हो। अथवा पीपलकी लाख मासे२को शहद मासे ६ में मिलाकर खावे तो एक वारके चाटनेसे वमन सहित रक्तपित्तका नाश हो छातीका दर्द मिटै परन्तु इसमें घी मासे२ मिलाकर तब चाटै॥ अथवा १०८ बार धोये हुये गायके मक्खनमें कपूर मिलाकर माथेपर चुपड़े तो

रुधिर गिरना बन्द होवे । गोभीकी पत्ती मासे ६ पानीमें पीसकर खावे तो लोहूकी वमन व थूकनेमें जो लोहू आता है सो बन्द हो ॥ अफीम रत्ती २ खावे तो थूकनेमें लोहूका आना बन्द हो ॥ तुरई, लौकी, पालक, कुलफा, मसूर ये तरकारी खावे कचनारके पत्तोंका रस मासा६पीवे तो खून थूकना बन्द होवे ॥ सरफोंका औटाकर काढ़ा करें और१मासा या २ मासे लड़केको पिलावे तो लड़कोंके रुधिरके विकार सुर्ख बादी, रक्तपित्त सब दूर होवें ॥ अथवा रसौंत एक चनेके बराबर लड़केको खिलावे तो खूनके उपद्रव व रक्तपित्त दूर हों ॥

अथ अम्लपित्तकी दवा ॥

अन्न खानेकी इच्छा न हो और खट्टी डकारें आवें उसको अम्लपित्त कहते हैं वह दो प्रकारका है एक ऊर्ध्वगामी दूसरा अधोगामी ।

छोटी या बड़ी हर्रका चूर्ण मासे ६ में दाख मासे ६ या शहद मासे ६ या गुड़ मासे ६ मिलाकर ३ दिन खाय तो अम्लपित्त दूर हो अथवा संध्यासमय बिजौरानींबूका रस तोले २ पीवे तो अम्लपित्त जाय। अम्लपित्तवाला पुराने जौ, गेहूँ, मूँग खावे और शहद, मिसिरी, करेला, परवल, पेठा, बथुआ, केलाका फूल, कैथा, अनार, आमला, धनिया खावे ॥

अथ श्लेष्मपित्तचिकित्सा।

जब अन्नमें अरुचि और मस्तकमें दर्द और बार-बार वमन हो आलस्य हो मूर्च्छा हो शरीरमें पीडा हो उसको श्लेष्मपित्त कहते हैं। काकड़ासिंगी मासे ९ और परवल मासे९ दोनोंको पावभर पानीमें काढा करे जब एक छटाक रहे तब उतार छानकर पीवे तो श्लेष्म-पित्त दूर हो यह दीपन और पाचन भी है अथवा पीपरि छोटी मासे ३, हर्र मासे३, शक्कर मासे ३ ये सब मिला-कर प्रतिदिन सबेरे खावे दिन९तक श्लेष्मपित्त दूर हो।

अथ राजयक्ष्माचिकित्सा।

राजयक्ष्मा, क्षयी, बसीगर्मी तपेदिक ये इसके नाम हैं यह ६प्रकारका होता है और एक हजार दिनतक रोगी दवा करनेसे जीता है आगे नहीं। इस रोगमें चाव-लका भात, गेहूँकी रोटी, मूगकी दाल, बकरीका मांस, बकरीका दूध और मुनक्काकी शराब ये परम हित हैं। अर्जुनकी छाली, बरियारीकी जड, कौंछके बीज ये तीनों बराबर लेकर महीन पीस मासे६ बकरीके दूध पावभरमें मिलाकर फिर उसीमें शहद मासे ३ और शक्कर मासे ६ मिलाकर पीवे दिन १९ तो राजयक्ष्मा दूर हो बकरीका मांस या हिरनका मांस या कबूतरका मांस बकरीके दूधके साथ खावे तो यक्ष्मा दूर हो।

अंगूरकी शराब या मुनक्काकी शराब व महुवाहीकी शराब प्रतिदिन नियमसे दिनभरमें थोडा२बार२बार पीवे परन्तु एकदफेमें दो तोलेसे अधिक न पीवे तो यक्ष्मा दूर हो । अथवा सम्हालूकी जडकी छालि और पत्ते तोले २ लेकर आधासेर पानीमें काढा करे जब आधापाव रहे तब उतार कर कडाहीमें छान देवे और उसीमें घी गायका एक तोला डालदेवे जब सब जलकर केवल घी ही रह जावे तब ठंढा कर खावे इसी तरह २१ दिन खावे तो यक्ष्मा दूर हो । गायका ताजा मक्खन मासे ३,शहद मासे३,मिसिरी मासे३,सोनेका वरक मासा १ इनको मिलाकर खाओ मोरेश्वर वैद्य कहता है कि,महादेवजीकी कसम है यह दवा झूंठ नहीं है इससे राजयक्ष्मा अवश्य ही दूर होवे॥ मिसिरी १६ तोले वंशलोचन ८ तोले पीपरि छोटी ४ तोले इलायची छोटी दाने २ तोले दालचीनी १ तोला इन सबको महीन पीस छान मासे४या ६ शह-दके साथ थोडा घी या मक्खन मिलाकर दोनों समय खावे तो यक्ष्मा दूर हो.श्वास,खांसी,मन्दाग्नि, अरुचि, जीभकी कठोरता, कफरोग, पसलीकी शूल, ज्वर, मुखसे रुधिर थूकना,कंधा औरहाथ पैरोंकी दाहजलन मस्तकके रोग इतने रोग दूर हो यह बहुत उत्तम और अनेक बारका परीक्षा किया हुआ है इस औषधिकी

पूरी कदर राजपूतानाके जयपुर शहरमें तुमको देखनेमें आसक्तीहै । वाजारमें प्रतिदिन तुमको हजारों आदमी सितोपलादि चूरण खरीदते मिलैंगे इसका नाम सितोपलादि चूरण है हम इसको शर्बत अनार और शर्बत वनफ्साके साथ देते हैं तो अत्यन्त शीघ्र फायदा देताहै और रोगीको प्रसन्न करदेना है ॥

अथ बांसावलेह ।

अरूसेका रस एक सेर, सोनामाखी, मिस्रिरी, पीपर छोटी ये आठ आठ तोले डालकर मन्दाग्निसे पकावे जब गाढा होजाय तब शीतल होनेपर शहद तोले ८ मिलावे फिर एक तोला प्रतिदिन खावे तो खाँसी, कफ, राजयक्ष्मा और ववासीरको दूर करे यह अरूसेका अवलेह है ॥

अथ तालीसचूर्ण ।

तालीशपत्र, मिर्च, सोंठि, पीपरि छोटी, वंशलोचन ये क्रमसे भागवृद्धिसे लेवे जैसे तालीसपत्र १ तोला, मिर्च २ तोले, सोंठि ३ तोले, पीपरि ४ तोले और वंशलोचन ५ तोले लेवे और दालचीनी और छोटी-इलायचीके वीज मासे छःछः लेवे और मिसिरी सब औपधियोसे दुगुनी लेवे फिर सवको महीन कूट छानकर रख छोडे और मासे ४ या ६ सवेरे शहदके

साथ या दूधके साथ या बासी पानीके साथ या शक्करकी चाशनीके साथ या शक्करके शर्बतके साथ या शर्बत अनारके साथ या गुलबनप्साके साथ खावे तो श्वास, खांसी, अरुचि, छातीका दर्द, पांडुरोग, संग्रहणी, प्लीहा, ज्वर, राजयक्ष्मा इतने रोग दूर हों क्षुधा बढे यह उत्तम औषधि है कभी खाली नहीं जावे इसको दो महीनेतक बराबर खाना चाहिये तब पसीना छूट छूट कर हड्डी हड्डीके भीतरका ज्वर बाहर निकल पड़ता है, यह तालीस चूरण है ॥ पीछे जीर्णज्वरमें जो वसन्तमालती और लाक्षादि तेल लिख आये हैं वे भी यहां इस रोगमें खाने लगाने चाहियें ॥

अथ चन्दनादितैल ।

चन्दन, नख, कूट, मौरेठी, छारछरीला, पद्माख मँजीठ, चीड़, देवदारु, कचूर, इलायची, कमलकेशर पत्रज, बेल, खस, कंकोल, तगर, नेत्रवाला, हल्दी दारुहल्दी, सारिवा, कुटकी, लौंग, अगर, केशर, दालचीनी, रेणुका, जटामांसी ये प्रत्येक चार चार तोले लेकर पानी डाल महीन पीस ले और दहीका तोड़ ढाई सेर और पीपलवृक्षकी लाखका काढा कर रस निकाले सो रस सवासेर और तेल तिलोका तीन सेर सबको एक कड़ाहीमें साथ ही डालकर मिलादेवे

और मन्दाग्निसे पकने दे बाद तीन पहरके जब देखे कि, सब औषधि जलकर तेल ही रह गया है तब उतार छान कर बोतलमें भर रक्खे फिर इसकी मालिश बदनमें किया करे तो राजयक्ष्मा, ज्वर, उन्माद, मृगी, रक्तपित्त, माथेका दर्द, हृदयकी दाह, धातुके विकार और बालग्रहोको दूर करे। शरीरका रंग गोरा और चेहरा चमकीला और शरीरमें बल करे मन प्रसन्न रक्खे। यह चन्दनादि तैल है और कई बारका परीक्षा किया हुआ है।

अथ घी व तैलकी परीक्षा।

जब फेना उठने लगे तब घी सिद्ध हुआ जाने और जब फेना उठकर शान्त होजावे तब बिना फेनाका तैल सिद्ध हुआ जाने॥ शोच करना, क्रोध करना, स्त्रीप्रसङ्ग और निन्दा करना इनको रोगी बिलकुल छोड़ देवे॥

अथ दाखका आसव।

मुनक्का १०० तोले, मिसरी४०० तोले झडबेरीकी जड व बकली ५० तोले, धवईके फूल २५ तोले, सुपारी चिकनी, लोंग, जावित्री, जायफल, तज, इलायची बडी, तेजपात, सोंठि, मिर्च, पीपरि छोटी,

नागकेशर, मस्तंगी, कसेरू, अकरकरा, कूट ये हरएक तोले दश दश लेवे और सर्व औषधियोंसे चौगुना पानी लेवे फिर सबको मिट्टीके बर्त्तनमें डालकर उसीमें पानी डाल मुख बन्द कर १४ दिन जमीनके नीचे गाड देवे पन्द्रहवें दिन निकालकर भट्टी पर चढा अर्क खींचे फिर केशर तोले २, कस्तूरी मासा १ डाल कर कांचके पात्रमें रखदेवे और बाद तीन दिनके पीवे दिन भरमें तीन बार सबेरे दोपहर और शामको पीवे सबेरे ६ तोले पीवे दोपहरको आधापाव और शामको तीन छटांक पीवे गरिष्ठ और चिकना आहार सेवन करे तो वीर्यको बढावे कास, श्वास, राजयक्ष्माको दूर करे मनको अत्यन्त प्रसन्न करे बहुत थोडा मद लावे स्त्रियोंको वशीभूत करे लोकमें वे मनुष्य धन्य हैं जो नित्य दाखका आसव पीते हैं ॥

अथ दाखका अरिष्ट (शर्बत) ।

मुनक्का ५० तोले चौगुने पानीमें औटावे जब चौथाई रहिजावे तब छानकर उसमें २०० तोले गुड डाले और तज (तेजपात), इलायची, नागकेशर, मेहँदीके फूल, कालीमिरच, पीपरि छोटी, वायविडंग इन सबको एक एक तोले महीन पीसकर डाले और कड़ाहीमें डाल कर औटावे कडछीसे बराबर हिलाता

जाय जब पक्क जावे तब उतारकर शीशीमें भर रक्खे फिर शरीरका बल देखकर एक तोला या दो तोले या ४ तोले प्रतिदिन सबेरे खावे तो छातीका दर्द व अन्दरका घाव और राजयक्ष्मा, खांसी, श्वास अरुचि, तृषा, दाह, गलेके रोग, ज्वर, प्लीहा, मन्दाग्नि इत्यादि रोगोंको दूर करे यह दाखका शर्बत है और कईबारका परीक्षा किया हुआ है कभी निष्फल नहीं जाता है ॥

अथ लोह आसव।

शुद्ध लोहेका चूर्ण मासे १६, सोंठि, मिर्च, पीपरि छोटी, आँवला, हर्र, बहेडा, जवाँसा, बायबिडंग, चीता, नागरमोथा, ये प्रत्येक सोलहमासे लेकर महीन पीसकर शहद १२८ तोले और गुड२०० तोले पानी हजार तोले लेकर चिकने बर्त्तनमें भरकर उसीमें सर्व औषधियोंको डालकर मुख बन्द कर एक महीना धरतीमें खोदकर गाड देवे फिर निकालकर अर्क खैंच कर कांचके बर्त्तनमें भर रक्खे और १५ दिन बाद पीवे तो अग्निको दीप्त करे, पांडुरोग, सूजन, बायगोला, पेटके आठों रोग, बवासीर, १८ कोढ़, प्लीहा, आम, खाज़, खाँसी, श्वास, भगन्दर, अरुचि, संग्रहणी, छाती व हृदयके सर्वरोग, रुधिरविकार इत्यादिका नाश करे यह लोहेका आसव अर्थात् मद्य है उत्तम व परीक्षा किया हुआ है ॥

अथ उरःक्षत चिकित्सा।

हृदयके भीतर घाव होजाता है उसको उरःक्षत और यूनानीवाले सिलका रोग कहतेहैं यह मुश्किलसे आराम होता है ॥ जब छातीमें चीरनेके समान पीडा होती है और कलेजेमें घाव होजाता है जिससे हर समय ज्वर और खाँसी रहती है और खखारमें खून भी आता है राजयक्ष्मा अर्थात् तपेदिकमें और उरःक्षत अर्थात् सिलमें थोड़ा ही अन्तर है ॥

धानकी खीलें मासे ६ को दूध गायका कच्चा आधा पाव और शहद मासे ६ में मिलाकर पीवे और बाद दो घण्टेके मिसरी डालकर दूध कच्चा गायका पावभर पीवे ॥

अथ एलादि गुटिका।

छोटी इलायचीके बीज, तेजपात, दालचीनी, मुनक्का, पीपारि ये दो दो तोले ले और मिसरी, मौरेठी, खजूर, दाख, मुनक्का, ये चार चार तोले लेकर सबका बारीक चूर्ण कर शहद डालकर एक एक तोलेकी गोली बनावे फिर शरीरका बल देखकर आधी अथवा एक एक गोली रोज खावे तो खांसी, श्वास, ज्वर, हिचकी, वमन, मूर्च्छा, मद, भ्रम, रुधिर थूंकना, तृषा, पसलीका दर्द, अरुचि, राजरोग, प्लीहा, आम-

वात, स्वरभेद,क्षय इतने रोगोंको दूर करे. यह तृप्तिकर्ता और वीर्यवर्द्धक और रक्तपित्तनाशक है यह परीक्षा किया-हुआ है ॥

मुलतानी मिट्टी मासे६महीन पीसकर सवेरे साथ पानीके पीवे। पोस्ताका दाना तोले ३इसबगोल तोला १मुनक्का आधासेर पानीमें काढ़ा करे जब पावभर रहे तब छानकर कडाहीमें डाले और उसमें शक्कर आधासेर डाले और खसखस मासे ९ गोंद बबूरका मासे९ पीसकर उसीमें मिलादे फिर थोडी देर पकाकर उतार कर बोतलमें भर रक्खे और एक तोला रोज खावे तो उरःक्षत अर्थात् सिल अवश्यही आराम हो यह उत्तम औषधि कईबारकी परीक्षा की हुई है। एक केंकडेको लेकर मिट्टीकी छोटीसी हांडीमें रखकर हांडीका मुख बन्द करके हांडीपर कपडा व मिट्टी चढाकर उसको गजपुटमें या भाडमें या भट्टीके भीतर डाल देवे और खूब आग जलावे जब केंकडा जलकर भस्म होजावे तब निकाल वह राख शीशीमें भर देवे फिर प्रतिदिन ४ रत्ती साथ पानके खावे तो उरःक्षत (सिल) दूर हो। अथवा पीपलवृक्षकी लाख मासे ३ या ६ महीन पीस शहदसे खावे तो उरःक्षत अवश्यही दूर हो यह उरःक्षतके लिये बहुत उत्तम तथा परीक्षा की हुई औषधि है। अथवा सुर्ख फिटकरी मासा १ साथ

मिर्च, सज्जी सफेद, भुने चना ये तीनों बराबर लेकर अदरखके रसमें चना सम गोली बांधकर छायामें सुखावे फिर सवेरे शाम एक एक गोली खावे तो ५ प्रकारकी खाँसी दूर हो । सुहागा कच्चा मासे६,सुहागा भुना हुआ मासे ६, कालीमिर्च तोला १ इनको महीन पीसकर घीगुआरके रससे चनाके बराबर गोलियां बनाकर छायामें सुखा लेवे फिर सवेरे शाम एक एक गोली खावे तो सर्वप्रकारकी खाँसी दूर होवे ॥ पोरता तोला १ भून लेवे फिर उसमें कालानमक मासा १, कालीमिर्च मासा १ मिलाकर मासा१ प्रतिदिनमें दो तीन बार खाया करे इससे छोटे लड़कोंकी कफ व खांसी अवश्य ही दूर हो । सलगम पर कपडा मिट्टी लपेटकर धीमी आंचमें भूनले फिर निकालकर उसका रस मासे ६ निचोड कर उसमें मिसिरी मासे २ मिला कर सबेरे शाम दिन ५ तक पीवे तो खांसी दूर हो । पाखानेकी जगह पर दिनमें दो बार सरसोंका तेल लगा दिया करे इससे खांसीकी तकलीफ कम होजाती है । कौआकी बीट कपडेमें सींकर गलेमें लटकावे तो छोटे लड़कोंकी खांसी अवश्य ही दूर हो । कुचिला दाने२ को घी तोला १ में जलाकर कोयला करदेवे फिर वह राख रत्ती २ सबेरे पानमें खाया करे तो कफ व खांसी दूर हो । अमलतासका गूदा तोले १० और मिसिरी

तोले २० इन दोनोको कूट पीस कर रख छोडे और १ तोला रोज खावे साथ पानीके तो खांसी दूर हो छातीमें जो कफ भरा है वह हटे तबीयत हलकी हो और पाखानेमें कफ निकले। हालीम मासे ३ को शहद मासे ३ से चाटे तो खांसी दूर हो छातीका कफ हटे और पसलीका दर्द दूर हो। काकडासिंगी, अतीस, पीपरि छोटी, मौरेठी, गोंद बबूलका इन सबको मासे तीन तीन लेकर महीन पीस छान कर मासा १ शहद मासे २ से सबेरे चटावे तो इससे छोटे लडकोंकी खांसी व कफ अच्छा हो वमन दूर हो। काकडासिंगी तोला १ महीन पीस कर रत्ती ४ शहद मासा १ से प्रतिदिन सबेरे चटावे तो लड़कोंका कफ व खाँसी दूर हो और खरखर करना मिटै ताकत आवै लडका पुष्ट होवे। बडी मुनक्का १ उसके बीज निकाल कर उसमें काकडासिंगी रत्ती १ और दालचीनी रत्ती १ मिलाकर खिलावे इससे लडकोंकी सर्व प्रकारकी खांसी दूर हो कफ व खरखर करना दूर हो इससे बेहतर और दूसरी दवा लडकोंकी खांसी दूर करनेको नहीं है यह कई बारकी परीक्षा की हुई है। अपामार्ग अर्थात चिरचिराका खार रत्ती २ या ४ शहद मासे २ या पानमें रखकर खावे तो खांसी व कफ दूर हो

और कण्ठ व गले और छातीमें जो कफ भरा है सो भी हटै ॥

अथ चिरचिराखार बनानेकी विधि ।

चिरचिराको जडसे उखाड कर छायामें सुखाकर आग लगाकर भस्म कर देवे और वह राख एक बर्तनमें दूना पानी डालकर भिगोदेवे बाद दो पहरके दूसरे बर्तनमें वह राखका पानी धीरेसे छान लेवे फिर राखको फेंक देवे और एक घण्टे बाद वह साफ पानी धीरेसे कडाहीमें छान देवे और आगपर चढाकर मन्दाग्निसे जलने देवे जब सब पानी जलजावे एक बूंद भी न रहे तब कडाही उतार कर उसके भीतरसे लोहेके चाकूसे खुरच लेवे और शीशीमें रख छोडे बस यही चिरचिराखार है और यही सर्वप्रकारके खार बनानेकी तरकीब है इसी तरहसे जवाखार, चनाखार, थूहरखार, मूलीखार, केलाखार, कटाईखार तिलीखार इत्यादि बनते हैं परन्तु जो दरख्त बहुत बड़े हैं उनकी केवल पत्तियां ही लेकर छायामें सुखाकर भस्म करदेवे और फिर उक्त प्रकारसे खार बना लेवे जैसे अमिलीखार सहिंजनाखार इत्यादि । अमिलीके पत्ते तोले२का पावभर पानीमें काढा करे जब १ छटांक रहे तब उतार, छान ठंढा कर उसमें भुनी हींग रत्ती २ और सेंधानमक मासे ३ मिलाकर पीवे तो सर्व प्रकारकी खांसी दूर हो ।

एक बहेडा लेकर ऊपर उसके घी चुपड कर फिर ऊपर उसके दो अंगुल मोटा गोबर अथवा गेहूँका आटा लपेट देवे और सुखाकरआगमें डालदेवे जब पकजाय तब निकाल ठंढा कर भीतरसे बहेडा निकाल लेवे फिर उसी बहेडेकी बकलीको पीसकर रती २ मुखमें डाले तो पांचों प्रकारकी खांसी दूर हो परन्तु हमइसमें सांभरनमक पीसकर थोड़ासा और मिला लेते हैं यह उत्तम दवा है। अरूसेके पत्तोंका स्वरस मासे ६ में शहद मासे ६ मिलाकर फिर उसमें साँभरनमक मासा १ मिलाकर थोडा गर्म कर पीवे तो सर्व प्रकारकी खांसी ३ दिनमें दूर हो जब देखो कि, खांसी किसी दवासे नहीं रुकती तब इसको देओ यह अनेक बारकी परीक्षा की हुई दवा है। पहिलीही खुराकमें आधी खांसी रहजाती है परन्तु हम नमकको जगह पीपरि छोटी मासा १ पीसकर उक्त दवामें मिलाकर पिलाते हैं तो अधिक लाभ पाते हैं इससे मुखका खून गिरना और खांसी तथा श्वास भी बन्द होता है यह दवा कभी निष्फल नहीं जाती। सुहागा भुना हुआ १रत्ती या दो रत्ती बँगलापानमें रखकर खावे दिन ७ तो खांसी दूर हो सफेद कत्थाको महीन पीसकर अदरख या अरूसेके स्वरसमें चना सम गोली बांध-

कर छायामें सुखाले फिर १ या दो गोली पानमें रखकर खावे या बिना ही पानके खावे सर्व प्रकारकी खांसी दूर हो। अदरखका स्वरस मासे ६, शहद मासे ६, सांभर नमक मासा १ मिलाकर पीवे तो सर्वप्रकारकी खांसी दूर हो, गलेका कफ हटै और नाकसे जो कफ गिरता हो तो उसी समय सूख जावे॥ हिचकी ५ प्रकारकी हैं अन्नजा १, यमला २, क्षुद्रा ३, गंभीरा ४, महती५ बकरीके आधासेर दूधको खूब पकाकर उसमें सोंठि मासे ६ डालकर पीवे तो हिचकी दूर हो। बिजोरानींबूका रस तोले २ में सेंधानमक मासे तीन और मोरेठीका चूर्ण मासे २ डालकर पीवे तो सर्वप्रकार की हिचकी दूर हो। मोरेठी पिसी हुई मासे ४को अथवा पीपरि छोटी मासे ५ को शहद मासे ६ से चाटे तो हिचकी दूर हो। सांभरनमक, कालानमक, सेंधा नमक इनको तीन तीन मासे लेकर खावे तो हिचकी दूर हो। स्त्रीके दूधमें माखीकी बीटको पीसकर नाकमें तीनचार बून्द टपकावे अथवा सफेद चन्दनको स्त्रीके दूधमें घिसकर नासलेवे तोसब ... रकी हिचकी मिटै। काले उडद तोला १को चिल- ... रखकर धुआँ पीवे तो५प्रकार की हिचकी दूर हों ... १.९ की चंद्रिका की राख रती २, पीपरि छोटी मासा १, शहद मासे ६ से चाटे तो पांचों प्रकारकी

हिचकी और अत्यन्त घोर श्वास और अतिउग्र वमन-का शीघ्रही नाश हो। बहेडेकी बकली मासे ४ को शहद तोला १ से चाटे तो असाध्य भी हिचकी दूर हो और अतिउग्र श्वास भी दूर हो कालेधतूरेंकी जड़, पत्ते, फूल, फल सबको कुचिलकर चिलममें रखकर पीये तो हिचकी व श्वास दूर हो। सेंधानमकको पानी-में बारीक पीसकर नास लेवे तो ५ प्रकारकी हिचकी दूर हों। पीपलवृक्षकी लाखका काढा कर तीन चार बून्द नाकमें टपकावे तो सर्व प्रकारकी हिचकी दूर हों। गर्म गर्म घी आधापाव पीवे अथवा गर्म गर्म दूध गायका आधा सेर पीवे अथवा गर्म गर्म गन्नाका रस आधासेर पीवे तो पांचों प्रकारकी हिचकी दूर हो। हरापोदीना मासे २ शक्कर मासे २ मिलाकर मुखमें चाबे तो हिच-की दूर हो। नारियलकी गिरी रत्ती २ शक्कर रत्ती २ मिलाकर लड़कोंको देवे तो लडकोंकी हिचकी दूर हो अथवा रीठेकी माला बनाकर लडकोंके गलेमें पहिरावे तो सर्व प्रकारकी हिचकी लडकोंकी दूर हों। हिचकी वाले रोगीको कोई ऐसी बात सुनावे जिसके सुनतेही-उसको अत्यंत क्रोध अथवा शोक व रञ्ज हो अथवा ठण्ढे पानीका छींटा उसके मुखपर धोखेसे मारे अथवा श्वासको रोककर प्राणायाम करै अथवा वमन करै अथवा छींके लेवे अथवा मुद्गर दिलावे तो सर्व प्रकार-

की हिचकी दूर हों । कालीमिर्च २१ सौंफ मासे ९ कासनी मासे ९ इन सबको पीसकर खावे तो हिचकी दूर हो । गायकी नेनू तोले ३ मिसरी तोला १ मिलाकर खावे तो हिचकी दूर हो। कालीमिर्च आगपर रखकर उसका धुआँ नाकमें लेवे परन्तु हम मिर्चके साथ अजवाइन भी मिलाकर आगपर रखकर नाकमें धुआँ खिचवाते हैं तो अधिक लाभ पाते हैं । भोजन करनेके पीछे हिचकी पैदा हो तो वमन करदेवे।अथवा अनारकी कली, तुलसीकी पत्ती, दूब इनको बराबर लेकर बारीक पीसकर दो चार बून्द नाकमें टपकावे तो हिचकी दूर हो ॥

अथ श्वास चिकित्सा ।

श्वास, दमा, ऊब, और यूनानीमें जो कुन्नफ्स कहते हैं यह ५ प्रकारका है महाश्वास १, छिन्नश्वास २, ऊर्ध्वश्वास ३, तमकश्वास ४, क्षुद्रश्वास ५ ।

अदरखका स्वरस मासे ६ शहद मासे ६ मिलाकर पीवे तो श्वास खाँसी व कफ दूर हों । पेठाकी जडका स्वरस तोला १ या चूर्ण गर्म पानीसे पीवे तो श्वास खाँसी शीघ्रही दूर हों । गुड तोला १, तेल सरसोंका तोला १ इन दोनोंको हाथसे खूब मथकर खावे दिन ६० तो श्वास जडसे दूर हो । बेलपत्रका स्वरस

मासे ६, अडूसेके पत्तोंका स्वरस मासे ६,तेल सरसों का मासे ६ सबको मिलाकर पीवे दिन ७ तो उग्र श्वास दूर हो। शोधा हुआ आमलासार गन्धक मासे ३, काली मिर्च मासे ३ इनको गायके घी १ तोलासे चाटे या केवल गन्धकहीको चाटे तो ११ दिनमें श्वास व खाँसी व राजयक्ष्मा दूर हो॥

अथ गंधक शोधनेकी विधि।

आगपर किसी बटलोईको गर्म करो और उसमें पावभर घी डालो जब घी पककर ठीक होजाय तब आमलासारगन्धक आधापाव उसी घीमें डालदो वह डालतेही गलजावेगा फिर बटलोईको उतारकर एक बर्त्तनमें जो गायका कच्चा दूध आधासेर रक्खा है उसीमें बटलोईको उल्टादो कि, जिस्में बटलोईके भीतरका घी व गन्धक दूधमें गिरजावे वह दूधमें गिरतेही मोटी रोटीके समान जमजायगा फिर निकाल कर गर्मपानीसे धोकर कपडेमें पोंछकर रख छोडो और वह दूध व घी धरती खोदकर उसमें गाड देओ ताकि कुत्ता वगैरः कोई जीव उस जहरको पीकर हानि न उठावे। बडी सीपीको जलाकर अदरखके रसमें खरल कर चनाके बराबर गोलियां बनाकर छायामें सुखावे फिर १गोली सवेरे रोज खावे तो श्वास दूर हो। आकका

की हिचकी दूर हों । कालीमिर्च २१ सौंफ मासे ९ कासनी मासे ९ इन सबको पीसकर खावे तो हिचकी दूर हो । गायकी नेनू तोले ३ मिसरी तोला १ मिलाकर खावे तो हिचकी दूर हो। कालीमिर्च आगपर रखकर उसका धुआँ नाकमें लेवे परन्तु हम मिर्चके साथ अजवाइन भी मिलाकर आगपर रखकर नाकमें धुआँ खिचवाते हैं तो अधिक लाभ पाते हैं । भोजन करनेके पीछे हिचकी पैदा हो तो वमन करदेवे।अथवा अनारकी कली, तुलसीकी पत्ती, दूब इनको बराबर लेकर बारीक पीसकर दो चार बून्द नाकमें टपकावे तो हिचकी दूर हो ॥

अथ श्वास चिकित्सा ।

श्वास, दमा, ऊब, और यूनानीमें जीकुन्नफ्स कहते हैं यह ५ प्रकारका है महाश्वास१, छिन्नश्वास२, ऊर्ध्वश्वास ३, तमकश्वास ४, क्षुद्रश्वास ५ ।

अदरखका स्वरस मासे ६ शहद मासे ६ मिलाकर पीवे तो श्वास खाँसी व कफ दूर हो । पेठाकी जडका स्वरस तोला १ या चूर्ण गर्म पानीसे पीवे तो श्वास खाँसी शीघ्रही दूर हो । गुड तोला १, तेल सरसोंका तोला १ इन दोनोंको हाथसे खूब मथकर खावे दिन ६० तो श्वास जडसे दूर हो । बेलपत्रका स्वरस

मासे ६, अडूसेके पत्तोंका स्वरस मासे ६,तेल सरसों का मासे ६ सबको मिलाकर पीवे दिन ७ तो उग्र श्वास दूर हो। शोधा हुआ आमलासार गन्धक मासे ३, काली मिर्च मासे २ इनको गायके घी १ तोलासे चाटे या केवल गन्धकहीको चाटे तो ११ दिनमें श्वास व खाँसी व राजयक्ष्मा दूर हो ॥

अथ गंधक शोधनेकी विधि ।

आगपर किसी बटलोईको गर्म करो और उसमें पावभर घी डालो जब घी पककर ठीक होजाय तब आमलासारगन्धक आधापाव उसी घीमें डालदो वह डालतेही गलजावेगा फिर बटलोईको उतारकर एक बर्तनमें जो गायका कच्चा दूध आधासेर रक्खा है उसीमें बटलोईको उल्टादो कि, जिस्में बटलोईके भीतरका घी व गन्धक दूधमें गिरजावे वह दूधमें गिरतेही मोटी रोटीके समान जमजायगा फिर निकाल कर गर्मपानीसे धोकर कपडेमें पोंछकर रख छोडो और वह दूध व घी धरती खोदकर उसमें गाड देओ ताकि कुत्ता वगैरः कोई जीव उस जहरको पीकर हानि न उठावे। बडी सीपीको जलाकर अदरखके रसमें खरल कर चनाके बराबर गोलियां बनाकर छायामें सुखावे फिर १गोली सवेरे रोज खावे तो श्वास दूर हो। आकका

पत्ता १,कालीमिर्च२५कूटपीसकरउडदके बरावर गोली बनावे जवानको ६ गोली और बच्चेको १ गोली सवेरेके समय देवे तो श्वास दूर हो। रीठाकी मींगी मासे ९ सवेरे दिन १५ तक खावे तो श्वास दूर हो। अरूसे के बीज,नकछिकनी, बंगलापान ये तीनों बराबर लेकर आगपर भूनकर फिर सबको महीन पीसकर रत्ती ४ बंगलापानमें रखकर रोज सवेरे खावे तो अतिउग्र श्वास दूर हो फायदा अजीब दिखावे रोगी आश्चर्य करे। आकके पीले पत्ते जो आपसे दरख्तसे गिरगये हों एक सेर लेकर उन पर चूना तोला १,सेंधानमक तोला १ दोनोंको पानीमें खूब बारीक पीसकर पत्तोंपर दोनों तरफ लेपकर छायामें सुखा लेवे फिर एक हांडीमें सब पत्ते भरकर मुख बन्द करदेवे और कंडोंकी आंच १ पहरकी देकर भस्म कर लेवे फिर ठंडा होनेपर निकाल कर वह भस्म रत्ती१पानमें रखकर खावे तो श्वासका रोग दूर हो। अथवा आकके शिरेपरका सबसे छोटा कोमल पत्ता एक पानमें रखकर खावे बाद ३ दिनके आधापत्ता हररोज बढाते जावें तो४०दिनके सेवनसे श्वास अवश्यही दूर हो।इलायची छोटीके बीज मासा १मालकंगनीमासा१दोनोंको बिना चबिलायेही निगलजावे तो११दिनमें दमा दूर हो। अदरखका स्वरस पियाजका रस, लहसनका रस, घीकुआरका रस,

शहद ये सब एक एक छटांक लेकर एक शीशीमें भरकर मुख बंद कर धरतीमें तीन दिन गाड देवे चौथे दिन निकालकर मासे४प्रतिदिन खाया करे तो २१ दिनमें दमा जडसे जाता रहे. विसखोपरेकी जड मासा १ पानमें रखकर रोज सबेरें खावे तो२१दिनमें दमा दूर हो। ईसबगोल तोला १ सबेरे व शामको बराबर चार महीनेतक खावे तो सर्वप्रकारका असाध्य भी दमा जडसे जाता रहै यह कईबारका परीक्षा किया हुआ है।समुन्दरफल २५ और पीपरि छोटी ५० लेकर दोनोंको आगमें किसी बर्त्तनमें रखकर भस्म करे फिर वह भस्म मासा १ पानमें रखकर रोज सबेरे खावे तो तो १५ दिनमें दमा दूर हो। मकडीका जाला रत्ती १ गुड मासा १ में मिलाकर खावे तो दमा शीघ्रही आराम हो परन्तु यह गर्मी बहुत करता है। चिरचिरेका खार रत्ती २, या थूहरका खार रत्ती २, या आकका खार रत्ती २, या तमाखुका खार रत्ती २ पानमें रखकर खावे या शहद मासा १ से खावे तो दमा दूर हो गले व छातीमें जो कफ भरा है सो अलग हो। जमालगोटा १ छीलकर मीगी उसकी चिरागमें जलावे जब धुआं निकलना बन्द होजावे और वह जलकर राख होजावे तब पीसकर चार खुराक करे और प्रतिदिन सवेरे १ खुराक बंगलापानमें रखकर खावे तो छाती व गलेका

कफ दूर हो दमा दूर हो । फिटकरी भुनी हुई तोले २, मिसरी तोले २ दोनोंको पीसकर मिलाकर मासा १ या दो सबेरे खावे तो दमा दूर हो । थूहरकी मोटी लकडी एक हाथ लम्बी लेकर एक तरफसे पोली करै उसमें फिटकरी एक छटांक रखदेवे फिर कपडमिट्टी चढाकर कंडेकी आगमें जलादे फिर ठंढा होनेपर निकालकर उसमेंसे फिटकरी निकालकर पीसकर शीशीमें रख छोडे फिर हररोज रत्ती २ पानमें रखकर खावे दिन १५ तो दमा दूर हो । अथवा मदारकी जड तोले ३, अजवाइन तोले२,गुड तोले ५ सबको मिलाकर गोलियां जंगली बेरके बराबर बनाले फिर प्रतिदिन दो गोलियां सबेरे खावे तो दमा दूर हो ।-पिया बांसाकी जड छायामें सुखाकर महीन पीसकर मासे४ प्रतिदिन सबेरें खाया करे तो दमा दूर हो।अथवा बारहसींगाका सींग जलाकर राखकरे फिर वह राख मासा १ शहद मासे ३ में मिलाकर खावे और प्रतिदिन १ मासा बढाता जावे जब एक तोलातक पहुंचे तब न बढावे तो दमा दूर हो यह परीक्षा कियाहुआ है,काला नमक मासे २ महीन पीसकर रातको सोनेके समय फांक लेवे और हररोज आधा मासा बढाता जावे जब मासे ६ होजाय तब उतनाही रोज खाया करे अगर प्यास बहुतही जोरसे लगे तो गर्म पानी पीवे तो २१

दिनमें दमा जडसे जाता रहे। तमाखूके हरे पत्तोंका स्वरस मासे ६ और गुड मासे ६ एकहीमें खूब मिलाकर रक्खे बाद तीन दिनके एक एक तोला दोनों वक्त खावे तो ५ दिनमें श्वास बिल्कुल आराम हो परंतु कमजोर और बूढेको यह दवा न दे क्योंकि कमजोरको इस दवासे वमन व दस्त आने लगते हैं। अलसी मासे ३ और इस्पन्द मासे३दोनोंको पीसकर शहद १ तोलामें मिलाकर प्रतिदिन खावे अथवा भुनी हुई अलसी तोले ३ कालीमिर्च तोला १ दोनोंको मिलाकर रख छोडे और उसमेंसे मासे ६ शहद तोला १॥ से प्रतिदिन खावे तो श्वास जाय छाती व गलेका कफ दूर हो परन्तु कोई वैद्य मिर्च न मिलाकर उतना पोदीना मिलाते हैं। सुहागा भुना तोले३ शहद तोले४में मिलाकर रख छोडे और सोते समय रातको मासे ३ खाया करे तो १५ दिनमें श्वास दूर हो। गेहूंका सत १छटांक,शक्कर आधापाव,पोस्ताका दाना १ तोला,मीठे कद्दू (लौकी) के बीजोंकी मींगी तोला १, पानी आधासेर, सबको कडाहीमें डालकर लपसी बनाकर खाया करे तो श्वास खांसी, कलेजेका दर्द, पुराना ज्वर, आंतोंकी गांठ, इतने रोग दूर हो।शरीरमें ताकत आवे और दिमागको तरावट व ताकत पहुँचे। रेवन्दचीनी,एलुआ, सुहागा

भुना सबको बराबर लेकर कसौंदीके स्वरसमें चनेके बराबर गोलियां बनाकर छायामें सुखाकर एक गोली सवेरे १ शामको खाया करे तो श्वास दूर हो।अथवा एलुआ और कालीमिर्च दोनों बराबर लेकर अदरखके स्वरसमें उड़दके बराबर गोली बांधे फिर १ या दो गोली सवेरे खाया करे तो दमा दूर हो । नीलाथोथा मासा १;गुड़ मासा १ में गोली बॉधकर निगल जावे परन्तु सात दिनतक खावे प्रथम तीन दिनतक गर्मी घबराहट और जलन और दस्त व कै होवेगी जब बहुत ही बेचैनी मालूम हो और दस्त व कै बहुत हों तो मूगकी दाल चावलकी खिचडी बनाकर आधापावघी डालकर खावे बाद तीन दिनके दस्त व वमन व बेचैनी सबदूरहो जावेगी फिर चौथे दिनसे कोई भी तकलीफ न होगी और सातवें रोज बीस बरसका भी पुराना दमा जडसे जाता रहेगा यह बहुत उत्तम व परीक्षा की हुई औषधि है इसको बूढे व कमजोरको नही खिलाना चाहिये । भटकटैयाकी जड मासे ६ लेकर उसके दो टुकडे करे एक टुकडेको सॉभरनमक मासे दोमें मिलाकर चबाजावे फिरदूसराटुकडा भी ऊपरसे चबाजावे तो इससे वमन होगी और सब कफ निकल जावेगा और दमा आराम होगा।चूहेका पित्ता गुडमें लपेटकर

निगल जावे तो३दिनमें दमा जडसे दूर हो।थूहरका दूध मासे२को आटामें मिलाकर टिकिया बनाकर आगमें भूनले फिर जवान आदमीको आधी टिकिया खिलावे इसके खानेसे दस्त होंगे जब सात दस्त होचुकें तब दही पावभर खिलावे अगर इससे दस्त बन्द न होवें तो गायका मक्खन २१ बारका धुला हुआ छटांक एक या दो खिलावे फिर आधी टिकिया वह भी खिलादे और तीन दिनतक मुलायम भोजन खानेको देवे तो ७ दिनमें दमा जडसे दूर हो परन्तु बदनमें हवा न लगनेदे। सेंधानमक मासे २ को खूब बारीक काजलके समान महीन पीसकर गायके घीमें मिलाकर बीच छातीमें कंठतक मालिश करे तो कफ हटै दमा शान्त हो अथवा कालेधनूरेके बीज प्रथम दिन ५ खावे फिर प्रतिदिन एक बीज अधिक करे जब ३० बीजतक होजावें तब प्रतिदिन एक बीज कम करे तो दमा जडसे जाता रहे। तुलसीका स्वरस मासे२ काली मिर्च पिसीहुई मासा १ घी मासे ४ सब मिलाकर खावे तो सर्व वात विकारोंको दूर करे।

अथ स्वरभेदचिकित्सा।

जब आवाजमें भेद पडजाता है तब उसको स्वरभेद व गला बैठ जाना व आवाज पड़जाना कहते हैं।

वह ६ प्रकारका है वातका १, पित्तका २, कफका ३, सन्निपातका ४, क्षयका५, मेदका ६. ब्राह्मी, बच,हर्र, अडूसा, पीपरि छोटी ये सब बराबर लेकर महीन पीस मासे ४ शहद मासे ६ से खावे तो स्वरभेद दूर हो सरसोंके तेलमें भिगोया हुआ कत्था मासा १ मुखमें धारण करे तो स्वरभेद मिटे । पीपारि छोटी और हर्र छोटीअथवा सोंठि और हर्र इनको बराबर लेकर थोडा थोडा बार बार मुखमें धारण करे तो स्वरभेद दूर हो। बहेडा, सेंधानोन, पीपारि छोटी इनको बराबर लेकर मासे ६ गायकामट्ठा एक छटांकसे दिन १५ पीवे अथवा हर्र छोटी मासे ६ महीन पीसकर गायके पावभर दूधसे खावे दिन ७ तो स्वरभंग मिटे, अथवा आंवलेको उक्तरीतिसे खावे । मूलीके बीज मासे ४ पीसकर गर्मपानीसे पीवे तो स्वरभेद दूर हो । गन्नाको भूनकर चूसे या मुखमें कबाबचीनी धारण करे रहे तो स्वरभेद मिटे । अथवा चिरागका गुल एक छटांक पानीमें डालकर पीवे तो सिन्दूर खानेसे जो आवाज मारी गई है उसको ७ दिनमें दुरुस्त करै गन्नाके रसमें या गुडके शर्बतमें चांवल पकाकर रातको सोनेके पहिले खूब भरपेट खावे और एक घण्टे बाद गर्म पानी आधापाव पीवे ऐसा ३ दिन करे तो स्वरभेद मिटे । पानकी जड जिसको कुलीजन कहते हैं मुख-

में धारण करे तो स्वरभेद मिटै। अथवा बडी बेरीके पत्ते तोले २ पानीसे पीसकर घीमें भूनकर सेंधानमक अनुमान माफिक डालकर पीवे दिन७तो स्वरभेद मिटै।

अथ अरोचक चिकित्सा।

अन्न खानेमें इच्छा ही नहीं रहती उसको अरुचि व अरोचक कहते हैं वह ५प्रकारका है वातका १, पित्तका २, कफका ३, त्रिदोषका ४, आगन्तुज५.अदरख का स्वरस मासे ६ शहद मासे ६ से चाटे अथवा अदरख मासा १ सेंधानमक मासा१भोजन करनेके प्रथम मुखमें चबाकर फिर तुरन्त ही भोजन करै तो अरोचक दूर हो। अथवा पकी अमिली तोले २ को एक छटांक पानीमें घोल दे फिर उसमें कालानमक मासे ३ और पोदीनाकी पत्ती ४० और कालीमिर्च मासे२ डालकर खावे तो अरोचक दूर हो अथवा पके अनारका स्वरस मासे ६ शहद मासे ६ मिलाकर पीवे तो अरोचक दूर हो परन्तु हम इसमें कालानमक मासे २ और मिलादेते हैं॥

अथ छर्दि चिकित्सा।

जब खाईहुई वस्तु मुखसे निकलती है उसको छर्दि वमन, वान्त, के, उल्टी, रद्द कहते हैं। वह ५ प्रकार की है वातकी १,पित्तकी २, कफकी ३, त्रिदोषकी४,

आगन्तुज ५.बडी हर्रकी बकली मासे ४ या ६ महीन पीसकर शहद मासे ६ में मिलाकर चाटे तो वमन दूर हो यह वृन्द ऋषीश्वरने कहा है। अथवा गुर्च तोला १ को कुचलकर रातको एक छटांक पानीमें भिगो दे सबेरे मथकर वह पानी छानकर उसमें शहद मासे ६ डालकर पीवे तो पाँचों प्रकारकी दुर्निवार भी छर्दि दूर हो।पीपलवृक्षकी छाली या लकडीको आगमें जलाकर राख करै और वह राख पानीमें बुझालेवे फिर थोडी देर केबाद रक्खा रहनेके उस राखमेंसे पानीको छानकर शीशीमें भरलेवे फिर उसमेंसे दो दो तोले बारबार पीवे तो सर्वप्रकारकी छर्दि व तृषा दोनों बन्द हों यह कईबारका परीक्षा कियाहुआ है कभी खाली नहीं जाता। पित्तपापडा या नागरमोथा तोले २ लेकर एकसेर पानीमें काढा करे जब आधासेर रहजावे तब छानकर थोडा थोडा बारबार पीवे तो छर्दि दूर हो।आमकी गुठलीकी मींगी तोला १, बेलगिरी तोला १ दोनोंका एक सेर पानीमें काढा करे जब आधासेर रहे तब उतार छान ठंढा कर उसमें शहद तोला १, शक्कर तोला १ मिलाकर थोडा थोडा बारबार पीवे तो छर्दि दूर हो और विरेचन (दस्त)भी बंदहो यह "आत्रेय" मेंलिखा है और हमारा परीक्षा कियाहुआ है। बिजौरानींबूका स्वरस मासे ६, शहद मासा १, पीपरि छोटीका चूर्णमासा १ इन सबको

मिलाकर बारबार पीवे तो वमन दूर हो यह "सुश्रुत" में लिखा है करंजके कोमल पत्तोंमें सेंधा नोन और नींबूका रस अनुमान माफिक मिलाकर खावे तो वमन दूर हो यह "सारसंग्रह" में लिखा है। केलाके कन्दका स्वरस मासे ६, शहद मासे ६ मिलाकर पीवे तो वमन दूर हो यह "योगरत्न" में लिखा है। मक्खीकी बीट रत्ती २, शहद मासे ३ से चाटे तो वमन दूर हो यह "वृन्द" में लिखा है करंजके बीजोंको अग्निमें थोडा भून लेवे फिर मींगी निकालकर उसके तीन टुकडे करलेवे फिर एक एक टुकडेको मुखमें डालकर आधे घंटे तक चाबा करे तो घोर वमन दूर हो। मरोरफली मासे ६ महीन पीस कर चांवलोंके धोवनसे पीवे तो वमन दूर हो।

अथ चांवलोंके धोवनकी विधि।

पावभर चांवल लेकर दो सेर पानीमें एक पहरतक भिगोदे फिर मलकर पानी छान ले यही चांवलोंका धोवन सर्वत्र काममें आता है॥

अथवा रीठाकी मींगीको एक घण्टेतक पानीमेंभिगोदे जब मुलायम होजावे तब थोडा थोडा चबाकर खावे ज्योंही उसका रस कंठमें पहुंचे त्योंही उसी क्षण वमन दूर हो यह अनेक बारका परीक्षा किया हुआ है यह अपने मित्र चौबे लक्ष्मण प्रसादजीको

मैंने बताया । सांठीके चांवलोंका धोवन आधा पाव पीवे तो शराब पीनेसे जो वमन होती है सो दूर हो। अमिलीके छोटे छोटे चियां (फल) को एक एक चना बराबर मुखमें रखकर चाबे तो वमन तथा चढ़े ज्वरमें जो वमन होतीहै सो भी दूर हो यह कईबारका परीक्षा किया हुआ है । अथवा पोदीनाकी पत्ती ४० कालीमिर्च ५, कालानमक मासे २ इलायची छोटी भुनी हुई ४ जारिश्क या अमिली कच्ची या पक्की मासे ३ इन सबको पानीसे महीन पीसकर थोडा थोडा बारबार चाटे तो सर्व प्रकारकी छर्दि दूर हो यह अनेक बारका परीक्षा किया हुआ है । अरुचिको तो जडसे नाश कर देता है और खानेमें अत्यन्त सुस्वादु है कभी निष्फल नहीं जाता ॥

अथ तृष्णा चिकित्सा ।

प्यास ७ तरहकी है-वातकी १, पित्तकी २,कफकी ३, घावकी ४, क्षयीकी ५,आमकी ६, भोजनकी ७,

शहदका कुल्ला दोघडी तक मुखमें रक्खे तो दाहव प्यासदूर हो। बिजौरानींबूका अर्क एक तोला,घीमासा १, सेंधानमक पिसा हुआ मासा १ सबको मिलाकर मस्तक पर लेप करै तो प्यास दूर हो, ठंढे पानी एक सेरमें एक छटांक शहद डालकर पिलावे और फिर वमन,करडाले तो दारुण प्यासका नाश हो।बड़े भारी

घावके लग जानेसे जो प्यास पैदा हुई हो तो बकरेका ताजा खून पावभर पीवे क्षयीसे जो प्यास उपजीहो तो गायके दूधमें पानी मिलाकर पीवै या मौरेठी मासे ६ १ छटांक पानीमे बांट छानकर पीवे तो प्यास दूर हो। अथवा पीपल वृक्षकी राखका पानी कि, जिसकी विधि छर्दिचिकित्सामें लिख चुका हूँ, पीनेसे अतिउग्र प्यास तुरन्त ही मिटे। कमलगट्टोंकी मींगी तोले २ के चार चार टुकडे करके आधासेर पानीमें डालदे बाद १ घण्टेके वही पानी थोडा थोडा बार बार पीवे तो लेड़कोंकी प्यास दूर हो। नीमकी कोमलपत्तीपाव-भर और पंडुआमिट्टी पावभर दोनोंको बांटकर चार गोला बनावे और आगमें लाल कर दो सेर पानीमें बुझा देवे तो फिर वही पानी थोडा थोडा बार बार पीने-को देवे तो अति उग्र प्यास दूर हो। आंवला १ और उससे आधा कत्था सफेद दोनोंको बांटकर गोली बनाकर मुखमें धारण कर रक्खे तो प्यास दूर हो। अथवा चांदी या सोनेको गर्म कर पानीमें बुझा देवे फिर वह बुझाहुआ पानी बार बार पीवै तो प्यास दूर हो। अथवा १ आलूबुखारा लेकर आगमें थोडासा भून लेवे फिर उसमेंसे थोडासा मुखमें धारण कर धीरे धीरे रस चूसा करे तो सर्व प्रकारकी प्यास दूर हो यह परीक्षा कियाहुआ है॥

मैंने बताया । सांठीके चांवलोंका धोवन आधा पा
पीवे तो शराब पीनेसे जो वमन होती है सो दूर हो
अमिलीके छोटे छोटे चियां (फल) को एक ए
चना बराबर मुखमें रखकर चाबे तो वमन तथा च
ज्वरमें जो वमन होतीहै सो भी दूर हो यह कईबारक
परीक्षा किया हुआ है । अथवा पोदीनाकी पत्ती ४
कालीमिर्च ५, कालानमक मासे २ इलायची छो
भुनी हुई ४ जरिश्क या अमिली कच्ची या पक्की मा
३ इन सबको पानीसे महीन पीसकर थोडा थो
बारबार चाटे तो सर्व प्रकारकी छर्दि दूर हो यह अने
बारका परीक्षा किया हुआ है । अरुचिको तो जड
नाश कर देता है और खानेमें अत्यन्त सुस्वादु है कभ
निष्फल नहीं जाता ॥

अथ तृष्णा चिकित्सा ।

प्यास ७ तरहकी है-वातकी १, पित्तकी २, कफक
३, घावकी ४, क्षयीकी ५, आमकी ६, भोजनकी ७
शहदका कुल्ला दोघडी तक मुखमें रक्खे तो दाह
प्यासदूर हो। बिजौरानींबूका अर्क एक तोला, घीमास
१, सेंधानमक पिसा हुआ मासा १ सबको मिलाकर
लेप करे तो प्यास दूर हो, ठंढे पानी एक
शहद डालकर पिलावे और फिर
...रुण प्यासका नाश हो।बड़े भारी

घावके लग जानेसे जो प्यास पैदा हुई हो तो बकरेका ताजा खून पावभर पीवे क्षयीसे जो प्यास उपजीहो तो गायके दूधमें पानी मिलाकर पीवै या मोरेठी मासे ६ १ छटांक पानीमें बांट छानकर पीवे तो प्यास दूर हो। अथवा पीपल वृक्षकी राखका पानी कि, जिसकी विधि छर्दिचिकित्सामें लिख चुका हूँ, पीनेसे अतिउग्र प्यास तुरन्त ही मिटे। कमलगट्टोंकी मींगी तोले २ के चार चार टुकडे करके आधासेर पानीमें डालदे बाद १ घण्टेके वही पानी थोडा थोडा बार बार पीवे तो लेडकोंकी प्यास दूर हो। नीमकी कोमलपत्तीपावभर और पंडुआमिट्टी पावभर दोनोंको बांटकर चार गोला बनावे और आगमें लाल कर दो सेर पानीमें बुझा देवे तो फिर वही पानी थोडा थोडा बार बार पीनेको देवे तो अति उग्र प्यास दूर हो। आंवला १ और उससे आधा कत्था सफेद दोनोंको बांटकर गोली बनाकर मुखमें धारण कर रक्खे तो प्यास दूर हो। अथवा चांदी या सोनेको गर्म कर पानीमें बुझा देवे फिर वह बुझाहुआ पानी बार बार पीवे तो प्यास दूर हो। अथवा १ आलूबुखारा लेकर आगमें थोडासा भून लेवे फिर उसमेंसे थोडासा मुखमें धारण कर धीरे धीरे रस चूसा करे तो सर्व प्रकारकी प्यास दूर हो यह परीक्षा कियाहुआ है॥

अथ मूर्च्छा चिकित्सा ।

जब मनुष्य बेहोश होजाता है तब उसको मूर्च्छा, जोफ,गस कहते हैं वह ६ प्रकारकी है वातकी १, पित्तकी २, कफकी ३, लोहूकी४, मदिराकी ५, विषकी ६ कपूर मासा १, चन्दन मासे ६ घिसकर मस्तकपर लेप करै तो बेहोशी दूर हो परन्तु हम गुलाबके अर्कमें उक्त दोनों चीजैं घिसकर लगवाते हैं । ठंडे पानीके छींटे मुखपर मारे और पंखेपर पानी छिडककर पंखा करे अथवा थोडी देर तक नाक और मुखको हाथसे बन्द रखे तो मूर्च्छा दूर हो । लोबानका धुंआं सूंघे या खीरा अथवा खीराका अतर सुंघावे तो मूर्छा दूर हो अथवा कौंछकी सूखी फलीको शरीरमें रगड देवे तो मूर्छा दूर होकर होशमें आजावे तब सारे शरीरमें गायका घी खूब मालिश करे तो कौंछका विष दूर हो जब किसी प्रकारसे मूर्छा दूर न हो और वह रोगी बडीदेर तक मेरे पुरुषकी तरह बेहोश पडा रहै तो इस रोगीको संन्यास कहते हैं तब इस रोगके दूर करनेके लिये रोगीके शरीरमें कई जगह नखोंसे चुटकी काटै और सुईकी नोक थोडी थोडी कई जगह शरीरमें चुभोवे और रोम उखाडे और दांतोंसे काटे तो संन्यास रोग दूर हो रोगी होशमें आवे । विष खानेसे मूर्छा होवे तो संखिया अफीम वगैरः जो

विष खाया हो उसके दूर करनेवाली औषधियां पि-लावे जो विषचिकित्सामें लिखी हैं वहां देख लेना ॥

अथ भ्रम चिकित्सा।

जब शरीर तो चैतन्य रहे परन्तु ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय मूर्च्छित हों और उस रोगीको धरतीआकाश सब वस्तु चाककी तरह घूमती हुई मालूम हों और यह भी मालूम हो कि, मैं भी घूमता हूँ, तो उस रोगको भ्रम व घुमेर व घुमनी कहते हैं।

लालरंगके जवांसा तोले २ का पावभर पानीमें काढ़ा करे जब एक छटांक रहे तब उतार छान ठंढा कर उसमें गायका घी आधी या एक छटांक डालकर पीवे तो ३ दिनमें भ्रम व घुमनी दूर हो। बारियारीके बीज मासे ६, मिसरी तोला १ मिलाकर खावे तो ५ दिनमें घुमनी दूर हो। आंवला, हर्र, बहेडा इन तीनों की बकली मासा तीन तीन लेकर महीन पीस छान शहद तोला १ में मिलाकर खावे तो ७ दिनमें घुमनी दूर हो। अथवा अदरख मासे ३ गुड़ मासे ६ मिला-कर खावे तो ७ दिनमें भ्रम दूर हो।

अथ तन्द्रा चिकित्सा।

निद्रावाले पुरुषकी तरह शरीरमें घोर आलस्य होवे और जम्हाई आवें, आंखोके पलक बन्द रहैं कुछ

थोडेसे खुलें बड़े जोरसे पुकारनेपर पलक खोले फिर आलस्यकी अधिकतासे तुरन्तही पलक बन्द करले उसको तन्द्रा कहते हैं। इस तन्द्रा और निद्रामें यह अन्तर है कि, निद्रावाले पुरुषको अगर पुकारो तो उसका आलस्य दूर होकर तुरन्त ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां अपने होशमें आजाती हैं परन्तु इस तन्द्रामें बहुत बहुत पुकारनेपर भी उन इन्द्रियोंको होश व ज्ञान नहीं होता यद्यपि बहुत जोरसे चिल्लाने पर वह तन्द्रा वाला पुरुष आंखें खोल देता है मगर तुरन्त ही वही बेहोशी आजाती है ॥

घोड़ेके मुखमें जो फेना छूटता है उसमें कालीमिर्च घिसकर दोनों आंखोंमें अंजन करे तो तन्द्रा दूर हो। अथवा सेंधानोंन, सहिंजनेके बीज, सरसों, कूट ये चारों चीजें बराबर लेकर बकरीके मूत्रमें महीन पीस नाकमें नास देवे तो अतिउग्र तन्द्रा दूर हो यह परीक्षा किया हुआ है ॥

अथ मदात्यय चिकित्सा।

भूखमें, प्यासमें, क्रोधमें, भयमें, कसरत करनेके पीछे, शोकमे, मल, मूत्र इत्यादि १४ वेगोंके वेगमें, घाव लग जानेके पीछे जो नशा लानेवाली कोई भी शराब, भाँग, गाँजा, चरस, अफीम, संखिया, धतूरा

इत्यादिवस्तु खाई जावे अथवा नित्यप्रति नशावाली कोई चीज कईबार अधिकताके साथ खाई जावे तो वह अनेक प्रकारके रोगोंको उत्पन्न कर उस पुरुषको मारदेती है इसी रोगका नाम मदात्यय है यह उन वस्तुओंके नामोंसे कई प्रकारका है ॥

मदिराके मदात्ययमें बार बार एक एक तोला मदिरा ही पीवे। सांठी चांवलोका भात रोज शक्करके साथ खावे तो मदिराका मदात्यय दूर हो। बकरीका मांस और परवल दोनोंको पकाकर खावे तो चरसका मद दूर हो। पेठेका स्वरस तोला १ गुड मासे ६ मिलाकर खावे तो कोदोंका मद दूर हो।शक्कर डालकर गायका कच्चा दूध खूब पीवे तो धतूरेका मद दूर हो। सेंधानोन तोला १ खावे अथवा ठंढा पानी एकसेर पीवे तो सुपारीका मद दूर हो। अथवा शक्कर एक पावभर खावे परन्तु पानी न पीवे तो सुपारीका मद दूर हो। चूनाको खूब रगड रगड बार-बार सूंघे तो पानका मद दूर हो। हर्रे बडी मासे ६ खावेतो जायफलका मद तुरन्तही दूर हो।ठण्ढे पानीमें स्नान करने और दही शक्कर भात खानेसे बहेडेका मद दूर हो। दिनभरमें आठ दफे चार चार लौंग चावे तो तमाखूका मद दूर हो। मदिरा पीकर घी तोले २ में शक्कर तोले २ मिलाकर खावे तो मदिराका

मद बिल्कुल न होवे। सर्व प्रकारके मदात्ययोंमें उन उन नशावाली वस्तुओंके प्रथम कम करने फिर बिल॰ कुल छोड देनेकी हमेशा कोशिश करते रहना क्योंकि नशेकी सर्व चीजें बुद्धिको बिगाडकर उत्तम स्वभा॰ वको नष्ट करदेती हैं। इस रोगमें कच्चा दूध, भात, शक्कर, घी, मलाई, पूरी, लड्डु, जलेबी, शक्करका शर्बत, शीतलजलसे स्नान, गुलाबजल पीना, कमल-नाल, तूंबा, लौकी, पालक भाजी ये चीजें हितकारी हैं॥

अथ दाह चिकित्सा।

हृदयछातीसेलेकरकंठ पर्य्यन्त जलनका नाम दाह है। वह७प्रकारका है. गायकी नैनूको १०८बार धोकर पेट व छाती व कंठतक लेप कर शूलके गिलास व कटोरेसे आधाघण्टा मालिश करे तो दाह दूर होवे। अथवा सिरकामें कपडा भिगोकर गीला ही पेट व छाती पर रक्खे तो दाह दूर हो। सफेद चन्दनको गुलाबजलमें घिसकर फिर उसीमें कपूर घिसकर सारे शरीरमें लेप करे तो दाह दूर हो। नींबके पत्ते या बेरीके पत्तोकोपानीमें बांटकर दहीकी तरह मथै और मथनेसे जो फेना उठे उसको पेट व [illegible] पर बारबार लेप करे तो [illegible] शान्त [illegible] केलाके पत्ते या कमलके [illegible] उसपर

रोगीको लिपटावे और खसके पंखेकी हवा करे तो दाह शान्त हो। अथवा पित्तपापडा, खस, नागरमोथा, लालचन्दन, पद्माख ये तीन तीन मासा लेकर डेढपाव पानीमें काढा करे जब एक छटांक रहे तब ठंढा कर उसमें शहद तोला १ डालकर पीवै तो अति-उग्र दाह दूर हो तथा ज्वर व प्यास व वमन भी मिटै यह अनेक बारका परीक्षा कियाहुआ है कभी निष्फल नहीं जाता है॥

अथ उन्माद चिकित्सा।

इसको लोकमें पागल, सिडी, बावला कहते हैं यह मनका रोग है इसमें बुद्धि बिगडजाती है। यह ६ प्रकारका है-वातका १, पित्तका२, कफका ३, त्रिदोषका ४, मानसिक दुःखका ५, विषसे पैदा हुआ ६, परन्तु यूनानीवाले हकीमलोग इसको दो ही प्रकारका मानते हैं एक मानसिक दूसरा अन्यअङ्गज। इसको खफगान, हौलदिल, दीवाना कहते हैं॥

चम्पाके फूल तोले २ शहद तोला १ में मिलाकर खावे तो उन्माद दूर हो। पकी अमिली तोला २ को आधापाव पानीमे बांटकर एक तोला शक्कर डालकर पीवे तो मन प्रसन्न हो परन्तु अमिली पकी लेवे।ईसबगोल तोला १ को पानीमें बांटकर १ तोला शक्कर

डालकर पीवे । रेवन्दचीनी तोले२को पानीसे महीन पीसकर दोनों कंधोंके बीचमें लेप करे तो उन्माद जाय । पित्तके उन्मादमें विरेचन (जुल्लाब) देवे कफके उन्मादमें वमन (कै) करावे और बाकी उन्मादोंमें बस्ति (पिचकारी) देवे । दश वर्षके पुराने घीको बलके अनुसार नित्य सेवन करे तो उन्माद जाय । सरसोंके तेलकी नास देवे और सारे शरीरमें मर्दन कर घाममें बैठे तो उन्माद जाय । कच्ची लालरंगकी चिरमिठी (घुंघुची) रत्ती २ को गायके आधापाव दूधके साथ पीवे तो उन्माद जाय ।परन्तु यह उपविष है इसवास्ते बडी होशियारीके साथ पीना चाहिये । पेठाके बीजों-की गिरी तोले २ को रातको एक छटांक पानीमें पत्थरके बर्त्तनमें भिगोदे सवेरे बांट छान कर शहद मासे ६ मिलाकर पीवे तो ११ दिनमें उन्माद जाय । भय और शोकसे कामज उन्माद शान्त होता है । और भय व क्रोधसे शोकज उन्माद शांत होता है । और काम व शोकसे भयसे पैदा हुआ उन्माद शान्त होता है तथा उक्त प्रकारसे कामज उन्माद भी शान्त होता है । और हर्ष, ईर्षा, लोभसे उत्पन्न हुए उन्माद; शोक, क्रोध, भय, कामसे शान्त होते हैं । मनचाही व अतिप्यारी वस्तुके विनाशसे जिसको उन्माद हो उसको उसीके समान मनचाही वस्तु मिलने-

से तथा शान्त वचन और विद्वानोंके शान्त उपदेशसे शान्ति होती है अथवा हवन करना, वेदकी पवित्र ऋचाओंका जप तथा अनेक प्रकारकी पूजा, बलि, मंत्र इत्यादिके करनेसे देवता, पितर, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व इत्यादिसे उत्पन्न हुए उन्माद शान्त होते हैं॥

अथ हिंग्वादिघृत।

हींग, कालानमक, सोंठि, मिर्च, पीपरि ये दो दो तोले, गायका घी ४ सेर इसमें १६ सेर गोमूत्र मिलाय घृत सिद्ध करे, फिर शरीरका बल देखकर एक तोला दो तोले अथवा४तोले नित्य पीवे तो उन्माद जाय॥

अथ नरसिंह मंत्र।

ॐ नमो नारसिंहाय हिरण्यकशिपुवक्षःस्थलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेतपिशाचडाकिनी शाकिनीकुलोन्मूलनाय स्तंभोद्भवाय समस्तदोषान् हन हन सर सर चलचल कम्पय कम्पय मथमथ हुँफट् हुँफट् हुँफट् ठः ठः महारुद्र आज्ञापयति स्वाहा॥ इक्कीस बार पढकर मोरपंखसे झाडा दीजे तो भूत, प्रेत, यक्ष, गन्धर्व आदि दूर हों॥ अथवा आगे अपस्मार रोगमें जो जो औषधी लिखी हैं वे सब उन्मादको दूर करती हैं सो नीचे देखलेना॥

अथ अपस्मार चिकित्सा ।

इस रोगमें स्मरण शक्तिका नाश होजाता है, एक तरफ बात करता जाता है और एक तरफ भूलताजाता है लोकमें इसको मृगी और फारसीमें सुरा कहते हैं। यह चार प्रकारका है बातका १, पित्तका २, कफका, ३, त्रिदोषका ४ पित्तका कोप हो तो १५ दिनमेंमृगी आती है और बातका कोप हो तो १२ दिनमें और कफका कोप होतो एक महीनेमें मृगीका दौराहोताहै॥

लहसुन १ तोला तिलकाले तीन तोला अथवा तिलका तेल २ तोले दोनोंको मिलाकर २१ दिन सबेरे खावे तो मृगी दूर हो। अथवा ब्राह्मीबूँटीका स्वरस तोला १ में शहद तोला १ मिलाकर पीवे तो ३दिनमें मृगी व उन्माद दूर हो। सरसों मासे ६ महीन पीसकर खावे और सरसोंकों गोमूत्रमें पीसकर सारे शरीरमें लगावे तो मृगी दूर हो।मौरेठी पिसीहुई मासे६को पेठाका स्वरस तोला१में मिलाकर खावे तो तीनही दिनमें मृगी दूर हो परन्तु दूध भातका भोजन करे।पुष्यनक्षत्रमें कुत्तेकापित्ता मंगाकरदोनों नेत्रोमेंअंजनकरै और इस पित्तेमें घी मिलाकर शरीरमें धूप देवे तो मृगी दूर हो। आककी जडकी बकलीको बकरीके दूधमें घिसकर मृगी आनेपर दो चार बूंद नाकमें टपकावे

तो मृगी दूर हो कछुयेका लोहू १ तोला,जौका आटा १तोला,शहद१तोला सबको मिलाकर उडदके बराबर गोलियां बनाकर छायामें सुखावे फिर सबेरे शाम एक एक गोली रोज खावे तो१५दिनमें मृगी दूर हो।कडुई तुरईको पानीमें पीसकर दो चार बूंद नाकमें टपकावे तो मृगीवाला अचेतन पुरुष उसी समय होशमें आवे यह औषधि जादूके समान है। अकरकरा तोले ५, गन्नेके रसका सिरका तोले ५, शहद तोले ३० फिर इन सबको कडाहीमें डाल आगपर गर्म करे,जब गाढा होजावे तब उतारकर शीशीमें भरकर रख छोडे फिर प्रतिदिन सबेरे मासे ६ गर्म पानीके साथ खाया करे तो मृगी अवश्य दूर हो। यह हकीम जालीनूसका परीक्षा किया हुआ है। रीठाको खूब महीन पीस छान कर रख छोडे और हमेशा नास लिया करे तो मृगी दूर हो। आगबोट नामका कीडा जो उटकता रहता है और अक्सर आकके पेड़पर रहता है उसको पकड कर सुखाकर पीसकर छानले फिर उसमें थोडी सी कालीमिर्च या घी मिलाकर एक चनेके बराबर नाकमें डाले तो मृगी दूर हो। २१ जायफलकी माला बना-कर गलेमें हरसमय धारण करे रहे तो मृगी दूर हो। उत्तम असली हींग तोला१को कपडेमें बांधकर गलेमें पहिरे रहे या कि, सुअरके सुमकी अँगूठी बनवाकर

मंगलके दिन दाहिने हाथकी छोटी अंगुलीमें पहिने या कि,गायके बायेंसींगकीअँगूठी बनवाकर बायें हाथकी छोटी अंगुलीमें पहिने तो मृगी दूर हो। भेडियेकी बीट और हड्डी हमेशा अपने पास रक्खे तो मृगी दूर हो। अथवा उन्मादरोगमें जो औषधियां व वस्ति तथा वमन विरेचनमें वर्णन किये गये उन सबसे मृगी दूर होती है। माजून, बडी हर्रकी बकली, निसोत,सोंठि, अगर, मस्तंगी, ऊदसलीब; हरएक साढेतेरह मासा, उस्तूखुद्दूस साढेचार मासा,छोटी हर्र आंवला ये सवा दो दो तोले दालचीनी तोला१॥,बादामकातेलतोला १॥ इन सबको पीसछानकर सब औषधियोंसेतिगुना शहद लेकर कडाहीमें डाले फिर उसीमें सब दवा मिलाकर मन्दाग्निसे काढा कर लड्डू बांध लेवे बाद४ दिनके खावे खुराक साढेचार मासा है ॥ यह मृगी मस्तिष्क (दिमाग)का रोग है इसकी बड़ीसावधानीसे औषधि करना चाहिये ॥

अथ वातव्याधि चिकित्सा।

वातके ८० व ८४ रोग हैं उन सबका निदान लक्षण तो हमारे बनाये "आयुर्वेद प्रकाश" में देखो यहाँ वातव्याधिकी चिकित्सा कहते हैं।

मीठी तथा नमकीन चीजोंके खानेसे खट्टी वस्तु

चिकनी वस्तुके भोजनसे, नास लेनेसे, गर्म वस्तुओंके खानेसे, नींदभर सोनेसे, सूर्यकी धूप सेवनेसे, पसीना लेनेसे, अग्नि तापनेसे, गर्मजल पीनेसे, तेलकी मालिश करनेसे इतने कर्मोंसे प्रकुपित वात शान्त होता है।

अथ जम्हाई चिकित्सा।

पानका बीडा खानेसे, या गर्म गर्म सरसोंका तेल लगानेसे, सोनेसे, बार बार जम्हाई आनेका रोग दूर हो॥

अथ हनुग्रह चिकित्सा।

मुख खुला रह जावे या दांतही बन्द होजावें उसको हनुग्रह कहते हैं। गर्म पानीके कुल्ले करावे अथवा पीपरि छोटी और अदरख वे दोनो मुखमें चबाचबाकर थूके तो हनुग्रह दूर हो। लहसुन मासे ६ को तिलोंके तेल तोले २ में भूने फिर सेंधानमक डालकर खावे तो हनुग्रह दूर हो॥

अथ त्वचा शून्य चिकित्सा।

लोहू निकलवानेसे यह रोग दूर हो। जवासेका स्वरस तोले २० को तेल सरसोंके आधपावमें आगपर जलावे जब तेल मात्र बाकी रहे तब उतारकर मर्दन करे तो त्वचाशून्य दूर हो। नाखूना, करुआ सुरंजान

ये दोनों बराबर लेकर पानीसे पीसकर आगपर गर्म करे फिर गुनगुना कर मोटा लेप करे तो त्वचाशून्य दूरहो ॥

अथ अर्दित रोग चिकित्सा ।

जब आधा मुख टेढा होजाता है उसको अर्दित कहदेते हैं ।

लहसुन १ तोलाको पानीमें बाटकर तिलोंके दो तोले तेलमें पकाकर खावे तो या गर्म गर्म दूध पीवे तो अर्दित रोग दूर हो इसी रोगको फारसीमें लकवा कहते हैं। राई मासे ६ अकरकरा मासे ६ शहद मासे ६ सबको मिलाकर दिनभरमें चार बार जीभपर मला करे तो लकवा दूर हो ॥

अथ मन्यास्तम्भ चिकित्सा ।

गर्दनकी सब नसें जकड जाती हैं जिससे गर्दन हिलती नहीं उसको मन्यास्तम्भ कहते हैं ॥

तेल व घीका मर्दन कर आक या अरंडके पत्तेगर्म कर बांधे तो मन्यास्तम्भ दूर हो। मुर्गीके अंडेमें घी व सेंधानमक मिलाकर गर्मगर्म गर्दनपर बांधे तो मन्यास्तम्भ दूर हो ॥

अथ भुजाशोष चिकित्सा ।

बरियारीकी जड तोले१का पावभर पानीमें काढा

करे जब एक छटांक रहे तब उतार छान कर सेंधानमक मासा २ डालकर पीवे तो ७ दिनमें भुजाका सूखना व पीडा व कन्धोंकी पीडा अवश्य दूर हो ॥

अथ भुजास्तम्भ चिकित्सा।

जब सारी भुजा जकड जाती है हिलती नहींऔर दर्द बहुत होता है, उसको भुजास्तम्भ कहते हैं। ठंढे पानीकी नास लेवे या बरियारीकी जड नीम-की छाल,कौंछकी जड इन तीनोका स्वरस मासे तीन तीन लेकरपीवे तो भुजास्तम्भ दूर हो। उडदके स्वरस-की दो चार बून्द नाकमें डालकर नास लेवेतो भुजा-स्तंभ शीघ्र दूर हो और वज्रके समान भुजा हो ॥

अथ आध्मान चिकित्सा।

पीपर छोटी तोला १ निसोत तोले ४ शक्कर तोले ४ सबको पीस छानकर तोला१ शहद तोला १से चाटै तो आध्मान (पेटमें गुडागुडाहट होना और अपान वायुका रुकजाना) दूर हो इसीको अफरा भी कहते हैं। सेंधानमक डालकर दही व भात खावे तो अफरा दूर हो ॥

तूनी प्रतितूनी चिकित्सा।

पीपरछोटी मासे६ महीन पीसकर आधापाव गर्म पानीसे पीवे तो तूनी प्रतितूनी दूर हो। जब मलस्थान

और मूत्रस्थानसे पीडा उत्पन्न होकर नीचेको जाय उसको तूनी और ऊपरको पेटकीबाई कोख तक आवे उसको प्रतितूनी कहते हैं ॥

अथ त्रिकशूल चिकित्सा ।

कपडेमें पावभर बालू बांधकरआगमें गर्मकर सेंके और खाटके नीचे अरने कंडोंकी अग्नि रखकर सेंके तो त्रिकशूल दूरहो जब कटि (कमर) पीठ और बांस (वह लम्बा हाड जो चूतडसे लेकर गर्दनतक सीधा चला गया है उसको बांसकहते हैं) इन तीनोंमें बहुत दर्द होता है उसको त्रिकशूल कहते हैं ॥

अथ मूत्राधिक्य चिकित्सा ।

बरियारीकी जडकी छाल १ तोला, मिसरी १ तोला दोनोंको पीसकर पावभर गायके दूधसे पीवे तो १५ दिनमें बारम्बार मूत्रकरनेका रोग दूर हो ॥

अथ मूत्रनिग्रह चिकित्सा ।

जवाखार मासे ६ मिश्री मासे६ मिलाकर खावे तो मूत्रबन्ध तुरन्त खुलै । पेठाके बीज तोला १ ककडीके बीज तोला १ इनको पानीसे महीन पीसनाभिकेनीचे लेप करे तो मूत्रबंध छूटे आंवला तोले २ को पानीसे महीन पीसकर नाभिके नीचे लेप करे तो मूत्रबन्धछूटै घूसकी मेंगनी (बीट) १ तोला; शोरा मासे ६ मिला-

कर पानीसे बांटकर गुनगुना कर नाभिके नीचे लेप करे तो मूत्रबंध तत्क्षण छूटै ॥

अथ गृध्रसी चिकित्सा ।

अरण्डका तेल तोला १ या २ गायके आधापाव मूत्रमें डालकर १महीना पीवे तो गृध्रसी दूर हो । अरण्डके बीजकी मींगी तोले २ को गायके आधासेर दूधमें खीर बनाकर खावे तो १५दिनमें गृध्रसी दूर हो अडूसा तोला १,अमिलतास तोला १;जमालगोटाकी जड़ तोला १ इन तीनोंका आधासेर पानीमें काढा करे जब आधापाव रहै तब उतार छानकर उसमें अरंडीका तेल तोला १ डालकर पीवे तो गृध्रसी दूर हो और चलनेकी शक्ति आवे । महानींबका गोंद मासा१ को पानीसे पीवे तो१५दिनमें असाध्य भी गृध्रसी दूर हो । सम्हालूके पत्ते तोले२ का पावभर पानीमें काढा करे जब एक छटांक रहे तब छानकर पीवे तो७दिनमें असाध्य भी गृध्रसी दूर हो और चलनेकी शक्ति अवश्य होवे । लहसुन तोला १ गूगल तोले ५ इनको घीसे पीसकर बेर बराबर गोली बनावे फिर १ गोली रोज खावे तो गृध्रसी दूर हो । जब कटि (कमर), चूतड़, गुदा, जांघ, पीठ, पिंडली, पैर इनमें अधिक पीडा (दर्द) उत्पन्न होजाय और मारे दर्दके चला न

जाय चलनेकी शक्ति नष्ट होजाय और पसीना उत्पन्न हो उसको संस्कृतमें गृध्रसी और लोकमें कोई कुलिंग वायु कोई टंकनवायु कोई रींघनवायु कोई जांघफटना कहते हैं फारसीमें इसको इरकुन्निसा कहते हैं।सबरसकोतरी तोला१,बडी हर्रे की बकली तोले २ सुरंजान मीठा तोला १ सबको पीसकर पानीसे गोलियां बनाकर छायामें सुखावे फिर मासे २ या ३ या ४ प्रतिदिन पानीसे खावे तो विरेचनहोकर इरकुन्निसाका दर्द दूर हो। केशर मासा १, सकमूनियां मासा २॥, बड़ी हर्रेकी बकली मासा १०॥, बादामकी मींगी, मासा १॥, सनाय तोले २, सुरंजान मीठा तोले३, मिसिरी तोला ८॥ इन सबको पीस छानकर ठंढे पानीसे प्रतिदिन एक तोला १०॥ मासा खावे तो इरकुन्निसा अवश्य दूर हो॥

अथ क्रोष्टुशीर्षकचिकित्सा।

गूगुल मासे३, गुर्च मासे३, हर्रे मासे३, बहेडामासे ३ आंवला मासे ३ इन सबको पीस छानकरएकतोला अरंडीके तेलमेंमिलाकर खावे तो१९दिनमेंक्रोष्टुशीर्षक दूर हो जबवायुऔररुधिरके विकारसे पैरकी पिंडलीमें अधिक सूजन होकर सियारके मस्तक सरीखी गांठ पैदा होजाती है उसको क्रोष्टुशीर्षक रोग कहते हैं।

तीतर पक्षीके मांसके शोरुवेके साथ गूगुल मासे ६ रोज खावे तो २१ दिनमें क्रोष्टुशीर्षक दूर हो ॥

अथ खल्ली चिकित्सा।

कूठ मासे ६, सेंधानोंन मासे६, चूका मासे ६ इनको एक छटांक पानीमें बांटकर घी मासे ३ मिलाकर खावे तो २१ दिनमें खल्ली दूर हो। जब पैर, जंघा, पिंडली, और हाथकी जड इनको रोगी घुमाया करे उसको खल्ली कहते हैं। लोकमें इसका कोई प्रसिद्ध नाम नहीं है ॥

अथ वातकण्टक चिकित्सा।

दिनमें चारबार एक एक तोला अरंडीका तेल पीवे तो वातकंटक (पिंडलियोंकी घोर पीडा) दूर हो।

अथ पाददाह चिकित्सा।

ठण्ढे पानीमें मसुरकी दालको पीसकर थोडा कपूर मिलाकर पैरके तलुओंमें लेप करे तो पाददाह दूर हो। गायके मक्खनको पैरके तलुओंमें चुपडकर आगमें पैर सेंके तो पुराना तथा अतिउग्र पाददाह दूर हो। जब पित्त और लोहूके कोप सहित वायु पैरके तलुओंमें दाह जलन उत्पन्न करदेता है उसको पाददाह कहते हैं ॥

अथ पादहर्ष चिकित्सा ।

जायफलको महीन पीसकर पैरके तलुओंमें रगडै या आगमें पैरोंको सैंके तो पादहर्ष दूर हो। जब वात और कफकी अधिकतासे पैर झन्नाने लगते हैं, उसको पादहर्ष कहते हैं । लोकमें इसको पैर सोगये ऐसा कहते हैं ॥

अथ आक्षेप चिकित्सा ।

जब नसोंके भीतर वायु प्रविष्ट होकर आक्षेप करता है, जैसा कि, हाथीपर बैठा हुआ पुरुष हिलता है ठीक यही दशा आक्षेप रोगमें रहती है । जब हाथ, पैर, शिर, पीठ, चूतड इन्होंको वायु रोक देता है और शरीरको बारंबार आक्षेप (फेंकना) करता है उसको दंडाक्षेप कहते हैं। शोधा हुआ कुचिला रत्ती दो पानमें रोज खावे तो आक्षेप व दण्डाक्षेप दूर हों ।

अथ दण्डापतानक चिकित्सा ।

अफीम, शुद्ध कुचिला, कालीमिर्च ये तीनों बराबर लेकर बॅगलापानके रससे गोली एक रत्ती प्रमाण बांधे फिर एक गोली खाकर ऊपरसे पानका बीडा खावे तो दंडापतानक दूर हो और सूजन, मृगी, हैजा ये सब दूर हों ॥ यह गोली वायुके सर्व रोगोंमें लाभ देती है। इसका नाम समीरगजकेसरी बटी है । जब वायुके

साथ कफ भी मिलकर नसोंमें प्रविष्ट होजाताहै तब सम्पूर्ण शरीर दंडा अथवा मुर्दाकी तरह जकड जाता है कहीं पर भी हिल डुल तक नहीं सकता उसको दंडापतानक रोग कहते हैं ॥

अथ अन्तरायाम व बाह्यायाम चिकित्सा ।

एक तोले लहसुनको सरसोंके दो तोले तेलमें भूनकर खावे तो १५ दिनमें उक्त दोनों रोग दूर हो कबूतरके मांसमें लहसुन डालकर खावे तो उक्त दोनो रोग दूर हो। जब अंगुली टखना पेट छाती हृदय गला इतने स्थानों की नसोंमें वायु अधिकतासे प्रविष्ट होकर रोगीको धनुषकी तरह टेढा करदेता है और आंखें अधिक फट जाती हैं और दोनों पसलियोंमें अति उग्र दर्द होताहै और मुखसे बहुत कफ निकलता है और रोगी पेटकी तरफ धनुषकी तरह झुक जाता है इसको अन्तरायाम कहते हैं और जब रोगी पीठकी तरह उल्टा झुक जाताहै उसको बाह्यायाम कहते हैं बस अन्तरायाम और बाह्यायाममें इतना ही फर्क है ॥

अथ धनुस्तम्भ चिकित्सा ।

जब पुरुष धनुषकी तरह झुक जाताहै उसको धनुस्तम्भ रोग कहतेहैं।इस रोगीके सर्व अंग ढीले हो जाते हैं और पसीना बहुतही निकलता है और बुद्धि बिलकुल

भ्रष्ट हो जाती है यह रोगी दस दिनसे अधिक किसी हालतमें नहीं जी सकता। अफीम रत्ती दो पानमें रखकर खावे तो लाभ करे ॥

अथ कुब्ज चिकित्सा।

जब प्रकुपितवायु हृदय अथवा पीठको ऊँचा कर देता है उसको कुबड़ा कहते हैं ॥

लहसुनको महीन बांटकर उस स्थान पर एक अंगुल मोटा लेप करे, बाद एक घण्टेके गर्म पानीसे धो डाले वहां पर बड़ा फफोला आजावेगा उसको सुईसे छेद कर पानी निकाल डाले ऐसा कईदफे करे और मोरके मांस या कबूतरके मांसके शोरुवेके साथ लहसुनको खाता रहे तो कूबड अच्छा हो ॥

अथ अपतंत्रक चिकित्सा।

काली मिर्च मासा १, सहिजनेके बीज मासा १, बायबिडंग मासा १, मरुआ मासा १इनको खूब महीन पीस छानकर नाकमें नास देवे तो अपतंत्रक रोग दूर हो शुद्धकुचिला रत्ती २, काले धतूरेके बीज रत्ती २इनको पानमें रखकर खावे तो अपतंत्रक रोग दूर हो। जब वायुके कोपसे हृदयमें पीडा शुरू होकर ऊपरको बढती है और शिरमें पहुँचकर दोनों कनपटियोंमें दर्द पैदा कर रोगीको धनुपकी तरह झुकाकर आक्षेप

(झटकेदेना) और मोह पैदा करदेती है,उसको अपतन्त्रक रोग कहते हैं,इस रोगवाला वडे कष्टसे ऊंचेऊंचे श्वास लेता है नेत्र ऊपरको चढजाते हैं, आंखें बन्द किये रहता है और कबूतरकी तरह बोलता है और शरीरका ज्ञान नहीं रहता है ॥

अथ अपतानक चिकित्सा ।

कालीमिर्च तोला १ महीन पीसकर एक नींबूके अर्कके साथ पीवे तोअपतानक रोग दूर हो।गायके पाव भर गर्मदूधमें अरंडीका तेल एक छटांक डालकरपीवे तो जुल्लाब लगे और अपतानक दूर हो कबूतरकेमांसके शोरुवेमें छोटी पीपरि मासे ९ पीसकर मिलाकर खावे तो अपतानक रोग दूर हो। जब दृष्टि रुकजाती है अर्थात् आंखोंसे देखता हुआ भी दूसरेको नहीं पहँचान सकता और मुखसे बोलता है फिर तुरन्त ही बेखबर होजाता है इसको अपतानक रोग कहते हैं ॥

अथ पक्षाघात चिकित्सा ।

काले उडद मासे ४,कौंछके बीजमासे ४,अरंडकी जड़ मासे ४,वारियारीकी जड मासे ४ इनका पावभर पानीमें काढा करे जब डेढ छटांक रहे तब छानकर हींग मासा १ और सेंधानमक मासे २ डालकर पीवे तो १५ दिनमें पक्षाघात दूर हो। जब वायु

कोपको प्राप्त होकर शरीरके आधे भागको अर्थात् शरीरके एक तरफके भागको या कमरसे नीचेभागको निकम्मा व बेकाम करदेता है उसको पक्षाघात वा एकांतवात या पक्षवध या अर्द्धांग कहते हैं । फारसीमें इसको फालिज कहते हैं । इस रोगमें शरीरके बन्धन ढीले होजातेहैं ।और त्वचाका ज्ञाननहीं रहता फारसी पुस्तकोंमेंलिखा है कि,इस रोगमेंआधाशरीर लम्बाईमें ढीला हो जाताहै और यह रोग कफसे पैदा होता है। गर्भिणी स्त्रीके हो या जिसके लडका पैदा हुआ हो उस स्त्रीके हो बालकके वृद्धके क्षीणपुरुषके जिसके शरीरमें खून कम होगया हो उसके हो पीडासहित हो सूजन भी हो धातुक्षय हो तो असाध्य है उक्त प्रकारोंवाला आराम नहीं होता । वैद्यलोग इसकी उत्पत्ति वातसे और हकीम लोग कफसे बतलाते हैं इस रोगमें बुद्धि बिल्कुल भ्रष्ट होजाती है ।यूनानीपुस्तकोंमें लिखा है कि, गर्मपानी इस रोगमें कभी पीनेको न देना चाहिये और चनेकी रोटी कबूतरके मांस या तीतरके मांसके साथ खाना चाहिये शुद्धकुचिला १तोलाकालीमिर्च१ तोला दोनोको महीन पीसकर पानीसे उडदके बराबर गोलियां बना लेवे फिर छायामें सुखाकर १ गोली बगलापानमें रखकर रोज सबेरे खायाकरे तो,अथवा शोधे हुए कुचिलाको आगपर रखदे जब धुआँ निक-

लना बन्द होजावे तब उसको निकालकर उसीके बराबर कालीमिर्च महीन पीसकर मिलाकर पानीमें उड़दके बराबर गोली बनाकर खावे तो पक्षाघात दूर हो और अर्दित (लकवा) व कमरका दर्द और मस्तिष्क (दिमाग) की कमजोरी भी दूर हो और सर्द स्वभावको यह दवा बदल देवे यह उत्तम दवा है। इस रोगवालेकोहमेशा अँधेरे स्थानमें रक्खे और गर्मपक्षियोंका मांस खानेको देवे । भिलावांकी गिरी मासे३कोशक्कर मासे ६ के साथ खावे तो १५ दिनमे पक्षाघात व मृगी दूर हो बीरबहूटी नामका सुर्खरंगका कीडा जो बरसातमें बहुत होता है,उसको लेकर उसका शिर और पैर काटकर फेंकदे बाकीको पानमें रखकर खावे तो २१ दिनमें पक्षाघात दूर हो स्वभाव ठीक हो बुद्धि दुरुस्त होवे भंग मासे ६, कालीमिर्च मासे६,दोनोंको बिना पानीके पीसकर खावे और उक्त औषधि सरसोंके तेलमें मिलाकर शरीरपर एकघण्टा मालिश करे तो पक्षाघात दूर हो। प्रसिद्ध यूनानी हकीम जालीनूस कहते हैं कि,मेरी रायमें इस रोगके लिये यह उत्तम दवा है मैंने इस दवामें अजीब तासीर देखी है सनके बीज तोला १॥, शहद तोला १ में ... खावे तो २१ दिनमें पक्षाघात दूर हो। सफेद जड़की बकली, सफेद चिरमिठी (घुंघुची)

धतूरेकी पत्ती ये चार २ तोले लेकर महीन पीसे और सरसोंके पावभर तेलमें डालकर जलावे जब दवा जलजावे तब उसी तेलमें घोटदे फिर जोड़ोंपर रोज मालिश करे तो पक्षाघात दूर हो और कामदेव चैतन्य हो । सोंठि मासे ३, कालानमक मासे ३, दोनोंको पीसकर रत्ती दो या ४ नाकमें नास ले तो पक्षाघात व अर्दित अर्थात् फालिज लकवा दोनों दूर हों ॥

अथ सर्वांगवायु चिकित्सा ।

जब वायुके कोपसे पुरुषकी आंख, कान, नाक, भौंह, माथा, होंठ, छाती, भुजा, स्कन्ध इत्यादि सर्व अंग फरकैं उसको सर्वांगवात कहते हैं ॥

अजवाइन, कालीमिर्च, अफीम इनको बराबर लेकर तिलोंके तेलमें मिलाकर तमाम बदन पर मालिश करे । और सांभरनमक तोले २ गेहूंकी भूसी पावभर इनको पानी डालकर आगपर पकावे फिर उससे फरकनेकी जगह सेंके तो यह रोग दूर हो ॥

अथ सप्त धातुगत वातके लक्षण यत्न ।

रसमें जब वायु प्रविष्ट होजाता है तब त्वचाको काली करदेता और फाडदेता है। और जब लोहूमेंबात प्रविष्ट होजाता है तब शरीर दुर्बलहोजाता और शरीरमें पीड़ा पैदा होजाती है, भोजन पचता नहीं तथा

अन्नमें अरुचि होजाती है। और मांसमें जब वायु प्रविष्ट होजाता है तब शरीर बहुत भारी तथा स्तम्भित व पीडायुक्त होजाता है। और मेदमें जब वायु प्रविष्ट होजाता है तब शरीरमें पीडा तथा फोडे होजाते हैं। हाडोंमें जब वायु प्रविष्ट होजाता है तब संधियोंमें पीडा उत्पन्न होजाती है और बल व मांस न्यून होजाते हैं और मज्जामें जब वायु प्रविष्ट होजाता है तब तीव्र पीडा तथा बलका नाश होजाता है और शरीर सूखजाता है। और वीर्यमें जब वायु प्रविष्ट होजाता है तब रतिसमय अतिशीघ्र वीर्य निकल जाता है॥

अथ क्रमसे उक्त सातों धातुगतवायुकी चिकित्सा लिखते हैं।

त्वचाके वातमें सरसोंके तेलमें अफीम मिलाकर मालिश करे और रुईसे सेंके। लोहूके वातमें खसको पानीमें पीसकर लेप करे और फस्त (लोहू निकलवावे) खोलावे। और मांसके वातमें सनाय तोला १ को पावभर गायके दूधमें औटाकर पीवे तो हल्का जुलाव लगे। और हाड तथा मज्जाके वातमें लहसुन तोले २ को तिलोंका तेल तोले १० में जला देवे फिर उस तेलकी मालिश शरीरपर करे और उसमेंसे १ तोला पीवे तो वात दूर हो। अथवा केतकीकी जड

तोले ३, बरियारीकी जड तोले ३,कक्कईकी जड तोले ३, चावलोंका धोवन तोले १० इन सबको आधापाव तिलोंके तेलमें मिलाकर आगपर औटाकर तेलको सिद्ध करे फिर उसको १ या २ तोला रोज पीवे और शरीरमें मर्दन भी करे तो मज्जागत वात दूर हो। और वीर्यके वातमें घीके साथ लहसुन रोज खावे और काले तिल एक छटांक रोज ४० दिनतक खावे और तिलोंके तेलका मर्दन रोज शरीरमें करे ॥

अथ आमाशयवातकी चिकित्सा।

सैंधानोंन तोले २,पानी आधासेरमें औटाकर पीवे तो वमन होवे और सनाय तोले २ को पावभर दूधमें औटाकर पीवे तो हलका जुलाब लगे फिर हर्र मासे ६ और सैंधानोन मासे३ मिलाकर गर्म पानीसे खावे तो १५ दिनमें आमाशयकी वायु दूर हो। नाभिसे दोनों स्तनोंके बीचकी जगहको आमाशय कहते हैं इसमें जब वायु प्रविष्ट होजाता है तब हृदय, पेट, छाती, पसली, नाभि इनमें पीडा और प्यास, कच्ची डकार, हिचकी, खाँसी, श्वास, कंठ सूखना ये रोग उत्पन्न होजाते हैं आकके फूल मासे २ और सांभर-नमक मासा १मिलाकर गर्मपानीसे खावे तो ७दिन-में आमाशयका वात दूर हो ॥

अथ पक्काशयगतवातकी चिकित्सा।

गायके पावभर गर्म दूधमें अरंडका तेल तीन या ४ तोले डाल कर पीवे तो दो दिनमें विरेचन होकर पक्काशयकी वादी दूर हो। पक्काशयमें जब वात प्रविष्ट होजाता है तब आंत गल गल गल गल बोलती रहती है और अपानवायु बन्द होजाती है और मल मूत्र दुःखसे उतरते हैं और अफरा तथा त्रिकशूल भी पैदा हो जाते हैं। बडी हर्रकी बकली तोला १ शहद तोला १ से खावे तो पक्काशयकी बादी दूर हो॥

अथ उदरवातकी चिकित्सा।

सोंठि मासे ६, हर्र छोटी मासे ६, कालानमक मासे ६ इन तीनोको पानी डालकर पत्थरपर चन्दनकी तरह घिस लो फिर आधी छटांक पानी मिलाकर गुनगुना करके पीजाओ तो आधे घण्टेमें उदरस्थ वात दूर हो—उदरमे जब वायु प्रविष्ट होजाता है तब एकाएक अतिउग्र पीड़ा पेटमें उत्पन्न होजाती है। सांभरनमक तोले २ को महीन पीसकर फॉक लेवे परन्तु पानी बिल्कुल न पीवें तो उदरकी वायु व पीडा दूर हो।

अथ मलस्थानवातकी चिकित्सा।

जब मलस्थानमें वायु प्रविष्ट होजावे तब मल,मूत्र,

अपान वायु ये रुकजावें और अफरा व शूल और पथरी ये पैदा होजावें और जाँघ, पिंडली, पसली, पीठ, कन्धा, त्रिक इनमें पीडा उत्पन्न हो जाती है। अरंडीका तेल तोला १ में साबुन मासे ६ को घिसो फिर अँगुलीमें लगाकर पाखानेकी जगहके अन्दरतक लगादो तो अपानवायु तुरन्त खुलेगी और पांच मिनिटमें एक पाखाना भी होगा। निसोत तोला १ पीसकर शहद तोला १ से खावे तो उक्तरोग दूर हो।

अथ हृदयगतवायुकी चिकित्सा।

जब हृदयमें पीडा और श्वास उत्पन्न होजावे तब जानो कि, हृदयमें वायु प्रविष्ट है।गुर्च मासे ३,काली मिर्च मासे ३ दोनोंको पीसकर गर्म पानीसे पीवे। असगंध मासे ६, बहेडाकी बकली मासे ६ इनको पीसकर गुड तोला १ में मिलाकर गर्मपानी आधा पावसे पीवे तो ३ दिनमें हृदयस्थवात दूर हो।देवदारु मासे ६, सोंठि मासे६इनको पीसकर पानीसे पीवे तो हृदयका वात दूर हो॥

अथ श्रोत्रवातकी चिकित्सा।

कानमें जब वायु प्रविष्ट होजावे तब कानोंमें अनेक प्रकारकी आवाजें सुनाई पडें और कानोंमें दर्द भी होवे और बहने भी लगें। एक तोले सरसोंके तेलमें लह-

सुन मासे६जलाडाले फिर ठंढा कर वह तेल कानोंमें डाला करें अथवा अफीम रत्ती २ को सरसोंके तेल मासे६ या पानीमें घोले फिर उसको कानोमें डाले तो पीडा व बहना व अनेक प्रकारकी आवाज सुनपडना दूर हो। सोवाको तेलमें जलाडाले फिर वह तेल डाले तो दर्द व आवाजका सुनाईदेना दूर हो ॥

अथ लँगडाकी चिकित्सा।

जब मोटी नसोंमें वायु प्रविष्ट होजाता है तब नसोंमें दर्द व सूजन पैदा करके मनुष्यको लंगडा, लूला, पांगला, व खोडा करदेता है। इस रोगमें दर्दकी जगह जोंक लगाकर लोहू निकलवाडाले और गर्म रुईसे सेंके और अफीम वा कुचिलेको तेलमें मिला कर मालिश करे ऊपरसे थूहरके पत्ते या धतूरेके पत्ते गर्म करके बांधे ॥

अथ अकडवात चिकित्सा।

जब बहुत छोटी और पतली नसोंमें वायु प्रविष्ट होजाता है तब हाथ पैरोमें हडफूटन व दर्द और कांपना और हाथ पैर अकड जाते हैं इस रोगमें अग्निसे खूब सेंके और शोधा हुआ कुचिला दो रत्तीसे प्रतिदिन वढाकर एक मासा तक पानमें खावे क्योंकि नसोंके अन्दरकी वायुके दूर करनेको कुचिलासे वढ-

कर दूसरी औषधि नहीं है और एक छटांक सरसोंके तेलमें दो तोले कुचिलाको जलाडाले फिर उस तेलकी मालिश भी किया करे तो उक्त रोग दूर हो ॥

अथ संधिवात चिकित्सा ।

जोडोंमें जब वायु प्रविष्ट होजाता है तब जोडोंको ढीला करदेता है और जोडोंके अन्दर सूजन और पीडा पैदा करदेता है । इन्द्रायनकी जड मासे ६, पीपरि छोटी मासे ६, गुड तोले १ मिलाकर खावे तो सात दिनमें संधिवात दूर हो, परन्तु इस दवासे चार पांच दस्त रोज होंगे । गूगुल मासे ६, सोंठि मासे ६, घी तोला १ मिलाकर खावे तो जोडोंकी वायु दूर हो । अरंडका छिला हुआ दाना १ सवेरे निगले फिर सात दिन तक एक दाना रोज बढावे फिर आठवें दिनसे ७ दाने रोज निगला करे तो २१ दिनमें उक्त रोग दूर हो ॥

अथ वातरोगीके लक्षण ।

वातरोगमें बाल छोटे होजाते हैं । पुरुष बकवादी होजाता है । पेटमें गुडगुडाहट शब्द हुआ करता है । पसलियोंमें दर्द, पाखाना गाढा औरएकदो दिनतक पाखाना होताही नहीं । शरीरमें कम्पन और रोमांच शरीर रूखा और दुर्बल और काला होजाता है और

शरीर ठंडा रहता है। कानोमे घण्टीसी वजने लगतीहै शिर फरकता और चित्त अतिचंचल होजाता है। रातको निद्रा नहीं आती। पसीना नहीं आता। बलका नाश, वीर्यका नाश; परिश्रम, थकावट और डरपोंकपना, बुरे बुरे स्वप्न देखना, अत्यन्त चिन्तायुक्त रहना, अंग फरकना-इतने वातरोगीके लक्षण हैं। हनुस्तम्भ, अर्दित, आक्षेप, पक्षाघात, अपतानक इन पांच रोगोवाले पुरुष बहुतदिनतक पूर्णपथ्य परहेज से रहकर बहुतसी अनेक प्रकारकी अति उत्तम औषधियॉं खाकर भी अगर रोगी जवान और बलवान हो तो कोई बिरला ही आराम होता है।

अब यहॉंपर बहुतसी परीक्षित औषधियाँ लिखते हैं।

जो बातके ८४ रोगोंमें अवश्य ही पूर्णलाभ देतीहैं बातका कोई रोग क्यों न हो इनमेंसे किसीभी औषधिके देनेसे फायदा होता है॥

अथ योगराज गूगुल।

सोंठि, पिपरामूल, चाब, कालीमिर्चे, चीतेकी छाली, भुनीहींग, अजमोद, सरसों, दोनों जीरे, सम्हालूके बीज, इन्द्रजौ, पाढ, बायविडंग, गजपीपरि, कुटकी,

अतीस, भारंगी, वच और मरोरफली, ये बीस चीजें प्रत्येक मासे चार चार और त्रिफला (आँरा–हर्र–बहेडा) सब औषधियोंसे दूना औरशुद्धगूगुल सबके बराबर लेकर लोहेकी कडाहीमें डालकर लोहेके दंडसे घी डालडाल कर खूबघोटै। जब खूब महीन काजलकी तरह होजावे तब झरबेरीकी बराबर गोलियां बनाकर घीके चिकने बर्तन अथवा कांचके बर्तनमें भरकर रख छोडै। फिर बलाबल देखकर १ मासा या २ मासे प्रातःकाल रास्नाके काढा अथवा गर्मदूध या गर्मपानीसें कुछ दिन सेवन करे तो वातके ८४ रोग अवश्य नाश हों। और कोढ, बवासीर, संग्रहणी, प्रमेह, वातरक्त, भगन्दर, नाभिशूल, यक्ष्मा, उन्माद, मृगी, वातगुल्म, उरग्रह, मन्दाग्नि, श्वास, खांसी, अरुचि, वीर्यदोष, प्रदर इत्यादि रोग दूर हो। यह रसायनी है इसपर मैथुन व भोजनादिका कुछ भी परहेज नहीं। यह काकोलीके काढांके साथ पित्तके रोगोंको हरता और अमिलतासकेकाढासे कफकेरोगोंको औरदारुहल्दीके काढासे सर्व प्रमेहको और गोमूत्रके साथ पांडुरोगको और शहदके साथ मेद व स्थूलताको और नीमके काढेसे १८ प्रकारके कोढोंको और गुर्चके काढेसे आमवातको और सोनापाठाके काढेसे मूसाके विषको और त्रिफलाके काढासे नेत्रके सर्व रोगोंको

और पुनर्नवाके काढासे आठों उदररोगोंको हरताहै॥

अथ त्रयोदशांगगूगुल ।

असगंध,हाऊबेर,गुर्च,शतावरी, गोखरू, बिधारा, रास्ना,सौफ,कचूर,अजवाइन,सोंठिये सबबराबर ले और सबके बराबर शुद्धगूगुल, आधा गायका घी मिलाकर लोहके बर्तनमें लोहदंडसे खूब रगडकर दो दो मासेकी गोलियां बनाकर घीके बर्तनमें या कांचके बर्तनमें रख-छोडे फिर रोगीका बल देखकर १ मासेसे २ तक गर्म जल या गर्म दूध या मदिरा या मांसका अर्क या अजवाइनका अर्क या चोबचीनीका अर्कके साथ वातके अतिउग्र रोगोंमें कुछ दिन सेवन करावे तो८४वातविकार अवश्यही दूर हों कुबडा व खंजापन मिटै। टूटी हड्डी जुडे इसके समान और कोई गूगुल उपकारी नहीं। यह अनेकबारका परीक्षा किया हुआ है परन्तु चोबचीनीके अर्कके साथ सेवन करै दिन ४० तक॥

अथ वातारि तैल।

लहसुन तोले २०, लालमिर्च तोले २०, अफीम तोले २ इनको कुचिलकर सेरभर तिलोके तेलमें एक लोहेके.बर्तनमें डालकर सरईसे उस बर्तनका मुख बंद कर चूल्हेके नीचे गाड़देवे जब १५ दिन होजावें तब निकाल कर तेलको छानकर बोतलमें भरलेवे और

वातविकार वाले रोगीके कुछदिन बराबर लगायाकरे तो सर्व वायुविकार हरलेता है परीक्षा किया हुआ है॥

अथ सैंधवादितैल ।

सैंधानमक ८ तोले, सोंठि ९ तोले, पीपलामूल २ तोले, चीता २ तोले, भिलावांकी मींगी ४०० तोले, कांजी २५७ तोले, तेल तिलोंका ६४ तोले,इन सबको मन्दाग्निसे लोहेकी कड़ाहीमें पकाकर बोतलमें भर रक्खे फिर इसका मर्दन करै तो वातके ८४ रोग दूर हों जब नारायण तैलसे लाभ नहीं होता तब इससे लाभ होता है ॥

अथ अठरंगा तैल ।

आक, महानीम,अरंड,सम्हारू, सहिंजना,धतूरा, सेहुँड, रास्ना इनके पत्ते अथवा इन सबका स्वरस बराबर २ लेवे और सबसे चौथाई तिलोंका तेल लेवै फिर सबको कडाहीमें डालकर मन्दाग्निसे तेलको पचालेवे फिर ठण्ढा कर बोतलमें भरलेवे और प्रतिदिन मालिश करे तो वायु सम्बन्धी सर्वरोग दूर हों ॥

अथ षट्धरणयोग ।

चीता, इन्द्रजौ, पाढ, अतीस, कुटकी, हरें इनको बराबर लेकर महीन पीस छान कर चूर्ण बनावे फिर४ मासे या ६ मासे गर्मजलके साथ कुछदिन सेवन करै

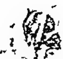
तो वातके सर्वरोग-नाश हो इसके खानेसे भूँख बहुत बढजाती है। और दो तीन दस्त रोज होते हैं। यह उत्तम औषधि है॥

अथ विष्णुतेल।

सरिवन, पिठवन, खरैंटी, गोखरू, गंगेरन, अंडकी जड़, दोनों कटाई, करंज, शतावरी, पियाबांसा ये सब आठ२तोले और तिलोंका तेल सेर ४ और गाय या बकरीका दूध सेर ८लेवे फिर सबको कडाहीमें डाल मन्दाग्निसे तेलकोसिद्धकर बोतलमें रख छोडे फिर इस तैलकी कुछ दिनतक मालिश करे तो मनुष्य तो किस गिनतीमें है यह तेल हाथी और घोड़ोंकेभी प्रबलवात को शीघ्रही दूर करदेता है टूटी हड्डीको जोड़ता तथा शरीरको फौलादसा बना देता है इसकानामविष्णुतेल है इसको भगवान् विष्णुने बनाया है हमारा परीक्षाकियाहुआ है वातके दर्दको तो३दिनमेंहीनाशकर देताहै।

अथ छागलादिघृत।

बकरी जवान विना ब्याईहुईका मांस सेर१०और दशमूलतोले४००, असगन्ध तोले४००, बरियारीकी जड़ तोले ४००लेवे फिर प्रत्येक चीजोंको अलग २ चौगुने पानीमें औटावे जब चौथाई रहे तब सबको लोहेकी कड़ाहीमें छानदेवे इसीप्रकार ऊपर लिखी हुई



अथ वातारिवटी ।

चीतेकी ज़ड, सोंठि, शोधा हुआ गन्धक, काला नोन, सेंधानोन, भुनीहींग, हर्र, आंवला, बहेडा, पिपरामूल, सुहागा भुना हुआ, कुचिला शोधा हुआ, गुड पुराना इन सबको बराबर लेकर महीन पीसकर नींबूके अर्कसे मासे मासे भरकी गोली बांधकर छायामें सुखाकर रख छोडे फिर एक गोली प्रतिदिन प्रातः काल सेवन करे तो वातके ८४ रोग दूर हों शरीर मोटा व बलवान् हो क्षुधा बढै दस्त खूबसाफ़ हो शरीरकी नसोंमें पूर्ण ताक़त आनेके लिये इसके बराबर अन्यऔपधि नहीं है यह मुझ ग्रन्थकर्त्तागौरीशंकर त्रिपाठीका अनेकबारका परीक्षा किया हुआ है।

अथ वातपन्नगवटी ।

धतूरेके फल सेर १, सोंठि आधासेर, अजवाइन् आधासेर, एक मिट्टीकी बडीहांडी लेवे उसमें प्रथम आधे फल धरै फिर सोंठि धरै फिर अजवाइन धरै फिर आधे फल धरै फिर ऊपरतक जल भरदेवै और हांडीका मुख बन्द करदेवे फिर मन्दाग्निसे दो पहर चुरावै फिर बाद दो पहरके उतारकर हांडीमेसे केवल सोंठि लेलेवे बाकी सब फेंकदेवे फिर वह सोंठि छांहमें

सुखाकर महीन पीस छानकर सहिंजनेके रसमें घोट कर चनाके बराबर गोली बांधे फिर एक गोली प्रतिदिन सबेरे खावे तो ८४ वायुविकार दूर होयँ। यह बहुत तेज और चमत्कारिकऔषधि है यद्यपि काष्ठादि औषधि है तथापि रसमात्रा बराबर काम देती है ॥

अथ असगंधादि चूर्ण।

असगंध, रास्ना, अरंडकीजड़, अजवाइन, सोंठि सौंफ, अजमोद, शतावरी, हाउबेर, बावची, बिधारा सफेद जीरा इन सबकोंमहीन पीस छानकर मासे ४ प्रातःकाल गर्म दूध या गर्म पानी या मांसरस या मदिरा या घी या छाँछ या गोमूत्र इनमेंसे किसीके भी साथ खावे तो सर्ववायु विकार दूरहों परन्तु कुछ दिनतक सेवन करे ॥

अथ वातारि अर्क।

जवासा, नागरमोथा, अरंड़की जड़, अरूसा, अतीस, पियाबांसा, चाब, पीपल, सांठी, देवदारु, कटेली, धनियां, बच, सौंफ, शतावरि, बरियारी सोंठ, बिधारा, हर्र, गोखरू, अमिलतास, कचूर असगंध, गोखरू बडा, कालाजीरा, बहेडा, बादाम ये सब पांच पांच तोले अजवाइन सेर १ रास्ना सेर २, धनियां पाव भर फिर सबको मिट्टी या तांबेके

को एक या आधा कोश नदीके पानीमें चलनेसे ऊरुस्तंभ दूर होता है। अथवा वातरोगमें कहे षट-धरन चूर्णके खानेसे ऊरुस्तंभ दूर होता है अथवा करंज, त्रिफला, सरसों इनको गोमूत्रमें बांटकर मोटा२ लेप करे अथवा सांपकी बॅबीकी मिट्टी और सरसों को महीन पीसकर शहद मिलाकर आगमें थोडा गुन गुना कर मोटा लेप करे तो ऊरुस्तम्भ अवश्य दूर हो अथवा बडे जोरसे नदीके किनारे सूरजकी गर्मीसे तपी हुई बालूमें दौडावे तो ऊरुस्तंभ अवश्य दूर हो ॥ इति ऊरुस्तम्भ चिकित्सा ॥

अथ आमवातके लक्षण चिकित्सा ।

सर्वशरीरमें टूटनेके समान पीडा हो खानेकी इच्छा न होना, प्यास, आलस्य, ज्वर शरीरमें भारीपन और पांव, पिंडली, जंघा, कटि, ग्रीवा इनमें सूजन और बिच्छू काटनेके समान पीडा होना, शरीरमें दाह, मूत्र अधिक आना, आंतोंका बोलना ये आम-वातके लक्षण हैं ॥

अथ चिकित्सा ।

बडी हर्रका चूर्ण मासे६, अरण्डीका तेल तोले२ में मिलाकर चाटै तो७दिनमें आमवात दूर हो अथवा गुर्च, अरंडकी छाली, देवदारु, अमिलतास, चीता ये बरा-

र लेकर १ तोलेका पावभर पानीमें काढा करे जब एक छटांक रहे तब छानकर प्रतिदिन तीनबार अर्थात् प्रातः, मध्याह्न, संध्यामें पीवे तो ७ दिनमें आमवात दूर हो, कटिपीडा व पँसुरीकी पीडा भी मिटै। अथवा वातरोगमें योगराजगूगुलसे व सैंधवादि तैलसे भी आमवात दूर हो। अथवा हर्रको गोमूत्रमें २१ दिन भिगो रखे फिर छायामें सुखाकर पीस लेवे फिर मासे ६ अंडीके तेल तोले २ से खावे तो आमवात अवश्य दूर हो। अथवा अमिलतासके पत्तोंकी तरकारी सरसोंके तेलमें छौंक कर बनाकर ७ दिन खावे तो आमवात दूर हो। अथवा निसोत, सैंधानोन, सोंठि इनको सम भाग लेकर मासे ४ प्रातःकाल कांजीके साथ खावे तो आमवात दूर हो॥

अथ वैश्वानर चूर्ण।

अरणी भाग२, अजवाइन भाग२, सोंठि भाग ५, अजमोद भाग २, हर्र भाग १२ इन सबको पीस छान चूर्ण करै फिर मासे ४ व ६ गर्मपानी घी, छाँछ, दहीका पानी, व कांजी इनमेंसे किसी एकके साथ खावे तो सर्व उपद्रव सूजनसहित आमवात दूर हो और गोला, हृदयरोग, तिल्ली, गांठ, ववासीर,शूल, अफरा, बस्तिशूल, विबंध और सर्व वातरोग दूर हों पेट साफ हो क्षुधा बढ़े॥

को एक या आधा कोश नदीके पानीमें चलनेसे ऊरुस्तंभ दूर होता है। अथवा वातरोगमें कहे षट-धरन चूर्णके खानेसे ऊरुस्तंभ दूर होता है अथवा करंज, त्रिफला, सरसों इनको गोमूत्रमें बांटकर मोटा२ लेप करे अथवा सांपकी बँबीकी मिट्टी और सरसों को महीन पीसकर शहद मिलाकर आगमें थोडा गुन गुना कर मोटा लेप करे तो ऊरुस्तम्भ अवश्य दूर हो अथवा बडे जोरसे नदीके किनारे सूरजकी गर्मीसे तपी हुई बालूमें दौडावे तो ऊरुस्तंभ अवश्य दूर हो॥ इति ऊरुस्तम्भ चिकित्सा॥

अथ आमवातके लक्षण चिकित्सा।

सर्वशरीरमें टूटनेके समान पीडा हो खानेकी इच्छा न होना, प्यास, आलस्य, ज्वर शरीरमें भारीपन और पांव, पिंडली, जंघा, कटि, ग्रीवा इनमें सूजन और बिच्छू काटनेके समान पीडा होना, शरीरमें दाह, मूत्र अधिक आना, आंतोंका बोलना ये आम-वातके लक्षण हैं॥

अथ चिकित्सा।

बडी हर्रका चूर्ण मासे६, अरण्डीका तेल तोले२ में मिलाकर चाटैतो७दिनमें आमवात दूर हो अथवा गुर्च, अरंडकी छाली, देवदारु, अमिलतास, चीता ये बरा-

बर लेकर १ तोलेका पावभर पानीमें काढा करे जब एक छटांक रहे तब छानकर प्रतिदिन तीनबार अर्थात् प्रातः, मध्याह्न, संध्यामें पीवे तो ७ दिनमें आमवात दूर हो, कटिपीडा व पँसुरीकी पीडा भी मिटे। अथवा वातरोगमें योगराजगूगुलसे व सैंधवादि तैलसे भी आमवात दूर हो। अथवा हर्रको गोमूत्रमें २१ दिन भिगो रखे फिर छायामें सुखाकर पीस लेवे फिर मासे ६ अंडीके तेल तोले २ से खावे तो आमवात अवश्य दूर हो। अथवा अमिलतासके पत्तोकी तरकारी सरसोंके तेलमें छौंक कर बनाकर ७ दिन खावे तो आमवात दूर हो। अथवा निसोत, सेंधानोन, सोंठि इनको सम भाग लेकर मासे ४ प्रातःकाल कांजीके साथ खावे तो आमवात दूर हो॥

अथ वैश्वानर चूर्ण।

अरणी भाग२, अजवाइन भाग२, सोंठि भाग ५, अजमोद भाग ३, हर्र भाग १२ इन सबको पीस छान चूर्ण करै फिर मासे ४ व ६ गर्मपानी घी, छाँछ, दहीका पानी, व कांजी इनमेंसे किसी एकके साथ खावे तो सर्व उपद्रव सूजनसहित आमवात दूर हो और गोला, हृदयरोग, तिल्ली, गांठ, बवासीर,शूल, अफरा, बस्तिशूल, विबंध और सर्व वातरोग दूर हों पेट साफ हो क्षुधा बढ़ै॥

अथ अजमोदादिवटी।

अजमोद, मिर्च, पीपरि, बायबिडंग, देवदारु, चीता, शतावरी, सेंधानोंन, पिपरामूरि, आककी जड़ ये प्रत्येक चार चार तोले और सोंठि बिधारा ये चालीस चालीस तोले हर्र तोले २० इन सबको पीसकर सबके बराबर गुड मिलाकर मासे चार चारकी गोली बनाकर १ गोली प्रभात १ संध्याको गर्मपानीके साथ खावे तो घोर आमवातका नाश होवे और वातके ८४ रोग १८ कोढ भी अवश्य दूर हों शरीरमें बहुत बल बढै॥

अथ आमगजसिंहगुटिका।

सोंठि ६४ तोले, अजवाइन ३२ तोले, जीरा सफेद ८तोले, धनियाँ ८तोले, सौंफ, लौंग, सुहागा, मिर्च, निसोत, त्रिफला, जवाखार, पीपरि ये सब चार चार तोले लेकर सबको पीस छान चूर्ण करे और इन सब से चौगुनी शक्कर लेकर चाशनी कर उक्त चूर्ण उसीमें मिलादे और शहद तोले २० और कचूर, इलायची, तेजपात, दालचीनी ये भी दो दो तोला लेकर महीन पीसकर उसी चाशनीमें डालकर एक एक तोलाभरके लड्डू बनालेवे फिर १ मोदक सबेरे खावे तो असाध्य भी आमवात नाश होवे तथा अम्लपित्त व रक्तपित्त भी

दूर हों यह गहननाथ योगीका कहा हुआ है नुसखा कदापि निष्फल नहीं जाता ॥

अथ वातारिगूगुल।

शोधा हुआ आमलासार गन्धक तोले५,गूगुलशुद्ध तोले५, त्रिफला तोले ५,अरंडका तेल तोले ५ इनको महीन पीस छान कर तेलमें मिलाकर रख देवे फिर उसमेंसे तोला १ प्रातःकाल गर्मपानीके साथ१महीना खावे तो महाघोरअसाध्य सैकड़ोंवैद्योंकरके छोडाहुआ भी आमवातरोगी अवश्यही अच्छा होवे यह वातके भी ८४ रोगोंका नाश करता है, कटिशूलको एकही दिनमें दूर करदेता है यह हमारा अनेक बारका परीक्षित है बहुत उत्तम है ॥

दही, दूध, मछली, गुड, मांस, उडद, बैंगनइत्यादि बादी व शीतल वस्तुओंको आमवातवाला रोगीत्याग देवे । और परवल,करेला,कोदों,जौ,कुलथी,बथुआका शाक और लवाका मांस और मटर व चनाकीदालका यूस और पुराने सांठीके चांवल इतनी वस्तुयें आमवातमें पथ्य हैं और लंघन. स्वेदन (पसीना), जुलाब स्नेहन, वस्ति, पिचकारीइतने उपचारोंसे आमवातकी चिकित्सा करे । कपडेमें बालूकी पोटली बांधकर आगमें गरमकरकर सर्वशरीरको कपडेसे ढककर सेंके

तो पसीना निकलकर आमवातको दूर करै ॥ इति आमवात चिकित्सा ॥

अथ पित्तव्याधिके लक्षण व चिकित्सा ।

अधिकखट्टा, बहुतगर्म, बहुतनमक, बहुतउपवास बहुतक्रोध करनेसे पित्तके ४० रोग उत्पन्न होजाते हैं उनके नाम लक्षण ॥

१युवा अवस्थामें बाल सफेद होना, २नेत्र लाल, ३ नेत्र पीले, ४ मूत्र लाल, ५ मूत्र पीला, ६मल पीला ७ शरीर पीला, ८नखपीले, ९ दांत पीले, १०आंखोंमें अंधियारालगना, ११सबकुछ पीलासा दीखना, १२ निद्रा थोडी, १३ मुखसूखना, १४ मुखमें दुर्गन्ध, १५ मुख तीक्ष्ण, १६ मुख खट्टा, १७श्वास गर्म. १८डकारमें धुवांसानिकले, १९ भ्रम, २० चिन्ता, २१उदासी, २२ ग्लानि, २३ क्रोध, २४ दाह, २५अतीसार, २६तेजवस्तु अग्नि-दीपइत्यादि नहीं सुहावें, २७ शीतल वस्तुओंमें चित्त चला करै, २८ चित्त चंचल, २९ भोजन करनेमें दाह, ३० क्षुधा बहुत, ३१ नाकसे रुधिर निकलना. ३२ पतला दस्त होना, ३३गरम दस्त होना, ३४मूत्र गर्म और बूंदबूंद टपकता तथा दर्द व शूलके साथ उतरता है, ३५शरीर गर्मरहता है, ३६ पसीना बहुत आता है, ३७ पसीनेमें दुर्गन्ध आती है, ३८ शरीर रूखा और

फटासा होजाना, ३९ शरीरमें हडफूटनसी रहना, ४० शरीरमें बहुतसी गुमडी होजाना ये इसके लक्षण हैं ॥

अथ चिकित्सा।

नीम इत्यादि कडवे पदार्थ खीर इत्यादि सुस्वादु पदार्थ आमला इत्यादि कसैले पदार्थोंका खाना, शीतल पवन वट व पीपलकी शीतल छायामें बैठना, रातमें चांदनीकी किरणोंमें घूमना, छायामें शीतल जलाशयों व फुहारा आदिमें स्नान करना, सुगंधित पुष्पोंकी माला और खसके पंखेकी पवन और सुन्दर रूपवती युवति स्त्रीका स्पर्श करनेसे, गुलाबका अर्क पीनेसे, शर्बत अनारके पीनेसे, फस्द (रुधिरनिकलवानेसे) गायके कच्चेदूधमें शक्कर व शर्बतअनारडालकर पीनेसे, शीतलपदार्थोंका शरीरमें लेप करनेसे, जुलाब लेनेसे पित्तके चालीसो रोग दूर होजाते हैं॥इतिपित्तव्याधि॥

अथ कफव्याधिके लक्षण व चिकित्सा।

बहुतमीठादही व चिकनी वस्तुएँ पूडी कचौरी वगैरः व खटाई इन वस्तुओंके अधिक खानेसे, दिनकेसोनेसे, शीतल उपचारोंसे, कफके २०रोग उत्पन्नहोते हैं उनके नाम १ मुख मीठा, २ मुख कफसे व्याप्त, ३मुखसे लार बहना, ४ निद्राकी अधिकता, ५कंठमें खरखर होना, ६ कडुआ पदार्थ खानेकी इच्छारहना, ७गर्मवस्तुखानेकी

इच्छा,८ बुद्धि मन्द होजाना,९ आलस्य बहुत रहना, १० थोडी चैतन्यता,११ अग्नि मन्दहोजाना,१२ मल अधिक होना, १३ मूत्र सफेद व फेनायुक्त, १४ वीर्य अधिकहोजाना, १५शरीरभारी रहना,१६ शरीर शीतल रहना,१७ शरीरबन्धासा रहना,१८भूख न लगना, १९उत्साहका नाशहोजाना,२० मस्तक भारीरहना॥

अथ सबकी सामान्य चिकित्सा ।

कडवी, खट्टी, कसैली, नमकीन वस्तुओंके अधिक खानेसे, दंड, मुद्गर, कसरत, व्यायामादि करनेसे, कुश्ती लडनेसे, मार्ग चलनेसे,वमन करनेसे, पसीना निकलनेसे, उपवास करनेसे, प्यासके रोकनेसे, जलमें पैरनेसे, रात्रिमें जागनेसे, बहुत कुल्ला करनेसे, गर्म-वस्तुओंके खानेसे, नस्य सूंघनेसे, मैथुन करनेसे, गर्म व चरपरे लालमिरचकी कटुतासे युक्त भोजन करनेसे इन उपचारोंसे कफके बीसोंरोग शान्त होजाते हैं ॥ इति कफव्याधि ॥

अथ वातरक्तके लक्षण व चिकित्सा ।

वातरक्त६ प्रकारका है । अधिकरक्त १, अधिकपित्त २,अधिककफ ३,अधिकरक्तपित्त४, अधिकरक्तकफ५, अधिकरक्तपित्तकफ६, अंगफरकना, सूजन व खुजली, रूखापन, श्यामता, शरीरमें पीडा व कम्प, पैरोंमें

पीडा, शरीरमें गुमडी व चकत्ते पडना, अधिकरक्तमें खुजली और पीडा बहुत तेज होती है सूजन व जलन खूब होजाती है। अधिक पित्तमें दाह,जलन,पसीना, मूर्छा, प्यास, विकलता, मोह ये उत्पन्न होजातेहैं, पीडा व दाह व सूजन अधिक होजाती, सूजन पक्कर फूट-जाती है।कफाधिकमें हाथ पैरोंमें झंझनाहट, शरीर शीतल पड़जाना, शरीर चिकना, खुजली बहुत होना ये कफ अधिकके लक्षण हैं। दो दोषवालेमें दोनों दोषोंके और जिसमें तीनोके लक्षण मिलें उसको त्रिदोषका जानो, यह त्रिदोपवाला दोनों पैरोके तलुओंमे अक्सर होता है वहांपर सफेद मटरके बराबर हजारो छाले पड़-जाते हैं पर कभी कभी त्रिदोपवाला हाथोमें भी हो जाता है तब दोनो हाथोंकी हथेलियोंमें सफेद मटरके समान सैकडो फफोले पड़जाते हैं वहां जलन व खुजलीभी होती है॥

अथ अपथ्य ।

दिनमें सोना, कसरत करना, मैथुन, क्रोध, भारी व गर्म व कड़वे पदार्थ, खटाई, नमक इतनी वस्तुएँ वातरक्तवाला त्याग देवे॥

अथ पथ्य ।

पुराने जौ, गेहूँ, चावल और लवा, बतक

बटेर, तीतर इनका मांस और चना, मूँग, मसूर, कुलथी इनकी दालका जूस और मकोय, शतावरी, बथुआ, पोई, बेंतके पत्ते इनकी भाजीमें कालानमक डाल घीमें छोंककर खावे ये सर्व परम हितकारी जानो ॥

अथ चिकित्सा ।

गेहूँके आटामें बकरीका दूध और घी मिलाय लेप करे अथवा तिलोंको भूनकर बकरीके दूधमें पीसकर लेप करे तो वातरक्त नष्ट होय । अथवा अलसी या अरंडीकी मींगीको बकरीके दूधमें पीसकर लेप करे तो वातरक्त दूर होवे । अथवा गुर्चका केवल काढा पीवे या गुर्चके काढामें गूगुल डाल पीवे अथवा गुर्चके काढासे योगराज गूगुल खावे तो वातरक्त दूर हो । गुर्चका सेवन अनेक रोगोंको हरता है प्रसंगवश गुर्चकी विधि लिखते हैं-चाहे गुर्चको गीली ही पीसकर स्वरस निकाल ले चाहे छायामें सुखाकर पीस छान ले चाहे काढा कर ले अगर गुर्चको गूगुलके साथ खाय तो वातरक्त जाय । और गुर्चको घीके साथ खाय तो वातका नाश करै । अगर गुर्चको गुडके साथ खाय तो पित्तको दूर करै । अगर गुर्चको मिसरी व शहदके साथ खाय तो कफको दूर करै । अगर अरंडके तेलके साथ गुर्च-

को खाय तो वातरक्त नाश होवे । अगर सोंठिके साथ गुर्चको खाय तो घोर आमवातका नाश करै । अगर शहदके साथ गुर्चको खाय तो २० प्रमेह नाश हों ।

अथ मंजिष्ठादिकाढा ।

मँजीठा, हर्रे, बहेडा, आमला, अमिली, बच, देवदारु, हल्दी, गुर्च ये सब चीजें बराबर लेकर पाव भर पानीमें दो तोले औषधियोका काढा करै जब एक छटांक रहे तब ठंढा कर छानकर पीवे तो वातरक्त, कोढ, खुजली, फोडा, फुंसी, खाज, सेहुआँ, विसर्प इतने रोगोंका अवश्य नाश करे यह अनेक वारका परीक्षा किया हुआ है ।

अथ गुर्चादिकाढा ।

गुर्च, बावची, पमाडके बीज, नीमकी छाल, हर्रे, हल्दी, आंवला, अडूसा, शतावरि, सुगंधवाला, वरियारीकी जड, मोरेठी, महुआ, गोखरू, परवल, खस, मँजीठ, लालचन्दन ये सब बराबर लेकर जव-कुट कर १ या २ तोले लेकर पाव भर पानीमें मंदाग्निसे काढा बनावे जब एक छटांक रहे तब ठण्डा कर छानकर पीवै तो वातरक्त व १८ कोढ दूर हो और खाज, मंडल, चकत्तोंका समूल नाश हो । अगर एक महीने तक प्रतिदिनमें दो बार यह काढा पिया जावे

तो वातके ८४ रोग व संपूर्ण रुधिरविकार अवश्य ही नाश होवें।यह हिमालय पहाडपर तप करते हुये मुनिजनोंने परम दयाकर मनुष्योंके उपकारकेलियेबताया-यह बड़ा चमत्कारी काढा है अनेक बार हमने परीक्षा किया है जो तीन रुपयेकी छोटीसी शीशी अंगरेजी सालसापरेलाकी पीते हैं उन सुजनोंसे विनय है कि, अगर घोर रुधिरविकारसे पीडित हों तो इसको केवल ८ दिन पीके देखें यह सारसापरेलासे १००गुनाअधिक शीघ्र लाभ करता है इसकी १बोतलकीबराबरी सालसा की ५०बोतल नहीकरसकतीहैं।इसका सविस्तरवर्णन हमारे बनाये "मुजरिंवातगौरीशंकर" नामक ग्रन्थमें देखो।गायकी नैनू अथवा घीको पानीसे १०८ बार धोकर लेप करे तो वातरक्त दूर हो अथवा भेडके दूधसे सेक करे तो वातरक्त दूर हो ।

अथ निंबादिचूर्ण।

नीम, गुर्च, हर्र, आंवला, बावची ये चार चार तोले और सोंठि, बायविडंग, पमाडके बीज, पीपरि, अजवाइन, बच, जीरा, कुटकी, सफेद खैर, सैंधानोंन, जवाखार, हल्दी, दारुहल्दी, नागरमोथा, देवदारु, कूट ये सब एक एक तोले लेवे फिर सबको पीस छान कर चूर्ण बनाकर गुर्चके काढाके साथ मासे

चार प्रतिदिन खावे तो एक महीनेमें सोनेके समान शरीर चमकने लगे और अतिउग्र महा असाध्य वातरक्त व सफेद कोढ व उदुम्बर और चर्मदलकोढसे, हुआँ, दाद, खाज, विचर्चिका, मंडल, चकत्ता, किट्टिभ, विप्लुता, आमवातकी सूजन व जलोदरादि आठों उदररोग, प्लीहा, बायगोला, पांडुरोग, कामला, सर्वव्रण इतने रोगोंका नाश होवे यह निम्बादिचूर्ण महाराज नागार्जुनमुनिका कहा हुआ है, रुधिर विकारके नाश करनेके लिये यह सर्वोत्तम औषधि है।

अथ योगसारामृत।

शतावरी, गंगेरन, विधारा, उटंगनके बीज, सांठी, गुर्च, पीपरि, असगन्ध, गोखरू ये पांच, पांच तोले लेकर महीन पीस छान कर चूर्ण करलेवे। मिसिरी तोले २२, शहद तोले १७२, घी तोले ८६ और दालचीनी, इलायची, तेजपात ये तीनों चार चार तोले लेकर महीन पीसकर सब वस्तुओंको एकमें खूब मिलाकर पत्थर या कांचके बर्त्तनमें भर रक्खे फिर बलानुसर प्रातःकालसेवन करै तो वातरक्त, राजयक्ष्मा, १८ कोढ, दुर्बलता, पित्तरक्त, वातपित्त, कफके सर्वरोग तथा सर्व रुधिर विकारोंको दूर करै। शरीरमें बहुत बल बढ़ै, बाल काले हों-बलीपलित दूर हो सोनेके

समान शरीरका रंग निकले इस औषधिके खानेमें इच्छानुसार आहार करे किसी वस्तुका परहेज नहींहै।

अथ प्रभाकरलेप ।

राल, गन्धक, आमलासार, फिटकरी ये तीनोंदो दो तोले और रसकपूर मासे ३ सबको एकमें खूब बारीक पीस लेवे फिर गायका नैनू अथवा घी १०८ बार पानीसे धोये हुयेमें मिलाकर कटिसे पैरोंतक फैलेहुये वातरक्तमें लेप करै तो खुजली व पानी व चेंप बहना पीडा होना दोही दिनमें अवश्य दूर हो लाली मिटै सर्व फुन्सी सूखकर झड जावें। यह बहुत उत्तम लेप है अनेकबारका परीक्षा कियाहुआ है। विसर्प व उपदंशके फोडे व मसूरिकाकोभी अवश्यही पूरापूरा आराम करदेता है अतिशीघ्र चेंप व पानीसा पीला मवाद बहनेको दूर कर ३ व ४ दिनमें आराम करदेता है।

अथ अमृतादिचूर्ण ।

गुर्चका सत तोले९ गुगुल तोले९ दोनोंको पीसकर उसमेंसे मासे३प्रभात पानीके साथ खावे तो १ महीनेमें घोर वातरक्तका नाश हो परन्तु तेल, खटाई, हींग नमक इनसे पूरा परहेज रक्खे। अथवा गुर्च, धनियां, सोंठि, अरंडकी जड इनको बराबर लेकर पीस छान मासे ६ प्रभात पानीके साथ खावे तो १ महीनेमें

घोर वातरक्तका नाश हो अथवा मौरेठी, राल, जामुनके फलकी मींगी अनन्तमूलये सब बराबरलेकर १६ मासेका पावभर पानीमें काढा करे जब एक छटांक रहे तब ठंढा कर अरंडका तेल तोले २ डालकर पीवे अथवा इनका चूर्ण मासे ४ को १ तोला अरंडके तेलमें मिलाकर खावे तो १ महीनेमें वातरक्त दूरहो अथवा गुर्च, अरंडकी जड, सांठीकीजड, शतावरि, पीपरि, देवदारु, असगंध, चिरायता, कुलिंजन, पिपलामूल, सोंठि ये सब सम भाग लेकर पीस छानचूर्णकरै फिर प्रभात ही ४ मासे या ६ मासे चूर्णको १ तोला घीमें मिलाय खावे तो १ महीनेमें वातरक्त दूर हो।

अथ सिंहनादगूगुल।

आंवला, हर्र, बहेडा, बायबिडंग, शिलाजीत, रास्ना, चीता, सोंठि, शतावरि, जमालगोटेकी जड़, पिपलामूल, देवदारु, गुर्च, दारुहल्दी, सांठीकी जड, इलायची, गजपीपरि ये सब बराबर लीजै और इन सबके बराबर शुद्ध गूगुल, फिर सबको पीसछानकर गूगुल मिलाकर गायके घीमे खूब घोटकर चिकने बर्तनमे धर रक्खे फिर मासे ३ या ६ गर्म पानी या दूधके साथखावे तो वातरक्त अवश्य दूर हो तथाकोढ,

पित्त, पांडुरोग, नाभिपीडा, जलोदर, शोफोदर ये रोग भी नाश हों ।

अथ अमृतादिगूगुल ।

आँवला, हर्र, बहेडा, सोंठि, मिर्च, पीपरि, बायबिडंग, तज,गुर्च, निसोत, जमालगोटेकी जड़, ये सब मासे चार चार और गुर्च तोले ५ गूगुल तोले ११ त्रिफला तोले १७ लेवे फिर सबको महीन पीसकर घी मिलाकर लोहेके दंडसे लोहेकी कडाहीमें दो पहर घोटकर चिकने बर्त्तनमें रख छोडे फिर मासे ६ गर्मपानी अथवा दूधके साथ खावे तो घोर वातरक्त दूर हो तथा घोर व्रण, प्रमेह, भगन्दर, आमवात, शोफ व सूजन सबका नाश हो ॥ इति वात० ॥

अथ शूलके लक्षण व चिकित्सा ।

शूलरोग ८ प्रकारका है । वातका १, पित्तका २, कफका ३, वातपित्तका ४, वातकफका ५, पित्तकफका ६, सन्निपातका ७, आमका ८ ।

स्थानविशेषमें होनेके कारण इसके और भी कई नाम व भेद हैं जैसे हृदयमें हो तो हृच्छूल, पसलीमें हो तो पार्श्व (पसली) शूल और नाभिके नीचेके भागमें हो तो बस्तिशूल, नाभिमें होतो नाभिशूल कहते हैं । अगर भोजन करनेके पीछे शूल होवे तो

परिणामशूल कहते हैं। अब हम सबके अतिसूक्ष्म लक्षण कहते हैं॥

जो बस्तिमें शूल होवे वह वातका, जो शूल नाभिमें होवे वह पित्तका, और जो शूल हृदय पसली कटिमें होवे वह कफका, और जो ऊपर कहे सर्व स्थानोंमें शूल हो वह सन्निपातका, और बस्ति, हृदय, कटि, पसली इन स्थानोंमें शूल होवे वह कफवातका, और जो कोखि, हृदय, नाभि इनके बीचमे शूल होवे वह कफपित्तका, और जो दाह व ज्वरसहित शूल होवे वह वातपित्तका शूल है और अन्नके पचनेके समय जो शूल होता है वह आमका शूल है, जो शूल सदा रहे वह अन्नद्रव शूल है॥

अथ चिकित्सा।

वमन कराना, पसीना निकालना, दीपन पाचन औषधियोंका पिलाना, शूल रोगमे उत्तम है। बालूरेतको कपडेमें बांधकर आगमें गर्म कर कर बारम्बार पेट व शूलकी जगहको सेंके अथवा एक बडी बोतलमें थोडा गर्मपानी भर बोतलका मुख बन्द कर पेटपर बोतल फेरै तो शूल दूर हो यह डाक्टरीक्रिया है इसको फोमेन्टेशन कहते हैं॥

अथवा काले तिलोंको कांजीमे खूब महीन बांटकर बड़ा गोला बनाकर पेटपर फेरें (घुमावे) तो शूल

दूर हो। अथवा मैनफलको कांजीमें चन्दनवत् घिसकर थोडा गर्म कर नाभिमें लेप करे तो सर्वशूल दूर हों। अथवा जुलाब लेवे तो सबशूल नाश हों। आमला मासे ६ को पीसकर शहदके साथ खावे तो शूल दूर हो। अथवा पिसी हर्र मासे ६, घी मासे ६, गुड तोला १ मिलाकर खावे तो शूल दूर हो। अथवा हर्र, बहेडा, आमला, राई इन सबको बराबर लेकर चूर्ण कर मासे ६ में घी व शहद मिलाकर खावे तो सर्वशूल नाश हों। अथवा देवदारु, कूट, शतावरि, हींग, सेंधानमक, चोक इन सबको कांजी व गन्नाके सिरकामें महीन पीसकर गुनगुना कर पेटपर गाढ़ा २ लेप करे तो सर्वशूल नाश हों। चोकको संस्कृतमें (हेमक्षीरी) और भाषामें सत्यानाशी कटेरी कहते हैं उसीकी जड लेना। अथवा बेलकी जड, अरंडकी जड, चीतेकी जड, सोंठि, हींग इन सबको बराबर लेकर पानीसे बाँटकर पेटपर गुनगुना करके लेप करे तो सर्वशूल नाश हों। अथवा धतूरेका फल और कुडा अर्थात् इन्द्रजौके वृक्षकी छाली इन दोनोंको बराबर लेकर काँजी अथवा सिरकामे महीन पीसकर गरम कर नाभि व नाभिके चारों तरफ लेप करे तो घोर शूल मिटै। अथवा सोंठि, हर्र, कालानमक इन तीनोंको

मासे तीन तीन लेकर पत्थर पर पानी डाल चन्दनवत् घिसे फिर एक कटोरीमें पोंछकर तोले २ पानी डालकर आगमें गुनगुना कर पीवे तो सर्वशूलोंका नाश हो परन्तु इसके पीनेसे दो दस्त भी होते हैं। अथवा पीपरि, कुटकी, चिरायता, हर्र, एलुआ इन सबको मासा तीन तीन लेकर पानी मिला महीन बांटकर गर्म करके सारे पेटपर मोटा मोटा लेप करे तो सर्वप्रकारके शूलोंका नाश हो मल द्रवै तीन दस्त भी हों। अथवा धनियां, हर्र, हींग, पुष्करमूल, कालानोंन, सेंधानोंन, काचनोंन इन सबको बराबर लेकर पीस छान मासे६ गर्मपानीके साथ खावे तो सर्वशूल और बायगोला व अपतन्त्रवात इतने रोगोंका अवश्य नाश हो। अथवा अमलबेत, सफेद जीरा, कालानोन मिर्च ये क्रमसे तोले दो व ४ व १ व ८ लेकर बिजौरा नींबूके अर्कमें घोलकर चनासम गोली बनाकर खावे तो शूल दूर हो अथवा हींग मासा १, कालानोंन मासा २, सोंठि मासा ४, हर्र मासा ८ लेकर महीन पीस गर्मपानीके साथ खावे तो कटि, कोखि, हृदय, बस्ति इतनी जगहका शूल दूर हो। अथवा अजमोद, सेंधानोन, हर्र, सोंठि ये बराबर लेकर महीन पीस छान मासे ६ चूर्ण गर्मपानीके साथ खावे तो शूल दूर हो। अथवा शंख, कालानोन, सुनी

हींग, सोंठि, मिर्च, पीपरि इन सबको समभाग लेकर चूर्ण करै फिर ६ मासे गरमपानीसे खावे तो घोर शूल मिटै । अथवा हिरणके सींगको लोहेकी रेतीसे रिताय ले फिर मिट्टीकी कुल्हियामें रखकर उसका खूब मजबूतीके साथ मुख बन्द करके मिट्टी व कपड़ेकी तीन कपरौटी कुल्हियापर करके घाममें सुखाकर भट्ठीमें डालदे १ प्रहरके बाद निकाल ठंडा कर कुल्हियाके भीतरसे भस्म निकालकर शीशीमें भररक्खे फिर उसमेंसे मासा १ भस्म गायका घी मासे २ के साथ खावे तो सम्पूर्ण शूल व विशेष-कर हृदयकी शूल और चूतरकी शूल दूर हो । अथवा शंखकी भस्मको गर्मपानीसे पीवे तो परिणाम शूल मिटै । अथवा तिल, सोंठि, हर्र, शंखकी भस्म ये बराबर भाग लेवे और इन सबसे दुगुना गुड मिला-कर सुपारीके समान गोली बनाकर १ गोली प्रातः-काल शीतलजलसे खावे और दूधका भोजन करै तो सर्व प्रकारके शूल दूर हों ॥

अथ शम्बूकादि वटिका ।

घोंघाकी भस्म, सोंठि, मिर्च, पीपरि, कालानोंन, सेंधानोन, सांभरनोंन, खारीनोंन, जवाखार ये समभाग लेकर कदम्ब अथवा सिरसके रसमें खरल कर मासामासा भरकी गोली बनाकर छायामें

खाकर बोतलमें रख देवे फिर गर्मपानीके साथ १
ली खावे तो घोर परिणामशूलका नाश हो। अथवा
रहसिंगाके सीगको पानी डाल चन्दनवत् घिसै
उसमें चनासम हींग मिलाय गरम कर गुनगुना लेप
ै तो पसुलीकी शूल मिटै । अथवा काले तिलोंको
करीके दूधमें खूब महीन बांट ले फिर गरम कर गुन-
ा लेप पसुलीमें करे तो पसुलीकी शूल मिटै ।
थवा सोंठि, हींग, पोहकरमूल, बारहसिंगाका
ग गोमूत्रमें इन सबको बराबर२चन्दनवत् घिसकर
ी कर पेटपर गुनगुना लेप करे तो सर्व प्रकारके
ोका नाश हो ॥ इति शूलचिकित्सा ॥

अथ उदावर्त चिकित्सा ।

मल मूत्र आदि १४वेगोंके रोकनेसे उदावर्तरोग पैदा
ा है सो उन्हीं उन्ही वेगोके नामसे १४ भांतिका
हृदय भारी व शूल युक्त, डकार न आना,
नकमें शूल, आंखोंमें जलन, पेटमें अफरा,
में अरुचि, दस्त बहुत थोड़ा होना, मूत्र लाल
ीला, चिन्ता बहुत इत्यादि उदावर्त्तके बहुत
तारपूर्वक लक्षण व उत्पत्ति व चिकित्सा अगर
ना चाहो तो हमारे बनाये "आयुर्वेदप्रकाश" में
लेना ॥

अथ नाराचचूर्ण ।

निसोत तोला १, पीपरि तोले २, मिसरी तोले ४ इन सबको पीस छान शहदके साथ तोला १ खावे तो मल द्रवे चित्त प्रसन्न हो उदावर्त्त दूर हो ॥

अथ गुडाष्टक ।

सोंठि, मिर्च, पीपरि, पिपलामूल, निसोत, चीता, जमालगोटाकी जड़ इनको बराबर भाग लेकर चूर्ण बनाकर प्रातःकाल चूर्ण मासे ६ गुडके साथ खावे तो घोर उदावर्त दूर हो । और तिल्ली, वायुगोला, सूजन, पांडुरोग इन रोगोंका भी नाश हो अग्नि बढ़े, क्षुधा बढ़े, शरीरमें बल बढ़े शरीरका रंग सुर्ख होवै । अथवा निसोत और हर्रको समान ले महीन पीसकर सेहुंडके दूधके साथ चनासम गोली बनालेवेफिर १गोली प्रातःकाल खाकर ऊपरसे गर्मदूध या गर्मपानी पीवे तो आनाह (दस्त न होना) दूरहो उदावर्त्त जाय । अथवा आधासेर गर्मदूधमे अरंडीका तेल तोले २डालकर पीवे तो मल द्रवे आनाह व अफरा व उदावर्त दूर हो॥ इति उदावर्त्त व आनाह चिकित्सा॥

अथ गुल्मरोगके लक्षण व चिकित्सा ।

गुल्म ५ प्रकारका है—१ वातका, २ पित्तका, ३ कफका, ४सन्निपातका,५रक्तका, प्यास हो, शूल हो,

दाह हो, अरुचि हो, शरीर गर्म हो, व्याकुलता हो ये लक्षण हैं ॥

अथ चिकित्सा।

शरपुंखाका पंचांग अथवा जड़ तोले ६, सेंधानमक तोले ३, हर्र तोले ३ इन सबको पीस छान कर मासे ४ गर्म पानीके साथ खावे तो गुल्म दूर हो अथवा सज्जीखार तोला १, गुड तोला १ इनकी गोली बनाकर मासे २ प्रभात खाये तो गुल्म दूर हो॥

अथ हिंग्वादिचूर्ण ।

हींग, पिपलामूल, धनियां, जीरा, बच, चव्य, चीता, सोनापाठा, कचूर, अमिलबेंत, सेंधानमक, कालानमक, सॉभरनमक, सोंठि, मिर्च, पीपरि, जवाखार, सज्जीखार, अनारदाना, हर्र, पुष्करमूल, अमिली, हाऊबेर, स्याहजीरा ये सब बराबर लेकर अदरखके स्वरसमें भिगोकर फिर बिजौरानींबूके रसमें भिगोकर झरबेरीके बेर बराबर गोलियाँ बनाकर छायामें सुखाकर रखदेवे फिर रोगानुसार १ व २ व ३ गोली खावे तो सर्व प्रकारके गुल्म नाश हों और अफरा, संग्रहणी, बवासीर, उदावर्त, शूल, उदररोग, पथरी, अरुचि, ऊरुस्तंभ, पसली, शूल, हृदयशूल, बस्तिशूल, वातविकार, जलोदर, कठोदर

इतने रोग अवश्यही नाश हों इस गोलीको गर्म पानीके साथ कुछ दिनतक सेवन करै तो पूर्ण चमत्कार दिखावे यह अश्विनीकुमारोंने कहा है बहुत उत्तम अमोघ औषधि है।

अथ वज्रक्षार।

सांभरनोंन, सेंधानोंन, कालानोंन, खारीनोंन, काचनोंन, जवाखार, सज्जीखार, सुहागाखार ये सब बराबर भाग लेकर महीन पीस छान कर सेहुंडके दूधमें भिगो देवे परन्तु तीन दिनतक रोज दूध डाले और घाममें रक्खे फिर तीन दिन उसी तरह आकका दूध डाले और घाममें रक्खा करे जब सूख जावे तब आकके पत्तोंके बीचमें रखकर मट्टीके बर्तनमें रखकर उसका मुख मजबूत बन्द कर उस बर्तन पर तीन कपरौटी कर घाममें सुखाकर आगमें खूब पकावे परन्तु इतना ध्यान रक्खे कि दवा भस्म न हो जावे फिर आगसे निकाल ठण्डा कर उसके भीतरसे वह चूर्ण निकालमहीन पीसलेवे और सोंठि, मिर्च, पीपरि, आंवला, हर्र, बहेड़ा, अजवाइन, जीरा, चीता ये बराबर भाग लेकर ऊपरके चूर्णमें मिलादेवे परन्तु जितना तौलमें ऊपरका चूर्ण होवे उतनाही तौलमें यह चूर्ण भी लेकर मिलावे फिर एक बोतलमें रख देवे उसमेंसे मासे ४ प्रातःकाल जलके साथ इस वज्रक्षारका सेवन करै तो सर्व प्रकारके असाध्य भी

गुल्म नाश हों तथा सर्व प्रकारके असाध्य शूल, अजीर्ण, सूजन, जलोदरादि आठों उदररोग, मन्दाग्नि, उदावर्त्त, तिल्ली ये सब अवश्य ही दूर हों। वातके कोपसे उत्पन्न हुए उक्तरोगोंमें गर्म पानीके साथ खावे; पित्तके कोपसे उत्पन्न हुए उक्त रोगोंमें घीके साथ, खावे और कफके कोपसे उत्पन्न हुए उक्त रोगोंमें, गोमूत्रके साथ खावे और त्रिदोषसे उपजे उक्त रोगोंमें कांजी व गन्नाके सिरकाके साथ इस वज्रक्षारको खावे यह अजीर्ण तथा अजीर्णसे उत्पन्न हुए जो रोग हैं उन सबका नाश करता है बहुत उत्तम अमोघ औषधि है इसे श्रीब्रह्माजीने कहा है ॥

अन्य औषधि।

शोरा ४मासेको अदरखके ४ मासे स्वरससे खावे तो गुल्म दूर हो। अथवा सीपी मासे ३ को पीसकर गुड़में लपेटकर खावे तो गुल्म दूर हो। अथवा सोंठि, मिर्चं, पीपरि, हर्र, सेंधानोंन इनको सम भाग लेकर चूर्ण करै, फिर मासे ३ चूर्ण और मासे ६ घी और घीकुवारका गूदा मासे ६ इतने सब एकमें मिलाकर खावे तो सर्व प्रकारके गुल्म दूर हो। मांस, मछली, सूखाशाक, मूंग, उडद, अरहर, आलू, मीठेफल, ये सब हानिकारक हैं। एक रक्तगुल्म केवल स्त्रियोंके होता है पुरुषोंके नहीं होता। आमलेका रस मासे ६

में रख देवे उसमें ढांकके खारका पानी इतना भर देवे कि, जिसमें सब पीपलें डूब जावेंजब छायामें रखा रहनेसे वह पानी सूख जावे फिर उसी प्रकार और पानी डालकर सुखावे इसी तरह सात भावना देकर छायामें सुखाकर पीस छान रख छोडे फिर मासे दो चूर्ण गर्म पानीके साथ खावे तो प्लीहा गुल्म दूर हों क्षुधा बढै । अथवा शंखकी नाभिका चूर्ण मासे ४ को जंभीरीनींबूके अरक तोला २ के साथ खावे तो बहुत भारी कछुआके आकारवाली सर्व प्रकारकीप्लीहाकानाशहो अथवा शरफोकाकी जड तोला १ को खूब महीन बांट कर गायके आधापाव मट्ठामें मिलाकर पीवे तो २८ दिनमें बहुत पुरानी व असाध्य भी प्लीहाका समूल नाश हो अत्रिके पुत्र महर्षि आत्रेयजीका वचन है कि अगरइस औषधिसे प्लीहाका नाश न हुआ तो जानो कि पानीपर पत्थर तिरगया (तैरने लगा) अथवा सत्यानाशी कटेरीका स्वरस तोला १, शहद तोला १ दोनोंको मथकर पीवे तो १५ दिनमें घोर प्लीहाका नाश हो यह कभी निष्फल नहीं जाता । अथवा समुद्रफेन और ... दोनोंको ... १ मासे १० निराहारमुँह ... य खावे ... २१० । अथवा बथुअ ... एक ... १ ... न ...

मुँह पीजावे परन्तु पहिले भुने हुए चने ११ मुखमें डालकर ओठ बन्द करके खूब चभिलावे फिर चने थूककर बडी जल्दी फुर्तीके साथ उक्त बथुआका स्वरस पीजावे क्योंकि, भुनेचनेकी सोंधी खुशबू लगनेसे पेटमें लरक मुँह खोल देती है इसीसे चने थूककर तुरन्त ही अर्क पीलेना चाहिये यह २१ दिनमें लरकको गला देता है ॥

अथ यकृत चिकित्सा।

ऊपर जो दवाइयाँ प्लीहाके नाशकरनेको कही गई हैं उनसे यकृत्का भी नाश हो जाता है और पीपरि वायबिडंग, जवाखार इनको समभाग लेकर मासे ४ व ६ करंजके पत्तोंके एक तोला स्वरसमें मिलाकर खावे तो यकृत् और प्लीहा दोनों नाश हों ॥

इति प्लीहा चिकित्सा ॥

अथ हृदयरोगके लक्षण व चिकित्सा।

हृदयरोग५प्रकारका है–१वातका,२पित्तका,३कफका, ४ सन्निपातका,५कृमिका छातीमें चीरनेके समान अथवा सूजी चुभानेके समान अथवा भाला या कुल्हाडा मारनेके समान पीडा होवे उसको हृद्रोग कहते हैं। शरीर शीतल, मुख मीठा, अरुचि, मन दुःखी, प्यास, पसीना ये उपजते हैं ॥

अथ चिकित्सा ।

अर्जुन अथवा कोह वृक्षकी छालका चूर्ण मासे ६ दूधके साथ अथवा घीके साथ पीवे तो सर्व प्रकारके हृदयरोगोंका नाश हो । अथवा पीछे शूलरोगमें कही हुई हिरणके सींगकी भस्मसेभी हृद्रोग दूर हो । अथवा पोहकरमूल मासे ९ का चूर्ण शहदमें मिलाकर खावे तो ११ दिनमें हृद्रोग मिटै । अथवा पीपरि सोंठि, अनारदाना, कालानमक, भुनीहींग ये सब समभाग लेकर नींबूके अरकमें खरल कर झरबेरीके बेर समान गोली बनाकर छायामें सुखाकर एक गोली गरमपानीके साथ खावे तो असाध्य हृद्रोग दूर हो ॥ इति हृद्रोग चिकित्सा ।

अथ मूत्रकृच्छ्रके लक्षण व चिकित्सा ।

मूत्रकृच्छ्र ८ प्रकारका है—१ वातका, २पित्तका, ३ कफका, ४ सन्निपातका, ५ मलका, ६ वीर्यका, ७पथरीका, ८ चोटलगनेका । बहुत ही कष्टसे बडीभारी व्यथाके साथ बूंदबूंद कच्चे रुधिरसहित बराबर थोड़ा २ मूत्र उतरे तोंदीके नीचे व जांघोमें व मूत्रनलमें अधिक पीड़ा हो उसे मूत्रकृच्छ्र कहते हैं, भाषामें इसे सुजाक कहते हैं ॥

अथ चिकित्सा ।

गायके कच्चे आधासेर दूधमें तीन तोला गुड मिलाकर थोडा गरम कर गुनगुना पीनेसे मूत्रकृच्छ्र दूर हो। अथवा पके पेठेके रसमें जवाखार मासे ३ और शक्कर तोला १ डालकर पीवे तो मूत्रकृच्छ्र दूर हो। अथवा गोखरू तोले२ का पावभर पानीमें काढा करे जब एक छटांक रहे तब ठण्डा कर उसमें जवाखार मासे ४ डालकर पीवे तो मूत्रकृच्छ्र दूर हो । अथवा आंवला, मुनक्का, बिदारीकन्द, मौरेठी, गोखरू इनको बराबर ले जवकुट कर तोले २ का पावभर पानीमें काढा करे जब एकछटांक रहे तब ठण्ढा कर उसमें मिसिरी तोले २ डालकर पीवे तो असाध्य भी मूत्रकृच्छ्र दूरहो । अथवा पिसेहुए आमलेके ६ मासे चूर्णमें १ तोला गुड मिलाय खाय तो दाह शूलसहित मूत्रकृच्छ्र दूर हो वीर्य बढे । अथवा मिसिरी मासे ६ में जवाखार मासे ६ मिलाकर खावे तो सर्व प्रकारके मूत्रकृच्छ्र दूर हों। अथवा शहद तोला १ में जवाखार मासे ६ मिलाकर खावे तो सर्व उपद्रव सहित मूत्रकृच्छ्रका नाश हो। अथवा सूर्यमुखीके बीज मासे ६ पत्थरपर पीसकर बासी पानीके साथ पीवे तो असाध्यभी मूत्रकृच्छ्र अच्छा हो । अथवा ।

आमलासार गन्धक मासे४,जवाखार मासे४, मिसिरी तोला १ मिलाकर गायके पावभर छांछके साथ पीवे तो असाध्य भी मूत्रकृच्छ्रका नाश होवे। अथवा शिलाजीत, गोखरू, पाषाणभेद, इलायची, केशर, ककडीके बीज, सेंधानमक इन सबको बराबर लेकर पीस छान चूर्ण बना मासे ४ व ६ चावलोंके धोवनसे खावे तो महा असाध्य मूत्रकृच्छ्र दूर हो। गन्धक शोधनकी विधि व चावलोंके धोवनकी विधि व जवाखार बनानेकी विधि पीछे विस्तारपूर्वक वर्णन हो चुकी है। यह सुजाकका रोग बहुतही अधिकताके साथ होता है इस वास्ते हम इसकी अधिक विस्तारके साथ चिकित्सा लिखते हैं। भुनी फिटकरी मासे ३, गेरू मासे २, मिसरी मासे ६ सबको गायके पावभर कच्चे दूधके साथ १५ दिन खावे तो सुजाक दूर हो। अथवा सहिजनेका गोंद १ तोला गायके पावभर दहीमें मिलाकर १० दिन खावे तो सुजाक दूर हो। अथवा राल मासे ६ मिसिरी मासे६ दोनोंको मिलाकर पानीके साथ १५ दिन खावे तो मूत्रके साथ जो कच्चा लोहू आता है वह बन्द हो। अथवा शोरा कलमी मासे ६ बड़ी इलायचीके दाने मासे६दोनोंको मिलाकर सांठीके लाल चावलोंके धोवनसे ७ दिन प्रातः-काल खावे तो सुजाक अवश्य ही दूर हो मूत्रके

सर्व कष्ट मिटैं। अथवा मुरगकेशके बीज मासे ६ शक्कर मासे ६ मिलाकर पानीसे खावे तो १५ दिनमें सुजाक अवश्य दूर हो अथवा गन्दापिरोजाका सत मासा १, गुड मासा १ में मिलाकर खावे और ऊपरसे गायके आधापाव दहीमें एक छटांक पानी मिलाकर घोलकर पीवे तो ११ दिनमें सुजाक दूर हो। अथवा सिरसके कोमलपत्ते तोला १ आधापाव पानीमें बांट छानकर २ तोले मिसरी मिलाकर पीवे। अथवा बबूलकी कोमलपत्ती तोला १, गोखरू तोला १ दोनोंको एक छटांक पानीमें बांट छानकर १ तोला मिसरी मिलाकर पीवे तो सुजाक दूर हो। अथवा कतीरा तोला १, शक्कर तोला १ दोनोंको गायके पावभर कच्चे दूधमें मिलाकर कुछदिन निराहार मुँह सेवन करे तो बहुत पुराना भी सुजाक अच्छा हो। अगर पेशाबके साथ खून आता हो तो सफेद चन्दनका बुरादा तोले २ लेकर रातभर आधापाव पानीमें मिट्टी या पत्थरके बर्त्तनमें भिगो दे सवेरे मलकर छानकर चाकसूके २१ बीज चाबकर वह पानी पीजावे तो रुधिर अवश्य बन्द हो। इति मूत्रकृच्छ्र चिकित्सा ॥

अथ मूत्राघातके लक्षण व चिकित्सा।

विशेषकर मल मूत्र और वीर्यके वेगको रोकनेसे १३ प्रकारका मूत्राघात उत्पन्न होता है। १ वातकुंडलिका

२ अष्ठीला, ३ वातबस्ति, ४ मूत्रातीत, ५ मूत्रजठर, ६ मूत्रोत्संग, ७ मूत्रक्षय, ८ मूत्रग्रन्थि, ९ मूत्रशुक्र, १० मूत्रवात, ११मूत्रशाद, १२विड्घात, १३ वस्ति-कुण्डलिका ॥ इस मूत्राघातको भी भाषामें सुजाकही कहते हैं फरक केवल इतना है कि; मूत्रकृच्छ्रमें पेशा-बकी रुकावट तो थोड़ी ही देर रहती है परन्तु पेशाब करते समय अत्यन्त कष्ट व पीडा होती है और मूत्रा-घातमें पेशाबकी रुकावट बहुत ही अधिक देरतक रहती है परन्तु पेशाब करते समयमें पीडा व कष्ट बिलकुल कम होता है ॥

जो जो चिकित्सा मूत्रकृच्छ्रमें वर्णन होचुकी हैं उन्हींसे मूत्रघात भी अवश्यही आराम होजाता है। राई मासा १, शोरा कलमी मासा १, शक्कर मासे २ मिलाकर पानीके साथ खावे तो मूत्रबंध छूटे। अथवा गेंदाकी पत्ती तोले २ एक छटांक पानीमें पीस छान कर मिसरी तोला १ मिलाकर पीवे तो मूत्रबंध छूटै। अथवा मूसाकी मेंगनी तोले २, शोरा कलमी तोला १ दोनोंको पानीसे बांटकर गर्म कर गुनगुना लेप नाभिके नीचे भागमें करे तो मूत्रबंध तुरन्त छूटै। अथवा केवल मूसाकी मेंगनी व केवल शोराहीके लेपसे भी वही लाभ होता है। अथवा पलाशके फूल आधी छटांक लेकर थोडे पानीमें बांटकर गुनगुना लेप नाभिके

नीचेके भागमें करे तो मूत्रबन्ध छूटै । अथवा रेवन्द-चीनी तोला १ सौंफके अरकमें पीसकर नाभिके चारों तरफ गाढा गाढा लेप करै अथवा शोरा कलमी तोला १ शहतूतके रसमें पीसकर नाभिके चारोंतरफ गाढा २ लेप करै तो मूत्रबन्ध तुरन्त छूटै । अथवा थोडासा कपूर या शोरा लेकर मूत्रनलके छिद्रमें रक्खे तो मूत्रबन्ध तुरंत छूटै । अथवा पेठेके बीजोंकी गूदी तोला १, मिसिरी तोला १ गायके पावभर कच्चे दूधके साथ पीवे तो पेशाब जारी हो । अथवा शोरा तोले २ पावभर पानीमें बांटकर पीवे तो पेशाब जारी हो । अथवा बिनौलाकी मींगी तोला १गायके कच्चे दूध पावभरके साथ पीस छानकर पीवे तो पेशाब जारी हो । अथवा छोटी इलायची, पाषाणभेद, शिलाजीत, पीपरि ये सब सम भाग लेकर चावलके धोवनके साथ तोला १ पीवे तो मूत्रबन्ध तुरन्त छूटै । अथवा सोंठि तोले ८, मिसरी तोले८ मिलाकर ठण्ढेपानीसे दिनभरमें चारबार सब पीजावे तो मूत्रबन्ध छूटै । अथवा आंवला, हर्र,बहेडाकी बकली बराबर बराबर लेवे उसमेंसे तोला १॥ का पावभर पानीमें काढा करै. जब आधापाव रहजावे तब उतार छानकर उसमें मिसिरी तोले २ मिलाकर पीवे तो मूत्रबंध छूटै ॥

इति मूत्राघात चिकित्सा ॥

अथ पथरीके लक्षण व चिकित्सा ।

इसको संस्कृतमें अश्मरी और भाषामें पथरी कहते हैं । अपथ्यकारी वस्तुओंके अधिक खाने और मल-मूत्रादिके वेगोंको रोकनेसे बस्तिस्थानका वायु बिगड-कर वहां रहनेवाले वीर्य, मूत्र, पित्त, कफको खुश्क कर वहांपर पथरी पैदा कर देता है, वह पथरी ४ तरहकी है-१ वातकी, २ पित्तकी, ३ कफकी, ४ वीर्यकी इसमें नाभि व वस्तिमें घोर पीडा हो मूत्र बन्द होजाताहै॥

अथ चिकित्सा ।

जवाखार मासे २, सुहागा कच्चा मासे २ दोनोंको पीसकर गोखरूके दो तोला रसमें मिलाकर पीवे तो पथरी गल जावे । अथवा नीमकी पत्तियोंका खार बनावे फिर वह खार मासे२बासी पानीके साथ खावे तो ७ दिनमें बडीभारी पथरी गलकर पानी हो जावे खार बनानेकी सविस्तर विधि पीछे वर्णन हो चुकीहै। अथवा अंगूरके दरख्तका खार मासे २ गोखरूके स्व-रस तोले दोमें मिलाकर पीवे अथवा करंजके पत्तोंका खार मासे २ शहद तोला १में मिलाकर खावे अथवा तिलके दरख्तका खार मासे२गन्नाके दो तोले सिरका-के साथ पीवे तो पथरी अवश्य ही गलकर पानी होजावे अथवा अंगूरके पत्ते तोले २ का पावभर पानीमें

काढा करे जब आधापाव रह जावे तब दो तोला मिसरी मिलाकर पीवे तो पथरी व मूत्रकृच्छ्र व मूत्राघात इत्यादि मूत्रके सर्व रोग दूर करै। अथवा बरनाकी छाली तोले १॥ का पावभर पानीमें काढाकरे जब आधापाव रहे तब गुड तोले २ डालकर पीवे तोबडी भारी पथरी १० दिनमें गल जावे। अथवा मूलीका खार मासे २ बासीपानीके साथ खावे तो पथरी गलकर पानी हो जावे। अथवा दारुहल्दी, सोंठि, हर्र, जवाखार इनको बराबर लेकर पीस छानकर मासे ६ गायके दहीके साथ पानीसे पीवे तो पथरी ८ पहरमें गलकर पानी होजावे। पथरीवाला पुरुष दाहिनेहाथकी बीचकी अंगुलीमें लोहेका छल्ला पहिने रहे ॥ इति पथरी चिकित्सा ॥

अथ प्रमेहके लक्षण व चिकित्सा।

मदिरा, मांस, स्त्री, शीत, उष्ण, क्लेश, दिनकासोना, गुड, तेल, खटाईके अधिकखानेसे पुरुषकेशरीरमें२० प्रकारके प्रमेहरोग पैदा होजाते हैं। १ उदकप्रमेह, २ इक्षुप्रमेह, ३ सान्द्रप्रमेह, ४ सुराप्रमेह, ५ पिष्टप्रमेह, ६ शुक्रप्रमेह, ७ सिकताप्रमेह, ८शीतप्रमेह, ९शनैःप्रमेह, १०लालाप्रमेह। ये कफके दश प्रमेह हैं ये सब साध्यहैं क्षारप्रमेह १, नीलप्रमेह २, कालाप्रमेह३, हारिद्रप्रमेह४,

मांजिष्ठप्रमेह ५, रक्तप्रमेह ६ ये ६ पित्तके प्रमेह हैं ये कष्टसाध्य हैं । वसाप्रमेह १, नीलप्रमेह २, कामप्रमेह ३, हस्तीप्रमेह ४ ये ४ प्रमेह वायुके हैं ये चारों असाध्य हैं आराम नहीं होते ! परन्तु आत्रेयादि कई आचार्य २४ व २६ प्रमेह मानते हैं ॥ इन सबके लक्षण बुद्धिमान् वैद्य नामके अर्थसे जान लें जैसे उदकप्रमेह, इक्षुप्रमेह, शुक्रप्रमेह, सिकताप्रमेह, नीलप्रमेह, वसाप्रमेह इत्यादि अर्थात् पानीके समान मूत्र उतरै वह उदकप्रमेह है । ईखके रसके समान मीठा पेशाब उतरै वह इक्षुप्रमेह । वीर्यसहित पेशाब हो तो शुक्रप्रमेह ! पेशाबमें बालूसा रेत आवे वह सिकताप्रमेह । नील पेशाब हो वह नीलप्रमेह । हल्दीसा पीला पेशाब हो वह हारिद्रकप्रमेह । चरबी व मज्जा सहित पेशाब आवे वह वसाप्रमेह है इत्यादि सबके लक्षण इसी तरह जानो सारा शरीर सुस्त रहे । बहुतही आलस्ययुक्त रहे । चिन्ता बहुत व्यापैं । वीर्य बहुत पतला व प्रसंगमें स्वप्नमें तुरन्त खलास हो । क्षुधा मन्द हो । पाखाना साफ न होता हो। शरीर दुर्बल रुधिर व मांस कम हो जावे । किसी भी काम करनेका उत्साह न हो ॥

अथ चिकित्सा ।

गेहूँ, चना, मूँग, उड़द, जौ, चांवल, अरहर ये अन्न और करेला, ककोडा, गोभी, तोरई, परवल,

चौलाई, कद्दू, तोंबी, कमलनाल, ककडी, खेखसी, मेथी ये तरकारियां हित हैं। और गुड, खटाई, तेल, लालमिर्च, छाछ, दही, दूध, घी, गन्ना, आसव, शराब, मांस, मछली, लहसुन, पिआज, मूली, नारंगी, अमरूद, केला, चूका, पूडी, कचौरी, घुइयां, आलू, सांभरनमक और सर्व खट्टे व बादी पदार्थ हानिकारक व अपथ्य हैं। नागरमोथा, हर्र, लोध, कायफल ये सब समान भाग लेकर १॥ तोलेका पावभर पानीमें काढा बनावे जब आधापाव रहे तब छान ठंढा कर इसमें शहद १ तोला डाल पीवे तो कफके दशों प्रमेह १ महीनेमें दूर हों। और परवल, नीम, आंवला, गुर्च इनको बराबर लेकर १॥ तोलेका काढा उक्तरीतिसे बनाकर उसमें १ तोला शहद मिलाकर पीवे तो पित्तके छओं प्रमेह दूर हो। अथवा गुर्चका स्वरस तोला १॥ में शहद अथवा हल्दीका चूर्ण तोला १ डालकर पीवे तो २१ दिनमें सर्व प्रमेह दूर हों। अथवा त्रिफलाके १ तोला चूर्णको १ तोला शहदमें मिलाय खावे अथवा आंवला-के १ तोला स्वरस या चूर्णमें १ तोला शहद मिलाकर खावे तो बीसो प्रमेह दूर हों। अथवा शहद तोला १ में शिलाजीत मासे २ मिलाकर खावे तो २१ दिनमें सर्व प्रमेह दूर हों। अथवा छोटी दूधीको छायामें सुखाकर उसके बराबर शक्कर मिलाकर

तोला १ गायके पावभर दूधके साथ खावे तो सर्व प्रमेह २१ दिनमें दूर हों। अथवा एक छटांक बिनौला लेकर शामको आधापाव पानीमें भिगोदे सबेरे मलकर वह पानी कडाहीमें छानकर उसमें मिसिरी तोले ३ डालकर पकावे जब शहद समान गाढी होजावे तब उतार ठंढाकर पीजावे इसी तरह प्रतिदिन करके पीवे तो १५ दिनमें सर्व प्रमेह दूर हों। प्रमेहरोगी जहां पेशाब करे वहां तेलके समान अथवा शहदके समान दाग पडे और उस जगह हजारों मक्खी व चींटियां जमा हो जावें और पेशाब अधिक और बारबार करे प्यास बहुत बढे इसको फारसीमें जीयावेतुस कहतेहैं। उक्त दवासे यह रोग अवश्य नाश हो ॥

अथ कामदेवचूर्ण ।

गोखरू, बिदारीकंद, कुलिंजन, शतावारि ये सब चार चार तोले और कौंचके बीज, उटंगनके बीज, इलायची, पीपारि, लालचन्दन, नागकेशर, सफेद मूसली, छडीला, गुर्च, बंशलोचन ये सब मासे चार चार लेवे फिर सबको पीस छान चूर्ण बनाकर पत्थरके बर्त्तनमें रखकर सेमरके रसकी पुट २१ देवे फिर डाभके रसकी २१ पुट देकर छायामें सुखाकर सबके

समान भाग मिसिरी मिलाकर रख छोडे फिर सवेरे शाम मासे नौ नौ गायके पावभर दूधसे खावे तो सर्वप्रमेह नाश हों, शरीरमें बहुत वीर्य बढे, अपूर्व पराक्रम प्राप्त हो, इस चूर्णकी प्रशंसा कहनेमें नहीं आसकती ॥ इति कामदेवचूर्ण ॥

अथवा महानीमकी पकी व कच्ची निवौली लेकर छायामें सुखाकर चूर्ण करे फिर तोला १ चावलके धोवनसे खावे तो सर्वप्रमेह नाश हों ॥

अथवा बबूलकी कोमल पत्ती तोला १ अगर सूखी हो तो मासे ६ लेकर उसकी बराबर मिसिरी मिलाकर पानीसे पीवे तो १५ दिनमें सर्वप्रमेह नाश हों यह अत्यन्त लाभदायक और शीघ्र गुणकारी औषधि है अपना चमत्कार दिखाये विना कदापि नहीं रहती। अथवा बबूलके फूल या बबूलकी फली जिनमें अभी बीज न पडे हों ये भी उक्त रीतिसे खाये जावें तो वही लाभ करतेहैं जो ऊपर वर्णन हो चुका। अथवा पत्थरपर पानी डालकर निर्मलीको चन्दनकी तरह घिसे फिर मासे २ में कालीमिर्च रत्ती ६ मिलाकर चाटे तो धातुके सर्वरोग नाश हों। यह औषधि चमत्कारी है।

प्रमेहारिचूर्ण।

गोखरु, तालमखाने, मूसली दोनों, शतावरि, कौं-

चके बीज, उटंगनके बीज, कच्चा सिंघाडा, ईसबगोल-की भूसी, बबूरका गोंद, वहिमन सफेद, वहिमन लाल, तोदरीजर्द, तोदरी सुर्ख, कसेरू, लहसोडा, रूमीमस्तंगी ये सब बराबर लेकर पीस छान चूर्ण करै फिर सबके बराबर मिसरी मिलाकर कांचकी शीशीमें भर रक्खै फिर सबेरे शाम दोनों वक्त गायके पावभर दूधके साथ तोला एक एक दिन २१ खावे तो सर्व प्रमेह दूर हों शरीरमें वीर्य व रुधिर बढे शरीर चमकीला और मोटा ताजा महाबलवान् होजावे धातु अत्यन्त गाढी होवे ॥

अथवा घीकुऑर जिसको "गमारमाठा" भी कहतेहैं उस का गूदा सेर एक लेकर हाथोंसे खूब मथ लेवे फिर कडाहीमें घी सेर एक डालैं उसीमें वह गूदा भी डालै और एक घडीभर चुरावै फिर उसीमें गेहूंकी मैदा आधासेर और शक्कर सेर एक डालकर लड्डू एक एक छटांकके बना रक्खे फिर निराहार मुंह १ मोदक गायके दूधके साथ खावे तो ११ दिनमें सर्व प्रमेह दूर हों. हमने अनेक प्रमेहरोगी आराम किये परन्तु इस औषधिके २१दिन खानेसे शरीरमें जितना मांस बढताहै उतना किसी भी औषधिसे हमने नहीं देखा और इससे भूख बढ़ती, बल बढ़ता, वीर्य बढता, रु-धिर बढता और सबसे अधिक मांस बढता है । रोगीका

रोग दूर होकर खूब मोटा ताजा होजाता है। परन्तु हम उक्त औषधिको कई प्रकारसे काममें लाते हैं, कभी गमारपाठेका बिना पानी मिलाये बाष्पयंत्र (भबका) से अर्क खींचकर दूध या शक्कर या शहदके साथ खवाते हैं, कभी गमारपाठाके गूदामें गेहूंके मैदाको घोलकर घीमें जलेबी व बून्दी या बालूसाही बनाकर शक्करकी चाशनीमें तलकर दूधके साथ खिलाते हैं इत्यादि ॥

अथवा मोतीके दानावाली सीपीकी भस्म तोले २ तजसुरती तोले ५ सफेदमुसली तोले ५ इन सबको पीस छान चूर्ण करै फिर चूर्ण तोला १ निराहार मुंह खावे ऊपरसे दूध वा पानी कुछ भी न पीवे तो २१ दिनमें सर्व प्रमेह दूर हों। मोतीवाली सीपी ३ व ४ गिरह लम्बी और २॥ वा ३ गिरह चौडी और करीब दो अंगुलकी मोटी और उसकेभीतर मूंगके दानाकेसमान २० व २५ ऊंचे ऊंचे शीतला (चेचक) के दानोके समान दाने उभरे हुए रहते हैं उन्हीके भीतर मोती अनबिंधे रहते हैं। अथवा रेवन्दचीनी मिसरी सिंघाडा इन सबको बराबर लेकर चूर्ण करै फिर मासे ९ निराहारमुंह गायके पावभर दूधके साथ खाय तो बहुत पुराने भी प्रमेह दूर हों। अथवा उदुम्बरके पक्के ५ फल थोड़ा सेंधानमकके साथ २१ दिन तक प्रातःकाल खाय तो सर्व प्रमेह नाश हो। अथवाभीम-

सेनी कपूर मासा १, कस्तूरी मासा १, अफीम मासे ४,जावित्री मासे४इन सबको बँगलापानकेरसमें घोटकर एक एक रत्तीकी गोलियां बनाकर छायामें सुखालेवे फिर एक एक गोली सबेरे शाम दूधकेसाथ खावे तो सर्वःप्रमेह नाश हों वीर्य बहुत पुष्ट व गाढा होवे।

अथ प्रमेहनाशन चूर्ण।

आंवलाकी बकली तोला १॥ हर्रकी बकली तोला १॥ बहेडाकी बकली तोला १॥, सफेदजीरा तोले८, धनियां तोले ८, कौंचकेबीज तोले८, दालचीनीतोले ४, लौंग तोले४, नागकेशर तोले ४, तुख्मरेहां तोले४ छोटी इलाचीके बीज तोले ४ इन सबको पीस छान चूर्ण करे फिर चूर्ण मासे ९ बराबरकी मिसरी व घीके साथ खावे चाहे उक्त चूर्णको घीमें भूनकर एकसेर मिसरीकी चाशनीमें तीन तीन तोलेके मोदक बना लेवे फिर एक मोदक प्रातःकाल दूधके साथ खावे तो सर्व प्रमेह अवश्यही नाश हो वीर्य बहुत गाढा होवे, शरीरमें अत्यन्त बल बढै ॥

अथ त्रिफला तैल धातुरोगपर।

नीमकी छाली आधापाव, चिरायता आधापाव, हल्दी आधापाव, दारुहल्दी आधापाव, लालचन्दन आधापाव इन सबको एकत्रित कर जवकुट करै,

फिर सबका तीनसेर पानीमें काढा करे जब तीन पाव पानी शेष रहे तव उतार कर कडाहीमें छान देवे फिर उसी कडाहीमें आधासेर तेल तिलोंका डाल कर मन्दाग्निसे तेल सिद्ध कर लेवे जब पानी जलकर फेनारहित तेल होजावे तब शुद्ध जानकर किसी कांचकी शीशीमें रख देवे फिर इस तेलकी प्रतिदिन मालिश करै तो धातु अत्यन्त पुष्ट हो शरीरमें रुधिर व मांस बढै चित्त प्रसन्न रहे तथा शिरका घूमना, चक्कर खाना, आंखोंकी जलन भी अवश्यही दूर हो यह बहुत गुण-कारी तैल है। अथवा नगौरी असगंध और बिधारा दोनोको समभाग लेकर चूर्ण बनावे फिर प्रातः काल मासे ९ दूधके साथ खावे तो धातु अत्यन्त गाढी व पुष्ट होवे। धातुके सर्वरोग नाश हों शरीर मोटा हो यह असगंधादि चूर्ण है॥

अथ खंडादिचूर्ण सर्वप्रमेहपर।

शक्कर सेर १, मिर्च, लौंग, छुहारा, बादाम, चिरौंजी, तज, तेजपात, इलायची, लालचन्दन, पीपरि, सफेदजीरा, स्याहजीरा, सोंठि, धनियां, पिपरामूल, कौंचके बीज, नागरमोथा, वंशलोचन, कमलगट्टा, तवाखीर, शतावरि, स्याहमूसली, सफेद मूसली ये सब तोला दोदो लेकर पीस छान चूर्ण

बनाकर गायके दूधके साथ प्रातःकाल तोला १ खावै तो एक महीनेमें सर्वप्रमेह नाश हो धातु बहुत चढै शरीर खूब मोटा व पुष्ट होवै ॥

अथ प्रमेहहरण चूर्ण ।

शंखाहूली तोले ५,छोटी इलायचीके बीज तोले५। शिलाजीत शोधा हुआ तोले ५, तवाखीर तोले १०, मिसिरी तोले १०इन सबको एकत्रित कर पीस छान चूर्ण बनाकर मासे९ प्रातःकाल दूध अथवा बासीपानी के साथ खावे तो सर्व प्रमेह नाश हों ॥

अथ प्रमेहपर मधुयष्टीचूर्ण ।

मौरेठी, गुर्च ऑवला, हर्र, बहेडा, बिदारी- कन्द, सफेद मूसली, स्याहमूसली, नागकेशर, शतावरि ये सब बराबर लेकर पीस छान चूर्ण, बनावे प्रातःकाल मासे ४ व ६ घी और शहदमें मिलाकर खावे तो १ महीनेमें धातुके सर्वरोग नाश हों शरीरमें इतना वीर्य बढै कि, लिखनेमें नहीं आसकता,अथवा केवल मौरेठीका चूर्ण मासे ६ शहदमें मिलाकर चाटै ऊपरसे पावभर गायका दूध पीवे तो शरीरमें बल व वीर्य अत्यन्त बढै ॥

अथ प्रमेहपर शतावरिचूर्ण ।

शतावरि, गोखरू, कौंचके बीज, वरियारीकी

जड, तालमखाने, ककईकी जड ये सब बराबर लेकर पीस छान चूर्ण बनाकर मासे ६ प्रातःकाल गायके दूध पावभरसे खावे तो धातुके सर्वरोग दूर हों वीर्य अत्यन्त बढे। अथवा गुर्च, आंवला, गोखरू ये बराबर लेकर पीस छान चूर्ण बनावे फिर प्रातःकाल मासे ६ चूर्ण शहद और घीमें मिलाकर खावे तौ निर्वीर्य भी वीर्यवान् और महाकामी होवे ॥

अथ प्रमेहकी उत्तम दवा।

सालिबमिसरी, सोरंजानमीठा, बोजीदान, शीतलचीनी, दालचीनी, रूमीमस्तगी ये सब मासे छः छः और गोखरू और मिसिरी तोले तोले भर लेवे फिर सबको पीस छानकर मासे ४ व ६ प्रातःकाल बकरी या गायके दूधसे खावे और खटाई, मिर्चा, तेल, गुडसे परहेज करै तो १५ दिनमें धातुके सर्व रोग नाश हों और शरीरमें रुधिर और धातु बहुत बढे स्तम्भन पैदा हो ॥

अथवा भूनेहुए चने, खशखशदाना, भूनी हुई धनियां, गोखरू, दालचीनी, सालिबमिसरी सबको समभाग और सबके बराबर मिसरी मिलाकर पीस छान चूर्ण बनावे फिर मासे९प्रातःकाल गायकेपावभर दूधके साथ खावे तो धातुके सर्वरोग २४ दिनमें अवश्य

बनाकर गायके दूधके साथ प्रातःकाल तोला १ खावे तो एक महीनेमें सर्वप्रमेह नाश हों धातु बहुत चढै शरीर खूब मोटा व पुष्ट होवै ॥

अथ प्रमेहहरण चूर्ण ।

शंखाहूली तोले ५, छोटी इलायचीके बीज तोले५ शिलाजीत शोधा हुआ तोले ५, तबाखीर तोले १०, मिसिरी तोले १०इन सबको एकत्रित कर पीस छान चूर्ण बनाकर मासे९ प्रातःकाल दूध अथवा बासीपानी के साथ खावे तो सर्व प्रमेह नाश हों ॥

अथ प्रमेहपर मधुयष्टीचूर्ण ।

मौरेठी, गुर्च आँवला, हर्र, बहेडा, बिदारीकन्द, सफ़ेद मूसली, स्याहमूसली, नागकेशर, शतावरि ये सब बराबर लेकर पीस छान चूर्ण, बनावे प्रातःकाल मासे ४ व ६ घी और शहदमें मिलाकर खावे तो १ महीनेमें धातुके सर्वरोग नाश हों शरीरमें इतना वीर्य बढे कि, लिखनेमें नही आसकता.अथवा केवल मौरेठीका चूर्ण मासे ६ शहदमें मिलाकर चाटै ऊपरसे पावभर गायका दूध पीवे तो शरीरमें बल व वीर्य अत्यन्त बढे ॥

अथ प्रमेहपर शतावरिचूर्ण ।

शतावरि, गोखरू, कौंचके बीज, बरियारीकी

जड, तालमखाने, ककईकी जड ये सब बराबर लेकर पीस छान चूर्ण बनाकर मासे ६ प्रातःकाल गायके दूध पावभरसे खावे तो धातुके सर्वरोग दूर हों वीर्य अत्यन्त बढै। अथवा गुर्च, आंवला, गोखरू ये बराबर लेकर पीस छान चूर्ण बनावे फिर प्रातःकाल मासे ६ चूर्ण शहद और घीमें मिलाकर खावे तो निर्वीर्य भी वीर्यवान् और महाकामी होवे॥

अथ प्रमेहकी उत्तम दवा।

सालिबमिसरी, सोरंजानमीठा, बोजीदान, शीतलचीनी, दालचीनी, रूमीमस्तगी ये सब मासे छः छः और गोखरू और मिसिरी तोले तोले भर लेवे फिर सबको पीस छानकर मासे ४ व ६ प्रातःकाल बकरी या गायके दूधसे खावे और खटाई, मिर्चा, तेल, गुडसे परहेज करै तो १९ दिनमें धातुके सर्व रोग नाश हों और शरीरमें रुधिर और धातु बहुत बढै स्तम्भन पैदा हो॥

अथवा भूनेहुए चने, खशखशदाना, भूनी हुई धनियां, गोखरू, दालचीनी, सालिबमिसरी सबको समभाग और सबके बराबर मिसरी मिलाकर पीस छान चूर्ण बनावे फिर मासे९प्रातःकाल गायकेपावभर दूधके साथ खावे तो धातुके सर्वरोग २४ दिनमे अवश्य

नाश हों। अथवा मौरेठी तोला १॥, गुलनार तोले ३, काहूके बीज तोले ४॥, सम्हारूके बीज तोले ५ फिरि सबको पीस छानकर निराहारमुँह मासे ६ व पानीके साथ खावे तो ७ दिनमें धातुके सर्वरोग नाश हों यह उत्तम औषधि है। अथवा मोतीभरीहुई सच्ची सीपी तोले ५ लेकर तीनदिन तक खूब महीन खरल करे। तालमखाना तोले ५, मिसिरी तोले ५, सबको बारीक पीस छानकर एकमें मिलाकर बड़के दूधमें भिगोकर झरबेरीके बेरकी बराबर गोली बनाकर छायामें सुखाकर रख छोड़े फिर १ गोली निराहार मुँह गायके पावभर दूधसे पहिले दिन खावे, दूसरे दिन १ गोली सबेरे १ शामको। तीसरे दिन दो गोली सबेरे दो शामको खावे। इसीतरह ७ दिन खावे तो धातुके सर्वरोग जडसे नाश हों अगर कोई पुरुष इस गोलीको ४० दिनतक ब्रह्मचर्यके साथ खा सके तो जो जो चमत्कारिक लाभ हों वह लिखनेमें नहीं आ सकते परीक्षा कर देखो ॥

दिलखुशचूर्ण ।

शकाकुलमिसिरी ४ तोले, सालिबमिसरी १तोला, छोटी इलायचीके बीज १० मासे, बहिमन सफेद १ तोला, बहिमनलाल १तोला, दालचीनी १तोला, मूसली

स्याह २ तोला, मूसलीसफेद२तोला, छुहारा २ तोला गोखरू मासे १० गावजवां १० मासे, मिसिरी १७ तोले फिर सबको पीस छान चूर्ण बनाकर मासे १० निराहारमुँह गायके दूधसे खावे तो धातु पुष्ट होशरीर मोटा हो। मस्तक, हृदय, कलेजा और कामदेव अत्यन्त बलवान हो। यदि इस रोगपर अनेक वार की परीक्षा की हुई अनेक प्रकारकी फकीरी जड़ी बूटियां जानना चाहो तो मुझ ग्रंथकर्त्ताके बनाये "बूटीप्रकाश" नामक ग्रंथको देखो॥

अथ सदाबहार वटी।

शोधा हुआ कुचिला १ तोला, मिर्च, कंकोल, मिर्च, अगर, अगरबिलसां अकरकरा, दोनों इलायची, आमला, तालमखाना, बालछड़, मीठेइन्द्रजौ, दालचीनी, रूमीमस्तंगी, छोटी हर्र, सौंफ, लौंग, नागरमोथा, पीपल, जायफल, ये सब छः छः मासे लेवे और शहद तोले ३२ लेवे फिर सब दवाइयोको पीस छान कर शहदकी चाशनीमें पांच २ मासेकी गोलियां बना रक्खे फिर हर रोज निराहारमुँह १ गोली खावे तो ४० दिनमें गईहुई जवानी फिर दुबारा वापिस आवे और धातुके सर्वरोग दूर हो तथा आतशगर्मी और गठिया वातादि ८४ वातरोग भी नाश हो,

क्षुधा खूब बढै शरीरका रंग चमकदार निकले कामदेवका प्रताप शरीरको रात दिन संतप्त करै ॥

अथ धातुरोगपर अद्भुतचूर्ण ॥

छोहारे १८ तोले ४ मासे, रूमीमस्तंगी १ तोला ८ मासे, सफेदमुसली १ तोला ८ मासे इन सबको महीन पीस कर शक्कर २३ तोले ४ मासे मिलाकर सबकी १३ खुराक बांधे फिर रातको सोते समय १ खुराक अर्थात् ३॥ तोले खाकर ऊपरसे गर्मागरम दूध गायका जो सेरभरका तीन पाव रहगया हो पीवै तो वीर्य अत्यन्त गाढा हो।खट्टा, खारी, बादी,इनका और स्त्रीका परहेज रक्खे यह वीर्यको निर्दोष करनेके लिये अव्वल दर्जेका नुस्खा है जो अनेक बार तजरुबामें आचुका है अथवा सिरसके बीज और पलाशके बीज दोनोंको बराबर लेकर पीस छान चूर्ण बनाकर उसके बराबर शक्कर मिलाकर १ तोला रोज गायके पावभर दूधके साथ खावे तो धातु बहुतगाढी हो अथवा आंवलाकी बकली,हर्रकी बकली,बहेडाकीबकली,बबूलके फूल,हल्दी,छोटी दूधिया ये सब बराबर लेकर पीस छान चूर्ण बनाकर सबके बराबर शक्कर मिलाकर १ तोला गायके पावभर दूध के साथ खावे तो धातुके सर्वरोग दूर हो दस्त साफ होवे भूख बढे । अथवा

कच्चा सिंघाडा, ढाकका गोंद, समुन्दर सीप, बीजबन्द, सेमलका गोंद, बबूलका गोंद, तालमखाना, गोखरू, कौंचके बीज, धनियाँ, मेदा लकडी, ईसबगोलकी भूसी ये सब दो दो तोले और काहूके बीज ६ तोले, मिसिरी १९ तोले लेकर सबको पीस छान चूर्ण बनाकर १ तोलाभर गायके पावभर दूधके साथ खावे तो धातुके सर्वरोग नाश हों शरीर मोटा और ताकतवर होवे ॥ इति प्रमेह चिकित्सा ॥

अथ प्रमेहपिडिकाके लक्षण व चिकित्सा।

प्रमेहरोगीके १० भांतिकी पिडिका उत्पन्न होती हैं १ शराविका, २ कच्छपिका, ३ जालिनी, ४ विनता, ५ अलजी, ६ मसूरिका, ७ सर्पपिका, ८ पुत्रिणी, ९ विदारिका, १० विद्रधी ॥ सराईके आकार हो वह शराविका, कछुआके समान हो वह कच्छपिका। सरसोंके समान हो वह सर्षपिका। बिदारीकन्दके आकार हो वह बिदारिका। इसी प्रकार उन उन नामोंसे मशहूर हैं ॥

अथ सबकी चिकित्सा।

सबसे प्रथम उनमे जोंक लगाकर लोहू निकलवावे फिर गाय अथवा बकरीके मूत्रसे दिनमे दो बार उनको धोया करे फिर, बबूलकी हरी पत्ती तोले २ इला-

यची छोटी४, कत्था सफेद मासे ३लेवे आगपर एक कटोरी रखदेवे उसीमें बबूलकी पत्ती डालदेवे थोडी देरमें पत्ती जलकर भस्म होजायगी उसको बारीक पीस लेवे फिर इलायची ४ आगमें डालकर भस्म करके पीस लेवे और कत्था भी पीसलेवे फिर सबको एकमें मिलाकर शीशीमें रखदेवे फिर प्रतिदिन साबुन अथवा निर्मलीके पानीसे पिडिकाको धोकर कपडेसे पोंछकर उसपर थोडासा अरंडीका तेल चुपडकर वह शीशी वाली उक्त दवा उसपर बुरका देवे तो५दिनमें सर्वप्रकार की असाध्य भी पिडिका दूर हो । अथवा पत्थर पर पानी डालकर नीमकी बकली घिसे और उतनाही मुर-दासंग घिसे फिर दोनोंको मिलाकर पिडिकाओंपर चुपड देवे तो पिडिका अच्छीहो॥इतिप्रमेह पिड़िका॥

अथ मेदरोगके लक्षण व चिकित्सा ।

दंड कसरत इत्यादि किसी प्रकारका परिश्रम न करने से दिनके सोनेसे बहुत मीठी खट्टी और पूडी कचौरी इत्यादि अधिक खानेसे कफके बढानेवाले अधिक आहार विहारोके करनेसे मनुष्यके शरीरमें मेद बढ जाता है तब मोह, ग्लानि, निद्रा, आलस्य, भूंख, पसीना, मांस, चरवी ये बहुत ही बढ जाती हैं बल और मैथुनशक्ति ये बहुत ही घट जाती हैं । पेट व छाती बहुत बढ जाते और चलनेमें चूतड उदर (पेट)

छाती ये थलर २ खूब हिलते हैं यह रोग मनुष्यको बेकाम करदेता है।

अथ चिकित्सा।

सोंठि, मिर्च, पीपरि, च्याब, सफेद जीरा, हींग, काला नमक, चीता इनको समभाग लेकर चूर्ण बनाकर मासे ६ गर्म पानीसे सवेरे पीवे तो मेदरोग दूरहो। अथवा सोंठि, मिर्च, पीपरि, आंवला, हर्र, बहेडा इनको बराबर भाग लेकर चूर्ण बनाकर सरसोंका तेल और सेंधानमकके साथ मासे ६ रोज सबेरे खावे तो ६ महीनेमें मेदरोग अवश्य ही दूर हो अथवा पावभर बासीपानीमें दोतोले शहदडालकर निराहार मुँहपीवे तो २ महीनेमें मेदरोग दूर हो। अथवा अरनीका स्वरस तोला १ में शुद्ध शिलाजीत २ मासे मिलाकर सेवन करे तो मेदरोग दूर हो। अथवा चीतेकी जडका चूर्ण मासे४ शहद तोले १ से चाटै तो मेदरोग दूर हो। अथवा पीपरिका चूर्ण मासे ६ शहद तोला १ से चाटै तो मेदरोग दूर हो। अथवा त्रिफलेके१तोला चूर्णको शहद मिलाकर खावे या आधापाव गोमूत्रमें १॥ तोला शहद डालकर पीवे तो मेदरोग दूर हो॥

अथ दशांग गुग्गुल।

सोंठि, मिर्च, पीपरि, चीता, आंवला, हर्र, बहेडा नागरमोथा, बायबिडंग, शुद्ध गूगुल ये सबबराबरले—

पीस छान चूर्ण बनाकर मासे६शहद या पानीके साथ सेवन करै तो मेदरोग मिटै पुराने चांवल,मूँग,कुलथी, कोदों, जौ, सामा, जागरण. मैथुन,दंड,कसरत, परिश्रम, चिन्ता, मार्गभ्रमण, शहद इतनी वस्तुओंको मेदरोगी हमेशा सेवन करै । इति मेदरोग चिकित्सा॥

अथ कार्श्यरोगके लक्षण व चिकित्सा ।

वातकारक व रूखे पदार्थोंके खाने पीनेसे लंघन या भरपेट न खानेसे, बहुत वमन विरेचन लेनेसे, धनादिके अधिक शोचसे, नींद,मल, मूत्रादि वेगोंके रोकनेसे, चित्तके बिगाडनेवाले काम करनेसे, बहुत भयसे,मनुष्यके शरीरमें कृशताकारोग उत्पन्न होजाता हैतब शरीरके जोड और मुखको छोडकर शेष सर्वशरीर, चूतड, पेट, कंधा इत्यादि ये सब सूख कर नसें निकल आतीं और केवल हाड और खालमात्र बाकी रहजाता है तब भी अगर चिकित्सा न की जावे तो प्लीह,खांसी,यक्ष्मा,गुल्म,बवासीर, जलोदर,संग्रहणी इत्यादि रोग पैदा होजाते हैं ।

अथ चिकित्सा ।

असगन्ध, दोनों मूसली ये तीनों बराबर लेकर समभाग मिलाकर गायके दूधसे तोला १ प्रतिदिन खावे तो शरीर मोटा होवे यह दवा स्त्रियोंको बहुत

लाभ देवे। अथवा गेहूँका सत, बादामकी मींगी, कतीरा, शक्कर ये सब समभाग लेकर पीस छानकर १ तोलाभर गायके दूधसे प्रतिदिन खावे। अथवा कालीमिर्च २॥तोले, सोंठि २॥ तोले, पीपरि ७॥ तोले, तिल १२॥ तोले, अखरोटकी गिरी १२॥ तोले, शक्कर २ सेर, शहद आधासेर इन सबको पीसकर शक्करकी चासनी बनाकर उसीमें शहद वगैरः सर्व औषधी डालकर दो दो तोलाके लड्डू बनाकर खावे तो कृशता दूर हो मोटा व बलवान् होवे। यदि भय व धनादिकी चिन्तासे यह रोग हो तो समझावे तसल्ली करे दिलासा देवे ॥ इति ॥

अथ उदररोगके लक्षण व चिकित्सा।

मन्दाग्निसे अजीर्णसे बुरे अन्न व खराब पानीके पीनेसे पाखाना खुलासा न होनेसे वात पित्त और कफ बिगड़कर पसीना और जल व रसके बहानेवाले स्रोतोंको रोककर प्राण व अपानवायुको बिगाड़कर मनुष्यके शरीरमें वातका, पित्तका, कफका, त्रिदोषका, प्लीहका, बद्धगुदोदर, क्षतोदर, जलोदर ये आठ प्रकारके उदररोग पैदा करतेहैं, पेटमें अफरा रहे चलने फिरनेकी शक्ति नष्ट होजावे बल बिल्कुल जाता रहे, मदाग्नि होजावे, सर्व अंग शिथिल होजावें। अपानवायु और मल बहुत कम

उतरे, शरीरमें सूजन पैदा हो, आंखोंके पलक सूजे रहें, शरीरमें दाह और आलस व औंघाई बहुत आवे तब जानो कि, उदररोग है ॥

वातोदरके लक्षण ।

हाथ, पैर, नाभि, कोखमें सूजन होवे और कोखि, पसली, कमर, पीठ और जोडोंमें फाडनेके समान पीड़ा होवे । सूखी खांसी होवे । शरीर टूटा जावे । दस्त उतरे नहीं, तोंदीके नीचे बोझासा मालूम होवे. खाल, नख, नेत्र ये काले या लाल होवें पेट बोले और बढिजावे तथा बहुत शूल होवे और पेटमें महीन और काली नसोंका जालसा होजावे पेटमें अंगुली मारनेसे फूली मशककासा शब्द होवे हवाका गोला-सा पेटमें फिरता रहै ॥

पित्तोदरके लक्षण ।

ज्वर, मूर्च्छा, दाह, प्यास, मुखमें कडुवापन, भ्रम, अतीसार, खाल, नख व नेत्रोंमें पीली रंगत, पेट हरा, पीली तांबेके समान पेटकी नसें होजावें ।,पसीना व डकार बहुत आवें दर्द खूब होवे ॥

कफोदरके लक्षण ।

अंग शिथिल, नीद बहुत आवे, सूजन होवे, आलस्य, ग्लानि, अरुचि, श्वास, खांसी, खाल,

नेत्र, नख ये सफेद होवें। पेट गीला और सफेद नसोंसे युक्त और कड़ा व ठंढा और भारी और पत्थरसा होजावे और उसपर हाथ रखनेसे मालूम ही न होवे ॥

त्रिदोषजके लक्षण।

जिसमें ऊपर कहे हुए सब लक्षण मिलें वह त्रिदोष-का है ॥

प्लीहोदरके लक्षण।

बाईं या दाहिनी तर्फ उदरमें अत्यन्त कठोर होवे और उसीमें प्लीहाके सर्व लक्षण मिलें ॥

बद्धगुदोरके लक्षण।

हृदय और नाभिके बीचका भाग बढि जावे और उसमें दर्द होवे मल बहुत थोडा उतरै यह बिना शोधा अन्न व पानी कि जिसमें बाल कंकड रेत धूल वगैरह मिले हों उसके खानेसे होजाता है ॥

क्षतोदरके लक्षण।

जिसके मलद्वारसे सफेद पानीसा थोडा थोडा हर समय निकला करै और नाभिके नीचेका भाग बढि जावे और उसमें शूल होवे यह भी अन्नमें रेत पत्थर वगैरः खानेसे होजाता है ॥

जलोदरके लक्षण।

वमन विरेचन व स्वेदन या वस्तिकर्मके पश्चात् तुरन्त ही शीतलजल पीनेसे और ज्वरमें ठंढा पानी पीनेसे यह रोग होजाता है नाभिके चारोंतरफ पेटमें बहुत पानी भरजानेसे पेट भी बहुत बढ जाता है और झलझलाता है तथा खूब थलर थलर हिलता है अगर पेटपर हाथ मारे तो तबलेकीसी आवाज आती है शूल हो, अतीसार हो, मूत्रातीसार हो, उदरके सर्वरोग कष्टसाध्य हैं। अगर बलवान् और युवा पुरुषके हों तो बडी मुश्किलसे आराम होते हैं ॥

अथ चिकित्सा।

पावभर गोमूत्रमें दो तोला अंडीका तेल डालकर पीवे अथवा मट्ठामें पीपलका चूर्ण और सेंधानमक मिलाकर पीवे। अथवा केवल ऊंटनीका दूध पीवे तो वातोदर दूर होवे। कूट, दन्ती, जवाखार, त्रिकुटा, सेंधानमक, कालानमक, सांभरनमक, बच, जीरा, अजवाइन, हींग, सज्जी, चाव, चीता, सोंठि ये सब समभाग लेकर पीस छानकर मासा६गर्मजलके साथ पीवे तो वातोदर दूर होवे अथवा समुद्रनमक, कालानमक, सेंधान्मक, जवाखार, अजमोद, पीपल, चीता, अदरक, हींग, सांभरनोन, खारीनोन सब समभाग लेकर

चूर्ण बनाकर मासे ४ घीमें मिलाकर भोजनके प्रथम ग्रासमें खावे तो वातोदर, गुल्म, अजीर्ण, संग्रहणी बवासीर, पांडु, भगन्दर इतने रोग नष्ट होवें। पृष्ठिपर्णी, खरैंटी, कटेरी, लाख, सोंठि ये समभाग लेकर दूधमें पकाकर पीवे तो पित्तोदर दूर होवे। गर्म दूधमें अंडीका तेल डालकर पीवे तो कफोदर दूर होवे। सांठीचावल, गेहूँ, जौ, निवारधान्य, विरेचन, वस्तिकर्म ये उदररोगमें पथ्यहैं और मांस,मछली, शाक, तिलके पदार्थ, दंड, कसरत, परिश्रम, मार्ग चलना, दिनमें सोना, हाथी व घोडेकी सवारी गर्म व नमकीन वस्तु, खट्टे व वादीपदार्थ, दाहकारक व भारीपदार्थ,इतनी वस्तुयें उदररोगी त्याग देवे। मालकांगनीके तेलको गर्म दूधमें डालकर ८ दिन पीवे तो सर्व प्रकारके उदररोग दूर होवें। अथवा थूहरके दूधमें छोटी पीपरिको भिगोकर खावे तो सर्व उदररोग दूर होवें। अथवा शिलाजीतको गोमूत्रमें डालकर पीवे अथवा गूगुलको त्रिफलाके काढामें डालकर पीवे अथवा भैंसका मूत्र या ऊंटनी या बकरीका मूत्र दूधके साथ पीवे तो ७ दिनमें शोथोदर दूर होवे। अथवा बबूलकी छालके काढाको कडाहीमें डालकर खूब गाढा करके जंगलीबेरकी बराबर गोलियां बनालेवे फिर १ गोली मट्ठाके साथ खावे तो जलोदर दूर

होवे । अथवा आकका दूध ८ तोले, सेहुँडकी दूध २४ तोले, हर्र, कबीला, पीपरि, अमिलतास, विष्णुकान्ता, नील, निसोत, दंती, शंखाहूली, चीता ये सब चार चार तोले लेकर पानीमें पीसकर सब चीजोंको एक कडाहीमें डालकर उसमें एक प्रस्थ घी डालकर पकावे जब उक्त दूध वगैरह सब जलकर केवल घीमात्र रहे तब उतारकर छान कर शीशीमें रख छोडे इसका नाम बिन्दुघृत है । इसकी जितनी बूँद खावे उतने ही दस्त होवें यह कोढ, भगन्दर, गुल्म, उदावर्त, सूजन और आठों प्रकारके उदररोग दूर करे । तोंदीपर लेप करदेनेसे भी दस्त आते हैं, समुद्रकी सीपीके खारको दूधके साथ पीवे । अथवा पीले आकके पत्तोंमें सेंधानमक लगाकर उनको पुटपाककी रीतिसे भस्म करके दहीके पानीके साथ मासा १ खावे तो प्लीहोदर दूर होवे अथवा जम्बीरी नींबूके रसमें शंखनाभिका चूर्ण मासे २ पीवे तो अत्यन्त बढी हुई कछुआके समान भी प्लीहा शीघ्रही शान्त होवे अथवा शरफोंकेकी जडके १ तोला कल्कको मट्ठाके साथ पीवे तो असाध्य भी प्लीहा शीघ्रही नाश होवे । अथवा सेमलके फूलोंको उबालकर रातभर रक्खा रहने देवे सबेरे राईका चूर्ण १ तोला मिलाकर खावे तो प्लीहाका नाश होवे ॥

अथ ब्रह्मघृत।

शिलारस, सोंठि, नाडीका शाक, कौआठोंडीक जड़, कटेरीकी जड, पांचोंनमक, हींग, पीपल येस एक एक तोला लेवे और गायका घी एक प्रस्थ, गं मूत्र४ प्रस्थ, दूध २ प्रस्थ लेकर सब औषधियोंको गं मूत्रमें पीसकर सर्वपदार्थोंको एककड़ाहीमेंडाल देवेऔ मन्दाग्निसे घीको सिद्ध कर छानकर रखलेवे फिरमास ६ खावे तो प्लीहोदर, शोथोदर इत्यादि सर्व उदररो नाश होवें॥

अथ शंखद्राव।

सज्जी, जवाखार, क़सीस, सुहागा, शोरा, सेंधानम नवसादर, फिटकिरी ये सब समभागलेकरमहीनपी कर एक हांडीमें रखकर नली लगाकर तेजाब खीं फिर दांतोंको बचाकर युक्तिपूर्वक १ बूंद खावे त गुल्म, प्लीहा, आनाह, बवासीर, संग्रहणी, भगन्द व्रण और सर्वप्रकारके उदररोग दूर होवें॥ इति॥

अथ शोथरोगके लक्षण व चिकित्सा।

शोथरोग ९ प्रकारका है वातका, पित्तका, कफका वातपित्तका, पित्तकफका, कफवातका, त्रिदोषका अभिघातका, विषका.

वमन, विरेचन, ज्वर, लंघन इत्यादि कारणोंसे

होवे। अथवा आकका दूध ८ तोले, सेहुँडकी दूध २४ तोले, हर्र, कबीला, पीपरि, अमिलतास, विष्णुकान्ता, नील, निसोत, दंती, शंखाहूली, चीता ये सब चार चार तोले लेकर पानीमें पीसकर सब चीजोंको एक कडाहीमें डालकर उसमें एक प्रस्थ घी डालकर पकावे जब उक्त दूध वगैरह सब जलकर केवल घीमात्र रहे तब उतारकर छान कर शीशीमें रख छोडे इसका नाम बिन्दुघृत है। इसकी जितनी बूँद खावे उतने ही दस्त होवें यह कोढ, भगन्दर, गुल्म, उदावर्त, सूजन और आठों प्रकारके उदररोग दूर करे। तोंदीपर लेप करदेनेसे भी दस्त आते हैं, समुद्रकी सीपीके खारको दूधके साथ पीवे। अथवा पीले आकके पत्तोंमें सेंधानमक लगाकर उनको पुटपाककी रीतिसे भस्म करके दहीके पानीके साथ मासा १ खावे तो प्लीहोदर दूर होवे अथवा जम्बीरी नींबूके रसमें शंखनाभिका चूर्ण मासे २ पीवे तो अत्यन्त बढी हुई कछुआके समान भी प्लीहा शीघ्रही शान्त होवे अथवा शरफोंकेकी जडके १ तोला कल्कको मट्ठाके साथ पीवे तो असाध्य भी प्लीहा शीघ्रही नाश होवे। अथवा सेमलके फूलोंको उबालकर रातभर रक्खा रहने देवे सबेरे राईका चूर्ण १ तोला मिलाकर खावे तो प्लीहाका नाश होवे॥

अथ ब्रह्मघृत।

शिलारस, सोंठि, नाडीका शाक, कौआठोंडीकी जड़, कटेरीकी जड, पांचोंनमक, हींग, पीपल येसब एक एक तोला लेवे और गायका घी एक प्रस्थ, गोमूत्र४ प्रस्थ, दूध २ प्रस्थ लेकर सब औषधियोंको गोमूत्रमें पीसकर सर्वपदार्थोंको एक कड़ाहीमेंडाल देवेऔर मन्दाग्निसे घीको सिद्ध कर छानकर रखलेवे फिरमासा ६ खावे तो प्लीहोदर, शोथोदर इत्यादि सर्व उदररोग नाश होवें ॥

अथ शंखद्राव।

सज्जी, जवाखार, कसीस,सुहागा,शोरा,सेंधानमक नवसादर, फिटकिरी ये सब समभागलेकरमहीनपीस कर एक हांडीमें रखकर नली लगाकर तेजाव खींचे फिर दांतोंको बचाकर युक्तिपूर्वक १ बूंद खावे तो गुल्म, प्लीहा, आनाह, बवासीर, संग्रहणी, भगन्दर व्रण और सर्वप्रकारके उदररोग दूर होवें ॥ इति ॥

अथ शोथरोगके लक्षण व चिकित्सा।

शोथरोग ९ प्रकारका है वातका, पित्तका, कफका, वातपित्तका, पित्तकफका, कफवातका, त्रिदोषका, अभिघातका, विषका.

वमन, विरेचन, ज्वर, लंघन इत्यादि कारणोंसे

जब पुरुष दुर्बल और बलहीन हो जाता है उससमय
खट्टे व बादी व रूखे और कच्चे व भारी और विरोधी
पदार्थ दही, लहसुन, मछली, दूध, शाक इत्यादि
खानेसे शरीरकी वायु बिगडकर कफको, बाहरकी
नसोंमें प्राप्त कर उनकी गमनक्रियाको रोककर सूजन
उत्पन्न करदेती है। शरीर भारी, चित्तमें व्याकुलता,
ऊंची सूजन, दाह, नसें पतली, रोमांचहोना, शरीरका
रंग बदल जाना, अंगुलीसे दबानेसे गढा पडना
इत्यादि लक्षण होते हैं। जो सूजनशरीरके मध्यभागमें
अथवा सारे शरीरमें स्थित हो वह कष्टसाध्य है।
यदि मनुष्यके पैरोंसे सूजन उत्पन्न होकर ऊपरको
जाय और स्त्रीके मुखसे उत्पन्न होकर पैरोंपर जावे
अथवा गुप्त स्थान या वस्ति स्थानसे उत्पन्न होकर
सारे शरीरमें फैले तो रोगी अवश्यही मरे। जिस
सूजनवाले रोगीके श्वास, तृषा, वमन, दुर्बलता, ज्वर,
अरुचि ये उपद्रव होवें वह अवश्य मरे॥

अथ चिकित्सा।

दूध, अन्न, जलको छोडकर सात दिनतक भैंसकेमूत्र
को अथवा ऊंटनी या बकरीके मूत्रको पीवे तो सूजन
व उदररोग अवश्यही नाश होवें। सहिंजनेकी छाला,
करंज, आक, दारुहल्दी, अमलतासकीजडयेसबसमभाग,
लेकर गोमूत्रमें पीसकर लेप करे तो सूजन दूर होवे।

मोर अथवा कबूतरके मांसके शोरुवाको सरसोंकेतेलके साथ पीवे तो बहुत भारी व असाध्य भी सूजन दूर होवे। अथवा गोमूत्रके साथ अंडीका तेल या हरेंखावे अथवा थूहरके दूधमें भावना दी हुई पिपरी खावे अथवा बेलपत्रका स्वरस २ तोले रोज पीवे तो असाध्य भी सूजन दूर होवे। अथवा त्रिफलाके काढाके साथ १ मासा शिलाजीत रोज पीवे तो अत्यन्त बढी हुई सूजनका नाश होवे तिल और काली मिट्टीको पीसकर लेप करै तो भिलावांकी सूजन दूर होवे या भैंसके मक्खन या तिलोंको दूधमें पीसकर लेप करै अथवा कालानमक और तिलके पेडकी मिट्टीको पीस कर लेपकरै तो भिलावांकी सूजन दूर होवे।अथवा हरें, गिलोय, भारंगी,पुनर्नवा, चीता, दारुहल्दी, देवदारु, सोंठि ये समभाग लेकर इनका काढा बनाकर पीवे तो पेट, हाथ, पांव, मुख इतनी जगहकी सूजन तुरन्त ही नाश होवें।अथवा देवदारु, पुनर्नवा, सोंठि इनको समभाग लेकर दूधमें औटाकर पीवे अथवा चीता, निसोत, देवदारु, सोंठि, मिर्च, पीपरि ये समभाग लेकर दूधमें औटाकर पीवे तो सर्व प्रकारकी सूजन दूर होवें। अथवा पुनर्नवा, देवदारु, सोंठि, सरसो सहिंजना इनको समभाग लेकर कांजीमें पीसकर लेप करै तो सर्व प्रकारका शोथ नाश होवे। अथवा बहेडेकी

मज्जा पानीमें घिसकर लेप करैं तो दाह व पीडा शा
होवे अथवा मौरेठी, नागरमोथा, कैथाके पत्ते, चन्द
सफेद, ये समभाग पीसकर लेप करै तो शोथ व शो
की पिडिका नाश होवें । अथवा गूगुल मासे ६
गोमूत्रसे पीवे या पीपलको गोदूधसे पीवे
गुड और हर्र, अथवा गुड और सोंठि अथव
गुड और अदरख अथवा गुड और पीपा
बराबर लेकर १ तोला खावे और मूँगकी दाल
दूध, मांसका शोरुआ खावे तो सर्व प्रकारकी सूज
दूर होवें । अथवा गोमूत्रको पीवे या गोमूत्रमें अंडीक
तेल डालकर पीवे । अथवा पुनर्नवाका स्वरस
तोला रोज पीवे । अथवा विष्णुकांताका स्वरस
तोला रोज पीवे । अथवा पुराने मानकंदके चूर्णक
खीरमें पकाकर खावे तो सर्वप्रकारकी सूजन श्वास
खांसी, जुकाम, पीडा, आम, विबन्ध, मन्दाग्नि
अफरा, आनाह, गुल्म, उदावर्त्त, उदररोग नाश होवें ॥
इति शोथ चिकित्सा ॥

अथ अंडवृद्धिके लक्षण व चिकित्सा ।

अंडवृद्धि रोग ७ प्रकारका हैं । वातका, पित्तका,
कफका, रक्तका, मेदका, मूत्रका, आंतका ॥

वातको कोप करनेवाले आहार विहारोंसे वायुकोप
को प्राप्त होकर अंडकोशोमें सूजन व पीड़ा उत्पन्न कर

ी है। अंडवृद्धिवाला इतनी वस्तुओंको त्याग देवे
लमूत्रादि वेगोंका रोकना, हाथी घोडे इत्यादिकी
सवारी, दंड, कसरत, परिश्रम, प्रसंग, अति भोजन,
ार्गगमन, उपवास। और ये पथ्य हैं करेला, ककोडा,
जमींकन्द, आलू, मेथी, लहसन, प्याज, जौ, गेहूँ,
मूँग, अरहर, दूध, घी, तैल॥

अथ चिकित्सा।

पावभर गर्म दूधमें २ तोले अंडीका तेल डालकर १ महीना तक पीवे। अथवा गूगुल मासे ६, अंडीका तेल तोला १, गोमूत्र आधापाव ये सब एकमें मिलाकर पीवे तो बहुत दिनोंकी पुरानी भी अंडवृद्धि दूर होवे। अथवा एक तोला शहदमें १ तोला अदरखका स्वरस मिलाकर ४० दिन पीवे। अथवा जोंक लगा देवें। अथवा त्रिफलाके काढामें गोमूत्र डालकर पीवे। अथवा बच, सरसोंको समभाग लेकर पानीसे पीस गर्म करके अण्डकोशोंपर लेप करै अथवा सहिंजनेकी छाल को घीमें घिसकर गर्म कर लेप करै अथवा धूप, अगर, कूट, देवदारु, सोंठि, ये समभाग लेकर गोमूत्र और कांजीमें पीसकर गर्मकर लेप करै तो अण्डवृद्धि आराम होवे अथवा इन्द्रायणकी जडका चूर्ण मासे ४ आधा पाव दूधमें पीस छान कर १ तोला अंडीका तेल डालकर ७ दिनतक पीवे। अथवा रास्ना, मौरेठी, गिलोय, अंड-

की जड, खैरेटी, गोखरू ये समभाग लेकर इनके काढामें १ तोला अंडीका तेल डालकर पीवे तो आंत उतरना दूर होवे । अथवा भारंगीकी जडको पानीसे घिसकर गर्म कर गालीकी गिल्टियोंपर लेप करै तो गिल्टी, गंडमाला, अंडवृद्धि इतने रोग आराम होवें । अथवा घोंघामें घी भरकर ७ दिन रखा रहने देवे आठवें दिन निकालकर उसमें सेंधा नमक मिलाकर संधिकी गिल्टियों पर लेप करै तो गिल्टियां आराम होवें । अथवा तांबेके पात्रमें घी डालकर उसमें सेंधानमक बारीक पीसकर मिला देवे फिर उसको घाममें रखकर हाथसे खूब मथे इस मथनसे जो मल निकलै उसको गालीकी गिल्टियों पर रातदिन लगावे तो अत्यन्त बढी हुई गिल्टियें शीघ्रही आराम होवें । अथवा लज्जावन्तीकी जड और गीधकी विष्ठा ये दोनों पीसकर गर्म कर लेप करै तो गालीकी गिल्टियाँ अवश्यही नाश होवें ॥ इति अंडवृद्धि चिकित्सा ॥

अथ ब्रध्न रोगके लक्षण व चिकित्सा ।

भारी व बादी और खट्टे तथा बहुत मांस मछली इत्यादिके खानेसे वात, पित्त, कफ बिगडकर जांघोंकी सन्धिमें पीडा सहित बडीभारी गांठको उत्पन्न करदेते हैं उसको भाषामें बद कहते हैं ॥

अथ चिकित्सा।

गहूँका आटा, कुन्दरूका चूर्ण ये समभाग लेकर भेडके दूधमें पीसकर गुनगुना लेप बदपर करे।अथवा एक बडे कौवेको मारकर उसका पेट तुरन्त ही फाड-कर बदमें बांध देवे परन्तु एक घड़ी बाद खोलकर फेंक देवे तो उसी समय बद पानी होजावे इससे अन्य उत्तम औषधी बदकी नही है। अथवा जीरा, हाऊबेर, कूट, गेहूँ, बेर ये समभाग लेकर कांजीसे पीसकर गर्म कर बदपर लेप करे तो अथवा पुष्य नक्षत्रमें भारंगीकी जड उखाडकर कॉजीमें घिसकर पीवे तो बदका नाश होवे। अथवा नीलकी पत्ती पीसकर टिकिया बाँधे तो बद बैठ जावे। अगर बदको फोडना चाहे तो शोरा कल्मी पीसकर उसपर लेप करे॥ इति॥

अथ गलगंडरोगके लक्षण व चिकित्सा।

मनुष्यके गले या ठोढीमें कडी और अचल अंड-कोशके समान सूजन लटके उसको गलगंड कहते है। वह तीन प्रकारका होता है १ वातका, २ कफका, ३ मेदका। इसको भाषामें घेघा या थाथीकी बीमारी कहते हैं। यह बीमारी जिला बहरायच व बस्ती व गोंडा व फैजाबादमें कसरतसे होती है॥

अथ चिकित्सा।

सरसों, सहिंजनेके बीज, सनके बीज, अलसी, जौ, मूलीके बीज इनको समभाग लेकर खट्टे दहीमें पीसकर लेप करे तो गलगंड अच्छा होवे। अथवा पुन्नागकी भस्म सरसोंके तेलमें मिलाकर लेप करे तो पुराना भी गलगंड अवश्य ही अच्छा होवे। अथवा सफेद फूलवाली विष्णुकान्ता की जड मासे ६ को एक तोला घीमें महीन पीसकर सवेरे पीवे तो ७ दिनमें गलगंडका नाश होवे। अथवा कडुई तोंबीके पके हुए फलमें पानी भरकर ७ दिनरात रक्खा रहनेके बाद पीवे या मदिरा पीवे तो शीघ्रही गलगंडका नाश होवे। अथवा गिलोय, नीम, जटामांसी, तुन, पीपरि, बरियारी, गंगेरन, देवदाली ये समभाग लेकर पानीमें महीन बाँटकर चौगुने तिलके तेलमें पचाकर तेल सिद्ध करके १ तोला प्रतिदिन पीवे तो गलगण्डका नाश होवे। अथवा जलकुम्भी, सेंधानमक, पीपरि ये समभाग लेकर १ तोला प्रतिदिन पीवे तो गलगंडका नाश होवे। जौ, मूँग, अरहर, चना, बाजरा, परवल, करेला, तोंबा, जमीकन्द, मेथी, सोवा, कडुवे पदार्थ, वमन करना, जोंक, इत्यादि लगाकर लोहू निकलाना सेंकना, बफारा देना, दागना इतनी चीजें इस रोगमें पथ्य हैं। जलकुम्भीकी छालकी भस्म १ तोलेको १ छटांक गोमूत्रमें सानकर पीवे और कोदोंके भातका

भोजन करे तो शीघ्रही गलगंडका नाश होवे। अथवा हस्तिकर्ण (जंगली पलाश) की छाल या लालअरंडकी जडको चांवलोंके पानीमें पीसकर लेप करे तो गलगंड शीघ्रही नाश होवे। अथवा पुराने ककोडेके १ तोला स्वरसमें कालानमक २ मासे सेंधानमक २ मासे मिलाकर नस्य लेवे तो उग्र गलगंड भी शीघ्रही नाश होवे। अथवा नीले फूलके धमिराको औटाकर बफारा लेवे तो शीघ्रही गलगंड दूर होवे। अथवाकायफलके चूर्णकी मालिश करे तो शीघ्रही गलगंडका नाश होवे ॥ इति गलगंड चिकित्सा ॥

अथ गंडमालाके लक्षण व चिकित्सा।

जब गलेमें, बगलमें, पेडूमें, जांघोंकी सन्धिमें छोटीबड़ी चनासे लेकर आमलापर्यन्त मेद व कफकी अनेक गांठें उत्पन्न हो जाती हैं उनको गलगंड कहते हैं, तब कुछ कुछ ज्वर व गांठोंमें दर्द रहता है ॥

अथ चिकित्सा।

कचनारकी छाल२ तोलेका पावभर पानीमें काढा करे जब आधी छटांक रहजावे तब छानकर उसमें ४ मासे सोंठिका चूर्ण डालकर पीवे या उसी प्रकार बरनाकी छालका काढा बनाकर उसमें १ तोला शहद मिलाकर पीवे तो पुरानी भी गंडमाला५दिनमें

अच्छी होवे। या २ तोले कचनारकी छालको चांव-लोंके पानीमें बांटकर पीवे। अथवा निर्गुण्डीके स्वरसमें कारियारीको बांटकर चौगुने तिलके तेलमेंपचाकर तेल सिद्ध करके उसकी नस्य लेवे तो उग्र गंडमालाका नाश होवे। इसका नाम निर्गुण्डीतैल है॥

अथवा पमारकी जड भंगराके स्वरसमें बांटकर चौगुने सरसोंके तेलमें पचाकर तेलको सिद्ध करके उसमें चौथाई हिस्सा सिन्दूर (बन्दन) मिलाकर मालिश किया करे तो गण्डमाला दूर होवे इसका नाम चक्रमर्दतैल है॥

अथवा सफेद घोंघचीकी जड या फलको पानीमें महीन बांटकर चौगुने सरसोंके तेलमें पचाकर तेल सिद्ध करके मालिश किया करे तो गण्डमाला अतिशीघ्र नाश होवे। इसका नाम गुंजातैल है॥

अथवा अमिलतासकी जडको चांवलोंके पानीमें बांटकर लेप करे और नस्य भी लेवे या निर्गुंडी (सम्हालू) की जडको पानीमें घिसकर नस्य लेवे अथवा कडुई तोंबी या कडुई तुरईके स्वरसकी नस्य लेवे या तोंबीके स्वरसमें पीपरिका चूर्ण मिलाकर नस्य लेवे या नींबके तेलकी नस्य लेवे या पीपरिका चूर्ण मासे ६, शहद मासे ६ के साथ चाटे अथवा इन्द्रायणकी जड या विष्णुकान्ताकी जडको गोमूत्रमें पीसकर

मासे ६ पीवे तो पुरानी भी गण्डमाला नाश होवे। अथवा तोंबीका स्वरस या लज्जावन्तीका स्वरस २ तोले पीवे तो गण्डमाला, कमलवाय, गलगंड, अंडवृद्धि, गांठ इतने रोग शीघ्रही नाश होवें। अथवा छछूँदरके मांसको तेलमें जलाकर फिर उस तेलकी मालिश करे तो घोर गंडमाला दूर होवे। अथवा भारंगीकी जड़को मौरेठीके रसमें बांटकर लेप करै तो दारुण गंडमाला शीघ्रही दूर होवे। अथवा सहोरा या पीलुआकी छालीको पानीसे बांटकर सरसोंके चौगुने तेलमें पचाकर तेल सिद्ध करके नस्य लेवे तो अतिशीघ्र गण्डमाला दूर होवे॥

अथवा कचनारकी छाली २० तोले,सोंठि ४ तोले पीपरि४तोले, मिर्च४तोले, हर्र२ तोले, बहेडा २ तोले, आमला २ तोले, बरनाकी छाली १ तोला,इलायची४ मासे,तेजपात४मासे,दालचीनी४मासे लेकर सबको महीन पीस छानकर सबके बराबर शुद्धगुगुलमिलाकर चार चारमासेकी गोलियां बनाकर छायामें सुखालेवे फिर प्रतिदिन सबेरे १गोली मुण्डीके काढ़ा या खैरसारके काढा या हर्रके गर्मागरम काढाके साथ खावे तो गलगण्ड,गण्डमाला, गांठ, घाव, गुल्म, कोढ, भगन्दर इतने रोग अवश्यही नाश होवें परन्तु पथ्यसे रहे नमक,खटाई व सर्वप्रकारकी बादी व रूखे चीजोंसे

परहेज रक्खे । इसका नाम कचनारगूगुल है । कोई आचार्य इसमें गूगुलसे आधा शहद भी मिलाकर गोलियां बनाते हैं ॥ इति गंडमाला चिकित्सा ॥

अथ अपचीके लक्षण व चिकित्सा ।

ऊपर कहा हुआ गंडमाला जब बहुत दिनोंका होजाता है तब उसको अपची कहते हैं इसमें कोई गांठें पकती हैं कोई फूटती हैं कोई बहती हैं कोई सूखतीहैं कोई नई पैदा होती हैं ॥

अथ अपचीकी चिकित्सा ।

चन्दन, हरें, लाख, कुटकी ये समभाग लेकर पानीमें बांटकर चौगुने सरसोंके तेलमें पचाकर तेल सिद्ध करके नित्य १ तोला पीवे तो अपचीका समूल नाश होवे । इसका नाम चन्दनादि तैल हैं । अथवा सोंठि, मिर्च, पीपरि, बायबिडंग, महुआ, सेंधानमक देवदारु ये समभाग लेकर पानीमें बांटकर उक्त रीतिसे तेलको सिद्ध कर नस्य लेवे तो अपचीका नाश होवे। अथवा जंगली कपासकी जड़ २ तोलेको चांवलोंके पानीमें पीसकर पूडी बनाकर खावे तो अपचीदूरहोवे या सहिंजनेकी छाल और देवदारु ये दोनों समभाग लेकर कांजीमें पीसकर गर्म करके लेप करे तो घोर अपचीका नाश होवे । अथवा सरसों, नीमके पत्ते,

मिलावा ये समभाग लेकर इनको जलाकर भस्म करे फिर उस भस्मको बकराके मूत्रमें सानकर लेप करे तो अपचीका नाश होवे अथवा पीपलकी छाल, बेंत, गायके दांत ये समभाग लेकर भस्म करके शूकरकी चरबीमें मिलाकर लेप करे तो अपचीका नाश होवे अथवा कमलकी जड़ या चिरचिरेकीजड़को विधिपूर्वक न्योतकर पुष्य नक्षत्रमें लाकरगलेमें रेशमके धागेसे बांधे तो अपचीका नाश होवे ॥ इति अपची चि०॥

अथ ग्रन्थिरोगके लक्षण व चिकित्सा ।

वात,पित्त,कफ ये तीनोंदोष जब मांस,मेद नसोंको दूपित करके गोल, ऊँची,दर्द संयुक्त सूजनपैदा करतेहैं उसको ग्रन्थि व गांठ कहते हैं। वह ५ प्रकारकी है १ वातकी,२ पितकी,३ कफकी,४ मेदकी, ५ नसोकी ॥

अथ चिकित्सा ।

सज्जीखार, मूलीखार, शंखका चूर्ण ये समभाग लेकर महीन पीसकर लेप करै तो ग्रन्थि दूर होवे। अथवा एक कागजके टुकड़ेपर गुलरीका दूध लगाकर उसपर थोडासा नमक बारीक पीसकर बुरकाकरगांठपर चिपकादेओ तो गांठ दूर होवे। इस रोगकी सविस्तर चिकित्सा हमारी बनाई मुजर्रिबात गौरीशंकरमें देखो ॥ इति ग्रंथिचिकित्सा ॥

अथ अर्बुदके लक्षण व चिकित्सा ।

बहुत मांस खानेसे लोहू और मांस दूषित होकर रीरमें कहीं बडी गोल अचल गांठको पैदा करते हैं ह कभी भी पकती नहीं और न उसमें कभी दर्द्दरी ाता है उसको भाषामें बडी कहते हैं वह६ प्रकारकी १ वातकी, २ पित्तकी, ३ कफकी, ४ रक्तकी, ५ ांसकी, ६ मेदकी। परन्तु रक्तका अर्बुद जब असाध्य ाजाता है तब पकता भी है ॥

अथ चिकित्सा ।

हल्दी, लोध, पतंग, धुयेंका करेहुआं, मनशिल समभाग लेकर शहदमें मिलाकर लेपकरे तो अर्बुद र होवे । अथवा बडका दूध, कूट, शहदमें मिला- ार लेप करे तो अर्बुद दूर होवे अथवा वडका दूध, ूट, खारीनमक ये समभाग लेकर महीन पीसकर ेप करके ऊपरसे बडके पत्ते बांधे तो ७ दिनमें अर्बुदका नाश होवे । सहिंजनेके बीज, मूलीके बीज, ाई, तुलसी, इन्द्रजौ, कनेर ये समभाग लेकर ह्वामें पीसकर लेप करे तो अर्बुदका नाश होवे ॥ ति अर्बुद चिकित्सा ॥

अथ श्लीपदके लक्षण व चिकित्सा ।

पेढू और जांघोमें प्रथम पीडासयुक्त सूजन उत्पन्न

होकर धीरे २ पैरतक आवे उसको श्लीपद कहते
फारसीमें इसको फीलपाँव कहते हैं।जो देश सर्वका
शीतल हैं जहांसे पुराना पानी नहीं सूखता है ऐ
जगहमें यह रोग बहुतायतसे होता है। रायपुर, स
लपुर, कटक और वनारसमें यह रोग अधिकत
देखा गया है। यह तीन प्रकारका होता है १ वात
२ पित्तका, ३ कफका, वात और पित्तवालेमें कुछ
दर्द व ज्वर भी रहता। है भाषामें इसको हाथीप
कहते हैं॥

अथ चिकित्सा।

पसीना निकालना, लंघन करना, जुल्लाव के
लोहू निकालना, कफको नाश करनेवाले उपा
बफारा लेना इतने उपायोंसे यह रोग नाश होता
सरसों, सहिजना, देवदारु, सोंठि ये समभाग ले
गायके मूत्रमें पीसकर लेप करे। अथवा सोंठि, पु
र्नवा, राई ये समभाग लेकर कांजीमें पीसकर लेप
अथवा धतूरा, अरंडकी जड़, सम्हालू, पुनर्न
सहिंजनाकी छाल, राई इनको समभाग लेकर पी
कर गर्म कर लेप करे तो श्लीपद आराम होवे
अथवा सहदेवीकी जडको ताडफलके रसमें पीस
लेप करे तो असाध्यभी श्लीपदका नाश होवे

अथवा थूहरके पत्तोंको पानीमें पीसकर नमक मिलाकर दो तोले रोज खावे । अथवा सहोरा या पीछुआंकी छालीके काढामें गोमूत्र मिलाय पीनेसे श्लीपदका नाश होवे । अथवा हल्दीका चूर्ण १ तोला दो तोले गुडमें मिलाकर कांजीके साथ नित्य पीवे तो १ वर्षका श्लीपद व दाद नाश होवे । अथवा पुनर्नवा, हर्र, बहेडा, आमला, पीपरि ये समभाग लेकर चूर्ण कर १तोला शहदसे खावे तो पुराना भी श्लीपद नाश होवे । अथवा अरंडका तेल २ तोलेमें हर्रका चूर्ण २ तोले मिलाकर पावभर गोमूत्रसे पीवे तो श्लीपद अवश्यही नाश होवे, परन्तु इसको ७ दिनसे अधिक न पीवे ॥ इति श्लीपद चिकित्सा ॥

अथ विद्रधिके लक्षण व चिकित्सा ।

जब वातादि तीनों दोष दूषित होकर रक्त, मांस, मेदको बिगाडकर शरीरमें गोल, ऊंची, कठोर, पीडायुक्त सूजन उत्पन्न करदेते हैं उसको विद्रधि कहते हैं भाषामें फोडा कहते हैं । यह ६ प्रकारकी होती है। १ वातकी, २ पित्तकी, ३ कफकी, ४ सन्निपातकी, ५ चोट लगनेकी, ६ लोहूकी ॥

और भी एक अन्तरविद्रधि है उसके भी लक्षण सुनो । जब भारी पदार्थ, सूखासाग, अत्यन्त खट्टा, अति मैथुन, कसरत, मल मूत्रादि १४ वेगोंका रोकना, विरुद्ध

भोजन इत्यादि कारणोसे वात,पित्त,कफ दूषित होकर शरीरके भीतर गोल कठोर सूजन (फोडा)को उत्पन्न करे उसको अन्तरविद्रधि कहते हैं। वह १० प्रकारकी है—१ गुदामें, २ पेडूमें, ३ नाभिमें, ४ कोखिमें, ५ पेडू और जांघोकी संधिमें, ६ बैठनेकी जगह, ७ प्लीहमें, ८ यकृत्में, ९ हृदयमें, १० प्यासकी नालीके पासमें होती है । इनमेंसे नाभिके ऊपरके भागमें जो विद्रधि हैं वे महा असाध्य हें और नाभिके नीचे भागमें जो हैं वे कष्टसाध्य हैं ॥

अथ सबकी चिकित्सा ।

जोंक लगाना, लोहू निकलाना, हल्का जुल्लाव, लंघन ये लाभदायक हैं और त्रिफलाके काढामें६भाग निसोतका चूर्ण मिलाकर पीवे तो विद्रधि दूर होवे। अथवा ईंट या बालू या गर्मलोहेसे बार २ गर्म करके सेंके अथवा सफेदफूलवाले पुनर्नवाकी जड, बरनाकी जड ये दोनों समभाग लेकर काढा बनाकर पीवे तो अन्तर विद्रधिका नाश होवे अथवा सहिंजनेकी जडको पानीमें बांटकर कपडेसे छानकर शहद डालकर पीवे तो अन्तरविद्रधिका नाश होवे । अथवा सहिंजनेके काढामें हींग और सेंधानमक मिलाकर पीवे तोअन्तरविद्रधि दूर होवे ॥ इति विद्रधि चिकित्सा ॥

अथ व्रणशोथके लक्षण व यत्न ।

व्रणको भाषामें फोडा कहते हैं । पहिले फोडा होवे फिर सूज जावे फिर पके फिर फूटै । वह ६ प्रकारका है १ वातका, २ पित्तका, ३ कफका, ४ सन्निपातका, ५ खराव खूनका, ६ चोटलगनेका । सर्व प्रकारके व्रणोंमें विना वायुके पीडा नही होती। और विना पित्तके पकना नहीं होता और विना कफके मवाद नहीं होता । अर्थात् वात, पित्त, कफ ये तीनों दोष फोडेको पकातेहैं । यह रोग अनेक कारणोंसे उत्पन्न होता है और यह फोडा फुंसीका रोग अक्सर अधिकतासे होता है इस वास्ते इसकी उत्तम चिकित्सा वर्णन करते हैं । जानना चाहिये कि सर्वप्रकारके फोडा फुंसी सम्बंधी रोगके लिये (चाहे चोट लगनेसे या हथियार वगैरः लगनेसे या आगमें जल जानेसे अथवा किसी भी कारणसे पकगया हो) सुश्रुतमुनिने ११ तरहकी चिकित्सा कही है । अर्थात् १ लेप करना, २ औषधिके गर्मगर्म काढाकी उसके ऊपर धार छोडना, ३ सेकना, ४ लोहू निकालना, ५ पकाना, ६ फोडना, ७ मवाद निकालना, ८ निर्मल व साफ करना, ९ आराम करना, १० सुखाना, ११ त्वचाके रंगके समान रंग करना ॥ अरण्डके तेलमें सूखा चूना रगडकर लेप करे तो फिर फोडा बढता नहीं । अगर फूटे हुए घावपर उक्त लेप

करे तो ३ दिनमें घाव सुखाजाता है ।अथवा बिजौरा नींबूकी जड, छडीला,देवदारु, सोंठि,लहसन, अरनी ये समभाग लेकर पीसकर गर्म लेप करे तो दर्द व सूजन कम होजाती है । अथवा सिरसकी छालीको चन्दनकी तरह घिसकर फोड़े पर लेप करे तो दर्द दूर होवे और शीघ्रही फूट जावे । अथवा नागफनीके ऊपरका हरा बक्कल छीलकर फेंक देवे फिर अन्दरका गूदा बांटकर गर्मकर फोडापर बांधेतो दर्द दूर करेऔर अतिशीघ्रही फूटै। अथवा छुइमिट्टी जिससे मकान पोततेहैं उसे पानीसे महीन गाढागाढा पीसकर लेपकरे अथवा कलमीशोरा पानीसे बांटकर फोडापर लेप करे तो ५मिनटमें सारी तकलीफ दूर होवे जलन मिटैऔर फोडा तुरन्तही फूटै।फोडाकी लाख दवाइयां एकतरफ और लोहू निकलाना एक तरफ है क्योंकि, पीड़ाकी जड खराब लोहू ही हैजब खराब लोहू निकलजावेगा तबही पीडा शान्त होगीजोंक लगाना सींगी लगाना नस्तरसे चीरदेना दाग देना ये सब परम लाभदायक हैं। अथवा पुनर्नवा, देवदाली, सोंठि, सहिजनेकी छाली, राई ये सब समभाग लेकर खट्टीचीज (नींबू मट्ठा वगैरह)में पीसकर थोड़ा गर्म करके फोडेपर लेप करे तो दर्द व सूजन शीघ्रही दूर होवे । अथवा सनके बीज,मूलीकेबीज,सहिजनेका फल,तिल, राई,अलसी,

अथ व्रणशोथके लक्षण व यत्न ।

व्रणको भाषामें फोडा कहते हैं । पहिले फोडा होवे फिर सूज जावे फिर पकै फिर फूटै । वह ६ प्रकारका है १ वातका, २ पित्तका, ३ कफका, ४ सन्निपातका, ५ खराव खूनका, ६ चोटलगनेका । सर्व प्रकारके व्रणोंमें विना वायुके पीडा नहीं होती। और विना पित्तके पकना नही होता और विना कफके मवाद नहीं होता । अर्थात् वात, पित्त, कफ ये तीनों दोष फोडेको पकातेहैं । यह रोग अनेक कारणोंसे उत्पन्न होता है और यह फोडा फुंसीका रोग अक्सर अधिकतासे होता है इस वास्ते इसकी उत्तम चिकित्सा वर्णन करते हैं । जानना चाहिये कि सर्वप्रकारके फोडा फुंसी सम्बंधी रोगके लिये(चाहे चोट लगनेसे या हथियार वगैरः लगनेसे या आगमें जल जानेसे अथवा किसी भी कारणसे पकगया हो) सुश्रुतमुनिने ११ तरहकी चिकित्सा कही है । अर्थात् १ लेप करना, २ औषधिके गर्मगर्म काढाकी उसके ऊपर धार छोडना, ३ सेकना, ४ लोहू निकालना, ५ पकाना, ६ फोडना, ७ मवाद निकालना, ८ निर्मल व साफ करना, ९ आराम करना, १० सुखाना, ११ त्वचाके रंगके समान रंग करना ॥

अरण्डके तेलमें सूखा चूना रगडकर लेप करे तो फिर फोडा बढता नहीं । अगर फूटे हुए घावपर उक्त लेप

करे तो ३ दिनमें घाव सुखाजाता है ।अथवा बिजौरा नींबूकी जड, छडीला,देवदारु, सोंठि,लहसन, अरनी ये समभाग लेकर पीसकर गर्म लेप करे तो दर्द व सूजन कम होजाती है । अथवा सिरसकी छालीको चन्दनकी तरह घिसकर फोड़े पर लेप करे तो दर्द दूर होवे और शीघ्रही फूट जावे । अथवा नागफनीके ऊपरका हरा बक्कल छीलकर फेंक देवे फिर अन्दरका गूदा बांटकर गर्मकर फोडापर बांधेतो दर्द दूर करैऔर अतिशीघ्रही फूटै । अथवा छुइमिट्टी जिससे मकान पोततेहैं उसे पानीसे महीन गाढागाढा पीसकर लेपकरै अथवा कल्मीशोरा पानीसे बांटकर फोडापर लेप करे तो ५मिनटमें सारी तकलीफ दूर होवे जलन मिटैऔर फोडा तुरन्तही फूटै।फोडाकी लाख दवाइयां एकतरफ और लोहू निकलाना एक तरफ है क्योंकि, पीड़ाकी जड खराव लोहू ही हैजब खराव लोहू निकलजावेगा तबही पीडा शान्त होगीजोक लगाना सीगी लगाना नस्तरसे चीरदेना दाग देना ये सब परम लाभदायक हैं। अथवा पुनर्नवा, देवदाली, सोंठि, सहिजनेकी छाली, राई ये सब समभाग लेकर खट्टीचीज (नींबू मट्ठा वगैरह)में पीसकर थोड़ा गर्म करके फोडेपर लेप करे तो दर्द व सूजन शीघ्रही दूर होवें।अथवा सनके बीज,मूलीकेबीज,सहिजनेका फल,तिल, राई,अ

जौके सत्तू, मदिराका बोदर,पिलुआकेफल,नौसादर ये हरएक शीघ्रही फोड़ेको पकाकरफोड देतेहैं।इनमेंसे कोई भी चीज पानीमें बांटकर फोडेपर टिकिया बांधोजब इसके बांधनेसे फोडा पकजावे तब करंजकी जड,चीते की जड,जमालगोटेकी जड, कनेरकी जड़, कबूतरकी बीट, गिद्धकी बीट, मुर्गाकी बीट, लाल चन्दन ये सब समभाग लेकर पानीमें पीसकर लेप करे तो फोडा तुरन्त ही फूटै । अथवा खारी नमक, जवाखार, सज्जीखार चिरचिराखार, हाथीदांत इनको पानीमें घिसकर केवल १ बूंद फोड़ेपर टपकावे तो कैसाहू बड़ा व सख्त व उग्र फोडा हो तुरन्त ही फूट जावे।अथवा अनन्तमूलका काढा पीवे और उसका लेपभी करै तो सर्व प्रकारके फोडा फुंसी आराम होवें परन्तु विशेष कर फूटे हुए फोडेपर लेप करनेसे चमत्कारिक लाभ दिखलाता है।अथवा नीमके पत्ते,काले तिल, जमालगोटाकी जड निसोत, सेंधानमक, शहद,ये समभाग लेकर पीसकर टिकिया बनाकर बांधे। अथवा केवल नीमके पत्तोंको बांटकर टिकिया बनाकर बांधे या विषमारके पत्तोंकी टिकिया बांधे तो खराबसे खराब फोड़ा भी अच्छा होवे, मवाद साफ होवे । अथवा शरफोंकेको शहदमें घिसकर या पीसकर लेप करै तो घाव पूरि आवे । अथवा गेहूंकी मेदा, शहद, घी, सरसोंका तेल, ये

सब समभाग लेकर एकमें मिलाकर फेंटकर गर्मकर लेप करै तो जलन और दर्द घाव दूर होवे ॥

अथवा कंजाकी जड, नीमकी जड, सम्हालूकी जड इन सबको समभाग लेकर पानीमें घिसकर लेप करै तो फोडाके कीडे दूर होवें। अथवा नीमके पत्तोंमें हींग मिलाकर लेप करै अथवा लहसुनका लेप करै तो कीडे व खाज फोडासे दूर होवें। अथवा त्रिफलाके काढामें गूगुल मिलाकर पीवे तो खराबसे खराब बुरी-गंधवाला और पुरानेसे पुराना जो वारंबार भरता फूटता हो ऐसा फोडाभी आराम होवे। अथवा परवल, नीमकी छालि, कपूर, आमला, हर्र, बहेडा ये सब समान भाग लेकर दो तोलेका काढा बनाकर उसमें गूगुल मिलाकर पीवे तो सर्वप्रकारके फोडे, विसर्प, विस्फो-टक, रुधिरविकार इतने रोग नाश होवें।

अथवा बबूलकी पत्ती५तोले, सफेद कत्था६मासे, इलायची छोटी नग १०, शीतलचीनी ६ मासे, लेवे पहिले एक कटोरीमें बबूलकी पत्ती डालकर कोयलेकी आगपर वह कटोरा रखदेवे ताकि सर्वपत्ती राखहोजावें फिर इलायची आगपर रखकर भून लेवे फिर सबको एकमें खूब महीन पीसलेवे फिर घावपर अंडीकातेल चु-पडकर उक्त बुरकीबुरकाय देवे तो अतिशीघ्र घाव सूख कर पपडी जमजावे, जब पपडीबन्धकर आपही उधिड

जावे तब मनशिल, मजीठ, लाख,हल्दी,दारुहल्दी ये समभाग लेकर पानीमें बांटकर घी और शहद मिलाकर लेप करे तो शरीरके रंगके समान फोडेकी जगहका रंग होवे ॥

पुराने चांवल, घी, हिरन वगैरह जंगली जीवोंका मांस, शक्कर, दूध, मूंग ये पथ्य हैं । और नमक, खटाई,मिर्च ये बिलकुल छोड देवे।और चौलाई,तुरई, बथुवा, मूली,बैंगन, परवल, करेला, आँवला,अनार, मेथी,पालक,लौकी,ककडी,इनको घीमें भूनकर सैंधानमक मिलाकर खावे औरपुराने चांवलोंका भात मूंगकी दालके साथ खावे तो शीघ्रही घाव आराम होवे, परन्तु दिनमें सोना,रात्रिमें जागना,मैथुन करना,परिश्रम करना ये४बातें फोड़ा व घाववाला रोगी बिलकुल छोड़ देवे क्योंकि इनसे तुरन्तही सूजन व दर्द व मौतभी होजातीहै।अगर तलवार वैगरहसे कटकरघाव होगया हो तो गुलशकरी या बरियारीका रस वहांपर भरदेवे तो शीघ्रही घाव आराम होवे । अगर आगसे जलगया हो तो परवलके काढामेंरससोंकेतेलको सिद्ध कर मालिश करे तो दाह, दर्द दूर होवे । अथवा जौको जलाकर भस्म करदेवे फिर अलसीके तेलमें मिलाकर लेप करे तो अग्निका जला घाव अच्छाहोवे अथवा बेरीकी पत्ती या छालीको घीमें घिसकर लेप

करै। अथवा मोम, महुआ, लोध, राल, मँजीठ, चन्दन, मूर्वा ये समभाग लेकर पानीसे बाँटकर घीमें पकाकर घी सिद्ध करके उस घीकी मालिश करे तो आगके जले सब फोडे व घाव अच्छे होवें।

अथवा घी एक छटांक, मोम आधी छटांक, सफेद कत्था ६मासा, आमलासार गन्धक ६ मासा, गन्दा बिरोजा १ तोला, फिटकरी ६ मासा, रसकपूर ३मासा रूम ६मासा, शीतलचीनी ६ मासा, सिन्दूर६ मासा, पहिले घी और मोमको एक कटोरीमें रखकर आगपर पिघलालेवे फिर बाकी सब चीजें महीन पीसकर उसी में मिलाकर खूब फेंट देवे फिर इसी मलहमको लगावे तो सब प्रकारके फोडा, फुंसी, घाव, चकत्ते, मण्डल, उपदंशक, विस्फोटक, मसूरिका, विसर्प वगैरः शीघ्रही अच्छे होवें ॥ इति व्रणचिकित्सा ॥

अथ भग्नरोगके लक्षण व चिकित्सा।

भाषामें भग्नरोगको हड्डी टूटना कहते हैं यह अनेक कारणोंसे होता है और अनेक तरहका है अब इसकी चिकित्सा कहतेहैं। मजीठ और महुआको ठंढे पानीमें पीसकर टूटे हाडपर लेप करे तो टूटा हाड जुडे। अथवा १०८ बार धोये हुए गायके मक्खनमें सांठीके चावलोंका चूर्ण मिलाकर लेप करे। अथवा चावलोंके

चूर्णमें नमक मिलाकर लेप करे। अथवा अमिली या आमके रसका लेप करे तो सूजन व दर्द व टूटा हाड अच्छा होवे। अथवा पीपलकी लाख गेहूंकी मैदा अर्जुनकी छाली ये समभाग लेकर घीमें पीसकर दूधके साथ पीवे। अथवा हारसिंगारका चूर्ण घीमें मिलाकर खावे तो टूटी सन्धि टूटा हाड अच्छा होवे अथवा केवल कच्ची फिटकरी ६ मासेको गाय या बकरीके कच्चे दूधसे पीवे। अथवा लहसुन, शहद, पीपलकी लाख, घी, मिसिरी ये समभाग लेकर महीन पीसकर रोज खावे तो सर्वप्रकारके टूटे हाड जुडैं। अथवा पीपलकी लाख, बडी खरैटी, अर्जुनकी छाली, असगन्ध, हारसिंगार, गूगुल ये समभाग लेकर महीन पीसकर प्रतिदिन १तोला खावे तो टूटा हाड जुडै शरीर वज्रके समान होवे इसका नाम लाक्षादिगूगुल है। इसमें मांसका यूप चावल गेहूँ घी दूध मक्खन बादाम अंगूर ये पथ्य हैं। और नमक मिर्चा खटाई मैथुन परिश्रम रूखाअन्न घाममें बैठना चिन्ता करना दिनमें सोना रात्रिमें जागना ये बिलकुल छोड देवे। और टूटे हाडकी सबसे बढ़कर उत्तम औषधी मोमियाई है इसको २ मासे लेकर दूधके साथ खावे तो टूटा हाड जुडै शरीर मजबूत होवे यह दवा यूनानी है॥ इति भग्नचिकित्सा॥

अथ नाडीव्रणके लक्षण व चिकित्सा।

जब फोडा आराम होकर एक सूराखसे मवाद बहा करता है उसको नाडीव्रण और भाषामें नासूर कहते हैं। थूहरके दूध और आकके दूधमें दारुहलदीको घिस कर बत्तीसी बनाकर सूराखमे भरदेवे तो सर्व प्रकारके नासूर शीघ्रही अच्छे होवे। अथवा अमिलतास,हल्दी, मंजीठ ये समभाग लेकर शहदमें पीसकर बत्ती बना कर नासूरके मुखमें देवे तो सर्वप्रकारके नासूर अच्छे होवें। अथवा भैंसके सींगकी भस्मको घीमें मिलाकर लेप करे तो नासूर अच्छा होवे। अथवा गूगुल, हर्र, बहेडा, आमला,सोठि,मिर्च, पीपरि ये समभाग लेकर घीमें मिलाकर तीनतीन मासेकीगोली बनाकर गिलो-यके रस या काढामें एक एक गोली रोज खावे तो बिगडा हुआ नासूर, भगन्दर, दर्द, गुल्म इतने रोग दूर होवें इसका नाम सप्ताङ्ग गूगुल है॥ इति नासूर चिकित्सा॥

अथ भगन्दरके लक्षण व चिकित्सा।

गुदाके इर्दगिर्द चारोंतरफ दो दो अंगुलके फासिलेमें फुंसी व गांठ होवें और दर्द करें पकें फूटें बहतीरहें उसको भगन्दर कहतेहैं फारसीमें उसको नवासीर कहतेहैं यह५ प्रकारकाहै। १वातका, २पित्तका, ३कफका४सन्निपातका

९चोटलगनेका।यह भगन्दर जब अपथ्य आदिसे बिगड़ जाताहै तब उस जगह सुराख होता है फिर उसी सुराखसे कभी मूत्र व कभी मल भी निकला करता है वैद्यको चाहियेकि भगन्दरकी गांठ व फुंसीको कभी पकने न देवे बल्कि ऐसी दवा करे जिससे फुंसी बैठ जावे । पुनर्नवा, गिलोय, सोंठि, मौरेठी, बेरीके पत्ते ये समभाग लेकर महीन पीसकर गर्मकरके वहां बांधै तो गांठ बैठ जावे । अथवा अफीम६मासे एलुआ ६ मासे, मुनक्का २ मासे इनको पानीसे पीसकर टिकिया बनाकर बांधे तो भगन्दरकी गांठ बैठ जावे । अथवा त्रिफला ३ तोले गूगुल१ तोला, पीपरि ९ तोले, इनको पानीसे पीसकर तीन तीन मासेकी गोलियां बनाकर खावे तो गुल्म बवासीर,भगन्दर, अवश्य ही आराम होवे। इसका नाम नवकार्षिक गूगुल है । और परिश्रम, प्रसंग, सवारी, युद्धकरना, भारी व देरमें पचनेवाली चीजें खाना इनसे भगन्दरवाला रोगी बचारहे बल्कि आराम होजानेके १ वर्षतक उक्त चीजोंसे परहेज रक्खे । अथवा त्रिफलाके रसमें बिलावकी हड्डी घिसकर लेप करे। अथवा त्रिफलाके पानी या काढासे रोज धोवे और उसीमें घिसकर हड्डीको लगावे। अथवा गधाके लोहूमें अर्जुनकी छालीको पकाकर लेप करे तो भग-

न्दरका नाश होवे। अथवा अडूसेके पत्तोंकी टिकिय बनाकर उसपर सेंधानमक बुरककर बांधें तो भगन्दर अच्छा होवे ॥ इति भगन्दर चिकित्सा ॥

अथ उपदंशरोगके लक्षण व चिकित्सा।

रजस्वला अथवा रोगिणी स्त्रीसे प्रसंग करने व हथरस आदि कारणोंसे मनुष्यके मूत्रनलमें फुंसी खाज, घाव इत्यादि होजाते हैं उसीको उपदंश कहते हैं। यह ५ प्रकारका है, १ वातका, २ पित्तका, ३ कफका, ४ सन्निपातका, ५ चोट लगनेका। इसको भाषामें गर्मी और फारसीमें आतिशक कहते हैं। फिरंगगर्मी व आतिशक तो मूत्रनल व सर्वशरीरमें विस्फोटककी तरह फैलजाती हैं परन्तु उपदंश केवल मूत्रनलहीमें रहता है इतनाही दोनोंमें भेद है। वैद्यको चाहिये कि, इस रोगकी इस प्रकारसे चिकित्सा करे कि, जिसमें मूत्रनल पकने न पावे क्योंकि, पकनेपर अधिकांश गलकर गिरजाना सम्भव है। जब इस रोगकी बहुत-दिनोंतक उत्तम प्रकारसे चिकित्सा नहीं कीजाती तब शिश्नके शिरमें धानके अंकुर सरीखा या मुर्गाकी शिखा सरीखा निकलआता है उसको लिगार्श अर्थात् लिंगकी बवासीर कहते हैं, कोई कोई इसको लिंगवर्ती भी कहतेहैं, यह रोग त्रिदोषसे उत्पन्न होता है ॥

अथ उपदंश चिकित्सा ।

बफारा देना, लोहू निकालना इस रोगमें अत्यन्त लाभदायक है। त्रिफलाके काढा या घमिराके रससे उस स्थानको बार बार धोवे । अथवा गुलेदोपहरियाके पत्तोंका चूर्ण या अनारकी छालीके चूर्णसे उस जगह मालिश करे।अथवा चिकनीसुपारी या सफेदकनेरकी छालीको पानीमें घिसकर लेप करे। अथवा त्रिफलाको कढाईमें डालकर भस्म करे फिर शहदमें मिलाकर लेप करे तो उपदंश शीघ्रही आराम होवे । सज्जीखारका लेप करे तो लिंगार्श दूर होवे । सिरसकी छालीको पानीमें घिसकर रसौंत मिलाकर लेप करै अथवा हर्रको पीसकर रसौंत मिलाकर लेप करे तो लिंगके सर्वरोग नाश होवें अथवा बबूलकी छाली, चांवल, अनारकी छाली, मनुष्यके मस्तककी हड्डी ये समभाग लेकर महीन पीसकर लेप करे तो उपदंश दूर होवे । दिनमें सोना, मूत्रके वेगको रोकना भारी-अन्नका भोजन, मैथुन, गुड, खटाई, तेल, मिर्चा, परिश्रम, मट्ठा, बैंगन, उर्द, नमक मदिरा इतनी चीजें उपदंशवाला वर्ज देवे । अब इस रोगके जडसे नाश होनेके लिये-रसशेखर कहते हैं। पारा १ तोला, अफीम १ तोला लेकर लोहेके बर्त्तनमें डालकर नीमकेसोंटासे श्यामा तुलसीका स्वरस डाल डालकर २ पहर-

तक मर्दन करे बाद उस मर्दनकेउसमें १तोला सुहागा डालकर फिर भी तुलसीका रस डाल डालकर १ पहरतक मर्दन करे फिर,जावित्री,जायफल,खुरासानी, अजवाइन, अकरकरा इनको ढाई ढाई तोले लेकर उसीमें मिलाकर तुलसीका रस डालडालकरखूब रगडे फिर वंशलोचन तोले २४, खैरसार तोले २४ उसीमें मिलाकर फिर तुलसीका रस डालकर सबको एकहीमें एक घडीतक घोटकर चना समान गोली बनाकर छायामें सुखा लेवे फिर दो दो गोली शामको खायाकरे और नमक, मिर्चा, खटाई, गुड इन४ चीजोंसे परहेज रक्खे तो उपदंश, गलितकुष्ठ, गर्दभिका, घाव, फिरंग विसर्प, विस्फोटक इतने रोग अवश्यही जड़से नाश होवें, इसका नाम सिद्धरसशेखर है ॥ इति उपदंश चिकित्सा ॥

अथ शूकरोगके लक्षण व चिकित्सा।

लिंगके बढानेके निमित्त उसमें अनेक औषधियों- का प्रयोग करनेसे उसमें १८ प्रकारके शूकरोगउत्पन्न होते हैं उनके नामके अर्थोंसे प्रायः लक्षण विदित होजाते हैं। १ सर्षपिका, २ अष्ठीलिका, ३ ग्रथित, ४ कुंभिका, ५ अलजी, ६मृदित, ७संमूढपिडिका, ८ अव- ंथ, ९पुष्करिका, १० स्पर्शहानि, ११ उत्तमा, १२शत-

पोनक, १३ त्वक्पाक, १४ शोणितार्बुद, १५मांसार्बुद १६ मांसपाक, १७ विद्रधि, १८ तिलकालक ॥ अब इनके भाषामें क्रमसे अर्थ कहते हैं,ये सर्वरोग शिश्नके ऊपर होते हैं ॥

१ सफेद सरसोंके समान फुन्सी होना, २बडीबडी लंबी कठोर फुन्सी होना,३बहुतसीगांठ होना,४जामुनकी गुठिलीसी फुंसी होना, ५ पोस्ताके दानासमान फुन्सी होना, ६ लिंगका सूजना,७एक छोटीसीफुन्सी होना,८ छोटी व बडी कई तरहकी फुन्सी होना, ९ लिंगके शिरपर बहुतसी फुन्सी होना, १० दर्द होना लोहू निकलना, ११ मूंगके बराबर सुर्ख फुन्सी होना, १२ लिंगमें अनेक छेद होजाना, १३ लिंग पकजाना, १४ काली व लाल फुन्सियाँ होना, १५एक बड़ीफुंसी होना, १६ लिंगका मांस गलगलकर गिरना १७अनेक प्रकारकी कठोर फुन्सी होना १८ अनेकतरहकी काली फुन्सी होना व पकना फूटना व मवाद बहाकरना व मांस गलना ॥

अथ चिकित्सा ।

इन रोगोंमें लोहू निकलाना, जुलाब लेना, हलका भोजन करना लाभदायक है और त्रिफलाके काढामें गूगुल मिलाकर पीवे तो सर्व शूक रोग दूरहोवें।अथवा

गाय या गधीके कच्चे दूध या शहदमें लिंगको १या २ पहर तक डुबाये रक्खे। अथवा रसौंतका लेप करै तो दर्द व सूजन और खाजसंयुक्त बहता व गलता हुआ भी लिंग अच्छा होवे। अथवा दारुहल्दी, निर्गुण्डी, मौरेठी, धुयेंका करेहुआं, हल्दी, देवदारु ये समभाग लेकर पानीसे बांटकर चौगुने सरसोंके तेलमें पचाकर तेल सिद्ध करे फिर नित्य इस तेलकी मालिश किया करे और थोडा थोडा पीवे भी तो लिंगके सर्वरोग नाश होवें, इसका नाम दार्वीतैल है ॥ इति शूकरोग चिकित्सा ॥

अथ कुष्ठरोगके लक्षण व चिकित्सा।

मल मूत्रादिके वेगको रोकनेसे, विरुद्ध भोजन (जैसे दही-मछली, तेल-गुड, नमक, खटाई, उडद-तिल) के खानेसे, बहुत मैथुन करनेसे, दिनकेसोनेसे महापातकके करनेसे, किसी सिद्धके शापसे, वातपित्त कफ ये तीनों दोष शरीरकी सातो धातुओंको बिगाड कर १८प्रकारके कुष्ठरोग पैदा करदेते हैं उनके नाम-१ कपाल, २ उदुम्बर, ३ मंडल, ४ऋक्षजिह्व, ५ पुण्डरीक, ६ सिध्म (सेहुआं) ७काकण, ८ एककुष्ठ, ९ गजचर्म, १० चर्मदल, ११ किट्टिभ, १२ वैपादिक, १३ आलसक, १४ कच्छदाद, १५पामा (खाज), १६ विस्फोटक

१७ शतारू, १८ विचर्चिका इनमेंसे पहिले ७ महाकुष्ठ हैं । और १ एककुष्ठ, २ चर्मदल, ३ गजचर्म, ४ विचर्चिका, ५ खाज, ६दाद,७विस्फोटक,८किट्टिभ, ९ आलसक, १० शतारू, ११ विपादिका ये क्षुद्रकुष्ठ हैं। बाघके समान भयानक मुख होजावे,भौंह,गाल,नाक, होंठ और हाथ पांवकी अंगुली बहुत मोटी और शून्य होजावें।उनमें पीडा बहुत होवे ये कुष्ठरोगके लक्षणहैं॥

अथ कुष्ठ चिकित्सा ।

एक महीनेमें दो दफे वमन विरेचन करतारहे,लोहू निकलाना घी पीना लाभदायकहै।यहरोग संक्रामकहै, संसर्गसे भी होजाता है; इसवास्ते कोढीके साथवैठना भोजन करना,एक खाटपर बैठना,छूना,उसका कपडा या माला या जूता पहिनना याउसके मुंहकी हवालगना, ये सब पूर्णरीतिसे बचावे क्योंकि कोढ १, ज्वर२, यक्ष्मा ३, नेत्रदुखना ४, चेचक ५, जुकाम ६, हैजा ७ ये सात रोग संक्रामक अर्थात् उडकर दूसरेको तुरन्त लग जाते हैं. इस वास्ते इनसे बहुतहीअलग रहै परन्तु इन सबमें कोढ ही सबसे खराब है क्योंकि कोढवाला मरकर फिर दूसरा जन्म लेता है, तब भी उसको कोढरोग होता है । बावचीके चूर्णमें अदरखका रस मिलाकर शरीरमें उबटन लगावे तो कुष्ठ दूर

होवे। अथवा नीमका पंचांग १० तोला लेकर पीस छान चूर्ण करके घमिराके रसकी ७ भावना देकर फिर त्रिफला, सोंठि, मिर्चें, पीपरि, ब्राह्मी, गोखरू, भिलावाँ, चीता, बायबिडंग, बाराहीकंद, लोहचूर्ण, हल्दी, दारुहल्दी, बावची, अमिलतास, कूट, इन्द्रजौ, पाढ, शक्कर ये एक एक तोला लेकर खैरसार, आसना, नीम इनके काढामें भावना देकर छायामें सुखाकर सबको एकमें पीसकर रख देवे फिर प्रथम कोढीको वमन विरेचन देकर उक्त चूर्ण १ तोला शहद या घी या खैरसारके काढा या गर्मपानीके साथ खिलावे। प्रथम ६ मासोसे प्रारंभ करके ४ तोले तक धीरे धीरे खुराक बढावे और इसपर हल्का भोजन करे इससे १८ प्रकारके कोढ अवश्यही नाश होवें। यह पंचनिम्बावलेह है। इसको श्रीब्रह्माजीने मार्कंडेयादि मुनियोसे कहा है। अथवा चीतेकी जड, हर्र, बहेडा, आमला, सोंठि, मिर्चें, पीपरि, जीरा, कलौंजी, बच, सेंधानमक, अतीस, कूट, चाब, इलायची, जवाखार, वायबिडंग, अजमोद, नागरमोथा, देवदारु ये सब समभाग लेवे और सबके बराबर गूगुल लेकर सबको एकमें मिलाकर घोट छानकर घीसे सुपारी प्रमाण गोलियां बनालेवे फिर १ गोली या २ गोली प्रतिदिन गर्मदूध या गर्मपानीसे खावे तो अठारहो प्रकारके कुष्ठ दूर होवें। इसका नाम एक-

विंशति गूगुल है।पुराने चावल,गेहूँ, चना, मूँग, मेथी, सोवा,करेला,जमीकन्द,जंगलीजीवोंके मांस,खैर इतनी चीजें पथ्य हैं, और दूब, हर्र,सेंधानमक,पमारके बीज, तुलसी ये सब बराबर लेकर कांजी या खट्टे मट्ठामें पीसकर लेपकरै तो महा असाध्य कच्छदाद, खाज, आदि सबको दूर करे।और पमारके बीज,कूट, सेंधानमक कांजी,सरसों,बायबिडंग ये सब समभाग लेकर पीसकर लेपकरे तो कृमि सेहुँआँ,दाद,खाज,कोढ़का नाश होवे अमिलतास और मकोयके पत्तों या कनेरके पत्तोंको खट्टे मट्ठामें पीसकर पहिले उस जगह तेल लगाकर फिर उक्त लेपकी मालिश करे तो दाद, खाज, सेहुँआं,कोढ दूर होवें । बायबिडंग, सेंधानमक,हर्र,बावची, सरसों, करञ्ज, हल्दी इनको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे सर्व कुष्ठ नाश होवें।कॉस या कसौंदीकी जडको कांजी या खट्टे मट्ठामें पीसकर लेपकरै तो दाद और किट्टिभ कोढ का नाश होवे।पमारके बीजोंको थूहरके दूध या गोमूत्रमें पीसकर२घड़ी धूपमें रखकर लेप करे तो किट्टिभ कोढ नाश होवे। चिरचिराके रस या मट्ठामें मूलीके बीजोंको पीसकर या केलाके खारमें हल्दीको पीसकर या जवाखार और गन्धकको नीबूके अर्क या पानी या मट्ठा या सरसोंके तेलमें मिलाकर लेपकरे तो सेहुँआंका नाश होवे, कूट, मूलीके बीज, मालकांगनी, सरसों, हल्दी,

केशर ये सब समभाग लेकर मट्ठामें पीसकर लेप करे तो बहुत पुराने सेहुँआंका नाश होवे।सिन्दूर और मिर्च ये समभाग लेकर भैंसके मक्खनमें मिलाकर लेप करे तो खाज दूर होवे।कनेरके पत्तोंके रसको सरसोंके तेलमें पचाकर तेल सिद्ध करके लगावे तो खाज आराम हो. अडूसेके पत्ते और हल्दी ये दोनों समभाग लेकर गोमूत्रमें पीसकर लेप करे तो३दिनमें खाजका नाश होवे। मकोय, पमारके बीज, कूट, पीपरि इनको समभाग लेकर बकराके मूत्रमें पीसकर लेप करे तो सफेद दाग अच्छा होवे। बावची१ तोला, हरताल४तोला इनको गोमूत्रमें पीसकर लेप करे तो सफेद कोढका नाश होवे या आमला और कत्था ये दोनों समभाग लेकर दो तोलेका काढा बनाकर उसमें शहद या बावचीका चूर्ण १ तोला डालकर पीवे तो सफेद कोढका नाश होवे। या सफेद फूलवाली अरणीकी जड रविवारको लाकर दूधमें घिसकर १तोला प्रतिदिन पीवे तो सफेद कोढका नाश होवे।या मनसिल और चिरचिरेकी भस्म समभाग लेकर पानीमें पीसकर लेप करे तो सफेद कोढ अच्छा होवे।बावचीका १तोलाचूर्ण गर्मपानीके साथ पीकर १ पहर तक धूपमें बैठे तो सर्व कुष्ठ १९ दिनमे दूर होवें परन्तु केवल दूधका ही आहार करेऔर कोई वस्तु न खावे।नीम, परवल, कटाई, गिलोय, अडूसा येपांच२तोले

लेकर दो सेर पानीमें काढ़ा करे जब आधासेर बाकी रहे तब कडाहीमें छानकर उसमें आधासेर घी और आधासेर त्रिफला मिलाकर पकावे और घीको सिद्ध कर प्रतिदिन १ या २ तोले पीवे तो८०प्रकारके वातरोग,४० पित्तके रोग, २०कफके रोग, १८ कोढ, कफ, खांसी,घाव,कृमि,बवासीर इतने रोग दूर होवे। इसका नाम पंचतिक्त घृत है।चीतेकी जड,निर्गुण्डी (सम्हालू), कनेरकी जड, नारी, मीठा तेलिया विष ये चार चार तोले कांजी या खट्टे मट्ठामें पीसकर उसमें करंजका तेल ३२ तोले, कांजी ४ तोले मिलाकर धूपमें पकाकर यह तेल लगावे तो कोढ़ और सर्व प्रकारके घाव अच्छे होवे । इसका नाम पृथ्वीसार तैल है ॥

मंजीठ, इन्द्रजौ, गिलोय, नागरमोथा,वच,सोंठि, हल्दी, दारुहल्दी, कटाईकी जड, कूट, नीमकी छाली, परवल, कुटकी, भारंगी, बायबिडंग, मूर्वा, देवदारु, घमिरा, पीपरि,पाढ़,बनप्सा, शतावरि, खैर, त्रिफला, चिरायता, बकायन, आसना, अमिलतास, निसोत, बावची,बरना,जमालगोटाकी जड,सहोरेकीजड,अडूसा,पित्तपापडा,अनंतमूल,अतीस,धमासा,इंद्रायणकी जड,नेत्रबाला ये समभाग लेकर २तोलेका विधिपूर्वक काढा बनाकर पीवे तो सर्व प्रकारके रुधिर विकार, १८ कोढ, विस्फोटक, विसर्प, वातरक्त, शून्यवहरी,

नेत्ररोग अतिशीघ्र आराम होवें । इसका नाम बृहन्मांजिष्ठादि काढा है ॥

मिर्च, निसोत, जमालगोटाकी जड़, आकका दूध, गोबरका रस, देवदारु, हल्दी, दारुहल्दी, जटामांसी, कूट, चन्दन, इन्द्रायणकी जड, कनेरकी जड, हरताल, मनशिल, चीता, कारियारी, नागरमोथा, वायबिडंग, पमारके बीज, सिरसो, इन्द्रजौ, नीमकी छाली, सेहुंड, थूहर, गिलोय, अमिलतास, खैरसार, बावची, बच, मालकांगनी ये सब चार चार तोले लेवे और मीठा तेलिया विष ८ तोले लेकर सबको पानीमें पीसकर २५६ तोले सरसोंके तेलमें मिलाकर उसीमें तेलसे चौगुना गोमूत्र डाले फिर मन्दाग्निसे तेलको सिद्ध करलेवे फ़िर इस तेलकी मालिश करे तो १८ कुष्ठ, दाद, खाज, विस्फोटक, ८० प्रकारके वातरोग अवश्य ही नाश होवें । शरीर वायुके समान वेगवाला होवे । इसका नाम बृहन्मरिचादितैलहै॥इति कुष्ठ चिकित्सा॥

अथ शीतपित्तके लक्षण व चिकित्सा ।

ठंढी हवाके लगनेसे मच्छडोके काटनेके समान शरीरमें सुर्खरंगके चकत्ते पडजाते हैं जिनमे खुजली चलती है उसको शीतपित्त और भाषामें पित्ती उछलना कहते हैं ॥

अथ चिकित्सा ।

जुल्लाब लेना, वमन करना, गर्मगर्म सरसोंके तेलकी मालिश,गर्म जलसे स्नान करना लाभदायक है। त्रिफलाके चूर्णके साथ खावे अथवा घीमें सेंधानमक मिलाकर शरीरमें मालिश करे तो पित्ती आराम होवे अथवा सोंठि, मिर्च, पीपरि ये समभाग लेकर उसके बराबर मिसिरी मिलाकर खावे या आमलेका चूर्ण १ तोला १ तोला गुडमें मिलाकर खावे या अदरखके रसमें पुराना गुड मिलाकर खावे तो पित्ती व मन्दाग्नि दूर होवे । या गुडके साथ अजमोद खावे तो पित्ती आराम होवे । अथवा अदरख ५० तोले, गायका घी २५ तोले, गायका दूध १०० तोले,शक्कर ५० तोले, पीपरि, पिपरामूल, मिर्च, सोंठि, चीता, बायबिंडग, नागरमोथा, नागकेशर,दालचीनी,इलायची, तेजपात,कचूर ये सब चार चार तोलेभर लेकर पानीमें पीसकर सबको एकमें मिलाकर मन्दाग्निसे विधिपूर्वक पकाकर तैयार करे फिर १ तोला या २ या ४ तोले प्रतिदिन खावे तो रक्तपित्त, खांसी,श्वास, बातरक्त, गुल्म, उदावर्त्त, सूजन, दाद, खाज, पित्ती, कृमि, मन्दाग्नि इतने रोग अवश्य ही नाश होवें । क्षुधा व बल बढ़े, शरीर मोटा होवे । इसका नाम आर्द्रकखण्ड है ॥ इति शीतपित्तचिकित्सा ॥

अथ विसर्परोगके लक्षण व चिकित्सा।

बहुत गर्म व हरे शाक खाने व बहुत शराब पीनेसे व बहुत खटाई खानेसे वात,पित्त,कफ ये तीनों दोष शरीरकी सातों धातुओंको बिगाडकर ज्वरसंयुक्त अनेक प्रकारकी फुंसियां, (जिनमें पीडा व दाह व खुजली व चेप निकले और अतिशीघ्र सारे शरीरमें फैल जावें) पैदा करदेते हैं उसको विसर्प कहते हैं, वह ७ प्रकारका है १ वातका, २ पित्तका, ३ कफका, ४ सन्निपातका, ५ वातपित्तका, ६ वातकफका, ७ कफ-पित्तका। इनमेंसे पहिले ३ साध्य हैं यहीआराम होते हैं बाकी ४ महान असाध्य हैं॥

अथ चिकित्सा।

जुल्लाब लेना, वमन करना, पसीना निकालना, लोहू निकालना ये उपाय परम लाभदायक हैं॥ गायके मक्खनको १०८ बार धोकर उसमें शुद्ध आमलासारगन्धक १ तोला, फिटकरी १ तोला, रस-कपूर६ मासा ये सब पीसकर उसीमें मिलाकर लगावे तो विसर्प आराम होवे। अथवा सिरसकी छालीको पानीसे पत्थरपर घिसकर लेप करे तो विसर्प अच्छा होवे। अथवा कसेरू, सिंघाडा, कमलगट्टा, सिवार, लालचन्दन ये समभाग लेकर घीमे मिलाकर लेप

करे । या तगर, सिरसकी जड, मौरेठी, लालचन्दन, इलायची, छड, हल्दी, दारुहल्दी, कूट, नेत्रवाला ये समभाग लेकर महीन पीसकर घीमें मिलाकर लेप करे तो विसर्प,कुष्ठ, ज्वर, सूजन इतने रोगोंका नाश होवे । इसका नाम दशांगलेप है अथवा कमलगट्टा, खस, चन्दन इनका लेप करे तो विसर्प दूर होवे ॥

इति विसर्पचिकित्सा ॥

अथ स्नायुरोगके लक्षण व चिकित्सा ।

खराब पानी पीने और खराब अन्नके खानेसे वायु बिगडकर पैरोंमें फफोलेको फोडकर उसके भीतर डोरा (धागा) पैदा करदेताहै । अगर औषधिसे वह धागा बाहर निकल आवे तो रोग आराम होजायगा। अगर टूट जावे तो उस जगहको लँगडी कर देवे इस रोगको भाषामें नहरुआ और बाला कहते हैं, यह रोग जिला दमोह व मंडलामें अधिक देखा गया है॥

अथ चिकित्सा ।

शीतल पानीमें हींगको घोलकर पीवे तो नहरुआ न होवे।या कलौंजीकी जड ठण्ढे पानीमें पीसकर पीवे या अरंडकी जडका रस गायके घीमें मिलाकर पीवे या बबूलके बीजोंको महीन पीसकर लेप करै या गायके घीमें निर्गुंडीका रस मिलाकर पीवे तो स्नायुरोगका

शीघ्रही नाश होवे। सहिंजनेके पत्तोंको कांजीसे पीस-कर सेंधानमक मिलाकर लेप करे तो नहरुआ दूर हो या वालछडकी जडको पानीके साथ पत्थरपर घिस-कर लेप करे तो नहरुआ डोरा बाहर निकल आवे। या कबूतरकी पर दो चांवलभरको गुड़में मिलाकर खावे। अथवा ७ दाना बकायनके रोज निगल जावे अथवा एलुआ १ मासा पहिले दिन खावे, दूसरे दिन दो मासा इसी तरह ७ दिनतक रोज बढ़ाकर खावे और लेप भी करे। अथवा चौलाईकी जड पीसकर नहरूपर बांधे तो शीघ्रही अच्छा होवे ॥ इति नहरु चिकित्सा ॥

अथ विस्फोटकके लक्षण व चिकित्सा।

मिर्चा, खटाई, नमक,तेल इनको अत्यन्त अधिक-ताके साथ खानेसे, अत्यन्त परिश्रम करनेसे, बहुत घाममें रहनेसे, वात, पित्त, कफ कोपको प्राप्त होकर शरीरके मॉस व लोहू व हाड़ोको दूपित करके प्रथम घोर ज्वर उपजाकर भयंकर फोड़ोंको पैदा करदेते हैं, वह फोड़े कभी शरीरके एक स्थानमें होतेहैं और कभी सारे शरीरमें फैलजाते हैं, इन फोड़ोमें जलन बहुत होती है कोई बहुत जल्द पकतेहैं कोई देरमें पकते हैं। यह रोग ८प्रकारका है—१वातका,२पित्तका,३कफका,

४ वातपित्तका, ५वातकफका, ६कफपित्तका, ७ सन्निपातका, ८ रक्तका । इनमें पहिले ३ साध्य हैं ॥

अथ चिकित्सा ।

लंघन करना, वमन व जुल्लाब लेना अत्यन्त लाभदायक है और पुराने चांवल, पुराने जौ, मूँग, मसूर, चना, परवल, करेला, तुरई ये पथ्य हैं। चिरायता, बच, अडूसा, त्रिफला, इन्द्रजौ, कुडाकीछाली, नीमकीछाली, परवल, ये समभाग लेकर काढा बनाकर उसमें शहद डालकर पीवे तो विस्फोटक दूर होवे । या पुत्रजीवककी मीगीको पानीमें पीसकर लेप करे तो विस्फोटक, गांठ, कखवारी इत्यादिका नाश होवे । अथवा इन्द्रजौको चांवलोंके पानीमें पीसकर लेप करे तो विस्फोटक आराम होवे ॥ इति विस्फोटक चिकित्सा ॥

अथ फिरंगगर्मीके लक्षण व चिकित्सा ।

रजोवती वा गर्मीवाली स्त्रीसे प्रसंग करनेसे या अतिगर्म प्रकृतिवाली स्त्रीके संगमसे यह रोग पैदा होजाता है, प्रथम लिंगपर फुन्सी आती हैं वहांकी खाल फट जाती है फिर धीरे धीरे जीभमें मुखमें ओठोंमें सारे शरीरमें छोटी छोटी फुन्सियां हो जाती हैं जिनमें बहुत पीडा व जलन होती है । जब यह रोग बढ जाता है-तब तालू फूट जाता है । और कौआ व

लिंग व अण्डकोश गलकर बिलकुल जडसे गिरजाते हैं इस वास्ते इस रोगके उत्पन्न होते ही चिकित्सा करनी चाहिये ॥

अथ चिकित्सा।

इस रोगमें डाक्टर व हकीम व वैद्य रसकपूरको अत्यन्त लाभदायक समझते हैं और प्रायः उसीका प्रयोग करते हैं, परन्तु उसके खानेसे मुखमें सूजन आजाती है इसवास्ते अब रसकपूर खानेकी उत्तम तर्कीब लिखते हैं, जिससे मुख नही सूजता । गेहूंके आटाको पानीसे मांडकर उसके भीतर चार चार रत्ती रसकपूर भरकर उस आटाकी गोली बना लेवे फिर उसके ऊपर लौंगका चूर्ण लपेटकर मुखमें रखकर शीतल पानीसे इस प्रकार निगले जिसमें दांत न लगने पावें, ऊपरसे बँगला पानके १० बीडा खावे और नमक, खटाई, मिर्चा, गुड इन चार चीजोंसे बिल्कुल परहेज करे तो ७ दिनमें फिरंगगर्मीका नाश होवे । अथवा पारा ४ मासा, अकरकरा ८ मासा, शहद १ तोला इन सबको खूब घोट कर ७ गोली बनाकर १ गोली रोज शीतलपानीसे खावे तो फिरंगगर्मीका नाश होवे । अथवा पीले फूलकी बारियारीका स्वरस ४ मासामें ४ मासा पारा मिलाकर दोनोंको हाथोसे

खूब मसलै यहांतक कि, पारा दिखलाई न देवे ऐसे ७ दिनतक करे तो फिरंगगर्मीका नाश होवे । अथवा चोबचीनी महीन पीस छान कर ६ मासेको १ तोला शहदसे प्रतिदिन खावे तो बिना दर्द तकलीफके ७ दिनमें फिरंगगर्मीका नाश होवे । अथवा सुर्ख फिटकरी १० तोला लेकर एक सेर खटाईके स्वरसमें ४ पहर खरल करके चनाके समान गोली बनाकर १ गोली तेलके आमके,अचारमें लपेटकर खावे तो फिरंगगर्मीका नाश होवे यह एक फकीरकी बताई हुई उत्तम औषधि है। फिरंगगर्मीपर अनेक प्रकारकी चमत्कारिक औषधियां देखना चाहो तो हमारी बनाई "मुजर्रिबात गौरीशंकर" में देखो ॥ इति फिरंग चिकित्सा ॥

अथ मसूरिका रोगके लक्षण व चिकित्सा ।

खटाई, नमक,मिर्चा, जवाखार, बासी पूडी वगैरहके बहुत खानेसे, खराब हवा व पानीके पीनेसे तीनों दोष बिगडकर शरीरमें मसूरके समान लाल व काली फुंसियोंको पैदा करते हैं, उनमें पीडा होवे, जलन होवे, ज्वर होवे, देरमे पकैं । यह मसूरिकारोग १४ प्रकारका है—वातका १ पित्तका २ कफका ३ रक्तका ४ सन्निपातका ५ रसधातुगत ६ रक्तधातुगत ७ मांसधातुगत ८ मेदधातुगत ९ अस्थिधातुगत १०

मज्जाधातुगत ११ वीर्यधातुगत १२ चर्मज १३रोमान्तिक १४। इनमें पहिली ३ साध्य हैं॥

अथ चिकित्सा।

इस रोगमें चांवल, मूँग, मसूर, सेंधानमक, मिसिरी आमला, सिंघाडा, कसेरू, लौकी, पेठा ये पथ्य है॥ परवलकी जडका काढा पीनेसे पित्तकी मसूरिका दूर होवे। लोहू निकलानेसे रक्तकी मसूरिका दूर होवे। कलौंजीके पत्तोंके स्वरसमें हल्दीका चूर्ण मिलाकर पीवे तो रोमान्तिकमसूरिका दूर होवे। फिटकरीको महीन पीसकर घावपर बुरक देवे तो घाव अतिशीघ्र सूख जावे। जो जो दवाइयाँ फिरंगरोग व कोढ व विसर्पमें कह आये हैं उन सबसे मसूरिकारोग आराम होता है इसी वास्ते यहाँ थोडी ही चिकित्सा कही गई है॥ इति मसूरिका चिकित्सा॥

अथ शीतला रोगके लक्षण व चिकित्सा।

पहिले शरीरमें दो तीन दिन उग्र ज्वर रहे फिर मसूरके दानोके समान या उससे छोटी बडी फुंसियाँ सारे शरीरमें निकलें और बहुत जल्दी बढकर दो तीन दिनमें पककर फूट जावें और ७ दिनमें आपसे आप सूखकर झडजावें इसको शीतलारोग कहते हैं। यह भीम सूरिकाकी एक किस्म है। भाषामें कोई इसको

चेचक व देवी निकलना व माताकी बीमारी कहते हैं। यह रोग ७ प्रकारका है। इस रोगवालेको पवित्र स्थानमें पवित्रताके साथ रक्खे और नीमकी डालीसे मक्खियाँ डुलाते रहे। और अमिलीके बीज और हल्दीको शीतलपानीमें पीसकर पीवे तो उसके शीतलाका कोप कभी न होवे। या केलाके रसमें सफेद चन्दनको पीवे या अरूसाके रसमें महुआकी छालीको पीवे या शहदसे महुआकी छाली पीवे। अथवा जूहीके पत्तोंके स्वरसको पीवे तो शीतला नहीं निकले या गधीके दूधको पीवे परन्तु शीतला निकलनेके पहिले ही उक्त औषधियाँ खानी चाहिये। जो फुंसी पककर फूट जावे वहाँ अरने कंडेकी राख लगा देवे तो घाव तुरन्तही सूख जावे अथवा चन्दन, अरूसा, नागरमोथा, गिलोय, दाख, ये समभाग लेकर रातको पानी में भिगोकर सवेरे मलकर छानकर पीवे तो शीतलाका ज्वर शान्त होवे, इस रोगमें जप, होम, दान, शिव पार्वतीका पूजन, बलिदान, ब्राह्मणभोजन, गोपूजन, स्वस्तिपुण्याहवाचन करानेसे रोगकी शान्ति होती है॥ इति शीतालरोग चिकित्सा॥

अथ पलित रोगके लक्षण व चिकित्सा।

बहुत क्रोध व शोक व परिश्रम करनेसे शरीरका

पाचक पित्त शिरमें प्राप्त होकर शिरके काले बालोंको सफेद करदेता है इसको पलित रोग कहते हैं।

अथ चिकित्सा।

लोहका चूर्ण १ तोला, आमकी गुठली ५ तोला, आमला नग२, हर्र नग१, बहेडानग१लेकर इनसबको लोहेके पात्रमें पीसकर रात्रिभर रक्खा रहने देवे फिर सफेद बालोंपर लेप करे तो बाल काले होवें। खम्हारि की जड, कटसेलाके फूल, केतकीकी जड, लोहेका चूर्ण, त्रिफला, चमिरा, ये समभाग लेकर पानी पीस कर चौगुने तिलोंके तेलोंमें पचाकर तेल सिद्ध करके लोहेके पात्रमें डालकर १ महीने तक जमीनमें गाड देवे फिर निकालकर मालिश करे तो भौराके समान बाल काले होवें॥ इति पलित चिकित्सा।

अथ इंद्रलुप्तके लक्षण व चिकित्सा।

खून खराब होकर शिरके बाल गिरा देता है फिर वहां पर बाल नहीं जमते इसको खालित्य व गंज कहतेहैं।

अथ चिकित्सा।

कडुये परवलके पत्तोके रसमें कुटकीको पीसकर लेप करनेसे बाल फिर जम आते हैं, अथवा गोखरू, तिलके फूल, इनको समभाग लेकर शहद और घीमें मिलाकर लेप करे तो गिरे हुए बाल फिर जामें। या

हाथीदांतकी राख, बकरीका दूध, रसौंत ये समभाग लेकर एकमें पीसकर लेप करे तो बाल अवश्यही जमें यह सर्वोत्तम औषधि है कभी निष्फल न जावे।अगर हथेली पर इसका लेप करे तो वहां भी बाल जमैंफिर और जगहकी क्या गिनतीहै?॥इति गञ्जचिकित्सा॥

अथ दारुणरोगके लक्षण व चिकित्सा।

वात कफके कोपसे बालोंकी जड कठोर व सूखी होजावे वहां भूसीसी निकला करे उसको दारुणरोग कहते हैं भाषामें फिहांसो व खौसी निकलना कहतेहैं॥

अथ चिकित्सा।

महुआकी छाली, कूट, उडद, सेंधानमक ये सम-भाग लेकर शहदमें पीसकर लेप करे, अथवा पोस्ताको दूधमें पीसकर लेप करे तो फिहांसो दूर होवे॥ इति दारुणरोग चिकित्सा॥

अथ अरुंषिकाके लक्षण व चिकित्सा।

कफ, लोहू, कृमि, इनके विगडजानेसे अनेक मुख वाली बहुतसी फुंसियां होजावें इसको भाषामें बराही कहते हैं॥

अथ चिकित्सा।

नीलाकमल,केशर,आमला,मोरेठी,महुआकी छालीये समभाग लेकर इनका लेप करे तो अरुंषिका दूर होवे

अथ इरवेल्लिकाके लक्षण व चिकित्सा।

मस्तकमें घोर पीडावाली गोल फुंसी होवे उसको इरवेल्लिका कहते हैं॥

अथ चिकित्सा।

जोक लगवाकर लोहू निकलवाकर हजारबार धोए मक्खनका लेप करे तो इरवेल्लिका दूर होवें॥

अथ पनसिकाके लक्षण व चिकित्सा।

बातके कोपसे कानके भीतर उग्र पीडावाली फुड़िया होवे उसको पनसिका कहते हैं॥

अथ चिकित्सा।

चोआको रुईकी फुरेरीमें लगाकर कानके भीतर लगा देवे तो पनसिका तुरन्त ही आराम होवे॥

अथ पाषाणगर्दभिकाके लक्षण व चिकित्सा।

वात कफके कोपसे ठोढीके नीचे कठोर सूजन पीडा संयुक्त हो उसको पाषाणगर्दभिका कहते हैं॥

अथ चिकित्सा।

जोक लगाकर लोहू निकलवा देवे फिर सिरसकी छाली पानीसे घिसकर लेप करे तो यह रोग दूर होवे॥

अथ मुखदूषिकाके लक्षण व चिकित्सा।

वात कफ रक्तके कोपसे युवा अवस्थामें मुखपर

सेमलके कांटोंके समान बहुतसी फुन्सियाँ उपजती हैं उसको भाषामें मुहांसा निकलना कहते हैं ॥

अथ चिकित्सा ।

लोध, धनियाँ, वच ये समभाग लेकर पानीमें पीसकर मुखपर लेप करे अथवा गोलोचन, मिर्च पानीमें बांटकर मुखपर लेप करे। अथवा सरसों, बच, लोध, सेंधानमक इनको पानीमें बांटकर लेप करे या सेमलके कांटोंको दूधमें पीसकर लेप करे तो ३ दिनमें कमलके समान मुख होजाता है।

अथ व्यंगके लक्षण व चिकित्सा।

बहुत क्रोध व परिश्रमके करनेसे वात पित्त बिगडकर सुर्खरंगके दाग चेहरेपर कर देते हैं, उसको भाषामें झाईं कहते हैं. अगर काले रंगके दाग पडजावें तो उसको नीलिका व नीली झांईं कहते हैं॥

अथ चिकित्सा।

बडके अंकुर और मसूर इनको गायके दूधमें पीसकर लेप करे तो झाँईं दूर होवे अथवा शहदमें मंजीठ पीसकर लेप करे। अथवा खरगोशके लोहूका लेप करे। अथवा बरनाकी छालीको बकरीके मूत्रमें घिसकर लेप करें। अथवा जायफल या बादामकी गिरीको पानीमें घिसकर लेप करे। अथवा मसूरकी

दालको दूधमें पीसकर कपूर और घी मिलाकर लेप करे तो कमलके समान मुख हो जाता है ॥ इति झांई चिकित्सा ॥

अथ वल्मीक लक्षण व चिकित्सा।

बगल, हाथ, पैर, गला इन स्थानोंमें बांबीके आकारकी कठोर व लम्बी अनेक छेदोंवाली गांठें उपजें और फूटकर बहाकरें उसको वल्मीकरोग कहते हैं ॥

अथ चिकित्सा।

जोंक लगादेवे या दागदेवे या नस्तरसे चीर देवे फिर पीछे कहे हुए व्रणरोगकी दवाइयोंसे आराम करे॥

अथ कांखोंलाई और गन्धनामाके लक्षण व चिकित्सा।

हाथकी जडमें या बगलमें या कंधामें या पीठमें पित्तके कोपसे उग्र पीडावाला बडा फोडा निकले उसको कखवारी कहते हैं। और कखवारीके आसपास ऐसी ही दूसरी फुंसी निकल आवे उसको गंधैल कहते हैं।

अथ चिकित्सा।

जदवारखताईको गुलाबजलमें घिसकर लेप करे। अथवा चकचूनीकी पत्ती और अरंडकी पत्ती ये दोनों

बराबर लेकर पीसकर उसमें थोडा नमक मिलाकर गर्म करके बांधे तो कखवारी दूर होवे ॥

अथ अग्निरोहिणीके लक्षण व चिकित्सा ।

बगलमें मांसको फाडनेवाला भयंकर फोडा निकलै उसमें उग्र दाह व पीडा और ज्वर भी उपजे और दाह ऐसा उग्र होवे मानो अंगार भरदिया, अगर इसका इलाज तुरन्त न हो, तो ७ दिन या १२ दिन या १६ दिनमें रोगी मरजाता है यह सन्निपातसे पैदा होती है और महा असाध्य है । इसीको अंगरेजीमें प्लेग और फारसीमें ताऊन कहते हैं । इसकी चिकित्सा अनेक मुनियोंने नहीं कही परन्तु पतंजलि (चरक) ऋषिने इसकी चिकित्सा लिखी है सो लिखते हैं ॥

अथ चिकित्सा ।

लंघन कराना, लोहू कढाना, जुलाब देना, दाग देना लाभदायक है । यदि इस पर भी बढ जावे तो त्याग देना ही उचित है । जदवारखताईको गुलाबजलमें घिसकर लेप करे । अथवा नींबूके अर्कमें लालचन्दन, गूगुल, चीतेकी जड़ ये तीनों समभाग घिसकर गर्म कर लेप करे । अथवा नागफनीका हरा बक्कल छीलकर फेंक देवे फिर भीतरके गूदेको बांटकर गर्म करके लेप करे तो गांठ बैठ जावे॥इति अग्निरोहिणी चिकित्सा ॥

अथ बिदारिकाके लक्षण व चिकित्सा।

बिदारीकंदके समान गोल और सुर्ख पीडासंयुक्त फुन्सी बगल अंडकोशोकी संधिमें उपजे उसको बिदारिका कहते हैं। इसमें जोंक लगाकर लोहू निकलवा देवे फिर व्रणमें कहा हुआ इलाज करे॥ इति बिदारिका चिकित्सा॥

अथ कुनख व चिप्परोगके लक्षण व चिकित्सा।

नखके पकजानेको चिप्प और नखके उखड़ जानेको कुनख कहते है, लोहू निकलवाकर व नस्तरसे चीरकर लोहेके बर्तनमें हल्दीके रसको डालकर उसमें हर्र घिसकर लेप करे। अथवा सुहागा या फिटकरीको महीन पीसकर बुरकाय देवे तो रोग शान्त होवे॥ इति कुनख चिकित्सा॥

अथ परिवर्तिकाके लक्षण व चिकित्सा।

लिंगके मुख (सुपारी) के नीचे एक लम्बीगांठ उत्पन्न होवे और ऊपरका चमड़ा लौट जावे उसमें जलन व पीडा होवे उसको परिवर्तिका कहते हैं। इस रोगमें लिंगपर घी मलकर धीरे धीरे ऊपरकी खालको सीधा करे फिर महांनीमकी पत्तीको औटाकर बफारा लेवे तो रोग दूर होवे॥

अथ अवपाटिकाके लक्षण व चिकित्सा।

अनेक कारणोंसे लिंगके ऊपरकी चमड़ी उतरजावे उसको अवपाटिका कहते हैं। खैरको पीस कर चुपड़ देवे तो यह रोग अच्छा होवे ॥

अथ निरुद्धप्रकाशके लक्षण व चिकित्सा।

लिंगकी सुपारीके ऊपरकी चमड़ी बातके कोपसे लिंगको ढककर मूत्र बन्द कर देवें उसको भाषामें मुदरीक रोग कहते हैं। चोयाको लगावे तो यह रोग दूर होवे ॥

अथ सन्निरुद्धगुदके लक्षण व चिकित्सा।

मलके वेगको रोकलेनेसे मल निकलनेका द्वार छोटा होजाता है, तब सूखा मल बडे कष्टसे उतरता है, उसको सन्निरुद्धगुदकहते हैं, वातनाशकतेलोंके लगानेसे या हिन्नाके अतरको लगानेसे यह रोग दूर होवे॥

अथ वृषणकच्छूरोगके लक्षण व चिकित्सा।

अंडकोशोमें मैल जम जानेसे खाज व फुंसियां होकर पानी सा चेंप निकले और फोडे हो जावें उसको वृषणकच्छू कहते हैं। राल, कूट, सेंधानमक, सरसों ये समभाग लेकर पानीमें पीसकर उबटन करे तो यह रोग अच्छा होवे ॥

अथ अहिपूतनारोगके लक्षण व चिकित्सा।

बालककी गुदामें मल भरा रहनेसे या पसीना निकलनेपर स्नान करानेसे सारे शरीरमें गीली खाजके फोडे होकर बहा करें घाव होजावें उसको अहिपूतना कहते हैं। त्रिफला और खैरके काढासे घावको धोवे फिर शंख, सुरमा, मौरेठीको पीसकर लेप करे या फिटकरीको बारीक पीसकर लेप करे तो आराम होवे॥

अथ गुदभ्रंश रोगके लक्षण व चिकित्सा।

बहुत दस्तोके होनेसे गुदा बाहर निकल आवे उसको भाषामें कांच निकलना कहते हैं। इसमें तेल चुपडकर धीरेसे गुदाको दबाय दे और कमलके पत्तोंको शक्करके साथ खावे अथवा मूसाकी हड्डीको तेलमें मिलाकर वह तेल लगावे तो कांच निकलना दूर होवे॥

अथ शूकरदंष्ट्ररोगके लक्षण व चिकित्सा।

शरीरमें कहीपर पक जावे और जलन व पीडा और ज्वर उपजै उसको शूकरदंष्ट्र कहते हैं। जलभॉगराकी जड और हल्दीको पीसकर लेप करे। अथवा कमलकी जडके काढामें घी मिलाकर पीवे तो यह रोग दूर होवे॥

अथ अनुशयीके लक्षण व चिकित्सा।

पैरमें फोडा होजानेको अनुशयी कहते हैं। फोडामें कहा हुआ इलाज करे तो आराम होवे॥

अथ अवपाटिकाके लक्षण व चिकित्सा।

अनेक कारणोंसे लिंगके ऊपरकी चमड़ी उतरजावे उसको अवपाटिका कहते हैं। खैरको पीस कर चुपड़ देवे तो यह रोग अच्छा होवे ॥

अथ निरुद्धप्रकाशक लक्षण व चिकित्सा।

लिंगकी सुपारीके ऊपरकी चमड़ी बातके कोपसे लिंगको ढककर मूत्र बन्द कर देवे उसको भाषामें मुदरीक रोग कहते हैं। चोयाको लगावे तो यह रोग दूर होवे ॥

अथ सन्निरुद्धगुदके लक्षण व चिकित्सा।

मलके वेगको रोकलेनेसे मल निकलनेका द्वार छोटा होजाता है, तब सूखा मल बड़े कष्टसे उतरता है, उसको सन्निरुद्धगुदकहते हैं, वातनाशकतेलोंके लगानेसे या हिन्नके अतरको लगानेसे यह रोग दूरहोवे॥

अथ वृषणकच्छूरोगके लक्षण व चिकित्सा।

अंडकोशोंमें मैल जम जानेसे खाज व फुसियां होकर पानी सा चेंप निकले और फोड़े हो जावें उसको वृषणकच्छू कहते हैं। राल, कूँट, सेंधानमक, सरसों ये समभाग लेकर पानीमें पीसकर उबटन करे तो यह रोग अच्छा होवे ॥

अथ अहिपूतनारोगके लक्षण व चिकित्सा।

बालककी गुदामें मल भरा रहनेसे या पसीना निकलनेपर स्नान करानेसे सारे शरीरमें गीली खाजके फोडे होकर बहा करें घाव होजावें उसको अहिपूतना कहते हैं। त्रिफला और खैरके काढासे घावको धोवे फिर शंख, सुरमा, मौरेठीको पीसकर लेप करे या फिटकरीको बारीक पीसकर लेप करे तो आराम होवे॥

अथ गुदभ्रंश रोगके लक्षण व चिकित्सा।

बहुत दस्तोंके होनेसे गुदा बाहर निकल आवे उसको भाषामें कांच निकलना कहते हैं। इसमें तेल चुपडकर धीरेसे गुदाको दबाय दे और कमलके पत्तोंको शक्करके साथ खावे अथवा मूसाकी हड्डीको तेलमें मिलाकर वह तेल लगावे तो कांच निकलना दूर होवे॥

अथ शूकरदंष्ट्ररोगके लक्षण व चिकित्सा।

शरीरमें कहींपर पक जावे और जलन व पीडा और ज्वर उपजै उसको शूकरदंष्ट्र कहते हैं। जलभांगराकी जड और हल्दीको पीसकर लेप करे। अथवा कमलकी जडके काढामें घी मिलाकर पीवे तो यह रोग दूर होवे॥

अथ अनुशयीके लक्षण व चिकित्सा।

पैरमें फोडा होजानेको अनुशयी कहते हैं। फोडामें कहा हुआ इलाज करे तो आराम होवे॥

अथ अलसकरोगके लक्षण व चिकित्सा ।

कीचडमें चलनेसे पैरकी अंगुलियोंमें खाज होकर चेंप सा बहा करे उसको खरुवा कहते हैं । अंडीके तेलमें चूना मिलाकर लगावे तो यह रोग दूर होवे ॥

अथ दारीके लक्षण व चिकित्सा ।

पैरके फट जानेको दारी अर्थात् बिवाई जाना कहते हैं । उसमें मोम भरदेवे और लोहेके सूजाको गर्म कर दाग देवे या मेंहदी लगावे तो यह रोग अच्छा होवे ॥

अथ कदरके लक्षण व चिकित्सा ।

पैरके तलुयेमें गांठ सी हो जावे उसको गोखरू कहते है । तेज छूरीसे काटकर गर्मलोहेसे वहां दाग देवे तो यह रोग दूर होवे ॥

अथ जतुमणि, मासा, तिल लक्षण व चिकित्सा ।

काला या लाल खालसे किंचित् ऊंचा दाग शरीर-पर पड जावे उसको जतुमणि अर्थात् लहसुन कहते हैं काली और उदड या चना समान बिना पीडाके शरी-रमें बहुतसी गांठें ऊपर उठ आवें उसको मसा कहते हैं। तिलके समान काले रंगके दाग शरीरमें पड जावें उसको तिलरोग कहते हैं ॥

अथ तीनोंकी चिकित्सा।

इनको तेज छुरीसे छीलकर तेजाबसे या लोहेको गर्म करके उससे वहाँ जला देवे तो रोग अच्छे होवें ॥

अथ पद्मिनीकंटकरोगके लक्षण व चिकित्सा।

शरीरमें कहीं पर खरखरे चकत्ते पड जावें उनमें पीडा व खाज होवे उसको पद्मिनीकण्टक रोग कहते हैं। नीमकी छालीको घिस कर लगावे और पीवे और वहां पर नीमकी पत्ती औटाकर बफारा लेवे तो यह रोग दूर होवे ॥

अथ अजगल्लिकाके लक्षण व चिकित्सा।

मूँगकी बराबर विना पीडाकी बच्चोंके शरीरमें गाँठ उत्पन्न होवें उसको अजगल्लिका कहते हैं। जोंक लगाकर लोहू निंकाल देवे फिर तेजाबसे जला देवे तो यह रोग दूर होवे ॥

अथ यवप्रख्या व अन्त्रालजीके लक्षण व चिकित्सा।

जौके समान लम्बी गाँठ शरीरमें उपजे उसको यवप्रख्या और गोलबेरके समान गाँठ होवे और फूटकर बहे उसको अन्त्रालजी कहते हैं। इन दोनोमें पहिले नीमका बफारा देवे फिर तेज छुरीसे काटकर लोहा गर्म करके वहां पर दाग देवे तो ये रोग अच्छे होवें ॥

अथ तीनोंकी चिकित्सा।

इनको तेज छुरीसे छीलकर तेजाबसे या लोहेको गर्म करके उससे वहाँ जला देवे तो रोग अच्छे होवें॥

अथ पद्मिनीकंटकरोगके लक्षण व चिकित्सा।

शरीरमें कहीं पर खरखरे चकत्ते पड जावें उनमें पीडा व खाज होवे उसको पद्मिनीकण्टक रोग कहते हैं। नीमकी छालीको घिस कर लगावे और पीवे और वहां पर नीमकी पत्ती औटाकर बफारा लेवे तो यह रोग दूर होवे॥

अथ अजगल्लिकाके लक्षण व चिकित्सा।

मूँगकी बराबर विना पीडाकी बच्चोंके शरीरमें गाँठ उत्पन्न होवें उसको अजगल्लिका कहते हैं। जोंक लगाकर लोहू निकाल देवे फिर तेजाबसे जला देवे तो यह रोग दूर होवे॥

अथ यवप्रख्या व अन्त्रालजीके लक्षण व चिकित्सा।

जौके समान लम्बी गाँठ शरीरमें उपजे उसको यवप्रख्या और गोलबेरके समान गाँठ होवे और फूटकर वहै उसको अन्त्रालजी कहते हैं। इन दोनोमें पहिले नीमका बफारा देवे फिर तेज छुरीसे काटकर लोहा गर्म करके वहां पर दाग देवे तो ये रोग अच्छे

अथ विवृता, इन्द्रवृद्धा, गर्दभिका और जाल-गर्दभिकाके लक्षण व चिकित्सा।

फटे मुखकी सूजन संयुक्त फुन्सी होवे उसको विवृता और कमलगट्टेके समान फुन्सी होवे उसको इन्द्रवृद्धा और गोल चकत्ते पीडा संयुक्त हों उसको गर्दभिका और प्रथम चकत्ते होकर सारे शरीरमें फैल जावें और पीडा व ज्वर भी उपजे उसको जालगर्द-भिका कहते हैं अब इन चारोंकी चिकित्सा कहते हैं। प्रथम नीमका बफारा देकर जोंक लगाकर लोहू निकाल देवे फिर पीछे व्रणरोगमें कहा हुआ मलहम लगावे तो चारों रोग अच्छे होवें॥

अथ कच्छपिकाके लक्षण व चिकित्सा।

कठोर कछुआके समान शरीरसें पांच छः गाँठें निकलें उसको कच्छपिका कहते हैं। फोडेकी तरह नस्तरसे चीरकर मलहम लगावे तो आराम होवे॥

अथ शर्करार्बुदके लक्षण व चिकित्सा।

शरीरमें बिना पीडावाली गांठ उपजे और फूटकर बहा करे उसको शर्करार्बुद कहते हैं। छुरीसे काटकर गर्म लोहा या तेजाबसे जलादेवे तो आराम होवे॥

अथ आलस्य, अरति, उत्क्लेश, ग्लानि, डकार, तमके लक्षण व चिकित्सा।

उत्साह न होनेको आलस्य कहते हैं। और खेदयुक्त

चित्त रहनेको अरति और अन्नको थूंकनेका नाम उत्क्लेश और मुख मीठा रहना ओंघाई लगना भोजनकी इच्छा न होनेको ग्लानि और भोजन न पचनेसे वारंवार शब्द सहित मुखसे उदान वायुके निकलनेको डकार और पेट बोलना आंखोंके सामने अंधेरासा होनेको तम कहते हैं। इन सर्वरोगोमें गर्म जलसे स्नान करना। शरीरमें गर्मगर्म तेलकी मालिश करना। कसरत करना। देशाटन करना। चाय पीना। गर्मदूध पीना। उत्तम गाना सुनना। या प्रसन्ना नामकी मदिरा थोडी थोडी पीना। इत्र आदि उत्तम खुशबू सूंघना परम लाभदायक हैं॥ इति क्षुद्ररोग चिकित्सा॥

अथ सिररोगके लक्षण व चिकित्सा।

शिरमें ११ प्रकारके रोग हैं–१ वातका, २ पित्तका, ३ कफका, ४ त्रिदोषका, ५ लोहूका, ६ क्षीणताका, ७ कृमिका, ८ सूर्यावर्त, ९ अनन्तवात, १० कनपटीकी पीडा, ११ अर्द्धावभेदक इन ११ प्रकारके रोगोंसे शिरमें पीडा होती है। तेलकी मालिश करना, वफारा लेना नस्य सूंघना, छीक लेना, वमनकरना, जुल्लाब लेना, इतने उपाय परम लाभदायक हैं। और जंगलीजीवोंके मांस, सांठी चांवल, मूंग, उड़द, कुल्थी, घी, दूध ये पथ्य हैं। सफेद चन्दनका लेप, खसके पंखेकी हवा, गुलाबका इत्र सूंघना लाभदायक है। चन्दनका तेल

या दालचीनीका तेल या १००वार धोये हुए गायके मक्खनका लेप करना। अथवा आधा पाव खोवाकी पट्टी मस्तक पर बांधनेसे शिरके सर्व रोग आरामहोतेहैं अथवा गुलरोगन या चमेलीके तेलको लगावे या रोगन बादाम या काहूका तेल लगानेसे या लोहू निकलवानेसे या लंघन करनेसे शिरके सर्व रोग दूर होते हैं। अथवा अरंडकी जड, तगर, सौफ, लौंकी, रासना, सेंधानमक, जलभांगरा, बायबिडंग, मौरेठी, सोंठि ये सब दो दो तोले लेकर पानीमें बांटकर २० तोले तिलोंका तेल और ८० तोले बकरीका दूध और ८०तोले घमिराका रस, ये सब एक कडाहीमें डाल कर मन्दाग्निसे पकाकर तेल सिद्ध करे, फिर इस तेलकी ६ बून्द नाकमें डालाकरे तो सर्वप्रकारके शिरके रोग दूर होवें और हिलते हुए दांत मजबूत होजावें और बाल फिर जमें और शरीरमें बहुत बल बढे इसका नाम षड्बिंदुतेल है।बायबिडंग और काले तिल समभाग लेकर पीसकर लेप करे। अथवा नारियलके दूधमें शक्कर मिलाकर पीवे या निर्मलीको पानीसे घिसकर नाकमें ४ बून्द डालकर खींचे तो आधाशीशीका दर्द दूर होवे। अथवा जमालगोटेको पानीमें घिसकर सींकमें लगा कर मस्तकमें लेप करके १ मिनट बाद भीगे कपडेसे पोछ डाले तो२० वर्षका

भी शिरदर्द केवल १ बारमें अच्छा होवे परन्तु
मिनटसे अधिक मस्तकमें लेप न लगा रहने प
नहीं तो वहांपर फफोला पड़ जावेगा ॥

इति शिररोग चिकित्सा ॥

अथ नेत्ररोगके लक्षण व चिकित्सा ।

नेत्रमें ७८ रोग होते हैं । उनका भारी विस्ता
चरकमें लिखा है । यहाँ इस छोटेसे ग्रन्थमें मुख्
मुख्य रोगोकी आजमाई हुई चिकित्सा लिखते हैं, जं
अक्सर हुआ करते हैं । नेत्रोंमें जो नसें हैं वह पैरके
तलुयेमें आकर मिली हैं इस वास्ते जो अपने नेत्रोंको
आरोग्य रक्खा चाहें वह पैरोकी हमेशा रक्षा करते रहें
अर्थात् पैरके तलुयेको नित्य साबुनसे धोना व तेलकी
मालिश करना, मोजा पहिनना, जूता पहिनना,
खडाऊ पहिनना, अत्यावश्यक है । और पुराने चांवल,
गेहूं, जौ, मूँग, जंगलीपक्षियोंके मांस, बैंगन, बथुआ,
कालीमिर्च, चौलाई, परवल, ककोड़ा, करेला इनको
घीमें पकाकर सेंधानमक डालकर खावें ये हमेशा
पथ्य व हितकारक हैं । और लालमिर्चा, खटाई,
तीक्ष्ण रस, बहुत गर्म वस्तु, उड़द, सोंठ, नमक, मैथुन
करना, मदिरा पीना, बासी मांस, तिलकी खली,
मछली खाना, चना व सरसो इत्यादिका शाक,
दिनमें सोना, दूरकी वस्तुको देखना, अग्नि तापना.

ारीक अक्षरोंका पढना इतनी चीजें हमेशा नेत्रोंको ानिकारक हैं ॥ आँखोंको त्रिफलाके काढासे धोवे ो नेत्रोंके सर्वरोग दूर होवें और फिर नेत्रोंमें कोई रोग न होवे। भोजन करके पानीसे भीगे हुए दोनों हाथोंको आपसमें खूब रगड रगड़ कर आँखोंमें बारम्बार लगावे तो वह हाथोंका पानी आखोंके वास्ते अमृतके समान लाभ देवे ॥ हफ्तेमें १ वार काले तिलोंका शरीरमें उबटन लगा कर स्नान किया करे और कानोंमें तेल डाला करे और शरीरमें आमलेका उब-टन लगानेसे दृष्टि बढती है ॥ आंखके भीतर घीकी दो बून्द या सरसोंके तेलकी दो बून्द या घीकुआरके स्वरसकी दो बूँद दूरसे टपकावे तो नेत्रोंके सर्व रोग नाश होवें ॥

आमलाको बांटकर टिकिया बनाकर आंखोंके ऊपर बांधनेसे गर्मीसे उत्पन्न होनेवाले आंखोंके सर्व रोग नाश होते हैं और सहिजनेके पत्तोंकी टिकिया उसी प्रकार बांधनेसे कफके सर्व रोग आराम होते हैं और नीमके पत्तोंकी टिकिया उसी प्रकार बांधनेसे सरदी गर्मीके नेत्रोंके सर्वरोग आराम होते हैं। अथवा त्रिफला, घमिरा, सोंठिका काढा, घी, गोमूत्र, शहद, बकरीका दूध, इन हरएकमें शीशेको गर्म कर करके इक्कीस इक्कीस बार बुझाकर सलाई बनाकर आंखोंमें

फेरा करे तो आंखोंके सर्वरोग नाश होवें इसका नाम दृष्टिप्रसादिनी शलाका है। अथवा शंखनाभि, बहेडाकी मज्जा, हर्र, मनशिल, पीपरि, मिर्च, कूट, बच-ये सम भाग लेकर बकरीके दूधमें महीन पीसकर जौके समान गोली बनाकर छायामें सुखालेवे फिर पानीमे घिसकर अंजन करे तो मांस बढना, तिमिर, १ वर्षका फूला, जाला, रतोंधी, दर्द, लाली, कडक इतने रोग नाश होवें इसका नाम लेखनी बटी है।अथवा रसौंत, शिला-जीत, केशर, मनशिल, शंख, कंकोल, मिर्च, मिसिरी ये सम भाग लेकर पीसकर बर्ती बनालेवे फिर छायामें सुखाकर नेत्रोंमें फेरा करे तो जाला, फूला, तिमिर, गॉठ, दर्द, लाली-इतने रोग नाश होवें इसका नाम चन्द्रोदयावर्ती है । अथवा निर्मलीको शहदमें घिसकर थोडा कपूर मिलाकर अंजन करे।अथवा बडके दूधमें कपूर मिलाकर अंजन करे अथवा स्याह कांचको खूब महीन पीसकर उसमे समुद्रफेन और मिसिरी मिला-कर अंजन करे तो जाला व फूला अवश्यही नाश होवे । अथवा मुरगेके अंडेका छिलका, मनशिल, कांच नमक, शंखका पेंदा, चन्दन, सेंधा नमक इनको सम भाग लेकर अंजन बनाकर आंखोंमें लगावे तो फूला जाला अवश्यही दूर होवे । अथवा रसौंतको स्त्रीके दूधमें मिलाकर आंखोंमें रोज लगावे तो नेत्रोंके सर्वरोग

दूर होवें यह ममीराके समान लाभ देनेवाली दवा है॥ अथवा पुनर्नवाकी जडको दूधमें घिसकर अंजन करे तो नेत्रोंकी खुजली मिटै। शहदमें घिसकर अञ्जन करै तो पानी बहना दूर होवे, घीमें घिसकर लगावे तो फूला दूर होवे तेलमे घिसकर लगावे तो तिमिर दूर होवे कांजीमें घिसकर लगावे तो रतौंधी दूर होवे इसके समान नेत्रोंके रोगोंको नाश करनेवाली और दवा नहीं है । इसको देशीममीरा कहते हैं ॥

बबूलके पत्तोंके काढाको खूब गाढा करके उसमें शहद मिलाकर नेत्रोंमें अंजन करे तो ढरका दूर होवे। अथवा पीपरि, सेंधानमक, मिर्च, रसौंत, सुरमा, समुद्र-फेन, मिसिरी, लालपुनर्नवा, हल्दी, लालचन्दन, शहद, नीलाथोथा, हर्र, मनशिल, नीमके पत्ते, लोध, फिटकरी, शंखनाभि, कपूर ये सम भाग लेकर खूब बारीक पीस-कर तांबेके बर्तनमें तांबाके सोंटेसे दूध और शहद डाल डाल कर १ पहर तक खरल करे फिर नेत्रोंमें अंजन करे तो तिमिर, फूला व जाला दूर होवे इसका नाम नयनामृतअंजन है । अथवा हल्दी, नीमके पत्ते, पीपरि, मिर्च, बायबिडंग, नागरमोथा, हर्र ये सम-भाग लेकर बकरीके मूत्रमें पीस कर गोली बनाकर छायामें सुखारक्खे फिर इस गोलीको पानीमें घिसकर अंजन करे तो तिमिर दूर होवे गोमूत्रमें घिसकर

अंजन करे तो नाखूना दूर होवे। शहदमें घिसकर अञ्जन करे तो धुंदला दीखना दूर होवे। स्त्रीके दूधमें घिसकर अंजन करे तो आंखका फूला मिटे इसका नाम चन्द्रप्रभावर्ती है और श्रीमहादेवजीकी कही हुई है॥ शहदमें मिर्च या पीपरि या सोंठिको घिसकर लगावे तो रतौंधी उसी वक्त अच्छी होवे॥ इति नेत्र रोग चिकित्सा॥

अथ कर्णरोगके लक्षण व चिकित्सा।

कानमें २८ प्रकारके रोग होते हैं वे सब विस्तारपूर्वक "सुश्रुत" में लिखे हैं इस छोटेसे ग्रन्थमें मुख्य मुख्य रोगोंकी आजमाई हुई चिकित्सा लिखते हैं।

अदरखका रस, शहद, सेंधानमक, तिलोंका तेल, ये सम भाग लेकर थोडा गर्म कर कानमें डाले तो कानकी पीडा दूर होवे। अथवा बकरेके मूत्रको थोडा गर्म कर उसमें सेंधानमक मिलाकर कानमें डाले तो कानकी घोर पीडा और आवाज आना व बहना दूर होवे। अथवा सोनापाठाकी जड तेलमें पकाकर वह तेल कानमें डाले तो घोर कानकी पीडा मिटे। अथवा बेलके गूदेको गोमूत्रमें पीसकर बकरीका दूध और पानी मिलाकर उसको तिलोंके तेलमें पकाकर तेल सिद्ध करके कानमें डाले तो बहिरापन व कान बहना व घण्टीसी बजना व कीड़ा व पीडा सब दूर होवें।

अथवा बिजोरानींबूके रसमें थोडासा सज्जीका चूर्ण डालकर कानमें डाले तो कान बहना दूर होवे और दर्द व जलन शीघ्रही मिटे अथवा फिटकरीकी खीलको कागजकी पोंगलीमें रखकर कानमें फूंक देवे तो २० वर्षका भी कान बहता हुआ उसी वक्त बन्द होवे । अगर कानमें फुंसी होवे या उसमें बहुत तेज दर्द होवे तो चोवाको रुईकी फुरेरीमें लगाकर कानमेंफेरे तो लगाते ही दर्द बन्द होवे सारी तकलीफ मिटै। यूनान-का प्रसिद्ध हकीम अरिस्तू लिखता है कि, जो पुरुष अपने कानोंको आरोग्य रखनाचाहे तो हमेशा कानोंमें रुई लगाये रहा करै और हफ्तेमें एक बार कानोंमें सरसोंका तेल अथवा रोसाका तेल या गुलाबका अतर डाला करे॥ इति कर्णरोग चिकित्सा ॥

अथ नासारोगके लक्षण व चिकित्सा ।

नाकमें ३४ प्रकारके रोग होते हैं, १पीनस (गंध का मालूम न होना), २ पूतिनाश (नाकमें बुरी गंध आना), ३ नासापाक (नाकमें फुंसियां होना),४ पूय-शोणित (नाकसे मवाद व लोहूसा गिरना), ५ बहुत छींक आना, ६ छींक बिलकुल न आना, ७ नाकका जलना, ८ प्रतिनाह (नाकसे हवा न निकलना), ९ प्रतिस्राव(कफका बहना), १० नाकका सूख जाना, ११ प्रतिश्याय (जुखामहोना), १२वातसे नाकसूखना,

१३ पित्तसे नाक सूखना, १४ कफसे नाक सूखना, १५ रक्तदोषसे नाक सूखना, १६ वातकी बतौडी, १७ पित्तकी बतौडी, १८ कफकी बतौडी, १९ लोहूकी बतौडी, २० मांसकी बतौडी, २१ मेदकी बतौडी, २२ नसोंकी बतौडी, २३ वातकी नाककी बवासीर, २४ पित्तकी बवासीर, २५ कफकी बवासीर, २६ लोहूकी बवासीर और नाकका सूखना ४ प्रकारका और नाकका रक्तपित्त ४ प्रकारका है। इस तरह कुल ३४ रोग हुए और प्रतिश्याय यानी जुखाम ६ प्रकारकाहै॥

अथ चिकित्सा।

पीनसरोग होते ही गुड व कालीमिर्च दहीमें मिलाकर खावे। अथवा सोंठि, मिर्च, पीपरि, चीता, तालीस, अमिली, अमिलवेत, जीरा, इलायची, दालचीनी, तेजपात, ये समभाग लेकर सबके बराबर पुराना गुड मिलाकर सुपारी समान गोली बनाकर खावे तो पीनस, खांसी, श्वास दूर होवे। इसका नाम व्योषादिवटी है॥

सोमका धुआं नाकसे लेवे तो छींके आवें। या नकछिकनी सूंघें तो छींकें आवें। कलोंजीका नस्य सूंघे तो जुखाम अच्छा होवे। बकरीका मांस खानेसे, वमन करनेसे, जुल्लाब लेनेसे, घी पीनेसे, चाय पीनेसे, गर्मदूध पीनेसे जुखाम दूर होवे। अदरखका रस ६

मासेमें शहद ६ मासे मिलाकर पीवे या बडी हरेका चूर्ण ६ मासेको ६ मासे शहदमें मिलाकर चाटे तो जुखाम अवश्यही अच्छा होवै । बतौडी व बवासीर व रक्तपित्तरोगमें पीछे कहे हुए उन उन रोगोंमें कही हुई चिकित्सा करे ॥ इति नासारोग चिकित्सा ॥

अथ मुखरोगके लक्षण व चिकित्सा ।

ओंठोंमें ८ रोग, मसूढोंमें १६ रोग, दांतोंमें ८रोग, जीभमें ५ रोग, तालूमें ९ रोग, कण्ठमें १८ रोग होते हैं । ऐसे सब मिलाकर कुल ६४ रोग मुखमें हैं । और ३ रोग सारे मुखमें और होते हैं । इस प्रकार कुल ६७ रोग मुखके हुए इन सबका विस्तारपूर्वक वर्णन "सुश्रुत" में लिखा है । मांस, दूध, दही, उडद, खटाई ये चीजें अधिक खानेसे मुखरोग पैदा होते हैं। अब उनकी आजमाई हुई चिकित्सा कहते हैं।ओंठोंके सर्व रोगोंमें गायके मक्खनको सौ बार धोकर कपूर मिलाकर लेप करे, मसूढोंके रोगोंमें शहदके गलगले या सरसोंके तेल या कांजीके गलगले करै। और नागरमोथा, हरं, सोंठि, मिर्च, पीपरि, बायविडंग, नीमके पत्ते ये सम भाग लेकर गोमूत्रमें पीसकर गोलियां बनाकर छायामें सुखाकर १ गोली मुखमें रखकर रातको सोया करे तो हिलते हुए दांत मजबूत होवें और दांतोंके सर्व रोग दूर होवें, इससे बढकर

हिलते दाँतोंको जमाने वाली और दवा नहीं है। हींगको दांतोंमें दबानेसे दांतोंका कीडा दूर होवे। जीभके रोगोंमें लोहू निकलानेसे बडा लाभ होता है। पीपारिको वारीक पीसकर शहदमें मिलाकर जीभपर मलै फिर लार टपकावे तो जीभके छाले वगैरह दूर होवें। हरी धनिया चावे अथवा पोदीनाकी पत्ती और मिसरी ये दोनों चबाचबाकर थूंके तो जीभके छाले मिटैं। शीतल औषधियोंके चूर्ण या काढाको मुखमें धारण करे तो तालूके सर्वरोग दूर होवें। लोहू निकलाना, वमन करना, धुआं पीना, गर्मपानीके कुल्ले करना, बफारा लेना, दाख और फालसाको मुखमें दबाये रहना ये सर्व उपाय कंठके रोगोंको नाश करते हैं। जवाखार, तेजबल, पाढ, रसौत, दारुहल्दी, पीपारि ये सम भाग लेकर शहदमें मिलाकर जंगली बेरकी बराबर गोली बनाकर मुखमें रक्खे तो गलेके सर्वरोग दूर होवें अथवा चमेलीके पत्तोंको चाबनेसे मुखका पकना अच्छा होता है॥ बिजौराके फलको खानेसे मुखरोग अच्छा होताहै। इति मुखरोग चिकित्सा॥

अथ विषके भेद व चिकित्सा।

विष दो प्रकारका है १ स्थावर जैसे कनेर, धतूरा इत्यादि वृक्ष। दूसरा जङ्गम जैसे सांप, बिच्छू इत्यादि, अब इनकी चिकित्सा कहते हैं। सर्वप्रकारके स्थावर

विष खाये हुएको वमन करावे क्योंकि;वमनके समान लाभदायक और औषधि स्थावरविषकी नहीं है।और विषपीडितको सांठीचावल,कोदों,कांगनी और सेंधा नमक ये लाभदायक हैं।और सिरसका पञ्चांग गोमूत्र में पीसकर लेप करनेसे सर्वप्रकारका विष दूर होता है और धतूरेकी जड या बांसकी जडको दूधमें पीसकर पीवे तो कुत्ताका विष दूर होवे । अथवा हल्दी, दारु हल्दी, कटसैला, मँजीठ,नागकेशर ये समभाग लेकर शीतल पानीमें पीसकर लेप करे तो मकडीका विष दूर होवे । और जीरा, सेंधानमक, घी इनको पानीमें बांटकर शहद मिलाकर लेप करे । अथवा नीले फूलवाले घसिराके पत्तोंको मलकर सूंघै तो बिच्छूका विष तुरन्त उतरै।अथवा नींबूके रसमें जमालगोटाको घिसकर आंखोंमें अञ्जन कर देवे तो सांपका काटा अच्छा होवे । सर्व प्रकारके स्थावर व जङ्गम विषोंके नाश करनेके लिये जहरमोहरासे बढकर और दवा नही है, वह जहरमोहरा तो दो तरहका होता है एक तो हवानी अर्थात् जो मेंढक वगैरहसे निकाला जाता है, दूसरा मादनी अर्थात् जो खानिसे निकलता है और अक्सर शहरोंमें पंसारियोके पास एक आना तोला बिकता मिलता है यह जहरमोहरा एक किस्मका पत्थर है कुछ पीलाई लिये हुए सफेद रंगका होता है,पहिचान इस-

ी यह है कि, अगर नीमकी पत्तीके साथ इसको पीसे
ो नीमकी कडुआई जाती रहे, बस इसी जहरमोह-
को लेकर पत्थरपर गुलाबजलमें घिसकर चटावे
ा विष खाये हुए पुरुषको वमन होगा जब वमन
जावे तब फिर चटावे तो फिर वमन होगा इसी
हसे बार बार चटाते रहें जब इसके चटानेसे वमन
होवे तब जानो कि, अब पेटमें जहर नही रहा और
ाटी हुई जगह पर भी लेप करे तो जहर दूर होवे
ार एक बारमें १ गेहूंसे अधिक न चाटे क्योंकि
की खुराक दो रत्ती है, हैजेको अवश्यही दोही
ाकमे दूर कर देता है। शिरमें दर्द हो तो गुलाव-
लमें घिसकर लगा दो उसी वक्त दर्द बन्द होगा।
प्रकारके विषोंको सुहागा नाश कर देता है यदि
खिया वगैरहके साथ सुहागाको पीसे तो संखियाका
य दूर होजाता है इसीवास्ते विष खाये हुए रोगीको
के साथ सुहागो पिलाते हैं॥ इति विष चिकित्सा॥

अथ स्त्रीरोग चिकित्सा।

स्त्रीके गुप्त स्थानसे लाल, नीला, सफेद अनेक
ारका बदबूदार सडा पानी निकला करता है उसको
दररोग कहते हैं अशोककी छालीका काढ़ा दूधमें
ाकर ठंढा करके प्रातःकाल पीवे तो अत्युग्र प्रदर
होवे। अथवा रसौत, चौलाईकी जड इनको

चांवलोंके पानीसे पीसकर शहद मिलाकर पीवे तो सर्वप्रकारके प्रदर दूर होवें। अथवा बरियारीकी जड दूधके साथ पीवे तो सर्व प्रदर दूर होवें। अथवा काले गूलरके फलके रसमें शक्कर व शहद मिलाकर पीवे तो सर्वप्रकारके प्रदर दूर होवें। परन्तु शक्कर दूध भात खावे। अथवा मूसाकी मेंगनीसें सम भाग शक्कर मिलाकर मासे ६ गायके पावभर दूधसे पीवे तो सर्व प्रकारके प्रदर अतिशीघ्रही दूर होवें। बारम्बार मूत्र करनेका नाम सोमरोग है इसको मूत्रातीसार भी कहते हैं, आमलेके फलके रसमें शहद व मिसिरी मिलाकर उसके साथ केलाकी पक्की फली दो खावे तो मूत्रातीसार दूर होवे। अथवा उडदका आटा, मौरेठी, बिदारी-कन्द, शहद, मिसिरी ये सब सम भाग लेकर दूधके साथ पीवे तो मूत्रातीसार दूर होवै। अथवा आमलाके बीजोंको पानीमें पीसकर शहद, मिसिरी मिलाकर पीवे तो ३ दिनमें सफेद प्रदर व मूत्रातीसार दूर होवे। अथवा नागकेशर ६ मासे गायके मट्ठामें पीसकर पीवे तो ३ दिनमें प्रदर व सोमरोग दूर होवें इसपर मट्ठाके साथ भात खावे ॥ सोमरोग होनेसे सोम अर्थात् बलका नाश होजाता है चलने फिरनेकी शक्ति नहीं रहती और प्यास बहुत लगतीहै शिरमें शिथिलता रहे। मुख व तालु सूखा रहे। यह रोग बहुत प्रसंगसे

शोकसे परिश्रमसे अभिचारसे जहरविकारसे उत्पन्न होजाता है। जब यही सोमरोग बहुत दिनोंका होजावे तब मूत्रातीसार होजाता है तब इसमें बारंबार बहुतसूत्र उतरा करे और बलका नाश होजावे, सर्व शरीर सूखकर दुर्बल होजावे, प्यास बहुत लगै, मुख सूखा करै, उत्साह बिल्कुल नहीं आवै। ताडवृक्षकी जड, छुहारा, मौरेठी, बिदारीकन्द ये समभाग लेकर समभाग मिसिरी मिलाकर शहदके साथ १ तोला चाटै तो मूत्रातीसार दूर होवे। अथवा आमलेके रसमें अडूसेका खार और शहद डालकर चाटै तो मूत्रातीसार दूर होवे। अथवा पमारकी जडको चावलोंके पानीसे पीसकर दो तोला प्रतिदिन सबेरे पीवे तो मूत्रातीसार व पानी सरीखा प्रदर अतिशीघ्र दूर होवे। अथवा ताडवृक्षके फलकी मज्जा, खजूर, केलाका फल इनको दूधके साथ खावे तो मूत्रातीसार दूर होवे। स्त्रीकी भगमें वातसे ५ रोग, पित्तसे ५ रोग, कफसे ५ रोग, त्रिदोषसे ५ रोग ऐसे कुल २० रोग उत्पन्न होते हैं। उनकी उत्तम चिकित्सा कहते हैं। प्रथम वन्ध्याकी चिकित्सा कहते हैं। मालकांगनीके पत्ते और बिजयसार इन दोनोंको दूधमें पीसकर पीवे तो मासिक रुका हुआ जारी होवे। मछली, कांजी, तिल, उडद, दही इनका अधिकसेवन करनेसे रुका हुआ मासिक खुल जाता है। और

बरियारी, मिसिरी, गंगेरन, मौरेठी, काकडासिंगी, नागकेशर इनको समभाग लेकर शहद, दूध, घीके साथ १ तोला पीवे तो वन्ध्या गर्भवती होवे । अथवा असगन्धके काढामें दूध पकाकर घी मिलाकर ऋतु-स्नान करके पीवे तो गर्भाधान होवे । अथवा पुष्य नक्षत्रमें उखाडी हुई सफेद कटाई या लक्ष्मणा बूँटी या मयूरशिखाकी जडको कुआंरी कन्याके हाथसे गायके दूधमें पीसकर ऋतुस्नान कर पीवे तो अवश्यही गर्भ धारण करे । अथवा शिवलिंगी या पारसपीपरके बीजोंको सफेद जीराके साथ मिलाकर ऋतुस्नानके बाद दूधसे पीवे । अथवा ढांकके कोमल पत्तोंको दूधमें पीसकर पीवे तो अवश्यही गर्भ धारण करे । अथवा वाराहीकन्द, कैथा, शिवलिंगीके बीज ये सब समभाग लेकर चूर्ण कर दूधके साथ ऋतुस्नान करके पीवे तो गर्भाधान अवश्यही होवे और पुत्र ही पैदा होवे ॥

मूसाके मांसको काढाकी तरह पकाकर फिर तिलके तेलमें वह काढा पकाकर तेलसिद्ध करे फिर उस तेलका फोहा भगमें रक्खे तो भगके सर्वरोग दूर होवें। घीका फोहा या तेलका फोहा या शहदका फोहा भगमें रक्खे तो भगके सर्व रोग दूर होवें। अथवा मैनफल, शहद, कपूर या माजू-फल, शहद, कपूर इनको एकमें पीसकर अंगुलीसे भगके अंदर लगावे तो गिरी हुई भग आराम होवे व नसें सीधी

होवें और संकोचन भी होवे अथवा ४ मासे ईसबगोलको १ तोला शक्करमें मिलाकर शीतलपानीसे पीवे तो गिरता हुआ गर्भ रुक जावे। और पीपरि, बायबिडंग, सुहागा ये समभाग लेकर चूर्ण करके गर्म दूधके साथ ऋतुस्नान करके पीवे तो गर्भ नहीं रहे॥

अथवा जसवन्तके १ तोला फूल कांजीमें पीसकर ऋतुसमयमें स्त्री पीवे तो गर्भ नहीं रहै। अथवा १ छटांक पुराने गुडको ऋतुसमयमें ३ दिन तक खावे तो उसके गर्भ नहीं रहे करियारीकी जड रेशमके धागेमें बांधकर स्त्री अपने बायें हाथमें बांधे तो प्रसव(लड़का पैदा होनेके समय) की पीडा व कष्ट दूर हो। अथवा सूरजमुखीकी जड और पाटलाकी जड गर्भिणीके कंठमें बांधे तो शीघ्रही सुखपूर्वक लडका पैदा होवे। अथवा पीपरि, वच इनको पानीमें बांटकर अरंडके तेलमें मिलाकर स्त्रीकी नाभि पर लेप करे तो सुखसे प्रसव होवे। बिजौराकी जड, मौरेठी इनको घीमें पीसकर पीवे तो सुखसे सन्तान पैदा होवे अथवा स्त्रीके बराबर लम्बा धागा लेकर सतलडा कर उसमें तारकी जड बांधकर कमरसे बांधे तो सुखपूर्वक प्रसव होवे सारी तकलीफ दूर होवे। इन्द्रायणकी जड भगमें रखनेसे मरा भी गर्भ अवश्यही बाहर निकल आवे॥

लडका पैदा होजानेके बाद कुपथ्य बादी व शीतल पदार्थोंको खावे तो उसके ज्वर, खांसी, सूजन, अतीसार, आलस्य उत्पन्न होकर प्रसूत रोग होजाता है,तब देवदारु, बच, कूट, पीपरि,सोंठि,चिरायता,कायफल, नागरमोथा, कुटकी, धनियां,हर्र, गजपीपरि, धमासा, गोखरू, कटेली,अतीस,गिलोय,स्याहजीरा, काकडासिंगी ये समभाग लेकर दो तोलेका काढा बनाकर थोडासा सेंधानमक और हींग मिलाकर पीवे तो खांसी, श्वास, हिचकी,सूजन, ज्वर,अतीसार संयुक्त प्रसूतरोग अवश्यही नाश होवें इसका नाम देवदार्व्यादिकाढा है। कालाजीरा, सफेदजीरा, सौंफ,अजवाइन, अजमोद, धनियां,मेथी,सोंठि, मिर्च, पीपरि,पीपरामूल,चीतेकी जड,झाऊकी जड,बेर-कमीला ये एक एक तोले लेकर पीस छानकर २० तोले घीमें भूनकर एकसेर खोवा और दो सेर शक्करकी चाशनीमें एक एक छटांकके लड्डू बनाकर खावे तो सर्व उपद्रव सहित सूतिका रोग व पांडुरोग व पुराना ज्वर, सूजन, अतीसार, खाँसी, कफ सबका नाश होवे । इसका नाम जीरापाक है ॥

यदि स्त्रीके स्तनोंमें खाज, फोड़ा, गांठ, सूजन वगैरह कोई रोग होजावे तो शीतल औषधियोंका लेप

करे और १०८ बार धोये हुए गायके मक्खनमें मुर्दासंग व सिन्दूर मिलाकर फिर २१ बार धोकर लगावे तो फोडा, फुसी, घाव अच्छे होवें ॥

यदि जोंक लगाकर खराब लोहू निकाल डाले तो स्तन रोग अच्छा होवे । इन्द्रायणकी जड पानी या बैलके मूत्रमें घिसकर लेप करे तो स्तनकी सूजन व पीडा तुरन्तही मिटै । अथवा हल्दी और धतूराके पत्तोको पीसकर लेप करै तो पीडा तुरन्तही दूर होवे। लोहेको गर्म कर पानीमें बुझाकर वही पानी पीवे तो स्तन रोग नाश होवे ॥ इति स्त्रीरोग चिकित्सा ।

अथ बालकके रोगोंके लक्षण व चिकित्सा ।

जो जो रोग मनुष्योंको होते हैं वहीवही बालकोंको भी होते हैं इस वास्ते उनउनकी चिकित्सा उस उस रोगमें जो पीछे वर्णन हो चुकी है, सो देखो अब यहां पर बालकोके विशेषरोगोकी आजमाई हुई चिकित्सा वर्णन करतेहैं । मुंडी और मासपर्णीका काढा बनाकर उससे बालकको स्नानकरावे तो सर्व बालग्रह दूर होवे । वच, कूट, ब्राह्मी, सरसों, अनन्तमूल, सेंधानमक पीपरि ये समभाग लेकर पानीमें पीसकर अठगुने घीमें पचाकर घी सिद्धकरे फिर उस घीको थोडा २ बालकको चटावे तो सर्व बालग्रह व सर्वउपद्रव शान्त

होवें बुद्धि बढे और भूत, प्रेत, राक्षस, माता इत्यादिके सर्व दोष दूर होवें इसका नाम अष्टमंगलघृत है ॥

बालकको कभी लंघन न करावे और न दूधपीना बंद करे।दांत निकलनेके समय जो सर्व रोग बालकको घेरते हैं वे रोग बालकको बहुत तकलीफ नहीं देते हैं जब दाँत निकल आते हैं तब वे रोग आपहीसे शांत हो जाते हैं, इस वास्ते उस समयके रोगोकी विशेष चिकित्सा न करै। एक रत्ती छोटी पीपरिका चूर्ण १ मासा शहदसे चटावे तो सर्व प्रकारके ज्वर, खांसी, कफ, जुखाम दूर होवें । माजूफलको भूनकर माताके दूधमे घिसकर एक रत्तीचटावे तो अतीसार दूर होवे। सुहागा, सेंधानमक, छोटी हर्र, हलदी इनको बहुत थोडा२ पानीमें घिसकर तीसरे दिन चटाया करे तो बालक कभी बीमार ही न होवे यदिरोज न चटावे तो तीसरेदिन तो अवश्यहीचटाया करे।काकडासिंगीको पीसकर शहदमें मिलाकर एक-एक रत्तीभर चाटै तो सर्वप्रकारकी खांसी व कफ व खरखराहट दूर होवे। जहरमोहरा या दरियाईनारियलको आधारत्तीगुलाब-जलमे घिसकर चटावे तो सर्वप्रकारकी वमन व हैजा दूर होवे, छोटी हर्रको भूनकर उसमें सेंधानमक मिलाकर दो रत्ती पानीके साथ बालकको देवे तो

अफरा, दस्त न होना, मन्दाग्नि इतने रोग दूर होवें। १ रत्तीबायबिडंगको शहदमें मिलाकर चाटै तो पेटके कीडे दूर होवें। पारा, गन्धक, राल, कपूर ये समभाग लेकर मक्खनमें मिलाकर मालिश करे तो एकही बारमें खाज, दाद दूर होवें। रसौंतको माताके दूधमें घोरकर पकी हुई नाभि या गुदामें लगावे तो वहांका पकना अच्छा होवे। घमिराके स्वरसमें रुईको ३ बार भिगोकर सुखालेवे फिर उसकी बत्ती बनाकर सरसोंके तेल या चमेलीके तेलमें काजल पाडकर आंखोंमें लगावे तो नेत्रोंके सर्व रोग दूर होवें। आवलेका रस मसूढोंमें मलैं या मौरेठीकी लकडीको छीलकर चिकनी करके बालकके हाथमे देवे बालक उसको मुखमें चूसा करे तो दाँत सुखसे निकले। अथवा सिरसके बीजोंकी माला बनाकर गलेमें पहिनावे तो दाँत सुखपूर्वक निकलें कोई कष्ट न व्यापै और शहदमें वचको घिसकर चटावे तो बुद्धि बढे॥ इति बालरोग चिकित्सा॥

अथ वाजीकरन विधि।

वाज नाम वीर्य व पराक्रमका है वह वीर्य व पराक्रम जिससे होवे उसको वाजी कहते हैं। जो पुरुष हीन-वीर्य व हीनपराक्रम होगये हो उनको फिरसे वीर्य

व पराक्रमसंयुक्त करके घोडेके समान पराक्रम सम्पन्न करनेको वाजीकरन कहते हैं । इस वास्ते यहांपर उसी प्रकारकी परीक्षित उत्तम औषधियाँ वर्णन करते हैं। जिनसे पुरुषके शरीरमें उक्त प्रकारका सामर्थ्य उत्पन्न होवे । पुराने सेमरकी जडको पीसकर समभाग शक्कर मिलाकर १ तोला गायके दूधसे पीवे । अथवा कौंछकी जडको पीस छानकर समभाग शक्कर मिलाकर दूधसे पीवे तो निर्वीर्य वीर्यवान् होवे।यदि दो महीनातक दोनों समय इस औषधिको खावे तो शरीरमें समुद्रके समान वीर्य बढै और इसका चमत्कार लिखनेमें नहीं आवे परन्तु खटाई, मिर्चा,तेल, गुड, न खावे, वीर्य बढानेवाली इसके समान कोई औषधि नहीं है । अथवा बिदारीकन्दके चूर्णमें गूलरका रस मिलाकर घी और दूधके साथ पीवे तो बूढा भी जवानके समान वीर्यवान् होवे। बकराके अंडकोशोमें पीपरि और नमक मिलाकर दूध व घीमें मिलाकर खावे । अथवा आमलाके चूर्णमें आमलाके रसकी सात भावना देकर छायामें सुखाकर पीसकर चूर्ण बनाकर घी और शहदमें मिलाकर चाटकर ऊपरसे दूध पीवे तो बूढा भी युवाके समान वीर्यवान् व पराक्रमसम्पन्न होवे । शतावरि ३२ तोले,गोखरू ३२ तोले, वाराहीकन्द ८० तोले, गिलोय १०० तोले,

भिलावाँ १२८ तोले, चीतेकी जड ४० तोले, काले तिल ६४ तोले, पीपरि ११ तोले, मिर्च ११ तोले, सोंठि ११ तोले, शक्कर २८० तोले, शहद १४० तोले, घी ७० तोले लेवे फिर शतावरीके समान बिदारीकंद लेकर चूर्ण बनाकर चिकने बर्तनमें रखछोडे फिर १या २ तोला नित्य दूधसे खावे तो बूढा भी जवान होवे। १८कोढ, भगन्दर, सुजाक, प्रमेह, राजयक्ष्मा, पांचो प्रकारकी खांसी, वातके ८० रोग, पित्तके ४० रोग, कफके २० रोग, छओंप्रकारकी बवासीर, सन्निपात, पांडुरोग, पीनस इतनेरोग अवश्यही दूर होवें, शरीरमें मांस व खून खूब बढै। सफेद बाल काले निकलें, धातुके सर्वरोग दूर होवें, वीर्य अत्यन्त बढै, सोनेके समान शरीरकी कांति होवे। घोडेके समान वेगवान् और सिंहके समान पराक्रम उपजे। बूढा भी प्रतिदिन सौ स्त्री भोगै वंध्याके पुत्र होवे जैसे वृक्षोंको बिजली गिरा कर नाश करदेती है वैसे ही यह औषधि संसारके सर्व ही रोगोंका नाश करदेती है। इसका नाम नरसिंह चूर्ण है इस नुस्खेमें भिलावाँको शुद्ध करके डाले। अथवा शोधा हुआ आमलासारगन्धक १० तोले, सेमरकी जडका चूर्ण १० तोले लेकर पीस छानकर उसमें सेमरकी छालीके रसकी २ भावना देवे फिर छायामें सुखाकर १ मासा नित्य दूधसे खावे तो महादेवजी पार्वतीजीसे

कहते हैं कि, इसके कुछदिन सेवन करनेसे कामदेवके समान सुन्दररूप होवे और सौ वर्षतक आरोग्य रहकर आनन्दसे जीवे। शरीरमें रुधिर व मांस वढे। बाल काले होवें। घोडेके समान बल व सिंहके समान ताकत आवे। महादेवजी फिर भी कहते हैं कि, हे पार्वतीजी! जो इसका सेवन करे वह १० स्त्री रोज भोगे और उसकी कभी अकालमृत्यु न होवे इसका नाम हरशशांक चूर्ण है।

अथवा शोधा हुआ आमलासारगंधक और आमला ये दोनों समभाग लेकर चूर्ण बनाकर उसमें आमलेके रसकी ३ भावना देदेकर छायामें सुखालेवे फिर सेमरके रसकी ७ भावना देदेकर छायामें सुखाकर समभाग शक्कर मिलाकर शहदसे दो मासे प्रतिदिन चाटे और ऊपरसे दूध पीवे तो बूढेमें भी तरुणके समान पुरुषार्थ आवे इसका नाम कामधेनुरसहै। अथवा नया गुड ४०० तोले, बावरी और बेरीकी छाली १०० तोले, चिकिनी सुपारी ५० तोले, लोध २५ तोले, अदरख ८ तोले लेवे फिर १ मिट्टीके बर्तनमें गुडको डालकर गुडसे आठगुना जल उसमें डालकर घोलदेवे पहिली बार अदरख दूसरी बार बावरीकी छाली तीसरी बार बेरकी छाली मिलाकर मुखपर ढकन ढककर मिट्टीसे निस्संधि कर २० दिन तक रक्खा रहने दे फिर इक्कीसवें दिन भट्टी-

पर चढाकर मिट्टीके बर्तनमें अर्क चुआवे और उसी समय ये औषधियाँ सुपारी, एलवालुक (मुसब्बर), देवदारु, लौंग,पद्माख,खस, चन्दन,सौंफ, अजवाइन, मिर्च,सफेदजीरा, कचूर, जटामांसी, दालचीनी,इलायची, जायफल,नागरमोथा, पिपरामूल, सोंठि,मेथी, मेषी (मेढासिंगी), चन्दन ये हरएक दो दो तोले लेकर दरदरी कूटकर उसीमें खूब मिलाय देवे फिर सुरायन्त्रसे आसव तैयार करै फिर ३ तोले या७तोले या १० तोले एक बार या दो बार या ३ बार पीवे तो शरीर बलवान् व ताकतवर होवे,शरीरमें महान्उत्साह पैदा होवे, क्षुधा अत्यन्त बढै, बुद्धि व स्मृति बहुत बढै, सर्ववातव्याधि दूर होवें, १०स्त्रीसे नित्य रमनेकी शक्ति उत्पन्न होवे, भीमसेनके समान पराक्रम प्राप्त होवे, उत्साह व पुरुषार्थको बढानेवाली इससे बढ़कर और औषधि नहीं है, वीर्यके सर्वदोष दूर करै देवता व असुरोंके युद्ध समयमें राक्षसोंके बल व उत्साहके बढानेके निमित्त राक्षसोंके आचार्य गुरु भगवान् शुक्राचार्यजीने इसको बनाया था। इसका नाम मृतसंजीवनी सुरा है।

अथवा अच्छी बीजोसहित भांग लेकर घीमें भूनकर महीन चूर्ण पीस लेवे फिर सोंठि, मिर्च, पीपरि, आमला, हर्र, बहेडा, काकडासिंगी, कूट,सेंधानमक, धनियाँ, कचूर, तालीस, कायफल, नागकेशर, मेथी,

दोनों जीरे ये सब समभाग लेकर थोड़ा भूनकर पीस लेवे फिर जितना इन सबका चूर्ण होवे उतनाही भाँगका भी चूर्ण लेवे फिर सबको एकत्र पीस छानकर सबके बराबर शक्कर मिलाकर घी और शहदमें सानकर दो दो तोलाके लड्डू बनालेवे फिर एक चिकने बर्तनमें खुशबूके वास्ते दालचीनी, इलायची, तेजपात, कपूर इनका चूर्ण डालकर उसीमें उक्त लड्डू भरदेवे और उक्त चूर्ण थोडासा उन लड्डुओंके ऊपर बुरक देवे फिर प्रातःकाल या रात्रिको एक लड्डू खावे तो वात, कफ, खांसी, शूल, आमवात, घोर संग्रहणीका नाश होवे और कुछ दिनतक इस औषधिका सेवन करै तो बूढा पुरुष भी तरुणके समान वीर्य व पराक्रमसे युक्त होवे धातुके सर्व दोष नाश होवें । इसका नाम मदनमोदक है इसको नारदमहर्षिने श्रीब्रह्माजीके मुखसे सुनकर कामदेवकी वृद्धिके लिये संसारके सुख देनेवाले भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजीसे कहा था । इसी औषधिको सेवन कर भगवान् वासुदेवजी सोलह हजार एकसौ आठ रानियोंसे रमण करते थे ॥

अथवा कौंचके बीज १०० तोले दूधमें औटाकर या कूटकर छिलका निकाल डाले फिर महीन पीस छान कर दूधमें माडकर घीमे फुलौरी पकाकर मिसिरीकी खूब गाढ़ी चाशनीमें भिगोदेवे फिर निकालकर

शहदमें डुबोके फिर दो तोला प्रतिदिन सवेरे और दो तोला शामको खावे तो नामर्द भी मर्द होवे और निर्वीर्य भी महान् वीर्यसम्पन्न होवे इसके खानेसे रतिमें घोडेके समान पराक्रम प्राप्त होवे इसका नाम वानरी गुटिकाहै इसके समान अन्यवाजीकरणऔषधि नहीहै।

अकरकरा, सोंठि, लौंग, केशर, पीपरि, जायफल, जावित्री, सफेद चंदन ये सब एक एक तोला लेवे और अफीम ४ तोले लेवे फिर सबको एकमें बारीक पीसकर शहदसे उडद समान गोली बनाकर १ गोली रात्रिको खावे तो वीर्यका स्तम्भन होवे। उत्तम गाना सुनना, नाच देखना, बगीचेकी सैर, जलविहार, रूपवती युवा स्त्रीसे प्रेम, उत्तम खुशबू सूंघना, खुशबूदार फूलोंके हार पहिनना, मीठे व चरपरे भोजन, मदिरा पीना, पान खाना, मांस खाना ये सब नपुंसकपनाको नाशकर वाजीकरण करनेवाले हैं। असगंध और विधारको समभाग लेकर चूर्ण बनाकर मिसिरी, शहद, घीसे १ तोला रोज खावे तो शरीरमें अत्यन्त बल व वीर्य बढै। गोखरू, तालमखाना, शतावरि, कौंचके बीज, खरियारी, मूसली, गंगेरन, असगंध, उटंगनके बीज ये समभाग लेकर पीस छान कर चूर्ण करै फिर सबके बराबर मिसिरी मिलावै १ तोला

रोज खावे ऊपरसे गायका दूध पीवे तो निर्वीर्य भी वीर्यवान् होवे बुढाभी युवाके समान अनेक बार रमण करे इसका नाम कामविलास चूर्ण है ॥

इति वाजीकरण चिकित्सा ।

अथ रसायनविधि ।

शीतलपानी, दूध, शहद, घी इनमेंसे १ या २ या ३ या चारोंको एकमें मिलाकर मैथुनके पहिले खावे तो पराक्रम घटै नहीं, जो औषधियां बुढापाकी निर्बलताको नाश करनेवाली हैं उनको रसायन कहते हैं जो पुरुष ऐसी रसायन औषधिको खाता रहे वह बुढापेमें भी युवाके समान वीर्य व बलसंयुक्त बना रहे और आंख, कान, दांत इत्यादि शरीरकी कोई वस्तु शक्तिहीन न होवें परन्तु जो पुरुष उक्त प्रकारकी औषधि सेवन किया चाहे वह प्रथम वमन विरेचन लेकर शरीरको शुद्ध कर लेवे तब रसायन औषधि पथ्य सहित खावे तो शीघ्रही अपना पूर्ण चमत्कार दिखावे । शरीरको बिना शुद्ध किये हुये जो रसायन खाता है उसको कुछ भी लाभ नहीं होता जैसे मैले [illegible] रंग न चढ़ता । इसी वास्ते अब [illegible] उक्त रसायनके प्रयोग लिखते हैं । अ[illegible]

मौरेठीका चूर्ण मिलाकर पीवे या गिलोयके २ तोले स्वरसमें शंखाहुलीकी जड और फूलोंका चूर्ण १तोला मिलाकर पीवे तो आयु बढे और सर्वरोग नाश होवें बल, बुद्धि और अग्नि बढै। २ तोले शहदमें ६ मासे वंशलोचन मिलाकर खावे। अथवा छोटी पीपरिके १ मासा चूर्णमें ३ मासा सेंधानमक मिलाकर खावे। अथवा त्रिफलाके चूर्णमें मिस्रिरी मिलाकर खावे तो रसायनका फल प्राप्त होवे परंतु कुछ दिनतक सेवन करे। अथवा घमिराका स्वरस २ तोलेमें समभाग गायका दूध मिलाकर १ महीनातक नित्य प्रातःकाल पीवे परन्तु केवल दूधहीका आहार करे तो बूढा भी बल व वीर्य सम्पन्न होकर १०० वर्ष जीवे और उसके सर्वरोग नाश होवें। अथवा १ तोला असगन्धका चूर्ण १ महीनातक दूध या घी या तेल या जलहीसे खावे तो दुर्बलपुरुष मोटा होवे। अथवा आमला, काले तिल, घमिरा ये तीनों समभाग लेकर चूर्ण बनाकर १ तोला प्रतिदिन दूधके साथ १ महीना खावे तो १०० वर्ष जीवे और बाल, दांत, कान व नेत्रोंकी दृष्टि सदा युवाके समान बनी रहै। अथवा बिधाराकी जडके चूर्णमें शतावरीके स्वरसकी ७ भावना देकर छायामें सुखालेवे फिर १ तोला इस चूर्णको घीके

साथ चाटै तो १ महीनेमें बुद्धि व स्मृति व बल बहुत बढै, सफेद बाल काले होवें । अथवा हस्तिकर्णकी जडका चूर्ण १ तोला प्रतिदिन घी या शक्कर या शहदके साथ २ महीनेतक खावे और जो इच्छा आवे वही भोजन करे तो बल व बुद्धि व वीर्य अत्यन्त बढै बडी शक्ति उत्पन्न होवे । अगर कई वर्ष तक इस औषधिका सेवन करै तो निस्सन्देह आयु बहुत बढै परन्तु इस मन्त्रसे अभिमन्त्रित कर उक्त औषधि खावे ॥

मन्त्र ।

(ओं नमो महाविनायकाय अमृतं रक्ष रक्ष मम फलसिद्धिं देहि रुद्रवचनेन स्वाहा) ॥ अथवा आमलाके चूर्णमें आमलाके स्वरसकी भावना देकर उसके समान शहद और घी मिलाकर शहदसे आधी पीपरि और पीपरिसे आधी मिसिरी मिलाकर एक मिट्टीके बर्तनमें भरकर उस बर्तनका मुख बन्द कर४महीने या १२ महीने राखमें गाड देवे फिर निकालकर १ तोला प्रतिदिन खावे तो बाल कभी सफेद न होवें और दांत न हालैं, दृष्टि कमजोर न होवे, शरीरमें युवाके समान सदा बल बनारहे,बुद्धि व बल बहुत बढै,सम्पूर्ण रोगोंका नाश होवे।अथवा गिलोय, चिरचिरा,बायबिडंग, शखाहूली, बच, हर्र, सोंठि, शतावरि ये समभाग

लेकर पीस छानकर ६ मासे प्रतिदिन घीके सा
चाटे तो दिनमें १ हजार श्लोक नित्य कण्ठ करनेकी
शक्ति उत्पन्न होवे, सफेद बाल काले निकलें, सर्वरोग
दूर होवें, बल वीर्य बहुत बढै।यदि सूर्योदयके १ घण्टा
पहिले डेढसेर जल नित्य पिया करे तो वात, पित्तके
सर्वरोग नाश होवें और वह पुरुष १००वर्ष तक आन-
न्दसे जीवे। अथवा निर्गुण्डीकी जडका चूर्ण बनाकर
दोगुने शहदमें मिलाकर चिकने बर्तनमें रखकर मुख
बन्द करके एक महीना तक धान्यकी ढेरीमें गाड देवे
फिर निकालकर प्रतिदिन ३ मासा या १ तोला भर
एक वर्षतक खावे तो सुवर्णका सा शरीरका रंग होवे
सर्वरोगोंका नाश होवे, गिद्धके समान दृष्टि होवे,बाल
कभी सफेद नहीं होवें, बल व बुद्धि अत्यन्त बढैं,
अगर २ वर्ष खावे तो आयु बहुत बढै और मरने पर्यंत
महा वीर्यवान् रहे, इसपर खट्टी वस्तुओंको छोडकर
यथेच्छ भोजन करे, अगर इसीको गोमूत्रसे खावे तो
१८ प्रकारके कोढ, फोडा, फुंसी, शूल,प्लीहा, गुल्म
इतने रोग दूर होवें। अगर मट्ठाके साथ खावे तो सर्व
रोगोंका नाश होवे, गिद्धकी सी दृष्टि, शूकरकी सी
श्रवणशक्ति, पवनका सा वेग और कामदेवके समान
दिव्य सूरत होजावे।तीन महीनेतक इसके खानेसे वह
पुरुष परम विद्वान् व पंडित होवे इसका नाम निर्गुंडी-

होवें, ४ महीनेमें खांसी, कफ, व दमा दूर होवें, ५ महीनेमें अत्यन्त कामी होवे, ६महीनेमें सफेदबाल काले निकलें, ७ महीनेमें सर्व अंग सुन्दर होवें, ८ महीनेमें अत्यन्त बल वढे, ९ महीनेमें १०० वर्षकी आयु होवें, १० महीनेमें वाणी निर्मल होवें, ११ महीनेमें महान् पराक्रम प्राप्त होवे, १२ महीनेमें अदृश्य होवे । मनोवांछित भोजन करे, स्वेच्छाचारी होवे जहां इच्छा आवे वहां गमन करे और वह पुरुष देवताके समान सिद्ध होजावे सर्व आपत्तियों तथा ६ उर्मियोंसे बचा रहे और हमेशा युवा अवस्था बनी रहे । इसका नाम श्रीसिद्धमोदक है । यह सिद्धान्ती तपस्वियोंका सेवन किया हुआ है जो पुरुष इसको सेवन करता है उसको आठों सिद्धि आनकर प्राप्त होती हैं । अथवा जड़सहित ब्राह्मी बूंटीको ब्राह्ममुहूर्त्तमें ८० तोले लेवे और पुष्ययोगमें शतावरि, विदारीकंद, हरं, खस, अदरख, सौंफ ये बीस बीस तोले लेवे फिर सबको १०२ तोले जलमें काढा करे जब चौथाई पानी बाकी रहे तब छानकर मिट्टीके बर्त्तनमें रखकर उसमें शहद ४० तोले, मिसिरी १०० तोले, धवईके फूल २० तोले, रेनुका, निसोत, पीपरि, लौंग, बच, कूट, असगंध, बहेडा, गिलोय, इलायची, वायविडंग,

दालचीनी ये सब एक एक कर्ष लेकर पीसक
उसीमें मिला देवे फिर उसमें १ कर्ष सोनेके वर
मिलावे फिर उस वर्तनका मुख बन्द कर १ महीन
रक्खा रहने देवे फिर निकाल कर छान लेवे फिर उस
छनेहुए रसको चिकने बर्तनमे रखदेवे फिर ४ या ८
मासे प्रतिदिन दूधसे सेवन करै तो बल, वर्ण, बुद्धि,
कान्ति और आयुर्दाय बढै, वाणी शुद्ध होवे, स्त्रियोंके
सर्वरोग दूर होवें वीर्यके सर्वदोष नाश होवें, इस औष
धिके सेवनसे चित्तमें सन्तोष उत्पन्न होवे, बुद्धि व
स्मरणशक्ति अत्यन्त बढै, दो महीने सेवन करनेसे
संसारके सर्वरोग नाश होवें अगर १ साल सेवन करै
तो सर्वसिद्धियाँ प्राप्त होवे, जो पुरुष अपनी अरो-
गता चाहे और अकालमृत्युको नाश किया चाहे
और स्त्रियोंका प्यारा हुआ चाहे तथा वाणीकी शुद्धि
व स्मरणशक्ति प्राप्त करना चाहे और बडा कवीश्वर होना
चाहे वह इस अवलेहको अवश्यही सेवन करै इसका
नाम सारस्वतारिष्ट है, इस अवलेहको श्रीभगवान
धन्वन्तरिजीने अपने शिष्योंके लिये बनाया था इसी
अवलेहको सेवन करके महर्षि विश्वामित्रजीके पुत्र
सुश्रुतजी कवीश्वर होकर सुश्रुतसंहिता रचते भये ॥

रसायन औषधिके [illegible]से सर्वरोग तो नाश होते
हीहैं परन्तु उस [illegible] सिद्धि भी अवश्[illegible]

प्राप्त होती हैं, इसमें किंचित् भी सन्देह नहीं; ऐसा अनेकसिद्ध, तपस्वी, महर्षियोंने अनुभव कर लिखा है कि, औषधि के प्रतापसे परब्रह्म भी प्राप्त होसकता है॥

इति रसायनविधि ॥

इति श्रीवैद्य शास्त्री पं० गौरीशंकर त्रिपाठी ठाठिया-कन्नोज निवासी हाल मुकाम जिला रायपुर सी०पी०-रचित रसराजमहोदधि चतुर्थ ४ भाग समाप्त ॥

इति शम् ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बंबई.